राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०१

मुंहता नैणसी री लिखी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

प्रथम भाग

सम्पादक

श्री नारायणसिंह भाटी, एम. ए., पी-एच.डी.

निदेशक—राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

१९६८ ई०

प्रथमावृत्ति १००० मूल्य १५.५०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १०१

मुंहता नैणसी री लिखी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

प्रथम भाग

प्रकाशक
राजस्थान-राज्याज्ञानुसार
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)
१९६८ ई०

वि० सं० २०२५ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९०

प्रधान-सम्पादकीय

प्रस्तुत ग्रन्थ अपने ढंग की एक अद्वितीय कृति है। महाराजा जसवंतसिंह के काल में मुंहणोत नैणसी के द्वारा लिखित यह एक मारवाड़ का गजेटियर है जिसमें मारवाड़ के विभिन्न परगनों के अन्तर्गत आने वाले सभी गाँवों का जैसा विस्तृत वर्णन दिया गया है वैसा हमारे आधुनिक गजेटियरों में भी प्राप्त नहीं होता। भौगोलिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टि से जो ब्यौरेवार विवरण यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं वे न केवल इतिहास के अध्ययन के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं अपितु उनसे हमें विभिन्न आधुनिक समस्याओं के अध्ययन के लिये भी प्रेरणा प्राप्त हो सकती है।

लगभग ३०० वर्ष पूर्व तैयार किया गया यह ग्रन्थ हमारी एक अनुपम राष्ट्रनिधि है जिसके प्रथम भाग को प्रकाशित करते हुये, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर एक विशेष गौरव और उल्लास का अनुभव करता है। इस ग्रन्थ के लेखक की सुप्रसिद्ध ग्रंथ "मुंहता नैणसी री ख्यात" को इसी प्रतिष्ठान द्वारा चार भागों में प्रकाशित किया जा चुका है। उसमें जो ऐतिहासिक सामग्री दी गई है उसको समझने के लिये कहीं-कहीं पर प्रस्तुत ग्रन्थ से बड़ी सहायता मिल सकती है। इस ग्रन्थ के सम्पादन में डॉ० नारायणसिंह भाटी ने जो परिश्रम किया है उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने इस ग्रन्थ को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिये अनेक परिशिष्ट तैयार किये हैं जो कि विस्तार-भय से इस भाग में नहीं दिये जा रहे है। इन परिशिष्टों के लिये विद्वान् पाठकों को अगले भागों के प्रकाशन तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। आशा है कि इसका दूसरा भाग अगले दो महीनों में प्रकाशित हो जायगा और उसके पश्चात् शीघ्र ही तृतीय भाग पाठकों तक पहुँच सकेगा।

विजया दशमी, सं० २०२५
जोधपुर।

—फतहसिंह

विषय-सूची



सम्पादकीय

'मारवाड़ रा परगनां री विगत' पश्चिमी राजस्थान के बहुत बड़े भू-भाग के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की जानकारी प्रस्तुत करने वाला अद्वितीय ग्रंथ है। यह ग्रंथ जोधपुर के इतिहास-प्रसिद्ध शासक महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) के योग्य दीवान व ख्यातिप्राप्त इतिहासविद् मुहता नैणसी की रचना है।

इस ग्रंथ में, भौगोलिक दृष्टि से मारवाड़ का जो क्षेत्र उस समय उक्त महाराजा के राज्य में शामिल था उसका इतिहास के परिपेक्ष में विस्तृत विवरण प्रस्तुत करना लेखक का उद्देश्य रहा है। यह भू-भाग प्राचीन काल में मरु, मरुस्थल, मरुस्थली, मरुमेदनी, मरुमंडल, मारव, मरुदेश, और मरुकान्तर आदि[१] नामों से पुकारा जाता था। इनका मुख्य आशय रेगिस्तान अथवा निर्जल प्रदेश है।

मेजर के. डी. एरिस्किन ने 'मारवाड़' को 'मारुवाड़' का अपभ्रंश माना है तथा मरुस्थल की विभीषिका और जल की कमी के कारण इसे जीव-हन्ता कहा है[२]। कर्नल टॉड के अनुसार प्राचीन काल में यह नाम समुद्र से लेकर सतलज तक के विस्तृत भू-भाग के लिये प्रचलित था। मारवाड़ के नाम से पहिचाने जाने वाले इस भू-खंड के कई भागों के नाम समय-समय पर बदलते भी रहे हैं। गुर्जर, प्रतिहार और चौहानों के शासन-काल में इसके कई भू-भाग अन्य नामों से भी पुकारे जाते रहे हैं।

बादशाह अकबर के समय में मारवाड़ शब्द काफी बड़े क्षेत्र के लिये प्रयुक्त होता था। अबुल फज्ल ने आईने अकबरी में अजमेर सूबे के अंतर्गत इसका उल्लेख करते हुए इसकी लंबाई १०० कोस तथा चौड़ाई ६० कोस बताई है। अजमेर, जोधपुर, सिरोही, नागोर तथा बीकानेर के क्षेत्र (सरकारें) इसके अंतर्गत माने हैं।[३]

---

१. जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खंड) पृ. २. गौ. ही. ओझा।

२. Rajputana Gazatteers, volume 111-A. by maj. K. D. Erskine.

३. Marwar is 100 kos in length by 60 in breadth and it comprises the Sarkars of Ajmer, Jodhpur, Sirohi, Nagor and Bikaner. —AIN-I-AKBARI, VOL. 11 Page 276

—Translated by Col. H. S. JARRETT (Second edition, J.N. Sarkar)

विषय-सूची



जोधपुर राज्य के सीमा-विस्तार की दृष्टि से भी राव मालदे के
अजमेर और बीकानेर जैसे बड़े क्षेत्र इसके अंतर्गत रह चुके हैं। परन्तु
काल में जोधपुर राज्य की सीमा भी प्रत्येक शासक के समय में बदलती
आंतरिक विग्रह और राज्य-विस्तार की लिप्सा के कारण एक ओर शास
उसके कुटंबियों के बीच संघर्ष रहता था तथा दूसरी ओर पड़ौसी रिया
साथ भी युद्ध होते रहते थे। अकबर ने अपनी कूटनीति से इस परिस्थि
पूरा लाभ उठाया और प्रत्येक रियासत के शासक को अपनी ओर से राज्या
तथा मनसब देने की नीति अपनाई। जिसके फलस्वरूप एक ही राज्य
शक्तिशाली सामंतों का सम्बंध सीधा मुगल साम्राज्य से हो गया। इस
राज्य की राजनैतिक इकाई का अधीष्ठाता सम्राट स्वयं बन गया।

बादशाह राजनैतिक परिस्थियों के अनुकूल शक्ति-संतुलन को बनाये
के लिये सामंतों व शासकों की सेवाओं के अनुसार इन राज्यों के पर
अधिकार में परिवर्तन करता रहता था। अतः जोधपुर(मारवाड़) रा
परगनों में भी प्रत्येक शासक के समय में घटा-बढ़ी होती रही है।

राजा गजसिंह की मृत्यु के पश्चात् जसवंतसिंह को शाहजहां ने जब म
का टीका दिया[1] उस समय जोधपुर, सोजत, फलोदी, मेड़ता और सि
परगने ही उसने प्रदान किये थे। जैतारण का परगना कुछ ही समय बा
मिल गया। परन्तु पोकरण का परगना सं० १७०७ में बादशाह की अ
मिलने पर जैसलमेर वालों से छीन कर अपने अधिकार में किया। इन्हीं
परगनों का विवरण नैणसी ने इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया है।

प्रत्येक परगने से सम्बन्धित विवरण इस ग्रंथ का एक अध्याय है। इस
सात अध्यायों में ग्रंथ पूर्ण होता है। प्रत्येक परगने के इतिहास, भूगोल, र
आबादी आदि की विस्तृत जानकारी बड़े व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक त
प्रस्तुत की गई है। विवरण का क्रम प्रायः निम्न प्रकार है[2]—

१. परगने के मुख्य कस्बे का नामकरण, स्थापना, भौगोलिक स्थिति,
समय पर घटने वाली ऐतिहासिक घटनाएँ, परगने के अधिकार में परि
कस्बे में बनी इमारतें, देवस्थान, जलाशय, कस्बे की आबादी (जाति के अनु

---

१. सं० १६९५ (चैत्रादि) आषाढ़ वदि ७। २. कहीं-कहीं इस क्रम में सा
परिवर्तन है। कुछ स्थलों पर इस क्रम को व्यवस्थित भी कर दिया गया है।

कस्बे की वार्षिक आय (१०-१५ वर्षों की) परगने की १९-२० वर्षों की आय (तफावार) फसलों का विवरण, खालसा, सांसण व सूने गांवों के अनुसार कुल गांवों का वर्गीकरण।

२. तफावार प्रत्येक गांव का विवरण—गांव का नाम, रेख, भौगोलिक स्थिति व कस्बे से दूरी, आबादी जाति के अनुसार, जमीन की किस्म, फसलें, कुए, तालाव, नदियें। ५ वर्ष की आमदनी। (सं० १७१५ से १९ तक) कुछ गांवों का रकबा, बसाने वाले व्यक्तियों के नाम, ऐतिहासिक व्यक्ति से सम्पर्क आदि का भी उल्लेख है।

३. ब्राह्मणों व चारणों, भाटों, जोगियों आदि को दान (सांसण) में दिये हुए गांवों का विवरण एक स्थल पर दे दिया गया है। ऐसे प्रत्येक गांव की जानकारी भी विस्तार से दी गई है, यथा— वह गांव किस राजा ने किसे और कब दान में दिया और इस समय उनके वंशजों में से कौन मौजूद है। कुछ गांवों की मिलकियत के सम्बन्ध में बीच-बीच में परिवर्तन भी हुए हैं उनकी जानकारी भी देदी गई है।

४. प्रत्येक परगने की सीमा पर स्थित गांव कौन-कौन-से हैं और दूसरे परगने के किन-किन गांवों से उनकी सीमा लगती है, इसे स्पष्ट करने के लिये भी तालिकाएँ प्रायः परगने के अंत में दी गई हैं।

५. परगने सम्बन्धी विशिष्ट जानकारी भी कहीं-कहीं अंकित कर दी गई है, जैसे–नमक की खानें आदि।

इस प्रकार तत्कालीन मारवाड़ का पूरा चित्र इस ग्रंथ में हमें मिलता है। आधुनिक युग में जिस प्रकार गजेटियर तैयार किये जाते हैं ठीक उसी प्रकार का प्रयास नैणसी ने लगभग ३०० वर्ष पहले किया था। आधुनिक युग की साधन-सुविधाओं को देखते हुए इस प्रकार का कार्य सरल हो सकता है परन्तु उस युग में नैणसी ने यह कार्य करके अपनी असाधारण प्रतिभा और अनूठी सूझ-बूझ का परिचय दिया है।

प्रसिद्ध इतिहासविद् अबुल फज्ल ने अपने विख्यात ग्रंथ आईने अकबरी के एक भाग में पूरे मुगल साम्राज्य का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया है। सम्पूर्ण साम्राज्य को १२ सूबों में विभक्त कर प्रत्येक सूबे को अनेक सरकारों में विभाजित किया है। प्रत्येक सूबे का संक्षिप्त इतिहास भी दिया गया है तथा दोनों फसलों की १९ वर्ष[1] की उपज के आधार पर प्रत्येक सरकार की औसत आमदनी निकाली

---

1. Nineteen years correspond with a Cycle of the moon during which period season are supposed to undergo a complete revolution. Gladwin, p. 292, V. 1

गई है। सरकारों की तालिकाओं में, लगान, क्षेत्रफल, फौज, किलों आदि की भी जानकारी दी गई है। प्रशासन एवं राजस्व की व्यवस्था की दृष्टि से यह ग्रंथ देशी रियासतों में भी प्रसिद्ध रहा होगा अतः यह संभव है कि मारवाड़ के सम्बन्ध में इस प्रकार का ग्रंथ तैयार करने की प्रेरणा नैणसी को इसी ग्रंथ से मिली हो। वैसे महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) स्वयं उच्चकोटि के विद्वान् और प्रबुद्ध शासक थे अतः उनके आदेश पर भी यह ग्रंथ तैयार करवाया गया हो तो भी कोई आश्चर्य की बात नहीं।

ग्रंथ-निर्माण के पीछे चाहे जो प्रेरणा रही हो राज्यव्यवस्था और इतिहास की दृष्टि से उस समय तो इसका व्यावहारिक उपयोग रहा ही है, बाद में भी मारवाड़ के शासकों के लिये यह एक आवश्यक ग्रंथ रहा होगा।

आईने अकबरी में लेखक ने उपरोक्त जानकारी बड़ी संक्षेप में दी है। परन्तु इस ग्रंथ में जहां तक सर्वेक्षण का प्रश्न है प्रत्येक गांव को स्थान दिया गया है। नैणसी इतिहासकार था अतः उसने प्रत्येक परगने, कस्बे और महत्त्वपूर्ण गांवों को इतिहास के परिपेक्ष में देखने का प्रयत्न किया है, यह उसकी बहुत बड़ी विशेषता है। इस विशेषता के कारण ही यह ग्रंथ केवल सर्वेक्षण के आंकड़ों की तालिकाओं का संग्रह मात्र न होकर मारवाड़ का जीवन्त चित्र अंकित करने में सक्षम है।

अनेक दृष्टियों को ध्यान में रख कर लिखे गये इस ग्रंथ की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं:—

भौगोलिक व खेती सम्बन्धी

१. प्रत्येक परगने के मुख्य कस्बे को विशेष महत्त्व देते हुए उसकी भौगोलिक स्थिति आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है। कस्बे के तालाबों, कुओं, सिंचाई के साधनों, बावड़ियों, बगीचों, पहाड़ियों, रास्तों आदि का उल्लेख किया गया है। जमीन की किस्म, फसल व सब्जियों तक का भी उल्लेख किया है।

२. परगने के गांव की ठीक भौगोलिक स्थिति बताने के लिये कस्बे से दूरी व दिशा का उल्लेख प्रायः किया है।

३. पीने के लिये पानी के साधनों की ओर लेखक ने विशेष ध्यान दिया है। प्रत्येक गांव में कितने कुए हैं, पानी कैसा है, पानी कितना गहरा है तथा पर्याप्त है या नहीं, यदि तालाब है तो पानी कितने महीने चलता है।

पानी समाप्त होने पर पड़ोस के कौनसे गांव पर पानी के लिए निर्भर करना पड़ता है, आदि जानकारी स्पष्ट रूप से दी गई है।

४. सिंचाई के साधनों की भी सही जानकारी देने का प्रयास किया है। जहां कुओं से सिंचाई होती है वहां किस प्रकार के कुए हैं[1] कितने गहरे हैं। इनके अतिरिक्त जमीन में अन्य कुए खोद कर सिंचाई करने की गुंजाइश है या नहीं, आदि।

५. कोई नदी या नाला सीमा में या सीमा के पास से होकर बहता है तो उसका भी उल्लेख किया है।

६. अनेक गांवों में वर्षा का पानी खेतों में भर जाने से गेहूँ व चने आदि पैदा होते हैं (सेंवज) उनका भी यथा स्थान जिक्र कर दिया गया है। इस प्रकार की खेती कितने बीघे में होती है यह भी उल्लेख कहीं-कहीं कर दिया है।

७. कहीं-कहीं पेड़ों का जिक्र भी कर दिया है।

८. गांव में नमक आदि की खान है तो उसका उल्लेख किया है।

९. समय के परिवर्तन के साथ जहां कुछ गांवों की सीमा में परिवर्तन हो गये हैं उनकी ओर भी संकेत किया गया है।

१०. जिन गांवों में घोड़ों आदि के चरने के लिये जोड की भूमि (पड़त भूमि) छोड़ी गई है वह भी अंकित की गई है।

११. जहां पुराने कुए या तालाब रेत से पट गये हैं उनका उल्लेख भी कहीं-कहीं किया है।

ऐतिहासिक

राजस्थान के इतिहास के लिये ख्यातें एक महत्त्वपूर्ण साधन हैं। स्वयं नैणसी की ख्यात इस दृष्टि से सर्वोत्तम महत्त्व की मानी जाती है। ओझाजी का मत है कि कर्नल टॉड के समय में यह ख्यात प्रसिद्ध नहीं हुई थी। यदि उसे यह ग्रंथ मिल जाता तो उसका 'राजस्थान' दूसरे ही रूप में लिखा जाता[2]। राजस्थान के राजवंशों पर विस्तृत प्रकाश डालने वाला यह अद्वितीय ग्रंथ है, इसमें कोई संदेह नहीं। परन्तु जहां तक जोधपुर के राठोड़-राजवंश का प्रश्न है

---

१. ग्रंथ में सर्वत्र अनेक भांति के सिंचाई वाले कुओं का जिक्र आया है, यथा—कोसीटा, टीवड़ा, अरट, चांच, पगवटिया आदि।

२. मुहणोत नैणसी री ख्यात : (प्रथम भाग) पृ. ८ (वंशपरिचय), नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

उसमें न तो कोई क्रमबद्ध इतिहास ही दिया है और न सभी शासकों पर प्रकाश ही डाला है। सीहाजी, आसथान, रिड़मल, जोधाजी, सलखाजी आदि से सम्बन्धित संक्षिप्त बातें विशेष घटनाओं को लेकर ही लिखी गई हैं। इसके अतिरिक्त कुछ प्रसिद्ध सामंतों व राठौड़ों की वंशावली तक ही उनका वृतान्त सीमित है, जो अपर्याप्त ही नहीं एकांगी भी है।[1] वास्तव में जोधपुर का क्रमबद्ध इतिहास नैणसी ने प्रस्तुत ग्रंथ में ही दिया है। जोधपुर परगने के अंतर्गत राव सीहाजी से लेकर जसवन्तसिंह (प्रथम) तक का इतिहास प्रारंभ के लगभग २०० पृष्ठों में है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक परगने के प्रारंभ में जो परगने का इतिहास दिया गया है उसमें भी समय-समय पर घटने वाली कितनी ही घटनाओं, सम्बन्धित व्यक्तियों तथा राजनैतिक हलचलों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार कुल मिलाकर लगभग ३०० पृष्ठों में विशुद्ध ऐतिहासिक सामग्री है। गांवों की विगत में भी सैकड़ों ऐतिहासिक महत्व के संकेत मिलते हैं जो मारवाड़ का विस्तृत इतिहास लिखने में तथा कितनी ही घटनाओं को सत्यापित करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। ग्रंथकर्ता जसवंतसिंह (प्रथम) का समसामयिक है अतः उस समय की प्रामाणिक जानकारी के लिये इस ग्रंथ से बढ़कर अन्य साधन नहीं हो सकता। फारसी के इतिहास-ग्रंथों में जो असंतुलित और विकृत तथ्य भारतीय इतिहास के बारे में मिलते हैं उन्हें सही और संतुलित दृष्टि से देखना चाहें तो इस प्रकार के ग्रंथों का अध्ययन अपरिहार्य है। संक्षेप में इस ग्रंथ की ऐतिहासिक विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं —

१. प्रत्येक परगने के विवरण में कतिपय ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया गया है तथा उनके सम्बन्ध-सूत्र को इस प्रकार प्रकट किया गया है कि ऐसा वृत्तांत अन्यत्र नहीं मिलता। मालदे, वीरम और मुगलों के बीच जो संघर्ष हुआ, वह विवरण उदाहरणार्थ मेड़ता के इतिहास में देखा जा सकता है।

२. जोधपुर राज्य की सीमा में किस राजा के समय कौन-कौन से परगने रहे, उनकी आमदनी क्या थी तथा मारवाड़ का जो परगना राजा के अधिकार में नहीं था वह किसके अधिकार में था आदि बातें इस ग्रंथ से पूर्णतया स्पष्ट हो जाती हैं।

३. मुगल साम्राज्य की सेवार्थ किसी बड़े युद्ध अथवा सूबे की व्यवस्था के लिये यहां के राजाओं को ससैन्य जाना पड़ता था। ऐसे अवसरों पर किस राजा को तनख्वाह के रूप में देश के कौन-कौन से सूबे मिले तथा उनकी आमद नी उस समय क्या कूंती गई थी इसका भी पूरा व्योरा यथा स्थान दिया गया है।

---

१. देखें, मुहता नैणसी री ख्यात: भाग २-३, राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

३. शासक की अनुपस्थिति में राज्य का कार्य-भार संभालने वाले प्रमुख पदाधिकारियों की नियुक्ति तथा ऐसे व्यक्तियों को मिलने वाले वेतन के एवज में जागीरों आदि का भी ब्यौरा इसमें मिलता है, जो अनेक दृष्टियों से उपयोगी है।

४. विभिन्न शासकों द्वारा बनवाये गये सामरिक महत्त्व के किलों, परकोटों, कोटड़ियों, जलाशयों आदि का भी विवरण यथा स्थान दिया गया है।

५. राज्यव्यवस्था के संचालन में ओसवाल, ब्राह्मण, कायस्थ, मुसलमान आदि क्षत्रियेतर जातियों का कैसा और कितना सहयोग समय समय पर शासकों को मिलता था इसका भी अच्छा चित्रण मिलता है।

६. शासकों के अनेक विवाह हुआ करते थे। उनका वृत्तांत, उनसे संतति, तथा लड़कियों आदि की शादियों का विवरण भी नैणसी ने निष्पक्ष होकर किया है जिससे अनेक महत्त्वपूर्ण राजनैतिक तथा सामाजिक संकेत भी मिलते हैं।

७. स्थानीय राजनीति में अंतःपुर का भी कभी-कभी पर्याप्त हाथ रहता था। राजाओं के अनेक रानियें, पड़दायतें, पासवानें आदि हुआ करती थीं। अपनी संतान को राज्यगद्दी दिलवाने के लिये रानियों में प्रतिस्पर्द्धा रहती थी, जिसके फलस्वरूप कई बार परम्परा के अनुसार सबसे बड़े राजकुमार को राज्यगद्दी न देकर प्रिय रानी के पुत्र को गद्दी का अधिकारी बना दिया जाता था। इसके भयंकर दुष्परिणाम आंतरिक विग्रह का रूप धारण कर लेते थे। ये घटनाएँ यहां के इतिहास को बहुत दूर तक प्रभावित करती थीं। इन घटनाओं का विवरण भी नैणसी ने महत्त्वपूर्ण ढंग से दिया है।

८. यहां के शासकों तथा बड़े सामंतों के मुगल साम्राज्य के साथ राजनैतिक सम्बन्ध, संधि-विग्रह, शक्ति-संतुलन आदि ऐतिहासिक महत्व की सामग्री परगनों के इतिहास में यथास्थान प्रस्तुत की गई है।

९. जयपुर, बीकानेर, जैसलमेर, सिरोही आदि पड़ौसी राज्यों के साथ राजनैतिक सम्बन्धों में समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं जिसके मुख्य कारण सीमा-विवाद, मुगल सल्तनत की नीति और राज्य-विस्तार आदि होते थे। कहीं-कहीं इन तथ्यों पर अच्छा प्रकाश पड़ा है। पड़ौसी राज्यों के इतिहास के लिये भी यह उपयोगी है।

१०. कुछएक महत्त्वपूर्ण युद्धों में भाग लेने वाले अथवा काम आने वाले

प्रसिद्ध व्यक्तियों तथा योद्धाओं की सूचियां भी लेखक ने देदी हैं जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं होतीं। इस प्रकार की सूचियों में उज्जैन के युद्ध में भाग लेने वाले मारवाड़ के योद्धाओं की सूची विशेष-रूप से उपयोगी है। मेड़ता के युद्ध में देवीदास जैतावत के साथ काम आने वाले योद्धाओं की सूची भी महत्व की है।

११. कहीं-कहीं प्राचीन स्मारकों व शिलालेखों का भी उल्लेख हुआ है। उनका विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व है।

१२. यद्यपि मारवाड़ के गांवों की भौगोलिक व फसल तथा राजस्व सम्बन्धी स्थिति को स्पष्ट करना लेखक का मुख्य उद्देश्य प्रतीत होता है परन्तु यथा-प्रसंग, कहीं जागीरदार का नाम, कहीं गांव के बसाये जाने का संवत, कहीं गांव बसाने वाले व्यक्ति का नाम, कहीं महत्वपूर्ण व्यक्ति का निवास होने का उल्लेख आदि कितने ही सुस्पष्ट ऐतिहासिक महत्व के संकेत भी लेखक ने दिये हैं।

जहां तक चारणों और ब्राह्मणों आदि को दान में दिये हुए गांवों का प्रश्न है उनकी ऐतिहासिक स्थिति तो बहुत ही स्पष्ट है। क्योंकि प्रत्येक गांव के सम्बन्ध में यह बतलाया गया है कि किस राजा ने किसे वह गांव दिया और सर्वेक्षण के समय कौन सा वंशज मौजूद था।

गांवों के नामों का अध्ययन भी इतिहास की दृष्टि से बड़ा दिलचस्प और उपादेय है। यदि बारीकी से इनके नामों पर विचार किया जाय तो नामकरण के निम्नलिखित आधार प्रायः मिलते हैं। यथा—

(क) विशिष्ट भौगोलिक तथ्यों के आधार पर—

माळंगो[१] मंसाजी री भाषर[२] ढसु री भाषर[३] छीतरियौ (तालाब)[४] चंपला बेरो[५] धवलेहरो[६] (तालाब)

(ख) बसने वाले प्रमुख व्यक्ति के नाम पर—

कांना गोधा री बास[७], सोढा बांमण री बास[८], वीरम रो बास[९], सूरजमल री बास[१०], गोयंदपुरो[११]।

(ग) विशिष्ट व्यक्ति के अधिकार के आधार पर—

कांनावास[१२] मानसिंघ री वासणी[१३], रायमल री वासणी[१४], भींव-ळियौ।[१५]

---

१. पृ० ३२९। २. ४७१। ३. ५०६। ४. ४४०। ५. ३६१। ६. ४४९। ७. ३०१। ८. ३०२। ९. २२८। १०. २३८। ११. ४१९। १२. २३८। १३. ४०४। १४. ४०६। १५. ४१९।

(घ) किसी देवता अथवा देवस्थान के आधार पर—

विनाइकयो[१], चवंडवा[२], आदि

(ङ) चमत्कारिक व्यक्ति के नाम पर—

सोभत[३], चरपटियो,[४], जैतारण[५]

(च) वस्ती विशेष के आधार पर—

गोगादेवां री वास[६], सतावतां री वास[७], कुंभारां री वास[८], सोलंकियां री कोहर[९], मो'तों री वासणी[१०]।

इस प्रकार तत्कालीन मारवाड़ से सम्बन्धित विविध ऐतिहासिक सामग्री तथा प्राचीन इतिहास के बारे में अनेक प्रकार की जानकारी व पड़ौसी राज्यों तथा मुगल साम्राज्य के साथ राजनैतिक सम्बन्धों के कई महत्त्वपूर्ण सूत्र इस ग्रंथ में विद्यमान हैं।

राजस्व व प्रशासनिक व्यवस्था

राजस्थान के इतिहास से सम्बंधित जो भी साधन अद्यावधि उपलब्ध हुए हैं उनमें यहां के प्राचीन राज्यों की राज्य-व्यवस्था, आमदनी के साधनों आदि के सम्बन्ध में अति अल्प जानकारी मिलती है। प्रस्तुत ग्रंथ में अपेक्षाकृत ऐसी जानकारी विशेष रूप से उपलब्ध होती हैं। लेखक ने किसी एक ही स्थल पर इस विषय पर प्रकाश नहीं डाला है अपितु अनेक प्रसंगों में इस प्रकार के तथ्यों का उल्लेख किया है।

बादशाह अकबर ने अपनी प्रबंध-पटुता से प्रशासन व राजस्व सम्बन्धी नियम निश्चित किये थे और सभी सूबों में एक ही प्रकार का प्रशासन कायम किया था। उसी परिपाटी का निर्वाह आगे भी होता रहा। जोधपुर के महाराजा सूरसिंह के योग्य प्रधान भाटी गोयंददास ने सर्वप्रथम बादशाही नियमों के आधार पर मारवाड़ में भी प्रशासनिक व राजस्व सम्बन्धी नियम बना कर उन्हें लागू किया। वही प्रणाली अनेक पीढ़ियों तक यहां प्रचलित रही। इस ग्रंथ से महाराजा जसवंतसिहजी (प्रथम) के समय में प्रचलित राजस्व व प्रशासन सम्बन्धी परम्परागत नियमों तथा उनमें उस समय होने वाले परिवर्तनों का कुछ विशेष पता चलता है।

---

१. २०८। २. २३७। ३. ३८३। ४. ४४६। ५. ३८३। ६. ३०५। ७. ३०६। ८. ३०७। ९. ३१५। १०. ३९५।

प्रसिद्ध व्यक्तियों तथा योद्धाओं की सूचियां भी लेखक ने देदी हैं जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं होतीं। इस प्रकार की सूचियों में उज्जैन के युद्ध में भाग लेने वाले मारवाड़ के योद्धाओं की सूची विशेष-रूप से उपयोगी है। मेड़ता के युद्ध में देवीदास जैतावत के साथ काम आने वाले योद्धाओं की सूची भी महत्व की है।

११. कहीं-कहीं प्राचीन स्मारकों व शिलालेखों का भी उल्लेख हुआ है। उनका विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व है।

१२. यद्यपि मारवाड़ के गांवों की भौगोलिक व फसल तथा राजस्व सम्बन्धी स्थिति को स्पष्ट करना लेखक का मुख्य उद्देश्य प्रतीत होता है परन्तु यथा-प्रसंग, कहीं जागीरदार का नाम, कहीं गांव के बसाये जाने का संवत, कहीं गांव बसाने वाले व्यक्ति का नाम, कहीं महत्वपूर्ण व्यक्ति का निवास होने का उल्लेख आदि कितने ही सुस्पष्ट ऐतिहासिक महत्व के संकेत भी लेखक ने दिये हैं।

जहां तक चारणों और ब्राह्मणों आदि को दान में दिये हुए गांवों का प्रश्न है उनकी ऐतिहासिक स्थिति तो बहुत ही स्पष्ट है। क्योंकि प्रत्येक गांव के सम्बन्ध में यह बतलाया गया है कि किस राजा ने किसे वह गांव दिया और सर्वेक्षण के समय कौन सा वंशज मौजूद था।

गांवों के नामों का अध्ययन भी इतिहास की दृष्टि से बड़ा दिलचस्प और उपादेय है। यदि बारीकी से इनके नामों पर विचार किया जाय तो नामकरण के निम्नलिखित आधार प्रायः मिलते हैं। यथा—

(क) विशिष्ट भौगोलिक तथ्यों के आधार पर—
माळंगो[१] मंसाजी री भाषर[२] ढसु री भाषर[३] छीतरियौ (तालाब)[४] चंपला बेरो[५] धवलेहरो[६] (तालाब)

(ख) बसने वाले प्रमुख व्यक्ति के नाम पर—
कांना गोधा री बास[७], सोढा बांमण री बास[८], वीरम रो बास[९], सूरजमल री बास[१०], गोयंदपुरो[११]।

(ग) विशिष्ट व्यक्ति के अधिकार के आधार पर—
कांनावास[१२] मानसिंघ री वासणी[१३], रायमल री वासणी[१४], भींव-ळियौ।[१५]

---

१. पृ० ३२६। २. ४७१। ३. ५०६। ४. ४४०। ५. ३६१। ६. ४४६। ७. ३०१। ८. ३०२। ९. २२८। १०. २३८। ११. ४१६। १२. २३८। १३. ४०४। १४. ४०६। १५. ४१६।

(घ) किसी देवता अथवा देवस्थान के आधार पर—

विनाइकयो[१], चवंडवा[२], आदि

(ङ) चमत्कारिक व्यक्ति के नाम पर—

सोझत[३], चरपटियो,[४], जैतारण[५]

(च) बस्ती विशेष के आधार पर—

गोगादेवां रो वास[६], सतावतां रो वास[७], कुंभारां री वास[८], सोलंकियां रो कोहर[९], मो'तों री वासणी[१०]।

इस प्रकार तत्कालीन मारवाड़ से सम्बन्धित विविध ऐतिहासिक सामग्री तथा प्राचीन इतिहास के बारे में अनेक प्रकार की जानकारी व पड़ोसी राज्यों तथा मुगल साम्राज्य के साथ राजनैतिक सम्बन्धों के कई महत्वपूर्ण सूत्र इस ग्रंथ में विद्यमान हैं।

राजस्व व प्रशासनिक व्यवस्था

राजस्थान के इतिहास से सम्बंधित जो भी साधन अद्यावधि उपलब्ध हुए हैं उनमें यहां के प्राचीन राज्यों की राज्य-व्यवस्था, आमदनी के साधनों आदि के सम्बन्ध में अति अल्प जानकारी मिलती है। प्रस्तुत ग्रंथ में अपेक्षाकृत ऐसी जानकारी विशेष रूप से उपलब्ध होती हैं। लेखक ने किसी एक ही स्थल पर इस विषय पर प्रकाश नहीं डाला है अपितु अनेक प्रसंगों में इस प्रकार के तथ्यों का उल्लेख किया है।

बादशाह अकबर ने अपनी प्रबंध-पटुता से प्रशासन व राजस्व सम्बन्धी नियम निश्चित किये थे और सभी सूबों में एक ही प्रकार का प्रशासन कायम किया था। उसी परिपाटी का निर्वाह आगे भी होता रहा। जोधपुर के महाराजा सूरसिंह के योग्य प्रधान भाटी गोयंददास ने सर्वप्रथम बादशाही नियमों के आधार पर मारवाड़ में भी प्रशासनिक व राजस्व सम्बन्धी नियम बना कर उन्हें लागू किया। वही प्रणाली अनेक पीढ़ियों तक यहां प्रचलित रही। इस ग्रंथ से महाराजा जसवंतसिंहजी (प्रथम) के समय में प्रचलित राजस्व व प्रशासन सम्बन्धी परम्परागत नियमों तथा उनमें उस समय होने वाले परिवर्तनों का कुछ विशेष पता चलता है।

---

१. २०८। २. २३७। ३. ३८३। ४. ४४६। ५. ३८३। ६. ३०५। ७. ३०६। ८. ३०७। ९. ३१५। १०. ३९५।

राजस्व

राजस्व ही आमदनी का मुख्य साधन था। इसकी वसूली दो प्रकार से होती थी—जागीरदारों से रेख के रूप में तथा खालसा गांवों से जमीन की उपज के अनुसार सीधी लगान-वसूली।

१. जागीरदारों के गांवों से रेख के निश्चित रुपयों के अतिरिक्त जब्ती के समय विशेष कर वसूल किया जाता था। यह जब्ती जागीरदार की मृत्यु होने पर अथवा शासक की नाराजगी के कारण भी होती थी।[1] ऐसे अवसर पर राजकीय अधिकारी लगान वसूल करता था।

२. खालसा के गांवों से प्रत्येक परगने में खरीफ और रबी की फसल की पैदावार से अलग-अलग अनुपात में फसल का हिस्सा लिया जाता था। इसके अतिरिक्त अफीम, सब्जी, कपास, कड़बी, फलों आदि पर रोकड़ कर लिया जाता था[2]। कुछ लोगों से खेती की उपज का हिस्सा न लेकर रोकड़ रुपया मुकाते के रूप में वसूल होता था।

जानवरों की चराई पर भी कर वसूल किया जाता था। गायों, भैंसों आदि पर लगने वाला कर घासमारी कहलाता था तथा ऊँट बकरी पर लगने वाला कर पांनचराई के नाम से पुकारा जाता था। यह कर पशुओं की गणना के अनुसार रोकड़ में लिया लाता था[3]।

खलिहानों पर अनेक प्रकार के छोटे-बड़े कर लिये जाते थे जिनमें गूघरी, दवातपूजा, कागज-खर्च, कणवारिये की रकम, दांती, जुआरो, तालो, भरोती, निगरानी का खर्च आदि मुख्य थे। इन करों में घटा-बढी भी होती रहती थी। कभी-कभी कुछ कर माफ भी कर दिये जाते थे।[4] परगनों के अनुसार करों की संख्या व अनुपात में भिन्नता भी थी।[5]

जनता से धूमाला व खीचड़े का कर भी लिया जाता था। धूमाला का कर गांव की आबादी से प्रति घर हैसियत के अनुसार चौधरी लोग शामिल कर के राज्यकर्मचारी को देते थे। खीचड़े की रकम फौज आदि के खर्च के लिये ली जाती थी। यह रकम अधिक नहीं होती थी। पूरे मेड़ते परगने की खीचड़े की रकम ६००) या ७००) रुपये वसूल होती थी।[6]

---

१. द्रष्टव्य भाग २ पृ० ६१। २. पृ० ८६। ३. पृ० ८८। ४. पृ० ९२-९३। ५. इन पर भाग ३ के परिशिष्ट में विस्तार से प्रकाश डाला जाएगा। ६. पृ० ९८।

३. जमीन और खेती सम्बन्धी इन करों के अतिरिक्त व्यापारियों से भी कर लिया जाता था। इस प्रकार की कर-व्यवस्था का संकेत लेखक ने पोकरण परगने के वृत्तांत में दिया है।

पोकरण के व्यापारी राज्य के अंदर से ही कपास, अनाज, तिल, घी आदि वस्तुएँ व्यापार के लिये लाते थे तो एक मन पर १ सेर कर वसूल किया जाता था। बिसाती-वस्तुओं के ऊपर एक मन के पीछे सवा सेर कर के रूप में वसूल किया जाता था। परदेश के व्यापारी कपड़ा, रेशम, दांत, कस्तूरी, कपूर, मोती आदि लाते थे, उन पर रोकड़ कर दुगानी के सिक्कों में लिया जाता था। महाजनों से प्रति घर १७ दुगानी कर लिया जाता था। होली-दीवाली १२ दुगानी तथा राखड़ी (रक्षा-बन्धन) पर ५ दुगानी। घोड़ों आदि के व्यापारियों से भी कर लिया जाता था। मेलों से भी आमदनी होती थी। प्रत्येक परगने की पैदावार तथा आर्थिक व भौगोलिक स्थिति के आधार पर कर की इन दरों के अनुपात में भी भिन्नता थी।

४. मुगल काल में जो मनसब देने की प्रथा थी उसके अनुसार यहां के शासकों को भारत के विभिन्न सूबों की सूबेदारी मिलती रही है। इन्हें उस सूबे की एक निश्चित रकम प्रति वर्ष बादशाह के खजाने में जमा करवानी होती थी[1] बाकी आमदनी शासक स्वयं रखता था। कभी-कभी युद्ध आदि विशेष अवसरों पर बादशाह की ओर से फौज-खर्च के लिये भी रकम मिलती थी। युद्धों में अच्छा काम देने पर रोकड़ रकम के रूप में ईनाम, जड़ाऊ शस्त्र, हाथी तथा घोड़े आदि भी दिये जाते थे। अतः यह भी आमदनी का एक साधन था। ऐसे अवसरों पर अधिक ईनाम तथा विशेष राजकीय सम्मान पाने के लिये शासकों में प्रतिस्पर्द्धा भी चलती थी।[2] महाराजा जसवंतसिंहजी को अनेक अवसरों पर बादशाह शाहजहां और औरंगजेब ने सूबेदारी व राजकीय सम्मान दिया था, जिनका विस्तार से वर्णन जोधपुर परगने के ऐतिहासिक वृत्तांत में लेखक ने दिया है।

उस समय व्यवहार में आने वाले सिक्कों में रुपया, दांम, पीरोजी, दुगनी, फदिया, टका आदि का उल्लेख इस ग्रंथ में मिलता है। दांम व रुपये का प्रयोग शाही खजाने के साथ लेन-देन में भी होता था। ४० दांम का एक रुपया[3] उस

---

१. इस रकम में कभी-कभी वृद्धि भी कर दी जाती थी जिसे ईजाफा कहा जाता था। २. ऐतिहासिक रुक्के परवाने (परम्परा भाग-२४ पृ० ६)। ३. रुपये का आविष्कार शेरखां के समय में हुआ। अकबर के समय में भी ४० दांम का एक रुपया माना जाता था। (आईने अकबरी पृ० ४१, अनु० हरिवंशराय)।

समय माना जाता था। दांम[१] तांबे का तथा रुपया चांदी का सिक्का होता था। व्यापार में भी प्राय: इन दोनों सिक्कों का प्रचलन अधिक था। स्वर्ण मुद्राओं में मोहर का भी उल्लेख हुआ है।

अपने राज्य में पुराने कर घटाने-बढ़ाने का अधिकार शासक को था। परन्तु मुगल सम्राट भी इसमें दखल दे सकता था क्योंकि किसी भी परगने को राज्य में मिलाने व अलग करने का अधिकार इसे था। महाराजा जसवंतसिंह के समय में मेड़ता के जाटों ने करों को घटाने के लिये बादशाह की दरगाह में फरियाद की थी और उनकी फरियाद बराबर सुनी गई। तथा बादशाह की ओर से आदेश दिया गया था कि राजा गजसिंह के समय में जो भी कर लिया जाता था वही लिया जाय उससे अधिक या कम नहीं किया जाय[२]। इस घटना से ऐसा प्रतीत होता है कि करों की व्यवस्था का मूल आधार स्थानीय परम्परा से सम्बंध रखता था और साधारणतया उनमें परिवर्तन करना उचित नहीं समझा जाता था।

अकाल पड़ने पर करों में विशेष रियायत दी जाती थी। जमीन का लगान नाम मात्र का लिया जाता था, जिसे पाताळ-भोग कहते थे।[३] गांवों की आमदनी के वृत्तांत से उस समय के प्रकृति-गत प्रभाव और वस्तुओं के भावों सम्बन्धी अनेक तथ्यों के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है। संवत १७१५ में प्राय: प्रत्येक गांव की आमदनी बहुत कम है जिससे अनुमान लगता है कि इस वर्ष अकाल था।[४] इसी प्रकार जिन वर्षों में अधिक आमदनी हुई है वे वर्ष विशेष अच्छी वर्षा व पैदावार होने के द्योतक हैं।

प्रशासन

ग्रंथ में राज्य-व्यवस्था तथा प्रशासन सम्बन्धी अनेक संकेत कई स्थलों पर मिलते हैं जो स्थानीय मान्यताओं, परिस्थितियों और परम्पराओं को समझने में सहायक हैं। साथ ही यहां की व्यवस्था पर मुगलों के प्रभाव, मुगल साम्राज्य के दखल और अंतर्बाह्य कारणों से पैदा होने वाली उलझनों तथा उनके निदान पर भी प्रकाश पड़ता है।

---

१. पहले इसे बहलोल व पैसा भी कहते थे। २. पृ० ९४-९५ (भाग-२) ३. पृ० १२७। ४. इस तथ्य की पुष्टि एक अन्य ग्रंथ से भी होती है, जिसमें लिखा है कि सं० १७१५ में जबरदस्त अकाल पड़ा तब १ रु० का २॥ सेर अनाज बिका। सं० १७२० में भी अकाल पड़ा तब जानवर बहुत मरे। (रा. शो. सं. संग्रह, ग्रंथांक ८१९० पत्र १४५)

शासक की नियुक्ति तथा उसके अधिकार—राव मालदे तक साधारणतया यह परम्परा मान्य थी कि शासक की मृत्यु के पश्चात उसका जेष्ठ पुत्र राजगद्दी का अधिकारी होता था। परन्तु इस परम्परा का बराबर निर्वाह दो कारणों से नहीं हो पाया—कई बार राजा अपनी प्रिय रानी के पुत्र को गद्दी का अधिकारी घोषित कर देता था जैसा राव चूंडा ने किया। जेष्ठ पुत्र में योग्यता की कमी होने पर भी गद्दी के लिये उसे अनुपयुक्त समझ कर सामंत गण उसके अन्य भाई को गद्दी का अधिकारी बना देते थे।[२] तभी से यह कहावत प्रसिद्ध हुई—

'रिड़मलां थापिया जिके राजा'

यह सब कुछ होते हुए भी तब तक राज्य-गद्दी के अधिकार के निश्चय के सम्बन्ध में किसी बाहरी शक्ति का वैधानिक हस्तक्षेप नहीं था। बादशाह अकबर की ओर से सर्वप्रथम मुगल साम्राज्य का हस्तक्षेप प्रारंभ हुआ और मारवाड़ का विधिवत शासक वही माना जाने लगा जिसे सम्राट की ओर से टीका दिया जाता था। साथ ही उसे मनसब भी दिया जाता था, जिसके बदले में उसे अपनी सेवाएँ साम्राज्य को देनी होती थीं। मोटा राजा उदयसिंह को सर्वप्रथम अकबर ने अपनी ओर से मारवाड़ का राज्याधिकार दिया था और तब से ऐसी प्रथा चल गई कि सम्राट शासक के पुत्रों में से किसी को भी राज्य-गद्दी का अधिकारी बना सकता था। परन्तु यह सब उस समय की परिस्थितियों तथा शासक व सम्राट के आपसी सम्बन्धों पर ही बहुत कुछ निर्भर करता था। शाहजहां ने राजा गजसिंह की इच्छानुसार उसके छोटे लड़के जसवंतसिंह को गद्दी का अधिकारी बनाया था क्योंकि गजसिंह की सेवाओं से वह बहुत प्रसन्न था और जेष्ठ पुत्र अमरसिंह को पहले से ही नागोर की जागीर प्रदान कर के अलग कर दिया था।

गद्दी पर बैठने के पश्चात नये शासक के नाम का 'अमल दस्तूर' उसके राज्य में होता था, जिससे उस शासक के नाम की विधिवत कार्यवाही राज्य में प्रारंभ होती थी।

शासक की दोहरी जिम्मेवारी होती थी। एक ओर उसे मुगल साम्राज्य की सेवाओं का पूरा खयाल रखना पड़ता था तथा दूसरी ओर अपने राज्य का प्रबंध करना पड़ता था। अकबर के शासन-काल से लेकर औरंगजेब के समय तक प्रायः यहां के शासक मुगल साम्राज्य की सेवाओं में ही अधिक व्यस्त रहे हैं और स्थानीय शासन का कार्य अपने प्रधान व दीवान आदि के माध्यम से चलाते रहे हैं।

---

१. पृष्ठ २९। २. मुहणोत नैणसी की ख्यात (ना. प्र. स. काशी) जि.-२ पृ. १४४।

शासक अपने राज्य के आंतरिक प्रशासन में स्वतंत्र था। राज्य-कर्मचारियों की नियुक्ति करना, अधिकार बांटना, पुरस्कृत करना, दंड देना आदि सभी कुछ उसी के अधिकार में था।

राज्य-व्यवस्था को चलाने के लिये अनेक अधिकारी नियुक्त किये जाते थे[1]। परन्तु इस ग्रंथ में ४-५ प्रमुख पदाधिकारियों का ही उल्लेख कुछ प्रसंगों में हुआ है। इन अधिकारियों के अधिकार और कर्त्तव्यों का भी कुछ अनुमान लेखक के वृत्तातों से मिलता है।

प्रधान—यह राज्य का प्रधान मंत्री होता था। राज्य की सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था उसके अधिकार में होती थी। प्रधान राजनीति और राज्य-व्यवस्था में निपुण होता था तथा साथ ही राजा का विश्वासपात्र तथा प्रभावशाली व्यक्ति होता था। प्रधानगी का पद राज्य में सबसे बड़ा पद माना जाता था तथा इस पद की चाकरी की एवज में शासक की ओर से जागीर का बड़ा पट्टा दिया जाता था। राजा की अनुपस्थिति में सारा कार्य-भार उसी पर होता था। राजा के आदेश पर सन्धि-विग्रह, चढाई, मुगलदरबार में उपस्थित होना आदि सभी कार्य प्रधान करता था। राजा सूरसिंह के प्रधान भाटी गोयंददास द्वारा की गई इस प्रकार सेवाएं इसका प्रमाण हैं।

जसवंतसिंह की गद्दीनशीनी के समय राजसिंह खींवावत मारवाड़ का प्रधान था। उसकी मृत्यु होने पर संवत १६९७ में राठौड़ महेशदास सुरजमलोत को यह पद मिला था।[2]

दीवान— यह राज्य का राजस्व सम्बन्धी सबसे बड़ा अधिकारी होता था। राजस्व की वसूली, उसका हिसाब-किताब अधीनस्थ कर्मचारियों की निगरानी आदि का कार्य उसके जिम्मे होता था। उसे पर्याप्त दीवानी और फौजदारी अधिकार भी होते थे। वह परगने के हाकिमों, कानूगोओं आदि से सीधा सम्पर्क रखता था। जमीन की किश्म, पैदावार, जागीर व खालसे के गांवों की पूरी जानकारी उसे होती थी। स्वयं नैणसी ने लम्बे अरसे तक मारवाड़ की दीवानगी का कार्य किया था।

अकबर की राज्य-व्यवस्था में दीवान का पद बड़े महत्व का माना जाता था। प्रत्येक सूबे में दीवान और सूबेदार के दो प्रमुख पद होते थे। ये एक

---

१. प्राचीन ग्रंथों में मारवाड़ के प्रशासन के सम्बन्ध में ९० ओहदों की सूची मिलती है, जिनमें से अधिकांश पद इसी समय से चले आते रहे हैं। २. पृष्ठ १२५।

दूसरे से स्वतंत्र पदाधिकारी होते थे।[1] पहला राजस्व वसूली आदि की व्यवस्था को देखता था, दूसरा प्रशासनिक अधिकारी होता था, जिसके अधिकार में फौज व पुलिस रहती थी। इसे सिपहसालार भी कहते थे।

वैसे दीवान शब्द बहुत प्राचीन है तथा प्राचीन राज्य-व्यवस्था की विशिष्ट प्रणाली में ऐतिहासिक महत्व रखता है क्योंकि सर्वप्रथम अरबों द्वारा इजिप्ट पर शासन करते समय इस पद की स्थापना की गई थी तथा राजस्व और प्रशासनिक कार्यों को सर्वथा अलग-अलग बांट दिया था।

ग्रंथ में वर्णित नैणसी द्वारा की गई सेवाओं के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि दीवान प्रशासन तथा युद्ध-कार्य में भी सिद्धहस्त होता था। वह जनता के साथ सीधा सम्पर्क भी स्थापित करता था तथा परिस्थिति के अनुसार शासक को निवेदन कर, कर की वसूली में रियायत भी करवा सकता था।

वकील—यह पद भी अपना विशिष्ट महत्व रखता था। यह मुगल दरबार में शासक के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था। आवश्यकता पड़ने पर वह मुगल दरबार में अपने शासक को अर्ज पेश करता था। वह वहां की राजनैतिक गतिविधियों पर पूरी नजर रखता था तथा महत्त्वपूर्ण मसलों के बारे में अपने शासक को पत्र भेज कर सूचित करता रहता था। वकील अत्यंत बुद्धिमान और राजा के भरोसे का व्यक्ति होता था। राज्य और साम्राज्य के आपसी सम्बन्धों का निर्वाह किसी हद तक उस पर निर्भर करता था।

शाही दफ्तर की फहरिश्तों में अपने राजा को मिलने वाले नवीन परगनों की स्थिति, रकम की जमा-बकाया आदि का लेखाजोखा भी वह देखकर सूचना भेजता था। वहां के अधिकारियों से उचित सम्बन्ध बनाये रखकर समय पर अपना काम करवाना तथा विशिष्ट परिस्थितियों में सभी प्रकार की राजनैतिक हलचलों से शासक को सूचित करना आदि उसके कार्य होते थे। राजा जसवंत सिंह के समय में मनोहरदास प्रसिद्ध वकील हुआ।[2] समय-समय पर उसके द्वारा दी गई सूचनाओं तथा सेवाओं से पता चलता है कि यह पद उस समय कितना महत्व रखता था। ख्यातों में कभी-कभी प्रधान के लिये भी वकील शब्द का प्रयोग मिलता है।

---

१. AIN-I- AKBARI.Vol. II page 38-53। २. पृष्ठ १५७।

बाद के कुछ रुक्के-परवानों के अध्ययन से तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि केन्द्र की राजनीति से सतर्क रहने के लिये तो बहुत हद तक राजाओं को अपने वकीलों पर ही निर्भर करना पड़ता था। उनकी गफलत से शासक को बड़े से बड़ा नुक़सान हो सकता था।[१]

हाकिम—प्रत्येक परगने में एक हाकिम नियुक्त किया जाता था जो राजस्व-वसूली और राज्य-व्यवस्था आदि कार्य देखता था। वह कस्बे के दुर्ग में आवश्यक साज-सामान सहित रहता था। वह अपना दीवान लगाता था तथा मुकदमों की सुनवाई भी करता था।[२] मु० सुंदरदास तथा नैणसी पोकरण के हाकिम रह चुके थे। इसे थानेदार भी कहा जाता था क्योंकि परगने की सुरक्षा का प्रबंध भी उसके जिम्मे होता था। आवश्यकता पड़ने पर उसे आक्रान्ताओं से मुकाबला भी करना पड़ता था। शासकों को जब बाहर के किसी परगने की सूबेदारी मिलती थी तो उसके प्रमुख अधिकारी को भी हाकिम का पद दिया जाता था।

कानूगो—प्रत्येक परगने में कानूगो रहते थे। जमीन की पैमाइश, उसकी किश्म, लगान, आमदनी आदि का व्यौरा इनके पास रहता था। राजस्व की व्यवस्था में यह महत्वपूर्ण पद होता था। कानूगो लोग प्रायः ओसवाल अथवा पंचोली जाति के होते थे। इनका यह पद पुश्तैनी होता था। जमीन के जिस भाग का व्यौरा जिसे रखना होता था वह उसके जिम्मे वंश-परम्परा से रहता था। मेड़ते परगने के इस दृष्टि से ९ हिस्से (पट्टी) थे और उनका कार्य ६ कानूगोओं के घरानों में बंटा हुआ था।[३] अकबर के प्रशासन में भी यह पद पर्याप्त महत्त्व रखता था। इसका दर्जा तहसीलदार से नीचे रखा गया था। कानूगो के कार्य-सम्पादन में पेशे की परम्परागत व विस्तृत जानकारी अपेक्षित थी इसलिये उसने भी इनका पद पुश्तैनी ही रखा था। महेसदास जसवंतसिंहजी के समय में प्रसिद्ध कानूगो हुआ।[४]

इन प्रमुख पदों के अतिरिक्त अन्य कई छोटे-बड़े पद होते थे जैसे हुजदार, सिकदार, पोतदार, चौकीनवीस आदि।

इस ग्रंथ में प्रशासन अधिकारियों और उनके कार्यों का जो भी उल्लेख हुआ है उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि उस समय यद्यपि राजस्व सम्बन्धी व्यवस्था की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाता था परन्तु उस काल की

---

१. द्रष्टव्य—ऐतिहासिक रुक्के परवाने (परम्परा भा० २४) २. पृ० ३९०। ३. पृ० ८७ (भाग २) ४. पृ० १६४।

परिस्थितियों और प्राचीन परम्पराओं के अनुसार प्रशासन, राजस्व और फौज के विभाग पूर्णतया एक दूसरे से अलग नहीं थे। बहुत से उच्च अधिकारियों को प्राय: मिले-जुले रूप में उपरोक्त तीनों जिम्मेवारियों का निर्वाह करना पड़ता था।

उस समय की सामाजिक एवं राजनैतिक प्रणाली में पंच-व्यवस्था के भी एक-दो संदर्भ इस ग्रंथ में आए हैं। वरसिंघ की मृत्यु के पश्चात पंचों ने मिलकर उसके पुत्र सीहा को मेड़ते का टीका दिया परन्तु सीहा अयोग्य निकला, तब उसकी मां ने पंचों को फिर से बुलाया और उनकी सलाह से दूदा को वापिस बुला कर मेड़ते का टीका दिया। जनता के प्रतिनिधि के रूप में चोधरी नियुक्त करने की भी प्रथा थी। दूदा के समय धिरराज डांगा जाट को देश-मुख चोधरी नियुक्त करने का उल्लेख मेड़ता के प्रसंग में है।

राज्य के बड़े पदों पर अधिकारियों को नियुक्त करते समय उनकी वंश-परम्परा और राजकीय सेवाओं को भी ध्यान में रखा जाता था। परन्तु ये पद पुश्तैनी नहीं हुआ करते थे। ख्यातों में ऐसे उल्लेख अवश्य मिलते हैं जिनके अनुसार कुछ पदों पर जाति विशेष के व्यक्तियों को नियुक्त करने की परम्परा थी। खीची, धांधल पड़िहार और गेहलोत शाखा के राजपूत प्राचीन काल से ही राजा की खवासी (पद विशेष) में रहने के अधिकारी माने जाते थे।

अपनी कुछ स्थानीय विशेपताओं के होते हुए भी धीरे धीरे सम्पूर्ण राज्य-व्यवस्था की प्रणाली मुगल साम्राज्य के प्रशासनिक ढांचे से पूरी तरह प्रभावित हो चुकी थी, जिसका अनुमान पदों के नामों और प्रशासनिक शव्दावली से ही लगाया जा सकता है। मुगल काल में भारत के सभी राज्य इस प्रणाली के ढांचे में ढल चुके थे अत: यह राज्य उसका अपवाद नहीं हो सकता था। इस धारणा को अधिक स्पष्ट करने के लिये सर जदुनाथ सरकार की निम्न पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं—

"This type of administration, with its arrangement procedure Machinery and even titles was borrowed by the Hindu States outside the territory directly subject to muslim rule. ....But the Mughal System was also the model followed by some independent Hindu States of the time. Even a staunch champion of Hindu orthodoxy like Shivaji at first copied it in Maharastra, and it was only later in life that he made a deliberate attempt to give a Hindu colour to his administrative machinery by substituting Sanskrit titles for Persian onces at his court.[1]"

1. MUGHAL ADMINISTRATION—Sir Jadunath Sarkar, Page 2-3 (IV Ed.)

बाद के कुछ रुक्के-परवानों के अध्ययन से तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि केन्द्र की राजनीति से सतर्क रहने के लिये तो बहुत हद तक राजाओं को अपने वकीलों पर ही निर्भर करना पड़ता था। उनकी गफलत से शासक को बड़े से बड़ा नुक्सान हो सकता था।[१]

हाकिम—प्रत्येक परगने में एक हाकिम नियुक्त किया जाता था जो राजस्व-वसूली और राज्य-व्यवस्था आदि कार्य देखता था। वह कस्बे के दुर्ग में आवश्यक साज-सामान सहित रहता था। वह अपना दीवान लगाता था तथा मुकदमों की सुनवाई भी करता था।[२] मु० सुंदरदास तथा नैणसी पोकरण के हाकिम रह चुके थे। इसे थानेदार भी कहा जाता था क्योंकि परगने की सुरक्षा का प्रबंध भी उसके जिम्मे होता था। आवश्यकता पड़ने पर उसे आक्रान्ताओं से मुकाबला भी करना पड़ता था। शासकों को जब बाहर के किसी परगने की सूबेदारी मिलती थी तो उसके प्रमुख अधिकारी को भी हाकिम का पद दिया जाता था।

कानूगो—प्रत्येक परगने में कानूगो रहते थे। जमीन की पैमाइश, उसकी किश्म, लगान, आमदनी आदि का व्योरा इनके पास रहता था। राजस्व की व्यवस्था में यह महत्वपूर्ण पद होता था। कानूगो लोग प्रायः ओसवाल अथवा पंचोली जाति के होते थे। इनका यह पद पुश्तैनी होता था। जमीन के जिस भाग का व्योरा जिसे रखना होता था वह उसके जिम्मे वंश-परम्परा से रहता था। मेड़ते परगने के इस दृष्टि से ६ हिस्से (पट्टी) थे और उनका कार्य ६ कानूगोओं के घरानों में वंटा हुआ था।[३] अकबर के प्रशासन में भी यह पद पर्याप्त महत्त्व रखता था। इसका दर्जा तहसीलदार से नीचे रखा गया था। कानूगो के कार्य-सम्पादन में पेशे की परम्परागत व विस्तृत जानकारी अपेक्षित थी इसलिये उसने भी इनका पद पुश्तैनी ही रखा था। महेसदास जसवंतसिंहजी के समय में प्रसिद्ध कानूगो हुआ।[४]

इन प्रमुख पदों के अतिरिक्त अन्य कई छोटे-बड़े पद होते थे जैसे हुजदार, सिकदार, पोतदार, चौकीनवीस आदि।

इस ग्रंथ में प्रशासन अधिकारियों और उनके कार्यों का जो भी उल्लेख हुआ है उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि उस समय यद्यपि राजस्व सम्बन्धी व्यवस्था की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाता था परन्तु उस काल की

---

१. द्रष्टव्य—ऐतिहासिक रुक्के परवाने (परम्परा भा० २४) २. पृ० ३६०। ३. पृ० ८७ (भाग २) ४. पृ० १६४।

परिस्थितियों और प्राचीन परम्पराओं के अनुसार प्रशासन, राजस्व और फौज के विभाग पूर्णतया एक दूसरे से अलग नहीं थे। बहुत से उच्च अधिकारियों को प्राय: मिले-जुले रूप में उपरोक्त तीनों जिम्मेवारियों का निर्वाह करना पड़ता था।

उस समय की सामाजिक एवं राजनैतिक प्रणाली में पंच-व्यवस्था के भी एक-दो संदर्भ इस ग्रंथ में आए हैं। वरसिंह की मृत्यु के पश्चात पंचों ने मिलकर उसके पुत्र सीहा को मेड़ते का टीका दिया परन्तु सीहा अयोग्य निकला, तब उसकी मां ने पंचों को फिर से बुलाया और उनकी सलाह से दूदा को वापिस बुला कर मेड़ते का टीका दिया। जनता के प्रतिनिधि के रूप में चौधरी नियुक्त करने की भी प्रथा थी। दूदा के समय घिरराज डांगा जाट को देश-मुख चौधरी नियुक्त करने का उल्लेख मेड़ता के प्रसंग में है।

राज्य के बड़े पदों पर अधिकारियों को नियुक्त करते समय उनकी वंश-परम्परा और राजकीय सेवाओं को भी ध्यान में रखा जाता था। परन्तु ये पद पुश्तैनी नहीं हुआ करते थे। ख्यातों में ऐसे उल्लेख अवश्य मिलते हैं जिनके अनुसार कुछ पदों पर जाति विशेष के व्यक्तियों को नियुक्त करने की परम्परा थी। खीची, धांधल पड़िहार और गेहलोत शाखा के राजपूत प्राचीन काल से ही राजा की खवासी (पद विशेष) में रहने के अधिकारी माने जाते थे।

अपनी कुछ स्थानीय विशेषताओं के होते हुए भी धीरे धीरे सम्पूर्ण राज्य-व्यवस्था की प्रणाली मुगल साम्राज्य के प्रशासनिक ढांचे से पूरी तरह प्रभावित हो चुकी थी, जिसका अनुमान पदों के नामों और प्रशासनिक शब्दावली से ही लगाया जा सकता है। मुगल काल में भारत के सभी राज्य इस प्रणाली के ढांचे में ढल चुके थे अतः यह राज्य उसका अपवाद नहीं हो सकता था। इस धारणा को अधिक स्पष्ट करने के लिये सर जदुनाथ सरकार की निम्न पंक्तियां उल्लेखनीय हैं—

"This type of administration, with its arrangement procedure Machinery and even titles was borrowed by the Hindu States outside the territory directly subject to muslim rule. ....But the Mughal System was also the model followed by some independent Hindu States of the time. Even a staunch champion of Hindu orthodoxy like Shivaji at first copied it in Maharastra, and it was only later in life that he made a deliberate attempt to give a Hindu colour to his administrative machinery by substituting Sanskrit titles for Persian onces at his court.[1]"

1. MUGHAL ADMINISTRATION—Sir Jadunath Sarkar, Page 2-3 (IV Ed.)

मनसब सेना व युद्ध

मनसब—यहां के राजाओं को शाही मनसब मिलता था, यह पहले ही कहा जा चुका है। जिस शासक का जितना बड़ा मनसब होता था वह मुगल साम्राज्य का उतना ही बड़ा पदाधिकारी माना जाता था। मनसब का मुख्य सम्बन्ध सैनिक शक्ति से था[1] क्योंकि मनसबदार को अपने मनसब के अनुसार नियत संख्या में सेना रखनी पड़ती थी। प्रस्तुत ग्रन्थ में अनेक स्थलों पर यहाँ के शासकों के मनसब का विस्तार के साथ ब्यौरा दिया गया है जिसके आधार पर उन शासकों का साम्राज्य में दर्जा, सैनिक-शक्ति, शाही वेतन आदि अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है।

मनसब और मनसबदार मुगलकालीन भारत की न केवल सैनिक व्यवस्था के अपितु राजनीति और प्रशासन के भी मुख्य आधार रहे हैं। इसीलिए इस काल के इतिहासकारों ने इन पर यथाप्रसंग अपने विचार प्रकट किये हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार वी. स्मिथ का इस पद की परम्परा आदि के सम्बन्ध में मन्तव्य इस प्रकार है—

"The superior graded officers were called Manasabdars, holders of Manasabs, official Places of Rank and Profit.

The Arabic word Manasab which was imported from Turkistan and Persia Simply means Place (जगह).

The earliest mention of the grading of Manasabdars in India is the statement of Tod, that Biharimal was the first prince of Amer who paid homage to the mohamadan power. He received from Humayun the Manasab of 5000 as Raja of Amer. That must have happened about 1584. The next reference to a Manasab of definite grade known to me occurs in the 15 year of Akbar's reign (1570-71) when Baz Bahadur the Ex-King of Malwa came to court and was appointed a Manasabdar of 1000. ....The system was borrowed directly from Persia.[2]

सेना—इन मनसबदारों के पद के आगे हजारी शब्द लगता था, जैसे

---

१. वैसे मुगल साम्राज्य के सभी पदों पर कार्य करने वालों का वेतन व दर्जा मनसब के अनुसार ही बंधा हुआ था और वक्सी ही उनकी (फौजी व अन्य पदाधिकारी) तनख्वाह चुकाता था परन्तु इस संदर्भ में 'मनसब' का सम्बन्ध सैनिक सेवाओं से है। 2. Akbar the great mogul, Page 262-63.

२ हजारी, ३ हजारी आदि। छोटे मनसबदारों के आगे सदी शब्द लगता था—२ सदी, ३ सदी आदि। मनसब की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करने के लिये जात और सवार शब्द प्रयुक्त होते थे जिनके अर्थ के सम्बन्ध में इतिहासकारों में भ्रान्ति व मतभेद है[1]। डॉ० आशीर्वादीलाल ने जात और सवार शब्दों पर विचार करते हुए, उनके अनुसार दर्जों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है[2] —

जात—जात मनसबदार को घोड़े, हाथी और लद्दू जानवर निश्चित संख्या में रखने पड़ते थे परन्तु घुड़सवार नहीं।

सवार—इस पद वाले को घुड़सवार नियत संख्या में रखने पड़ते थे।

श्रेणियां—

१. सवार पद जात के पद के समान होता था तो प्रथम श्रेणी।

२. सवार पद जात पद से कम पर जात से आधे से कम नहीं तो द्वितोय श्रेणी।

३. सवार पद से जात पद कम होता था तो तृतीय श्रेणी।

प्रस्तुत ग्रंथ में इकसपह, दूसपह और सेसपह शब्द भी मनसब के साथ प्रयुक्त हुए हैं। ये शब्द मनसबदार की फौज की वास्तविक वैतनिक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त होते रहे हैं परन्तु इनके सही अर्थ के सम्बन्ध में भी इतिहासकार एक मत नहीं है। वास्तव में इस प्रकार के मतभेद का मुख्य कारण यह प्रतीत होता है कि प्रत्येक बादशाह के समय में फौज की वास्तविक स्थिति में कुछ न कुछ रद्दोबदल होता रहता था। मनसब का दर्जा वही रहते हुए भी युद्ध के समय उपस्थित घुड़सवारों को संख्या आदि में भी परिवर्तन होते रहते थे[3]। विलियम इरविन ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'The Army of the Indian Moghuls' में इकसपह और दूसपह पर इस प्रकार अपना मन्तव्य व्यक्त किया है—

These mounted officers might be two-horse (*duaspah*) or only one horse (*Yakaspah*) men. Working on these Distinctions we get the following scheme of Pay—

Duaspah suwar : Where inclusive of the officers own

---

१. History of Shahjhan—B.P. Saksena, Page 285. २. मुगलकालीन भारत—डॉ० आशीर्वादीलाल सक्सेना, पृ० ५७०। ३. डॉ० रघुबीरसिंह—राजस्थान भारती, भा० ६ अं० १ पृ० ८ (टिप्पणी)।

retainers (*Khasha*) there were one huudred men present per hundred of rank, Pay was drawn at *duaspah* rates.

But if the number were under fifty per 100 of rank, pay was passed to the *hazari* as if he were a mounted *sadiwal*[1]; subject to restoration to *duaspdh* pay when his muster again conformed to the standard.

Yakaspah : If including *Khasha* men there were fifty men present per hundred of rank full pay was given; if only thirtyone or under, the hazari was paid as a *Sadiwal Piyadah* (unmounted) and certain other deductions were made.[2]

उपरोक्त दोनों शब्दों के साथ बावरदी शब्द भी प्रयुक्त हुआ है,[3] जिसका अर्थ होता है 'सुयोग्य परन्तु दरिद्री सैनिक, जिन्हें घोड़ा रखने के लिये वेतन मिलता था, जागीर भी दी जाती थी परन्तु जिनके घोड़े दागे नहीं जाते थे[4]।

सैनिकों के वेतन और सेना के निरीक्षण आदि से सम्बन्धित अनेक नियम बने हुए थे जिनका पालन मनसबदारों को करना पड़ता था। मनसबदारों को अपनी सेना में सैनिक भर्ती करने का पूरा अधिकार था। विशेषतया वे अपने कुटुंब के लोगों को प्राथमिकता दे सकते थे।

कुल मिलाकर मनसबदारों को खूब अच्छा वेतन मिलता था।[5] उनको अच्छी सेवाओं के उपलक्ष में पद-वृद्धि तथा पुरष्कार मिलते रहते थे। सेवाओं में असावधानी करने पर अथवा किसी राजनैतिक कारण से सम्राट के असंतुष्ट होने पर पद में कमी भी कर दी जाती थी। ऐसी स्थिति में उनके मनसब के आधार पर दिये गये परगनों में भी उसी समय कटौती कर दी जाती थी।

मनसब के अंतगर्त नियत सेना की संख्या के अतिरिक्त शासक को अपने राज्य की सुरक्षा के लिये भी पर्याप्त सेना रखनी पड़ती थी। शासकों को साम्राज्य की सेवा में आदेशानुसार सुदूर प्रांतों में ससैन्य जाना पड़ता था और कई वर्षों तक वहीं रहना पड़ता था। पीछे छोटे-बड़े सीमा-सम्बन्धी विवाद आंतरिक संघर्ष आदि होते ही रहते थे, जिन्हें प्रधान, हाकिम आदि सेना-सहित

---

१. जिसके मनसब के आगे 'सदी' लगता हो। 2 The Army of the Indian Moghuls—William. Irvine, Page 23-24. ३. पृ० १५३। ४. डॉ० रघुवीरसिंह, राजस्थान भारती—भाग ६, अंक १, पृ० १०। ५. डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत पृ० ५७१।

र दबाते थे। इस फौज में प्रायः यहां के जागीरदरों द्वारा चाकरी में दिये सैनिक भी रहते थे। सभी परगनों में इस प्रकार की व्यवस्था रहती थी, के अंतर्गत प्रत्येक जागीरदार की ओर से राज्य सेवा के लिये निश्चित संख्या नेयत किये गये घुड़सवार, शुतरसवार आदि रहते थे।[१]

युद्ध—मुगल साम्राज्य के लिये यहां के शासकों द्वारा बड़े-बड़े युद्ध लड़े गये, नका उल्लेख इस ग्रंथ में यथाप्रसंग किया गया है। परन्तु युद्धों का विस्तृत ब्योरा ों पर भी नहीं दिया गया है। मारवाड़ राज्य के कुछ सीमावर्ती राज्यों और तरिक संघर्षों का कहीं-कहीं विस्तार से वर्णन अवश्य किया गया है जिससे उस नय की युद्ध-प्रणाली, सैनिक-संगटन और अधिकारियों की सूझ-बूझ का कुछ रिचय हमें मिलता है। राव मालदे की मेड़ता पर चढाइयां, उदयसिंह की लोधी पर चढ़ाई, नैणसी की पोकरण पर चढाई, चंद्रसेन का अकबर की फौज मुकाबला, सीवाना के किले की रक्षार्थ कल्ला का प्राणोत्सर्ग आदि कुछ ल्लेखनीय युद्ध हैं, जिन पर लेखक ने विस्तृत प्रकाश डाला है। युद्ध-कला की ष्टि से इनका वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है—

१. खुले मैदान में दोनों पक्षों की सेनाओं का युद्ध—खेत बुहार लड़णो[२]।

२. पहाड़ों में छापामार प्रणाली द्वारा युद्ध—भाखर सभणो[३], झालणो।

३. किले में सुरक्षित रह कर मुकाबला करना—गढ़ सभणो, गढ़ झालणो[४]।

४. रात्री को हमला बोलना—राती वाहो[५]।

सेना जब युद्ध के लिये गंतव्य स्थान की ओर प्रयाण करती थी तो सम्बन्धित अधिकारी रास्ते में पड़ने वाले जागीरदारों को विशिष्ट व्यक्ति के साथ आगे संदेश भिजवाता था, जिससे वे ठीक समय पर अपने सैनिक लेकर फौज में शामिल हो जावें। मु० नैणसी ने जब पोकरण पर चढाई की थी तो उसने इसी प्रकार की व्यवस्था की थी[६]। उस समय लोगों का शकुन में बड़ा विश्वास था। ठीक शकुन न होने पर कई बार फौज आगे बढने से रोक दी जाती थी।[७] हमला करने के पहले परिस्थिति के अनुसार फौज को कई भागों (अणियां) में बांट दिया जाता था[८] और प्रत्येक भाग एक जिम्मेदार पदाधिकारी को सौंपा जाता था।

---

१. पृ० ३३२, ३३३, ३३४, (भाग २)। २. द्रष्टव्य पृ० ३। ३. ११७। ४. पृ० ११५, ६४ (भाग २) २१६ (दो०) २६४-२६५ (भाग २)। ५. पृ० ७५, ४४ (भाग २), २२० (भा० २)। ६. १३८। ७. १२०-१२१। ८. २६६ (भाग २)।

हमला करते समय नगारा बजाया जाता था[१] जिससे सभी लोग सावधान हो जावें तथा अपने सैनिक युद्ध के लिए सन्नद्ध हो जावें। युद्ध में प्रायः तीर, तलवार, भाला, कटारी, गुरज, बन्दूक, तोप आदि अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग होता था। युद्ध करने के पहले शत्रु की सैनिक-शक्ति व आंतरिक स्थिति का पता लगाने के लिये जासूस (हेरू) छोड़े जाते थे।[२] अनेक बार इन जासूसों की चतुराई से कई गोपनीय तथ्यों का पता लग जाने के कारण शत्रु को परास्त करने में सफलता प्राप्त होती थी।

जब विरोधी किसी सुदृढ़ दुर्ग में युद्ध की सामग्री का प्रबंध आदि करके मुकाबला करने को कटिबद्ध हो जाता था तो किले को तोड़ना बड़ा दुष्कर कार्य होता था। ऐसी स्थिति में सुरंग अथवा तोपों द्वारा किले के किसी कमजोर भाग को क्षतिग्रस्त करने का प्रयास किया जाता था। ऐसे अवसर पर शत्रु की मार से बचने के लिये मोरचों की पद्धति काम में ली जाती थी।[३] कई बार बड़े मजबूत किले किसी भेदिये द्वारा भेद दे देने पर सहजता से जीत लिये जाते थे।[४] दोनों पक्षों के लिये विकट स्थिति बन जाने पर उनके बीच चतुर व्यक्ति को भेजकर समझौता-वार्ता के भी प्रयास कई बार होते थे।[५] समझौते के अनुसार यदि किले वाला पक्ष किला खाली करके जाता था तो प्रायः वे विपक्षी से प्राणों की रक्षा का वचन मांगते थे जिसे 'धरम दुवार निकलना' कहते थे[६]। ऐसा संभव न होने पर वे केसरिया वस्त्र धारण कर किले के द्वार खोलते थे और लड़ते हुए वीर गति प्राप्त करते थे।[७] स्त्रियां जौहर कर अपने को अग्नि के समर्पण कर देती थीं[८] जिससे वे विधर्मियों के हाथों में न पड़ें। विजयी पक्ष सैदाने (वाद्य विशेष) बजा कर प्रसन्नता व्यक्त करता हुआ अपने विजय की घोषणा करता था[९] तथा अपने स्वामी के नाम की दुहाई चारों ओर फेर कर अपना अधिकार कायम करता था।

नैणसी द्वारा किये गए इन युद्ध-वर्णनों से पता चलता है कि युद्ध का तरीका वही परम्परागत था। परन्तु बंदूक और तोप आदि के आविष्कार के कारण उसमें कुछ परिवर्तन अवश्य हो गये थे। व्यक्तिगत पराक्रम, शस्त्र-संचालन की निपुणता, घुड़-सवारी और रसद की व्यवस्था का उस समय विशेष महत्व था।

---

१. पृ० १२०। २. पृ० ११५, पृ० ४ (भा० २), पृ० ४४ (भा० २)। ३. पृ० ३०३ (भा० २)। ४. पृ० २२० (भा० २)। ५. पृ० ११८, पृ० ७ (भा० २)। ६. पृ० ६४ (भा० २), पृ० २१६ (भा० २)। ७. पृ० ५४ (भा० २)। ८. पृ० २२० (भा० २)। ९. पृ० ५९ (भा० २)।

सुरक्षा की दृष्टि से किलों को बड़ा महत्व दिया जाता था क्योंकि उस समय सुदूर प्रान्तों की रक्षा के लिये कई स्थानों पर चौकियां कायम की जाती थीं। जिससे वे अपनी सामग्री व परिवार आदि को उनमें सुरक्षित रखकर युद्ध-कार्य कर सकें। तथा शत्रु से घिर जाने पर भी दूसरी सहायता पहुंचने तक उनका मुकाबला कर सकें। इसलिये जब तक दुर्ग को जीता नहीं जाता था तब तक उस क्षेत्र की विजय कोई विशेष मायने नहीं रखती थी।

किलों के इस महत्व के कारण ही प्राय: प्रत्येक शासक ने नये किले बनवाने के साथ-साथ पुराने किलों की मरम्मत करवाई और उनमें जलाशय आदि भी बनवाये। राव मालदे की देन इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है[1] क्योंकि उन्होंने न केवल जोधपुर के किले में सबसे अधिक कार्य करवाया अपितु सुदूरवर्ती किलों तक में कई परिवर्तन करवाये और कितने ही नवीन किलों व कोटड़ियों का निर्माण करवाया। यहां तक कि अजमेर के किले में भी पानी की नई व्यवस्था उन्होंने करवाई।

इस काल में राजपूतों की युद्ध-नीति में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन राव चंद्रसेन ने किया। नैणसी के विवरण से पता चलता है कि उसने पहाड़ों में रह कर छापामार-प्रणाली अपनाई क्योंकि अकबर जैसे शक्तिशाली सम्राट की विशाल फौज का खुले मैदान में मुकाबला करना न तो संभव था और न उसमें कोई बुद्धिमानी ही थी। आंतरिक विग्रह और साधनों की कमी के कारण उसे अपने खोये हुए राज्य को प्राप्त करने में सफलता नहीं मिल सकी। परन्तु उसने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और बराबर उसका मुकाबला करता रहा इसका मुख्य श्रेय उसकी युद्ध-प्रणाली को ही है। इसी प्रणाली के द्वारा आगे जाकर राणा प्रताप, राठौड़ दुर्गादास और शिवाजी जैसे स्वतंत्रता-प्रेमियों ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की।

साहित्य, धर्म और संस्कृति

साहित्य—राजस्थान ने भारतीय इतिहास को न केवल शौर्य और वीरत्व की गाथाओं से अलंकृत किया है अपितु साहित्य, धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में भी उसकी अनुपम देन है। राव सीहा से लेकर जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह तक का इतिहास हमें बताता है कि राजस्थान ने मृत्यु के साथ खिलवाड़ करके

---

१. पृ० ४५।

ही जीवन के वास्तविक मूल्यों की स्थापना की है और उसका जीवन्त चित्रण यहां के साहित्य की अद्वितीय विशेषता है।

इस साहित्य की ओर आज के विद्वान अवश्य आकृष्ट हुए हैं पर जब तक उस समय की सामाजिक परिस्थितियों और कवियों की वास्तविक जीवनी के तथ्यों को गहराई से नहीं समझा जायगा तब तक उनकी रचनाओं के साथ तादात्म्य स्थापित नहीं हो सकेगा और न उनका सही मूल्यांकन करने में ही कोई विद्वान सफल हो सकेगा। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये नैणसी के इस ग्रंथ में विपुल प्रामाणिक सामग्री संग्रहीत है।

मध्यकालीन राजस्थान का साहित्य डिंगल व पिंगल दोनों भाषाओं में लिखा गहा हैं। डिंगल विशेष रूप से चारणों की भाषा रही और पिंगल को भाटों ने अपनाया। दोनों ही जातियों को यहां राज्याश्रय प्राप्त था। परन्तु चारणों के साथ राजपूतों के परम्परागत विशिष्ट सम्बन्ध होने से उन्हें विशेष प्रश्रय मिला।[1] चारण जाति का मारवाड़ में आगमन कोई १३वीं शताब्दी में गुजरात की ओर से हुआ था। यहां के शासकों ने खुले हृदय से उनको प्रश्रय देकर सम्पन्न बनाया। यही कारण था कि मारवाड़ शताब्दियों तक डिंगल काव्य का केन्द्र रहा जिससे राजस्थान के अन्य राज्यों की अपेक्षा यहां का साहित्य अधिक सम्पन्न बन सका।

इन कवियों को सम्मानित करने के लिये न केवल करोड़-पसाव, लाख-पसाव, हाथी, घोड़े, रकम, कुरब व पद आदि ही दिये गये अपितु पीढ़ियों के जीवन-यापन के लिये ग्राम व भूमि तक प्रदान की गई।

नैणसी ने मारवाड़ के ऐतिहासिक वृत्तांत में तो अनेक कवियों का उल्लेख प्रसंगानुसार किया ही है परन्तु प्रत्येक परगने में चारणों को प्राप्त सांसण के गांवों की अलग से सूची देकर उनके सम्बन्ध में पूरी जानकारी दी है यथा—किस शासक अथवा सामंत ने किसे यह ग्राम दिया और इस समय उसके वंशजों में से कौन व्यक्ति विद्यमान है तथा गांव की पैदावार आदि क्या है। इस प्रकार की विश्वस्त और निश्चित सूचना के आधार पर न केवल अनेक ज्ञात-अज्ञात कवियों के समय की ही जानकारी मिलती है अपितु उनकी आर्थिक परिस्थितियां वंश-परम्परा और राजपूतों की कुछ शाखाओं तथा घरानों के साथ उनके सम्पर्क व आपसी सम्बन्धों का भी पता चलता है।

---

1. इसका एक मुख्य कारण चारण-कुलोत्पन्न देवियों में यहां के क्षत्रियों की गहन आस्था भी था।

क्षत्रियों के साथ चारणों का अटूट सम्बन्ध रहा है इसलिये न केवल शान्ति के समय अपितु विपत्ती के समय भी ये उनके साथ रहे हैं। इस प्रकार राजनीतिक युद्ध और सन्धि-विग्रह में भी अनेक बार इस जाति के व्यक्तियों ने हाथ बंटाया है। अतः क्षत्रियों के अतिरिक्त अन्य किसी जाति का दिया हुआ सांसण ये स्वीकार नहीं करते थे। इसके एक दो अपवाद ही इस ग्रंथ में मिलते हैं[1] जिससे उस समय उनकी मनःस्थिति का पता चलता है।

चारणों को दिये गये ग्राम पुश्तैनी तौर पर उनके वंशजों के पास ही रहते थे और उनसे किसी प्रकार का लगान अथवा सैनिक सेवाएं आदि नहीं ली जाती थीं। पूर्वजों द्वारा उदक में दी हुई भूमि में किसी प्रकार का दखल न देना उस समय की एक विशिष्ट धर्म सम्मत मान्यता थी। और उसका निर्वाह भी प्रायः सभी शासकों ने किया परन्तु राजा उदयसिंह के समय में एक अपवादस्वरूप घटना अवश्य घटी, जिसके अनुसार कुछ विशेष कारणों से उसने चारणों और ब्राह्मणों के अनेक ग्राम जब्त कर लिये थे।[2]

इस प्रकार उस समय की इस विशिष्ट जाति की सामाजिक, आर्थिक और परम्परागत मान्यताओं का अच्छा दिग्दर्शन इस ग्रंथ में है। चांनण खिड़िया, बारहठ आसा, दुरसा आढा, अपा बारहठ, नरहरिदास बारहठ, किसना आढा जैसे विख्यात कवियों की जीवनी पर भी इस ग्रंथ से नया प्रकाश पड़ता है।

चारणों के अतिरिक्त ब्राह्मण और भाट कवियों को भी ग्राम, कुए तथा जमीन आदि प्रदान की गई है उनके सम्बंध में भी प्रामाणिक जानकारी इस ग्रंथ द्वारा मिलती है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि राठौड़ों के राज्य की यहां स्थापना से लेकर महाराजा जसवंतसिंह तक के अधिकांश कवियों के सम्बन्ध में इस ग्रंथ में बड़ी उपयोगी सामग्री लेखक ने संकलित की है। महाराजा जसवंतसिंह तो कवि और रीति-काव्य के आचार्य थे ही, नैणसी स्वयं भी कवि था, इसलिये उसने कवियों आदि के बारे में कहीं-कहीं विशेष रूप से जानकारी प्रस्तुत की है जो राजस्थानी साहित्य के क्रमबद्ध विकास के अध्ययन में असाधारण महत्व रखती है।

धर्म—भारतीय संस्कृति का मूलाधार धर्म रहा है। इसलिये धर्म का निर्वाह तथा उसकी रक्षा हमारे पूर्वजों का सर्वोच्च आदर्श था। राजस्थान

---

१. द्रष्टव्य, पृ० ५३। २. पृ० ७८-७९।

के शासकों और प्रजा ने धर्म की मर्यादा की रक्षार्थ बहुत बड़े त्याग और तपस्या का जीवन मध्यकाल में व्यतीत किया है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि मंदिरों, पवित्र तीर्थ-स्थानों, मूर्तियों और स्मारकों की रक्षा के लिये यहां के वीरों ने बड़े से बड़े बलिदान किये हैं। गौ, ब्राह्मण और स्त्री के सम्मान के लिये उन्होंने प्राणों की बाजी लगा देने में भी कभी संकोच नहीं किया। इस ग्रंथ में भी नैणसी ने यथाप्रसंग ऐसी कुछ घटनाओं का उल्लेख किया है। यह पक्ष धर्म-सम्बंधी पवित्र उपकरणों की रक्षा से सम्बन्ध रखता है। परन्तु धर्म के पोषण और उत्थान के लिये उस समय किये गये रचनात्मक कार्यों का भी कम महत्व नहीं है। परगनों के गांवों के वृत्तांतों से प्रकट होता है कि प्रत्येक परगने में से अनेक ग्राम, कुए, खेत आदि ब्राह्मणों को दान में दिये गये थे[1] जिनका उपभोग वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी करते रहे हैं। इतना ही नहीं राठौड़ों के आगमन के पहले भी जो भूमि इस प्रकार दान करदी गई थी वह उनके वंशजों के पास से नहीं ली गई।[2] व्यक्ति विशेष के अतिरिक्त कितने ही मंदिरों और देवस्थानों के सेवा-खर्च के लिये भी गांव व भूमि प्रदान की गई। गायों के लिये जागीर की भूमि में से अनेक गांवों में गोचर-भूमि (चारागाह) छोड़ने का भी उल्लेख है[3]। सनातन धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखते हुए भी शासकों की धार्मिक उदारता के कुछ उदाहरण इस ग्रंथ में मिलते हैं। महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) ने अजमेर के ख्वाजा के पीरजादे को भी मेड़ता परगने का ग्राम खांतोलाह प्रदान किया था[4], यह इसका एक प्रमाण है।

यहां की जनता के धार्मिक संस्कारों के निर्माण में लोक-देवताओं का भी बड़ा महत्व रहा है। लेखक ने इस प्रकार के देवताओं का उल्लेख अनेक स्थलों पर किया है। १४-१५वीं शताब्दी में अवतरित होने वाले मारवाड़ के प्रसिद्ध पांचों पीरों[5] —पाबू, हड़बू(भू), रांमदे, गोगादे तथा मेहा (मांगळिया) के

---

१. राजस्थानी भाषा में ऐसी जमीन को डोळी की भूमि कहा गया है। २. पड़िहारों तथा चौहानों द्वारा दान में दिये गये अनेक गांवों का उल्लेख इस ग्रंथ में है जिन्हें बाद में भी बहाल रखा गया था। दान प्राप्त-कर्ता का कोई वंशज न रहने पर या उस गांव की एवज में दूसरा दान दे देने पर अथवा किसी गंभीर राजनैतिक कारण से ही इस प्रकार के गांवों में कुछ रद्दोबदल हुआ है। ३. छोटे जागीरदारों तथा भोमियों के लिये ग्राम आदि दान [illegible] नहीं था। अतः उन्होंने कुआ, खेत या गोचर भूमि ही दान की है।
४. [illegible]
५. [illegible]

ऐतिहासिक परिवेश में प्रस्तुत इस प्रकार के विभिन्न संकेत यहां के जन-जीवन में व्याप्त धार्मिक विश्वासों के मूलाधार और तत्सम्बन्धी अनेक मान्यताओं का गहन अध्ययन करने में बहुत बड़ी सहायता पहुंचाते हैं।

संस्कृति —

राजस्थान सन्त, सती और सूरमाओं का देश रहा है। जो समाज संतों द्वारा निर्देशित, सतियों द्वारा पोषित और सूरमाओं द्वारा रक्षित होता है उसकी संस्कृति निश्चय ही बेजोड़ होती है। लेखक ने अनेक सन्तों, सतियों और सूरमाओं की वास्तविक जानकारी यहाँ की धरती के संदर्भ में दी है। साथ ही यहाँ के जन-जीवन की भौतिक परिस्थितियों का भी यथातथ्य विवरण दिया है।

प्रत्येक परगने के प्रमुख कस्बे के वृत्तान्त के साथ वहाँ की आबादी की संख्या जातियों के अनुसार दी है जिससे उस समय वहां बसने वाली विभिन्न जाति के

---

१. द्रष्टव्य—चारण पत्रिका, भा० १, अंक ३-४।

२. आवड़ तूठी भाटियां, कामेही गौड़ांह।
श्री बरवड़ सीसोदियां, करनल राठौड़ांह॥

लोगों की स्थिति तथा उनके पेशों के प्रचलन का अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रत्येक युग में आर्थिक एवम् राजनैतिक कारणों से जातियों की सामाजिक स्थित में परिवर्तन होते रहे हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण इस ग्रंथ में हमें मिलता है। राठौड़ों (कन्नौजिया) के आगमन के पहले यहां जिन क्षत्रिय जातियों का अधिकार था वे धीरे-धीरे उनसे परास्त होकर राजपूत समाज की साधारण श्रेणी में आ गये। राव जोधाजी ने जब मारवाड़ पर अच्छी तरह शासन कायम कर लिया और यहाँ की धरती अपने भाइयों व लड़कों आदि में बाँट कर उन्हें अलग-अलग भागों में बसा दिया तब से मारवाड़ के राज्य में उन्हीं के परिवार का राजनैतिक प्रभुत्व कायम करने के लिए दरबार में दो मिसलें कायम की गईं जिसके अनुसार बांई मिसल में उनके लड़कों और उनकी संतान को बैठने का अधिकार था और दांई मिसल में उनके भाइयों तथा उनकी संतान को बैठने का अधिकार निश्चित किया गया। यही परम्परा जोधपुर राज्य के विलीनीकरण तक बराबर चलती रही। सींधल, सांखला, कोटेचा, आसायच, ईंदा, चौहान, गोहिल, कोठेचा आदि जातियों का राजनैतिक प्रभुत्व समाप्त हो गया था[1]। अतः उनके पास जागीर भी साधारण ही रह गई थी। आगे जाकर तो विभिन्न गांवों में उनके पास भोमीचारे के खेत आदि ही रह गये और कई लोग साधारण खेतीहर राजपूत रह गये जिससे वे मुकाता आदि चुका कर या पसायता के तौर पर जागीरदार को विशिष्ट अवसरों पर चाकरी देकर कुछ जमीन अपने लिये बोते थे। गांवों के वृत्तांत में नैणसी ने इस प्रकार के पर्याप्त संकेत दिये हैं जिनसे इस बात की पुष्टि होती है।

राजपूतों की इन जातियों में से कुछ कबीलों की स्थिति और भी निम्नतर होती गई और उन्होंने जिस पेशे को अपनाया उसी के अनुसार कालान्तर में उनकी जाति निश्चित हो गई और उनके वैवाहिक सम्बन्ध राजपूतों से नहीं रहे तथा रीति-रिवाज में भी अन्तर आता गया[2]। अतः जातियों के उत्थान और पराभव के मुख्य कारणों के अध्ययन की दृष्टि से इस ग्रंथ की अपनी उपयोगिता है।

परगनों के ऐतिहासिक वृत्तांत में मुख्यतया राजपूत-समाज की तत्कालीन मान्यताओं पर प्रसंगानुसार कुछ प्रकाश मिलता है। स्वामिभक्ति, कष्ट-सहिष्णुता,

---

१. द्रष्टव्य, पृ० ३३। २. द्रष्टव्य, पृ० ४१।

मध्यकालीन राजस्थान की संस्कृति पर मुगल संस्कृति का काफी प्रभाव पड़ा है। मारवाड़ के शासकों के हाथ से जोधपुर कई बार मुगलों ने छीना और उनका राज्याधिकार यहां रहा। मारवाड़ के परगनों के इतिहास से हमें ज्ञात होता है कि प्रायः सभी परगने किसी न किसी समय में मुगलों के अधिकार में अवश्य रहे जहां मुगल साम्राज्य का सूबेदार अथवा अन्य कोई अधिकारी रहता था। ऐसे समय में वहां अनेक मस्जिदें बनीं, मुसलमान लोग स्थायी तौर से यहां बसने लगे और यहाँ की जातियों के सम्पर्क में आए तथा अनेक क्षत्रिय व क्षत्रियेतर जातियों के लोगों ने किसी न किसी कारण से मुसलमान धर्म भी अंगीकार किया। ज़नगणना के आंकिक विवरण देखने से यह बात भली भांति स्पष्ट हो जाती है।

---

१. राव मालदे की फौज ने जब सीवाने का किला घेर लिया और राणा डूंगरसी घबरा गया तब उसके सामन्त मदा मेरावत की स्त्री ने अपने पति से कहा कि तू किला प्राणोत्सर्ग करके फिर दे। मदा ने यही किया और पत्नी सती हुई। पृ० २१९ (भा० २)।

भाषा और शैली

नैणसी ने यह ग्रंथ विशुद्ध मारवाड़ी में लिखा है जिसे पश्चिमी राजस्थानी कहा जा सकता है। आधुनिक भारतीय भाषाओं की गद्य-परम्परा में प्राचीनता की दृष्टि से राजस्थानी का विशिष्ट महत्व है। भाषा की सम्पन्नता उसके प्रयोग के विभिन्न रूपों में देखी जा सकती है। प्राचीन गद्य की अनेक साहित्यिक व ऐतिहासिक विधाएँ राजस्थानी में उपलब्ध होती हैं। टीका, (इसके अनेक भेद हैं) अनुवाद, वचनिका, दवावैत, वात, ख्यात, पीढ़ी, वंशावली, विगत, हकीकत, खत, पट्टा, परवाना, रुक्का, लेख, याददास्त आदि रचनाएँ आज भी प्राचीन ग्रंथागारों में उपलब्ध हैं। राजस्थानी भाषा का वैज्ञानिक अनुशीलन इन रचनाओं के अध्ययन के बिना सम्भव नहीं है।

नैणसी की ख्यात तथा प्रस्तुत विगत १८वीं शताब्दी के प्रथम चरण में लिखी गई हैं। अतः मध्यकालीन राजस्थानी गद्य का अध्ययन इनके आधार पर किया जा सकता है।

नैणसी के उक्त दोनों ग्रंथ इस बात के प्रमाण हैं कि वह अपने समय में राजस्थानी गद्य के सर्वोत्कृष्ट लेखकों में था। यद्यपि साहित्य-रचना करना उसका उद्देश्य नहीं था परन्तु उसने बड़ी सधी हुई टकसाली राजस्थानी भाषा का प्रयोग अपनी लिखावट में किया है। भाषा में कितने ही परम्पराबद्ध प्रयोग होते हुए भी वह बोधगम्य है तथा व्यावहारिक होते हुए भी उसमें स्खलन व लचरपन दृष्टिगोचर नहीं होता। भाषा की स्वाभाविकता भी उसका बहुत बड़ा गुण है। उसने तत्सम, तद्भव तथा अरबी फारसी के शब्दों का स्वाभाविक रूप में प्रयोग किया है। किसी भी स्थल पर ऐसा नहीं प्रतीत होता कि किसी शब्द को उसने सप्रयत्न रखा हो। ग्रंथ विवरणात्मक ही अधिक है और उसमें भी आंकिक विवरण की प्रधानता है। राजस्व और प्रशासन सम्बन्धी शब्दावली की भी इसमें अधिकता है जिस पर फारसी भाषा का पर्याप्त प्रभाव है। परन्तु फ़ारसी के शब्दों का राजस्थानी में आकर किस प्रकार रूप-परिवर्तन हो गया इसके सुन्दर उदाहरण इस ग्रंथ में मिलते हैं। इस प्रकार के शब्दों की बहुलता नैणसी की ख्यात में भी है परन्तु मारवाड़ के भूगोल, खेती-बाड़ी, जमीन की नाप-जोख, कर-व्यवस्था, फसलें तथा प्रकृति सम्बन्धी शब्दावली का ऐसा समृद्ध प्रयोग शायद ही किसी ग्रंथ में मिले। इनमें भी जो आंचलिक शब्दावली का प्रयोग लेखक ने किया है वह विशिष्ट महत्व रखता है क्योंकि उस समय के अन्य ग्रंथों में ऐसे प्रयोगों का मिलना कठिन है।

लिखी है।

जहां तक गांवों के आंकिक विवरण आदि का प्रश्न है, उसने यह सामग्री प्रत्येक परगने के हाकिमों के मारफत, कानूनगोओं, चौधरियों, जागीरदारों, मुंशियों आदि के द्वारा शामिल करवाई होगी और उसकी प्रामाणिकता के लिए दीवान के कार्यालय के रेकार्ड से भी मिलान किया होगा। नैणसी ने मारवाड़ की दीवानगी काफी लम्बे समय तक की और उसके पहले वह कई परगनों की हाकिमी कर चुका था। अतः उसे मारवाड़ के हर भाग में भ्रमण के पर्याप्त अवसर मिले हैं। जिससे अनेक कस्बों और गांवों सम्बन्धी तथ्यों का प्रत्यक्ष सत्यापन करने की भी सहूलियत उसे थी। इस प्रकार उसने संकलित सामग्री को और अधिक प्रामाणिक रूप दिया होगा।

नैणसी का पिता जयमल महाराजा गजसिंह के समय राज्य के प्रमुख अधिकारियों में था। उसने कई परगनों की हाकिमी की थी तथा बाद में दीवान के पद तक पहुंच गया था[1]। अतः बहुत सम्भव है नैणसी ने अपने पिता के साथ रह कर भी बचपन व किशोर अवस्था में मारवाड़ संबंधी अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त की होगी। अनेक गांवों और कस्बों से वह उसी समय परिचित हो गया होगा तथा उस समय के लोगों से सुनी हुई बातों ने भी आगे जाकर उसे सहायता पहुंचाई होगी।

नैणसी का भाई सुन्दरसी भी अपने समय का महत्त्वपूर्ण व्यक्ति रहा है। वह भी इतिहास-प्रेमी[2] और कवि था। अनेक परगनों में उच्च पदों पर उसने काम किया था और कई युद्धों में भाग लिया था अतः उसकी जानकारी से भी नैणसी ने लाभ उठाया ही होगा।

ग्रंथ का महत्त्व

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि यह ग्रंथ मारवाड़ के इतिहास, भूगोल, खेती, जनगणना, गांवों की स्थिति, सेना, युद्ध, राज्य-व्यवस्था, प्रशासन, राजस्व-नीति, व्यापार, साहित्य, भाषा, धर्म, संस्कृति, मुगलों का प्रभाव आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों की प्रामाणिक जानकारी देने वाला है।

---

१. ओझा—मुहणोत नैणसी की ख्यात—(भूमिका-वंश-परिचय) पृ० २।
२. द्रष्टव्य—ऐतिहासिक बातां (परम्परा) सं० नारायणसिंह भाटी।

उपयुक्त स्थानों पर कहावतों और मुहावरों का प्रयोग करने में भी लेखक बड़ा निपुण है जिससे उसकी वर्णनात्मक शैली में भी सर्वत्र निखार आ गया है। युद्ध-वर्णन और संवादात्मक शैली के स्थलों में विशेष सजीवता है जिसमें लेखक का विस्तृत लौकिक ज्ञान और उस समय का सामाजिक वातावरण झांकता है।

गांवों के वृत्तांत में वाक्यों की संक्षिप्तता और नपी-तुली शब्दावली का प्रयोग शब्दों की मितव्ययता को प्रकट करता है। इस ग्रंथ की विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली न केवल भाषा विज्ञान' के विद्वानों के लिए अपितु समाज-शास्त्रियों के अध्ययन के लिए भी पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करती है।

ग्रंथ-लेखक के साधन

था तथा कई युद्धों तथा महत्त्वपूर्ण कार्यों में उसने स्वयं भाग लिया था अतः उस समय की बहुत-सी घटनाएं अपनी निजी जानकारी के आधार पर ही लिखी हैं।

जहां तक गांवों के आंकिका विवरण आदि का प्रश्न है उसने यह जानकारो प्रत्येक परगने के हाकिमों के मारफत, कानूगोओं, तफेदारों, जागीरदारों, मुनीमों आदि के द्वारा शामिल करवाई होगी और उसकी प्रामाणिकता के लिये दीवान के कार्यालय के रेकार्ड से भी मिलान किया होगा। नैणसी ने मारवाड़ की दीवानगी काफो लम्बे समय तक की और उसके पहले वह कई परगनों की हाकिमी कर चुका था। अतः उसे मारवाड़ के हर भाग में भ्रमण के पर्याप्त अवसर मिले हैं। जिससे अनेक कस्बों और गांवों सम्बंधी तथ्यों का प्रत्यक्ष सत्यापन करने को भी सहूलियत उसे थी। इस प्रकार उसने संकलित सामग्रो को और अधिक प्रामाणिक रूप दिया होगा।

नैणसो का पिता जयमल महाराजा गजसिंह के समय राज्य के प्रमुख अधिकारियों में था। उसने कई परगनों की हाकिमी की थी तथा बाद में दीवान के पद तक पहुंच गया था[1]। अतः बहुत सम्भव है नैणसी ने अपने पिता के साथ रह कर भी बचपन व किशोर अवस्था में मारवाड़ संबंधी अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त की होगी। अनेक गांवों और कस्बों से वह उसी समय परिचित हो गया होगा तथा उस समय के लोगों से सुनी हुई बातों ने भी आगे जाकर उसे सहायता पहुंचाई होगी।

नैणसी का भाई सुन्दरसी भी अपने समय का महत्त्वपूर्ण व्यक्ति रहा है। वह भी इतिहास-प्रेमी[2] और कवि था। अनेक परगनों में उच्च पदों पर उसने काम किया था और कई युद्धों में भाग लिया था अतः उसकी जानकारी से भी नैणसी ने लाभ उठाया ही होगा।

ग्रंथ का महत्त्व

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि यह ग्रंथ मारवाड़ के इतिहास, भूगोल, खेती, जनगणना, गांवों की स्थिति, सेना, युद्ध, राज्य-व्यवस्था, प्रशासन, राजस्व-नीति, व्यापार, साहित्य, भाषा, धर्म, संस्कृति, मुगलों का प्रभाव आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों की प्रामाणिक जानकारी देने वाला है।

---

१. ओझा—मुहणोत नैणसी की ख्यात—(भूमिका—वंश-परिचय) पृ० २।
२. द्रष्टव्य—ऐतिहासिक वार्ता (परम्परा) सं० नारायणसिंह भाटी।

अद्यावधि नैणसी का यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विशाल ग्रंथ अज्ञात था। मैंने इस ग्रंथ का उल्लेख सर्वप्रथम डॉ० टैसीटरी की ग्रंथ-सर्वेक्षण रिपोर्ट[1] में देखा था। वैसे इस ग्रंथ का उल्लेख मुंशी देवीप्रसाद, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, कालिका-रंजन कानूगो[2] आदि विख्यात विद्वानों ने भी किया है। पर उन विद्वानों में से किसी ने भी इसका विस्तृत परिचय नहीं दिया। राजस्थान के इतिहासकारों में से किसी भी इतिहासकार ने अपनी पुस्तक में इतने महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का संदर्भ के तौर पर भी उपयोग नहीं किया। केवल ओसवाल जाति के इतिहास में नैणसी का परिचय देते समय इसके अल्प अंश का उदाहरण मात्र दिया है।

अतः मेरा यह अनुमान है कि यह पूरा ग्रंथ इनमें से किसी भी इतिहासकार को प्रयत्न करने पर भी उपयोग के लिये उपलब्ध नहीं हुआ। ओझाजी ने नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित नैणसी की ख्यात की भूमिका में इस ग्रंथ का उल्लेख करते हुए इसे भी महत्त्वपूर्ण कृति बतलाया है परन्तु यह ग्रंथ उन्होंने किस संग्रह में देखा इसका उल्लेख नहीं किया। उनके निजी संग्रह में इस ग्रंथ के होने की संभावना नहीं है क्योंकि उनके संग्रह में यह ग्रंथ होता तो जोधपुर के इतिहास में इसका उपयोग वे अवश्य करते।

नैणसी की ख्यात की भी प्रतिलिपियां बहुत कम उपलब्ध होती हैं। परन्तु इस ग्रंथ की प्रतियां तो कुछ वर्षों पहले अलभ्य-सी ही थी।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस ग्रंथ की न केवल एकेडेमिक उपयोगिता थी वरन् जागीरदारों के गांवों सम्बन्धी आपसी झगड़ों, सीमा-विवादों तथा दान में दी हुई भूमि के विवादों को निवटाने में तथा करों की वसूली में यह ग्रंथ राज्य में प्रामाणिक माना जाता होगा। इसलिये जिस किसी घराने के पास इसकी प्रति होती थी उसका बड़ा महत्त्व होता था और उसके लिये यह आमदनी का जरिया भी रही हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। अतः इसकी इनीगिनी प्रतियों के मालिक किसी अन्य व्यक्ति को इसकी प्रतिलिपि नहीं करने देते होंगे क्योंकि अधिक प्रतिलिपियां हो जाने पर उनका एकाधिकार समाप्त होने का भय था।

मुंशी देवीप्रसादजी ने नैणसी को राजपूताने का अबुल फज्ल कहा करते थे[3]। ओझाजी भी मुंशीजी के कथन से सहमति प्रकट करते हैं[4]। अबुल फज्ल अपने

समय का सबसे बड़ा इतिहासकार माना जाता है। उसने अकबरनामा जैसे विशाल ग्रंथ में तैमूर-वंश का पूरा इतिहास तथा यहाँ मुगल राज्य की स्थापना के बाद शासकों की उपलब्धियों का विस्तृत वृत्तान्त है। आइने अकबरी इसी ग्रंथ का तृतीय भाग है, जिसमें अकबर के राज्यकाल के विषय में धर्म, राजनीति, प्रशासन, राज्य के महकमे, साम्राज्य के सूबों का प्रबन्ध, उनकी आमदनी, कर-व्यवस्था, सैनिक-व्यवस्था आदि कितनी ही सूचनाएँ विस्तार के साथ दी गई हैं। अबुल फज्ल को अकबर जैसे महान् सम्राट का प्रश्रय प्राप्त था और उसके पास यह ग्रंथ लिखने के लिये इच्छानुकूल साधन थे। लेखक फारसी का अच्छा विद्वान था तथा इतिहास लेखन-कला में बड़ा निपुण था। परन्तु जब हम नैणसी और अबुल फज्ल की तुलना करते हैं तो दोनों में बहुत अन्तर प्रतीत होता है। अबुल फज्ल के ग्रंथ का विषय-विस्तार नैणसी से कहीं अधिक है। फिर दोनों की परिस्थितियों में बड़ा अन्तर है। अबुल फज्ल ने अपने ग्रंथ की रचना सम्राट् के आश्रय में रह कर सम्राट् के लिये की थी परन्तु नैणसी ने अपने ग्रन्थों का निर्माण स्वान्तः सुखाय किया था। इसलिये दोनों के दृष्टिकोण में बड़ी भिन्नता है। अबुल फज्ल के पास कई ग्रंथों का अध्ययन करने तथा उन पर मनन करके यथोचित ढंग से उपयोग करने के लिये पर्याप्त समय था परन्तु नैणसी को राज्य की प्रशासनिक सेवाओं में सदा व्यस्त रहना पड़ता था। अतः दोनों लेखकों के कृतित्व में मूलभूत अन्तर होना स्वाभाविक है। इसीलिये उनकी रचनाओं की तुलना करना वैसे न्यायसंगत नहीं है। परन्तु नैणसी का प्रयास आंचलिक महत्त्व का होते हुए भी अपनी कुछ विशेषताएँ रखता है जिनका अबुल फज्ल में अभाव है। अतः उन पर संक्षेप में यहाँ विचार किया जा रहा है—

१. अबुल फज्ल ने ग्रंथ की जो विस्तृत योजना बनाई थी और जिस देश के बारे में वह जानकारी प्रस्तुत कर रहा था उसकी मुख्य भाषा संस्कृत से वह अनभिज्ञ था इसलिए अनेक बातों को गहराई में वह नहीं जा सका[1]। परन्तु नैणसी अपने इतिहास के क्षेत्र की भाषा और संस्कृति से पूर्णतया परिचित था इसलिए उसने अनेक तथ्यों की गहराई को छुआ है।

२. अनेक इतिहासकार अबुल फज्ल पर यह दोषारोपण करते हैं कि उसने जिन ग्रंथों में से सामग्री ली है उनका उल्लेख नहीं किया[2]।

---

1. Col. JARRETT, AIN-I-AKBARI, Vol. III (Revised), Page VIII. २. वही।

अद्यावधि नैणसी का यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विशाल ग्रंथ अज्ञात था। ग्रंथ का उल्लेख सर्वप्रथम डॉ० टैसीटरी की ग्रंथ-सर्वेक्षण रिपोर्ट[१] में दे॰ वैसे इस ग्रंथ का उल्लेख मुंशी देवीप्रसाद, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, क॰ रंजन कानूगो[४] आदि विख्यात विद्वानों ने भी किया है। पर उन विद्वान॰ किसी ने भी इसका विस्तृत परिचय नहीं दिया। राजस्थान के इतिहा॰ में से किसी भी इतिहासकार ने अपनी पुस्तक में इतने महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का॰ के तौर पर भी उपयोग नहीं किया। केवल ओसवाल जाति के इति॰ नैणसी का परिचय देते समय इसके अल्प अंश का उदाहरण मात्र दिया है॰

अतः मेरा यह अनुमान है कि यह पूरा ग्रंथ इनमें से किसी भी इतिहा॰ को प्रयत्न करने पर भी उपयोग के लिये उपलब्ध नहीं हुआ। ओझा॰ नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित नैणसी की ख्यात की भूमिका में इस का उल्लेख करते हुए इसे भी महत्त्वपूर्ण कृति बतलाया है परन्तु यह ग्रंथ उन॰ किस संग्रह में देखा इसका उल्लेख नहीं किया। उनके निजी संग्रह में ॰ ग्रंथ के होने की संभावना नहीं है क्योंकि उनके संग्रह में यह ग्रंथ होता ॰ जोधपुर के इतिहास में इसका उपयोग वे अवश्य करते।

नैणसी की ख्यात की भी प्रतिलिपियां बहुत कम उपलब्ध होती हैं। पर॰ इस ग्रंथ की प्रतियां तो कुछ वर्षों पहले अलभ्य-सी ही थी।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस ग्रंथ की न केवल एकेडेमिक उपयोगिता थी वरन् जागीरदारों के गांवों सम्बन्धी आपसी झगड़ों, सीमा-विवादों तथा दान में दी हुई भूमि के विवादों को निबटाने में तथा करों की वसूली में यह ग्रंथ राज्य में प्रामाणिक माना जाता होगा। इसलिये जिस किसी घराने के पास इसकी प्रति होती थी उसका बड़ा महत्त्व होता था और उसके लिये यह आमदनी का जरिया भी रही हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। अतः इसकी इनीगिनी प्रतियों के मालिक किसी अन्य व्यक्ति को इसकी प्रतिलिपि नहीं करने देते होंगे क्योंकि अधिक प्रतिलिपियां हो जाने पर उनका एकाधिकार समाप्त होने का भय था।

मुंशी देवीप्रसादजी ने नैणसी को राजपूताने का अबुल फज्ल कहा करते थे[३]। ओझाजी भी मुंशीजी के कथन से सहमति प्रकट करते हैं[४]। अबुल फज्ल अपने

कहीं-कहीं पर तो उसने दूसरे लेखकों के विचारों को ऐसा आत्मसात करके अपनी शैली में गुंफित कर दिया है कि बड़े से बड़े विद्वान के लिए यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि लेखक किस ग्रंथ के आधार पर यह बात कह रहा है। परन्तु नैणसी ने प्रायः अनेक स्थलों पर सहज भाव से साधनों की सूचना दे दी है जिससे उसके वृत्तान्तों के मूल्यांकन में सहायता मिलती है। साथ ही लेखक की ईमानदारी भी प्रकट होती है।

३. कुल मिला कर कर्नल जेरेट ने अबुल फज्ल द्वारा दिए गए अकबर-कालीन भारत के विभिन्न सूबों की आमदनी, फसलों और जमीन की पैमाइश आदि को पूरे ग्रंथ का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग माना है[1]। परन्तु नैणसी द्वारा प्रस्तुत ग्रंथ में दी गई जानकारी की तुलना जब अबुल फज्ल के उक्त सर्वेक्षण से करते हैं तो पता चलता है कि अबुल फज्ल का सर्वेक्षण वैज्ञानिक होते हुए भी बड़ा संक्षिप्त व केवल आंकिक है। नैणसी ने मारवाड़ के प्रत्येक गांव तक का विवरण प्रस्तुत किया है और उसमें भी वैज्ञानिक प्रणाली को यथासंभव निभाया है। इतना ही नहीं नैणसी ने सम्पूर्ण ग्रंथ को जिस ऐतिहासिक सामग्री से सम्प्रक्त किया है और जन-जीवन से सम्बन्धित तथ्य इस ग्रंथ में प्रकट किए हैं अबुल फज्ल में प्रायः उनका अभाव है।

४. अबुल फज्ल राज्याश्रय में रह कर अपने विचारों को पूर्ण स्वतंत्रता के साथ व्यक्त नहीं कर सकता था। वह अपने इतिहास-लेखन और सर्वेक्षण में सर्वत्र अल्लाह और सम्राट की दुहाई देना नहीं भूलता तथा अवसर मिलते ही हर नई बात के लिए दार्शनिक आदर्शवादिता की भूमिका बांधने में नहीं चूकता। इस प्रकार की बातें चाहे जितनी सारगर्भित और सदुपयोगी हों इतिहास के वैज्ञानिक अध्ययन-क्रम में बाधा पहुंचाती हैं। नैणसी की स्थिति इससे ठीक विपरीत है। उसने अपने इतिहास में राजस्थान के लगभग समस्त राजवंशों का इतिहास बिना किसी पूर्वाग्रह अथवा पक्षपात के लिखा है। यहां तक कि प्रस्तुत ग्रन्थ के ऐतिहासिक वृत्तांत में अपने स्वामी के राजवंश का यथातथ्य विवरण देने का ही प्रयत्न किया है। नैणसी की विगत में भी जिस सहज [illegible] के साथ संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित शैली उसने अपनाई है उसका उदाहरण अन्यत्र मिलना कठिन है।

यद्यपि अबुल फज्ल का बहुत बड़ा महत्व उसकी विद्वत्ता और प्रेषणीयता के कारण है तथापि नैणसी की उपर्युक्त विशेषताओं के कारण ही श्री कालिकारंजन कानूगो के इस कथन से हमें सहमत होना पड़ता है—'Libraries and Royal Patronage may produce an Abul Fazal but not a Nainsi'.[1]

हस्त प्रतियां व सम्पादन

इस ग्रंथ का संपादन दो प्रतियों के आधार पर किया गया है। दोनों ही प्रतियां राजस्थानी शोध संस्थान चोपासनी के संग्रह विभाग (ख्यात प्रकोष्ठ) में सुरक्षित हैं। प्रतियों का परिचय निम्न प्रकार है—

क. संज्ञक प्रति (आदर्श प्रति)

पत्र संख्या[२]—३६२
लिपि काल—१८ वीं शताब्दी (विक्रम) का मध्य
लिपि—सुवाच्य मारवाड़ी (एक ही व्यक्ति की लिखी हुई)
आकार—१२"×६¾"
पंक्ति संख्या—२० से २३ तक
अक्षर संख्या— १८ से २२ तक

ख. संज्ञक प्रति[३]

पत्र संख्या—४५६
लिपि काल—२० वीं शताब्दी (विक्रम) का पूर्वार्द्ध
लिपि—मारवाड़ी (एक ही व्यक्ति की लिखी हुई)
आकार—१३½"×१०"
पंक्ति संख्या—२० से २८ तक
अक्षर संख्या—२० से ३० तक

---

1. Studies in Rajput History, Page 94.
२. इसके सभी पत्र खुले हुए तथा अलग-अलग हैं। कुछ पत्र खण्डित भी हैं।
३. यह प्रति वही है जिसका उल्लेख डा० टैसेटरी ने 'A descriptive catalogue of Bardic and Historical manuscripts' part 1 (Jodhpur) में किया है। मूल ग्रंथ के प्रारंभ से पहले १२ पृष्ठों में हिंदू उमरावों के मनसब आदि की विगत तथा नागोर का संक्षिप्त वृत्तांत है। पत्र ४५३ से ४५६ तक जोधपुर सम्बंधी कुछ स्फुट वि— है। इनमें से आवश्यक अंश भाग २ के परिशिष्ट में प्रकाशित किये जायेंगे।

इन दोनों प्रतियों में से 'क' प्रति को आदर्श प्रति मान कर 'ख' प्रति का उपयोग पाठान्तर लेने में किया है। दोनों प्रतियों में कहीं-कहीं बिलकुल समानता है, यहाँ तक कि 'क' प्रति में कई स्थलों पर रिक्त स्थान छोड़ दिए गए हैं वह वृत्तांत 'ख' प्रति में नहीं मिलता। परन्तु दोनों में पर्याप्त भिन्नता भी है जिससे महत्वपूर्ण पाठ-भेद भी पाया जाता है। 'ख' प्रति में अनेक गांवों तथा व्यक्तियों के सम्बन्ध में अतिरिक्त जानकारी मिलती है। आंकिक तालिकाओं में भी कहीं-कहीं अंतर है तथा कुछ गांवों तथा व्यक्तियों की सूचियों के क्रम में भी भिन्नता है।

जहाँ तक पाठान्तर ग्रहण करने का प्रश्न है पाठान्तर के लिए ही पाठान्तर निकालने की प्रणाली मैंने नहीं अपनाई है परन्तु यथासम्भव आवश्यक पाठान्तर लेने का प्रयत्न अवश्य किया गया है। अर्द्ध विराम, विराम, अनुच्छेद आदि आवश्यकतानुसार लगा दिए हैं जो मूल में प्रायः नहीं थे।

लिपिकर्ता ने व और ब के भेद के सम्बन्ध में किसी निश्चित नीति का अनुसरण नहीं किया है, यथा—विनायक : बिनायक, वड़लो : बड़लो, वरसाळी बरसाळी आदि। प्राचीन राजस्थानी में दोनों ही रूप प्रचलित हैं अतः ऐसे शब्दों के दोनों ही रूपों को अपनाया है। इसी प्रकार एक ही गांव तथा व्यक्ति के नामों में भी कहीं-कहीं अन्तर पाया जाता है उन्हें इतने बड़े ग्रंथ में सर्वत्र एकरूपता प्रदान करना व्यावहारिक दृष्टि से सम्भव नहीं था।

राजस्थानी के प्राचीन ग्रंथों में लिपिकार प्रायः ल और ळ में लिखते समय भेद नहीं करते यद्यपि दोनों के उच्चारण में अन्तर है। इसी प्रकार अनुस्वार तथा ह्रस्व-दीर्घ के प्रयोग में भी सतर्कता नहीं बरतते। यदि लिपिकार की इन त्रुटियों को ज्यों का त्यों अपना लिया जाय तो पाठक को कठिनाई तो बढ़ती ही है कई शब्दों के तो अर्थ ही बदल जाते हैं। अतः सम्पादक को ऐसी कुछ शुद्धियां करने का अधिकार लेना पड़ा है।

यह ग्रन्थ साहित्य की सामान्य विधाओं से भिन्न कोटि का है तथा इस प्रकार के अन्य ग्रंथ भी उपलब्ध नहीं होते। अतः इसके सम्पादन में अनेक प्रकार की नई समस्याएं भी सामने आई हैं जिनका समाधान खोजने का यथाशक्य प्रयास किया गया है।

आदर्श प्रति के कुछ पत्र त्रुटित थे, उनके स्थान पर केवल 'ख' प्रति के पाठ का उपयोग करना पड़ा है, ऐसे स्थलों को कोष्ठकों द्वारा चिन्हित [ ] कर दिया गया है।

मुझे इस ग्रंथ का सम्पादन करने का आदेश मुनि जिनविजयजी महाराज ने कोई तीन वर्ष पहले दिया था। उन दिनों 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' का प्रकाशन-कार्य समापन पर था[2] अतः मुनिजी की यह इच्छा थी कि उसी प्रकार की यह दूसरी कृति भी शीघ्र ही प्रकाशित हो कर इतिहास-प्रेमियों के सम्मुख आ जाय। प्रतिष्ठान के तत्कालीन उपसंचालक श्री गोपालनारायणजी बहुरा ने भी इस कार्य को शीघ्र प्रारम्भ कर देने के लिये मुझे प्रोत्साहित किया परन्तु कार्याधिक्य के कारण इस काम के लिये मैं कुछ महीनों तक निजी समय नहीं निकाल पाया। जब मैंने इस कार्य को हाथ में लिया तो सब से पहले प्राचीन प्रति के अस्तव्यस्त पत्रों को व्यवस्थित करने में मुझे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। यद्यपि इस कार्य में दूसरी प्रति बड़ी सहायक सिद्ध हुई, फिर भी यह कार्य समय-साध्य था। इस कार्य में मेरे मित्र श्री सौभाग्यसिंह शेखावत यदि अपना कुछ समय निकाल कर मेरी सहायता नहीं करते तो इसी उधेड़-बुन में कुछ समय और निकल जाता।

प्रकाशन-कार्य प्रारम्भ होने के पश्चात भी अनेक अंतर्बाह्य कारणों से प्रथम भाग के प्रकाशन में कुछ विलंब हो गया है। दूसरा भाग शीघ्र ही पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हो सके इसके लिये प्रतिष्ठान प्रयत्नशील है।

इस ग्रंथ के प्रकाशन में प्रतिष्ठान के वर्तमान निदेशक श्रद्धेय डॉ० फतहसिंहजी ने पूर्ण रुचि लेकर मुझे प्रोत्साहित किया तथा प्रकाशन विभाग के अधिकारीगण सहृदयतापूर्वक अपना सहयोग देते रहे हैं, जिसके लिये मैं इन सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

---

१. परिशिष्ट की यह सामग्री शोध-संस्थान में संकलित 'रीत फिरियावर की वही' तथा 'विविध संग्रह' नामक ग्रंथों से ली गई है। २. सम्पादनकर्ता श्री बदरीप्रसाद साकरिया।

इन दोनों प्रतियों में से 'क' प्रति को आदर्श प्रति मान कर 'ख' प्रति का उपयोग पाठान्तर लेने में किया है। दोनों प्रतियों में कहीं-कहीं बिलकुल समानता है, यहाँ तक कि 'क' प्रति में कई स्थलों पर रिक्त स्थान छोड़ दिए गए हैं वह वृत्तांत 'ख' प्रति में नहीं मिलता। परन्तु दोनों में पर्याप्त भिन्नता भी है जिससे महत्वपूर्ण पाठ-भेद भी पाया जाता है। 'ख' प्रति में अनेक गांवों तथा व्यक्तियों के सम्बन्ध में अतिरिक्त जानकारी मिलती है। आंकिक तालिकाओं में भी कहीं-कहीं अंतर है तथा कुछ गांवों तथा व्यक्तियों की सूचियों के क्रम में भी भिन्नता है।

जहाँ तक पाठान्तर ग्रहण करने का प्रश्न है पाठान्तर के लिए ही पाठान्तर निकालने की प्रणाली मैंने नहीं अपनाई है परन्तु यथासम्भव आवश्यक पाठान्तर लेने का प्रयत्न अवश्य किया गया है। अर्द्ध विराम, विराम, अनुच्छेद आदि आवश्यकतानुसार लगा दिए हैं जो मूल में प्रायः नहीं थे।

लिपिकर्ता ने व और ब के भेद के सम्बन्ध में किसी निश्चित नीति का अनुसरण नहीं किया है, यथा—विनायक : बिनायक, वड़लो : बड़लो, वरसाळी बरसाळी आदि। प्राचीन राजस्थानी में दोनों ही रूप प्रचलित हैं अतः ऐसे शब्दों के दोनों ही रूपों को अपनाया है। इसी प्रकार एक ही गांव तथा व्यक्ति के नामों में भी कहीं-कहीं अन्तर पाया जाता है उन्हें इतने बड़े ग्रंथ में सर्वत्र एकरूपता प्रदान करना व्यावहारिक दृष्टि से सम्भव नहीं था।

राजस्थानी के प्राचीन ग्रंथों में लिपिकार प्रायः ल और ळ में लिखते समय भेद नहीं करते यद्यपि दोनों के उच्चारण में अन्तर है। इसी प्रकार अनुस्वार तथा ह्रस्व-दीर्घ के प्रयोग में भी सतर्कता नहीं बरतते। यदि लिपिकार की इन त्रुटियों को ज्यों का त्यों अपना लिया जाय तो पाठक को कठिनाई तो बढ़ती ही है कई शब्दों के तो अर्थ ही बदल जाते हैं। अतः सम्पादक को ऐसी कुछ शुद्धियां करने का अधिकार लेना पड़ा है।

यह ग्रन्थ साहित्य की सामान्य विधाओं से भिन्न कोटि का है तथा इस प्रकार के अन्य ग्रंथ भी उपलब्ध नहीं होते। अतः इसके सम्पादन में अनेक प्रकार की नई समस्याएँ भी सामने आई हैं जिनका समाधान खोजने का यथाशक्य प्रयास किया गया है।

आदर्श प्रति के कुछ पत्र त्रुटित थे, उनके स्थान पर केवल 'ख' प्रति के पाठ का उपयोग करना पड़ा है, ऐसे स्थलों को कोष्ठकों द्वारा चिन्हित [ ] कर दिया गया है।

परिशिष्ट में जोधपुर तथा कुछ अन्य स्थानों पर बनी हुई प्राचीन इमारतों, मंदिरों तथा जलाशयों-सम्बन्धी उपलब्ध जानकारी इस भाग के साथ समाहित करदी गई है, जो इस परगने के अध्ययन में सहायक सिद्ध होगी[१]।

सम्पादन में यथोचित सतर्कता बरतने पर भी ग्रंथ के विषय-वैशिष्ट्य तथा वृहदाकार को देखते हुए सम्पादन-प्रकाशन सम्बन्धी कुछ त्रुटियों का रह जाना असंभव नहीं है, अतः मैं विज्ञ पाठकों से इसके लिये क्षमाप्रार्थी हूँ।

मुझे इस ग्रंथ का सम्पादन करने का आदेश मुनि जिनविजयजी महाराज ने कोई तीन वर्ष पहले दिया था। उन दिनों 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' का प्रकाशन-कार्य समापन पर था[२] अतः मुनिजी की यह इच्छा थी कि उसी लेखक की यह दूसरी कृति भी शीघ्र ही प्रकाशित हो कर इतिहास-प्रेमियों के सम्मुख आ जाय। प्रतिष्ठान के तत्कालीन उपसंचालक श्री गोपालनारायणजी बहुरा ने भी इस कार्य को शीघ्र प्रारम्भ कर देने के लिये मुझे प्रोत्साहित किया परन्तु कार्याधिक्य के कारण इस काम के लिये मैं कुछ महीनों तक निजी समय नहीं निकाल पाया। जब मैंने इस कार्य को हाथ में लिया तो सब से पहले प्राचीन प्रति के अस्तव्यस्त पत्रों को व्यवस्थित करने में मुझे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। यद्यपि इस कार्य में दूसरी प्रति बड़ी सहायक सिद्ध हुई, फिर भी यह कार्य समय-साध्य था। इस कार्य में मेरे मित्र श्री सौभाग्यसिंह शेखावत यदि अपना कुछ समय निकाल कर मेरी सहायता नहीं करते तो इसी उधेड़-बुन में कुछ समय और निकल जाता।

प्रकाशन-कार्य प्रारम्भ होने के पश्चात भी अनेक अंतर्बाह्य कारणों से प्रथम भाग के प्रकाशन में कुछ विलंब हो गया है। दूसरा भाग शीघ्र ही पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हो सके इसके लिये प्रतिष्ठान प्रयत्नशील है।

इस ग्रंथ के प्रकाशन में प्रतिष्ठान के वर्तमान निदेशक श्रद्धेय डॉ० फतहसिंहजी ने पूर्ण रुचि लेकर मुझे प्रोत्साहित किया तथा प्रकाशन विभाग के अधिकारीगण सहृदयतापूर्वक अपना सहयोग देते रहे हैं, जिसके लिये मैं इन सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

---

१. परिशिष्ट की यह सामग्री शोध-संस्थान में संकलित 'रीत किरियावर की वही' तथा 'विविध संग्रह' नामक ग्रंथों से ली गई है। २. सम्पादनकर्ता श्री बदरीप्रसाद साकरिया।

साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने बड़ी तत्परतापूर्वक इस ग्रंथ के प्रूफ-संशोधन में अपना मूल्यवान सहयोग दिया है।

चौपासनी, जोधपुर,
स्थापना, २३-६-६८

नारायणसिंह भाटी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

श्री गणेसाय नमः ।। श्री म्हामाई जी सदा सहाय श्री परमेसर ।।

(१) वात परगनै जोधपुर री

१. आदि सहर[1] मंडोवर थौ। सासत्र माहे नै पदमपुरांण माहे वात छै। भोगसील[2] परवत मेर रो बेटौ कहै छै। तिण रौ भोगसील माहातम घणौ कहौ छै। माडलेस्युर[3] माहादेव, नागाद्रीह[4] नदी, सुरजकुंड रो घणौ महातम वषाणीयो छै।

२. मंडोवर सहर री आदि थापना मंदोदर दईत[5] री कीवी छै। इण ठोड़ मंदोदर री बेटी रावण दईत लंका रै धणी परणी छै। तिण रा आरष चंवरी रा अजेस[6] छै। तठा पछै मंडोवर केईक दिन पंवारां रै रहौ छै। धरणीवाराहा वडौ राजा बाहड़मेर हुवौ छै। तिण आप रौ भाई सांवत नुं भाईवांटै दीयौ छै। सांवत मंडोवर भोगवीयौ[7] छै। तिण री साष[8] रौ कवत :–

मंडोवर सांवत हुवौ, अजमेर सिंध सु।
गढ़ पुंगळ गजमल हुवौ, लुद्रवै भांण भु।।
जोगराज[1] धर धाट हुवौ, हासु पारकर।
अल्ह पाल्ह अरबद, भोजराज जालंधर।।
नव कौटि किराडू सु जुगत, थिर पंवारा हर थापिया।
धरणीवाराह धर भाईयां, कोट वांट जु जु[9] किया।।

---

१. जुगराज

---

1. शहर। 2. भोगिशैल। 3. मंडलेश्वर। 4. नागह्रदी। 5. दैत्य। 6. अभी तक। 7. भोगा, राज्य किया। 8. साक्षी, ऐतिहासिक घटना पर लिखे गये स्फुट काव्य को डिंगल में साख री कविता के नाम से अभिहित किया गया है। 9. अलग-अलग।

३. तठा पछै किण ही समै पंवारां सु मंडोवर छूटौ । पड़ीहारां नै मंडोवर हुवौ । तिण माहे नाहड़राव नागारजन रौ बेटौ, वडो रजपूत हुवौ । मंडोवर घणौ कमठौ[1] सारो नाहड़राव रौ संवरायो[2] थौ । नाहड़राव री मंडोवर वडी वार वार[3] कही ।[१]

नाहड़राव पड़िहार री पीढीयां...... ''यारै[२] भाट लिषाई ।

१. राजा दसरथ	२. राजा रथ[३]
३. जीणं बंध	४. विजैपाळ
५. अजगंध[४]	६. अजैपाळ
७. वडोवेण	८. नागाअरजन
९. नाहड़राव	१०. महणसी[५] राजा प्रीथीराज चहुवाण रै सांवत हुवो ।

४. नाहड़राव मंडोवर धणी[4] छै । घणी धरती नाहड़राव रै छै.। चहुवाण प्रीथीराज सोमेसर रौ बेटौ, दिल्ली धणी छै । नाहड़राव रै बेटी कंचनमाळा एक छै, सु प्रीथीराज सुं सगाई की छै । पछै नाहड़राव रै कांई मन में आई छै – हूं बेटी प्रीथीराज नुं नहीं देऊं । जिको आदमी सगाई करण गयौ हुतो तिण घणौ ही पालीयौ[5], कहौ — लाय इसड़ी न छै जिका दीवौ ले जोईजै ।[6] पिण नाहड़राव कहै—प्रीथीराज मांहे दस षोड़[7] छै । इण नुं बेटी नहीं देऊं । तरै अदावद[8] हुई । प्रीथीराज कुंवरपदै थकौ अजमेर सुं चढ ऊपर आयौ । प्रीथीराज रा डेरा गीररी हुआ, नाहड़राव रा डेरा पाटवै सोझत रै डूलवाळे हुआ । तिण दिन एक वडी वेढ़[9] हुई । चांगवाळा मेर नाहड़राव रै परवत चाकर थौ उण वडी वेढ कीवी । आदमी ५०० सुं मेर परवत कांम आयौ ।[10] दूजै दिन

---

१. वाहर वुही । २. नीलीयां रै । ३. मारथ । ४. अजघव । ५. मोहण सी ।

---

1. भवन-निर्माण कार्य । 2. संवारा हुआ । 3. प्रसिद्धि । 4. मालिक, पति । 5. मना किया । 6. यह कोई साधारण व्यक्तित्व वाला आदमी नहीं है । 7. दोष, कमियां । 8. दुश्मनी । 9. युद्ध । 10. वीरगति को प्राप्त हुआ ।

प्रीथीराज चहुवाण नै नाहड़राव मैदान बुहार लड़ीया।[1] घाव ११ चहुवाण प्रीथीराज रै लागा नै नाहड़राव रौ घणौ साथ मराणौ। वेढ प्रीथीराज जीती। नाहड़राव भागो। तरै वळे नाहड़राव पुज न सकै।[2] तरै वीच आदमी फेर भेळा कीया, वेटी दी। घावे लागे ही जे[3] प्रीथीराज उण डेरै परणीयौ। नाहड़राव आय पगे लागो[4], चाकर हुवौ। नै बेटा दोय नाहड़राव रा चाकर कर साथे लीया।[१] प्रीथीराज फिर अजमेर डोळौ ले गयौ।[5] नाहड़राव रा बेटा २ प्रीथीराज रा सांवत हुआ—१ पड़ीहार मोहणसी राजा झालीयो तद कांम आयौ। २ पड़ीहार अल्ह कनोज री वेढ में कांम आयौ, माथो वाढ[6] प्रीथीराज नुं गुदराय[7] लड़ीयौ।

५. नाहड़राव रौ भाई पीपो पिण सांवत हुवौ छै। एक वार पीपो पड़िहार पातसाहि साहिबदी झालीयो[8] छै। तठा पछे एक वार ···[२] भीमदे पाटण रौ धणी कटक कर[9] आयौ छै। दाहीमौ कै·····[३] प्रीथीराज भीमदे ऊपर विदा कीयौ। सु सोझत रौ गांव धोवलेहरे वेढ हुई। तिण वेढ नाहड़राव कांम आयो। चहुवाण प्रीथीराज मंडोवर महणसी अल्ह नुं दीयौ छै। सु प्रीथीराज नुं संवत ११५५ ग्यारैसै पचावनै साहबदी झालीयौ तठा ताउ[10] अल्ह नुं रहौ छै। तठा पछै दिली चहुवाण प्रीथीराज रौ बेटो रतनसी नुं हुई। प्रीथीराज मुवां पछै[11] वरस १८ अठारै रतनसी दिली भोगवी। तठा पछै पातसाह साहिबदी रौ बेटो पातसाह साहब गजनी तषत बैठौ। तिकौ कर फौज नै दिली ऊपर आयौ। इण फेर रतनसी कोट[12] झालीयौ।[13] सांवत चहुवाण कांन्हर[४] नरनाह रौ बेटो चहुवाण ईसरदास वडो रजपूत छै।

---

१. मेलीया। २. भोळो राजा। ३. कैवास नुं फौज वे। ४. कन्हा।

---

1. खुल कर घमासान युद्ध किया। 2. पहुँच नहीं सका। 3. घायल अवस्था में ही। 4. समर्पण किया, अभिवादन किया। 5. वधू को साथ ले गया। 6. काट कर। 7. कह कर, दिखा कर। 8. पकड़ लिया। 9. फौज ले कर। 10. तक। 11. मरने के वाद। 12. किला। 13. पकड़ा, शरण ली।

आवै । देवीजी माहारै माथै हाथ देवौ ।[1] नहीं तौ हूं देवीजी ऊपर कंवळ पूजा करसुं[2] । तरै देवीजी कहै छै – लाषो तो देवता रौ अवतार छै, तूं मांणस रौ अवतार छै । लाषो थारै हाथ आवण रौ नहीं । तरै इण निपट गाढ़ कीयौ[3], दिन ७ पांणी धांन विगर लंघण कीया ।[4] देवी प्रसन्न हुवै' तरै सातमै दिन री रात आधी'क गई, तरै देहुरा[5] आडा कींवाड़ जड़ नै तरवार काढ़ नै नस[6] ऊपर धरी, तरै देवीजी हाथ झालीया । कहै – तुं मती मरै, थारै हाथ तो लाषा री मीच[7] नहीं नै तैं अतरौ' हठ मांडीयौ म्हे तोनुं लाषा मारण रौ उपाव वतावां छां । राठोड़ सीहौ सेतरांमोत कनवज थी दुवारकाजी रो जात नुं चालीयौ छै । सु फलांणै[8] दिन पाटण आवसी, थे सांम्हा आदमी मेल्हौ । सीहौ महादेव रौ अवतार छै । सीहा रै हाथ लाषा फूलाणी री मोत छै । मूळराज रै देवीजी वांसे हाथ देनै सीष दीवी ।[9] कहौ – लाषौ मारण री करै छै तौ सीहा नुं राजी कर नै साथ ले लाषा ऊपर जावौ, लाषौ थांहरै हाथ आवसी । मूळराज देवी रा देहरा थी घरे आया । सीहा री षबर रै वासतै एक आपरो ईतबारी[10] चाकर छांनौ[11] आदमी ४० साथे देनै रा. सीहाजी साम्हौ चलायौ नै कहौ – दिन रौ दिन[12] डेरौ जठै हुवै तठा री षबर म्हांनु मेलजौ । नै वह मजल दस पांच सीहा जी भेळा हुवौ । जठै जठै डेरौ हुवैं तठा री षबर मूळराज नुं लष मेल्है छै ।[13] जिण दिन पाटण नजीक आया तरै डेरा री ठोड़ अठै सारी तयारी आपरा परधांनां नुं कहै कराई ।

१०. आप घणौ साथ साथे लेनै राठोड़ सीहा सांम्हा चढ़ीया । कोस पांच माथै मूळराज जाय सीहा सुं मिळीयौ । घणौ आदरभाव वडा ठाकुरां रौ वडा ठाकुर करै तिण तरै मूळराज जाय सीहाजी सुं

१, न हुवै । २. अवडो ।

---

1. सिर पर हाथ रख कर आशिष दो । 2. वरना मेरा सिर आपके अर्पण कर आपकी पूजा करूंगा । 3. दृढ़ संकल्प कर लिया । 4. भूखा प्यासा रहा । 5. मन्दिर । 6. गर्दन । 7. मृत्यु । 8. अमुक । 9. पीठ पर अभय हस्त देकर विदा किया । 10. विश्वासपात्र । 11. गुप्त । 12. प्रति दिन । 13. लिख कर भेजता है ।

कीयौ। साथ हुवा थका डेरा री तयारी कीवी थी तठै डेरौ करायौ। सीधौ-वाधौ[1] चार-बोर[2] अमल-पांणी[3] सारी तयारी कराई। म्हैमांनी राजा पातसाह री कीजे छै तिसड़ीं कीवी छै। राठोड़ सीहौजी आप, नै चाकर सीहा रा सारा ही राजी हुवा। म्हे कुण अै कुण, अै म्हांरी इतरी अगत सुं अगत[4] करै छै, सु कुंण वासतै? चाकरां कामदारां नुं तौ चाकरां कांमदार पूछ दीठौ।[1] उवै तौ सारा कहण लागा – म्हे तौ जांणां नहीं।

११. आथण री[5] वळे मूळराज सीहाजी रै डेरै आयौ, वीनती घणी कीवी। संवारे मुकांम कीजे। म्हारौ घर पवीत्र कीजे। मोनुं मोटौ कीजे।[6] सीहाजी तौ घणौ ही नाहाकारौ कीयौ।[7] पण मूळराज घणौ हठ कर राषीया। संवारे दिन पोहर चढ़तां आप रै घरे पाटण माहे मूळराज सीहाजी नुं सारै साथ सुधा[8] मोहौला[9] [2] में ले गया। बडा म्हैमांनी कीवी। घोड़ा काछी[10] बीस नजर गुदराया नै कपड़ौ गुदरायौ। सीहाजी री दाय आयौ[11] सु तौ राषीयौ। तठा पछै साथे हुवौ डेरै आयौ। पछै सीहौजी तौ आपरै डेरै माहे गयौ नै मूळराज नुं बारे वेसांण[12] नै बीच आपरा परधांन हुता सु फेरनै पुछायौ – थे म्हांसुं इतरी हळभळ[13] करौ छौ, सु म्हांसुं थांहारे कोई कांम हुवै सु फुरमावौ। तरै मूळराज कह्यौ – हूं म्हारी बेटी रौ नाळेर राज नुं देवां छां नै लाषै फूलांणो कछ रै धणी कन्है म्हारै बाप रौ बैर रहै छै सु...[3] वेळा ५ तथा ७ सात लाषाजी ऊपरै धरणौ कीयौ तरै देवीजो ऊपर धरणौ कीयौ तरै देवीजो मोनुं हुकम कीयौ—लाषा री मीच राः सीहाजी सेतरांमोत रै हाथ छै। सारी बात मांड कही।

१२ – सीहै कह्यौ—हिमार[14] बात परगट करणी नहीं। हुं रिणछोड़जी

---

१. पुछ दीठौ। २. मोहाले। ३. हूंतो।

---

1. रसोई आदि। 2. घोड़ों के लिए घास-दाना। 3. अफीम, तंबाखू, कलेवा आदि। 4. बढ़ बढ़ कर स्वागत। 5. सायंकाल। 6. मुझे गौरवान्वित करो। 7. इनकार किया। 8. सहित। 9. महलों। 10. कच्छ देश के। 11. पसन्द आया। 12. बैठा कर। 13. आवभगत, हेलमेल। 14. इस समय।

१५. तठा पछै इण नुं पाली रै लोगां हकीकत पूछी–थे कुण छौ, थे कठै जावौ छौ ? तरै इण आपरी हकीकत पाली रा लोगां नै सारी मांड कही। जु म्हे रोजगार नुं गुजरात जावां छां। तरै आथूण रा गांव माहे वडा आदमी था, तिणां सारां भेळा होय नै बिचार कोयौ। आंपणा गांव चोरां आगै रांधी हांडी रह सकै नहीं।[1] आंपां सासता[2] विचार करां हीज छां, दस कोस जाय नै हेक चौकी पहरै रै वासतै भेळौ रजपूत ले आवां। सु आंपणे भागे[3] घरे बैठां इसड़ो बड़ौ रजपूत भूषीयौ वडा घर रौ छौरू[4] आयौ छै। इण नुं रोजगार कर नै अवस अठै राषीजै। आ बात सारां रै दाय[5] आई। तरै पंच भेळा होय नै चार साणां[6] आदमी आसथांनजी रै डेरै मेलीया। राज संवारे कूच मतो करौ। म्हें राज रौ रोजगार कर नै अठै ही राषसां।[7] आसथांनजी पिण आ बात कबूल कीवो।

१६. पछै दिन दो पाली डेरौ रहौ। इणां रै नै अणां रै रदवदळ हुई।[8] टका ४५। कालो आसथान सौनग अज रौ पालीवाळां बांभणां कीयौ। अै पण राजी हुवा। हवेली १ गांव माहे बांभणे इण तीनां भायां नुं दीवी। चाकर साथे था तिणां नुं और ठौड़ दीवी। अै चौकी पहरौ रात दिन इण भांत करण लागा जु पाली री सींव[9] माहे कोई चोर बाट बहतो[10] नीसरै नहीं। कोई आसथांन रै नांवै लीयां[11] पालो रौ लोग कठै ही जाय आवै तिण सांम्हौ कोई जोई सकै नहीं।[12]

१७. लोग बरस १ माहे घणौ सुष पायौ। हथाळी दुयां आसथांन सोनग अज तीनां भाई पाली माहे रहै छै।[13] आसथांन रौ बडौ तिगवेड़ो नवसाद काठै जाबतौ वाझ गयौ छै.[14] पाली री पाषती गांव छै।

1. खाना खाना तक हाथ की वात नहीं। 2. निरंतर। 3. अपने भाग्य से। 4. लकड़ा, वंशज। 5. पसन्द। 6. सयाने। 7. रखेंगे। 8. विचार-विमर्श हुआ। 9. सीमा। 10. रास्ते चलता। 11. नाम लेकर भी। 12. आंख उठा कर नहीं देख सकता। 13. तीनों भाई बड़े आराम और आदर के साथ पाली में रहते हैं। 14. ससैन्य सुरक्षा की अच्छी व्यवस्था प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

तिण रा पिण चौधरी वडेरा आसथांन सुं आय मिळीया, सारां वीनती कीवी–जु राज पाली रौ चौकी पहरौ कीयौ छौ तिण तरै राज माहारो पिण चौकी पहरौ करौ। गांव गांव में आदमी १ लार आसथांन रा साथे कर ले गया नै सारा गांवां घुघरी कीवी।[1] सारा गांवां ऊपरै चीठी चलण लागी।[2] वरस २ तथा ३ इण भांत रहा। सारो परजा सुष पायौ। कोई पाली रौ पड़ीयौ तीणौ[3] उपाड़ सकै न छै। इसड़ौ जावतौ कीयौ।

१८. सोनगजी नै अजजी पिण मोटा हुवा। इणां आसथांन सुं कहाव कीयौ–[4] अठै रावळे[5] ही षरच रौ पूरौ न छै। म्हांनुं हुकम करौ तौ कठी नुं जाय नै पेट भरां। तरै आसथांन पण कहौ–माहारौ ही अठै पड़पाव[6] कोई नहीं। वरस २ तथा ३ म्हे पड़ीया रहै नै आघा काढीया। आंपां भेळा हीज कठै'क जावसां। तरै हालण री तयारी हूण लागी। तरै पाली सहर रा लोग पाषती रा गांवां रा लोग सगळा दलगीर हुआ।[7] सारा बडेरां चोधरीयां कन्है गया। कहौ–जे थे मांहरौ नै थांहरौ भलौ चाहौ छौ तौ आसथांन नु हर भांत कर अठै राषौ, मांगे सु देवौ, नै थे कवूल करसौ सु म्हे गाढ़ा राजी थका[8] परौ देसां। तरै पंचां मिळ नै आसथांनजी कन्है आया। म्हे थांनै चालण नहीं देवां। तरै आसथांन कहौ – माहारै सीरबंधी लोग नहीं। म्हे राजा रावां रा राणां रा छोरू थे ऊधड़े रीजक[9] राषौ सु म्हे पड़पण रा नहीं[10]। माहारा चाकर षेत–पात बिगर पड़पण रा नहीं। माहारा घोड़ा तीन वरस हुआ कोरड़[11] जव चिणा[1] आंषीये दोठा नहीं। माहारा छोरू राजलोक पूंष[12] फळीयां री हौसां मरै।[13] तिण सुं म्हे इण भांत रहण रा नहीं। अै हालण री उतावळ करै। लोग हालण

१. चांचड़

1. खर्च का हिस्सा देना मंजूर किया। 2. हुक्म चलने लगा। 3. तिनका। 4. निवेदन किया। 5. आपके। 6. निर्वाह। 7. दिल में दुखित हुए। 8. पूर्ण प्रसन्नता के साथ। 9. निश्चित तनख्वाह। 10. मानने के नहीं। 11. एक प्रकार की घास। 12. कच्चे सिट्टे। 13. अभाव में ललचाते रहते हैं।

दे नहीं। घणौ गाढ हुवौ।[1] तरै पलीवाळां सारां हळ दीठ[2] दु. १५ माळ री हळ १ धांन मण ५ जायां परणीयां कर दीयौ। १ होळी दीवाळी दसराहै री तहवारी मिलणो सारौ कबूल कीयौ। घर षेत चाकरां नुं पाली माहे दीया। गांव-गांव दीठ हळवा ५ धरतो उन्हाळी[3] दीन्ही। कोरड़ चांचड़ा[4] सारा वायदे। इतरौ रोजगार कर नै आसथांन नुं पाली राषीया। सोनग अज रौ लोग सांम्हौ कर चालीयौ। सोनग ईडर गयौ। अज सषोधार गयौ।

१९. आसथांन रै गांव ५० तथा ६० भोग पड़ीया।[5] दिन-दिन घणी रैत वाळौ मारग हुवौ।[6] असवार ४०० रो ठकुराइत हुई। सासता घोड़ा आवै। दिन पाधरौ[7] जिकुं करै सु बोल ऊपर आवतौ जाय।

२०. तिण समै षेड़ माहे गोहलां री ठकुराई छै। उणे आसथांनजी नै बेटी रो नाळेर राजा प्रतापसी गोहल मेलीयौ। इणा नाळेर बधाय उरो लीयौ। उठै साहौ थापीयौ।[8] तिण साहा ऊपर जाय परणीया। माहौ-माह घणौ सुष हुवौ। आसथांन चेगो[१] [9] जावै षेड़। गोहल घणा हीड़ा करै।[10] दिन दस पन्दरै उठै रहै नै सारी वात सुं उठा रा भौमीया[11] हुवा। गोहल ठाकुर आप तिकौ आळसु अमलो।[12] जेहली परधान डाभी तिकौ घणा कबीला रौ नै भणीयौ रजपूत, तिकौ भलो भांत कांम चलावै छै। सु औ आसथांन उठै आवै जाय। तरै घणो वेळा आसथांन रै डेरै जाय आवै। आसथांन उण सुं मया करै।[13] एक दिन आसथांन रै डेरै डाभी गोहलां रौ परधांन आयौ हुतौ तरै किणहीक चारण भाट डाभी री वडाई कीवी। कहौ – राजा तौ आळसु छै पिण औ भलौ परधांन

---

१. वेगो वेगो।

---

1. बहुत अधिक आग्रह हुआ। 2. प्रत्येक हल के अनुसार। 3. सिंचाई की धरती। 4. बाजरी के सिट्टे। 5. आमदनी की दृष्टि से अधिकार में आए। 6. प्रजा बढ़ने लगी। 7. दिनमान अच्छे। 8. विवाह की तिथि निश्चित की। 9. जल्दी-जल्दी। 10. खूब आदर सत्कार करते हैं। 11. पूर्ण रूप से जानकार, अधिकारी। 12. अफीमची। 13. कृपा रखता है।

छै। तिण सुं आ साहवो चालै छै। तरै डाभी फेर कां न कहौ। डाभी रै लागुवे आ वात राजा कन्है कही। तरै डाभी परधान नुं परतापसी परौ काढ़ीयौ। औ छांड आसथांन कन्है आयौ। आसथांन घणौ आदर कर राषीयौ। कितराहेक दिन आसथांन षेड़ौ लेण¹ री मन में धारी।[1] असवार ७०० री जोड़ कीवी। डाभी रौ मन हाथ लेनै[2] कुवात जीताई।[3] तरै पहली तौ डाभी हां-नाह वेळा दस वार कहौ। पछै डाभी नुं लालच दिषाळीयौ।[4] आधी धरती षेड़ै री म्हे म्हांरै हासल लेसां। आधी धरती आधो हासल म्हे थांनु देसां। डाभी इण तरै सुं वात कवूल कीवी। पछै डाभी घात वताई–[5] इण रै गोठ दीवाळी री षेड़ै थी कोस ४ छे तठै हुवै छै। तठै आंपां जाय ऊभा रहीयां सुं वेह आंपां सुं छुटी चाळां[6] मिलण आवसी। तरै आंपां इण भांत मार लेसां। म्हांरौ कवीलौ उठै घणौ छै, तिणां नुं डाभी एक तरफ समझाय नै ऊभा राषसां। पछै असवार ७०० सुं दीवाळी री गोठ ऊपरे आसथांन षेड़ै ऊपर लड़ाई रै मतै गयौ। उह जांणे नहीं। झगल माहे जी रहै छांनी सींव काढी।[7] उठै नजीक गया तरै डाभी परधांन आगै गयौ। जाय नै कहौ–आसथांनजी आया छै। तरै राजा आप भाई बेटा वडा उमराव सारा ही छूटीयां चाळां सुं सांम्हा मिलण नुं आया। डाभीयां नुं उण समझाया था–थे डाभी ऊभा रहीजौ। गोहलां रौ साथ जीवणौ छै। परधान डाभी मिळतां आसथांन नुं समझायो–डाभी डावा नै गोहल जीवणा। इतरा मांहे लोह वूहौ। गोहल मांणस २०० तथा ३०० सुं राजा कंवर भाई-बंध राहाणां²[8] सुधा मार लिया। तरवार एक धारी वुही।[9] आसथांन रौ आदमी घणौ कांम कोई आयौ नहीं। इण नुं मार नै षेड़ा ऊपर वाग ली।[10]

१. षेड़ लेण। २. राहवणा।

1. गांव लेने का मन में विचार किया। 2. मन की वात जान करके। 3. षड़यंत्र प्रकट किया। 4. दिखलाया। 5. धोखे की तरकीव वतलाई। 6. विना शस्त्र, वांहें पसार कर। 7. चुपचाप रास्ता तय किया। 8. दरोगे आदि। 9. एक गति से. बिना किसी रुकावट के। 10. घोड़ों को फुर्ती से चलाया।

दे नहीं। घणौ गाढ हुवौ।[1] तरै पलीवाळां सारां हळ दीठ[2] दु. १५ माळ री हळ १ धांन मण ५ जायां परणीयां कर दीयौ। १ होळी दीवाळी दसराहै री तहवारी मिलणो सारौं कबूल कीयौ। घर षेत चाकरां नुं पाली माहे दीया। गांव-गांव दीठ हळवा ५ धरती उन्हाळी[3] दीन्ही। कोरड़ चांचड़ा[4] सारा वायदे। इतरौ रोजगार कर नै आसथांन नुं पाली राषीया। सोनग अज रौ लोग सांम्हौ कर चालीयौ। सोनग ईडर गयौ। अज सषोधार गयौ।

१९. आसथांन रै गांव ५० तथा ६० भोग पड़ीया।[5] दिन-दिन घणी रैत वाळौ मारग हुवौ।[6] असवार ४०० री ठकुराइत हुई। सासता घोड़ा आवै। दिन पाधरौ[7] जिकुं करै सु बोल ऊपर आवतौ जाय।

२०. तिण समै षेड़ माहे गोहलां री ठकुराई छै। उणे आसथांनजी नै बेटी रो नाळेर राजा प्रतापसी गोहल मेलीयौ। इणा नाळेर बधाय उरो लीयौ। उठै साहौ थापीयौ।[8] तिण साहा ऊपर जाय परणीया। माहौ-माह घणौ सुष हुवौ। आसथांन वेगो[१][9] जावै षेड़। गोहल घणा हीड़ा करै।[10] दिन दस पन्दरै उठै रहै नै सारी वात सुं उठा रा भौमीया[11] हुवा। गोहल ठाकुर आप तिकौ आळसु अमली।[12] जेहली परधान डाभो तिकौ घणा कबीला रौ नै भणीयौ रजपूत, तिकौ भलो भांत कांम चलावै छै। सु औ आसथांन उठै आवै जाय। तरै घणो वेळा आसथांन रै डेरै जाय आवै। आसथांन उण सुं मया करै।[13] एक दिन आसथांन रै डेरै डाभी गोहलां रौ परधांन आयौ हुतौ तरै किणहीक चारण भाट डाभी री वडाई कीवी। कहौ – राजा तौ आळसु छै पिण औ भलौ परधांन

---

१. वेगो वेगो।

---

1. बहुत अधिक आग्रह हुआ। 2. प्रत्येक हल के अनुसार। 3. सिंचाई की धरती। 4. बाजरी के सिट्टे। 5. आमदनी की दृष्टि से अधिकार में आए। 6. प्रजा बढ़ने लगी। 7. दिनमान अच्छे। 8. विवाह की तिथि निश्चित की। 9. जल्दी-जल्दी। 10. खूब आदर सत्कार करते हैं। 11. पूर्ण रूप से जानकार, अधिकारी। 12. अफीमची। 13. कृपा रखता है।

छै। तिण सुं आ साहबो चालै छै। तरै डाभी फेर कां न कहौ। डाभी रै लागुवे आ वात राजा कन्है कही। तरै डाभी परधान नुं परतापसी परौ काढ़ीयौ। औ छांड आसथांन कन्है आयौ। आसथांन घणौ आदर कर राषीयौ। कितराहेक दिन आसथांन षेड़ौ लेण[१] री मन में धारी।[1] असवार ७०० री जोड़ कीवी। डाभी रौ मन हाथ लेनै[2] कुवात जीताई।[3] तरै पहली तौ डाभी हां-नाह वेळा दस वार कहौ। पछै डाभी नुं लालच दिषाळीयौ।[4] आधी धरती षेड़ै री म्हे म्हांरै हासल लेसां। आधी धरती आधो हासल म्हे थांनु देसां। डाभी इण तरै सुं वात कबूल कोवी। पछै डाभी घात वताई–[5] इण रै गोठ दीवाळी री षेड़ै थी कोस ४ छे तठै हुवै छै। तठै आंपां जाय ऊभा रहीयां सुं वेह आंपां सुं छुटी चाळां[6] मिलण आवसी। तरै आंपां इण भांत मार लेसां। म्हांरौ कबीलौ उठै घणौ छै, तिणां नुं डाभी एक तरफ समझाय नै ऊभा राषसां। पछै असवार ७०० सुं दीवाळी री गोठ ऊपरे आसथांन षेड़ै ऊपर लड़ाई रै मतै गयौ। उह जांणे नहीं। झगल माहे जी रहै छांनी सींव काढी।[7] उठै नजीक गया तरै डाभी परधांन आगै गयौ। जाय नै कहौ–आसथांनजी आया छै। तरै राजा आप भाई बेटा वडा उमराव सारा ही छूटीयां चाळां सुं सांम्हा मिलण नुं आया। डाभीयां नुं उण समझाया था–थे डाभी ऊभा रहीजौ। गोहलां रौ साथ जीवणौ छै। परधान डाभी मिळतां आसथांन नुं समझायौ–डाभी डावा नै गोहल जीवणा। इतरा मांहे लोह बूहौ। गोहल मांणस २०० तथा ३०० सुं राजा कंवर भाई-बंध राहाणां[२][8] सुधा मार लिया। तरवार एक धारी बुही।[9] आसथांन रौ आदमी घणौ कांम कोई आयौ नहीं। इण नुं मार नै षेड़ा ऊपर वाग ली।[10]

---

१. षेड़ लेण। २. राहवणा।

---

1. गांव लेने का मन में विचार किया। 2. मन की बात जान करके। 3. षड़यंत्र प्रकट किया। 4. दिखलाया। 5. धोखे की तरकीब बतलाई। 6. बिना शस्त्र, बांहें पसार कर। 7. चुपचाप रास्ता तय किया। 8. दरोगे आदि। 9. एक गति से. बिना किसी रुकावट के। 10. घोड़ों को फुर्ती से चलाया।

कोई आडौ आयौ नहीं ।[1] पोळ माहे पैठा, रावळा घर आप वसुं कीया ।[2] मारणहारा था सु मुवा । बीजा आदमी था सु नास गया ।[3] भार-भरत[4] साहबी हाथ आई । षेड़ै रा लोग सारां रौ डाभी परधांन दिलासा कीवी । डाभी था कांई वात छांनी न हुती । जिकां जांणीयौ बाहर नीसरीयां पछै ही दुष देसी । तिण ऊपरां सुवारे[5] फौज मेल नै मारीया । बीजा नास गया । धरती सारी डाभी परधांन दिलासा कर बसती राषी । सारौ मुदौ[6] साहबी रौ डाभी ऊपर राषीयौ । हासल आवै सु आधौ आसथांनजी रै लीजे नै आधौ डाभी रै लीजे छै । बरस २ इण भांत हालीयौ । आसथांन पिण सेंलगा[7] सिकार रै मिस कर-कर सारी धरती दीठी । धरती रौ भौमीयौ हुवौ ।[8] आपरा रजपूत गांव गांव मांहे राषण लागौ । परधांन परधांन पण कांम ऊपर आदमी ४ आपरा कीया । डाभीयां नुं सासता दबावता गया । पछै आसथांन री बहु गोहलणी समझायौ—इण धरती रै वासतै आपरा सगा सह मारीया[9], तौ हमै डाभीयां कन्है आधी धरती षुवाड़ीजे सु कुण वासतै । तरै डाभीयां नुं पण चूक करनै[10] आसथांन मारीया । धरती सारी भोग घाती ।[11]

२१. गोहल एक वार छांड नै जेसलमेर गया । भाटीयां सुं सगाई हुती । जेसलमेर रा गढ ऊपर एक ठौड़ गोहल टूंक कहीजै छ । पछै उठै ही रह न सकै, तरै सोरठ नुं सेत्रुंजै पालीताणे सीहोर जाय रहा, सु अजेस उठै छै । मारवा राव कहीजै छै । आसथांन रै षेड़ै गांव १४० भोग पड़ीया । तठा पछै गांव १४० कोढणें रा आसथांन पाटीया ।[11] गांव १४० देवराज गोगादे चाहड़देश्रां रा पिण आसथांन पाटीया । गांव ४२० राठोड़ां रै तद रा छै ।

---

1. किसी ने सामना नहीं किया । 2. अपने अधिकार में कर लिये । 3. भाग गये । 4. माल ताल । 5. दूसरे दिन । 6. मुदार, अधिकार । 7. सब जगह । 8. पूरा जानकार हो गया । 9. सभी ससुराल के रिश्तेदारों को मार डाला । 10. धोखे से । 11. सारी भूमि का उपभोग खुद करने लगा । 12. जीते ।

२२. इतरी धरती आसथांन षाट नै पछै पाट धुहड़ बैठौ, सु आसथांन धरती षाटवी थी सु भोगवी छै। पछै धुहड़ नागाणै[१] गायां री बाहर कांम आया। धुहड़ रै पाट रायपाळ[२] बैठौ। सु रायपाळ दातार जुंझार संसार सरोमण[1] हुवौ। जिण दिन सारौ संसार उरण कीयौ। बाहड़मेर षाटीयौ। महेवौ कोढणौ थळ बापी तिकी धरती आसथांन षाटी पहली हुतो। रायपाळ मैहरेलण कहाणौ। ठाकुराई जोर चढ़ी।[2] बाहड़मेर गांव ५६० नवी पंवार री वडी ठौड़ हाथ आई।

पंवारां री पीढ़ीयां.........

२३. मागा बुध नुं चारण रोहड़ीयौ कीयौ। आपरै पाट बाहरैट कीयौ, तिण मागा रै पेट चांद्रीयौ वडौ बीदावत[3] हुऔ।

२४. रायपाळ वडौ माहाराज हुवौ। रायपाळ रांम रांम कहौ। पाट कान्हड़राव बैठौ, सु पिण वडौ रजपूत हुवौ। रायपाळ री षाटी धरती भोगवी। तठा पछै कान्हड़राव रै पाट जाल्हण बैठौ, भलौ ठाकुर हुवौ। पछै धरती ऊपर तुरकां री फौज आई। जाल्हण कांम आयौ।[4] पाट छाडौ बैठौ, वडौ रजपूत हुवौ। रायपाळ री षाटी धरती भोगवी। सोनगरां सुं मामला घणा कीया। पछै सोनगरे धरती महेवा री मारी। छाडौ वांसे अपड़[5] कांम आयौ। पाट तीडोजी बैठौ। बाप रै बैर रै वासतै सोनगरां सुं घणा मामला कीया।[6] भीलमाळ मारी। सोनगरां सुं वेढ़ हुई! सोनगरा भागा, भाटीयां सोळंकीयां सुं वडा-वडा मामला कीया। पछै आलावदी पातसाह सीवाणा ऊपर आयौ। तरै सातलसोम कांम आयौ। तद तीडौ सीवाणै कांम आयौ। पाट कान्हड़दे छाडावत बैठौ। सलषा नुं टीकौ न हुवौ। सलषा रै बेटा चार वड़ो नाथां बलाय हुआ।[7]

---

१. नागणै। २. रावपाल।

---

1. शिरोमणि। 2. शासन ने खूब शक्ति हासिल की। 3. विद्वान् ? 4. वीर गति को प्राप्त हुआ। 5. पीछा करके। 6. अनेक बार युद्ध किया। 7. आतंकित करने वाले वीर हुए।

२५. मालौ सलषावत वडौ राहावेधी[1] हुऔ, देवकळा[2] हुई। कान्हड़दे छाडावत सूं विरस[3] कर नै जाळौर रा पांन कन्हा गयौ। उठा सूं फोज आण नै कान्हड़दे नुं मुगलां कन्है मराय नै टीकौ मालै लीयौ। महेवै बाहड़मेर रौ धणी।

२६. जैतमाल सळखावत वडौ रजपूत हुऔ। रावळ माला रै सारी साहबी रौ मुदार रौ धणी हुवौ। रावळ मालै सीवाणौ लीयौ पछै जैतमाल नूं दीयौ।

२७. वीरम सलषावत वडौ औनाड़[4] रजपूत हुऔ। आसंख प्रवाड़े जैतवादी हुऔ।[5] महेवै वाहड़मेर री धरती मालै भोगवी छै। वीरम नूं गांव ५ तथा ७ भाई-वंटा रा मालै दीया छै, सु पाय छै। घणा घोड़ा रजपूत वीरम रापै छै। पारका[6] धाड़ा आण पाय छै। पातसाही मारग मारै छै।[7] वीरम संसार रा माल लूट पाय छै। माला नै वीरम घणी आपणत[1] छै। तिण समै सोहण दुकाळ पड़ीयौ छै। सु देपाळ लूण आंण जोयो, महेवै गाडा २०० ले पड़ चर थकौ[8] आय रहौ छै। इण रै वित[9] घोड़ा सांड गायां निपट घणी छै सु मालै जगमाल आगै किणहीक घात घाती[10]–कठाहो रा सींधु आया छै। तिणां नूं धरती बिगाड़तां वरस १ हुऔ। इण रौ माल पौस लीजै। मालै जगमाल रै वात दाय[11] आई। किणहीक कांमदार नूं हुक्म हुऔ–रात पाछली घड़ी ४ लेनै[12] थे जाय गाडा रोकजौ। पछै जगमाल कह्यौ म्हे उठै आवतां, माल वित संभाळ उरो लेसां। सु आ खबर लोगां नै किणहीक देवी। लोगे आपरा सैणां नूं पूछीयौ–कांई उपाव छै?[13] तरै जिके उणां रा सैण था तिणे कह्यौ–थांहरा गुडा सूं

तीरबा[1] २ रा: वीरम सलषावत रा गुढा छै। तठै ले जाय रात आधी रा थे गाडा वीरम रै सरणै छोडौ। संवारै जाय वीरम नुं मिळौ, आपरी हकीकत कहौ। वीरम सरणायां बीजै पांजर छै। तरै जोयां रात आधी रा गाडा वीरम रा वास आगै छोडीया। रात पाछली पहोर १ थका वीरम रा परधान दोलीया सुं जाय मिळीया। आपरी सारी बिध कही। दोलीये रात घड़ी ४ पाछली थकी सारी हकीकत बीरम नुं गुदराई। वीरम जोयां रा गाडा रषवाळी करण आदमी १० राषीया। देपाळ री घणी दिलासा कीवी[2]। कहौ – थे षा–रौं[१] हमै थां सांहमौ कोई जोई न सकै। जगमाल आदमियां नुं हुकम कियौ हुतौ, तिके रात घड़ी २ पाछली थी, तरै जोयां रा गाडां री ठौड़ आया। आगे देषै तौ गाडा नहीं। इणां गाडां रा चीलां वांसै[3] षड़ीया। आगे जाय देषै तौ गाडा वीरम रै वासै[4] आगै छूटा छै। ऊपर वीरम रा आदमी रषवाळा बैठा छै। आ षबर जगमाल रै चाकर मालै जगमाल नुं मेल्ही, अठै तौ औ बीचार छै, म्हांनुं कासुं हुकम छै। तरै आ बात सुणीयां मालौ जगमाल घणू ही बळीयौ[5]। पण वीरम सुं जोर कोई चलै नहीं। साथ तौ उरौ तेड़ाय लियौ[6]। वीरम कनै परधांन २ भला आदमी मेलीया। कहौ – इण म्हारौ सारौ देस षाधौ छै। इण कन्है माहरौ षड़ चरीयौ छै[7]। खड़ चराई रौ मामलो रहै छै। हासल[8] रहै छै। इण नुं उरा मेल देवौ। तरै वीरम माला रा परधानां नुं कहौ – म्हे इणां नुं तेड़ण[9] गया न हुता नै हिमै तौ म्हां माहे आय पड़ीया तौ म्हे कासुं करां। म्हांथा काढ दीया जाय नहीं[२]। औ जबाब बीच आदमी था तिकौ पाछा जाय माला जगमाल नुं कहौ। बात सुण नै घणौ ही बळीयौ। पिण वीरम सुं पौंच सकै नहीं[10]। वैस रहा।

---

१. घात रज जमें करो। २. माथा काठिया जाय नहीं।

---

1. वह दूरी जहां तक तीर पहुंचे। 2. आश्वस्त किया। 3. पीछे। 4. निवास स्थान। 5. खूब जला। 6. वापिस बुला लिया। 7. मेरी सीमा में घास आदि चराया है। 8. खेती की आमदनी का हिस्सा। 9. बुलाने। 10. बराबरी करने में या सामना करने में असमर्थ हैं।

२८. तठा पछै जोयां देपाळ वीरम सुं बीनती कीवी—हमें म्हांरौ अठै टीकाव कोई नहीं। म्हां पागा[१] [1] राज रै नै जगमाल रै उपाव[2] होसी। म्हांनु राज कोस ४० फळोधी री पैली सींव सुधा[3] पौंहचाय दीजे। तरै वीरम तौ जोयां री दिलासा कराई। कहौ – थांनुं अठै डर कोई नहीं, मजाल किण री छै माहारी बाड़ माहे थकां कोई साम्हौ जोय न सकै। पिण जोया आतुर हुवा–म्हांनुं[२] सीष देवौ। तरै जोयां रा गाडा जुता वीरम आपरौ साथ लेनै[३] जौयां रै साथ हुवौ। बीकानेर रै कांकड़ सुधा कुसले पौंचाया। वीरम सीष कीवी। समध वछेरी[४] पड़ाई आंरी देपाळ वीरम आगै फेरी, वीरम तौ घणी ही वेळां ना कहौ। पण देपाळ मांडे[५] समध दी, वीरम पाछौ आयौ। पहला ही माले वीरम चित षांत हुती[4]। इण मामले हुआं पछै उकट आक हुआ[5]।

२९ इण भांत चलीयौ जाय छै। तितरा माहे वीरम गुजरात री कतार सोंबठी[6] घोड़ां री आगरा नुं जावती हुती सु षंडप कन्हा मार उरी लीवी। तिण ऊपर गुजरात रौ पातसाह महाबलीषान नुं असवार हजार बाहरै १२००० देनै विदा कीयौ। महेवा ऊपरा विदा कीयौ। पातसाह हुकम कीयौ – कै तौ राव मालौ वीरम नुं काढ देवौ। का महेवा री धरती मारौ[7] महाबलीषान जाळोर आय नै रावळ माला कन्है परधान मेलीया। का तौ वीरम नु काढ देवौ माहारौ वीरम चोर छै, जठै[8] जासी तठै वांसौ कर[9] मार लेसां। काढ नहीं देवौ तौ म्हे थां ऊपरै आया[६] छां। मालो[७] आगै ही वीरम सुं लागतौ थौ। इतरी हीज घात जोवतौ थौ। वीरम नुं आदमी मेल कहाड़ीयौ – का तौ थे जाय जवाब करौ, का माहारी धरती छांड देवौ। तरै एक वार तौ वीरम मारणौ[८] बिचार

१ पगां। २. म्हांनुं (प्र.)। ३. लेनै (प्र.)। ४. समधा वछेरी। ५. मांड। ६. आवां। ७. मालो (प्र.)। ८. मरण रौ।

1. लिये, कारण। 2. विरोध। 3. सीमा तक। 4. मानसिक तनाव। 5. पूरा वैमनस्य हो गया। 6. बड़ी सारी। 7. जीत लो। 8. जहां भी। 9. पीछा करके।

कीयौ थौ । पछै वीरम रै चाकर बाबरा[१] समझायौ । कहौ – दुसमण पूरी[२] कांप दौ । तरै आपरी वसती थी सु तौ देवराज साथे देनै पुंगलीया सेत्रावे दिसा लोग माहाजनां नै मेलीयौ । मांगळीयांणी नुं सेझवाळां[1] २ बेसांण घोड़ा जोतर नै आप असवार २० साथे ले दोलीयो गेहलोत कंवळो मोहल माणक हरीयो मीढो[3] रादो साथ आपरौ ले जांगळु नुं नीसरीया । फौज बांसै हुई, आगे वीरम इण भांत जांगळु सांखला ऊदा मुजायत[४] कन्हे आयौ । राः वीरम सलषावत नुं ऊदौ साम्हौ आयौ । घणौ आदर कीयौ । कोट माहे राषीयौ, घणा हीड़ा करै छै[2] । तितरै बांसां सुं महाबलीषांन आयौ । ऊदो सांषलो सांम्हौ आय मिळीयौ । डेरौ करायौ, घणी महमांनी कीवी । वीरम नुं तौ रात आसुदा पुहण[3] देनै, षरची देनै, साथे साथ देनै सोहण नुं चलायौ । संवार हुऔ सांषलो ऊदो जाय नै महाबलीषांन सुं हाजर हुऔ नै षांन कहौ – वीरम लाव । तरै ऊदे कहौ – सुरज छाबड़ीया[4] हेठा दाबीयो रहै नहीं । माहारा घर माहे वीरम समावै नहीं । एक वार तौ षांन रीसांणौ, ऊदा नुं हाथ घालीयौ । षाल पड़ावण रौ हुकम कीयौ । पछै ऊदा रौ सत आकीदो[5] देष राजी हुऔ । ऊदा नै महरवान होय नै छोड़ दियौ । उठा सुधौ माहाबलीषांन वीरम रौ बांसौ करनै[6] अठा थी पाछौ वाळीयौ ।[7] वीरम सोहण गयौ । देपाळ घणै आदर साम्हौ आयौ । वीरम नुं सोहण माहे राषीयौ । गांव वडेरण बीकानेर रै देस माहाजन वडौ गांव छै । तिण सुं कोस ३ वडी ठौड़ वसी नुं वडेरण दीवी । गांव १० तथा २० दीया ।[५] तिण दिन जोयां रै दांण री हासल वडी मारग री वहतीयाण[8] रा पारपषै[9] पईसा आवै । सु ढाल सुं आथूण देपाळ रा भाई दस मुदफरी वांट लै । सु देपाळ कहौ – म्हे दस बेटा लुणा रा

१. बबरे । १. पूळो । ३. मीठो । ४. सुजावत । ५. बीजा दिया ।

---

1. एक प्रकार का रथ । 2. खूब आवभगत करता है । 3. ताजी सवारी । 4. टोकरी । 5. बल विक्रम । 6. पीछा कर के । 7. लौटा । 8. राहगीर । 9. खूब, अत्यधिक ।

छां त्यां बीरम माहारै भाई छै, दांण माहे एक हेसौ वीरम री कीयौ। वीरम उठै जाय नै बास कीयौ। सांस बांधीयौ[1] पईसो पारपषै आवै।

३०. वीरम मारवाड़ था आपरौ साथ बुलाय लीयौ। और पिण भला-भला रजपूत था जिण जिठै रा तठा-तठा रा तेड़ भेळा कीया। बरस १ माहे बड़ी जमीत[1] भेळी कीवी। असवार ७०० री जोड़[२] हुई। जोया तौ घणा हीड़ा करै छै। पिण वीरम राहवेधी सु जांणे छै, जोयां नुं मार नै आ धरती लेऊं। पछै जोयां रा बीगाड़[2] करावणा मांडीया। वीरम उपाव[3] करण माथै हुऔ।[३] देपाळ घणा ही दिनां टाळौ कीयौ।[4] उठै वीरम वसत बुकण[४] भाटी वेरसीयोत तलबड़ी लाहौर नजीक मारीयौ। घणौ बित लायौ।

३१. पछै जोयां रौ वीरधवळपुर वास। उणां रै पूजनीक थौ सु वाढीयौ।[५] तिण ऊपरा उपाव[5] हुऔ। दलै जोये आगे आय वीरम री गायां लीवी। बीजौ साथ थोड़ौ कर वांसै रहौ। वीरम आपड़ीयौ।[6] तठै बेढ[7] हुई। इतरौ साथ राठोड़ां रौ कांम आयौ—

१. रा. वीरम सलषावत
२. मीढो रांदो
३. कंवळौ मोहल
४. गेहलोत दोलीयौ गेहन रौ
५. आहेड़ी पुनौ
६. मांणक हरीयो गेहलोत

इतरौ साथ जोयां रौ कांम आयौ, सिरदार—

१. देपाळ लुणयांण
२. ....
३. जसौ लुणयांण
४. मदौ लुणयांण

षेत जोयां रै हाथ आयौ।[8] मांगळीयांणी वीरम री बैर नुं बेटा सुधी वांहण[9] १ में वैसांण नै देवराजां वाळै थळ ताउ[10] आदमी ४ चार पोहौंचाय गया। मांगळीयांणी छांनी गांव काळउ में मजूरणी होय

१. खाधो। २. फौज। ३. आयो। ४. बुकरण। ५. वढ़ायो।

1. जमात। 2. नुकसान। 3. उपद्रव। 4. टालता रहा। 5. अनबन हुई। 6. पकड़ा। 7. युद्ध। 8. जोयों की जीत हुई। 9. वाहन। 10. तक।

रही। आपौ किण ही नु जणायौ नहीं।[1] चूंडौ चारण रा टोघड़ा[2] चरावै छै।

३२. कितरा हीक दिन बितीत[3] हुवा। पछै चूंडो हेक दिन टोघड़ा चरावतौ थकौ सूतौ हुतौ; सु सांप माथै ऊपर काळंदर कर रह्यौ छै। तिण समै चारण आल्हौ रोहड़ीयौ किणी कांम आयौ हुतौ। आगै देषै तौ छोकरौ सूतौ छै ऊपर सांप फण कीयौ छै। चारण देष नै हैरांन हुवौ। औ आल्हौ सीवणी थौ।[4] इण जांणीयौ इण रै माथै तौ छत्र मंडसी, औ कुण छै? तरै डावड़ा[5] नै जगायौ नै पूछीयौ–तूं कुण छै? इण कह्यौ – हूं तौ कुंही समझूं नहीं। तरै इण नूं पूछीयौ – थारा मां बाप कुण छै? तरै चूंडै कह्यौ—बाप तौ कोई नहीं, नै माहारी मां थांहरा गांव में छै। तरै आल्है कह्यौ—मोनुं दीषावौ। तरै चूंडै नुं साथे कर आल्हौ गांव माहे आयौ।चूंडै आपरी मां नूं दीषाळी। तरै आल्है मांगळीयांणी नुं कह्यौ—थे कुण छौ? तरै पहली तौ कह्यौ—म्हे कुण हुवां, मजूर छां। तरै आल्है घणौ षोज पूछीयौ[6] पोहर १ बैस रह्यौ। तरै मांगळीयांणी आपौ परकासीयौ।[7] आल्हैं कह्यौ—थे बुरी कीवो, तद होज मोनुं कह्यौ नहीं। पछै मांगळीयांणी नुं चवरा[8] २ आपरा रहण नुं दीया। कोठी माहे धांन षावण नुं घात दीयौ।

३३. चूंडा नुं नवा कपड़ा सीवाड़ नै हथीयार बंधाय नै साथे कर महेवै रावळ माला कन्है चूंडा नु पगे लगायौ।[9] पण वीरम माला नुं घणौ दुष दीयौ थौ तिण ता वडौ आदर न कीयौ। बुलायौ चलायौ नहीं। आल्हौ तौ चूंडा नु माला सुं मिळाय नै आप आप रै घरै गयौ। चूंडौ उठै ही रहै छै। पेटीयौ कर दीयौ छै। घणौ सूल[10] कोई नहीं।

३४. एक दिन भोपो[1] नाई रावळ माला रै परधांन हुतौ। भोपो

---

१. भोवौ।

1. अपना परिचय किसी को नहीं होने दिया। 2. बछड़े। 3. व्यतीत। 4. शकुन का जानकार था। 5. लड़का। 6. गहराई से पूछताछ की। 7. अपना पूरा परिचय दिया। 8. एक प्रकार की झोपड़ियें। 9. सेवार्थ प्रस्तुत किया। 10. ठीक, अच्छा।

कठी'क नुं ऊठीयौ तरै चूंडै पैजार[1] भोपा री ले आगै धरी, तरै भोपै चूंडा नुं कहौ—तूं माहारी पैजार आघी करै सु आ बात जुगत री नहीं ।[2] तरै चूंडै आपरी बीनती कीवी । कहौ—भूषां मरां छां, का तौ माहारी बदळी रावळजी नुं कहै नै म्हारौ सलूक करावौ । पछै दिन २ तथा ४ आडा घात नै रावळजी सुं भोपै चूंडा री वीनंती कीवी । तरै रावळ मालै कहौ—इण नुं हेठा घातो[1] [3] कुंही दुष रौ फळ छै । तरै भोपै कहौ—सालोड़ी थांणै आंपणौं फलाणौं रहै छै । तठै रावळ जो हुकम करै तौ चूंडा नुं मेलां । मंडोवर मुगलां रौ थांणौ रहै छै, औ कांईक उपाध कीयां बिगर नहीं रहै । वेह कूट मारसी, विगरह उस विध[2] चूकसी । तरै मालै नीठ'से हुकम कीयौ । भोपै कुहीक रोजगार कर नै चूंडा नै सालोड़ी थांणै मेलीयौ ।

३५. चूंडौ उठै गयौ, भाग जागीयौ । दिन-दिन बात रस आवती गई ।[4] चांवडा देवीजी री सेवा राव चूंडै निपट घणी मांडी । मारग बहतौ तिण सुं दस गुणौ इधकौ बहण लागौ । रूपा री नदी बहण लागी । चूंडा नुं वीभौ जुड़तौ गयौ ।[5] घोड़ां रजपूतां री जोड़ होती गई ।[6] चूंडै आचार झालीयौ ।[7] भुंजाई करणी मांडी ।[8] नै त्याग देणौ मांडयौ ।[9] चूंडौ वजवजीयौ ।[10] रावळ माला नुं षबर हुई । तरै मालै भोपा नुं ओळंभौ[11] दीयौ । कहौ—एक वार सालोड़ी जावसां । तरै भोपै चूंडा नुं कहाड़ीयौ—रावळ मालौ उठे आवै छै । तूं डफोळ[12] किणी वात री राषे मती सादी भांत रहै । कांई डफोळ हुवै सु दिन ४ अळगी मेल्हे । पछै रावळ मालौ उठे आयौ तरै चूंडौ तौ पहला हीज जिसड़े सांमे[13] माला कन्है था गयौ थौ, तिण भांत हुई रहौ छै ।

---

१. नाखो । २. आपे आप ।

---

1. जूती । 2. युक्ति संगत नहीं । 3. इसे उपेक्षित ही रखो । 4. परिस्थितियां अनुकूल होती गई । 5. वैभव बढ़ता ही गया । 6. घोड़े और रजपूतों की संख्या बढ़ती गई । 7. राज्याचार प्रारंभ किया 8. सेना आदि के लिए नियमित भुना हुआ खाना बनने लगा । 9. चारणों आदि को दान देने लगा । 10. चूंडे की प्रसिद्धि फैली । 11. उलाहना । 12. मूर्ख । 13. जिस समय ।

माले आप दीठौ अठै तौ कुंही नहीं। तरै भोपै कहौ—म्हे तौ राज नुं पहली ही कहौ, राज पिण माहारौ कहै रौ इतबार मानीयौ नहीं। हिमैं राज आंषां दीठौ, भलो वात हुई।

३५. रावळ पाछौ गयौ। वांसै चूंडै चांवडाजी रो सेवा इधकी-इधकी[1] कीवी, दिन २ कीवी। देवीजी चूंडा नुं प्रसन हुई। चूंडा सुं देवीजी परतष[2] बात करण लागा। देवीजी चूंडा नु कहौ—आज थी दिन चौथै फलाणी ठौड़ मारग में पोठीया[3] १० सोना रा भरीया आवसी, तिण साथे आदमी ४ मुसला छै, ऊपर फाटा गूदड़ा नांषीयां छै। नीचै छाटीयां[4] माहे सोनौ छै। थे उणां नु मार नै उरो लेवौ। चूंडा नै देवीजी वताया तठै जाय पोठीया उरा लीया। मुसला मार नांषीया सोनौ थो सु गड़कीयौ।[5] पोठीया १० लतां[6] सुधा रावळ माला नुं मेल्ह दीया। कहौ—इण नै म्हां उपाव[7] हुऔ। इणे लोह कीयौ[8] तरै इण नुं मारीया। वात आ हीज रही। सोना रौ कोई उडाव हुवौ नहीं।[9] चूंडा रै दिन २ साथ घोड़ा रजपूत री जोड़ हुती गई। देवीजी चूंडा नुं हुकम कीयो—तोनुं एक गढपती करसां।

३६. तिण दिन मंडोवर पातसाही थांणौ छै, सिरदार मुगल अेबक छै। तिण दिन मारवाड़ माहे रैत[10] घणी कांई न छै। ठौड़ ठौड़ रजपूत वसै छै। इतरी तौ चौरासी कहाड़ै छे। तठै रजपूत वसै छै।

ईंदांरी चौरासी बहेळावसु, ईंदा री चौरासी कहावै छै।
एक सींधळां री चौरासी चोटीले भांवर सुं।
एक सांषलां री चौरासी गांव रेईया[१] सुं।
एक कौटेचां री चौरासी बाल्हरवा सुं[२] केलंण कोट।
एक आसायचां री चौरासी।

१. रयां। २. सीवलदहा सुं।

1. अच्छी से अच्छी, बढ़ बढ़ कर। 2. प्रत्यक्ष में। 3. माल की पोटें। 4. बकरी आदि के बालों की डोरीयों से बनी बोरी। 5. जमीन में छिपा दिया। 6. कपड़े आदि सामान। 7. झगड़ा। 8. शस्त्र चलाया। 9. वात फैली नहीं। 10. प्रजा।

३७. सु मुगल अेबक सारा रजपूतां नु कहै छै–घोड़ां रै वासतै गांव गांव बेठ गाडा ५ सीताब लावौ ।[1] तरै सारा भेळा हुय नै कह्यौ–म्हां माहे ईंदा बडेरा छै, अेह पहली आंणसी[2] तौ पछै सै कोई आंणसो । तरै मुगलां ईंदां नु तेड़ाय मेलीया ।[3] तिण दिन ईंदां माहे वडेरौ राणो टोहौ छै । सारां ईंदां नै लेनै मंडोवर अेबक कन्है आया । कांमदार सु मिळीया । मिळ नै बीनती कीवी–म्हे हंसौ[4] मुकातौ[5] हुवै छै तिकौ तौ परौ देवां छां । वळे जांणौ सु रोकड़ देवां । तरै मुगल अेबक आ बात मानी नहीं । ईंदां दीठौ छूटां नहीं । अै माहारी लार पड़ीया ।[6] तरै षड़हरी गांव सारां री कर[7] गयौ । पछै षड़हरीया[7] गांव माहे आदमी ५०० जीनसालीया[8] बैसांण नै ल्यायौ । आगै रांणो टोहौ मंडोवर आया । अेबक नु कह्यौ–थे पधार नै षड़हरीया देषौ, म्हे मुजरा लायक[9] भरी छै । तरै मुगल अेबक देषण आयौ । तरै अेबक नु ईंदां कूट मारीयौ । डेरै मुगल छा तिणां नै फिर-फिर नै कूट मारीया । मंडोवर टोहै राणै आपरै बसु कीयौ ।[10] माल-बित सारौ संभाळ नै हाथ वसु कीयौ ।

३८. ईंदां सारां मिळ विचार कीयौ, नागोर तुरक छै, अठी रांणा छै, पातसाह छै । आ ठौड़ निपट सबळी ।[11] माहारै पांचे दिनां रहण री नहीं । तरै सारां बिचारीयौ–आज राठोड़ां रौ चढ़तौ कांटौ छै ।[12] रावळ माला रौ भतीजौ सालोड़ो छै । चूंडौ बीरमोत छै सु निपट वडौ रजपूत छै, दातार जुंजार छै । गढ़ चूंडा नु दीजे । आ बात सारां री दाय[13] आई । तरं राणो टोहौ रायधवळ उगवडावत चूंडा कन्है सालोड़ी गया । उठै जाय गुदरायो–मंडोवर रौ गढ़ म्हे तुरक मार नै लीयौ छै । औ गढ़ म्हे राज नु देवां छां । राज म्हारै धणी छौ ।

१. १०० कर ।

1. बेगार में प्रत्येक गांव से ५ गाड़ीयां शीघ्र लाओ । 2. लाएँगे । 3. बुलवाया । 4. खेत की उपज का निश्चित भाग जो कर के रूप में वसूल होता था । 5. रुपये आदि रोकड़ सिक्कों के रूप में लिया जाने वाला कर । 6. पीछे पड़ गये हैं । 7. घास लाने वाली गाड़ियां । 8. शस्त्र बन्द । 9. आपके नजर करने योग्य । 10. अधिकार में कर लिया । 11. बहुत महत्वपूर्ण, ताकतवर । 12. उन्नति पर हैं । 13. पसन्द ।

म्हे राज रा चाकर। तिण दिन ती चूंडै पाछी जवाब दीयौ नहीं। रात देवीजी रै थांन जाय सुतौ। सुपना मांहै देवीजी हुकम कीयौ—थे मंडोवर ईंदा देवै छै सु उरी लौ। थांहांरौ इण ठौड़ बडौ परताप होसी[1]। पछै चूंडै बात कबूल कीवी।

३९. ईंदा गांगदेव वडावत[1] री बेटी लीला री नाळेर राव चूंडा नुं दीयौ। एक ईंदा बीनती कीवी—माहरा चौरासी गांव छै, तिण री राज तलाक पड़ै[2]। [2]रावळौ बेटी पोती पांचै दीनै कोई लोपै नहीं[3]। ईंदे आय बीनती की सु राव चूंडै मानी। सालोड़ी था राव चूंडै मंडोवर आयौ। पाट बैठां धरती रा सारा रजपूत तेड़'नै दिलासा कीवी। माल राव चूंडा रै सोनौ घणौ ही छै। वरस वीए[4] किणां कना मांगीयौ नहीं। जिणां रा गांव था तिणां रजपूतां नै रापीया नै सूना गांव था सु वसता कीया[5]। नै केईक आपरै पालसै कीया। आपरा चाकरां नै देता गया। वरस ४ हुवां साहबी जमी[6] तरै रजपूत आठ दस चोरासी थी तिणां मांहला आधा आधा गांव सपरा[7] हासल वाळा था सु ती आप पालसै कीया। इण भांत सारी धरती हळवैं-हळवैं भोग घाती[8]।

४०. राव चूंडौ मंडोवर धणी तपीयौ नै मंडोवर ही राजथान[9] रापीयौ। पछै राव चूंडौ मंडोवर भोगवतै नागौर पाटीयौ[10]। आप जाय नागौर राजथान कीयौ नै नागौर जाय वसीयौ। मोहिलांणी बूढा हुवां परणी नै डीडवाणौ पिण राव चूंडै लीयौ। नै मंडोवर इतरी पीढ़ी रही—

१. राव चूंडौ वीरमौत
१. राव रिड़मल चूंडावत[3]
१. राय कन्हा चूंडावत
१. राव सतो चूंडावत

१. कगावत। २. कहावो। ३. 'ख' प्रति में चूंडा के बाद कान्हा तथा सता है।

1. बल वैभव बढ़ेगा। 2. तलका लो। 3. तोड़े नहीं। 4. दो। 5. बसादिये। 6. राज्याधिकार जमा। 7. अच्छे। 8. धीरे-धीरे सीधी अपने अधिकार में करली। 9. राजधानी। 10. जीत लिया।

४१. पछै राव चूंडे नै भाटीयां माहोमाह[1] अदावत[2] हुई। पछै राव केलण मुलतान जाय नै राव चूंडा ऊपर सलेमषान नै ले आयौ। राव चूंडौ आदमी १२ सु संवत १४२८ नागोर कांम आयौ। आप कांम आयौ नै कंवर नै काढीयौ। तरै राव रिणमल नै चूंडै कह्यौ—येक बात तो कनां मांगु जो माहारौ कह्यौ मानै तौ। तरै रिणमल कह्यौ—राज कह्यौ सु करसां। तरै चूंडै कह्यौ—टीको मंडोवर रौ थे कान्हा मोहलाणी रा बेटा नै देजौ। पछै रिणमल मंडोवर आय नै कान्हा नुं पाट बैठाण टीकौ काढ़ नै आप राणा मोकल कनैं मेवाड़ गयौ। तरै राणै सोभत रौ गांव धणलो कितरा'क गांवां सुं दीयौ। नै सलेमषांन राव चूंडा नै मार नै अजमेर जात फरमाण नै आयौ। मास १ अजमेर रह्यौ। पछै अजमेर सुं पाछो बळतो[3] सांदुड़ै आण डेरा किया। तरै राव रिड़मल साथ भेळौ करनै सलेमषान नै रातीवाहौ दियौ[4]। एक वात सुणी सलेमषान घणा साथ सुं मारीयौ। नै एक बात आ ही सुणी सलेमषान रौ साथ घणौ मरण गयौ।[1] नै सलेमषान भागौ। राव चूडा साथै काम आया—

१. पूना दोलोया रौ गहलोत
२. चूडां हरभु पांचाउत तोला रा पोतरो

४२. रिणमल तौ मेवाड़ जाय भाणेज राणा कुभां कनै नै मोकल कनै रह्यौ। नै कान्हौ चूंडावत राव नीमलौसौ[2] [5]हुवौ। पछै कान्हा कनै सेती चूंडावत राव रिणधीर चूंडावत मंडोवर षोस लीयौ[6]। नै सतो राव हुवौ। नै साहवी[7] री मदार सारी रिणधीर माथै। रिणधीर नै रावताई री खिताव छै। पछै रिणधीर भली भांत साहवी बरस पांच दस चलाई।

४३. सता रै वेटौ नरवद काळ-पूंछीयौ भंवराळौ हुवौ[8]। तिण रावत

---

१. मराणो। २. नीवलोसो।

---

1. घायल है ... हमला किया। ... वाला हुआ। 3. वापिस लौटते समय। 4. रात के समय ... या। 7. ... । 8. खराब लक्षणों.

रिणधीर सुं अदावद मांडी । सासता[1] रिणधीर मारण रा चूक करै । पछै रिणधीर दीठौ अठै रहां फायदौ कोई नहीं । तरै रावत रिणधीर छाड अठा थी धणलै रिणमल कन्है गयौ । रिणमल रै मारवाड़ लेण री बात नहीं । नै कहौ–मोनुं राव चूंडै कहौ–थे मारवाड़ सुं असीवेध[2] मत करौ । राय रिणधीर जाय रिणमल नुं समझायौ–थानै राव चुंडै री भोळावणं दी थी सु सतो कुण थकौ मंडोवर षाय । पछै राव रिड़मल नुं रिणधीर बळ वधांयौ[3] । नै रांणा मोकल कनै ले गया नै उठै जाय बिनती कीवी–जु दीवाण ऊपर करै[4] नै मदत साथ दै तौ म्हे सता कनै मंडोवर उरो लां । तरै दीवांण बात कवूल कीवी, सीरोपाव घोड़ौ फौज असवार १००० मदत दीया । और साथ राव रिड़मल रिणधीर आपरौ कीयौ नै मंडोवर ऊपर आया । तरै सतो तो अण बीढियो[5] ही नीसर गयौ, नै लड़ाई १ मंडोवर था कोस ४ नरबद साम्है आय नैं कीवी । नरबद घांवां पड़ीयौ[6] नै नरवद री आंष १ गई । सीसोदियां री फौज नुं मंडोवर आंणीया ही नही । ईणां नु अठा थी ही सीष दीवी ।

४४. सीसोदिया घणौ बुरौ मांनीयौ । जातां नरबद नुं उपाड़ नै मेवाड़ रा धणी राणा री हजूर ले गया । नरबद घावे साजौ हुऔ । रांणै[7] रौ चाकर हुवौ । राव रिणमल मंडोवर वापरी थी भोगवै छै । नै रांणै री ही पटौ भोगवै छै ।

४५. तिण समै रांणा मोकल नुं पूछ नै सीसोदीया चाचे मेरै पई रै भाषर उपर घर कराया । राव रिणमल राणा मोकल नुं पुछणा माहे छै । एक दिन एकंत रांणा मोकल नु समझाय नै कहौ–चाचा मेरा रा घर इण मगरै मांहे हुवा तरै मगरा रा धणी थंहांरा छोरू[8] नहीं । मगरा चाचा मेरा रा छोरूवां नुं[1] ऐकलिंगजी[9] आ जायगा दीवी ।

१. वांनुं ।

1. लगातार । 2. दुश्मनी, झगड़ा । 3. हिम्मत बंधाई । 4. हिमायत करें । 5. बिना युद्ध किये ही । 6. घायल हुआ । 7. ठीक हुआ । 8. वंशज । 9. एकलिंगजी महाराज ।

तरै रांणै मोकल ही दीठौ जु आ बात सांची छै कही। तरै, रांणै मोकल चाचा मेरां नुं कही–आ थांहरा घरां लायक ठौड़ नहीं। थे थांहारा पटा रा गांव छै तठै जाय रहौ। तरै चाचे छांडतां[1] ढील ढाल कीवी। तरै रिणमल नै साथे मेल्ह नै हाथियां कन्है[2] घर पड़ाया। तरै वेह वळे रहै छै[3]।

४६. तितरै एकण दिन राणौ मोकल कठै'क गयौ थौ। झाड़ १ असौंधौ[4] दीठौ तरै किण हीक फुरमायौ[१] नै रांणा नै पुछीयौ दीवाण इंण झाड़ रौ नांव कासुं छै? तरै रांणै कहौ–म्हे तौ जांणां नहीं काकोजी जाणंता होसी। सु उवै षातण रा पेट रा था, सु उण वात रौ पण उणां घणौ दरद राषीयौ[5]।

४७. पीची अचळदास भोजावत ऊपर गागरण पातसाह मांडव रौ[२] आयौ छै। सु अचलदास रांणा मोकल रै जंवाई छै। सु राणा जी कनै आदमी आया छै। सु दीवांन उठा नुं चढ़ण री तयारी करै छै। तरै दीवांण राव रिड़मल नुं कहौ छै–थे मारवाड़ जाय साथ ले आवौ। राव रिणमल कहै छै–हूं दीवांण था इण बेळां में अळगौ नही होऊं। तरै दीवांण घणीज हैत कीवी तरै राव रिड़मल कहौ–म्हे चाचा मेरा री इसड़ी घाट देषां छां,[6] अै आज सुहार माहे थांनुं मारसी। तरै राव रिणमल नुं दीवांण कहै छै–थे तौ चालौ। तरै राव रिणमल कहौ–म्हे थांनुं पांणी देनै[7] चालां छां। राव रिणमल मारवाड़ नुं चढ़ीयौ। वांसै कीतरैहेक दिनां पछै रांणै मोकल बाघौर[३] डेरौ कीयौ। तठै चाचै मेरे दीवाण रा डेरा ऊपर आवण री तयारी कीवी छै। तरै वाघोर रै भाट दीवांण नुं आय कहौ–चाचा मेरां रौ साथ सीलहै पहरै छै।[8] तरै राणै ही जाणीयौ जु राव रिणमल वात कही थी सु सांची हुई। रांणा नुं किणहीक कहौ–राज नीसरौ[9]। तरै दीवांण कहौ–हूं

१. पूरवियै राणा नूं पूछियौ। २. मांडव रो (प्र.) ३. वगोर।

1. जगह छोड़ते समय। 2. से। 3. जलते हैं। 4. अनजान। 5. बहुत बुरा महसूस किया। 6. ऐसा ढंग देखता हूं। 7. जलांजलि देकर। 8. शस्त्र-बंदी कर रहे हैं। 9. भाग जाओ।

षांतण रा बेटां आगै काय नीसरूं। तरै कंवर कुंभै नुं काढीयौ[1]। कुंभौ चीतोड़ पोहौतो[2]। रांणा मोकल नुं चाचै मेर उजैळै घावां मारीयौ[3]। नै चीतोड़ जाय घेरियौ। राव रिणमल नुं कुंभै षवर मेलवी[4] – दीवांण नुं तौ मारीयौ नै मोनुं इण भांत घेरियौ छै। थे मों मारियां ऊपर बेगा आवजौ।

४८. राव रिणमल नागौर था, उठै कुंभा रा आदमी आया, राव रिणमल समाचार सुण नै खान-पांण री सुस लीवी¹। तुरत चार हजार असवार सुं चढ़ीयौ। राव रिणमल घोड़ां नै कूटतै लांजणै आयौ[5]। चाचो मेरौ चीतोड़ छांड नै पई रै मगरै चढीयौ। भाषर सभीयौ[6]। राव रिणमल भाषर घेर नै चाचो मेरो मारीयौ। सीसोदियां री बेटी² बरछां री चंवरी कर नै राठोड़ आपरै दाय आवणी[7] परणीया। मालबित पारषौ[8] लुटीयौ। रांणा कुंभा नुं चीतोड़ धणी कीयौ। चाचे मेरै री फोज जठै जठै[9] हुती सु कूट मारी।

४९. चीतोड़ धणी रांणो कुंभो, हाल हुंकम सारो राव रिणमल रौ छै। राव रिणमल साहबी बणाई छै। रावजी रौ साथ भाई बेटां असवार ७०० सात सौ तलैटी[10] र'वै छै। आप राव रिणमल कुंभा रांणा री दोढी[11] सोवै छै। सीसोदीया वडेरा छांड ने चूंडा सारीषा था सु मंडाव³ गया, बीजा मन मठा हुई[12] रहा छे। रांणा नुं सगळौ मेवाड़ रौ लोग भषावै छै[13]। मेवाड़ री साहबी[14] सीसोदीयां रा घरां सुं गई। राठोड़ां हेठे साहबी आई। काहे'क वाहर करौ[15], सीसोदीयां री बेटी बरछां री चंवरी कर दांय आई तिण राठोड़ परणी सु ईंण वात मांहे आपणौ घणौ भंड़ौ दीठौ[16]। ईण भांत भषावै छै। तरै कुंभै पिण

---

१. घांन खाण रौ सुस खायौ। २. बेटियां। ३. मांडवे।

---

1. वहां से निकाल दिया। 2. पहुंचा। 3. सहज ही में शस्त्र से प्राणान्त कर दिया। 4. भेजी। 5. बिना ठहरे लगातार घोड़े दौड़ाता हुआ आया। 6. पहाड़ को सुरक्षित किया। 7. पसन्द आई जैसी। 8. खूब। 9. जहां-जहां। 10. किले से नीचे। 11. ड्योढी। 12. मन को कुंद करके। 13. सिखाता है, कहता है। 14. हकूमत। 15. कुछ तो उपाय करो। 16. अपनी बहुत अप्रतिष्ठा हुई।

बात कबूल कीवी। मांडव था छांनां चूंडौ लषावत सीसोदीयौ तेड़ीयौ[1]। महैपौ पंवार तेडीयौ। राव रिणमल सूतां नुं ऊपर डोरां सु बांधे ने नजाणर[2] ५[1] घाव कीया इतरै घाव लागै ही राव रिणमल सीरांणा सुं[3] कटारी ले नै वाही, राव मारीयौ। तठै भाः सता लूणकरणौत रौ गीत—

पूगी मांळोयां मंडलीक।
पूगी आभ लगे उभांई॥
लूणकरणोत तणी थई।
लंबी कलहण बार कटारी॥१॥

पोहर एक रीड़मां पहैली।
पाय षांडूधर पषाळी॥
लाग अवासां कुंभे लांगी।
मांडधणी परतमाळी॥२॥

उंचा गोषां बीच आवसां।
आहाड़ो रै आधी॥
तेण परजाळ सती ते षीली।
बीजळ हुतां बांधी॥३॥

५०. सु तिण[3] भुरज ऊपर चढनै राव जोधा रा डेरा ऊपर सांद करै कहौ – थांकौ रिणमल मारियौ जोधा नास सकै तौ नास[4]। राव जोधा रै पिण नीसरण री तयारी हुती। राव रिणमल साथ कांम आया—

१. भाटी सतो लूणकरन हमीर रौ।
१. रा. रिणधीर सुरावत सूर कान्हो चुडो[4]।
१. वींजो वीकमादित राजगपाळ।

---

१. २५। २. राव रिणमल रा रजपूत श्रेकण सुं किण ही छोकरी सुं हालंवो थो सुं नीग। ३. सूर कान्हा उत रौ।

---

1. दुनादा। 2. नेजाधारी। 3. सिरहाने से। 4. भाग सके तो भाग।

५१. रा. भींव चुंडावत दारू पीयां सुतौ थौ सु उठै नहीं । घड़ी षांड भांव जगावण नुं षसीयां[1], भींव चूंडावत जागे नहीं । तरै भींव नै सूतौ मेल नै[2] नीसरिया । जोधै चढ़ षड़ीया । नै रांणा रौ साथ बांसै लागौ आयौ[3] । सु चीतोड़ थी कोस ८ तथा १० मांहे वेढ़ १ हुई तठै असवार २०० जोधा रा कांम आया, नै आदमी ५०० रांणा कुंभा रा कांम आया । नै वेढ १ एक चीतोड़ थी कोस ३० उपरां हुई तठै कितरो ही सांथ कांम आयौ । लड़तां विढ़तां सौमेस्वर रै घाटै जोधौ आयौ । अठा सुधा[4] असवार २०० तथा २५० जोधा साथे छै । जोधौ घाटै सुधौ आयौ तरै सीसोदीयां री फोज जोधा नै घणौ दबायौ । जांणीयौ घाटै उतरीयौ[1] तौ जोधौ कुसळे घरां गयौ । नै राठोड़ां दीठौ राव रिणमल नुं तौ मारीयौ नै जोधौ माराणौ तौ माहारी साहबी सारी ही जावै छै[2] । तरै बिचार नै बडा-बडा राठोड़ां घाटां ऊपर पागड़ा छांडीया[5] । नै जोधा नु कुसळे घाटौ लंघायौ[6] । रा. बरजांग भींवोत पूरै घावां पड़ीयौ[7] । षौळां ऊपड़ीयौ रा. चरड़ो[3] चांदराव अरड़कमल चूंडावत रै बेटौ रांणौ पीथौ, ईंदो पोकरणो, सीवराज ओर घणौ साथ कांम आयौ । असवार सात सुं कहै छै, जोधौ घाटै पार कुसळां ऊतरियौ । अठै घणौ चकारौ पड़ियौ[8] । वाढीयां री आरेण हुई[9] । राणा री फोज ही घाटा थी रिण सोझ नै[10] बरजांग भींवोत नुं उपाड़ नै[11] पाछा वळीया । राव जोधौ मंडोवर आया । तुरत आपरौ थौ सु लेनै बीकानेर दिसी[12] आगे जांगळु सांषलो नापौ मांणक रावउत मांडौ धणी छै, तिण री बेटी नापा री नारंगदे सांषली बीका बीदा री मा परणी हुती, सु तिण परसंग एक वार उठी गया । भाटीयां केलणां सुं पिण सगाई थी ।

५२. बीकानेर परै कोस ७ पूंगळ रै मारग काहु नी छै, तठै जाण रौ

१. लंघिया । २. पार पड़ी । ३. चूंडो ।

1. प्रयत्न किया । 2. सोता हुआ छोड़ कर । 3. पीछा करता हुआ आया । 4. यहां तक । 5. घोड़ों से नीचे उतरे । 6. सकुशल घाटे से पार उतार दिया । 7. अत्यधिक घायल होकर गिरा । 8. दूर-दूर तक युद्धक्षेत्र हुआ । 9. जंगल लाशों से भर गया । 10. झाड़ी में ढूंढ़ कर । 11. उठा कर । 12. की ओर ।

बीचार कियौ। राव रिणमल रै बारीया री किरीया[1] कोड़मदेसर तळांव हमें छै तठै कीवी। राव जोधा रा हुता सु सारा काहु नी आया[2]।

५३. रांणै कुंभै मारवाड़ लेण नुं वांसा करण इतरौ साथ मेलियौ। रा. राघवदे सिहसमलोत, सहेसमल चूंडावत नुं आसीयौ जाण चाकर राषीयौ। सोझत इण नुं पटै दीवी। सोझत मांहे लषमीनारांइणजी रौ देहुरौ छै। जोधपुर फळसै इण रौ तणा दिन रौ करायौ छै। साष जोधायण[1] रौ दूहौ—

राघवदे सु मेंल्हीयां, कुंभकरण दळ चाड़॥
मंडोवर वास करण जी, कुसतत मेवाड़॥

५४. मुदौ सारौ आका सीसोदीया, हींगलौ आहाड़ा, रेणायर मुहतां ऊपर छै। रा. नरबद सतावत सतो चूंडावत रा नुं कायलांणौ घणौ गांव सुं देनै चाकर कर इण साथे मेलोयौ—जोधौ वेगौ मरावौ[3]। जोधौ मारीया म्हे थांनुं मंडोवर देसां। रांणै रौ वडौ थांणौ आय मंडोवर वेठौ मंडोवर वसीयौ चोकड़ी रै थांणै रावत राठौड़ रायवदे[2] सहसमलोत नुं राषीयौ।

५५. १ झालो १. सोढो १ घोड़रो[3] भा. वणीर पुनावत पुनौ वीसलदे रौ, वीसलदे रायल दुदा रौ, पिण इण थांणै माहे छै। बोजा ठौड़२ थाणां राषण री ठौड़ थी अठै थाणो राषीयौ, धरती आधीहेक वसी। राव जोधो सामान सुं लतुर[4] गयौ। भाई म्हाना थां जोर वीपत छै[4]। तौ ही राव जोधो काहु नीं थकी दौड़ धाव करै छै[5]। पण पाधरो कांम कोई नहीं आवै छै। बरस १२ बारै राणा रै धरती रही। वेळां एक तथा दोय राय जोधा ऊपर फोज नरवद आगे होय नै

१. जोधाणीयारी। २. राघवदे। ३. घवेचो। ४. सामान सूं सुल तूट।

1. राव रिड़मल की मृत्यु के बारह दिन पूरे होने पर क्रिया कर्म आदि। 2. सभी लोग नहीं आ सके। 3. जोधे को शीघ्र मरवाओ। 4. अत्यधिक विपत्ति है। 5. दौड़ धाग करता है।

ले गयौ। उठै एक वार राव जोधौ नीठ नीसरीयो। गुढो सारो लूटाणौ।

५६. औ करतां राव जोधौ भाईपण मोटी कीवी[1]। भाई आप भेळा हुवा। भेळा होय विचार कीयौ। आंपे धरती गमाई, धरती वाळां[2] सु मांमूर नहीं। तरै सेतरावा रावत लूणौ, राजावत राजो देवराजोत रा घोड़ा १४० तिण दिनां छै। सु राव जोधै धरती वाळण री विचार कीयौ। काहू नी थी[3] चढ नै सीरहड़ भाटीयां री आया। तिण दिन सारी धरती माहे दुकाळ पड़ीयौ छै। धांन कठैहो नहीं छै। सु सोढी मुलवाणी[1] वडी सतवादण छै, रजपूतांणी थी। तिण रै पिराहणा होया, नै उण मजीठ री लापसी कर नै जीमाई। पछै फळोधी रै परगनै कसब थी कोस ५ पांच सांपलो हरभु महैराजोत तिको पिण रहै छै, सु कमाई रौ धणी छै[4] तिण नु पहली करामात थी पवर हुई छै। सु हरभु पहली सारी जीमण री तयारो कीवी छै। घणी मूंग वाजरी रौ षीच रांद दाळ रोटीयां पहैत षीर गोरस सारौ तयार कर नै राषीया छै। नै पांतीया दीया छै। नै वाजां[5] ऊपर धरी छै। तितरै राव जोधौ आयौ। आय हरभू साह सुं जाय मिळीया नै कहौ–पड़वै माहे साथ सुधा पधारौ। माहै जातां सुधां पांतीये बेसांणीया, वडी भगत कीवी।[6] धांन मिळीयां दिन ४ तथा ५ हुवा हुता। जितरा में धांन धाया हुता। षीर षांड गोरस सारी वातां तिरपत[2] हुवा हुता।[7] राव जोधौ हेरान हुवौ। हरभू नै[3] किणी भांत आगै षबर हुई। माहो-माह[8] वात करण नु लागा। तरै सारां ही कहौ–हरभू पीर छै, इणमें वडी करामात छै। इण नु सारी षबर पड़ै छै। तरै राव जोधै हरभू नु पूछीयौं–हरभूजी थे तौ कमाई रा धणी छौ, थांसु कांई वात छांनी नहीं छै, कदे'क माहारौ दिन वळसो[9], कदेक माहारी

१. मुलाणी। २. आपत। ३. हरभंम नु।

1. भाईचारा रखने वालों की संख्या वढाई। 2. वापिस लें। 3. बिना किसी सेना के। 4. ईश्वर का कृपापात्र है। 5. खाना खाने की चौकी। 6. बड़ा स्वागत किया। 7. तृप्त हुए। 8. आपस में। 9. कभी हमारे दिनमान अच्छे आवेंगे।

चारी कीयो।[3] इण रै कोई मगो भो तिण रै डेरै आदमीयां रै मुं जाय रह्यो। एक जणै पोळ रो भींगाड़[4] खोलीयो ने कह्यो–भांगं फाकेबी फलांणै कांम मेलीया छै नुं सांनाबी[5] पोळ खोली। नरै एक जणो मांहिली कांनी पोळ रै मुंहडै ऊभो रह्यो छै। नै राव जोधा नै आय खबर दीवी–वेगा आवो सारा अमल ऊतरीयां[6] सूता पड़ीया छै। राव जोधो आय पोळ रै नजीक ऊभा रह नै कोट मांहे आदमी चारसै सुं पेठो। हींगोळी अहाड़ो मारीयो। मु: रैणायर ही जोधो रैणीयो[1] आको सीसोदीयो बीजो घणो साथ मारीयो। तिण हींगोळा आहाड़ा री छतरी १ बाळसमंद ऊपरै छै। राणा रो साथ अठा रो मार, भर भरत[2] [7] मंडोवर हाथ आयो के राणा रो साथ नाठो छै। राव जोधो एक आपरी भाई कोई बीजो साथ मंडोवर राप नै चोकड़ी रो थाणै रावत रा.[3] घोड़ा सैसहसमलोत और भाटी वणवीर को झालो सोडो सीसोदीया था तिणां ऊपरा पड़ीया। दिन पोहर १॥ चढतां चोकड़ी रै थांणै नुं भूबीया[8] रावत राघवदास नै और राणा री साथ नीसरीयो भा: वणवीर कांम आयो। कौसांणै रा थांणा रा घोड़ा जीन-साझ सारी सामान राव जोधा रै हाथ आयो। राणै री साथ नोसरीयो

१. रणियो। २. भार भरय। ३. राघव दे।

---

1. घोड़े पर चढ़ो। 2. स्त्री के भेद से प्राप्त किये। 3. गुप्त रूप से पता लगाया। 4. दरवाजा। 5. शीघ्रता से। 6. अफीम के उतरे हुए नशे में। 7. सारा माल-ताल। 8. हमला किया।

तिणै वांसै सोभत री तरफ नुं राव जोधौ हुवौ। मेड़ता री तरफ अजमेर दिसा रा कांधल रिड़मलोत नुं फोज दे नै मेलियौ। राव जोधौ सोभत माहे कर नै इणां साथ सुं वांसौ कीयौ।[1] गांव घणा ले सुधा आय आपड़ीया सु मार नै वाग षांची[2], तीजो दिन हुवौ, धांन षाधां नुं। तीसरै दिन घणलै वळ कीवी।[3] रा: कांधळ मेड़ता दिसां वांसौ कीयौ थौ सु भैरूदा ताउं वांसौ कीयौ नै आपड़ीया। आपड़ नै मारीया, मार नै वळ कीवी। उठा थी कांधळ ही पिण पाछा वळीया। राव जोधौ ही आप पाछौ आयौ। सोभत डेरौ कीयौ। रा: कांधळ नुं पण सोभत वुलाय लीयौ। सारा राठोड़ भेळा हुवा वड़ी फतै हुई। वडौ उछाह[4] हुऔ। पछै सारा ही राठौड़ां विचार करनै, राव जोधै सोभत वास कीयौ। वरस २ सोभत रहा, पछै मंडोवर थाणौ राषीयौ।

५८. पछै एक वार राणौ कुंभौ सारौ साथ मेवाड़ रौ भेळौ कर नै[5] पाली आय ऊतरीयौ। राव जोधा नुं षवर हुई। तरै राव जोधा रै घोड़ा थोड़ा हुता। तरै गाडा हजार २०००, राठोड़ हजार १०००० मरण रै मतै हुवा।[6] नै डेरा पाली रै ऊपर राव जोधै जाय कीया। तरै राणा नुं षवर हुई—जोधौ गाडै वैठ आयौ छै। सु इण वात रौ सोच हुवौ। तरै सारा ही सीसोदीया दरबार भेळा कर नै सगळां नुं पूछीयौ—राव जोधौ गाडै वैठ इण मतै आयौ छै। तरै सारा ही बिचार कह्यौ—राव जोधौ गाडै वैस आयौ तिण रौ भाजण रौ मतौ[1] नहीं।[7] अै दस हजार आदमी मरतां काहू जांणां कांईंक करसी। तरै राणौ राव जोधा आवतै पैली ही नीसर गयौ।[8] तरै राणै कुंभा रा डेरा री ठौड़ राव जोधै डेरा कीया। सैदांना जैत रा[9] राव जोधै वजाड़ीया। पछै वळै पाली रौ साथ सगळौ ही भेळौ कर ने राव जौधै सारी

१. मंड।

1. पीछा किया। 2. घोड़ों को चलाया। 3. अधिकार में। 4. खुशी। 5. शामिल करके। 6. प्राणोत्सर्ग के लिए तैयार हुए। 7. भाग कर वापिस जाने का विचार नहीं है। 8. प्रस्थान कर गया। 9. विजय के बाजे।

फलांणे कांम मतीया छै नै सानाजो पोळ मांनो । नर एक जणा मांहसी कांनी पोळ रै मुंहडै ऊभो रह्यो छै । नै राव जोधा नै आप पवर दोवी–वेगा आवो मारा अमल उतरीयां सूता पड़ीया छै । राव जोधो आय पोळ रै नजीक जेळ कर नै कोट मांहे आदमी चारसौ सुं पैठो । हींगोळो अहाड़ो मारीयो । मुः रैणायर ही जोधो रेणीयो आको सीसोदीयो बीजो घणो साथ मारीयो । तिण हींगोळा आहाड़ा री छतरी १ बाळसमंद ऊपरै छै । राणा रो साथ अठा री मार, भर भरत[2] [7] मंडोवर हाथ आयो के राणा रो साथ नाठो छै । राव जोधो एक आपरी भाई कोई बीजो साथ मंडोवर राप नै चौकड़ी रो थाणै रावत रा.[3] घोड़ा सैसहसमलोत और भाटी वणवीर को भालो सोढो सीसोदीया था तिणां ऊपरा पड़ीया । दिन पोहर १।। चढतां चौकड़ी रै थांणे नुं भूबीया[8] रावत राघवदास नै और राणा री साथ नीस-रीयौ भा: वणवीर कांम आयो । कौसांणै रा थांणा रा घोड़ा जीन-साभ सारौ सामान राव जोधा रै हाथ आयो । राणै री साथ नोसरीयो

१. रणियौ । २. भार भरथ । ३. राघव दे ।

1. घोड़े पर चढ़ो । 2. स्त्री के भेद से प्राप्त किये . 3. गुप्त रूप से पता लगाया । 4. दरवाजा । 5. शीघ्रता से । 6. अफीम के उतरे हुए नशे में । 7. सारा माल-ताल । 8. हमला किया ।

तिणै वांसै सोभत री तरफ नुं राव जोधो हुवो। मेड़ता री तरफ अजमेर दिसा रा कांवल रिड़मलोत नुं फोज दे नै मेलियो। राव जोधौ सोभत माहे कर नै इणां साथ सूं वांसो कीयो।[1] गांव वणा ले सुधा आय आपड़ीया सु मार नै वाग पांची[2], तीजो दिन हुवो, थांन पाधां नुं। तीसरै दिन वणलै वळ कीवो।[3] राः कांवळ मेड़ता दिसा वांसो कीयो थो सु भैरूदा ताउं वांसो कीयो नै आपड़ीया। आपड़ नै मारीया, मार नै वळ कीवी। उठा थी कांवळ ही पिण पाछा वळीया। राव जोधौ ही आप पाछौ आयो। सोभत डेरो कीयो। राः कांवळ नुं पण सोभत वुलाय लीयो। सारा राठोड़ भेळा हुवा वड़ी फतै हुई। वडो उछाह[4] हुओ। पछै सारा ही राठोड़ां विचार करनै, राव जोधै सोभत वास कीयौ। वरस २ सोभत रहा, पछै मंडोवर थाणौ रापीयौ।

१८. पछै एक वार राणो कुंभो सारो साथ मेवाड़ री भेळो कर नै[5] पाली आय ऊतरीयो। राव जोधा नुं षवर हुई। तरै राव जोधा रै घोड़ा थोड़ा हुता। तरै गाडा हजार २०००, राठोड़ हजार १०००० मरण रै मतै हुवा।[6] नै डेरा पाली रै ऊपर राव जोधै जाय कीया। तरै राणा नुं षवर हुई–जोधो गाडै वैठ आयो छै। सु इण वात रौ सोच हुवो। तरै सारा ही सीसोदीया दरवार भेळा कर नै सगळां नुं पूछीयो–राव जोधो गाडै वैठ इण मतै आयो छै। तरै सारा ही विचार कहो–राव जोधो गाडै वैस आयो तिण रौ भाजण रौ मतो[1] नहीं।[7] अै दस हजार आदमी मरतां काहू जांणां कांईक करसी। तरै राणौ राव जोधा आवतै पैली ही नीसर गयौ।[8] तरै राणै कुंभा रा डेरा री ठौड़ राव जोधै डेरा कीया। सैदांना जैत रा[9] राव जोधै वजाड़ीया। पछै वळै पाली रौ साथ सगळौ ही भेळौ कर ने राव जौधै सारी

---

१. मंड।

---

1. पीछा किया। 2. घोड़ों को चलाया। 3. अधिकार में। 4. खुशी। 5. शामिल करके। 6. प्राणोत्सर्ग के लिए तैयार हुए। 7. भाग कर वापिस ज[illegible] विचार नहीं है। 8. प्रस्थान कर गया। 9. विजय के वाजे।

धरती वळसी ? तरै हरभू कह्यौ–जोधा थारौ आज सुं दिन वळीयौ। थे पागड़े पग देवौ।[1] म्हारा मूंग थांहरै पेट माहे थकां जितरी धरती माहे घोड़ौ फिरसी तितरी धरती थांरी। वेटां पोतरां सुं कदे धरती जावसी नहीं।

५७. राव जोधै सेत्रावै जाय रावत लूणा कन्है घोड़ा १४० मांगीया उणे दीया नहीं। तरै घोड़ा १४० पलांण सुधा मांडै लूणे री वेर रै भेदे लीया[2] चढ नै आथण रा षड़ीया। रात घड़ी २ थकां मंडोवर था नजीक आया, ऊभा रहा। तद मांगळीऐ काले मंडोवर रौ हेरा चारौ कीयौ।[3] इण रै कोई सगो थौ तिण रै डेरै आदमीयां २ सुं जाय रह्यौ। एक जणै पोळ रौ कींवाड़[4] षोलीयौ नै कह्यौ–मोनुं आकेजी फलांणै कांम मेलीया छै सुं सोताबी[5] पोळ षोलौ। तरै एक जणौ मांहेसी कांनी पोळ रै मुंहडै ऊभौ रह्यौ छै। नै राव जोधा नै जाय षबर दीवी–बेगा आवौ सारा अमल ऊतरीयां[6] सूता पड़ीया छै। राव जोधौ आय पोळ रै नजीक जेळ कर नै कोटः माहे आदमी चारसै सुं पेठौ। हींगोळौ अहाड़ौ मारीयौ। मुः रेणायर ही जोधौ रेणीयो[1] आको सीसोदीयौ बीजौ घणौ साथ मारीयौ। तिण हींगोला आहाड़ा री छतरी १ बाळसमंद ऊपरै छै। राणा रौ साथ अठा रौ मार, भर भरत[2] [7] मंडोवर हाथ आयौ के राणा रौ साथ नाठौ छै। राव जोधौ एक आपरौ भाई कोई बीजो साथ मंडोवर राष नै चौकड़ी रौ थाणै रावत रा.[3] घोड़ा सैसहसमलोत औरः भाटी वणवीर को झालो सोढौ सीसोदीया था तिणां ऊपरा षड़ीया। दिन पौहर १।। चढतां चौकड़ी रै थांणै नुं झूबीया[8] रावत राघवदास नै और राणा रौ साथ नीसरीयौ भा: वणवीर कांम आयौ। कौसांणै रा थांणा रा घोड़ा जीन-साझ सारौ सामान राव जोधा रै हाथ आयौ। राणै रौ साथ नीसरीयौ

१. रणियौ। २. भार भरथ। ३. राघव दे।

1. घोड़े पर चढ़ो। 2. स्त्री के भेद से प्राप्त किये। 3. गुप्त रूप से पता लगाया। 4. दरवाजा। 5. शीघ्रता से। 6. अफीम के उतरे हुए नशे में। 7. सारा माल-ताल। 8. हमला किया।

तिणै वांसै सोझत री तरफ नुं राव जोधौ हुवौ। मेड़ता री तरफ अजमेर दिसा रा कांधल रिड़मलोत नुं फोज दे नै मेलियौ। राव जोधौ सोझत माहे कर नै इणां साथ सुं वांसौ कीयौ।[1] गांव घणा ले सुधा आय आपड़ीया सु मार नै वाग षांची[2], तीजो दिन हुवौ, धांन षाधां नुं। तीसरै दिन धणलै वळ कीवी।[3] राः कांधळ मेड़ता दिसां वांसौ कीयौ थौ सु भैरूदा ताउं वांसौ कीयौ नै आपड़ीया। आपड़ नै मारीया, मार नै वळ कीवी। उठा थी कांधळ ही पिण पाछा वळीया। राव जोधौ ही आप पाछौ आयौ। सोझत डेरौ कीयौ। रा: कांधळ नुं पण सोझत वुलाय लीयौ। सारा राठोड़ भेळा हुवा वड़ी फतै हुई। वडौ उछाह[4] हुऔ। पछै सारा ही राठौड़ां विचार करनै, राव जोधै सोझत बास कीयौ। वरस २ सोझत रहा, पछै मंडोवर थाणौ राषीयौ।

५८. पछै एक वार राणौ कुंभौ सारौ साथ मेवाड़ रौ भेळौ कर नै[5] पाली आय ऊतरीयौ। राव जोधा नुं षबर हुई। तरै राव जोधा रै घोड़ा थोड़ा हुता। तरै गाडा हजार २०००, राठोड़ हजार १०००० मरण रै मतै हुवा।[6] नै डेरा पाली रै ऊपर राव जोधै जाय कीया। तरै राणा नुं षबर हुई—जोधौ गाडै बैठ आयौ छै। सु इण बात रौ सोच हुवौ। तरै सारा ही सीसोदीया दरबार भेळा कर नै सगळां नुं पूछीयौ—राव जोधौ गाडै बैठ इण मतै आयौ छै। तरै सारा ही बिचार कहौ—राव जोधौ गाडै बैस आयौ तिण रौ भाजण रौ मतौ[१] नहीं।[7] अै दस हजार आदमी मरतां काहू जांणां कांई'क करसी। तरै राणौ राव जोधा आवतै पैली ही नीसर गयौ।[8] तरै राणै कुंभा रा डेरा री ठौड़ राव जोधै डेरा कीया। सैदांना जैत रा[9] राव जोधै वजाड़ीया। पछै वळै पाली रौ साथ सगळौ ही भेळौ कर नै राव जौधै सारी

१. मंड।

1. पीछा किया। 2. घोड़ों को चलाया। 3. अधिकार में। 4. खुशी। 5. शामिल करके। 6. प्राणोत्सर्ग के लिए तैयार हुए। 7. भाग कर वापिस जाने का विचार नहीं है। 8. प्रस्थान कर गया। 9. विजय के वाजे।

गोढ़वाड़ मारी[1], नै लूट लीवी। पछै मेवाड़ मार नै पीछौळै घोड़ा पाया। तिण समीया री नीसांणी :—

तें सिर किण ही न निवावतां तें छत्र न वाधा ।।
जाळोरी जौषमत जें वळ भोजे लाया ।।
कछहावां अरू भाटीयां नाळेर पठाया ।।
बूंदी नाळबंदी दीये राव रिड़मल जाया ।।
घाणौराव उजड़ किया गुदौच बसाया।
सतरेचां अर सिरोहीयां सिर आंक सहाया ।।
धर तेती राणां धणी धर तेती धाया ।।
किया पंवाड़ा राठवड़ चंद ढाढी गाया ।।
जोधै जंगम आपरा पीछोळै पाया ।।१।।

पीछोळै घोड़ा पाय नै डेरा कीया। सहर उदैपुर तद बसतौ नहीं थौ। पछै चीतोड़ ऊपरै चलाया। नै चीतोड़ री तळहटी सारी मारी। राणौ कुंभौ गढ़ री पोळ जड़ नै माहे बैस रहौ।[2] तरै राव रिणमल रै माळीये राव जोधौ जाय नै कांध निवाई।[3] बडौ दावौ काढ नै पाछा सोझत आया नै मंडोवर बापौती[4] हुती सु षाटवी।[5] नै राव रिणमल रा बैर माहै राणा री धरती इतरी राव जोधै दाबी। माहौ-माह आमा सांमा बसीटाळा फिरीया।[6] तरै अठा री आंवळ आंवळ राणा रा[7] नौ बांवळ बांबळ रावां रा[8] तिण दिन री आ केहावत[9] छै। तठा सुं षत री साल सुं सोझत जैतारण राणा री थी सु राव जोधै रिणमल रा बैर माहे राणा नुं दबाय नै जोधपुर वांसै घाली[10] सु सोझत जैतारण जोधपुर वांसै इण तरै सुं पड़ी छै।

---

1. हस्तगत की। 2. अंदर बैठ गया। 3. श्रद्धा पूर्वक नमन किया। 4. वंशानुगत संपत्ति। 5. जीती। 6. अंदर ही अदर वहां के लोग समझौता कराने के लिए आने जाने लगे। 7. इस तरफ की धरती में जहां तक आंवले के पेड़ हैं वह राणा की। 8. बबूल वाली सारी धरती राव जोधा की। 9. कहावत। 10. जोधपुर के शामिल कर ली।

५९. राव रिणमल नुं कुंभै मार नै लोथ पड़ी राषी दाग देवण दीयौ नहीं।[1] तिण समैं चारण १ चांदण षड़ीयो लुवट[1] रौ बेटौ पाघड़ी गांव सुराचंद री राणे मोकळ कन्है आयौ रांणे गांव २ मेवाड़ रा देनै राषीयौ थौ ।

१. कचुंवरो १ गुलछरो

पछै चांदण षड़ीये मरण री अषतीयारी कर नै[2] रिणमल री लोथ उपाड़ नै दाग दीयौ। पछै फूल गळै बांध नै गंगाजी ले गयौ। पछै चांदण मेवाड़ कोई गयौ नहीं नै मारवाड़ आयौ। तठा पछै षड़ीया चांदण रा वेटा पोतां नुं नै आप नुं राव रिणमल रा बेटां पोतां इतरा गांव उण उपगार[3] रा दीया ।

राव जोधौ षिड़ीया चांदण नुं गांव दीया—

१. परगना जोधपुर रा—

१ संषड़ी जोधपुर री पैरवा रीं।

१ जाजीवाळ भींवा वाळो तिका मोटे राजा लोपी।

२. परगना सोभत रा—

१ गांव बींठोरो षुरद, १ गांव गोधेळाव।

राव उदैसिंघ[2] जोधावत रा दिया गांव मेड़ता रा—

१. गांव कांवलीया तफै अणंदपुर षड़ीया धरमा चांदणौत नुं दीयौ ।

१. गांव षंडाड़ी तफै अणंदपुर षड़ीया लुंभा चांदणोत नुं दीयौ। राव सीहै सेतरांमोत दीया दत्त प्रगनै मेड़ता रा गांव—

१. मोडरीयो तफै मोडरै षड़ोया सीहा चांदणोत नुं दीयौ।

राव मालदे रौ दत्त मेड़ता री गांव १ मोहलावास तफै अणंदपुर पड़ीये सूरै अचळावत नुं ।

---

१. लुपट । २. वरसींघ ।

---

1. दाह-संस्कार नहीं करने दिया। 2. जोखम लेकर, निश्चय करके। 3. उपकार।

६०. राव जोधौ पड़िहारां रौ भांणेज पड़िहार जेसल राणा सु पड़िहारां री बेटी हंसा बाई रा पेट रौ जायौ। संवत १४७२ रा बैसाष सुद ४ बुधवार रौ जनम छै। नै संवत १५१२ रै टाणै सै धरती पाछी वाळी।[1] पछै संवत १५१५ रा जेठ सुद ११ सनीवार सवात नषत्र[2] बीरष लगन[3] चिड़ीया टूंक रै भाषर ऊपर गढ़ मंडायौ। राव जोधा रै इतरी धरती, परगना छै।

१ जोधपुर १ मेड़तो १ सोझत १ जैतारण १ जांगळु बीकानेर री।

६१. एक बात आ सुणी छै—राव रिणमल नुं राव राणगदे पूंगळ रै धणी चूंडा रा बैर माहे[4] परणायौ थौ। तिण रौ नांव कोड़मदे थौ। तिण रा पेट रौ राव जोधौ छै, सु कहै छै।

६२. तठा पछै इतरी पीढीयां इतरा बरस भोगवी छै। संवत १५१५ रा जेठ सुद ११ सनीवार गढ मांडीयौ राव जोधै, नै सं: १५४१ राव जोधै काळ कीयौ।[5] बरस २६ छाईस राव जोधै जोधपुर राज कीयौ। भायां नै धरती बास[6] गांव बांट दीया। तिण री विगत—

१. रा: अषैराज रिणमलोत नुं गा० सोझत रो बगड़ी सा: चरड़ा तद धणी थौ सु अषेराज चरड़ा नुं मार नै बगड़ी लीवी।

१ रा: चांपौ रिणमलोत नुं कापरड़ो बणाड़।
१ रा: डूंगर रिणमलोत नुं भाद्राजण सींधलां रौ उतन।[7]
१ रा: बाला भाषर रा नुं षरला[1] साहली षारड़ी।
१ रा: रूपौ रिणमलोत नुं चाडाल[2] हुवा[3] रौ उतन।
१ रा: मंडला रिणमलोत नुं सांढुड़ो बीकानेर रौ।
१ रा: करना रिणमलोत नुं लुणावास।
१ रा: पाता रिणमलोत नुं करणु।

---

१. षेरला। २. चाडी। ३. लहुआं।

---

1. पुनः प्राप्त की। 2. स्वाति नक्षत्र। 3. वृष लग्न। 4. चूंडा के बैर के बदले। 5. प्राणान्त हुआ। 6. बसा कर। 7. वतन।

१ राः वैरा रिणमलोत नुं प्राः सोझत दुधवड़ ।

१ राः जगमाल रिणमलोत मोटीयार थको मुवौ ।[1] तिण रै बेटौ षेतसी तिण नुं गांव नेतड़ां ।[१]

६३. राव जोधै आपरा बेटां नै धरती दीवी तिण री बिगत–१ राव सातल सूजौ जसमादे हाडी रांणी रा पेट रा नुं जोधपुर दीवी ।

१ नींबो जोधावत सु टीकायत थौ ।[2] जसमादे हाडो रा पेट रौ सु राव जोधै जीवतां सींधल जेसौ मारीयौ तद घाव लागौ थौ । पछै एक बार घाव साजो हुवौ[3] थौ । पछै घाव फेर ऊपड़ीयौ[4] तरै मुवौ । बेटौ नींबा रै कोई नहीं । सोझत री भाषरी ऊपरलौ कोट नींबा रौ करायौ छै । प्राः फळोधी री बावड़ी २ नींबा रौ दत प्रोहतां नुं छै ।

वरसंघ दुदो[२] जोधावत सगा भाई सोनगरी चांपां सोनगरा षींवा सतावत री बेटी तिण रै पेट रा, तिणां नुं मेड़तौ दीयौ ।

२. बीका बीदा जोधावत नै सगा भाई सांषली नारंगदे रा पेट रा राणा मडाजेतसोत[३] री बेटी रा । तिणां नुं बीकानेर जांगळु दीवी । राव बीकौ टीकै बैठौ । नै बीदा नुं लाडणु द्रूणपुर मोहलां री धरती गांव १४० सुं दीवी । राव जोधौ गया गयौ । तद राव जोधौ जीवतां नारंगदे भाग री कूंडी कुराय[5] नै गंगाजी में जळ प्रवेस कीयौ ।

२. भारमल जोगो जोधावत सगा भाई जमना हुलणी रा बेटा । हुल बणवीर भोजावत रा दोहीता । इणां नुं कोढणौ ऊहड़ां वाळौ दीयौ ।

१. सिवराज जोधावत वाघेली वना रौ बेटौ बाघेलै उरजन भीमराजोत रौ दोहतरौ छै । तिण नुं राव जोधै एक वार सीवाणौ जैतमाल वाळौ दीयौ थौ । पछै सवराड[४] रा गाडा दुनाड़ै पहौता । तितरै देवीदास राणे राव रौ थाणौ मार नै गढ़ लियौ । पछै राव जोधै नुं आ षवर हुई तरै सिवराज नुं दूनाड़ौ दीयौ ।

---

१. नेतड़िया । २. ऊदो । ३. माडासिघोत । ४. सिवराज ।

---

1. जवानी में ही मर गया । 2. टीके का हक़दार । 3. ठीक हो गया । 4 उघड़ गया । 5. विशिष्ट धार्मिक संस्कार ।

२. करमसी रायपाल जोधावत सगा भाई भटीयांणी पूरा[1] रै पेट रा, राव बैरसील चाचावत भाटी रा दोहीता। तिणां नुं राव जोधै नाहाढसरौ दीयौ थौ। पछै इणां जाय नै नागोर रा सल्हैषान[2] नुं आपरी बेहन भार्गा परणाई। सल्हैषांन आसोप षींवसर साळा कटारी[1] रा दीया था सु जोधपुर वांसै पड़ाया। तद रा जोधपुर लारै पड़ीया छै। संवत १५२१ रा चैत बदि १२ प्रौः दमां हरपाल रा नुं गांव तिंवरी दत्त माहे दीवी। लुढावस, मथाणीयौ. बडीपण बारट गया दत्त माहे दीया छै।

६४. राव सातल जोधावत, जोधै काळ कीयां संवत १५४१ पनरै सौ इकताळीसै, जोधपुर पाट बैठौ।[2] बरस ४ चार राज भोगवीयौ नै संवत १५४५ रा सातल काळ कीयौ। वेढ एक कुसांणै अजमेर सुं बाईतु मलुषांन हुतौ, मांडव रै पातसाह रौ उमराव, तिण सुं कीवी। आ वेढ[3] वरसिंघ जोधावत सांभर मारी। तिण ऊपर मलुषांन चढ मेड़ते ऊपर आयौ। तरै बरसिंघ दूदौ जोधपुर आय सातल भेळा हुवा। मलुषांन फौज लीयां वांसै हुवौ आयौ।[4] सारी जोधपुर री धरती मार नै कोसांणै तळाव ऊपरै ऊतरीया। अठै राव सातल सुजै वरसिंघ दुदै भेळा हुय नै रातीबाहो दीयौ।[5] राः बरजांग भींवोत रौं घणौं साथ भेळौ[3] हुवौ। बरजांग नै गांव भावी तद सुं पटै दीवी। इण वेढ माहे राव सूजो पूरै घावां पड़ीयौ।[6] मुगल भागीया। राव सातल री वडी फतै हुई। मलूषांन जोधपुर रै गांवां री घणी बंध पकड़ी थी[7] सु छूटी।

६५. राव सातल रै बेटौ कोई न थौ नै नरौ सूजावत षौहळै[8] हुतौ।

---

१ उरां। २. सालघ ३. मलौ।

---

1. विवाह के अवसर पर अदा की जाने वाली विशिष्ट रस्म जिसमें बहनोई की ओर से साले को विशिष्ट वस्तु या जागीर आदि दी जाती थी। 2. राज्यगद्दी पर बैठा। 3 लड़ाई। 4. पीछा करता हुआ आया। 5. रात्रि को हमला किया। 6. बुरी तरह घायल हुआ। 7. बहुत सी भूमि अधिकार में करली थी। 8. गोद।

पछै नरै जीवतां सुजे पोकरण रा षीया लुंका कन्है लीयौ वो लुंक छांड नै बाहड़मेर कोटड़ै गयौ। उठै जाय सातळमेर री घेर री गायां लीवी। नरौ वांसे आपड़ मुवौ[2]।[1] राव सुजो तिण दावे बाहड़मेर कोटड़ौ नालवौ सारा मारीया। गोईंद नरावत नुं पोकरण दीवी। नै हमीर नरावत नुं फळोधी दीवी। इतरी धरती हुई—

१ जोधपुर १ फळोधी १ पोकरण १ सोझत १ जैतारण

६६. कुवर बाघौ सूजावत मांगळीयांणी सबरंगदे[3] रौ बेटौ नै मांगळीयो पांचु बीरमदेयोत रौ दोहीतरौ। राव सुजै जीवतां काळ कीयौ। टीकै बैठौ नहीं। संवत १५१४ रा पोस बद ६ रौ जनम छै। नै संवत १५७१ पनरा सौ इकतरा रै भादवा सुद १४ काळ कीयौ। नै हाथी १ कुंवर पदै[2] थकां दान कीयौ हुतौ।

६७. राव गांगौ वाघावत चहुवाण उदां रा पेट रौ नै चहुवाण रांमकरण रावत रौ दोहीतरौ। राव सुजै काळ कीयौं, रव गांगौ टीकै जोधपुर बैठौ। संवत १५४० पनरै सौ चालीसै रा बैसाष सुदि १ रौ जनम छै। संवत १५७२ रा मंगसर सुद ३ जोधपुर ईडर सुं रजपूत आंण नै टीकै बैसाणीयौ।[3] संवत १५८८ रा जेठ बद १ काळ कीयौ। बरस १६ बरस सोळै नै मास ५॥, साढी पांच नै दिन दोय[4] राज भोगवीयौ—१ जोधपुर २ सोझत।

६८. राव गांगा रा प्रवाड़ा[4]—नागोर री फौज सुं सेवको वेढ़ कीवी। राः सेषो सूजावत मारीयो। हाथी वेढ में आया, आ वेढ गांव सेवकी संवत १५८६ रा मंगसर सुदि १ हुई। राव रा चाकर राः किसनौ सगतावत चांपावत पूरै लोहां पड़ीयो।[5] तरै दुनाड़ौ दीयौ छौ। पछै दन ९ नव दिन पछै मुओ। राः सेषै रा चाकर कांम आया। रा. अमरो मंडलावत नै रा. चेहथ[5] अडवळ रा पोतरा वाघावत। वीरमदे

१. घेड़। २. आय झूंवियौ। ३. सारंगदे। ४. ख. प्रति में नहीं। ५. चोथ वाघोत

1. पीछा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। 2. कुंवर पदवी में। 3. बैठाया
4. प्रसिद्ध वीरोचित कार्य। 5. बुरी तरह घायल होकर गिरा।

बाघावत कन्है मूवौ। रायमल षेतावत मार नै संबत १५६१[१] रा चैत सुदि १० सोझत लीवी। तद राव रौ चाकर रा: बेणो सहेसो तेजसोत रौ बरसिंघोत कांम आयौ।[२]

६९. ईडर एक वार गुजराती पातसाह दबायौ।[1] पछै राणौ सांगै राव गांगै बीरमदे मेड़तीये पातसाह मुदफरषां सुं अहमदनगर जाय नै बेढ कीवी। ईडर उग्रही साष—

दोहा—गांगौ गोतर रो गवाळ, ईडर उग्रहीया तणौ।
सोहै तौ सहपाळ, बडौ प्रवाड़ो बाघउत ॥१॥

राव गांगा नुं तेड़णे[2] डूंगरसी बागरोयो राणां रौ मेल्हीयौ आयौ हुतो मास ४ चार जोधपुर रहै नै राव गांगा नुं ले गयौ। चौ: डूंगरसी वाळा रौ, इण वेढ डूंगरसी रौ बेटौ कान्ह कींवाड़[3] बीच आयौ, कींवाड़ त्रुटा।[4]

७०. राव मालदे गांगावत देवड़ी पदमा रा पेट रौ राव जगमाल लषणौत[३] रौ दोहीतरौ। संबत १५६८ रा पोस वदि १ सुकरवार रौ जनम छै। नै संबत १५८८ रा जेठ सुद ४ बुधवार टीकै बेठौ। संबत १६१९ रा कातो सुद १२ जोधपुर काळ कीयौ। बरस ३१ राज भोगवौ।

७१. राव मालदे सारीषौ भागबळी[5] परताप बळी[6] जोधपुर कौ राजवी पाट बेठौ नहीं। गढ री रांग जोधपुर राव जोधै सूजै गांगै किण ही गढ तिसड़ौ कुं सुंवरायौ[7] न थौ। सारी अमारत झरणा री गढ री पोळ री मोहळ[8] री राव मालदे री कराई, गढ ऊपरै छै। राव मालदे पाषती री[9] धरती सारो लीवो बवली, मलाणौ[४] सुधी[10] हद कीवी।

---

१. १६६७। २. वीरमदे रौ चाकर धवळहर झूवियौ, पायगां लीवी भवरड़ा घोड़ौ लियौ, तठ काम आयौ रा. रूपो मालावत सा. रायपाल वीकावत सांगा रौ काको। ३. लखावत। ४. मलारणौ।

---

1. कब्जे में कर लिया। 2. बुलाने के लिए। 3. कपाट। 4. टूटे। 5. भाग्यशाली 6. बल व पराक्रम में श्रेष्ठ। 7. सजाया, नये मकान बनवाये। 8. महल। 9 आस-पास की। 10. तक।

रायधनपुर सुधी गुजरात दिस ली। राव मालदे टीकै बेठो तद इतरी धरती गांगा री षाटी छै[1]—

१. जोधपुर १ सोझत १ जैतारण उदावतां नुं छै, पिण अै चाकरी करै छै।

नागोर लीयौ तठै भा: प्रथीराज जेतसीयोत केल्हण काम आयो। पछै प्रथीराज री बेटी पंचायण रावजी नुं परणाई तिण री भाणेज मालदेउत। इतरा गढ राव मालदे लीया,

नवागढ मालदे लीया तिण री विगत—

१ मेड़तौ मेड़तीयां कन्हा सुं बेळा २ दोय[2] लीयौ।

१ संवत १५९९ बीरमदे कन्हा सुं लीयौ।

१ संवत १६१३ रा: जैमल कन्हा सुं लीयो।

३

१ नागौर संवत १६९२ रा माहा वद २ रा: कूंपा रै पटै।

१ अजमेर रा. महेस घड़सीयोत कना पटै छौ सु लीयौ।

१ महेस घड़ीसयोत कनां।

१ वीरमदे कनां लीयौ संवत १५९० री साल में।

५ विगत—

१ सांभर

१ बांवळ

१ मालपुरौ पंवारां वाळौ

१ सांचोर संवत १५९७ री साल में

१ सीवाणो राणा डूंगरसोत कन्हा लीयौ संवत १५९५ रा आसाढ वद ९ बुधवार।

५

१ डीडवाणो रा: कूंपा रै पटै छै।

२ जाळौर गढ वार २ लीवी[1]।

---

१. 'ख' प्रति में गढ़ों को प्राप्त करने का वृत्तान्त भिन्न क्रम से रखा गया, संवत व नाम समान हैं।

---

1. गांगा की जीती हुई है। 2. दो वार ली।

१ संबत १५६७

१ संबत १६१९ रा आसाढ वद ७ री साल में।

२

१. फळोधी संबत १६०४ राव डूंगरसी नुं झाल नै[1] लीवी।

१ पोकरण संबत १६०७ रा काती माहे राव जेतमाल कन्हा लीवी।

१ षाटु।

१ जाजपुर राः घड़सी भारमळोत रै पटै।

१ बधनौर राः जैतसी उदावत रै पटै।

१ गोढवाड़ राणा री—

१ नाडोळाई[1] राणौ पंचायण।

१ कोसोथळ राः जैतसी।

१ बीसलपुर राः जैतसी।

१ मदारीयौ राः कूंपा नुं।

४

१ कोटड़ौ

१ राधणपुर

१ वाहतखड़ गूजरां री राव रै थी भाः तेजसी[2] बणबीरोत फोजदार।

१ बीकानेर राव लीयौ तद राः रायमल जेठमल[3] मांडणोत री साष[2] माहे कांम आयौ, दुजणसाल रा बेटा। संबत १५९९ रा चैत बदि १२ राव आप बीकानेर पधारीया।

१ राजपुरौ १ भीणाय भाः सांकर सुरावत

१ चाटसु १ टुक

१ नराणो तौडी[4]

१ रेवासौ १ कासली

१. नादुल। २. जैंतसी। ३. जगमाल। ४. तोडो।

1. पकड़ कर। 2 साक्षी।

१ रायपुर सींधलां रौ ।
१ बाहड़मेर ।
१ सलेमांवाद पां: अभा नुं कागदां माहे ।
१ भादराजण सा: बीरो[1] मार लीवी संबत १५९६ रा ।

इतरा कोट राव मालदे पाड़ीया[1]—

१ षाटू रौ गढ   १ सातलमेर   १ मेड़ता री कोटड़ी   १ राजपुर ।

इतरा कोट मालदे संवराया छै, विगत—

१ जोधपुर   १ अजमेर   १ नागोर   १ बीकानेर   १ सीवाणौ ।

राव मालदे इतरा कोट संवराया नवा कराया[2]—

१ पोकरण मालगढ
१ मालगढ़ पीपळणेर[2] भाषर
१ भादराजण
१ कुंडल
१ पीपाड़
१ नाडुल
१ सीवाणी गांव दौलु
१ पोकर
१ मेड़तै मालगढ़ दुंहां १९७ लाग[3]
१ रायपुर
१ दुनाड़ो
१ रेयां कोटड़ी
१ फळोधी
१ सोभत
१ गुदवौ

१. सीवो रै। पीपल रै भाखर। ३. रिपिया १९००० लागा।

1. गिराये। 2. बनवाये, ठीक करवाये।

राव मालदे री बार[1] री बारता—

७२. रा: अचळौ पंचायणोत नुं राव रड़ौद थांणे राषीयौ थौ। पछै नागोर रा षांन ऊपर आया। रा: अचळौ कांम आयौ तिण वेळा रिणमल घणौ दोड़ियौ।[2] नागोर बस सकै नहीं। तरै रा: जैता पंचायणोत नुं टाकां री बेटी परणाई नै राव नुं गांव १२ सुं हरसोळाव नागोर रा दे नै बैर भांगीयौ।[3]

गांव दीयां री विगत, गांव २१ दीया—

१ गांव हरसोळाव ६०००)
१ गांव गारावासणी
१ गांव षजवाणौ १२०००)
१ गांव रायसळवास
१ सीहू[1]
१ गांव भांवडा[2]
१ गांव धारणवाय
१ गांव भटेरो, गोहूं हुवै[4] ७०००)
१ गांव बेरावास भटेरा री
१ गांव वौड़वो
१ गांव छींकणवास
१ गांव जायल ३०००)
१ गांव संषवाय ७८००)
१ गांव अंबावास
१ गांव बाघु
१ गांव चीनड़ी
१ गांव धींगावास
१ गांव सुहाणो ५०००)
१ गांव गीरावड़ी[3]

---

१. सीड। २. भांडवा। ३. ग्रवड़ी।

---

1. समय। 2. खूब भाग-दौड़ की। 3. वैर समाप्त किया। 4. गेहूँ पैदा होते हैं।

१ गांव पीलवण
१ गांव चखड़ १५००)
२१

७३. संवत १६१७ नागोर रौ सा. मेहौ रावजी राः देवीदास रा बोल देराय नै जोधपुर आंण बैसायौ[१] हुतौ। पछै रावजी उण नुं गढ़ ऊपर राः चंदो वीरमदेवोत नुं राषीयौ थौ। पछै राः देवीदास छोडायौ।

७४. संवत १५९३ रावजी सीरवी गोयंद भालीयौ। सीरवी १२० तूटा।[1] संवत १५९३ राव मालदे जेसलमेर उमादे भटीयांणी परणीयौ थो सु संवत १५९५ रूसणौ हुआौ।[2] पछै संवत १६०४ कंवर रांमा नु देसौटौ[3] हुवौ। सु रांमो उमादे रै षोळै[4] छै, सु रांमा साथे उमादे मेवाड़ रे कैलवै गई। संवत १६१९ रा काती सुद १२ राव काळ कीयौ तरै संवत १६१९ रा काती सुद १५ रावजी रा समाचार सुण नै रावजी रै वांसै गांव कैलवै बळी, सती हुई।

७५. राव मालदे भालै जैत री वेटी सरूपदे परणीया था। सु भालौ अजौ जेतौ रावजी रै वांसै था, पैरवौ पटै हुतौ। पछै एकर सुं सरूपदे नुं साथे ले नै रावजी पैरवै आया, भाळां रै पांहुणा[5] थका आया हुता। पछै भाळै मेहमांनी कीवी। सरूपदे साथे हुती नै बीजौ पिण राज लोग साथ हुतौ। सु सरूपदे री बेहन थी सु निपट रूपवंत[6] थी। सो सौकां रावजी कन्है घात घाली।[7] नै रावजी नै कहौ–सरूपदे री वेहन इसड़ी फूटरी[8] छै, उण सारसी[9] वीजी कोई फूटरी नहीं। जिसड़ै[२] ही रावजी एक वार देषै। पछै रावजी दीठी, मन मांहे विचारीयौ इण नै परणजे तौ सषरो हेक मोहौळ हुवै।[10] आ मन में विचार नैं रावजी भालां नुं कहाव कीयो।[11] नै कहौ–आ थांहांरी[12] छोटी वेटी मोनुं परणावौ। तरै भालै कहौ–म्हां तौ मांहारी डावड़ी

१. वसियो। २. जिसड़ी।

1. अलग हो गए। 2. राणी का रूठना हुआ। 3. देशनिकाला। 4. गोद। 5. मेहमान। 6. अत्यधिक रूपवती। 7. सौतिनों ने रावजी को बहकाया। 8 सुन्दर 9. जैसी। 10. अच्छा आनन्द रहे। 11. कहलवाया। 12. तुम्हारी।

हेक रावजी नुं परणाईज छै। इण बात रौ झालै उत्तर दीयौ पछै घणौ हठ हुवौ, तौ पिण झालै मानी नहीं। तरै राव कह्यौ—हूं तौ माडां परणीज सुं।[1] तरै झाली सरूपदे भाई बापां नुं समझाया। हमार री बिळीयां आटौ षेसौ।[2] पछै झाला आ बात झूंठा थकां कबूल कीवी। कह्यौ—हमार तौ थां ऊभै भाल साहा न हुवै। रावजी जोधपुर पधारौ। साहौ जोवाड़ कर नै रावजी नुं गढा घाल नै[3] मास १॥ दोढ नुं साहौ थापियौ।[4] तरै रावजो जोधपुर गयौ।

७६. पछै वांसा थी झालै राणै उदैसिंघ सुं कहाव कीयौ, अठा थी छांडीयौ। गुढौ कीयौ उठै राणौ उदैसिंघ आय नै सरूपदे री बेहन परणीया। तिण ठोड़ १ एक बडौ बड़ छै तिकौ बड़ अजे'स[5] झाली रौ बड़ कहीजे छै। पछै राणै उदैसिंघ नै रावमालदे रै बेध बंधीयौ।[6] ऊपदरै पैदा हुई।[7] पछ गोढवाड़ सारै ही राव रा थाणा बैठाया। नाडोळ जोजावर वासलपुर[1] बैठौ। पछै संबत १६१७ राव कुंभलमेर लेण नुं साथ पैसारे मेलीयो थौ।[8] रा. पंचायण करमसीयोत नै रा: वीदौ भारमलौत और ही पिण साथ हुतौ सु नीसरणी मांड नै चढता था। पछै इतरा माहे गढ माहे गढ रा थाणदारां जांणीयौ, तरै गढ हाथ आयौ कोई नहीं।

७७. बालेसौ[2] सूजौ सांवतोत एकवार राणा उदैसिंघ सुं रीसाय नै जोधपुर राव मालदे रै बास आय बसीयौ। तरै राव घणौ आदर कर नै राषीयौ। षेरवौ पटै दीयौ। रावजी निपट घणी मया[9] करनै बात बिगत पूछै-गाछै। तिण दिनां रावजी रैं नै राणाजी रै माहौमाह घणौ असुष छै। तरै रावजी राणाजी री धरती ऊपर साथ बिदा करै छै। तरै बालेसा सूजा नुं पण हुकम करै छै—थे पिण इण साथे भेळा बिदा

---

१. वीसलपुर। २. वालीसो।

---

1. बलपूर्वक शादी करूंगा। 2. जैसे तैसे इस समय को निकाल दो। 3. लिहाज में डाल कर। 4. विवाह का लग्न निश्चित किया। 5. अभी तक। 6. दुश्मनी हुई। 7. उपद्रव पैदा हुआ। 8. अन्दर घुसने के लिए भेजा। 9. कृपा।

कोस माथै दबीया ।[1] असवार २० तथा २५ नुं कहौं–थे जाय नै नाडुल रै फळसै आगे[2] पणीहारां पांणी भरै छै तिणां रा बेहड़ा[3] फोड़ौ नै उछरतौ चोंपौ ले आवौ ।[4] वे थांहारै वांसै छांना आवसी । तरै आंपां मार लेसां । जिण तरै उणां असवारां नै कहौ थौ–तिण ही तरै कीयौ । गांव में बुब फूटी[5] तरै बालीसा सुजा रा भाई बेटा सारा ही चढ आया, तरै सुजै पूछीयौ–कसी बात छै ? तरै सारा लोगां कहौ–असवार २० फळसै बेहड़ा पांणी रा फोड़ीया नै चोंपौ लीयौ । तरै सुजै बालीसै कहौ आंपणौ असवार पाळौ कौई मती दोड़ौ । पाषती रा गांवां रौ सारौ साथ बुलावौ । आंपणै नाडुल माहे च्यार सौ असवार न हजार पाळा छै । इसड़ी किणी री छाती छै जिकौ बीस असवारां सुं नाडुल रौ चोंपौ लेवै । कोईक तौत छै ।[6] घणा ठाकुर कुमया करै छै ।[7] दिन पहौर १।। दोढ चढीयौ तरै सुजा रौ साथ भेळौ हुवौ । तरै सुजौ असवार पाळा आदमी हजार २००० दोय भेळा कर नै वांसै षड़ीया । सु नाडुल था कोस १० जातां थकां तीजै पोहर आपड़ीया । बालवत[१] ही वळ ऊभा रहा ।[8] अठै बडी बेढ हुई । आदमी १४० सुं राः बींजौ भारमलौत नै धनौ भारमलोत कांम आया । राः नगै रै हळवासा लौह लागा ।[9] घोड़ौ आपरौ चढण रौ कांम आयौ । षेत सूजा रै हाथ आयौ । राः दासौ पातळोत[२] नै ऊहड़ जैमल और साथ नीसरोयौ ।[10] सु डेहड़ै आय ऊतरीया । नगौ आरण माहे घाव लागां बेठौ छै । पछे इण रै रजपूत किणहीक नगा नै कहौ–तूं परौ नीसर, काय बैरीयां पूळौ देवै ।[11] एक तौ बींजौ धनौ कांम आया छै नै तूं पिण मुवौ तौ बालाउतां री ठकुराई तोटै पड़सी ।[13] तरै नगै घणौ हठ कीयौ । हूं बींजै मारीयां कठी जाऊं । नै म्हारौ घोड़ौ कांम आयौ,

१. बलावत । २. पात ।

1. चुपके से ठहर गये । 2. मुख्य द्वार के आगे । 3. पानी के घड़े । 4. गायें आदि चरने को निकलें सो ले आओ । 5. हल्ला हो गया । 6. कोई धोखा है । 7. दुश्मनी रखते हैं । 8. सामने होकर खड़े रहे । 9. साधारण से घाव लगे । 10. निकल भागा । 12 रणस्थल । 11. क्यों दुश्मनों को उकसाता है । 13. राज्याधिकार में कमी पड़ेगी ।

मोसुं घोड़ै चढीयौ जाय नहीं । तरै उण ऊठ नै घोड़ौ वींजा रै चढण री आछौसो घावै लागौ ऊभौ थौ, पछै झाल नै ले आयौ । आप उण रजपूत गुडाळीयां होय नै[1] नगा नुं घोड़ै ऊपर चढ़ायौ ।

८०. तठा ताऊं[2] बालोसा देषै न छै । नगौ घोड़ै चढ नै चालीयौ तरै पांवडा[3] ४० गयौ तरै सुजा रै भाई भतीजां भाणेजे सल्होते[1] नगा नुं जावतां दीठौ तरै सुजा नुं कहण लागा–असवार एक सिरदार रिण म्हां था नीसरीयौ जाय छै, औ कुंण छै ? तरै सुजै कहौ–औ कोई जाय छै, तिण नुं जावण देवौं । तरै इण हठ कर पूछीयौ–राज तौ मारवाड़ बसीया छौ सारां नै ओळषौ[2] छौ, राज म्हांनु कहौ औ कुण छै । तरै सुजै कहौ–नगौ भारमलोत छै । तरै भतीज २ भाणेज २ सेहलोत १ ऊभा था तिका कहेण लागा–नगा नु तौ म्हे जाण कोई देवां नहीं । सुजे घणौ ही बरजीया ।[4] नै कहौ–आपणै नै ईणां रै हाडां वैर कोई छै नहीं[5], थे नगा रै वांसै मती जावौ । नै इसड़ौ रजपुत न छै जु नीसरै पिण कही माडां[6] चाकर भाई-बंध समझाय काढीयौं छै [[3] वड़ी बलाय छै[7] इण रौ नांव (न) लीजे । उणे बरजीयौं, मानीयौं नहीं, असवार ५ तथा ६ वांसै षड़ीया नगा सु नेड़ा गया । नगौ पाछौ वळीयौ[8] सांम्हां आवतां नु घोड़ौ पुरी कर नै[9] अेकण रै छाती माहे बरछी री दोवी सु छाती माहे लाग नै घोड़ा रौ भेवड़ो[10]फाड़ नै घोड़ा रै पोतावळौ[11] नीसरो । बरछी बाहतै काढ़तै हाक कीवी[12] तिण सुं दोय आदमीयां रा तौ कहै छै सांस नीसर गया । दोय आदमी इसड़ा बी'णा[13] जिके अचेत हुय पड़ीया, सु मास ६

१. सेहलोत । २. वोळखौ । ३. इन कोष्ठकों के बीच का अंश 'क' प्रति के पत्र त्रुटित होने से केवल 'ख' प्रति से लिया गया है ।

1. घुटनों के बल बैठकर । 2. तब तक । 3. कदम । 4. मना किया । 5. जानी दुश्मनी नहीं है । 6. जबर्दस्ती से । 7. असाधारण वीर है । 8. पीछे मुड़ा । 9. घोड़े को एक जगह ठहरा कर वार करने के लिए उद्यत करके । 10. घोड़े का पिछला हिस्सा । 11. अंडकोश । 12. बलंद आवाज में ललकार की । 13. डर गये ।

बोलीया नहीं। मांचै माहे पड़ीया रहा। नगौ इतरौ कांम कर नै दासा जैमल भेळौ[1] हुवौ ।

८१. रा: दासा रै षबर घर सुं उण बेळा आई। पातल नुं कुंडल मलकअलीसेर जाळोर रै मारीयौ रा: बींजौ धनौ भारमलोत रै दावे बालावते तौ बालीसा सुजा रौ वीगाड़ कीयौ कुं सुणीयौ नहीं। समत १६१३ रा फागुण हरमाड़े राणौ उदेसिंघ नै हाजीषान बेढ हुई तद रा: देवीदास जैतावत बालीसा सुजा नुं कहौ–सुजा हुसीयार, हुं आज रा: वींजो धनो मांगू। सुजा नुं देवीदास मारीयौ।

८२. राव मालदे रै बेटीयां हुई सु इणे ठौड़े परणाई—

१ अरधां झाली(री) नोरंगदे अठा रौ नांव कनकावती, गुजरात पातसाह म्हेमंद नुं परणाई थी। पछै पातसाह मुवौ तरै उवा आपरी बेहन सजनां कन्है घणौ माल लेनै जेसलमेर आय रही हुती ।

१ सजना रावळ हरराज नुं परणाई हुती तिण रै पेट रौ रावळ भींव ।

१ पोहपावती हलवद रा राणा आसकरन नुं परणाई। पछै रांणौ आसकरन मुवौ तरै वांसै बळी।[2]

१ हंसां बाई का: लुणकरण सेषावत अमरसर रा धणी नु परणाई हुती। तिण रौ मन्होर ।

१ रतनावती बाई हाजीषां नुं परणाई थी, हाजीषांन मुवौ तरै राव चद्रसेन कन्है विषा माहे[3] आई। समत १६४९ मुई, नागोर गुमट।[4]

१ बालाह बाई अमरकोट रा धणी सोढा वरसिंघ नुं परणाई हुती पछै वा बाई जोधपुर हीज आय रही हुती। गांव सांवतकुवौ पटै हुतौ।

---

1. शामिल। 2. पीछे सती हुई। 3. दुखित अवस्था में। 4. स्मारक के रूप में नागोर में छतरी बनी हुई है।

१ राजकंवर बूंदी हाडा सुरतांण नुं परणाई हुती । पछै राव मालदे हाडी रंभावती मारी तरै इणां उण नुं मारी ।

१ राव मालदे री अेक बेटी वाघवरा बाघेलां नुं परणाई थी उठे डोळी मेलीयौ ।

८३. राव मालदे कन्है बारट आसौ दीतावत भाद्रेसो कोड़ रावळजी माः बारट ईसर सुरावत नुं दीवी तरै राव मालदे रौ बडौ दिन बडौ देष नै ऊमेद कर जोधपुर आयौ । घणा गीत गाया तिण सुं कंवर चद्रसेन नुं बारट आसै गुण चौरासी रूपक[1] बंध रौ कहौ छै । तिण समै रावजी नागोर षांन कन्है लीयौ सु बारट आसै आगे षांन रा दीया गांव २ घुघरीयाळी टीकौ छै । सु राव बीजा सांसण षांन रा दिया बीजा चारणां नुं कहै नहीं दीन्हा । तरै अै पण गांव दे नहीं । तरै आसा नै वीनती कराई–म्हे तौ युं ऊमेद राषां छां म्हे घणौ पावसां । सु अै तौ गांव म्हांरा बाप दादां रा लीधा छै तिण री रावजी चौलाग[2] कुं करै तरै रावजी सुं आगेबांणे[3] मालम कीयौ । रावजी कहौ–षान रा दीया न पलै[4] ने म्हे नवा गांव सांसण देसां सु लौ । तरै आसौ राघव अौर ही पांचे ही दीत रा बेटा आय भेळा हुवा । इणां रै बेहन अेक देपु छै तिका ही आय इणां धरणौ कीयौ ।[5] कोई दिन रौ फेर राव हठ चढीयौ]

८४. तरै कहौ–अै हीज जायगा चाहै छै तौ म्हारौ उदक कर ल्यौ ।[6] आसै राघव[१] कहौ–आ बात कदेई नहीं हुई, आज थांहारौ उदक कर लेवां नै संवारे नागोर किणी अौर नुं होसी तरै आ कहसी हमें म्हारौ उदक कर लेवौ । आ म्हां थां न हुवै ।[7] तरै आसै राघव चागौ मेहाजळ पांचे ही भाईयां बहन देपु जोधपुर गळै घातो ।[8] पछै भटीयांणी

१. रचे ।

1. काव्य का एक प्रकार । 2. अधिक । 3. आगे करने वाले । 4. नहीं माने जाएंगे । 5. धरना दे दिया । 6. मेरी ओर से ये गांव भी दान में लेलो । 7. यह हमारे से नहीं होगी । 8. गले में घाव किये ।

उमादे उठाड़ीया पाटा बांधीया । घणा हीड़ा कीया ।[1] पांचे ही भाई इणां री बेहन देपु साजा सारा हुआ ।[2] भटीयांणी उमादे कपड़ा पहैरावणी दे नै सीष दीवी । इणां पण उमादे सुं घणी हळभळ कीवी[3] कहौ–राज म्हांनुं नवौ जनम दीयौ छै । उमादे पण वीनती कराई मोसुं षुसीयाळ[4] हुवा छौ तौ इतरौ हुं मांगु छुं रावजी नुं भलौ बुरौ कांइं मत कहौ । इणां कहौ–म्हे नहीं कहां ।

८५. संबत १६१९ रा काती सुद १२ राव मालदे जोधपुर काळ कीयौ । तिण दिन उमादे कुंवर राम साथे केलवे मेवाड़ रै गई थी सु काती सुद १५ उमादे केलवै बळी, उठै छत्री छै । तिण दिन बारट आसौ जीयतो[1] थौ । बारट आसै कवत १२ उण उपगार रा उमादे भटीयाणी नुं कहा छै ।

राव मालदे गांव नागोर रा षांन रा दीया लोपीया हुता[5] सु पछै कंवर जगतसिंघ नुं नागोर हुवौ तरै बारट जैमल राघवोत नुं पाछा दीया । कुंवर जगतसिंघ दीया तिके हिंदवांणे ही में ही पलीजै छै ।[6]

राव मालदे री बार री छुटक[7] बात—

८६. पंचोळी अभा नुं पटै गांव २ नंदवाण नहेड़वौ[2] हुतौ । नैं गांव १९ रजपूतां रा उमरावां रा दीया था । नै कागळ री लीषावणी सलेमाबाद हुती ।

रावळ मेघराज नुं महेवा ऊपर गांव ३ जोधपुर रा पटै हुता—

१ गांव झांवर १ गांव बावळली १ आगोळाई

८७. भाटी राव जेसौ पुंगळीयौ आयौ तठै इतरौ साथ राव रौ कांम आयौ—

१ भा: किसनो नींबावत

१ भाः धनौ आसावत

---

१. जावतो । २. नेहनड़ो ।

---

1. बड़ी सेवा की। 2. सभी ठीक होगए। 3. विनयशीलता प्रकट की। 4. प्रसन्न। 5. जब्त कर लिए थे। 6. हिन्दू शासक का दिया हुआ दान ही माना जाता है। 7. फुटकर।

१ भा: आंबौ मालावत

१ भा: जगमाल पंचायणोत[१]

१ चाचग कन्हड़ लीलावत

राव रै साथ नै जैसलमेर रै साथ वेढ हुई तटै काम आयौ, रा: मूळो नीबावम[२] ।

रा: अचळौ पंचायणोत पेहली तौ नागौर री पौळ रा कींवाड़ लोह रा आंण जोधपुर चाढीया, पछै अचळा नुं नागोर राष नै मारीयौ, कींवाड़ लोहाड़ा री पोळ वाळा ।

राव री साथ नागोर भागौ तठै भाटी दुरजण जोधावत कांम आयौ । रा: जोगो सादावत और ही घणै साथ रा पग छूटा[1] ।

८८. राव मालदे रै इतरी बेरां[३] हुई[2]—

१ सरूपदे झाली, झालै जैता री बेटी

१ रावचद्रसैण १ मोटौ राजा

१ उमादे भटियांणी रावळ लूणकरण री बेटी ।

[[४] १ अरधां झाली, नोरंगदे नांव तिण रै बेटी हुई ।

१ हीरां झाली, झाला रायसिघ री बेटी, हलवद ।

१ रा: रायमल मालेवोत

१ रंभावती हाडी, हाडा सुरजमल री बेटी ।

१ वीकमादीत

१ कछवाही लाछळदे का: रतनसि सेषावत री बेटी ।

१ राव रांम

१ टांकणी जमन किसन कल्हणोत री ।[3]

१ लाछ आहाड़ी, आहड़ा प्रीथीराज गांगावत री बेटी ।

१ भोजराज १ रतनसी

१. जोधावत रो । २. नीवावत । ३. राणियां । ४. कोष्ठकों के बीच का अंश 'ख' प्रति का है ।

1. भाग खड़े हुए । 2. स्त्रियां, रानियें । 3. कल्हण के पुत्र की लड़की ।

१ जामवाली, जगमाल सुरावत ।

१ सोनगरी, सोनगरा अषेराज री बेटी, नांव पूरा ।

१ धार बाई, भाटी प्रीथीराज री बेटी जैतसी री पोतरी केल्हण मंडवर परणी हुती ।

१ भांण

१ चहुवांण इंद

१ जादम

१ सोढी, मंडोवर परणी थी ।

१ जसड़, मेड़ते परणी थी ।

८८. समत १६०० रा बीरमदे उदावत रावळ किल्याणमल बीकानेरीयौ[1] राव मालदे ऊपर पठांण सेरसा पातसाह कन्हा पुरब माहे सेहसरांम तठै जाय फिरियादी हुवा । पातसाह राव मालदे री सारी हकीकत बुजी[2], इणे कही पातसाह सेहसरांम थी आगरे आया । पछै मारवाड़ ऊपर चढ़ण री तयारी हुई । राव रै पण षबर आई ।[3] रावजी रै ही साथ भेळौ हुवौ । पातसाह ही डीडवाणा रै पाषती आया तरै राव ही जोधपुर सुं चढ नै मेड़ते आया । पातसाह ही भोजावाद आयौ । रावजी ही कहै छै अजमेर आया । पातसाह रौ डेरौ कुचीळ हुवौ । आगलौ पेसषानो हरोळ[4] घुघरा री घाटी कीयौ । तरै राव डेरौ पाछौ कियौ ।[5]

समत १६०० रै पोस माहे बड़ी बेढ[6] गीररी समेल बीच भाषरी २ छै तठै हुई । इतरी साथ रावजी रौ कांम आयौ तिण री विगत—

१ रा: जेतौ पंचाईणोत अषैराजोत ।

१ रा: कूंपौ मेहराजोत अषैराजोत ।

१ रा: षींवौ ऊदा सुजावत रौ ।

१ रा: सोनगरो अपैराज रिणधिरोत ।

---

1. बीकानेर वाला । 2. पूछी । 3. राव (मालदे) को भी सूचना हुई । 4. फौज के आगे का हिस्सा । 5. पीछे सरकाया । 6. युद्ध ।

१ रा: पंचाईण करमसीयोत ।
१ रा: पतौ कान्हावत अषैराजोत ।
१ रा: वैरसो रांणावत अषैराजोत ।
१ जोगौ रावळोत अषैराजोत ।
१ रा: ऊदैसिंघ जैतावत अषैराजोत ।
१ रा: भोजौ पंचाईणोत अषैराजोत ।
१ रा: हमीर सोहावत अषैराजोत ।
१ रा: वीदो भारमलोत वालावत ।
१ रा: रायमल अषैराजोत रिणमल ।
१ रा: सुरतांण गांगावत डूंगरोत ।
१ रा: भवानीदास सुरावत अषैराजोत ।
१ रा: जैमल वीदा परबतोत रौ डूंगरोत ।
१ रा: नींबौ अणदोत जेसौ ।
१ भींवोत कलौ सुरजनोत ।
१ भा: पंचाइण जोधावत ।

१. इतरौ साथ कांम न आयौ, नीसरीया[1], नांवजाद[2]—

१ रा: जेसौ भैरवदासोत चांपावत]
१ रा: महेस घड़सोहोत ।
१ रा: राव कांन्हौ चूंडावत रौ पोतरौ ।
१ रा: जैतसो वाघावत ।
१ रा: वींजौ जैतमालौ गोयंद रौ, नरौ पोकरण रौ धणी ।
१ रा: ऊदैसिंघ कूंपावत ।
१ रा: ऊहड़ नैतसी कौजावत कोढण[1] धणी ।

८९. इतरौ साथ जोधपुर कांम आयौ—

१. कोढ़णा ।

1. निकल भागे । 2. मुख्य-मुख्य ।

१ राः अचळौ सिवराजोत। सिवराज जोधावत री छतरी गढ ऊपर मसीत[1] कन्है कहै छै। अचळै ममारकषांन मारीयौ साष–"षाधौ अचळ ममारक षांन।"

१ राः तीलोकसी बरजांगोत[१] उदावत, गढ ऊपर छतरी मसीत कनारै छै।

१ भाः मालौ जोधावत, जेसावत समेळ[2] लोह पड़ीयौ थौ[3] सु कांम आयौ।

१ राः पतौ दुरजणसाळोत चरड़ौ अरड़कमल चूंडा रौ, साख—

पातल लग पतसाह, बात हुई बढबा तणी।
गढ मांडू गजगाह[4], रहियौ दुरजणसाल रौ॥

१ भाः सांकर सुरावत जेसौ, गढ़ ऊपर छतरी भाः गोयंदासोत[२] काराई। अजमेर थांणै हुतौ चाकर, सु ऊपाड़ ले आया पछै गढ कांम आयौ।[5]

१ सीधण षेतसीहोत।

१ चहुवांण भीषन रौ भाई नाथौ कांम आया, तिकौ फुल नायक रौ काकौ बाबौ हुवै छै।

१ भाटी भोजौ जोधावत।

२ सोहड़ भैरव भींवराज सीहावत।

१ भाः नाथौ मालावत।

१ राः राणौ बीरमोत गढ़ री पाज[6] कांम आयौ।[३]

गढ ऊपर मसीत सूरसाह पातसाह री कराई। संबत १६०१ रा पौस वदि ५ गोवल[४] दिसलो पाज बंधाई।

---

१. तिलोक सिवराजोत। २. गोयंददासजी। ३. 'ख' प्रति में संकर जैतसियोत उदावत तथा ईंदा सेखो धरणाजोत, ये दो नाम और हैं। ४. गोळ।

---

1. मस्जिद। 2. साथ, शामिल। 3. घायल होकर गिरा था। 4. युद्ध। 5. गढ़ पर मृत्यु हुई। 6. किनारे पर, दीवार पर।

६०, संबत १६१० रा बैसाख वदि २ मेड़ता ऊपर राय मालदेजी कटक कर आयौ। रा: जैमल बीरमदेवोत मेड़तौ सहर झालीयौ तद दोय अणी[1] कर चालीयौ। सु रा: जैमल बारै नीसर नैं बड़ी लड़ाई कीवी तरै रावजी गई कर नैं[2] जोधपुर पधारीया। रा: प्रीथीराज कितराक साथ सुं कांम आया।

इतरौ साथ रावजी रौ कांम आयौ—

१ रा: प्रीथीराज जैतावत।
१ रा: जगमल उदैकरणोत षींवसर।
१ रा: जगमाल उदैकरणोत।
१ रा: डूंगरसी।
१ पा: रतौ[१] अभै रौ।
१ रा: भारमल देवीदासोत।
१ रा: राघवदे वरसलोत उदावत।
२ रा: नेतो[२] धनो भारमलोत बालाउत।
१ चो: मेघो भेरूंदांसोत।
१ रा: धनराज भारमलोत।
१ पा: अभो झाझावत।
१ रांमो षींवाड़ौ[३]।
१ सौहड़ पीथौ जगावत।

दूजी अणी रा: रतनसी षींवावत और साथ सुं दूदासर[४] रै फळसै दिसा[3] कांम आया।

६१. इतरौ साथ रा: जैमल रौ कांम आयौ, रा: जैमल[५] उदा रा पोतारा जणा ५ नै—

---

१. रतनो। २. नगो। ३. भैरवदासोत चांपो (रामो पीपाड़ो)। ४. उदासर। ५. जैतमाल।

---

1. फौज के दो हिस्से। 2. हठ छोड़कर। 3. दुदासर की फाटक की तरफ।

१ अषैराज भादावत ।
१ रावत सगतो सांगावत ।
१ रा: मोटौ जोगै रौ ।
१ रा: चांद्राराव जोधावत ।
१ रा: नारणदास चांद्रावत रौ ।
१ रा: सांगौ भोजावत ।

६

६२. संबत १६१३ रा फागुण वदी ९ हरमाड़ै राणै उदैसिंघ नै हाजीषांन रै वेढ़ हुई । राव मालदे, रा: देवीदास जैतावत रावळ मेघराज, रा: जगमाल बीरमदेवोत और रा: जैतमाल जेसावत, रा: लषमण भादावत आदमी १५०० दोढ हजार हाजीषांन री भीर मेलीया[1] था । पछै उण तरफ मेड़तीया[१] नै वोकानेरीयौ राव श्री कल्याणमल जी ईडर बास बंसवाळ नै डुंगरपुर बूंदी देवलीया रौ धणी देसौत १० दस राणा भेळा था ।[2] सु बेढ हुई, हाजीषांन जीतौ, राणौ हारीयौ । राणा री तरफ रा: तेजसी डूंगरसियोत बालीसौ सुजौ कांम आया । नै जैमल रा मांणस मेड़तै था सु मेड़तौ छोड नै बधनौर री बावड़ी री तरफ गया । राव जैतारण था पाधरा[3] मेड़तै फागुण बदि १२ पधारीया, नै कोटड़ी जैमल री पाड़ नै मूळा माहे बवाड़ीया ।[4] संबत १६१४ मालकोट कुंडल ऊपर मंडायौ । संबत १६१६ मालकोट पूरौ हुवौ ।[5] रावजी आधौ मेड़तौ रा: जगमाल बीरमदेवोत नुं पटै दीयौ । पछै रा, जैमल पटै दीयौ । पछै रा: जैमल दरगाह गयौ ।[6] संबत १६१८ पातसाहजो मदत[7] सरफदीन मुगल री मेल्हीयौ । रा: देवीदास मालकोट माहे थौ । सु पातसाह री फौज आवतो सुणी तरै इतरी आसांमो[8] नै मेल नै बुलायौ—

१. मेडतियो जैमल ।

1. सहायतार्थ भेजे । 2. शामिल थे । 3. सीधा । 4. बोवाए । 5. संपूर्ण हुआ । 6. बादशाह के पास हाजिर हुआ । 7. सहायतार्थ । 8. विशिष्ट व्यक्तियों ।

१ कुंवर चंद्रसेण १ राः प्रथीराज कूंपावत ।
१ सोः मानसिंघ अषैराजोत ।
१ राः देवीदास ।

सु इतरी आसांमी लेण नु मेलीया था । सु फौज नैड़ी आई तरै कंवर चंद्रसेण पाछा डेरा कीया । नै रव देवीदास नु घणौ ही कहौ–थे आवौ । सु पिण देवीदास कहौ मानै नहीं । नै आपरी तावीन रौ साथ थौ तिण साथ नै साथे लेनै सारा ही साथ सुधो[1] मुरड़ नै मालकोट माहे पेठौ ।[2] मुगल नै मुगलां ...... सारी फौज नै जैमल फागुण वद ७ मालकोट आ घेरीयौ । पछै रावजी देवीदास नुं घणो ही कहाड़ीयौ तुं–आचड़ करै छै ।[3] म्हांरो साहिवी षोवै.........।[1] बुरज पिण गोळां री मार सुं[2] सिताब[4] उडीयौ । पछै राः देवीदास पिण बात कर नै नीसरीयौ पछै जैमलजी मुगल सरफदीन नुं भषायौ[5] कहौ–नीसरीयौ जाय छै । तरै वांसै[6] लगा चढ़ीया, नगारौ हुऔ । राः देवीदास गांव सातलवास कनै फिर ऊभौ रहौ[7], तरै उठै वेढ हुई । संवत १६१६ रा चैत सुद १५[3] इतरी साथ रावजी रौ कांम आयौ, तिण री विगत—

१ राः देवीदास जैतावत वरसडोत[4] ।
१ राः तेजसी[5] उरजन पंचाणोत ।
१ राः ईसरदास राणा अषैराजोत रौ ।
१ राः भाषरसी जैतावत ।
१ राः पुरणमल प्रीथीराज जैतावत रौ ।[6]
[[7] १ सेहसो उरजन पंचाईणोत ।
१ गोईंद राणा अपैराजोत रौ ।
१ भांण भोजराज सादा रूपावत रौ ।

१. छै । २. सावात । ३. ५ । ४. वरस ३५ । ५. जैतसी । ६. 'ख' प्रति में नामों का क्रम भिन्न है । ७. कोष्ठकों के बीच का अंश केवल 'ख' प्रति का है ।

1. सहित । 2. गुस्से में कटिबद्ध होकर किले में ही रहा । 3. जबरदस्त जिद्द कर रहा है । 4. शीघ्र ही । 5. ललकारा, कहा । 6. पीछे । 7. सामने डटकर खड़ा रहा ।

१ राः नेतसी सीहावत अषैराज ।
१ राः रांमौ भेरवदासोत ।
१ राः अचळौ भांणोत ।
१ राः जैमल पंचाइणोत, पंचाइण ऊदावत ।
१ राः महेस घड़सीयोत ।
१ राः राजसिंघ घड़सोयोत ।
१ मांगळीयौ वीरम देवावत ।
१ साः तेजसी भोजुवोत ।
१ भाः तीलोकसी परबत अणदोत ।
१ राः पतौ कूंपौ महेराजोत रौ ।
१ राः अमरा रांमावत ।
१ राः सेहसौ रांमावत ।
१ राः जैमल तेजसीयोत ।
१ राः महेस पंचाईणोत ।
१ राः भाषरसी डूंगरसीयोत ।
१ राः रिणरायसलोत मेड़तीया जगमाल रौ चाकर ।
१ राः सांगौ रणधीरोत ।
१ ईसर घड़सीयोत ।
१ राणौ जगनाथोत ।
१ भाः पिराग भारमलोत ।
१ भाः पीथौ अणदोत ।
१ सुतहार भांनीदास ।
१ बाहरट जीवौ ।
१ वाहरट चोळौ ।
१ हमीर ऊदावत वालावत ।
१ राः अपौ जगमालोत कान्हा चूंडावतरौ ।
१ मांगळीयौ देदौ ।
१ तुरक हमजौ ।

१ बाहरट जालप ।
१ राः प्रीथीराज सीधण अखेराजोत ।
१ चहुवांण वीरम ऊदावत ।
१ राः भींव ऊदावत बालौ ।
आदमी १२० राव रा कांम आया ।

६३. पातसाह सूरा रौ थांणौ भागेसर हाजी आलीफतै षांन तिण ऊपर राव पीपलण थकै राः जेसौ भैरवदासोत रावळ आयौ वरसिंघोत रावत अभीअड़ भींवड़ रा मेल्होया । आदमी ५००० पठाण था । आदमी २००० राव रौ साथ हुतौ, वेढ राव रै साथ जीती, तठै काम आया—

रा. ऊगो वरसिंघ रौ रावळ हाण रौ चाकर आदमी ४०० षेत रह्यो[1], आदमी १००० महेवा रा था ।
१ राः महो जगहथोत पातौ ।
१ रावत अभीअड़ भींवड़ रौ ।
१ भाः वीसो चणविरोत ।
इतरो साथ घावे[2]—
१ राः जेसो भेरवदासोत ।
१ रावळ हापौ वरसिंघोत ।
१ भाः किसनौ रांमावत ।

६४. राव मालदे संवत १६०० रा पोस माहे पातसाहा सुं वेढ हुई । राः जैता कूंपा मराया । पछै वरस ३ जोधपुर पाछा आया । पछै संवत १६०४ फळोधी डूंगरसी कन्हा लीवी । तठा पछै संवत १६०७ रा काती माहे पोकरण सातलमेर राव जैतमाल कन्हा लीवी । पछै पछिम नुं चलाया । वाहड़मेर कोटड़ौ लीयौ । राः रतनसी पींत्रावत राः सिंघ जेतसीयोत घणा साथ सु वाहड़मेर थांणो हुतौ । कोटड़ै राः भोजौ मंडळावत थांणै हुतौ । पछै रावत भींवौ जाय जेसलमेर मिळीयौ ।[3] जेसलमेर रा चाकर हुय नै कंवर हरराज नुं मदत लेनै वाहड़मेर ऊपर आया । राः रतनसी पींवावत राः सिंघ सारौ साथ

1. मारे गये । 2. घायल हुआ । 3. मिला ।

भूंडे हवाल नीसरीया डेरा डांडा[1]] सारा लूटाणा, अौ मामलौ संबत १६०८ हुवौ। पछै तिण दावै राव मालदे संबत १६०९ रा सांवण सुद १५ राव मंडोवर रावजी पधारीया नै राषड़ी कीवी।

९५. कंवर रायमल नै प्रोः रायमल प्रोः नेतौ राः प्रीथीराज जैतावत मंडोवर पधार नै जेसलमेर ऊपर बिदा कीयौ। भादवा बदि ३ रावजी जोधपुर पधारीया, काती बदि ९ फोज रावजी री छैत समंद जाय डेरौ कीयौ। काती बदि ११ वाड़ीयां बाढणी मांडी[2] सु दीबाळी रावजी रै साथ ऊठै ही कीवी। नै जेसलमेर री तळैहटी[3] सारी मारी नै लूटी। रावळ गढ जड़ नै बैस रह्यौ। तठै भाटी मूळौ नीबावत राव रौ चाकर कांम आयौ। तिण बेळियां रौ साष नै दूहौ कह्यौ छै।

रा प्रथीराज जैतावत री—

गा भाटी भाजेह[4] गोष गोरहरां तणौ।
ताप[5] न सहीयौ तेह, जोध तम्हीणे[6] जैतउत ॥१॥

१६१६ रा आसोज वदि ७ राः देवीदास जैतावत राः पतौ बालौ[1] नेतावत[2] जाळोर री गढ लीयौ। नै मलक छूटंण नीसरीयौ।[3] नै कंवर चद्रसेन आसोज सुद १ गढ जाळोर रै चढीयौ।

राव जैसौ पूंगळीयौ फळोधी ऊपर आयौ। तठै रावजी रौ साथ कांम आयौ—

१ भाटी किसनौ नींबावत अणंदोत।

१ भाटी धनौ आसावत, आसौ जोधौ जेसौ

१ चाचग कान्हड़ लोळावत।

१ भाटी अंबौ मालावत जोधौ जेसौ।

१ भाटी जगमाल पंचायणोत जोधावत।

९६. राव मालदे री बाहर री[7] वारता—

---

१. ख. में नहीं। २. नगावत। ३. मालक वुढ़ण नीकल गयौ।

---

1. सभी माल असबाब। 2. बगीचों को काटना प्रारंभ किया। 3. किले के बाहर की बस्ती। 4. भाग गये। 5. पराक्रम। 6. तुम्हारे। 7. समय की।

९७. संवत १६०० रा पोस माहे सूर पातसाह सुं समेळ वेढ हुई राः कूंपौ जैतौ कांम आया। नै पातसाह जोधपुर आयौ अठै राः अचळौ सिवराजोत नै राः तीलोकसी वरजांगोत कांम आया।

९८. संवत १६१० रा वैसाष वदि २ राव मालदे मेड़ता ऊपरै आयौ। राः जैमल वीरमदेवोत ऊपर आया। वेढ़ मेड़तीया जीतीया। राः प्रीथीराज जैतावत राः नगौ भारमलौत औंर ही राव रौ साथ कांम आयौ। मेड़तीयां री राः अषैराज भादावत रावत सकतौ सांगावत कांम आया।

९९. संवत १६१३ रा फागण वदि ९ रिववार हरमाड़ै राः देवीदास जैतावत रावजी हाजीषांन री मदत मेलीयौ थौ सु वेढ हुई। तरै राणौ भागौं हाजीषान जीतीयौ। नै राव जी रौ साथ वोल-वाला हुवौ[1]। राः देवीदास जैतावत वालीसा सुजा नूं मारीयौ। रावजी राः देवीदास नूं विदा जैतारण थी करनै जैतारण आय रहा था, नै आ वेढ़ हुई तरै राः जैमल वीरमदास राव किल्याणमल राणा भेळा हर-माड़ै हुवा। सु जैमल इण वेढ राणौ हारीयौ। मेड़तौ रातूंरात छोड दीयौ।

१००. राव संमत १६१३ रा फागुण सुदि १२ जैतारण थी मेड़तै पधारीया। मेड़तौ हाथ आयौ। नै जैमल रा घरां री ठौड़ मूळा वुहा-ड़ीया। घर पाड़ीया। संवत १६१४ सोळा सै चौधोतरै लागतां मालगढ मंडायौ। नै संवत १६१६ री साल मालगढ़ पूरौ हुवौ। नै आधौ मेड़तौ राः जगमाल वीरमदेवोत नुं पटै दीयौ। नै राः देवीदास जैता-वत नुं मालगढ़ थांणै रापीयौ।

१०१. पछै राः जैमल सरफदीन नुं लेनै मेड़ता ऊपर आयौ। राव रौ वीजौ साथ नीसरीयौ। राः देवीदास गढ झालीयौ।[2] संवत १६१९ रा चैत सुद १५ कांम आयौ।

१०२. राव चंदरसेन मालदेवोत झाली सरुपदे रा पेट रौ झाला अजा रौ दोहीतरौ संवत १५९८ रा सांवण सुद ८ री जनम नै संवत १६१९

---

1. खूब प्रसिद्धि प्राप्त की। 2. किले में आ पहुंचा।

रा पोस सुद ७[१] जोधपुर रै पाट बिराजीया, नै संबत १६३७[२] सचीया री गाळ[1] में काळ कीयौ ।[2]

१०३. राव मालदे काळ कीयौ तद चंद्रसेन सीवाणै हुतौ, सु काती सुद १३ रै दिन उगतां संवौ[3] आयौ । झाली सरूपदे नुं बेटा समझावण रै वासतै झाली राषी[4] । नै ऊदैसिंघ नु फळोधी दिराय नै मंगसर वदि २ सरूपदे बळी[5], दिन ६ पाणी नही पीयौ । राव मालदे काळ कीयौ तरै चंदरसेन सीवाणा थी आयौ । संबत १६२२ रा मंगसर सुदि १० गढ़ छांडीयौं तद इतरौं साथ गढ रै हाथौ दे अर कांम आयौ । राव चंद्रसेन रा कांम आया—

१ राः बरसल पातावत
१ भाटी आसौ जोधावत
१ राः राणौ बीरमदेवोत
१ भाटी गांगौ नीबावत
१ भाटी जगमाल[३] आसावत
१ राः सूरौ गांगावत
१ राः बींजौ बीरमोत
१ ईंदो बेणौ[४] धरमावत
१ भाटी जोधौ[५] आसावत
१ ईंदौ रासौ जगावत
१ ईंदौ सुजौं बरजांगोत

११ इतरा कांम आया ।

१०४. राव मालदे काळ कीयौ तरै इतरी धरती एकवार राव चंदरसेन नुं हुई, तिण री विगत—

---

१. गुरुवार कुंभ लगन । २. माह सुद ७ । ३. जैमल । ४. विणधीर । ५. जोगो ।

---

1. घाटी । 2. मृत्यु हुई । 3. दिन उगते ही । 4. पकड़ कर रखी । 5. सती हुई ।

१ पाया तषतगढ जोधपुर। संवत १६२२ रा मंगसर सुद ४ गढ़ छुटौ, भादराजण गया, गढ हसनकुळी नुं सौंपीयौ।

१ सोभत संवत १६२० रा आसाढ वदि २ राव रांम नुं मुगलां दिराई।

जैतारण।

१ पौहोकरण संवत १६३३ रा फागुण वदि १४ भाटीयां रै अडाणे।[1] भाः मानै मांगळीयै भोजु घाती तद राव मुडाड़े हुतौ।

१ सीवांणै संवत १६३२ मुं: पतौ कांम आयौ। पछै वांसला[2] ठाकुरां वात करनै मुगलां नु दीयौ। सहवाजषांन कांबोलीयौ[3] इण फौज साथे, राजा श्री रायसिंघ बीकानेरीयौ छै, पातसाही फौज में सिरदार साहवषांन[१] कंवौ साहकुली छै।

१०५. जाळौर राव काळ कीयौ तद हुतौ। संवत १६१८ रा आसाढ वदि ७ राव मालदे नुं मु. गोगदास फौज तेड़ायी[4] तरै पां. पतौ नेतावत नै मुं: भींवौ गढ़ लीयौ। पछै कुंवर चंदरसेन नुं गढ़ देषण नुं मेलीयौ थौ। पछै संवत १६१८ रा काती सुद १२ राव मालदे काळ कीयौ। पछै संवत १६१९ रा पोस सुद ९ राव रै चाकर अकबर पातसाह रा उमरावां मीरजाहां नुं कूंची देनै उरा आया।[5]

राव चंदरसेन री वाहार री वात

१०६. संवत १६२० रा जेठ रा साल राः जैतमाल जैसावत रै मामले रिणमल दिलगीर[6] हुआ। तरै राव रांम नु भपायौ[7] रांम दरगाह गयौ। संवत १६२० रा जेठ सुदि १२ हसनकुळी नुं लेनै जोधपुर आया। रांम वावड़ी री तरफ ऊतरीयौ दिन १८ गांव राव वीग्रहै कीयौ[8] पछै रिणमल वीच कर नै[9] संवत १६२० रा आसाढ वदि २ वात

१. सहवाज खांन।

1. रहन। 2. पीछे वाले। 3. काबुल वाला। 4. बुलाई। 5. चले आये। 6. दुखित। 7. डिगाया। 8. झगड़ा किया। 9. बीच-बचाव करके।

कीवो। राव रांम नुं सोभ्फत देणी कीवो।

१०७. असाढ बद ३ मुगलां रौ कटक रांम ऊपाड़ीयौ। दिन २ मंडोवर रहा। पछै बोहोरावास डेरौ कीयौ। असाढ सुद ५ बीसलपुर डेरौ कीयौ। असाढ सुद ७ बीसलपुर था सोभ्फत गया। रांम सोभ्फत आय बैठौ।[1] चाकर हुवा। मुगल नै चंद्रसैन नुं लागाई दीया। संबत १६२१ रा चैत सुदि १२ वळे मुगल फौज ले आया। जोधपुर आय लागा। राव गढ भ्फालीयौ।[1] माहे रजपूत बडेरा ठाकुर सु साथ रा सारा बडा छै। पिण राव आपरै डील गाढ निपट घणौ।[2] राव रै कन्है भींव लादेवत तोबची[3] हीडागर[4] मांणस ६०० छै तिण लीयां घणा मामला कीया। रांणीसर मुगलां भेळ दीयौ[5] तरै राः बरसल पातलोत मुः दूदो[2] कांम आया। राः किसनदास गांगावत करनोत मास ६ राव गढ राषीयौ। पछै साथ बडौ दीठौ तरै संबत १६२२ रा मंगसर सुदि १० रिववार रावजी मुगलां सुं बात कीवी। मंगसर सुदि ११ मुगल गढ़ चढीया। राव चंद्रसेन भाद्राजण गयौ। सोः मानसिंघ राः पतौ नगावत राः तीलोकसी कूंपावत साथे गया।

१०८. एक वार राजा रायसिंघजी बीकानेरीया नुं जोधपुर पातसाह दीयौ छै। संबत १६३१ था बरस १॥ या २ रहौ, संबत १६३४ तांई। नै कंवर दलपत काच रा माळीया रा गोषां[6] आ[3] पड़ीयो[7] पिण मुओ नहीं। नै घणा दिन जोधपुर तुरकां रौ थांणौ रहौ।

१०९. संबत १६२४ माहा सुद १० रा लषमण भदावत रौ गढ जोरावर[4] कन्है था सु मुगल इसमाईल कुली मारीयौं। गढ भार भरत[8] माल सुधो मरीयौ हाथ आयौ। पछै लूटाणौ माणस बद न हुयां पछै नीसरीया पछै राः लषमण सांवळदासोत रांमोत राः सादुळ

१. ख. प्रति में अधिक—रिणमल राव चंदरसेन कन्है हुतौ सु सारा राम कन्है सोजत आय बैठा। २. उदो। ३. ता। ४. जोजावर।

1. किले में सुरक्षित रहा। 2. परंतु स्वयं राव के शरीर में अत्यधिक शक्ति एवं स्फूर्ति है। 3. तोपची। 4. युद्ध सेवा करने वाले। 5. राणीसर तालाब कब्जे में करके अशुद्ध कर दिया। 6. महल के गवाक्ष। 7. गिरा। 8. बहुत सी सामग्री।

रामसीहोत[1] सुनसीहोत[2] कादु कन्ही पाछौ वळतौ आपड़ीयौ[1] मुगल घणा मारीया। हाथी ४ इणां रै हाथ आया।

११०. संबत १६२५ रा फागुण सुदि ५ राव चंदरसेन हाडी सुरजन री बेटी रिणथंभोर परणीया था। घोड़ा १५ हाथी दायजै दीया नै गहणौ रूपिया १५०००) पनेरै हजार रौ दीयौ।

१११. संबत १६२७ रा मंगसर माहे अकबर पातसाह षुवाजे पीर री जात आया। पछै राव चंदरसेन पातसाह नुं मिलण रै वासतै भाद्राजण था असवार ५०० चैत[3] बदि ९ चढीया। नागोर संवत १६२७ रा पौस वदि १ मिळियौ। पातसाह जी सुरत देष राजी हुवा। नै मोटौ राजा पिण अठै आय मिळिया। पछै कंवर उगरसैन रायसिंघ नै पातसाह कन्है राषीयौ।

११२. संवत १६२६ मंगसर सुदि ३ राणौ उदैसिंघ जेसलमेर नुं जाती नवसर आयौ। पछै राव चंदरसेन नुं साथे लेनै जेसलमेर गयौ। भाटीयां सुं कहाव कीयौ[2]–मोनुं परणावौ। भाटीयां वात मानी नहीं। दिन ५ तथा १० उठै रहा, पछै परणीयौ नहीं। तरै पाछा नीसरतां नुं राव चंदरसेन भादराजण राणा नुं आंण नै आपरी बेटी बाई करमैती परणाई; मिती पौस सुद १।

११३. १६२७ राव चंदरसेन भाद्राजण छांड नै सीवाणे पीपलण रै भाषरे आया। पछै धरती ऊपर कळाषांन आयौ। वेढ १ राः देस पातलोत राव रा हुकम सुं कळाषांन सु गांव महेली कीवी। मुगल रौ साथ मारीयौ। लूणी हद हुई।[3] तरै कुंही'क वात हुई, धरती माथै डंड कीयौ।[4] पांः सारण भाः धनौ पईसौ ऊलै दीयौ।

११४. संवत १६२९[4] राव चंदरसेन काणुजै आपरी वसी माहाजनां सुधा आय रहा। पछै तिणां दिनां राः रतनसी षींवावत रा वेटा

१. रानौत। २. सुजो रावतनौत। ३. मीगसर। ४. सं० १६२८।

1. पकड़ लिया। 2. भाटियों को कहलवाया। 3. लूनी नदी की हद कायम हुई। 4. दंड लगाया।

मुगलां सुं मिळ नै आसरलाई रहा था। सु राव चंदरसेन इणां नुं कहाड़ीयौ–थे गांव सूना कर नै वसी मगरै आंणौ, नै थे कन्है आवौ। तरै इण कहौ–म्हां था हीमार[1] मास ४ आयौ न जाय। तरै राव बुरौ मानीयौ। राः किलाणदास गोपाळदास नरहरदास राम री वसी आसरलाई थी, तठा ऊपर राव आप चढीयौ। असरलाई मारी नै रजपूत ऊदावत दिलगीर हुया, नै मारीया। राः रतनसी षींवावत रौ बेटौ गोपाळदास किलाणदास रांम तिण बात पगा[2] ऊदावत दिलगीर हुआ। तिण समै जोधपुर रा बांणीयां कन्हा सुं कुंही'क रावजी मांगीयौ, दुष दीयौ। तरै लूंकड़ संषलेचा भंडसाली पिण मुगल नुं आय मिळीया। बीकानेरीया मेड़तीया मुगल भेळा छै। पछै ऊदावतां नै जोधपुर रा बांणीया भेळा होय नै रावजी ऊपरां मुगल आंणिया। तठा पछै बेढ़ हुई। देहरासरी[1] तीलोकौ कांन्हावत राः ठाकुरसी रिणधीरोत और ही बीजौ साथ कांम आया, नै गुढौ[3] लूटांणौ। इण समै रावत पंचायण घणा हीड़ा कीया।

११५. तठा पछै मास[2] राव मुडाड़ै मेवाड़ रै संबत १६३१ रै टांणै[4] गया। आगे गांव राणा ऊदैसिंघ री बेटी चांदा सीसोदणी राव परणीयौ थौ तिण रै पटै हुतौ, पछै राव सीरोही रै कोरटै रहा। बरस १॥ कोरटै रहा। संबत १६३३ रा फागण वदि १४ भाः मान भाः भोजु पोकरण रौ कोट कुं लेनै[3] भाटीयां नुं सौंपीयौ। संबत १६३२ सीवाणौ मु. पता ऊरजनोत रै गोळी लागी। पछै राव रा चाकर राः पतो नगावत ऊ. जैमल नैतसीहोत राः किसनदास गांगावत भाः वीरमदे रामावत मुगल सुं बात कर नै मु. पतो कांम आया। पछै मास १। नुं गढ तुरकां नुं दे नै राव कन्है मुडाड़े आया। राव चंदरसेन सुं मामला कराया तिकां संषलेचां अहेमदावाद पाटण साः विमलसीं

---

१. देरासरी। २. नास। ३. कुछ लेकर।

---

1. अभी। 2. लिये। 3. रहने का सुरक्षित स्थान। 4. समय।

पटणी साः नाथौ हुतौ। कहीके सहसकरण राः भणसाली धनराज मुहोम छै। पाछौ नाया।

११६. संवत १६२० रा जेठ सुदि १२ राव रांम नुं मुगलां सोभत दिराई। संवत १६२६ साके १५९५ रा जेठ सुदि ३ राम मालदेवोत काळ कीयौ। जोगीयां सुं मामलौ हुग्रौ।[1] पछै वडौ बेटौ रांम रौ मदायती करन थौ। सु रजपूतां वडेरां नै षातर में ल्यावै नहीं।[2] पछै लोहड़ा[3] बेटा कला नै राः ग्रासकरण नै देवीदासोत राः महेस कूंपावत मुदाइत हुतौ सु कला रांमोत री भीर हुग्रा।[4] पछै केईक रजपूत राः सूरजमल प्रीथीराजोत के बीजा करने री भीर हुग्रा। दोनुं भाई दरगाह गया। पछै तिण समै राः प्रीथीराज कूंपावत पातसाही चाकर छै, तरै पातसाह ग्रकबर मारवाड़ री हकीकत सारी सदाबद[5] प्रीथीराज नुं पूछै। तासुं राः प्रीथीराज ग्रागे राः महेस कूंपावत गळगळौ[6] हुवा। तरै महेसदास नै प्रीथीराज कहौ–थे कौण वासतै गळगळा हुवा। तरै महेस कहौ–म्हां नै ग्रासकरन राव कला री भीर हुवा छै। नै करन जोरावर लायक छै। तरै प्रीथीराज कहौ–म्हे ग्ररज पातसाहजी सुं कर नै टीकौ कला नै दिरावसां। पिण थे म्हांरी वसी नुं पैरवौ दीज्यौ। तरै इण कहौ–भलां। तरै पछै पातसाहजी दिन २ तथा ४ नुं प्रीथीराज नै पूछीयौ–टीकौ किण नुं दीजे। तरै प्रीथीराज ग्ररज कर कहौ–रजपूत सारा राः ग्रासकरन राः महेस सकोई[7] कला री तरफ छै। तरै पातसाहजी गांव ६० सुं सुराईतो करन नुं दीयौ, नै सोभत राव कला नुं दीवो। पछै इण नुं सीप दीवो। तरै ग्रै जातां राः महेस कूंपावत राः ग्रासकरन प्रीथीराज सुं पैरवा रै वासतै मिळीया ही नहीं। विगर सला चालीया।[8] पछै दिन १० पांच ग्राडा घात नै प्रीथीराज पातसाहजी सुं मालम कीयौ। पैरवौ जोधपुर रै वांसै तफौ छै दिन १० हिमार दबाय नै सोभत वांसै घातीयौ छै।[9] पछै पातसाहजी जोधपुर सैदां नुं हुतौ नु लिष भेजियौ, पेरवौ जोधपुर रै वांसै कीजौ।

1. युद्ध हुआ। 2. मान्यता देना नहीं। 3. छोटा। 4. पक्ष में हुए। 5. आरम्भ से ही। 6. दुख विह्वल। 7. सभी। 8. बिना सलाह चल दिये। 9. सोभत को जागीर के साथ कर लिया है।

११७. संबत १६२९ सोझत कलौ राव छै। एक वार सोझत आय नै फेर दरगाह गयौ। पछै उठै किणीहीक सुंल[1] पातसाह री हरम नै कला री नजर लागी। राव कलौ बैर[2] रौ रूप कर नै उण री सहेलीयां साथे मांहे गयौ। पछै उण री पाषती एक और हुरम थी, तिण जांणीयौ।[3] पछै उण हुरम पातसाहजी सुं मालम कीवी। पछै पातसाहजी उण हुरम नै कुंही'क डराई। तरै हुरम डरती थकी पातसाह जी कनै राव कला रौ नांव पारीयौ।[१] नै कलौ तौ तठा पहले ही सोझत आयौ। सोझत भाजी नै डीघोड़ जाय वसीया। तिण दिन सेष ईभरायम[२] नाडुल पातसाही उमराव थांणौ छौ। इण तरफ मदार सारी उण रै माथै छै। तरै पातसाहजी सेष ईभरायम नै लिषीयौ— राव कला नै ललौपतौ करनै[4] दरगाह मेल दीजौ, नहींतर[5] कला नुं उठै ही कूट मारौ। इण तरै सुं पातसाह रौ लिषीयौ आयौ। पछै सेष कला री घणी हळभळ कर नै[6] नाडुल कला नु बुलायौ। पछै कलौ घोड़ा बहेल बैस[3] नै थोड़ा सा साथ सुं नाडुल आया। पछै सेष ईभरायम कला सुं चूक कर नै संबत १६३४ रा फागण राव कला नुं मारीयौ। तठै इतरौ साथ कला रौ कांम आयौ तिण री बिगत[४]—

१ राः सादूल रायसलौत डूंगरोत।
१ चोषौ धायभाई।
१ राठोड़ हींगोलौ।
१ ढोली ऊदा रौ बेटौ।

तठा पछै धरती मांहे धणी कोई नहीं। तरै राः सादूळ महेसोत राः आसकरन देवीदासोत सारा मिळ नै राव चंदरसेन डूंगरपुर गयौ हुतौ उठै डूंगरपुर रै धणी गळीयौ कोट दीयौ थौ तठै गया था। वरस २॥ तथा उठै रहा। सारौ राव मालदे रौ रहाणा रौ लोग[7] कांमदार वगैरै

१. पारियो। २. ईवरांम। ३ वेस। ४. गेहलड़ो नदो, राः साहाणी रामदास डुगरावत ये दो नाम अधिक।

1. किसी प्रकार से। 2. स्त्री। 3. उसे मालूम होगया। 4. जैसे तैसे समझा बुझाकर। 5. वरना। 6. अनेक प्रकार से राजी करके। 7. विशिष्ट व्यक्ति।

राव साथै उठै हुता । पछै रिणमल रा आदमी आया । राज बेगा पधारो अठै धरती षाली छै । पछै मोटौ राजा कुंवर भोपत साथे साथ सीवाणै हुतौ । विगत—

१ मेघराज
१ राः आसकरन
१ बिहारी मुहमदषां
१ राः भोजराज कलुटा
१ भाटी मांनो
१ ऊः जैतसिंघ
१ राः रासल प्रीथीराजोत
१ राः केसौदास
१ केसौदास

११८. संबत १६३५ रा सांव्रण वदि ११ राव चंदरसेन मुगलां सुं गांव सीवराड़[1] बेढ कीवी तरै साथ कांम आयौ तिण री विगत—

१. ऊहड़ जैमल नैतसीहोत । १. करमसी मालावत ।
१ सांः दुदौ सांषलो । १ माणोत[2] अचळौ सूजावत ।
१ राः रायसिंघ भानीदासोत चांपावत । १ राः जसवंत जोगावत मांडणोत ।
१ ऊहड़ जैतमल जैमल रौ । १ भाः भगवानदास वीरमदोत ।
१ राः डूंगरसी मालावत । १ राः सांगो उरजनोत ।
१ केसोदास जोगावत मांडणोत । १ ईंदौ वैणौ[3] ।
१ देवड़ा वींजा रा साथे राजपूत १७ कांम आया ।

११९. श्री मोटौ राजाजी नुं जैतारण रा ६५ गांव जागीरी माहे था । पछै राजा जी काळ कीयौ तरै अै गांव इंण भांत श्री पातसाहजी वांट नै पटै कर दिया । विगत—

२८॥ राव सगतसिंघ उदैसिघोत ।
१२ गिररी जागीरी रा ।
१ गिररी
१ देवली हुलां
१ वरांटीयौ वडो
१ लोहमाली
१ रामावास
१ चड़ीयाहारो

---

१. सवराड़ । २ मुहणोत । ३ भाटी सुरतांण दूदावत (अधिक) ।

१	टीकड़ौ	१	टूंकड़ौ
१	नादणौ	१	दागुलो
१	बरांटौ षुरद[1]	१	हाजीवाळ[2]

१२

१६॥ षालसा रा गांवां मांहला—

१	छीपीयौ	१	बेहड़ौ	१	देवली पीरां[4]
१	रामावस	१	लांटावासणी	१	कुड़ाहड़ौ
३	आसरलाई	॥	बीकरलाई	१	मोड़रो
१	करमावास	१	बाहलीबड़ी	१	बाहली षुरद
१	बसीयो	१	पानुवास[3]	१	पाटवौ

१६॥

२८॥

१८॥ राव दलपत उदैसिंघोत—

१४ षालसा लायक

१	आगेवो	१	बोघांणी[5]
१	महेलवो	१	मुरड़ाहो
१	नींबोल	१	रातड़ीयो
१	गळणीयो	१	रांमपुर
१	चावड़ीयो	१	रहेलड़ौ
१	रामावास बडौ	१	नीबोड़ो
१	कोटड़ो	१	बलाहड़ा

१४

४॥ सांसणां रा पटै लिष दीया—

१	भाषर वासणी[6]	१	रोजा[7] री बासणी
१	षेतावास	१	वोहोगुण री बासणी
॥	वीकरलाई		

४॥

१८॥

१ बरांटियो खुरद। २ हाजीवास। ३ पातुवास। ४ पिरागरी। ५ बेघाणी
६ माखर वासणी। ७ तेजारी वासणी।

११ राव भोपत उदैसिंघोत

१ सांगवास	१ जवा वासणी[1] वांभणां
१ ठाकुरवास	१ लोटोधरी[2]
१ नीलांबो	१ पपिळीयौ
१ मालणा	१ चीतार
१ लुलकोट[3]	१ राषडायथो[4]
१ गुदरड़ो[5]	

११

३ राः माधोसिंघ ऊदैसिंघोत—

१ गांव देहूरीयौ १ लातरीयौ ।

१ गांव लुंभड़ावस

३

३ राव मोहणदास ऊदैसिंघोत—

१ वागाकुडा[6] १ राणीवाळा

१ वीवाहलो[7]

३

६५

मोटा राजा री बाहार रो वारता

१२० राः किलाणदास रायमलोत ऊपर मोटा राजा री फौज कुंवर भोपतसिंघ री साथे मेलिया था। संवत १६४६ रा मिति मंगसर वदि ७ गढ़ घेरीयौ। पछै रा किलांणदास रातीवाहो दीयौ[1]। तरै इतरी साथ मोटा राजा री कांम आयौ। नै मगसर वदि ७ गढ लीयो, संवत १६४६ रा।

७ रावळी साथ थो तिण मांहला रजपूत कांम आया—

१ रा० राणौ मालावत।

१ पींपाड़ी कान्हौ दुरजणसलोत कु० भोपत रो साकर[2]

१. जन-वासणी। २. लोटोधरी। ३. धुलकोट। ४. रावड़िया। ५. गुनरड़ो।
६. बागाकुड़ी। ७. वहेलो।

1. रात को हमला किया। 2. चाकर।

१ रा० ईसरदास नेतसीयोत राण रौ चाकर ।

१ रा० कलो बरसलोत रूपौ ।

१ रा० जेसौ जगमालोत रा० जेतसी रौ साकर[1] ।

१ रा० कलो जेसावत रा० रांमौ रौ साकर ।

१ दाहवौ परबतसिंघ मेहाजलोत नवसर पटै[2] ।

७

११ रा० किलांणदास रा चाकर कलाणदास मारीयौ तद कांम आया

१ रा० गोपाळदास भींवोत ।

१ भा० भाषरसी कूंपावत ।

१ भाईल लाली रातीबाहो[3] ।

३ भा० पंचायण वीसावत ।

१ गोधौ भादौ हेमावत ।

१ अपटौ[4] ।

१ चहुवाण गोपाळदास भाभणोत ।

१ दहीयौ ।

१ धाय भाई कड़वौ ।

११

१२१. साथ राजाजी री नीसरीयौ पछै मोटौ राजाजी आप पधारीया । पछै गढ़ रा पौळीयां[1] रै[5] भेद साथ चढीयौ संवत १६४४[6] रा मंगसर वदि ७ गढ़ लीयौ । संवत १६४० रा भादवा वदि १२ पातसाह अकबर फतैपुर जोधपुर दीयौ । पछै आसोज वदि २ राजलोक सीकंदार सुं जोधपुर आया । नै पछै काती वदि ९ राजाजी पधारीया ।

१२२. राजा ऊदैसिंघ मालदेवोत देवड़ी पदमा रै पेट रौ राव जगमाल रौ दोहीतरौ । चंद्रसेन ऊदैसिंग सगा भाई, गई भौम रा वाहरू[2] ।

---

१. चाकर । २. नवसर पटै । ३. रातीवाहे । ४. सेपेटो । ५. नाम नहीं दिए गए । ६. १६४५ ।

---

1. मुख्य द्वार के पहरेदार । 2. खोई धरती को पुनः प्राप्त करने वाले ।

संबत १५८४ रा माहा सुदि १३ राव रौ जनम नै संबत १६३९ रा जेठ माहे अकबर पातसाह जोधपुर दे बिदा किया। संबत १६४० रा काती वदि ८ सोमवार पुनरवस नषत्र जोधपुर रै गढ़ आप पाट बैठा। संवत १६५१ रा आसाढ वद १ लाहोर काळ कीयौ। पछै आसाढ़ वदि १३ बुधवार राजा सूरसिंघ पाट बैठौ, जोधपुर।

१२३. पातसाह मुनसब हजारी जात आठ सौ असवार रौ मुनसब दीयौ। जोधपुर संबत १६३९ रा जेठ मांहे दीयौ। तद तफा[1] २ बारै था। आसोप तफा सुधौ रा० भांण कूंपावत नुं थौ। बीलाड़ौ रा० वाघ प्रथीराजोत नुं, तफा २ जुदा था एक जोधपुर तफौ १९ सुं हुआै थौ। पछै सीधल देवराजोत[1] पिण जुदौ हुतौ। सोझत संबत १६४९ नवाब षांनषांना मुदफर पातसाह ऊपर जाय था तद मोटा राजा नुं साथे लीयौ। तद सोझत नबाब दीवी। संबत १६४० रा पोस वदि ९ राजापीपले[2] मुदफर सुं बेढ़ हुई।

१२४. सीवांणी राणौ किल्याणदास मार नै लीयौ। संबत १६४६ रा मंगसर वदि ७। कोटौ हाडां वाळौ संवत १६५० रा० गोपाळदास मांडणोत फौजदार। वधनौर कोटौ छोड नै लीयौ संबत १६५१ रा० चांदौ ईसरदासोत फौजदार। समावली जिका पातसाहजी पहली मोटा राजा नुं दीवी थी उठै मोटौ राजा वरस···विषाइत थकौ रहौ थौ[2]। गुवालेर नजोक छै। गांव ४४ लारै लागै छै। चमारी पंजाब[3] लाहोर सोवौ नजीक छै। सातलमेर पोकरण पातसाही तरफ जागीर मैं मंडी थी। अमल न हुवौ[3] तरै मोटै राजा लवेरौ गांव १ बेमगळौ सीवांणा रौ दीयौ। संवत १६४० रा मगसर सुदि १ मोटौ राजा जोसी परषोतम रा वेटां नु चांडीदास भैरूदास संकरदास नुं गांव मोड़ो दीवी सु पतर माहे नांवौ छै[4]।

१२५. मोटौ राजा जीवतां कुंवर सुरजसिंघ भा० गोयंददास मांनावत सुं मया[5] घणो करै छै। गांव वासणी १ तुंवरां री पटै छै। पछै राजा

१. सादल-देवराज रै। २. राजपींपलै। ३. चमा पंचारी।

1. राज्याधिकार। 2. संकटापन्न स्थिति में। 3. अधिकार नहीं हुआ। 4. ताम्र पत्र में उल्लेख है। 5. कृपा।

१ रा० ईसरदास नेतसीयोत राण रौ चाकर ।
१ रा० कलो बरसलोत रूपौ ।
१ रा० जेसौ जगमालोत रा० जेतसी रौ साकर[१] ।
१ रा० कलो जेसावत रा० रांमौ रौ साकर ।
१ दाहवौ परबतसिंघ मेहाजलोत नवसर पटै[२] ।

७

११ रा० किलांणदास रा चाकर कलाणदास मारीयौ तद कांम आया

१ रा० गोपाळदास भींवोत ।
१ भा० भाषरसी कूंपावत ।
१ भाईल लाली रातीबाहो[3] ।
३ भा० पंचायण वीसावत ।
१ गोधौ भादौ हेमावत ।
१ अपटौ[४] ।
१ चहुवाण गोपाळदास झाझणोत ।
१ दहीयौ ।
१ धाय भाई कड़वौ ।

११

१२१. साथ राजाजी रौ नीसरीयौ पछै मोटौ राजाजी आप पधारीया । पछै गढ़ रा पौळीयां[1] रै[५] भेद साथ चढीयौ संवत १६४४[६] रा मंगसर वदि ७ गढ़ लीयौ । संबत १६४० रा भादवा वदि १२ पातसाह अकबर फतैपुर जोधपुर दीयौ । पछै आसोज वदि २ राजलोक सीकंदार सुं जोधपुर आया । नैं पछै काती वदि ६ राजाजी पधारीया ।

१२२. राजा ऊदैसिंघ मालदेवोत देवड़ी पदमा रै पेट रौ राव जगमाल रौ दोहीतरौ । चंद्रसेन ऊदैसिंग सगा भाई, गई भौम रा वाहरू[2] ।

१. चाकर । २. नवसर पटे । ३. रातीवाहे । ४. सेपेटो । ५. नाम नहीं दिए गए । ६. १६४५ ।

1. मुख्य द्वार के पहरेदार । 2. खोई धरती को पुन: प्राप्त करने वाले ।

संवत १५८४ रा माहा सुदि १३ राव री जनम नै संवत १६३९ रा जेठ माहे अकवर पातसाह जोधपुर दे विदा किया। संवत १६४० रा काती वदि ८ सोमवार पुनरवस नषत्र जोधपुर रै गढ़ आप पाट वैठा। संवत १६५१ रा आसाढ वद १ लाहोर काळ कीयो। पछै आसाढ़ वदि १३ वुधवार राजा सूरसिंघ पाट वेठो, जोधपुर।

१२३. पातसाह मुनसव हजारी जात आठ सौ असवार री मुनसव दीयौ। जोधपुर संवत १६३९ रा जेठ मांहे दीयौ। तद तफा[1] २ वारै था। आसोप तफा सुधौ रा० भांण कूंपावत नु थौ। वीलाड़ौ रा० वाघ प्रथीराजोत नुं, तफा २ जुदा था एक जोधपुर तफौ १९ सुं हुओ थौ। पछै सीधल देवराजोत[1] पिण जुदौ हुतौ। सोभत संवत १६४९ नवाव षांनषांना मुदफर पातसाह ऊपर जाय था तद मोटा राजा नुं साथे लीयौ। तद सोभत नवाव दीवी। संवत १६४० रा पोस वदि ९ राजापीपले[2] मुदफर सुं वेढ़ हुई।

१२४. सीवांणौ राणौ किल्याणदास मार नै लीयौ। संवत १६४६ रा मंगसर वदि ७। कोटौ हाडां वाळौ संवत १६५० रा० गोपाळदास मांडणोत फौजदार। वधनौर कोटौ छोड नै लीयौ संवत १६५१ रा० चांदौ ईसरदासोत फौजदार। समावली जिका पातसाहजी पहली मोटा राजा नुं दीवी थी उठै मोटौ राजा वरस...विषाइत थकौ रही थी[2]। गुवालेर नजीक छै। गांव ४४ लारै लागै छै। चमारी पंजाव[3] लाहोर सोवौ नजीक छै। सातलमेर पोकरण पातसाही तरफ जागीर मैं मंडी थी। अमल न हुवौ[3] तरै मोटै राजा लवेरौ गांव १ बेमगळौ सीवांणा रौ दीयौ। संवत १६४० रा मगसर सुदि १ मोटौ राजा जोसी परषोतम रा वेटां नु चांडीदास भैरूदास संकरदास नुं गांव मोड़ौ दीवी सु पतर माहे नांवौ छै[4]।

१२५. मोटौ राजा जीवतां कुंवर सुरजसिंघ भा० गोयंददास मांनावत सुं मया[5] घणो करै छै। गांव वासणी १ तुंवरां री पटै छै। पछै राजा

१. साघल-देवराज रै। २. राजपींपले। ३. चमा पंचारी।

1. राज्याधिकार। 2. संकटापन्न स्थिति में। 3. अधिकार नहीं हुआ। 4. ताम्र पत्र में उल्लेख है। 5. कृपा।

जी कहौ देष—ऋौ किसड़ौक सांणो[1] छै। तिण दिनां आसोप जोधपुर बारै छै। पछै आसोप रै वांसै दीवांन बगसीयां नुं कागळ[2] लिख दीयौ। भा० गोयंददास उठै कोईक दिनां रहौ, कांम 'आषर कर आयौ।

१२६. रायसिंघ चन्द्रसेनौत रै वैर सुं सिरोही ऊपर गया। सीरोही रौ देस मारीयौ। देवड़ौ सांवतसिंघ पतौ तोगौ सुरावत चूक कर नै मारीया[3]। चीबौ जैतौ षीमा भारमलोत रौ इण भेळा[1] मारीयौ। संबत १६४४ रा फागुण माहे रा० वरसल प्रीथीराजोत रा बोल सुं देवड़ा आया था, सु चूक कर मारीया। तरै वरसल गुजरात नबाब षांनषांना साथे गया। मुदफुर सुं बेढ हुई तठै घणौ भलौ हुऔ, तठै साथ कांम आयौ।

१ भा० सादूळ मानावत सोर मैं बळीयो[4]

१ भा० गोपाळदास राणावत रूपसोत[2]

१२७. बांभण चारण राव रांम कला री वाहर माहे रजपूतां रां दीया घणा गांव सांसण लीया हुता तिण वासतै चारणां सुं घणी अदावद हुई। आढ़ा दुरसौ नै दुणलौ[3] रा० आसकरण देवीदासोत रौ दीयौ थौ। पछै दुरसौ बाहारट अषा कन्है गयौ। पछै अषौ भलौ हुऔ। मोटौ राजा गुजरात नुं चालतौ हुतौ। आय सोझत डेरौ थौ। ऊठै काजेसर माहादेव चारणां तागो कीयौ[5]। बारहट अषौ भांण रौ घणा चारणां सुं मुवौ।[6] घणा जणां गळै घाती। दुरसै गळै घाती[7] थी, सु ऊवरीयौ[4]। संवत १६४३ रा चैत माहे इतरा गांव लोपाणा[8] परगनै जोधपुर रा[5]:—

१ वीरलोपौ तफै ओसीयां--प्रो० राजो वालवतां रौ।

१ गांव केलावौ तफै लवेरै रौ--प्रो० रामदास पेतावत दत[9],

१. सेनां। २. रूपसीयोत। ३. दुणलो आघो। ४. ऊपड़ियो। ५. 'ख' प्रति में नाम व्यवस्थित नहीं।

1. सयाना। 2. व्यक्तिगत पत्र। 3 छल से मार डाला। 4. बारूद से जल गया। 5. त्रागा, आत्म-हत्या के लिए शरीर पर शस्त्र से घाव कर खून छिड़का। 6. अनेक चारणों सहित मरा। 7. आत्महत्या के लिए फांसी डाली, प्रहार किए। 8. जब्त हुए। 9. दान।

रा० बरसंघ जोधावत रौ प्रो० कान्हा रूपावत नु[1] ।

१ गांव तंणावडौ[2] तफै हवेलो सिरीमाली लहुवादेव रौं राव जोधा रौ दत ।

१ गांव कड़वड़ रौ वास, तफै हवेली प्रो० सुजी गंगादासोत[3] री दत रा० पंचाईण अषेराजोत रौ ।

१ आकड़वास, तफै पाली रौ बांभण पलीवाळ आचारजां रौ ।

१ नीबलौ तफै पाली वि० लोहटा[4] रौ राव जोधा री बेटी लाला[5] नुं परणाई तीण रौ ।

१ गांव बोहौड़ा नडौ तफै हवेली सिरमाली अनंत रा ।

१ गांव जाजीवाळ भींवौता री तफै हवेली षिड़िया भांना जेता-सिहौत[6] नुं ।

१ गांव कड़वड़ रौ वास तफै हवेली अषैमलौत रौ दत वा० अषा नु पंचाईण अषैराजोत रौ ।

१ गांव ऊजळीयौ तफै हवेली कड़वड़ रौ वास दत राव गांगा रौं ऊजळ सगतावत बाकुलीया नुं ।

१ गांव जाइतरो तफै ईसर ढौलकीया रौ ।

१ गांव कौटड़ी तफै चारण देदा[7] भैरवा रौ ।

१ गाव रांमावट तफै हवेली वीरामणां रै[8] सीर रौ ।

१ गांव वरीयां[9] तफै भादराजण दत राव मालदे रौ देरासरी कांन्हा रंगावत रौ ।

१ गांव सुगाळीयौ तफै भादराजण रौ दत राव मालदे रौ देरासरी कान्हा रो ।

१२८. संवत १६४४ रा फागुण माहे मोटौ राजा[1] सीरोही गयौ । जामवेग साथै छै । पछै फागुण सुदि ५, गांव नेतड़ौ मारीयौ[2] । मास एक

१. जोगावत रौ वीका नै दूदावत नुं । २. तोलावड़ो । ३. गंगादासाणी । ४. सलेट । ५. सोनगरा लाले नु । ६. नेतसिहोत । ७. देवा । ८. वारट सायर रौ । ९. गिरवरियौ ।

1. उदैसिह । 2. जीता, प्राप्त किया ।

उठै रहा । पछै राः बरसल प्रीथीराजोत राः वोल दे नै राः[1] पतौ तौगौ सांवतसोत[2] चीबौ जैतौ षीमां री राड़बरौ हमीर कुंभावत राड़बरौ बीदो सकतो[3] तरै आंण मारीयौ । पछै बीजौ जांमबेग नुं भीतररोठ मारण मेलीयौ । तठै देवड़ो बीजौ मारण नै जांमबेग री भाई लोहोड़ौ पड़ीयौ[1] ।

१२९. बेढ १ गांव लाहीआवट[2] फळोधी रौ गांव बेढ हुई । राव चंदरसेन था, नै मोटा राजा रौ चाकर राः गोपाळदास प्रीथीराजोत घावां पड़ीयौ । राः जैतमालजी ऊठायौ राव चंदरसेन तरै साथ माहे छै । राः लषमण भींवोत अरड़कमल चूंडावत रौ पोतरौ कांम आयौ[3] ।

राव साथे वडेरा ठाकुर–

१ राः जसवंत डूंगरसोत ।

१ राः जैतमाल जसवंतोत ।

१ तिलोकसी कूंपावत ।

१ रावळ मेघराव[4] ।

१ राः प्रीथीराज कूंपावत ।

१ सौः मांनसिंघ ।

१ राः पतौ नगावत ।

१

१३०. ईण वेढ माहे मोटा राजा रैं हाथ री बरछी राव रै लागी नै रावळ मेघराज रै हाथ री बरछी मोटा राजा रै लागी । राव चंदरसेन नै मोटै राजा रै गांव लोहीयावट वेढ हुई । तिण जायगा[4] साथ कांम आयौ तिण री विगत–

१ राः जोगौ[5] सादावत मांडणोत ।

१ राः षीची हदौ केळणौत ।

१ राः पंचायण टोहावत थाथारीयौ ।

१. देवड़ो । २. सांवतसी सूरावत । ३. रूवरो वींदो संकरोत । ४. मेघराज । ५. जैतो ।

1. घायल होकर गिरा । 2. लोहावट । 3. वीरगति को प्राप्त हुआ । 4. स्थान ।

१ रा: ईसरदास आसरवोत मंडलौ[1] ।
१ रा: षींवराज आभमलोत थाथरीयौ ।
१ भा: सांकर दुरजनसलोत[2] ।
१ सांहणी करमौ जेसावत रौ ।
१ रा: कलांणदास महेसोत करमसियोत ।
१ रा: वरसल सांकरोत ।
१ रा:[3] जैमल तीलोकसौत परवतोत ।
रा: हींगोलौ नेतावत[4] ।
१ रा: जालमसिंघ ।

१३१. परगनै सोझत रा सांसण[1] रा गांव इतरा लोपाणा—
१ गांव वेणीयावस, जोसी जगमाल पोकरणै नुं दत राव रायसिंघ रौ ।
१ गांव वासणी, राईमल री उछत श्रीमाली राव जोधा रौ दत ।
१ गांव गोड़गड़ी देरासरी कांना रा बेटां पोतरां नै ।
१ षारची बांभण आचारज पालीवाळ री राव गांगा री दत । प्रो० माडण सोवड़ जात षेतावतां मांहे ।
१ गांव रहानड़ी ओझा श्रीमाळी गदाधर[5] री, राव मालदे रौ दत ।
२ प्रो: सांवतसी, दत राव गांगा रौ १ बाहड़सौ १ गोधावाळ ।[6]
१ जानौदौ बांभण गुदवचा रौ ।
१ षारीयौ बांभण सोढा रौ ।
१ गांव भेवळीयौ[7] प्रो: षेतावतां रौ ।
१ गांव वीरावास बांभण भाडी सुजा जागर वाळा रौ ।
१ गांव हीगावास, जोसी ।

१. अमरावत मंडलो । २. राजाजी रो साळो (अधिक) । ३. माटो । ४. नोवावत । ५. गंगाधर । ६. गोधावास । ७. भेवली ।

1. दान की हुई भूमि ।

१ गांव षारीयो, फदर रौ ।

चारणां रा नै गांव सांसण–

१ बाहारेट अषौ भाणावत रा १ रासाणीयो १ भाल्हीयौ[1]

१ आढा दुरसा मेहावता रा १ रूणलो[2] नाथल कुड़ी ।

१ गांव बोल, सादू माला ऊदावत री ।

१ गांव हापत, बाहारैट दाना रतनु नै राव रामसिंघ रौ दत ।

१ गांव गोघेळाव[3] षिड़िया डूंगरसी रौ दत राव जोधा रौ ।

षिड़िया चांदण नु राव रिणमल रा फूल गंगाजी ले गयौ[1] तरै रौ ।

१ गांव बीठोरौ षुरद षिड़िया भाना नेतावत रौ राः आसकरन देबीदासोत रौ दत ।

१ गांव मोहेड़ा सोः बाहारैट केसौ जीवावत रौ ।

१ जोगरावास धीरांणा किसना भाना जीजावत नुं राव रायसिध रौ दत ।

१ गांव जोधड़ावास दुधवड़ रौ, षिड़िया मेहौ डुंगरसोत ।

१ गांव बूटेळाव, एक आसीया करमसी नुं सोः अषैराज री दत ।

१ गांव लोळावास १ अषावास २ राजगीयावास

३ सांदू धरमै रौ बेटौ रांमा रा ।

१ पलासळौ राव रांमा रौ दत ।

१ गांव गुजरावास राव रायसिंघ रौ दत ।

१ रांमावासणी राः प्रीथीराज कूंपावत रो दत ।

१ गांव घागड़ावास षिड़ोया भांना नेतसियोत रौ ।

संवत १६४३ कंवर भोपत भगवानदास जैतसिंघ सींधल मारीयौ तठै फळसै भळतां[2] उः रांमो जैतमलोत कांम आयौ ।

---

१. भाणीयो । २. दुणलो । ४. गोघेळाव ।

---

1. अस्थियां गंगा प्रवेश के लिए ले गया । 2. स्य द्वार पर युद्ध करते समय ।

१३२. मोटा राजा परगना पाया तिणां री बिगत–

१५३६९५) जोधपुर तफा

३७५००) सीवाणो

१२५०००) सोझत

जैतारण रा गांव ६६५ मोटा राजा नूं था, नै गांव ७२ रा: गोपाळदास कलांणदास रतनसोत नुं, आधौ-आध कसबौ इणां नुं।

१३३. मोटा राजा नुं राव मालदे रै मरण फळोधी झाली सरूपदे दिराय, पछै चंदरसेन नुं जोधपुर रौ टीकौ हुऔ। फळोधी थकां री वात कोई कहै छै कोई गांधाणी रौ ह्ासल लीयौ। एक वार मोट राजा नै रिणमल भषायौ,[1] कहौ–थे अठै बैठा कासुं करौ[2]। तरै गाधाणी कन्है[1] लगाड़ मारी[3]। चंदरसेन सारण रौ चढ़ीयौ, लोहीयावट आय पहौतौ। तठा पछै वेढ़ हुई। राः जोगौ दासावत[2] मांडणोत कांम आयौ। राजा उदैसिंघ वडौ पराक्रम कीयौ। राव चंदरसेन रै डील इतरौ साथ फ नै लोह कीयौ[4]। रजपूतां केईक टाळौ कीयौ[5], मोटा राजा रौ घोड़ौ वढीयौ, आपनै बीची हदै आपरा घोड़ा ऊपर चाढ़ नै काढीयौ। राव चंदरसेन वेढ जीती[6]। उठी सुं रजपुत राव चंदरसेन नै लेनै पाछा वळीया[7]। राः जैमल[3] जेसावत राः जसवंत डूंगरसोत साथे, रावल मेघराज राः पतौ नगावत सौ. मानसिंघ राः प्रीथीराज कूंपावत नै तिलोक कूंपावत।

[[4] १ रा. जैतौ सदावत मांडलोत।

१ रा. हींगोलो नींबावत पातावत।

१ भा. वैरसल संकरोत।

१ भा. संकर दुरजणसालोत, राजाजी रौ साळो।

१ राः षीवराज आभमलोत थाथरीयो।

१ षीची हदो केलणोत।

---

१. बावड़ी। २. सदावत। ३. जैतमल। ४. 'ख' प्रतिका अंश।

---

1. सिखाया। 2. क्या करते हो। 3. हमला किया। 4. वार किया। 5. टालमटोल की। 6. युद्ध जीता। 7. लौटे।

१ रा. ईसरदास अमरावत मांडणोत ।
१ राः कील्याण दास महेसोत करमसोत ।
१ भाः जैमल तिलोकसी परबतोत रौ भाई ।
१ राः मोकल गंगादासोत थाथीयां रौ ।
१ राः पंचाईण टोहावत थाथरीयो ।

भाटीयां केलण नै मोटै राजा बेढ़ १ हुई तिण री बात—

१३४. मोटौ राजा फळोधी छै । राव डूंगरसी दुजणसलोत बीकूंपुर धणी छै । समत १६१६ रा मिगसर में मोटौ राजा फळोधी आयौ । बरस ५ तथा ७ तौ पाधरा चालिया पछै भाटीयां सु सोबत[1] घोड़ां री रादाण पगां[2] ऊपाव हुवौ[3] । सोबत बीकानेर कनै आय ऊतरी । सोदागरे बींकूंपुर ही खबर मेली । फळौधी षबर मेली । म्हांनु सांम्हा आय कुं छूट मेल कर[4] तेड़ जाय तठै म्हे आवां । राव डूंगरसी तौ आपरौ भाई भाः भानीदास दुजणसालोत मेलीयौ । मोटै राजा राः वैरौ जेसावत राः रांमौ रतनसीयोत राः गोपाळदास रतनसीयोत राः जोगौ भाणोत रुपावत नीबो, दुजणसालोत मांडणोत, राः हींगोलौ वैरसीयोत, रुपौ चा. रतनसी म्हेकरणोत, रा. जैमल भांणोत, रूपौ असवार १०० मेलिया सु सोबत तौ पेहली सोदारी री दीलासा कर नै भाः भांनीदास चलाय मांडणसर बीकानेर था कोस ६ पीलाय था कोस दो ऊतरीयौ थौ । अै जाय मोटा राजा रौ साथ उठै ऊतरीयौ थौ इण रा ओठी आगे गया था तिणे षबर आंण दी—सोबत तौ इणे आधी चलाय नै भानीदास मांडणसर ऊतरीयौ छै । इणे चढ़ नै भाः भानीदास कूट मारीयौ । भाटोये इणे लंक लागी[5], तौ पण भाटी आघौ काढै छै[6] । ऊदैसिंघ राः मालदे रौ छोरू छै, इण सुं न कीजे । पछै मोटै राजा बीच आदमी भांटीयां रै फेरिया । तिण समै भाः किसनौ वाघावत षारब रौ छांड नै मोटै राजा

1. समूह, कतार। 2. कर आदि के लिये। 3. वैमनस्य हुआ। 4. कुछ कर आदि के सम्बंध में निश्चय कर। 5. वैर-भाव बढ़ा। 6. टालमटोल करते हैं।

कनै वास आय रहौ छै । पछै इणां नुं पण कहै छै—बैर परौ भंजाय दौ । भाटीयां वात कबूल कीवी । तरै राव ही षीरवा री बोरनाडी फळोधी था कोस ५ छै तठै आय नाडो री अेकण तीर ऊतरीया । अेकण तीर मोटौ राजा आय ऊतरीयौ । बैर भांजण नुं बीच आदमी फिरीया तिण मांहले किणहीक कह्यौ—भाटीयां कनै साथ को न छै । तरै मोटै राजा किणहीक आपरा इतबारी[1] चाकर नुं मेलीयौ, राव डुंगरसी रौ साथ गिण आव । औ गिण आयौ । कह्यौ—आपण थी आधौ हो साथ नहीं । तरै मोटौ राजा फिर गयौ[2] । तरै बीच भाटी किसनौ वाघावत बीजा के फिरता था तिणां नुं कह्यौ—कै तौ राव आपरै चढ़णा रौ फलांणौ[3] घोड़ौ म्हांनुं दै नहीं तरै म्हे राव नुं मारसां । तरै राव तौ कुजोर मरण रौ करतौ हुतौ पण भा: किसनौ वाघावत घोड़ौ राव रा चाकर रै हाथ सुं षोस नै[4] उरौ लेनै आंण दीयौ[5] । राव डूंगरसी आण जुहार कीयौ । तरै वळे फेर मंडी[6] कही—म्हारै नरा सुजावत री की फळोधी नै बीकूंपुर सींव छै, नोषा परै कोस २ नरा री जाळ कहीजै छै तठै सींव करौ । साष—'नरीये घाती नोषा सींव सलष हरै[7] धणी' ।

भाटीये आपरौ दाव दीठौ कह्यौ वा बात कबूल छै । तरै मोटै राजा कह्यौ सींव में इतरा गांव आवै छै सु लिष दौ—

१. वाय २. सीरहड़ १. वावड़ी १. सर १. षीरवो १. सेवड़ो नोषौ ।

१३५. तरै भाटी किसनै वाघावत वह्यौ—राव नुं सीष दौ[8] । परधांन फळौधी था साथै आवै छै । तरै राव नुं तौ सीष दीवी । भाटी नेतौ बींजावत नोष सेवड़ा वाळौ नै भा: डूंगरसी नेतावत नै राव रा परधांन मोटौ राजा साथे लीया फळौधी आया । संवारे कह्यौ—इतरा गांव म्हांनुं लिष देवौ । तरै उणै आपरौ दाव देष नै गांव लिष दीया ।

---

1. भरोसे का । 2. मुकर गया । 3. अमुक । 4. छीन कर । 5. ला दिया । 6. नई समस्या उत्पन्न हुई । 7. राव सलखा का वंशज । 8. विदा करो ।

तरै परधांन नै सीष दीवी नै सिरोपाव दीयौ ।[1] परधांन सीष कर नै षड़ीया । किणहीक कह्यौ–अै षोटा थका लिष देवै छै । तरै कह्यौ–तौ इण परधांन नुं मारौ । सु अै तौं[1] पहली नीसर गया ।[2] तरै केईक वांसै[3] दौड़ीया था सु फिर डेरै उरा आया । तौ ही भाटी टाळौ करै छै ।

१३६. मोटो राजा दिन दिन रौ सवायौ छै ।[4] वळे भाटीये परधांनां नै मेलीया । भाटी नेतौ वींजावत राः नींबा रै डेरै आया । कह्यौ–म्हां सुं घणी गैर करौ छौ[5] तौ ही म्हे हीड़ा करां छां ।[6] । गांव कोई मती मांगौ । नै राः अषैराज कूंपावत नुं राव डुंगरसी री बेटी परणावां छां । आ वात सांभळी तरै परधांन उठै थका मोटै राजा सुणीयौ, भाटी गाढ़ा[7] दबीया, कहिसौ[8] त्यां[2] करसी, तरै चढ नै नीबली मारी । उठै भाः डूगरसी रौ भाः भांडौ गजुवोत भुणकमल मारीयौ, आदमीया ६ सुं मारीयौ नै घणा बित[9] लीया । इण पछै जाय राव डूंगरसी नुं कह्यौ–का तौ थे बळ बांधौ[10] नहींतर रात रा अठा सूं कठै ही कोस दोय सौ ऊपर परा जावौ । नहींतर ऊदैसिंघ थांनै छोडै नहीं । तरै राव डूंगरसी बळ बांधौ । सारां केल्हण बीकूंपुर वैरसलपुर षरड़ा रा नुं तेड़ौ मेलीयौ ।[3] जेसलमेर रावळ हरराज कन्है आदमी मेल्हीया–म्हांरी मदत घणी करजौ । तरै रावळ पिण साथ बिदा कीया, सु पोकरण सुधां आया नै आधा नहीं आया, नै राव मंडळीक वरसलपुर थी आयो । षरड री गाडलां केल्हण सारा आया । वीकूंपुर राः वरसिंघ नेतावत भुणकमल सींधरात्र बोडाणां मांणस हजार २००० तथा २५०० भेळा हुवा, संबत १६२७ आसोज सुद ५ रौ टांणौ[11] छै । कितराहेक भाटी कहै छै–दसराहौ घरे करौ । राव मंडळीक घणौ बळ कीयौ, कह्यौ–हमैं किसा दसरावा, नीबलीयां नाडीयां ऊपर

१. तां । २. तिकुं । ३. कियो ।

1. सम्मानसूचक भेंट विशेष । 2. निकल गये । 3. पीछे । 4. अधिक जोश में आया । 5. दुर्व्यवहार । 6. सेवा-चाकरी करते 7. पूरी तरह से । 8. जैसा कहोगे । 9. मवेशी । 10. युद्ध की तैयारी करो । 11. समय ।

दसराहो करसां। पछै नोबलो आय ऊतरीया। दसरावौ अठै कर नै काति वदि १ रै टांणै सेषासर डेरौ कीयौ। दिन २ अठै रहा।

कटक री षबर मोटा राजा नुं ही हुई छै। सु मोटौ राजा ही लड़ाई रो तयारी करै छै। तिण टांणै राव चंद्रसेन कांणुज रै भाषर छै। नै पातसाही थांणो जोधपुर मुगल नासीरदी छै। तिण रा तोबची ६० तथा ८० मोटा राजा तेड़ीया छै। सेषासर था भाटीयां रौ कटक बहगटी हरभम रै पांवै आयौ। उठा थी आसोर[1] तळाव डेरौ १ कीयौ।

१३७. तिण दिनां अकबर पातसाह नागौर संवत १६२७ आयौ हुतौ तद राव चंद्रसेन भाद्राजन सुं मिळणै गयौ। तद मोटा राजा भाणै रतनसी पण जाय मिळीया, नै रायमल पिण मिळीया।[2] पछै मोटा राजा चढ नै आदमी ५०० तथा ७०० भाटीयां ऊपरै गया। तठै वेढ[1] हुई, भाटी जीता नै मोटा राजा वेढ हारीया। तरै इतरौ साथ मोटा राजा रौ कांम आयौ। विगत[3]—

१ वैरौ जसावत चांपावत।
१ रा: नींबौ दुजणसळोत।[4]
१ धायभाई केसर।
१ चो. रतनसी म्हैकरनोत।
१ रा. रायसल[5] दुरजणसलोत।
१ भाटो हमीर संकर रौ।
१ ईंदो कलौ चूंडावत।
१ भाटी पिराग।
१ भाटी सुरतांण दुजणोत।[6]
१ चौ: रायसल महेकरण रौ।

---

१. आसां रै। २. 'ख' प्रति में अकबर का वृत्तांत यहां नहीं है। ३. 'ख' प्रति में क्रम भिन्न है। ४. दुजणसलोत मांडणोत। ५. रायसी। ६. दुरजणसालोत।

---

1. युद्ध।

१ भाटी षेतौ ।
१ राः जोग भाणोत रूपावत ।[१]
१ राः हींगोलौ बरसोत ।[२]
१ भाः रतनसी[३] पीथा रौ ।
१ राः देबीदास भाडावत ।
१ भाः रायचंद जोधावत ।
१ भाः सुरजमल किसनावत ।
१ भाः सुरतांण दुजणसळोत ।
१ मांगळीयौ रांमौ ।
१ सो[४] नेतसी जैसिंघोत ।
१ भाटी मीर आसावत ।[५]
२१

इतरौ साथ भाटीयां रौ कांम आयौ—
१ राव मंडळीक वरसलपुर धणी ।
१ भुणकमल देपौ गांगावत ।
१ भाटी सुरतांण नेतावत ।

१ भा. कांनौ किसनावत मुवौ, लोहड़ै पड़ीयौ[1], पैली ऊपाड़ीयौ। मोटौ राजा तौ बेढ हार नै फळोधी रै कोट आया । भाटीयां रौ साथ दिन ७ कुंडल मैं उठै हीज रह्यौ । फळोदी सैहर ऊपर तौ आया नहीं नै धरती बीजी सारी लूटी नै पछै परा गया ।

१३८. इण बेढ पछै पिण मोटौ राजा वरस ३ तथा ४ फळोधी रहीया । संवत १६३१ अकबर पातसाह फळोधी भाः भाषरसी हरराजोत नुं दीवी । पछै मोटौ राजा फळोधी छोड नै नीसरीया । सु बोकुंकौहर गाडा छूटाणा । तरै राव डूंगरसी आपरा आदमी मेल्हीया नै राः अषैराज उदैसिंघोत नुं तेड़ीया, वेटी परणाई । पछै अषैराज षीची चांदा री घाटी कांम आयौ तरै भटीयांणी अषैराज वांसै वळी[2] ।

१. रूपो । २. वैरसियोत रूपो । ३. रतनो । ४. साः । ५. राः हमीर आसावत ।

1. शस्त्रों के प्रहार से गिर कर मरा । 2. सती हुई ।

१३६. मोटा राजा नुं संबत १६४० जोधपुर हुवौ। संबत १६५१ काळ कीयौ, वरस ११ जोधपुर भोगवीयौ।[1] पिण इण बैर रौ नांव न लीयौ।

१४०. मोटै राजा मैं मेणौ ह्रराजीयौ संबत १६४१ रा जेठ माहे आदमी १६ मारीया तठै राः सुरजमल षींवावत रै गोडा ऊपरै घाव लागीयौ।

१४१. मोटा राजा री बेटी धनाबाई नागोर रा चिरमषान नुं परणाई थी उणरी मदत आई थी।[१] समवली षवास पासवान माहे मोटा राजा साथ हुता। साहणी नांदी पीथौ लालौ टीलौ डील ५ घायल, नाथौ धायभाई बेणौ खीची हदौ ऊः बेळौ कोचर मुः रोहीतास सदा-रंग समदड़ीयौ साथे हुता।

१४२. मोटौ राजा समावळी, तद गूजरां सुं मामलो हुवौ।[2] तठै गह-लोत अचळौ धरमावत नै पुरबीयौ जांमणी भाणकपुर चंदोत जात रौ बैंस देवसेन रौ भाई कांम आयौ। साहाणी नांदौ पूरै लोहां पड़ीयौ।[3]

१४३. संबत १६४० पौस वदि ८ राजपींपळै मोटै राजा पातसाह मुदफरषांन भागौ। भाः गोईंददास मांनावत रौ सगौ भाई सादुळ सोर सुं बळीयौ।[4] भाः रूपसोत री साष में भाः गोपाळदास रांणावत कांम आयौ।

१४४. रायसिंघ चंद्रसेनोत संबत १६४० रा काती सुदि ११ सीरोही माराणी। पछै मोटै राजा नुं नवाव सोझत दीवी। तद भीमा नै पाः नेतौ राव रायसिंघ रौ राजलोक सारौ सोझत थौ। पछै मोटौ राजा सोझत आया नै गाडा वाळीया। राजालोक सारा ही रहावणां नुं[5] जोधपुर रषाया नै पाः नेतौ ही ले आयौ राः आसकरन रावजी राः प्रीग मांडणोत राः पींवौ मांडणोत उठै थौ, सु वीजा ठाकुर रापीयौ।

---

१. उणरा साथ मदत आया था ('ख' प्रति में यह वृतांत अन्यत्र है)

---

1. उपभोग किया। 2. झगड़ा हुआ। 3. बुरी तरह घायल होकर गिरा 4. जल गया। 5. नौकर-चाकर आदि।

१४५. मोटा राजा नै जोधपुर हुवौ। पछै सोभ्रत हुई तरै राजाजी गुजरात नुं पधारै। तद धरती राः आसकरन देवीदासोत नुं, निपट वडौ रजपुत देसरौ भड़ कोवाड़[1] थौ, सु आसकरन नुं आदमी २ तथा ४ षवास पासवान तेड़ा मेलीया[2], पिण आसकरण आवै नहीं। तरै कंवर सुरजसिंघ उठै मेलीयौ, तरै तेड़ लाया। तद राः आसकरन कोरै कागळ[3] सही पटा में घाल मंगाई, नै घोड़ौ १ सिरपाव १ तरवार १ मगरबी १ हाथी १ सुदरौ दीयौ पीरोजा[1] १०००० रोक देनै पटौ दीयौ। इतरा गांव पटै दीया, तिणां गांवां री विगत—

३४ परगनै जौधपुर रा गांव दीया—[2]

११ षैरवारा तफै रा दीया रेष १६४००)

१	षैरवो	६०००)	१	सुकाळवो	२००)
१	सौनेवी	१०००)	१	आईची	१०००)
१	बुधवाड़ौ	५००)	१	हींगोळो षुरद	४००)
१	धांमळी	३५००)	१	हींगोळो वडौ	१०००)
१	बापुनी	२००)	१	लांबीया[3]	२०००)
१	सांषड़ो				
११					

लवेरा रै तफै रौ— गांव अंणवाड़ौ रेष १७००)

५ तफै हवेली रा—

१	पालावासणी	४०००)
१	लोहरड़ी[4]	१०००)
१	वाघल[5]	३०००)
१	वीरावास	४००)
१	दांतीवाड़ौ	
		८४००

१. पीरोजी। २. 'ख' प्रति में गांवां की रेप अंकित नहीं। ३. लांबी। ४. वोहरड़ी। ५. वाघण।

1. देश का रक्षक। 2. बुलाने के लिए भेजा। 3. कागज।

१० तफै पींपाड़ रा—

१ काळाऊनां ३३००) १ कागल ४००)
१ रांमपुरौ ७००) १ सरगीयौ ६००)
१ लांबौ ५०००) १ रावळी अल[1]
१ षेजड़ली ३०००) १ रतकूड़ीयौ २५००)
१ षंडप[2] २०००) १ तीलवाणी[3] ३०००)

२०,५००)

५ बाहाला रा तफा रा—

१ बाहलौ ४०००) रावर ३०००) वाघावस ५००)
१ ओलवी[4] २०००) १ मोकळावासणी

९५००

२ तफै बीलाड़े रा

१ हरस १०००) १ बींजीयावासणी १५००)

२५००)

गांव ३४ रेष ५९०००)

३१ गांव सोझत रा—

११ गांव चंडावळ रा पटा रा रेष•••।

१ चंडावळ ५०००) १ करमावास १५००)
१ सीसवादो ११००) १ छीतरीयौं ११००)
१ राजलवौ ६००) १ डोईनडी १२००)
१ भैसांणौ २०००) १ चौवबडी ८००)
१ भेवली १५००) १ संषावास[5] २०००)

२० वीजा गांव दीया—

१ सीहाट ५०००) १ भुपेलाव[6] १६००)
सुराईतो ४५००) १ अटवड़ौ ५५००)

---

१. रावणियाणो । २. तीलवासणी । ३. खारीयो । ४. ग्रालवी । ५. सेखावास ।
६. झुंपेळाव ।

१ मुळांपूरीयौ	४०००)	१ सांडींयौ	५५००)
१ बरणों	२३००)	१ गागुरड़	२०००)
१ बासणौ	२७००)	१ भींवासीयो	
१ आल्हावास	२०००)	१ सीलको[1]	३०००)
१ रांमावासणी	१०००)	१ षारीयो	२१००)
१ बोल	१५००)	१ बीरावास	५००)
१ कीराड़ी	१२००)	१ नाथल कुड़ी	५००)
१ दुधीयौ	६००)		
२०	३८८००)		
३१	५५६००)		
गांव ६५, रेष :	११४६००)		

राजा सुरजसिंघ ऊदैसिघोत रै वार री वात

१४६. राणी मनरंगदे कछवाई रै पेट रो, राजा आसकरन भारमलोत री दोहीतौ। संबत १६२७, सोळासौ सताइसै वैसाष बदि ६[2] मंगलवार कुंभ लग्न क्रेतका नोषग[1] जनम हुवौ। संवत १६५१ रा आसाढ वदि १३ बुध पातसाह सुं मिळीया। संबत १६७६ रा भादवा सुदि ९ काळ मेहकर कीयौ। जनम फळोधी रै कौट माहे। संमत १६५२ जोधपुर पधार पाट बैठा।[2] दिन ८ जोधपुर रहा। पछै गुजरात नै पधारीया। कौरटौ चाटीये[3] राव सुरतांण कन्हा डंड लीयौ। मोटा राजा रा इतरा बेटा था सु एक एक सुं इधकौ[3] था। पिण राजा ऊदैसिंघ आप जीवतां ही राजा सुरजसिंघ रै माथै मदार[4] राषी थी।

१४७. पातसा साथे ले गया था। एक दिन पातसाहजी कासमीर पधारीथा तद और कोई पहोतौ[5] नहीं। तद भा: गोयंदास मोड़ौ[6] रात पोहर १ गयां कासमीर जाय पौंहतौ। तरै सुरजसिंघ कंवर कहण

१. सीएलो। २. (सातम) ३. मारियो।

1. नक्षत्र। 2. राज्य-गद्दी पर बैठे। 3. बढ़ कर। 4. जिम्मेदारी। 5. पहुँचा। 6. विलंब से।

लागौ–आज अवस दरबार पधारौ, थांहांरौ वडौ मुजरौ होसी । सु पातसाहजी सुं चौकीनवेसां गुदरायौ ।[1] आज तौ चौकी नुं कोई मुनसपदार आयौ नहीं । इतरी अरज चौकी वैस पातसाजी सुं करी छै । इतरा में दोढी जाय हाजर हुआ । मांहै मुजरौ दरवांनां जाय कीयौ । पातसाहजी तुरत हजूर वुलायौ, वोहोत राजी हुआ । तारीफ कीवी । आप फुरमायौ–आज री रात थे षासी दोढी चौकी रहौ । सु इण भांत री चाकरी कुंवर कर नै पातसाह जी नुं राजी कर राषीया था, सु मोटै राजा मरतां थकां तुरत टीकौ पातसाहजी राजा सुरजसिंघ नुं दीयौ । जागीर टीकै वैसतां सिवाय पाई—

१ जोधपुर १ सीवाणौ १ सोझत

माहाराजा काळ कीयौ[2] तिण दीन उमराव ४ छांडीया था । पछै भाः गोयंददास राजा सुरजसिंघ सुं अरज कर राषीया था, १ राः वलु तेजसोत १ राः रामदास ऊदावत १ जसवंत मानसिंघोत सौनगरौ १ रा [[1]नराणदास पातावत ।

१४८. परगने जाळोर संमत १६७४ इतरा परगनां रै वदळै पातसाह जांहगीर पाहड़षांन री तागीर दीयौ सु संवत १६७४ रै भादवा सुद ९ गढ़ हाथ आयौ ।

१ वडनगर १ षोरालु १ रतलाम
१ फळोधी १ पीसांगण

वीहारी कांम आया—

१ जवदलषां १ सीलारषां १ मुगराजसी
१ ताजु अछु रौ

इतरौ साथ राजाजी रौ कांम आंयौ—

१ साहांणो रायसि पांचावत
१ मांगळीयौ सरणावत

---

१. कोष्ठकों के बीच का वृत्तान्त 'ख' प्रति का है ।

---

1. अर्ज की । 2. मृत्यु को प्राप्त हुए ।

१ नायक षांन मेहमद फुल रौ।

सांचोर संबत १६७४ हुवौ, जाळोर लीयौ तरै पछै अमल हुवौ[1], संबत १६७५ तागीर कीयौ।

१४६. परगनै फळोधी संबत १६७२ हुई। राजा सुरजसिंघोत रै मरण रा: सबळसिंघ सुरजसिंघोत नुं पातसाह दीवी।

पोकरण सातलमेर पातसाही तरफ था दांम ५७५०००) जागीरी में मंडता रहा[2] पिण अमल न हुवौ।

१५०. अेक वार राजा सुरजसिंघ जोसी देवदत, रा: चंदो वीरमोद तेरवाड़ो-मेरवाड़ा री अरज वासतै दुरगाह[3] मेलीया था—म्हारौ उठै अमल नहीं तौ अे परगना म्हांरै नांवे कुण वासतै जागीर में मांडौ। म्हांनुं दूजी ठौड़ बदळै दो, नहींतर[4] मसादव[5] मां इणरा पईसा काटौ, कुंही न दौ तौ ही परा करौ।[6] पण अरज मानी नहीं।

तेरवाड़ो-मेरवाड़ो रु० ६३०००) मांहे पाया था रा: लुणौ दासावत उठै थांणै हूतौ सु उठै कांम आयौ। सींधवा मेहा रै हवालै थौ, पछै संबत १६७४ मु: रांम रै हवालै सांचोर भेळौ कीयौ थौ। मु: जोधौ उठै रहतौ, पछै राजा सुरजसिंघ मरण उरा आया, इतरा परगना वळै हुवा, चढीया ऊतरीया—

बड़नगर गुजरात रौ मु: जैमल जेसावत थौ, पछै संबत १६७२ मु: रांमा नुं सौंपीयौ, मुकाते रु० २००००) रेष रुपीया ६६०००)।

षेरालु गुजरात रौ पेहली भा जैमल मनावत नुं थौ, पछै संबत १६७२ मु: रामां नुं सौंपीयौ। गांव ११० मुकाते रुपीया ४०,०००)। मु: रांमौ षेरालु बड़नगर था जाळौर आयौ, रुपीया ११२०००)]

रतलाम मालवा री भाटी ईसरदास हरदासौत पा: चुतरभुज भावसिंघोत रु० १०००००)।

पीसांगण रा: सांवळदास किलांणदासोत रै पटै हुतो, मेड़तीयां नुं रुपिया २००००)।

---

1. राज्य-दस्तूर हुआ। 2. लिखे जाते रहे। 3. बादशाह के दरबार में। 4. वरना। 5. मसविदा। 6. हटाओ।

रजणी गुजरात री सीः भेरव हाकम थौ ।
इतरी ठौड़ दिषण में जागीर रही—

१ वौरगा[1] १ राजौरी ।

१५१. राजा सुरजसिंघ मरण तांऊ[1] पांच हजारी जात पंच हजार असवार पूरा हुआ नहीं । संवत १६७५ काती[2] सुदि १५ असमाध आई । तठा पछै पांच सौ असवार इजाफौ पातसाहजी फुरमायौ थौ । फुरमान माहे लीषोयौ आयौ थौ पिण जागीर नहीं पाई ।

१५२. श्री म्हाराजा जी संबत १६७६ भादवा सुदि ९ काळ कीयौ । तद महैकर वहुजी अहाड़ी कुंवर सबळसिंघ हुता । पछै दरगाह सुं जोधपुर जैतारण सोभ्रत सीवांणौ राजा श्री गजसिंघ नुं मुनसब माहे दोया न राः सबळ नुं दरगाह थी दोया छै दांम २७००००० फळोधी सबळसिंघ नु दरगाह थी दीया छै ।

१५३. राजा गजसिंघ विराहनपुर गया तरै बहूजी आहाड़ी जी सबळसिंघ नुं तेड़ लीया । पछै बहूजी डेरौ अळघौ कीयौ । तरै राजा गजसिंघजी कहाड़ीयौ, कहौ–थे कां जावौ, राजा सुरजसिंघ मोटा राजा रै मरणै राः किसनसिंघ जी नुं दीयौ थौ, सु पटौ म्हे थांनु देवां छां । पिण वहूजी वात मानी नहीं । सबळसिंघ नुं ले नै दरगाह गया । उठै जाय अरज मालम पातसाहजी सुं कीवी, पिण अरज लागो नहीं ।[2] राजा भींव नु पातसाहजी पूछीयौ–थांहारै कासुं रीत छै कुं सबळसिंघ नु आवै ?[3] तरै भींव कहौ–कुं आवै नहीं । तरै रु० २००००) दिराया ।

१५४. सोभ्रत संवत १६५६ राः सकतसिंघ ऊदैसिंघोत नुं हुई, वरस रही । पछै राणै अमरसिंघ मालपुरौ मार नै[4] सोभ्रत रौ गांव सेषावास डेरौ कीयौ । तिण मामले ऊतरी ।[5] राः जैतमालोत नै सोभ्रत

१. वोरगांव । २. फागण ।

1. मृत्यु होने तक । 2. कार-गुजार नहीं हुई । 3. क्या सबलसिंह के हिस्से में कुछ आता है । 4. कब्जे कर । 5. जब्त हुई ।

हुई। तरै छापलै आयौ। भा: मांन[1] बिगर हुकम राजाजी रै अमल दीयौ। पछै राजाजी बुरौ मानीयौ। पछै राजाजी री फौज मानो भंडारी लैनै भाः सुरतांण मांनावत राः किसनसिंघ राः रामदास चांदावत राः गोपाळदास मांडणोत राः कान्हौ तेजसोत घणौ साथ हुतौ। सोझत[2] आण लागौ। राः भांण सोझत असवार ६०० झूलि, रातीबाहौ दीयौ। पछै राः सकतसिंघ आयौ। राजा [[3]जी साथ गयौ। संमत १६६४ रा वैसाष सुद ३ सोझत राः करमसेण उगरसेणोत नुं हुई। संमत १६६५ रा काती सुद[4] पाछी राजा सुरजसिंघ नुं हुई। पछै भा: गोयंददास मनावत छापले आया। राः करमसेण सोझत माहे थौ। असवार ६०० तथा ७०० करमसेण कन्है था। राठौड़ कुंभकरण वाघोत करमसेण रौ चाकर थौ। सोलंकी कुंभा रौ प्रोल हाथो[1] तिण समै रौ छै।

१५५. नबाब मोहबतषांन नुं रांणां ऊषर साहब मदार कर मेलीयौ। तरै रांणा रौ लोग घणौ मारवाड़ रै गांवा माहे आय रह्यौ। तिको गिलो[2] दरगाह नुं लीष नै सोझत म्होबतषांन संमत १६६४ उतराई, राः करमसेण नुं दिराई। -मास रही तितरै म्होबतषांन सूं सोबो ऊतरीयौ।

१५६. अवदुलाषांन नुं सोबो हुवौ तरै भाः गोयंददास अबदुला सूं मिळ नै थांणा ११ झालीया।[3] सोझत लीवी। संमत १६५८ रा जेठ बद ७ दिषण अमरचंपु नै राजाजी बेढ हुई। बेढ राजाजी जीती। हिमें श्री माहाराजाजी रै वांनो लाल सुपेद[4] छै, सु तद रौ छै। हाथी ४ म्हाराजाजी रै आया। राजाजी रौ साथ इतरौ कांम आयौ।

१ भाः वैरसी रायमलोत रायमल अचळौ भैरव जेसौ।

१ राः भाण सांसीरचंदोत वेठवासीयो।

इण वेढ रै मुजरै पातसाहा आधो मेड़तौ दीयौ। संमत १६६३ रा मंगसर सुदि १५ राः भोपत उदैसिंघोत नै पंवार सादूळसिंघ मालदेवोत

---

१. मने। २. सोझण (प्र)। ३. 'ख' प्रति का अंश है।

1. आहाता। 2. शिकायत। 3. प्राप्त किये। 4. सम्मानसूचक रंग।

मामलो हुवौ। रा: भोपत कांम आयौ। संमत ६६८ पंवारां सुं वैर भागौ। राजा सुरजसिंघ परणीयौ संमत १६६१।

१५७. राजाजी दिपण री मुहम[1] छै। तरै भा: गोयंददास मांनावत अकबर पातसाह सुं अरज कर नै राजाजी नुं पातसाह री हजूर तेड़ाया।[2] आप गोयंददास महेकर थांणै रहै। पछै राजा सुरजसिंघ पातसाही री हजूर आया। पातसाहजी राजाजी नूं देस री विदा रो हुकम कीयौ। तरै राजाजी अरज कीवी–हूं घरे जाय कासुं करूं[3], हूंतो घर री वात माहे समझूं नहीं। म्हारै घर री मदार सारी गोयंददास माथै छै, गोयंददास विगर हूं देस जाय कासुं करूं। तरै पातसाहजी भा: गोयंददास नुं पण हजूर तेड़ाय नै राजाजी नुं आवौ मेड़तौ नै जैतारण दरो बसत पातसाहजी वधारे[4] दीवी। संमत १६६१ रा असाढ बद ८ जोधपुर आया। संमत १६६२ रा काती सुद ४ अकबर काळ कीयौ।

संमत १६६२ पातसाहजी जांहगीर गुजरात रौ मांवो दीयौ।

१५८. गुजरात रौ पातसाह बाहादर मांडवे कोलीलाल वांसे वात राषीयौ। राजाजी मांडवा ऊपर पधारीया म्हाराजा मांडवे नजीक डेरा कीया। अणी[5] २ कर नै मांडवा ऊपर फौज २ मेली। अेकण अणी भा: गोयंददासजी था नै अेकण अणी रा: सुरजमल जैतमालोत हुता, नै म्हाराजा तौं डेरै हुता। फौज जाय गांव घेरीयौ, गांव पाड़ीयौ, लूटीयौ। उवे कोली सीसरगा कोतरा माहे गया था। पछै उण रा: सुरजमल रै अणी दिसी दीपाई दी। रा: गोपाळदास डीरीयौ। घणा ही वरजीया–इण वांसै मती जावौ ठोड़ कोतरा निपट अेढा छै[6] इणां ठांकुरां वात मांनी नहीं. पछे फाड़ाकोतू माहे मामलो हुवौ,[7] इतरौ साथ राजाजी रौ कांम आयौ।—

१ रा: सुरजमल जैमालोत चांपा।

१ रा: जैसिघदे करमसीयोत वीकावत।

---

1. फौजी दौरा। 2. बुलाया। 3. क्या करूं। 4. अतिरिक्त 5. [illegible]
6. बड़े विकट है। 7. युद्ध हुआ।

१ राः गोपाळदास ईडरीयौ ।
१ साहाणी ठाकुरसी रामदासोत ।
१ मांगळीयौ माधोदास सादुळोत ।
१ मीहतो भोपत मांनसिंघोत ।
१ राः रांमदास चांपावत ।
१ राः सांवळदास रांणावत ।
१ राः भोपत रांणावत ।
१ भाः भणकलावत ।
१ राः तिलोकसी म्हेसोत ।
१ राः गोपाळदास मांडणोत जैसावत ।
१ राः हरीसिंघ चांदावत मेड़तीयौ ।
१ साहाणी पांचो नंदावत ।
१ राः माधोवदास गोपाळदासोत ।
१ चौहाण कुंभो गोईंदोत
१ राः ईसरदास नींबावत करनोत ।
१ भाः रायसिंघ जेसावत ।
१ राः जसवंत कला जेसावत रा रौ ।
१ राः किसनदास म्होजलोत ।
१ राः रायसिंघ ईसरदासोत ।
१ राः कचारौ सिवराजोत ।
१ राः भोपत हींगोलावोत ।

१५९. जोसी चंडु दमोदर रै टीपणै माहे लोषीयौ छै– संमत १६६२ रै आसाढ सुद १५ अ्रेहमदावाद आया । संमत १६६३ रै पोस सुद १५ अ्रेहमदावाद सुं जोथपुर नै कूच कीयौ । काकरोयै तळाव डेरा कीया था । फागण सुद ७ जोधपुर पधारोया । संमत १६५२ रा म्हा सुद ५ जोधपुर पधारीया । पाट वैठा । दिन ८ जोधपुर रहा पछै गुजरात पधारीया । वीच पधारतां राव सुरताण कनै लीयौ, कोरटो मारीयो[1]

1. जीता ।

बरस ३ इण फेरै गुजरात रहा। पछै पातसाहजी री हुकम आयौ–दीषण सताब[1] जावौ। कुं ढील तरै संमत १६५६ सोबो ऊतरीयौ[2]। संमत १६६९ रै चैत सुद १ बुहरानपुर सुं अेहमदावाद पधारीया। चैत सुद १० सोबो तागीर[3] हुऔ। सोवो दिन ९ रहौ पाछा आया। पाछा आय तळाब कांकरीयै डेरा कीया। संमत १६६९ रै जेठ बद ११ जोधपुर पधारीया।

संमत १६६६ रांणी सोभागदे काळ कीयौ।

१६०. संमत १६६९ रै जेठ सुद ७ भाः सुरतांण मांनावत नुं राः सुंदरदास सूरसिंघ रांमदासोत राः नरसिंघदास किल्याणदासोत राः गोपाळदास भगवानदासोत ऊपर आय मारीयौ। राःसुंदरदास सूरसिंघ नरसिंघदासोत सुरतांण मरतौ ले मुवौ[4]।

राः गोपाळदास घावे लागे नीसरीयौ[5]। कंवर गजसिंघ भाः गोयंददास आपड़ कुड़षी मारीयौ।

१६१. संमत १६७० पोस सुद ११ कंवर अमरसिंघ जायौ[6]। संमत १६७१ जेठ सुद ९ अजमेर राः किसनसिंघ उदेसिंघोत राः करन सकत राजा सुरजसिंघ रा डेरा ऊपर आया। भाः गोयंददास मनावत नुं मारीयौ। राः किसनसिंघ राः करन पण कांम आयौ।

इतरी साथ राजाजी री कांम आयौ–

१ भाः गोयंददास मांनावत।
१ भाः प्रिथीराज करनोत।
१ भाः सुजौ भैरवदासोत।
१ भाः कुंभौ पातावत।
१ हुल पतौ भादावत।
१ राः गोयंददास रांणावत पातावत।
१ राः केसोदास सांवळदासोत।
१ चौ० नरहर पिरागोत।

---

1. शीघ्र 2. सूबा जब्त कर लिया गया। 3. मिला। 4. मरते मरते उसे भी मार लिया। 5. घायल होकर निकल भागा। 6. जन्मा।

१ गौड़ माधौ केसो धाय भाई ।
१ भा: कलु कान्होत ।
१ भा: भादो नराइणदासोत ।
१ भा: गोईंददास जसावत ।
१ भा: मांनो मनोहरदास गोयंददासोत ।
१ रा: तीलोकसी सुजावत ।
१ रा: भोपत कलो जोगावत रावळोत ।
१ पंवार केसो
१ चौ: साजण सीवावत ।
१ सा: केसौदास पूनो सांषलो ।
इतरा घायल हुआ—
१ रा: राजसिंघ षींवावत ।
१ भा: नरहरदास गोयंददासोत जेसावत रौ ।
१ रा: जगनाथ किल्यांणदासोत ।
१ रा: ऊदो भैरवदासोत ।
१ मो: हरीदास रांणावत ।
१ रा: भींव किल्यांणदासोत ।
१ रा: ऊदो पातावत ।
१ भा: वीठल गोपदोत ।
१ म्हौ: नराईण पतावत ।
१ कांधळ दहीयौ ।
इतरां सुं रा: किसनसिंघ कांम आयौ—
१ रा: किसनसिंघ राजावत ।
१ रा: माधोदास रांमदासोत मेडतीयौ ।
१ रा: पेतसो गोपाळदासोत ।
१ का: दुह कचरावत ।
१ भा: जीवौ ।
१ रा: पिरागदास सुरतांणरांमोत रा ।
१ को: सुरनर नोरतोत ।

१ रा: सांवळदास रासावत ।
४ सेहलोत ।
 १ रागो १ हींगोलो १ थीरौ १ सेषौ ।
१ सा: भारमल ।
१ माल लषमणोत ।
१ माजबी लाडषां ।
१ रा: करन सकतसिंघोत ।
१ रा: गोपाळदास वाघोत जेसावत ।
१ रा: वाघौ षेतसीयोत ।
१ भा: धनौ करनसेन रौ चाकर ।
१ भा: मांनसिंघ किल्यांणदास जैमलोत ।
१ को: वाघौ रा: किसोरदास किल्यांणदास जैमलोत रौ ।
१ दहीयौ नापौ ।
१ ईंदो महेस ।
३ हुल ।
 १ मकवांणी १ किसनौ १ चौ: कान्हौ १ बेठवासीयो]

१६२. इण मामलै हुवां पछै । एक वार पातसाहजी माहाराजाजी नुं असाढ माहे विदा कीया । मास २ अठै देस माहे रहा । पछै दसराहै हैईयान[1] षांन अहैदी परवानौ ले आयौ, सिताब अजमेर आवौ, तरै उण च्यार दिन रहण न दीया । दसराहौ सोझत कीयौ । पछै मेड़ता माहे होय नै अजमेर पधारिया । पातसाहजी घणी दिलासा कर नै विदा कीया । दीवाळी अजमेर कीवी । श्री राजाजी नुं विदा दिषण नुं कीया, डेरा पीसांगण हुआ दिन ५ मुकाम अठै हुआ । कुंवर गजसिंघ रा: राजसिंघ षींवावत भा: नुं देस नुं विदा किया आप दिषण नुं विदा हुआ । कांम देसरा रौ मुदौ सारौ लूणा ऊपर राषीयौ ।

१६३. भंडारी मांनौ डावरोत[2] रायसिंघ चंद्रसेनोत कन्है सोझत था सु राव रायसिंध सीरोही कांम आया । पछै मोटा राजा नुं धरती हुई नै

---
१. हयायत । २. कंवरोत ।

सोझत पिण हुई। सु रायसिंघ रा कवीला नुं जोधपुर ल्याया नै भंडारी मांनो संमत १६४० राः ऊनाळी साप रै टाणै[1] आया। आवतां समां भाः मांना नुं देस सौंपीयो, मवेला रै हवाले दाण हुतो। एक वार भाः मांनो जोधपुर थी नीसरीयो। संमत १६५१ टाणं वळूंदे गयो। सांवळ लाहोर थो नीसरीयो। पछै बीकानेर गया, मास ५ तथा ७ उठै रहो, पछै घांणोरै[१] आया, पछै रांणा कन्है चांवड जाय मिळीया।

१६४. तठा पछै राजा उदैसिंघजी काळ कीयो। राजा सुरजसिंघ पाट वैठा संमत १६५२ माहे। राजा सुरजसिंघ जोधपुर पधारीया। तरै भाः मांना कन्है मनावण नुं भाः लूणा नुं परधांन राजाजी मेलीयो। कहो–वात वणाय आवो। बोलचाल री अरज कराई थी पछै गांव पैरवै डेरी हुवो। तरै राः भोपत देवीदासोत सोः जसवंत अपैराजोत ठाकुर ४ घणोड़ जाय नै ले आया। सिरपाव देनै भंडारी मांना नुं देस सौंपीयो। भाः सांवळ साथे लीयो, राः वाघ पिरथीराजोत।

१६५. संवत १६७२ नागोर रा गांव ३ राजा श्री सुरजसिंघजी री वार में[2] मोजा चंपा सुं दावीया।[3] पछै नागोर असपपांन नुं हुवो। पछै भाः लूणो नागोर जाय नै गजसिंघपुरो मुकातै लायो। सालीना रा रुपिया ३१००) कीया। गांव आसोप रै तफै भेळा कीया।

१६६. संवत १६७४ रा भादवा सुदि ९ कंवर गजसिंघ जाळोर फतै कीयो। पछै भाः गोपाळदास आसावत राः दयाळदास गोपाळदासोत जाळोर फोजदार कीया। तिण सुं राव राजसिंघ सुरतांणोत सीरोही अै वात कीवी। देवड़ो प्रथीराज सुजावत देवल रा भापरां माहे पैठो छै।[4] सु इण नुं आंपां मिळ नै परो काढां।[5] म्हां भेळा थे हुवो तो गांव १४ म्हे कोरटा सूं राजाजी नुं देवां। पछै दयाळदास साथे लेनै राव भेळा हुआ। देवड़ा पिरथीराज नुं भापरां माहां सुं परो काढीयो। वरस १ पीरोजी[6] ९००० गोहू[7] में १३०००) आया था। आगलै

१. घाणोरै।

1. समय। 2. समय में। 3. हस्तगत किये। 4. जम गया है। 5. निकाल दे। 6. मिश्रा विशेष। 7. गेहूँ।

वरस न दीयी । संमत १६७५ गांवां री वीगत—

१ कोरटो	१ पालड़ी	१ नंमी	१ रहचाड़ी[१]
१ मंचाल[२]	१ आलोपी	१ पोसांणो[३]	१ वासड़ो
१ वाघार	१ पेजड़ीयौ	१ भवि	१ अणंदोरो[४]
१ नाराघणो[५]	१ अरहटवाड़ौ		
१४			

१६७. भाटी गोयंदास मांनावत कांम आयौ। पछै राजा सुरजसिंघ रावळ तेजसी दुदावत कन्हा इतरी लोयौ—गांव ३– १ मंडांपड़ो १ फळसूंड १ आगौळाइ नै हाथी १, रूः ५०००)।[६]

१६८. भाटी गोयंदास मांनावत राजा सुरजसिंघ रै वदळै दिपण रहौ नै राजाजी पातसाहजी री हजुर आया। पछै साहजादा दांनसाह नुं दिपण री सूबौ हुतो। सु गोलकुंडा रौ पातसाह आपरी वेटी रौ डोळौ दांनसाह साहजादै नुं मेल्हीयौ थौ सु दौलतावाद वोजापुर रौ पातसाह आवण नहीं देवै। तरै दांनसाह डोळा रै वासतै भाः गोयंददास नुं मेलीयौ, डोळौ ले आयौ। मुजरा रौ धणी हुऔ, संमत १६५८ रै टांणै।

१६९. जोसो देवदत पोकरणा नुं राजा सुरजसिंघजी चाकर राषीयौ। संवत १६७२ तथा संमत १६७३ रै टांणै रापोयो। रू० ६०००) तथा ७०००) रोजगार कीयौ। दीवांनगी री पिजमत सौंपी थी। वरस २ राजा गजसिंघ रै ही रहौ, वडो आदमी थौ।

१७०. संमत १६६९ कुंवर श्री गजसिंघजो जोधपुर हुता। भाः गोयंददास मांनावत नुडुल[७] रै थांणै थौ। राणा अमरसिंघ अंवाई रै भापर[1] था। तठा थी कुंवर उरजन अमरसिंघोत नुं सिरदार[2] कर नै[८] दोय हजार असवार साथे दे नै अहमदावाद री कतार आवती थी नै आगरै जावती थी तिण ऊपरां विदा कियौ सु कतार निकळ गई। कतार नुं राणा री पवर हुई, जु साथ[3] म्हां ऊपरै आवै, तरै निकळ गई। फौज दुनाड़ा तांई गई, पाली पड़ोया[4], तरै पाछा

१. रेवाड़ो। २. माचाल। ३. पोसाणो। ४. अणदोर। ५. नारायणो। ६. एक हाथी रा रुपीया ५००)। ७. नाडुल। ८. करवी।

1. पहाड़। 2. मुखिया। 3. फौज। 4. कुछ हाथ नही लगा।

फिरीया। तरै भा: गोयंददास साथ भेळौ कर नै राणा री फौज ऊपरै आउवै[1] लड़ाई कीवी। गोयंददासजी रै साथै च्यार सौ असवार नै तीन सौ पाळा था। तिकां आगै रांणा रा दोय हजार असवार पाळा[1] भागा। श्रीजी रै फतै हुई। रांणा रौ साथ भागौ, तिण री विगतः—

१ सीसौदौ अरजन[2] अमरावत।
१ सेसौ[3] परतापोत।
१ राः हरीसिंघ बलुवोत।
१ सींधल देवौ सुजावत।
१ सीवाधौ अमरावत।
१ सी: माधोसिंघ रांणा ऊदैसिंघ रै।
१ राः भींव किलांणदास।
१ सींधल सांवळदास मानावत।
१ सी: सेपौ परतापोत।
१ देवड़ौ पत्तौ कलावत।
१ सोनगरौ सांवतसो नारांणदासोत।

६ रांणा रा कांम आया

श्री राजाजी रै साथे चार सौ असवार तीन सौ पाळा तिकां में सिरदार इतराः—

१ भा: गोयंददास मानावत।
१ राः माधोदास पूरणमलोत।
१ राः जैतसिंघ ऊदैसिंघ राव रौ।
१ राः लषमण नारणोत।
१ पंचोळी जीवराज सारणोत।
१ राः किलांणदास मानावत।

---

१. आडवै। २. दुरजन। ३. सेसो।

---

१. पैदल।

१ रा: सांकरदास भाणोत ।
आसीयौ चारण मनोहर रौ ।[१]
१ सो [२]सुरजमल षींवसोत ।
१ सांदू मालौ उदैसोत[२] चारण ।
१०

राजा सुरजसिंघ रा दीया गांव पातसाही उमरावां नै था—
१ रा: षींवा मांडणोत नुं ईडवो मेड़ता रौ ।
१ भा: गोपाळदास आसावत नुं बेजड़लौ ।
१ रा. मान षिजमतीया नुं रतनपुरौ जैतारण रौ ।

१७१. माहाराजाजी श्री गजसिंघजी रांणी सोभागदे कछवाही रौ बेटी राव दुरजणसाल रौ दोहीतरौ । संबत १६५२ रा काती वदि ८ गुरवार रौ जनम छै । संबत १६७६ रा आसोज सुदि ६ गुर मेहकर पाट वैठा ।[1] संवत १६९४ रा जेठ सुदि ३ आगरै काळ कीयौ ।[2] संबत १६७६ रा मंगसर माहे पातसाहजी री हजूर सुं टीकौ आयौ, मुनसप आयौ । पहलो टीकै वैसतां[3] तोन हजारी जात दोय हजार असवार मनसप हुऔ, तिण माहे जागीर पाई:—

१ पाईतषत गढ जोधपुर तफा १९ सुं रु० १९९१२५) माहे ।
१ सोभत रौ परगनौ रु० १२५०००) माहे ।
१ जैतारण रौ परगनौ रुपीया ९८५०८) माहे ।
१ सीवाणै रौ परगनौ रु० ३७५००) माहे ।
सातलमेर पोकरण जागीर में मंडी, अमल न हुवौ । रु० १५०००)
१ तेरवाड़ौ मेरवाड़ौ गुजरात रौ रु० ६३२८९)
तठा पछै परगना हुआ:—
१ जाळोर संमत १६७७ रा वैसाप माहे पुरम दियौ
रु० २८७०५८)

---

१. हांमावत । २. उदावत ।

---

1. गद्दी पर बैठे । 2. मृत्यु हुई । 3. बैठते समय ।

१ सांचोर संमत १६७९ रा भादवै में षुरम दीयौ रु० ६४५००)
१ फळोघी संमत १६७९ पातसाह जांहांगीर दीवी रु० ६७५००)
१ मेड़तौ संमत १६८० रा भादवा वदि ९ परवेज दीयौ रु० २०००००)
१ जळगांव षेराड़[१] रौ संमत १६८१ रा काती सुदि १६ रु० १७८०००)

इतरी ठौड़ राजा सुरजसिंघ रै मरणै ऊतरी—

१ फळोधी राः सबळसिंघ सुरजसिंघोत नुं दीवी। पछै संबत १६७९ रा पातसाहा जाहांगीर षुरम वांसै अजमेर आयौ तद राः सबळसिंघ नायौ[1] तरै फेर राजाजी नुं दीवी।

१ जाळोर संमत १६७६ रा गावस[२] मारी था।[2] साहजादो षुरम नुं हुओः षुरम राजा भींव अमरावत नुं दीयौं। पछै संमत १६७७ रा फागुण माहे राजाजी नुं दिषण में[3] षुरम हीज दीयौ।

१ सांचोर संमत १६७९ रा भादुवा माहे माडवा थी षुरम देस नुं वीदा कियौ।[३]

१ मेड़तौ संमत १६७६ घासमारी था साहजादै षुरम नुं हुओ। करोड़ी पोजौ हाजी ईतबार नुं आयौ नै मीरसफा नुं आयौ। अमोन अवु वरस २ अवुदपल[४] परगनौ रहौ। पछै मेड़तौ साहाजादे जागीरदारां नुं वांट दीयौ।

२०४ कसवे मेड़तौ राजा भींव अमरावत नुं।

१७२. टीकै हुआं पछै राजाजी मुजरौ कीयौ, तिण ऊपरां वधारौ हुवौ। संमत १६७६ रा आसोज में राजाजी टीकै वैठा। पछै दीपणीया सूवा रा लोग ऊपर चढ आया। सारा हींदू तुरक कोट माहे पैठा।[४] राजाजी डेरा छांडीया नहीं। दिपणी घोड़ा हजार ३०,००० सुं राजाजी रा डेरा ऊपर चढ आया। राजाजी डणां सुं डेरा वारै नीसर चढ ऊभा रहा। वेढ कीवी। पोहोर २ लड़ाई हुई, दिपणी पिस परा

१. दराड़। २. घास। ३. वद दियो। ४. अवदायत।

1. नहीं आया। 2. घासमारी (चराई) की आमदनी से। 3. दक्षिण में रहते

गया।[1] मदत तिण बेळां किणी न कीवी। नबाब षांनषांनौ सारा वेडा[१] हुता इणरौ वीगड़ीयौं कुंही नहीं। सारां री षवरदार बीच नायक वाड़ी फिरता था। पोहोर २ पछै सारा उमराव आया तठै दळथंभण नांव पायौ।[2] तठा संमत १६७७ रा वैसाष माहे साहजादो खुरम दिषण रै सूवे आयौ। पछै साहजादाजी नुं श्री माहाराजाजी मोहलो दियौ। तरै संवत १६७७ रा बैसाख माहे हजारी जात हजार असवार ईजाफे कीयौ, तिण दिन परगनौ जाळोर रौ दियौ। भाः गोपाळदास आसावत मुः जैमल हाकम परगनां रा कीया रु० २८७७५८) तठा पछै संमत १६७८ रा फागुण माहे साहाजादै पुरम बोजपुर साहाजादा पुसरू नुं मारियौ आप फिरण रीकी, आप ब्रीहनपुर सु मांडवै आया। राजाजी तीमरणी था, तठा पछै मांडवै तेड़ नै दिलासा कीवी। देस री सीष देणी मांडी। तरै राजाजी साहजादाजी सुं अरज कीवी मो नुं जाळोर साहजांहजी इनायत कीवी छै। पिण ऊहा ठौड़ सांचोर विगर रस पड़ै न छै।[3] दोनुं ठौड़ एकण जायगां हुवै तौ परगनौ सझ आवै।[4] तरै संवत १६७९ रा भादुवा माहे सांचोर दे नै विदा कीया, देस नुं। भादवा सुदि १० जोधपुर आया। संमत १६७९ रा मंगसर माहे कुंवर अमरसिंघ उदैपुर परणीया। संमत १६७९ रा चैत में जोधपुर भागौ। संमत १६७९ श्री पातसाह जांहांगीर नुं वैसाष में चाटसु कन्है मिळीया, रु० ६४०००)।

१७३. संमत १६७९ माहै साहजादो पुरम पातसाह सुं फिरीयौ, चढ़ ऊपर आयौ। महाबतपांन पातसाह जांहांगीर नुं घणौ बळ वधायौ। वेढ कीवी। राजा विक्रमादीत वांभण माराणौ। पुरम भागौ। पुरत्र थी साहिजादो परवेज वुलायौ। पातसाह अजमेर आयौ। राजाजी चाटसु कनै पांवां लागा, साथे हुवा थका अजमेर आया। परवेज नुं

१. बेढ़ा।

1. हार खा कर चले गये। 2. उपाधि मिली (शत्रु-दल को रोकने वाला)। 3. पल्ले में नहीं आती, पूरा लाभ उठाया नहीं जा सकता। 4. ठीक बन्दोबस्त हो।

वली अहदी[1] कीयौ। माहाबतषांन नुं सारी मदार दे परवेज रै मुंहडै आगै देसां री हींदू ताबीन दे षुरम बांसै[1] विदा कीयौ। तद नबाब माहाबतषांन राजाजी री घणी सुपारस कर नै हजारी जात हजार असवार ईजाफे करायौ। परवेज साथे लीया, तिण माहे परगनौ फळोधी रौ। रा: सबळसिंघ अजमेर नहीं आयौ तरै फळोधी रूपीया ६७५००) री रेष में दीवी। बीजी तलब रही।

१७४. संबत १६८० राजाजी साहिजादौ परवेज माहाबतषांन री ताबीन छै। अजमेर रै सूबै सारा परगना परवेज री जागीर माहे हुवा छै। सु मेड़तौ परवेज री जागीर माहे हुवौ छै। सु मेड़तौ सैदां नै देवण रौ डोळ हुवै छै।[2] पछै राजाजी माहाबतषांन बीच राजसिंघजी नुं फेर नै अरज कराई–इतरा दिन म्हे मेड़ता री ऊमेद माथै राजा सुरजसिंघ री[2] जमीयत राषी थी हमैं मेड़तौ थे किणी ही और नुं देवौ छौ तौ माहारी जमीयत सारी परी जावै छै। तरै नबाब ही दीठौ आज इणां नुं दलगीर[3] करणा नहीं। तरै बाई मनभावती[3] परवेज नुं परणावणी बात कबूल करनै मेड़तौ संमत १६८० रै सांवण माहे परवेज आपरी तरफ आपरी जागीरी माहे दीन्हौ। दरगाह मनसप माहे लिषाणौ नहीं। संमत १६८० रा भादुवा वदि ८ राठौड़ कान्ह षींवावत नै भंडारी लूणौ मेड़तै आया, अमल कीयौ। परवेज रा आदमी था सु परा गया। रूपीया २०००००)।

१७५. संमत १६८१ रा काती सुदि १५ टुस नदी ऊपर साहजादे परवेज नुं षुरम लड़ाई हुई। राजाजी नुं हरौळ कीया था, फते पाई। राजा भींव मारीयौ। मुजरौ हुवौ तरै हजार असवार रौ ईजाफौ हुवौ। इण वधारै पांच हजारी जात पांच हजार असवार पूरा हुवा। तिण में दिषण रौ जळगांव बरड़[4] री पायौ। व्रौहानपुर सुं कोस ३० छै, रू: १७८०००)। भाटी सिंघ रूपसीवोत फौजदार थौ।

---

१. हद। २. सारी। ३. मीनमावती (प्र.)। ४. बराड़े।

---

1. पीछे। 2. परिस्थिति बन गई। 3. नाराज।

१७६. [[1]समत १६८२ माहाबतषांन नुं षुरासांणीये रै भषायां[1] ब्रिहन-पुर सुं तागीर कीयौ। हजूर बुलायौ, उठै फिदाईषांन भेजीयौ। सारा उमरावां नुं परवेज नुं फरमांन हुवौ–कोई इणां साथे मत आवौ। अेक बार तौ परवेज और सारे उमरावे डेरा बारै माहाबतषांन साथे कीया था। राजाजी तौ आपरी हवेली बैठा रहा। पछै फिदाईषांन सारां नुं समझाया पण को मांनै नहीं। पछै राजाजी रहा, तरै सारा रहा। पिण फिदाईषांन नुं राजाजी कहै–म्है पातसाहजी रा हुकम सुं थांरै कहै रहीस[2] पिण माहाबतषांन दरगाह जाय छै उठे जाय म्हांरी बंदगीई करसी तरै फीदाईषांन कहौ–मो साथे राः राजसिंघ भेज देषौ। थांहारौ किसड़ौ मुजरौ करू छूं। माहाब्रतषांन पिण चालीया फिदाईषांन राजसिंघजी इलगार दरगाह गया। उठे फिदाईषांन घणौ राजाजी रौ मुजरौ कीयौ। तिण दिन पातसाहजी रै कचेड़ो दीवान षोजो अवलहुसेन छै सो राजाजी सुं षुणस राषे छै।[3] सु उणे जागीरी रौ हिसाब कीयौ। तठै मेड़तौ जागीर माहे मंडीयौ नहीं, कहौ–औ माहाब्रतषान थांनुं हीमायत कर दीरायौ थौ, दरगाही मनसप माहै दीयौ नहीं। षालसे मंडीयौ। पछै पातसाहजी सुं फिदाईषांन अरज की। अे तो ईजाफे रा ऊमेदवार था सारा उमराव ऊठे साहजादा सुधा[4] आवता हुता, इण रहतां सारा रहा। तठै साम्हो मेड़तौ तागीर करौ। तरे पातसाहजी आप बजद होय मेड़तौ फेर दीरायौ। तरै अवलहूसेन अरज की–रूपीया २०००००) माहै मेड़तौ इण नुं दीयौ छै, रूपीया ४०००००) ऊपजतां री ठौड़ छै। पछै पातसाहजी आप राजसिंघजी नुं फुरमायौ–कूं तो षोजा री रवा राषौ[5]। तरै दांम २०००००० मेड़ता ऊपर ईजाफे कीया। तद सुं रूपीया २५००००)।

१७७. माहाबतषांन नजीक आयौ, तरै राः राजसिंघजी पातसाहजी सुं ऊतावळ[6] कर विदा हुवा, संमत १६९२ जोधपुर आया।

---

१. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. दिलाने से। 2. रहूंगा। 3. दुर्भाव रखता था। 4. सहित। 5. कुछ तो खोजा की भी बात रखो। 6. जल्दबाजी।

परगनौ जळगांव दिषण में ब्रिहानपुर था कोस ३० बराड़ में रूपीया १७८६२९) भगसिंघ रूपसोयोत पटी ६ राजा सूरजसिंघ भुरटोया नुं दीराई थी, पण दी नहीं, तितरै नागोर हीज ऊतरीया।

१ भदोणो १ ईदाणों १ लाडणु १ सडालो १ परड़ोद १ जाषोड़ो।

१७८. संमत १६८३ रा माहा बद ४ मंगलवार कंवर जसवंतसिंघ रौ जनम ब्रिहानपुर हुवौ।

संमत १६८३ रा काती में परवेज मुवौ। माहाबतषांन नै पातसाह जांहांगीर विरस हुवौ।[1] माहाबतषांन नीसरीयौ, वांसे फौज बड़गुजर आंणी। राव आगा नुं विदा हुवौ। ऊकीले भगवान साजस कर नै कंवर अमरसिंघ राः राजसिंघ इण फौज साथे असवार १५०० ले हुवा। संमत १६८३ माह मास माहे षांनषाना नबाब री तागीर पायौ। मुः रामौ हाकम कर मेलीयौ। कंवर अमरसिंघजी राः गजसिंघजी अै देवळीया सुं अणी राव आगा कनै सीष कर आया। उठे अेक वार मुः जैमल नुं राष आया। पछै राः माधौदास पूरणमलोत साः सुषमल उठे मेलीया। मुः जैमल उरौ आयौ पछै मदनसोर परे लषमड़ी गांव षनाजंगी हुई।[2] राः माधौदास पूरणमलोत कांम आयौ।

१७९. कंवर अमरसिंघ राः राजसिंघ घरे आयां री षबर दरगाह हुई। तरै नागोर री पटी ६ राजा सूरसिंघ बीकानेरीया नुं दी। संमत १६८४ काती वद १३ माहे पातसाहा जांहांगीर फौत हुआ। जुनेर था साहजादा माहावतषांन हींदुसथांन नुं आया। अजमेर आवतां पेहली महावतषांन पातसाह साहजहां सुं मालम कीयौ—जु राजा गजसिंघ म्हांरौ माथौ वाढ़ण रे वासतै नागोर लियौ हुतौ सु हूं पाऊं। सु पातसाहाजी माहवतषांन नुं फुरमांन कर दीयौ जु अजमेर साहजहां आवत पेहली[3] माहवतषांन रा आदमी आया, पोस माहे अमल कीयौ।

१८०. साहजहां अेक वार तौ ऊदैपुर आयौ । रांणौ करन मिळीयौ, साथे कूच हुवौ । तरै कंवर जगतसिंघ भेजीयौ, साहजहां अजमेर आयौ । पछै दिन २ अजमेर रह नै साहजहां रीणथंबर[1] री पाषती[2] होय आगरै आयौ । संमत १६८४ रा माह माहे तषत बेठौ । साहजांह जुनेर थी ब्रोहनपुर जीमणो[3] में हुय गुजरात सुं ईडर में होय उदैपुर आयौ ।

१८१. श्री माहाराजाजी और ही हिंदू नबाबषांन जह कनाह पातसाह जांहगीर रै मरण सीष कर घरे ऊठ आया । राव सकतसिंघ री बेटी लीलावती बाई जुनेर साहजहां कनें हुती, तिण बाई लीलावती नुं पातसाह साहजहां श्रीजी री दोलासा[4] करण मेली सु अेकण तरफ श्रीजी जोधपुर आण चौगान डेरा कीया । अेकण तरफ चौगान डेरै बाई आई । सिरपाव १ बींटी २ पातसाह साहजहां श्रीजी नुं मेलीया था सु दीया । मन री गलाण[5] मेटण री वात कुहाड़ी थी सु कही । पातर जमे हुई, बाई नुं तो सीख दीवी । आप दिन ८ जोधपुर रहा । आठवें दिन कूच कीयौ माह सुद ५ लापोळाई की, सारौ साथ भेळौ कीयौ । राः राजसिंघ महेसदास राः प्रिथीराज बलुवोत राः भींव कल्याणदासोत और ही सारा राठौड़ भेळा हुवा । उठा थी ईलगार षड़ीया कोस २० री मजल कीवी । फागुण वद १३ जाय डहरा रै बाग डेरा कीया । फागुण बद ४ बुध आगरे पातसाहजी रै पांवे लागण गया । रजु बाहदर सांमौ आयौ । कहौ–उमराव १०० सुं कटेहड़ा[6] माहे आवौ । पछै जाय मुलाजमती की, बोहत दिलासा कीवी । घोड़ौ सिरपाव हाथी दे, डेरा नुं विदा कीया । दिन ९ डेहरा रया । गहरा पछै हिमें आ हवेली दी अठै आप रहा ।

राजा गजसिंह रै वार री बात

संमत १६७९ रा काती सुद १२ कछवाई सुरजदे आंबेर परणीया ।

1. रणथंभोर । 2. पास से । 3. दाहिना । 4. आश्वासन देने के लिए ।
5 ग्लानि, वहम । 6. दरबार में खड़े रहने का स्थान विशेष ।

१८२. संमत १६७६ रा मंगसर सुद ५ राः भगवानदास वाघोत नुं राः आसकरन देवीदासोत था बगड़ी तागीर कीवी । साहजादो षुरम दिषण नुं जातौ हुतौ । चांदा रो घाटी कनै ऊंट १७ षासे जवाहर रा चागवोर बारा धीनड़ा ले गया । माल पारपषे ले गया । तिण रै तलास रै वासतै साहजादे आपरै इतबारी चाकर उमराव मेहमद मुराद बधनोर नुं बिदा कीयौ । अजमेर रौ सोबायत नुं फरमांन हुवौ–औ कहै सु कांम सरभरा[1] कर देजौ । पाषती जागीरदारां सारां नुं फरमांन कीयौ । मेहमद मुराद बुलावै तठै आय हाजर हूजौ । तद राणां बधनोर छै । मेहमद मुराद बधनोर आयौ । सारा परगना रा जागीरदार कांमदार घरे था तिणां नै तेड़ाय लोया । आप बधनोर था पाटण, बधनोर था कोस ३ बोरवात छै तठै आंण डेरी कीयौ । मांणस हजार ४००० भेळा कीया । तिण में पंवार सादूळ मालदेवोत राः नरसिंघदास भोपतोत, मसुदा रौ जागीरदार राव सकतसिंघ रा बेटा पोतां रा सारा भेळा कीया । ठौड़-ठौड़ रा सुनार पाषती रा सेहरां रा पकड़ मंगया छै । माल रौ तलास करै छै । वांसा थी[2] साहजादाजी सुं किणहीक मालम कीयौ, कांबो अबु मेड़ते बरस २ रहौ छै, उठा रौ वाकप[3] छै । तरै अबु नुं पण मेहमद मुराद कनै भेळौ फरमांन हुवौ, थांनै अबु भेळा होय तलास करजो । अबु पण पाटण आयौ । मेमद मुराद अबु भेळा हुआ आगे मेमद मुराद पंवार सादूळ राः नरसिंघदास रौ कायदौ मुलायजो कोई न करतौ, अळधा बैसांणता । पछै अबु समझायौ, कहौ–औ इण तरफ वडा आदमी फैमदार[4] छै । इणां सु आंपणौ कांम आषर कर देसी । तठा पछै इणां री आदर भाव विसेक[5] कीयौ । जैतारण था भाः मांनौ आयौ । अवु नुं मेहमद मुराद कहौ–राजा रा लोग सुं थे असनाव[6] छौ । इणां री रदळ-बदळ[7] थे करौ । पछै राजाजी रा देस रा सुनार पकड़ीया था सो अवु रै हवालै कीया । भाः मांना नुं पण कहौ–राजा भींव सीसोदीया नुं मेड़तौ जागीरी में छै कुं उठे परगना माहे

1. सत्कार आदि । 2. पीछे से । 3. जानकार । 4. विश्वस्त । 5. विशेष । 6 परिचित । 7. बातचीत ।

बाकी छै सु तफसील करी नै राजा री लोग छै सु थे साथे ले जावौ । रूपीया २५००) तथा ३०००) रौ माल इणां रै मुलक माहे आयौ छै, सु थे राज रा देस रौ लोग साथे ले जावौ, उण माल री जांणौ सु तलास करजौ । पछै अबु भा: मांनौ और ही सुनार रोकीया था तिणां नुं ले नै मेड़तै आयौ । मालगढ में डेरौ कीयौ । भा: मांना सुं रद-बदळ कर नै रूपीया २००००) चांग मांनपुरा रै वित[1] रा कीया । तिण री षत लिषाय लीयौ । मास १ माहे भरण रौ वादो कीयौ । मास १ हुवौ तरै भा: मांना कनै अबु आदमी भेजीया—पईसा लावौ । तरै मांनौ कहै—पईसा तौ म्हां कनै कोई न छै, म्हे माहाराजाजी नुं लिषीयौ छै, पाछौ जाब आयां पईसां रौ सुल हुसी ।[2] अबु ने अवणत[3] हुई तिण दिन देसरा कांम री मदार रा: किसनसिंघ षींवावत पा: राघवदास ऊपर छै । सु अै ठाकुर पण आय जैतारण रहा छै । भा: मांना कनै अबु घणा ही आदमी मेड़ता रा सी: पंचाइण भटारक मेलीया, पइसां रौ सुल हुय ना आयौ । तरै अेक वार तौ भा: मांना रौ बेटौ सोढौ भावी लटण गयौ[4] थौ तठै असवार २०० मेलीया हुता । पण तठा पेहली मेड़ता था मांना रै सगे आदमी मेलीया । सोढौ तौ पैदल नोसर गयौ, हुवै षाली पड़ी । तठा पछै अबु असवार चाढ नै नीबोळ रा बोहरा पकड़ीया । आ षबर जैतारण आई । रा: किसनसिंह षींवावत निपट ऊतावळे[5] चढीयौ । साथ कितराक नुं षबर हुई नहीं, किसनसिंघ इण भांत चढीयौ । वळुंदा री पाषती नीसरीया तरै पा: राघवदास रा: रांमदासजी नुं षबर मेली रा: रांमदास, घघवाड़ीयौ माधौदास आय भेळा हुवा । कितरोक साथ ऊमरावां रौ आय भेळौ हुवौ । मुगदड़े आवतां अबु नुं आपड़ीयौ ।[6] तठं अबु ही फिर ऊभौ रहौ ।[7] तठै वेढ संमत १६७८ रा जेठ सुद ६ हुई । तठं इतरौ साथ म्हाराजाजी रौ कांम आयौ—

१ रा: रांमदास चांदावत ।

---

1. मदेती । 2. पता लगेगा, व्यवस्था होगी । 3. अनबन । 4. कर वसूल करने गया । 5. बड़ी शीघ्रता से । 6. पकड़ा । 7. मुकाबला करने के लिए सम्मुख डटा ।

१ रा: नराइणदास कलावत ।
१ चारण माधौदास चोंडावत घधवाड़ियौ ।
१ सम्रार षंगार ।
१ रा: किसनसिंघ षींवावत ।
१ रा: जैतसिंघ सूरसिंघ रांमदासोत ।
१ रा: सूजौ हरदासोत सिवराजोत ।

जणा आठ ८ राजपूतां रा चाकर]

इतरा साथ रै घाव लागा—

१ रा: गोपाळदास सुंदरदासोत ।[1]
१ रा: राजसिंघ सांवळदासोत ।
१ मु रांमौ किसनावत ।
१ रा:[2] गोपाळदास आसावत ।[3]
१ पंचोळी राघोदास ।
१ रजपूत जणा १० ।

१८३. अबु रा मांणस १५ तथा २० मुवा ।[1] अबु रौ भतोज लोदीषां बाहावदी री बेटौ सिरदार कांम आयौ । एक घाव अबु रै हाथ रै सहेलयौ थौ । अबु आपरा री लोथां समाह[2] नै चालतौ हुऔ । मालगढ पैठौ । रावळौ साथ वांसा थी आयौ सु आय इण ऊपर ऊभा रहा । कांम आया तिण नुं दाग दीयौ । बीजौ साथ लोहां थौ[3] सु साथे थौ, तिणां नुं डोळी मैं घाल ऊपाड़ीयौ, जैतारण ले गया । अबु दिन ८ मेड़तै मालकोट में रहा । पछै का: अजमेर था पंवार सादूळ साथे मेलीयौ । मेड़ता थी कुंवर किसनसिंघ भींवोत असवार २०० साथे हुवौ सु वुधवाड़ा सुधा पोंहौचाय नै किसनसिंघ उरौ आयौ । दिन ४ अबु अजमेर रही नै आपरै घर मेरठ पुरव माहे छै तठी गयौ ।

१. सूरदासोत । २. ना: । ३. इसके पहले-वेणीदास पूरणमलोत ।

1. मारे गये । 2. संभाल कर । 3. घायल था ।

पछै संमत १६८२ फाजल मुहमद राः जगतसिंघ राः सुजांणसिंघ राईसिंघोत राः सुंदरदास ही घणा मेड़तीया राजा गजसिंघ रा चाकर सारा साथे हुता नै सिरदार ३ राजाजी री हजूर रहा। राः राजसिंघ विसनदासोत, राः गोपाळ सुंदरदासोत राः आसकरन मांनसिंघोत अेह साथे भेळा हुता। अवु रौ बेटौ परगना नुं वहतै लसकर विदा कीया था, माडवै परा सुं इण रा हेरा[1] लागा[2] था, सु फाजलषांन नुं मारीयौ।

१८४. १६८४ रा माह सुदि १० साहजहां पातसाह तषत बैठौ। राजा गजसिंघजी आगरै हजूर छै। तिण समै पंवार भोमीया षनवा पचुना कन्है भोमीया रहै, आगरै री गिरद नीवाई रौं वोगाड़ करै[2] छै। तिण री फरियाद सोबाइत आगरै कोवी। तरै उणां ऊपरै बिदा कीया। सीरदार षांन मुगल सिरदार कीयौ। राजाजो नुं कहौ–असवार ५०० थांहारा महेसदास सुरजमलोत नुं भेजौ। तरै राजाजी कहौ–महेसदास इण भांत रौ नहीं।[3] राः भगवानदास वाघोत पांचली[2] बलु नुं घणौ साथ साथे दे नै विदा कीया। राः भगवानदास वाघोत नुं पातसाहजी री हजूर ले गया। हाडा राव रतन रा बेटौ माधौसिंघ नुं राव री साथ घणा हाडा दे नै विदा किया।

१८५. संमत १६८४ आसाढ वदि ८ गढ़ जाय लागा नै पंवारां पिण गढ़ी झाली।[4] गांव पहली लगाय दीयौ।[5] सिरदार षांन ऊतावळ कीवो, राठौड़ हाडा कहौ–सुसतेरा हुवौ।[6] आग वळवळ[7] वुझण देवौं। पिण उहै वात मानै नहीं। तरै साथ राठौड़ हाडा ऊरड़ीयौ[8] सु एकण कांनी आग हुई, नै एकण कांनी प्रौळ रै मुंहडै पंवार आया। तरै इतरौ साथ कांम आयौ, तिण री विगत—

---

१. हेला। २. रा.।

---

1. पीछे लगे थे। 2. नुकसान करते है। 3. इस कार्य के उपयुक्त नहीं। 4. सुरक्षित स्थान पकड़ लिये। 5. जला दिया। 6. कुछ विलंब करो। 7. चारों तरफ, इधर-उधर। 8. एकाएक अंदर घुसा।

१ राः भगवानदास वाघोत ।

१ राः साहबषांन केसोदासोत ।

१ भाटी[1] नरहरदास भांनीदासोत ।

१ राः भगवानदास सुरतांणोत ।

१ राः स्यामसिंघ जसवंतोत ।

१ राः नरहरदास कलावत ।

१ भीवोत बलु मेघराजोत ।

१ तोडर[2] गोरावत ।

१ राः गोकळ विसनदासोत ।

१ राः सुंदरदास नराइणदासोत ।

१ राः आसकरन नींबावत ।

१ षीची गोइंद रांमदासोत ।

[[3]राः उदैकरन कुंभकरणोत घावे लागा ऊपड़ीया, निपट भली हुवी ।

हाडां रा आदमी ६० तथा ८० डील कांम आया ।

१८६. इतरौ साथ कांम आयौ, पंवारां री गढी युंहीज रही। गांव बळ बुझीयौ । पछै पाः बलु सारा साथ ले, गढी ऊपर जाय भेळी । पंवार चचा वचा सुधा[2] सारा मारीया ।

१८७. संमत १६६३ रै काती सुद १५ परगनै जाळोर रै राः किसनसिंघ जसवंतोत कांम आयौ ।

१८८. परगनै जाळोर राः कीसनसिंघ जसवंतोत भाः जगनाथ लुणावत नुं हजूर था परगनै मेलीया । जाळोर रै देस देवल बणवीर धारावत वडौ भोमीयौ छै सु गांव ४० अेक बेठौ षाय, चाकरी न करै । राः किसनसिंघ, भाः जगनाथ भीनमाल आयौ । वणवीर सुं कहाव कीयौ ।[3] वणवीर घणा साथ रौ धणी उतन माहे सुधा लोहीयांण सारीषा वांका

---

१. रा. । २. प. तोडर । ३. 'ख' प्रति का अंश है ।

---

1. लूट ली । 2. बाल बच्चों सहित । 3. कहासुनी की ।

भाषर[1] छै। देवड़ौ चांदौ प्रिथीराजोत पण देवल पैली आंण चौषळै राषीया छै सु चांदो अठै बेठौ बीभोग सीरोही रौ दांण[2] आधौ लेसुं। राव अषैराज राजसिंघोत पण इण सु बळै छै।[3] वणवीर भीनमाळ आदमी ४०० नगारौ वजावतौ आयौ। इणां सुं मोळीयौ। घणौ-सो आदर भाव कोई कीयौ नहीं पछै बणवीर विगर मिळीयौ परौ ऊठ गयो। इणां उणां माहोमाय[4] अवणत हुई। तरै राव अषैराज नै किसनसिंघ अेकौ कर[5] भेळा होय जाय लोहीयांण री तळेहटी मांणस ४००० सुं ऊतरीया। देवल बणवीर देवड़ै चांदे भाषर झालीया।[6]

१८९. अेकण दिन श्री म्हाराजाजी रौ साथ राः किसनसिंघ चोकी गया था, उठै बाज उड़ावता था तठै देवल रै साथ आय टींच मांडी[7] साथ देठाळै हुवौ, आ षवर डेरै पोंहती। भाः जगनाथ राव अषैराज वेहूं चढ़ आया। उणे भाषर री षंभ तिरकारी करणी मांडी। उवे चालता गया इणां वांसौ कीयौ।[8] कोस चार गया तितरै दिन आथवण लागौ। तरै उठे रै भोमीये कह्यौ—ठौड़ अेकण भांत री छै, बणविर चांदो भाषर थी ऊतरीया छै, वळतां सु अवस मांमलौ करसी। इणां पाछा वाळीया[9] संजा वेळा हुई। वे वांसा लागा, साथ आप आपरै मतै हुवौ। रात पड़ी युं वे हाथुके[10] आया। इणां नीसरतै किण ही री षवर राषी नहीं। राः किसनसिंघ आप आवतौ थौ तठै मांमलौ हुवौ तरै राः किसनसिंघ इतरा साथ सुं कांम आयौ—

१ राः किसनसिंघ जसवंतोत।
१ सांषलौ गोपी परवतोत।
१ राः करन भावादसोत।
१ सांपलौ जगनाथ धारावत।

१९०. राव री ही साथ आदमी कांम आया। श्रीजी रौ साथ राव रौ साय घणौ घायल हुवा। सको[11] वुरै हवाल डेरै आया। तरै राः

1. विकट पहाड़। 2. कर। 3. जलता है। 4. बीच में। 5. एकता करके। 6. पहाड़ों में शरण ली। 7. खटपट की। 8. पीछा किया। 9. वापिस मुड़े। 10. पास ही। 11. सभी लोग।

किसनसिंघ री षबर ही नहीं । राव जांणै मारवाड़ रा भेळौ छै । राजाजी रा चाकर जांणै राव भेळौ छै । किसनसिंघ डेरां नहीं आयौ। तरै सगळै मुंहडा वीगाड़ीया[1], तरै किणहीक कह्यौ–किसनसिंघ नै तणवर रै साथ फलांणी ठौड़ मांमलौ हुतौ तरै म्हे पाषती होय नीसरीया । तरै सारां जांणीयौ–किसनसिंघ कांम आयौ । तरै डेरा मांहे भाट चारण उणा देसरा था सु षबर करण मेलीया । तिके उठे जाय षबर लाया किसनसिंघ फलांणी ठौड़ पड़ीयौ छै। पछै संवारे दाग हुवौ । अेक वार तो डेरा उठा थी ऊपाड़[3] कोस पाछा कीया । पछै जोधपुर था साथ सीः सुषमल मेळीयौ । सोझत रौ साथ ले राः जसवंत सादुळोत राः अमरौ आसकरणोत दूजा ही आया । राव पिण सारौ सीरोही साथ भेळौ कर नै पाछा लेयांणे आय लागा । भाषरे घिरीयौ सासता ढोवा मांडीया ।[4] सीरोहे सीसोदीये परबतसिंघ दे रामे भैरवोत घणौ कस कीयौ । बणवीर पण जांणीयौ म्हारै सबळी[5] ठौड़ सुं वैर लागौ ।[6] पछै सोरोहीये बणवीर बीच आदमी फेरीया । कह्यौ–तूं मिळ, राः किसनसिंघ रा बेटां नुं परणाये। बणवीर पण दीठौ म्हां सुं धरती छूटी, मो जीवतां वैर भागै छै तौ आछौ । पांच पांवडा ठाकुरां रा बोल ले[7] मिल्युं । ऊं करतां बोल गया, मोनुं मारीयौ तौ पण भला । पछै धरती म्हारा वेटां भायां नुं रहसी । पछै वणवीर मिलण री वात कबूल कीवी । देवड़ै चांदै घणा ही वरजीया । सीः परवतसिंघ देवड़ा रामा चीवा करमसी रै बोल आदमी १५, तथा २० आया । पछै राः जसवंत रै डेरै मिलण नुं आंणीयौ । उठे लोह वुहा[8] देवल वणवीर धारावळ देवल मेघराज मारीया । मेघराज भलौ प्राक्रम कीयौ । वणवीर मारीयां, लोयाणों वीर रै छोड दीयौ । वेहूं साथ गढ़ जाय नै पछै आप आपरै घरै गया ।

१६१. संमत १६६० रै चैत्र १२ वलोच मुगलषांन समायलषांन रा सरोई तिण परगना फळोधी रा गांव २ कीरड़ा कनै छै, मार नै घणा

1. मुंह विगाड़ने लगे । 2. पास से । 3. उठाकर । 4. लगातार हमले करने लगा । 5. ताकतवर । 6. वैर हुआ । 7. वचन लेकर । 8. शस्त्र चले ।

वित लोया। तिण दिन परगनौ मुः जगनाथ रै हवालै छै, भाः अचळदास सुरतांणोत भाः सकतसिंघ षेतसींघोत थांणेदार छै, सु मुः जगनाथ तौ जोधपुर हुतौ फळौधी रै कोट षबर आई। मुः रूपसी जगनाथ रौ काको वांसै बाहर चढीया, फळोधी था को ४ आसा रा तळाब परै कोस ०॥ जाय पोहता[1]। तठै रावळौ साथ कांम आयौ—

१ भाः सकतसिंघ षेतसीयोत।

१ भाः अचळदास सुरतांणोत, आपरा भायबंद आदमीयां साथे।

१ भाः केसोदास अचळदासोत षीवै गैर चाकर २ कालर, ऊदो, घेरू।

१९२. संमत १६९३ रै आसोज बद ९ बलोच समीयांणी फळोधी रा देस ऊपर हैदरअली मदौ फतैअली आय इणे दोय ठौड़ साथ कर धरती मारी।[2] हैदर कुंडल मार नै घणा वित लूटीया। बरसाळै[3] रा दिन हुता, लोग सारौ बांभण बांणीया षेत गोवल कुल कर रहा था। सु सोनो रूपो राछा-पीछ[4] ऊंठ १५० गायां ५००० ले गया। फळोधी सेहर सुं कोस ०। घाटी छै तठा सुधौं फिर नै वित लीयौ।

१९३. मदौ नै फतैअली पेहली चाणु आया। आदमी १९ राः हरराज रांणोत कांम आयौ। गांव लूटीयौ घणौ वित लीयौ। पछै घंटियाळी ऊपर गया। राः ईसरदास रामसिंघोत भाः भांनीदास ईसरदासोत आदमी कांम आया, घणा वित लूटीया।

१९४. संमत १६९४ रा काती बद १२ ब्लोच मुदाफरषांन मदा रौ वेटौ फळोधी रा गांव ननेऊ ऊपर आयौ। तठै भाः जसवंत सुरजमलोत नै राः दयाळदास जसवंतोत बाप वेटौ आदमीयां सुं मारीया, घणा वित ले गया। तद मुः जगनाथ रै हवालै परगनौ छै। माहाराजाजी श्री गजसिंघजी जोधपुर छै। पातसाहजी दिसा चढण नुं तयारी छै। तद षबर जाय पोहती।

१९५. संवत १६९४ रा काती सुदि ५ मुः नैणसी रै हवालै फळौधी कोवो। तरै काती सुदि १३ नैणसी फळौधो पहौतौ। राजाजी काती

1. पहुंचे। 2. जीतली। 3. वर्षा ऋतु। 4. ओजार आदि।

सुदि जोधपुर सुं असवार दरगाह नुं हुवा । संमत १६९४ रा पोस सुदि ५ मुगलषांन सरोई असवार १४० राव मोहणदास ऊपर वाप[१] आयौ । राव नुं तळाव में घड़ासर पाळ ऊपर हेरीयौ[1] थौ । सु राव रा दिन ऊभा[2] सु रात्र मोहणदास फराकतां जाय[3] नै दांतण कर नै सेवा कर नै गांव रै फळसा माहे पैठा नै बलोच आया । तरै इणां फळसौ आडौ दीयौ ।[4] तीरां री वेढ होण लागी । तरै राव वौठी[२] २ गांव वांसा थी वाड़[३] फाड़ नै फळोधी मेलीया । दिन पहौर चढीयौ नै वोठो फळोधी आया । दिन पोहोर १॥ चढीयां मुः नैणसी नै षबर आण दीवी । नैणसी आदमीयां १० सुं फळोधी था चढीयौ । षीचवद कालर[४] रा गांवां नुं षबर दीवी । नै कीरड़ा कन्है जातां आदमी २० वळे भेळा हुवा । कीरड़ा रै पैलै ढाळ नगारौ दीयौ ।[5] मुगलषांन वाप थी नीसरीयौ । मुः नैंणसी वाप राव भेळौ हुवौ, पूछीयौ—बलोच कठै ? तरै राव कह्यौ—अहै जाय, तितरै उणां जातां थकां वावड़ी दलपत वाळी लगाई । नैणसी राव नुं कह्यौ—हिमैं वांसै षड़ीजे[6], राव कह्यौ—माहरा ही साथ नुं तेड़ा गया छै, नै थांहरै साथ भाटी जोगीदास भैरूंदासोत भाटी हरीसिंघ सकतसिंघोत आया नहीं छै । थे ही डेरौ कर, घोड़ां रा कायजा ढाळौ[7] घोड़ां नै आसुदा[8] करौ । तरै मुः नैणसी तळाव री पाळ ऊतरीयौ, फळोधी रौ साथ आदमी ६० तथा ७० वांसा थी आया । नै मांणस १०० राव रा भेळा हुवा । तरै दिन आथवतां[9] रा चढीया, सु घोड़ा षड़ीया, तीरवां १ गया । तरै जीवणा साल[५] बोलीया ।[10] तरै राव पिण कह्यौ नै औरां पिण कह्यौ—अें सांवण[11] ले नै आघा पड़जे[६] तरै आघा षड़ीया, भला नहीं छै । पोस सुदि ५ री रात तो गांव वाप ही रहा पोस सुदि ६ दिन ऊगत सवा[12] चढीया सु दिन पोहोर १॥ चढीयां नोषै[७] तठै गया । जोवणी तीतर वेळा ५

१. वाय । २. भोठी । ३. वसा वाड़ । ४. कालारी । ५. स्याळ । ६. खड़िया । ७. नोव ।

1. ढूंढा । 2. अच्छे दिन थे । 3. नित्य कर्म से निवट कर । 4. बन्द किया । 5. युद्ध सूचक नगारा बजाया । 6. पीछा करना चाहिए । 7. जीनें उतारो । 8. ताजा । 9. अस्त होते समय । 10. सियार बोले । 11. शकुन । 12. दिन उगते ही ।

वोल्यौ तरै वळे सगळा ठाकुरां कहौ, पोहौर २ अठै रहीजे। तरै नीषै ऊतरीया। दाणौ-षाणौ कीयौ। राः वरसळ थळेचौ राः किसनौ ईसरदासोत और ही साथ आय पहौंतौ। मांणस १५० राजाजी रा छै, मांणस २०० राव कन्है छै। तीजै पोहौर चढण री तयारी कीवी। वळे सांवण री पाल हुई।[1] तरै रात वळे नोषा रा थळां माहे रहा। तितरै राव रै आदमी २ वीकुंपुर सुं आया तिणां कहौ—मुगलषांन अठा थी असवार १४० कोट आय ऊतरीया। पैली कांनी था आदमी ५०० वांसलौ साथ चढीयौ, पाळौ कोट आय ऊतरीया छै, साथ पूरै पषै छै। थळां मांहि नास जाजौ। दिन ऊगतां संवा वलोच वाप फलोधी नुं आवै छै। अै कागळ[2] राव कनै राजाजी रा साथ कनै आया। कहौ—पैलौ साथ घणौ, नास नै डावा जीवणा थळां[3] माहे पैसां छां। थे पण जाय कोट फळोधी रै पैसौ। राजाजी रै साथ आ वात कवूल नहीं कीवी। कहौ—म्हे अठारा नाठा कठै जावां? संवारे वलोचां उपर विकुंपुर जासां। माहरौ सिरजीयौ[4] छै सु हुसी। तरै राव हीज ठंवीया। रात आधी गई तरै राव मनोहरदास रा ओठी[5] २ आया, कहौ—रावळजी आया नै थांनु कहै छै थे संवार रा बीकुंपुर आवौ।

१६६. रावळजी पिण कोट आया छै। सु राव मोहणदास नैणसी रावळ रा आदमीयां नुं रोटी बुवाड़ नै तुरत सीष दीवी। नै ओठी २ दूजा पिण साथे चढीया। राव मोहणदास नै राजाजी रौ साथ विकुंपुर नुं झांझरपा[6] रा चढीया। इणां रा दिन ऊभा। इणां जावतां पहलौ वलोच चढ पड़ीया। अै जाय वीकुंपुर पोहता नै कहौ—वलोच कठै? राव रै चाकर कहौ—दिन ऊगतां सुं पहली टावरीयालै कोहर[7] दिसी गया। तितरै रावळजी कन्है ओठी मेलीया था सु दिन घड़ी ५ चढतां-सै आया। कहौ रावळजी थांनु कहौ छै—भारमलसर आवां छां, थे ही सितात्र भारमलसर आवजौ। पछै तुरत चढीया, दिन पोहर २ चढीयां रावळजी एकण कांन्ही[8] आया। एकण कांन्ही राजाजी री

1. प्रतिकूल शकुन। 2. कागज। 3. रेगिस्तान। 4. जैसा भाग्य में लिखा। 5. शुतर सवार। 6. प्रातःकाल। 7. कुआ। 8. एक तरफ।

साथ आयौ। भारमलसर आय पहौता[1]। रावळजी रै सारौ साथ पगै लागौ। रावळजी उतर नै पूछीयौ राव नुं–मुगलषांन कठै ? तरै राव कहौ–दिन ऊगतां रौ विकूंपुर सुं चढीयौ। राव सुं रावळजी घणौ बुरौ मानीयौ। कहौ–इण उणै नुं षबर देनै काढीयौ छै। तरै राजाजी रै साथ कहौ—राव रै भेद माहे गयौ नहीं छै। रावळजी षातर जमा करौ,[2] राव रावळजी रौ सांमधरमी चाकर छै। तरै रावळजी सुसता पड़ीया। तरै कहौ–उठाही[१] बेगी षबर मंगावौ। तरै राव वोठी[3] २ कटक रै पगै चाढीया। सु कटक देष नै पोस सुदि ७ रात आधी रावळजी री हजूर आया। हकीकत मालूम कीवी। अठा थी कोस ८ अहवाची नदी[२] दिस १ थल[3] १ ऊंचा माथै उतरीयौ छै। सु रावळजी चांद आथंमीयौ तिण हीज वेळां चढीया। रात घड़ी ४ थकां उण रै डेरा री नजीक कोस १ गया। तठै दमदारौ कीयौ[4]। फराकतां साथ गयौ,[5] नै अमल षाधौ। नै जीनसिलै हुती तिणां पहरी नहीं, तिणै गांतरी मारी। आगै रावळजी असवार दौड़ाया था सु षबर लाया। उणां नुं ही उणां रै बाब सु षबर दीवी। सु उहैई लड़ाई री तयारी कीवी छै। रावळजी झालर वेळा[6] था उठा थी षड़ीछाया, सुरज ऊगौ तिण वेळां उठै जाय पहोता। बलोचां रै सहनांई बाजै छै। तरवारीयां काढ नै सरम[४] करै छै। सु सुरज री किरण सुं तरवार झबकै[7] छै। रावळजी आगे फतेषांन बलोच नुं मुगळषांन कन्है मेलीयौ–रावळ आयौ तूं परौ नीसर। तरै उण कहौ–रावळ राजा दोनु आवौ हूं नोसरूं नहीं। थळ ऊंचौ झाल रहौ[8]। तरै रावळ तीन अणियां[9] कीवी। जीमणी वाजू राजाजी रौ साथ नै वीच में आपरी साथ नै डावे वाजू राव रौ साथ कर चालीया[५]। बलोच पिण सांमा ही नांपीया[10] मूठ तीन तीरां री छूटी, सीहड़ देदौ उठै कांम आयौ।

१. दणरी। २. नुहदी। ३. साथल। ४. सुर। ५. चलाया

1. पहुंचे। 2. विश्वास रखो। 3. सुतर सवार। 4. थोड़ा विश्राम किया। 5. नित्य कर्म से निपटा। 6 सूर्य उदय होने के थोड़ा पहले का समय। 7. चमचमाती। 8. ऊंची जगह पर डट गया। 9. फौज के तीन हिस्से किये। 10. सीधा सामना किया।

तीर १ लागौ। तीर १ रावळ रौ टोप फाड़नै निलाड़ रै लागौ। वाग उपाड़ी आदमी १२०। मुगळषांन सिरदार ४ सुं षेत मार लीयौ, वलोच भागा। साथ वांसै दौड़ीयौ कोस ॥ माहे आदमी ५० तथा ६० वलोच्च रा पाड़ीया। रावळजी वांसै रहा। साथ अणी तीन कर वांसै दौड़ीयौ। कोस ८ ताउ गया उठै जाय साथ पांणी तिसीयौ मरै तरै ऊभा रहा।

१६७. वलोच ३०० सारा मार नै रावळजी पहली वेढ़ हुई तठै रिण १ ईयांरी कांनी रौ आय ऊभा रहा, नै रिण देषण नुं भा: देवीदान गोयंदोत नैहवर री कोटवाळ सादूळ मुं. नैणसी नुं साथ देनै मेलीया, रिण सारी सौभायौ।

१६८. [[1]पहली वेढ हुई तठै हीज मुगलषांन पड़ीयौ थौ सु लाधौ। वरसे ३५ तथा ४०, डीघौ[2] गोरौ जवांन हुवौ। पाछौ आंण रावळजी नुं मुगलषांन मारीयां री षवर दी। रावळजी वोहत कुसी हुवा। दिन आथवते[3] रावळ राजाजी रा साथ नुं सीष दी। सु दिन तीन चार हुवा था घणौ धान चून मांणसां नुं रोटी, पुरण[4] नै दांणी-पांणी रन माहे जुड़ीया[5] था सु सारी रात पोस सुद ८ री वड़ीयां दिन पोहर १ चढतां वाप आया। राजाजी रै साथ रै लोगां रै जणा ५ तथा १० रै हळवा-सा[6] लोह था[7]। रावळजी राव रौ ही घणौ को मुवौ नहीं। अेकधारी वुही गई[8]।

महाराजा जसवंतसिंघजी रै समै री वात

१६९. महाराजाधिराज माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी रांणी प्रतापदे रै पेट रौ, सीसोदिया भांण सकतावत रौ दोहीतरौ।

संमत १६८३ रै माह वद ४ रौ जनम। संमत १६९४ रै असाढ़ वद ७ सुक्र आगरै पातसाह साहजहां वड़ी ईजत सूं टीकौ दीयौ।

१. 'ख' प्रति का अंश।

1. तक। 2. लंबा। 3. अस्त होते समय। 4. ऊंट घोड़े आदि। 5. प्राप्त हुए। [6.] हल्के से। 7. घाव। 8. एक रफ्तार से भगाया करते चले गए।

मुनसप टीके बैसतां वार हजारी चार हजारी असवार रौ कीयौ। अै प्रगना जागीरी में पाया—

३४३०००)	जोधपुर		
७५०००)	सीवांणौ		
३५००००)	मेड़तौ		
१५००००)	सोभत	५००००)	संमत १७११ बधीया
६७५००)	फळोधी		
१४०००)	सातलमेर	६०००)	संमत १७०७ बधीया

इतरी ठौड़ तागीर हुई—

जाळोर	रुपीया	२९७५००)
सांचोर	रुपीया	६४५००)

२००. जैतारण ऊपर अेक वार रा: भींव किल्याणदासोत चढावौ कीयौ[1]। कह्यौ–रूपीया १२५०००) राजा गजसिंघ नुं थी, मोनुं रूपीया २५००००) माहे दौ। अेक वार पातसाहजी ही मन धारी थी,[2] पछै रा: राजसिंघ षींवावत अरज पौंहचाई–इण रै बड़ी जमीयत नै हसम[3] रा षरच री मदार जैतारण ऊपर छै। जैतारण किण ही अौर नुं देसी तौ साहबी री बंधेज[4] चूक जासी[5]। पछै रूपीया २०००००) मुकाते करनै राजाजी नुं हीज जैतारण दी। वरस १ रा रूपीया २०००००) दरगाह भराया। पछै संमत १९३५ रा माहा वद ६ में लाहोर सुं देस नै विदा कीया। तरै हजारी जात हजार असवार रौ ईजाफौ हुवौ। तिण में जैतारण रूपीया २५००००) री रेष माहे दी। ५०००० संमत १७११ घटाया।

२०१. संमत १७०२ रै जेठ सुद १३ हजार असवार ईजाफै[6] हुवा तद यौ हिसाव हुवौ–तलव वा मनसव असल पांच हजारी जात पांच

५८००००००) हजार असवार, त्यां मैं अेक हजार दोसपा।

८००००००) ईजाफै हजार असवारां रा।

---

1. कीमत बढ़ाई। 2. इच्छा की थी। 3. फौज। 4. शक्ति। 5. समाप्त हो जायगी। 6. अधिक।

५०५००००० देसरा परगना—

१४३००००० जोधपुर

१४५००००० मेड़ती गजसिंघपुरौ

६०००००० सोभत

१०००००० जैतारण

३०००००० सीवांणौ

२७००००० फळोधी

११७००००० रेवाड़ी

६२२०००००

३८००००० तलब नगदी।

तठा पछै गजसिंघपुरौ पांच लाख दांम में पायौ। संमत १७०३ माह वद ११ वळे पांचसौ असवार ईजाफै हुवा। सेसपा दोसपा तिणां रा दांम ४०००००० वधीया। तद तळब ७८००००० हुई तिण री नकदी।

तठा पछै ईजाफौ हुवौ—

२०२. परगनो जैतारण संमत १६९६ माह वद ६ पातसाहाजी कासमीर नुं असवार हुवा श्री माहाराजा जी नुं देस नुं विदा कीया। हजारी जात हजार असवार ईजाफै करनै जैतारण २५००००) माहे दी। श्री माहाराजा जी हरदवार पधार नै जेठ माहे जोधपुर पधारीया। संमत १६९७ रा पोस वद ५ रा: राजसिंघ षींवावत काळ कीयौ,[1] २५००००)।

२०३. संमत १६९७ रा चैत माहे माहाराजाजी रा: महेसदास सुरजमलोत नुं परधांन कीयौ। रा: महेसदास घणौ साथ राख नै पातसाहजी रै पांवे श्रीजी लाहोर पधारीया। साथ असवार २७०० रौ मोहलो पातसाह जी नुं दीयौ[2]। पातसाहजी बोहत राजी हुवा हजार असवार ईजाफै कीया। तिण री नगदी पायां गया सु वरस ६

---

1. देहान्त हुआ। 2. विशेष सम्मान प्रकट किया।

नकदी पाई। संमत १६९७ वैसाष वद १३ लाष दांम दीठ[1] रूपीया १६६६॥=) मु० ११११) रूपीया पाया, दर माहे।

२०४. संमत १७०१ रै जेठ सुद १३ माहे पातसाह साहजहां परगनो रेवाड़ी रौ दीयौ। साहजहां नांवद ऊरै कोस ३० छै। निपट बड़ी ठौड़ संभर रा मंगर थी नदी साबी परगना माहे आवै छै। सु आधाअेक गांव रेलै छै,[2] तिण सुं रबो सेंवज घणी हुवै। गांवे कुवा पण छै। षुलासा ठौड़ तिका दांम लाष ११७०५००० रूपीया २९२६२५) तिका संमत १७१५ रै वरस पुरब कुरड़ा घाटमपुर था फिर आया। तरै माहा माहे तागीर हुई[3]। सीः प्रिथीमल हाकम हुतौ। पछै राजा जैसिंघ नुं दी।

संमत १७०४ रा चैत सुद ७ पांचसै असवार फेर दोसपा कीया। तद पांच हजार असवार तिण में तीन दोसपा दोय वावरदी हुवा।

२०५. संमत १७०५ रा भादवा माहे हजार असवार ईजाफे हुवा। तिण मैं परगनौ ऊदेही पंचवार रौ हींडवाणा कनारै सोबो आगरै रौ दीयौ। आ ठौड़ षरावे हुती। बरसाळी साष निपट बड़ी ठौड़ परगनै मैं तळाव गांव में निपट घणा। तिणां मोरी छूटै[4] जव चावळ घणा हुवै। कितराहक गांव कुवा छे तठै बाड़ वण हुवै। घण-मेहा[5] निपट वड़ी धरती। विगर मेहां कुवे पांणी को नहीं। दांम ५८००००० तिण रा रूपीया १७००००)। संमत १७०५ बरस आसु माहे सुं ईसरदास भैरवदास श्रीजी मेलीया तिणं आंण अमल कीयौ। पछै संमत १७०५ रा माह सुद ८ पछै मुः ईसरदास मेलीयौ। संमत १७०५ रै वरस रूपीया १२००००) ऊपना[6]। वरस ९ उदेही रही। संमत १७१४ रा भादवा आसु में तागीर हुवी छै। माह री ठोड़ या ठौड़ हुई। तद डणां रा दांम ५८०००० भरपाया, वाकी ५०००००० पाचास ळाप दांम री तळत्र रही। सु नकदी।

---

1. अनुमार। 2. पानी से भरते हैं। 3. जब्त हुई। 4. मोरी खुलने पर। 5. अधिक वर्षा वाले। 6. पैदा हुए।

संमत १७०७ रै वरस दुकाळ पड़ीयौ तरै पताळ भोग[1] लीया, रूपीया ५,१७००)

६६०७) जोधपुर	१३४) फळोधी
११७३२) मेड़तौ	
१६०२१) जैतारण। सोझत।	

संमत १७०५ माह सुद १५ दोय हजार असवार फेर दोसपा हुवा। तिण री भी नकदी पावता। असल ईजाफा समेत पांच हजारी पांच हजार दोसपा। संमत १७०७ काती माहे प्र० पोकरण मारली।

संमत १७०५ रा बैसाष माहे श्री महाराजजी नुं देस नुं विदा कीया, तरै पातसाहजी फुरमांण दीयौ—दांम लाष ६००००० ।

संमत १७०६ रा फागुण सुद १२ हजारी जात ईजाफे हुई तद मनसव हजारी जात पांच हजार असवार दोसपा री ठेहरीयौ।

२०६. संमत १७०६ रा सांवण माहे श्रीजी नुं वधारौ हुवौ। तिण मैं प्र० मलारणौ सूबे अजमेर सिरकार रणथम्भोर रौ दीयौ। सु सांवण सुद ७ माहे श्रीजी फुरमांन मु० नैणसी नुं ऊदेही भेजीयौ। मु. नैणसी फरमांन ले राय परमाणंद कनै मलारणो बरसंत[2] मेह माहे नदी वहतां सांवण सुद ५ गया। जाय मिळीया। राय अमल दोयौ। निपट बडी ठौड़ गांव लागै। षुलासा परगना री धरती कंवळी, बाजरी, जवार, मूंग, मोठ, तिल, कपास, वाड़ घणा हुवै। उनाळी घणै मेह सारै परगनै जव, चिणा, गेहूं हुवै। कुवा परगना माहे घणा को नहीं। नदी १ नीगोह आवै छै। तिण गांव २० तथा २५ रेलै छै[3]। दांम १०००००० माहे दीया। तिण रा रूपीया २५००००)।

संमत १७१२ रै जेठ-असाढ़ माहे जाळोर दी। मलारणौ तागीर कीयौ।

२०७. संमत १७११ हजार असवार फेर ईजाफे कीया, तद छ हजार जात छः हजार असवार, तिण में पांच हजार दोसपा अेक हजार

1. एक प्रकार का कर जो मूल कर से बहुत कम होता था। 2. बरसते हुए। 3. पानी खेतों में जाता है।

वावरदी तिण रा दांम १००००००००० हुवा। संमत १७११ रै काती सुद ५ माहे राणा राजसिंघ रा परगना ४ पातसाह साहजहां तागीर कीया। तरै बधनोर श्रीजी नुं दी। रा: नरहरषान राजसिंघोत नुं अेकवार अमल करण[1] मेलीयौ। पछै मुः आसकरण नुं मेलीयौ। राणा नुं रूपीया १३००००) माहे हुतौ निपट षोटी ठौड़। झाड़ पहाड़ घणौ। धरती माहे भोमीया घणा। षुलास गांव २० छै, धरती बडी। धरती ऊनाळी बरसाळी, बडा षेत। चावळ घाणा गांव हुवे, रूपीया २५००००)।

संमत १७१४ रै बरस बैसाष वद ६ ऊजीणी री बेढ हुई। श्री माहाराजाजी देस माहे पधारीया। संमत १७१७ रा जेठ माहे श्रीजी श्री दरगाह भाः सुंदर नु चलायौ। तिण समै राणा रा परगना फेर राणा नुं सांवण में दीया। तद बधनोर तागीर हुई। मुः भैरवदास कीतावत हाकम थौ। सु आसोज में मेड़तै आयौ।

संमत १७११ भोरूदो ६०००००) में हुवौ। पछै संमत १७१२ रोहतक ६०३००००) हुवौ। पछै संमत १७१४ दांम २८००००० इजाफे हुवा। मु० १३१०००००) में रोहतक।

संमत १७१२ रा काती माहे श्री माहाराजाजी तौ देस माहे हुता नै उठै पं: मनोहरदास सुं दरगाह रदळ-बदल करनै परगनो रोहतक त्रंमो दीयौ। तिण नुं गांव लागै, अेकसपो मुळक लोग मुटमरद[2] गौड़ पराबै। जाहानावाद था कोस ३० मूह माथै कोस १२ छै। पं: हरीदास राघावदासोत हाकम कर मेलीया। हासल अेक वरस रूपीया १५१५००) ऊपना[3]। पण ठौड़ षोटी। पछै संमत १७१४ रा पोस माहे श्रीजी नुं आगरा थी ऊजीण नुं विदा कीया। हजारी जात हजार असवार ईजाफे हुवा।

सात हजारी जात सात हजार असवार मुनसप हुवौ। पांच हजार असवार दोसपा।]

---

1. राज्याधिकार का दस्तूर। 2. घमंड वाले। 3. पैदा हुए।

दोय हजार एक सपा छै। तिण दिन रोहतक छोड़नै' देपाळपुर माळवा रो परगनो लीयो। रोहतक संमत १७१४ रा पोस माहे छांडीयो।

संवत १७१३ रा सांवणु था जाळोर पाई, मलारण री एवज दांम १०००००० । मलारणो तगीर, ११५००००० जाळोर हुई।

२०८. संवत १७१२ रा जेठ माहे राः रतन महेसदासोत थी जाळोर सभी नहीं[1] नै उपजत कुंही नहीं। भूपां मरै। तरै छोड नै रतलांव[2] नोलाई लीवी। तरै पातसाहजी सारी वात रो जांणणहार थो, विचार दीठो–जाळोर जिण ही जागीरदार नुं दीवी तिण रै सूल पड़े नहीं।[3] तरै राजाजी नुं दीवी। फुरमायो–थे जाळोर लो नै मलारणो फिटो करो।[4] श्रीजी अरज की–उठै उपजै कुंही नहीं। जो रतलांव ठोड़ गाढ़ी सासती जमीयत रापी चाहीजे। माहारै हजूर चाकरी कीवी चाहिजे पण पातसाहजी मांड जाळोर दीयो। मुः सुंदरदास जैमलोत रेवाड़ी थी, सु तेड़ नै जाळोर नुं विदा कीयो नै सुंदरदास पहला मीया फरीसत जाय अमल कीयो। संमत १७१२ आ०[2] वदि २ मु० सुंदरदास जाळोर थकै संमत १७१३ रा चेत सुदि १२ सींधलां री पांच कोटी[3] मारीयो। पछै वैसाप वदि ३[4] कंवळा मारीया। सींधल सिरदार २३[5] मारीया। रजपूत ३०० मारीया। सींधल वाघ वीदावत नीसरीयो।

पटी कसबे नागौर सुं हुई—

दांम	रूपीया	आसांमी[6]
३००००००	७५००)	हवली
६४५०००	१६१२५)	प्राः पाटु
३५००००	८७५०)	प्राः परड़ौद

1. 'धोजी' मौर। 2. आसाढ़। 3. पांचोटो। 4. १३। 5. १। 6. क्रम भिन्न है।

1. समुचित व्यवस्था नहीं हो सकी। 2. रतलाम। 3. ठीक नहीं रहती। 4. छोड़ दो।

९४५०००	२३६२५)	प्राः भदाणौ
४५००००	११२५०)	प्राः नौषौ
१२०००००	३००००)	कसबै नागोर
६०००००	१५०००)	प्राः वलदु
१७४००००	४३५००)	प्राः सांडीलौ
१०४६०००	२६१५०)	प्राः लाडणुं
२१०००००	५२५००)	प्राः कुचेरौ

२०९. १७१४ आसु०[१] माहे नागोर पटी ७ सुं हुवौ। पातसाहजी हुकम कर नै मुहमद अमी मुगल नुं मेलीयौ। तठा पछै पटी २ लाडणू भदाणौ वळे पाया। दांम लाष ९३७६ ०० रूपीया २३४४००), पछै संबत १७१४ रा वैसाष माहे श्रीजी नै औरंगजेब बेढ़[1] हुई। राजाजी मारवाड़ पधारीया। पातसाह औरंगजेब तषत लीयौ।[2] राजा जेसिंघ रायसिंघ अमरसिंघोत हजूर आया। तरै राव रायसिंघ नुं पातसाहजी नागौर राजाजी सुं तगीर कर नै[3] दीयौ। तद सिंघवी रायमल मीरजौ मुहमद अमी हाकम था। संमत १७१५ रा सांवण[२] सुदि १० तगीर हुवौ। संमत १७१४ रा पोस वदि ८ श्रीजी नुं पातसाहजी उजीण नुं विदा कीया तरै हजारी जात हजार असवार ईजाफो कीयौ नै रोहतक छांडीयौ तरै इतरी ठौड़ दीवी—

२५००००) उजीण, १८२५००) देपालपुर, ४९७७५) पटी २ नागोर री लाडणू भदाणा री, तागीर राः रामसिंघ री ४९७७५)

[[३]संमत १७१४ रा भादवा सुद १० सोम पातसाह साहजहां नुं असमाध[4] जाहानावाद आई। कातो वद ७ नवाड़े वैस नै आगरा नुं चालीया। मंगसर वद ५ आगरै पोहता[5], पोस वद ७ श्रीजी नुं उजीण नुं विदा कीया, माहा वद १३ उजीण पोहता।

१. आसोज सुद। २. आसाढ़। ३. 'ख' प्रति का अंश।

1. युद्ध। 2. राज्यगद्दी प्राप्त की। 3. जब्त करके। 4. बीमारी। 5. पहुंचे।

संमत १७१५ रै पोस वद ७ माहे उजीण नुं विदा कीया। तद सात हजारी जात सात हजार असवार तिण में असवार हजार पांच दोसपा असवार हजार दोय अेकसपा छै। तिण रा दांम ११००००००० करोड़ इंअांरै। माह सुद १३ उजीणी पधारीया।

तिण री हिसाव—

दांम	रूपीया	आसांमी
१४००००००	३५००००)	जात सात हजारी
९६००००००	२४०००००)	असवार हजार १२००० अेकसपा।

तिण में जागीर—

दांम	रूपीया	आसांमी
१४७२५०००	३६८१२५)	परगनौ जोधपुर
१४००००००	३५००००)	मेड़तौ
८००००००	२०००००)	सौभत
८००००००	२०००००)	जैतारण
३००००००	७५०००)	सीवांणौ
२७०००००	६७५००)	फळोधी
८००००००	२०००००)	पोकरण
११५०००००	२८७५००)	जाळोर
१००००००००	२५००००)	रेवाड़ी
५००००००	१२५००)	गजसिंघपुरौ
९९९६५६६	२४९९१४)	उजीण
७३००००००	१८२५००)	देपाळपुर
९३७६०००	२३४४००)	नागोर री पटी २३२४२५)
१००००००००	२५००००)	ववनोर
१०८९९७५६६	२७४७४३९)	
१०२४३४	२५६१	तलव रही

इतरी ठौड़ श्रीजी बैसाष सुद ७ देस माहे पधारीया संमत १७१५ रै भादवा बद १३ पांवै लागा तिण बीच ऊतरी—

२४६६१४)	उजीण ।
२५००००)	बधनोर ।
१८२५००)	देपालपुर ।
२३४४००)	नागोर । ६३७६००० दांम
९१६८१४	

संमत १७१४ रा बैसाष सुद ७ श्री माहाराजाजी उजीण रो लड़ाई कर नै देस माहे पधारीया, औरंगजेब आगरे दिसा[1] आय धौलपुर लड़ाई दारासाह सुं कीवी। संमत १७१४ रै जेठ सुद ६ दारासाह भागौ। औरंगजेब आगरै गयौ, कोट[2] हाथ आयौ। संमत १७१४ जेठ बद ५ जोधपुर सुं असवार हुवा। जेठ बद ६ मेड़तै पधारीया। वेजयां रै मोहलै डेरा हुवा। जेठ बद १२ मुः नैणसी सुंदरदास नुं देस री हजूर री षिजमत सूंपी। जेठ बद १० थांवळा था असवार हुआ। राः राजसिंघ सुरजमलोत मुः नैणसी मेड़ता नुं विदा कीया। श्रीजी री डेरौ पोकरजी[3] हुवौ। जेठ सुद १३ अजमेर पधारीया। दिन ४० अजमेर रहा। पछै सांवण वदि ६ कूच कीयौ। सांवण वदि ६ कुचील डेरो हुवौ। सांवण वदि ११ सुरसुरै ड़ेरा हुवा। सांवण वदि १२ सांभर डेरौ हुवौ। सांवण सुदि १ सांभर सुं कूच कियौ।

साः सुदि १ भेसलाणै।
साः सुदि ८ सोभांचादर री सराह।
साः सुदि १० रूपा री नागल।
साः सुदि १२ पोहरो।
भाः वदि ३ पारपंदो।
भाः वदि ६ मुसतावाद।

२११. भाः वदि १३ सतलज री नदी ऊपर तोपीसा पातसाहजी सुं

1. तरफ। 2. किला। 3. पुष्कर।

मिळीया। पातसाहजी घणो आदर कियो। इतरो मिळतो दीयो। दिन ५ हजूर रहा पछै भादवा सुदि जहानावाद नुं विदा किया—

भादवा सुद ६ सींहनद।

भादवा सुद १० करनाल।

२११. संमत १७१४ रा भादवा सुदि १० सोमवार पातसाहजी साहजहां नुं असमाय, जाहानावाद आया। काती वदि ७ नवाड़ै वैस नै आगरै नुं चालीया मगसर वदि ५ आगरै पोहोता। पोस वदि ७ श्रीजी नुं उजीण नुं विदा कीया। माह वदि १३ उजीण जाय पहौता। संमत १७१५ रा पोस वदि ७ उजीण नुं विदा कीया तद सात हजारी जात सात हजार असवार तिण में असवार हजार पांच दोसपा नै दोय हजार असवार एकसपा छै तिण रा दांम किरोड़ ११०००००० हुवा, नै माह सुदि १३ उजीण पौहता।

तिण रो हिसाव—

दांम	रुपया	आसांमी
१४०००००००	३५००००)	जात सात हजारी
९६०००००००	२४०००००)	असवार हजार १२००० एकसपा हुवा।
११०००००००००	२७५००००)	

तिण में जागीर री विगत—

दांम	रुपया	आसांमी
१४७२५०००	३६८१२५)	प्रः जोधपुर
१४००००००	३५००००)	मेड़तो
८००००००	२०००००)	सोभत
८००००००	२०००००)	जैतारण
३००००००	७५०००)	सीवांणो
२७०००००	६७५००)	फळोधी
८०००००	२००००)	पोकरण

११५०००००	२८७५००)	जाळोर
१००००००००	२५००००)	रेवाड़ी
९९९६५६६	२४९९१४)	उजीण
७३०००००	१९२५००)	देपाळपुर
१००००००००	२५००००)	वधनौर
९३७६००	२३४२००)	नागोर री पटी

इतरा परगना दीया—

२९०२९६)	नारनोल	१५७७५०)	रोहतक
३२५०००)	केथल	१२९०७९)	मुहमजु
	२०००००)		
१७२५०)	षाड़ो		
९१९३७५			
२७६००००)			

२१२. संमत १७१५ रै भादवा सुद २ श्री पातसाहजी लाहोर नुं पधारीया माहाराजाजी नुं जाहानावाद नुं विदा कीया। पातसाहा लाहोर रै वार रै डेरी कर नै मुल्तान गया। श्रीजी पाछा भादवा सुद ६ सींहनद पधारीया, आसोज बद १ करनाल डेरौ हुवौ। आसोज वद ६ सुन पछै माहे होय आसोज सुद १ जाहानावाद पधारीया।

२१३. तठा पछै मास १ नुं सुलतांन म्हेमद आगरा थी जाहानावाद आयौ। मुजरौ अेक रूप साहाजादे रौ कीयौ। तठा पछै पातसाहजी दिली पधारीया। उठै मुलाजमत कीवी, पातसाहजी उठै हीज रहा। श्रीजी नुं हुकम कियौ—दिन २ ये डेरै जावो पछै माहराजाजी जाहानावाद आप री हवेली आया। पछै कितरैहक दिनों पातसाह जाहानावाद रै कोट दापल हुवौ।[1] पछै कितरैहक दिने तौ श्रीजी मुजरा कीया तठा पछै अेक दिन इतमाम जोर हुवो। तरै श्रीजी नुं किणहीक कह्यौ—दांहां सुं चूक छै।[2] तठा पछै श्रीजी डील री वाहानौ[3] कर नै

1. किले में प्रवेश किया। 2. धोखा है। 3. शारीरिक अस्वस्थता का बहाना।

डेरै वैस रहा ।[1] जाहानावाद तौ मुजरै पधारीया नहीं ।

२१३. पछै साहजादा सूजा री षबर आई सूजौ चलायां आवै छै । तरै पोस वद ४ टांणै पातसाहजी पुरब नुं असवार हुवा । तठा पछै पोस वद ७ श्री माहाराजाजी जाहानावाद सुं असवार हुवा सु पोस सुंद २ सोरभजी डेरा हुवा । पछै लसकर[2] सोरभजी थी कोस २० कोपीला छै तठै हुय पछै कुरड़े घाट मैं कर पातसाहजी जाय पोहौता । कुरड़ो आगरा थी कोस १०० आगे, कोस १ सुजौ हुतौ । माहा वद ४ साहजादा सुजा सुं वेढ पड़ी छै ।[3] श्रीजी नुं आपरी जीवणी बाजू[4] रापीया छै दाऊदषांन कुरेसी श्रीजी नुं पातसाहजी वीच छै । हाडौ भींवसिंघ श्रीजी री जीमणी बाजू आघेरौ छै । सुलतांन म्हैमद असवार हजार ७००० सुं हरोळ छै ।[5] नै रोल हुवौ पछे माहा वद ५ री रात पाछली पोहर १ छै । तरे श्री माहाराजाजी मुरड़ नै नासरीया ।[6] दिन ऊगते पहली कोस ७ आया । डेरा डांडा सारा ऊभा मेलीया ।[7] कोस २० आया माहा वद ६ आय दिन सारौ आसी हुवौ । इण दिन पातसाही वहीर लूटी । पातसाही उमराव साथै छै ।

२१५. माह वद ६ रात घड़ी ४ गयां डेरै आया रात घड़ी २ पाछली ले कूच हुवा । कोसे २ राजा जैसिंघ साम्हो हुवौ, तठे उतर नै मिळीया । दड़ै[8] १ ऊपर वैस नै श्रीजी नै राजा जैसिंघ महेसदासजी वात कीवी । घड़ी १ पछै श्रीजी असवार हुवा । कोस ४ डेरा षड़ा था तठै आया, पोहर १॥ चढ़ीयौ षेलु माल परसुवां साथी नीठ आया, साथ मांहे सोर हुवौ । इण रौ लसकर वहीर परसु री षोसी पछै परसु श्रीजी री हजूर आयौ । तरै कुं पोसीयो थौ[9] सु परौ दीरायौ । पछै माहा वद ७ रात पाछली पोहर १ लेनैं कूच कीयौ । पछै आगरा था कोस ३ नीसरीया । सभोगर री तरफ हुय नदी जमना उतर नै कोस ४ डेरा कीया । पछै फतैपुर पांनवै माहे हुय हीडवांण आंण डेरौ कीयौ ।

---

1. बैठ रहे । 2. फौज । 3. युद्ध हुआ । 4. दाहिनी तरफ । 5. आगे का हिस्सा । 6. जबरदस्ती करके निकले । 7. सारा सामान जहां का तहां छोड़ा । 8. टीले पर । 9. छीना था ।

११५०००००	२८७५००)	जाळोर
१००००००००	२५००००)	रेवाड़ी
९९९६५६६	२४९९१४)	उजीण
७३०००००	१८२५००)	देपाळपुर
१००००००००	२५००००)	ववनौर
९३७६००	२३४२००)	नागोर री पटी

इतरा परगना दीया—

२९०२९६)	नारनोल	१५७७५०)	रोहतक
३२५०००)	केथल	१२९०७३९)	सुहमजु
	२०००००)		
१७२५०)	पाड़ो		
९१९३७५			
२७६००००)			

२१२. संमत १७१५ रै भादवा सुद २ श्री पातसाहजी लाहोर नूं पधारीया माहाराजाजी नूं जाहानावाद नूं विदा कीया। पातसाहा लाहोर रै वार रै डेरौ कर नै मुल्तान गया। श्रीजी पाछा भादवा सुद ९ सींहनद पधारीया, आसोज वद १ करनाल डेरौ हुवौ। आसोज वद ६ सुन पछै माहे होय आसोज सुद १ जाहानावाद पधारीया।

२१३. तठा पछै मास १ नूं सुलतांन म्हेमद आगरा थी जाहानावाद आयौ। मुजरौ अेक रूप साहाजादे रौ कीयौ। तठा पछै पातसाहजी दिली पधारीया। उठै मुलाजमत कीवी, पातसाहजी उठै हीज रहा। श्रीजी नूं हूकम कियौ—दिन २ थे डेरै जावो पछै माहराजाजी जाहानावाद आप री हवेली आया। पछै कितरैहक दिनों पातसाह जाहानावाद रै कोट दाषल हुवौ।[1] पछै कितरैहक दिने तौ श्रीजी मुजरा कीया तठा पछै अेक दिन इतमाम जोर हुवो। तरै श्रीजी नूं किणहीक कहौ—थांहां सुं चूक छै।[2] तठा पछै श्रीजी डील रौ वाहानौ[3] कर नै

1. किले में प्रवेश किया। 2. धोखा है। 3. शारीरिक अस्वस्थता का बहाना।

डेरै वैस रहा ।[1] जाहानावाद तौ मुजरै पधारीया नहीं ।

२१३. पछै साहजादा सूजा री षबर आई सूजौ चलायां आवै छै । तरै पोस वद ४ टांणै पातसाहजी पुरव नुं असवार हुवा । तठा पछै पोस वद ७ श्री माहाराजाजी जाहानावाद सुं असवार हुवा सु पोस सुंद २ सोरभजी डेरा हुवा । पछै लसकर[2] सोरभजी थी कोस २० कोपीला छै तठै हुय पछै कुरड़े घाट मैं कर पातसाहजी जाय पोहौता । कुरड़ो आगरा थी कोस १०० आगे, कोस १ सुजौ हुतौ । माहा वद ४ साहजादा सुजा सुं वेढ पड़ी छै ।[3] श्रीजी नुं आपरी जीवणी वाजू[4] रापीया छै दाऊदषांन कुरेसी श्रीजी नुं पातसाहजी वीच छै । हाडौ भींवसिंघ श्रोजी री जीमणी बाजू आवैरौ छै । सुलतांन म्हेमद असवार हजार ७००० सुं हरोळ छै ।[5] नै रोल हुवौ पछे माहा वद ५ री रात पाछलो पोहर १ छै । तरै श्री माहाराजाजी मुरड़ नै नासरीया ।[6] दिन ऊगतै पहली कोस ७ आया । डेरा डांडा सारा ऊभा मेलीया ।[7] कोस २० आया माहा वद ६ आय दिन सारौ आसी हुवौ । इण दिन पातसाही वहीर लूटी । पातसाही उमराव साथै छै ।

२१५. माह वद ६ रात घड़ी ४ गयां डेरै आया रात घड़ी २ पाछली ले कूच हुवा । कोसे २ राजा जैसिंघ साम्हो हुवौ, तठे उतर नै मिळीया । दड़ै[8] १ ऊपर वैस नै श्रीजी नै राजा जैसिंघ महेसदासजी वात कीवी । घड़ी १ पछै श्रीजी असवार हुवा । कोस ४ डेरा षड़ा था तठै आया, पोहर १॥ चढ़ीयौ पेलु माल परसुवां साथी नीठ आया, साथ मांहे सोर हुवो । इण रौ लसकर वहीर परसु री पोसी पछै परसु श्रीजी री हजूर आयौ । तरै कुं पोसीयो थौ[9] सु परौ दीरायौ । पछै माहा वद ७ रात पाछली पोहर १ लेनै कूच कीयौ । पछै आगरा था कोस ३ नीसरीया । सभोगर री तरफ हुय नदी जमना उतर नै कोस ४ डेरा कीया । पछै फतैपुर पांनवै माहे हुय हीडवांण आंण डेरौ कीयौ ।

---

1. बैठे रहे । 2. फौज । 3. युद्ध हुआ । 4. दाहिनी तरफ । 5. आगे का हिस्सा । 6. जबरदस्ती करके निकले । 7. सारा सामान जहां का तहां छोड़ा । 8. टीले पर । 9. छीना था ।

उठारा ऊठीया ऊदेही रै गांव मुगल री सराह आया। पछै लालसोठ डेरौ हुवौ। पछै उठा थी भायल माहे हूय चाटसु माहै हुय कोस २ डेरौ कीयौ। पछै मोजावाद माहे हुय सलेमाबाद आया। माहा सुद ५ वसंत पंचमी सलेमावाद की। उठा रौ डेरौ भोरूंदे कीयौ। उठै रा: रूघनाथ सुंदरदासोत मेहमांनी हुई। पछै माह सुद ७ चांवडीये पधारीया। उठै देस रौ साथ लांपोळाई रा: नाहरषांन मु: नैणसी पगे लागा। माह सुद ७ कितराहेक साथ नुं घर री सीप दी। मु: नैणसी नुं मेड़ता नुं विदा कीयौ। श्री माहाराजाजी जोधपुर पधारीया। माह सुद १० नः रोहिणी।

२१६. जीधपुर थी फागण सुद ९ रावड़ीयाक नुं असवार हुवा। पालीह वासणी पधारीया। फागण सुद १५ होळी भावी की। उठै नाहरषांन राजसींघोत पेट भार मुवौ।[1] भावी रौ डेरौ वीलाड़ै हुवौ। उठे दारासाह रौ वेटौ सपरसको श्रीजी कनै आयौ। श्रीजी साथे पधारीया नहीं, सपरसको नै सीष दी। चैत वद १० मु: वद ५ रावड़ीयाक श्रीजी पधारीया। चैत वद १२ आथोळीयौ आसौ औरंगसाह कनै मेलीयौ थौ सु फरमांन दिलासा रौ ले आयौ, राजा जैसिंघ रौ कागळ ल्यायौ, सलाह हुई। श्रीजी कूच कीयौ। डेरौ जैतारण हुवौ, जैतारण रौ डेरौ सोभत हुवौ। चैत वद ७ चोपड़ै डेरौ हुवौ। सुद ३ चारणां री वासणी हुवौ। उठा रौ डेरौ चैत सुद ४ प्रथम डेरौ बाळसमंद हुवौ, ऊठै मेड़ता थी सरतांण वेग आयौ। कहौ-दारासाह नै औरंगसाह चैत सुद २ मेड़ते आया। हमें श्रीजी कनै आवसी। पछै श्रीजी मीया फरासत साम्हौ मेल मने कहायौ[2], कहौ अठै मत आवे। पछै का काळा गुढा माहे हुय दारासाह जाळोर नुं गयौ। पातसाहजी रौ फरमांन श्रीजी नुं आयौ—थांनु गुजरात रौ सोबो दीयौ। राजा जसिंघ नवाव वादरषांन दारासाह वांसै[3] आवै छै, थे सताव[4] आगे चालजो। श्रीजी चैत सुद ५ असवार वाळसंमद थी हुवा, जोधपुर गढ़ पधार नै घड़ी २॥ रहा। पछै गुजरात नुं असवार हुवा, डेरौ सालावास हुवौ।

---

1. पेट की बीमारी से मरा। 2. मना करवाया। 3. पीछे। 4. जल्दी।

दिन रहा पछै कूच हुवौ सथलांणे। चैत सुद ७ पधारीया, उठै दसराहा री भुंजाई[1] चैत सुद ९ हुई। देस री साथ विदा कीयौ। राजा जैसिंघ बाहादरषांन री षबर पींपाड़ री आई तरै आपनो तो कूच हुवौ, डेरो दुनाड़ै हुवौ।

२१७. रा: महेसदास नूं नै सा. नैणसी नूं राजा जैसिंघ बाहादरषांन सांमा मेलीया[2]। चैत सुदि १० पालावासणी [illegible] मिळिया, राजा जैसीघ रा: महेसदास नूं कहो—रु: १०००० नवाब बाहादरषांन नूं मैहमानी रा दिराया। श्री राजाजी नै दुनाड़ै [illegible] वखै री वाळै डेरौ कीयौ। आगै [illegible] डेरै हुवै [illegible] पधारीया। जाळोर थी [illegible]

राजा जैसिंघ बाहादरषांन रा डेरा—
चैत सुदि १० पालावासणी
चैत सुदि ११ काकांणी हुवा
चैत सुदि १२ सथलाणे
चैत सुदि १३ दुनाड़ो [illegible]
चैत सुदि १४ वेळू डेरा हुवा
चैत सुदि १५ वावरै
वै: वदि १ सैणै

२१८. संवत १७१५ रा वैसाष वदि १ राजा जैसिंघ बाहादरषांन [illegible] सैणै डेरा कीया। दिन पोहोर २ चढीयां [illegible] सैणै आया। आप माहे मिळीया। [illegible] आया। चैत सुदि १३ माटीयां रै साथ आदमी [illegible] वैसाष वदि २ सीरोही रै गांव वैसाष वदि ३ गांव [illegible] गांव मणोहरै डेरा हुवा।[3]

---

१. [illegible]। २. [illegible]। ३. 'ष' प्रति में [illegible]—[illegible] इतरो साथ फौज में छै—२ सा. [illegible] [illegible], १ रा. [illegible], [illegible] १ रा. [illegible], १ रा. [illegible] [illegible], ४० [illegible]।

1. [illegible]। 2. सामने भेजा। 3. [illegible]।

२१९. संव्रत १७१५ रा वैसाष वदि ३ श्रीजी परणीजण[1] नुं सीरोही पधारीया। राः राजसिंघ सुरजमलोत मुः नैणसी राः सबळसिंघ प्रागदासोत नुं पोकरण री मदत वासतै घणा साथ सुं विदा कीया। राः लषधीर वीठळदासोत राः भींव गोपाळदासोत नुं परवाना लिख दीया—थे पोकरण री मदत जावजो। सु वैसाष वदि ४ मुः नैणसी सैणै डेरौ कीयौ। वैसाष वदि ५ जाळोर आयौ, वैसाष वदि ६ वाळै डेरौ कीयौ। राः लषधीर वीठळदासोत भाद्राजण श्रीजो रा पांवां नुं चालण सारूं तयार हुवौ, आयौ हुतौ। राः केसरोसिंघ अमरावत राः लषधीर भेळौ थौ सु नैणसी कन्है वाळै आयौ, तरै षबर हुई, लषधीर भाद्राजण छै। तरै मुः नैणसी राः सोम साहिबषांनोत नुं कागळ लिष नै मेलीयौ नै घणौ कहाड़ीयौ हुतौ। पिण राः लषधीर नहीं आयौ। सोम फिर उरौ आयौ। वैसाष वदि ७ डेरौ दूनाड़ै हुवौ। तठै राः केसरोसिंघ अमरावत आय भेळौ हुवौ। वैसाष वदि ९ डेरौ सालावास हुवौ, सु जीम नै आथण रा जोधपुर जाय रहा। दिन ४ मुः नैणसी जोधपुर रहौ, नै सुल सांमांन कटक रौ कीयौ। चारूं तरफ साथ नुं छड़ौ[1] चढोयौ[2] वैसाष वदि १३ डेरौ नैणसी चैनपुरै कीयौ। तठै राः विहारीदास ईसरदासोत अकसमात आय भेळौ हुवौ। तरै डेरौ बैसाष वदि १४ देवीभ्रर रै तळाव हेठै कीयौ। वैसाष वदि १५ डेरौ बालरवै हुवौ। इण डेरै असवार २००, पाळा २०० छै, नै मेह सबळौ वूठौ[3] तळाव पांणी मास ८ रौ आयौ। वैसाष सुदि १ डेरौ घेवड़ै प्रोहतां रै, बाहळौ[4] बहतां माहे कूच कर गया।

२२०. वैसाष सुदि २ चेराई हुवौ। बार बुध राः विहारीदास करन आयौ, असवार १०० नै पाळा २००। वैसाष सुदि ३ गुर मुकांम चेराई आषातीज[5] नुं रहा। वैसाष सुदि ४ सवडाल[2] डेरा हुवा। ऊः जगनाथ आयौ, [[3] तोपची ५० मेड़ता थी आया।

---

१. छड़ा। २. संवडाऊ। ३. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. शादी करने को। 2. एक-एक सवार विदा किया। 3. खूब वर्षा हुई। 4. नाला। 5. अक्षय तृतीया।

२२१. वैसाष सुद ५ कानी लाषणकोहर री सेद[1] तळाई डेरा हुवा। भाः लालचंद सीवांणा रौ साथ आदमी ८०० लेनै आयौ। वैसाष सुद ६ रविः मुः जाळीवाड़े फळोधी रौ साथ ले, सीः जैमल आय भेळौ हुवौ, आदमी ४००। वैसाष सुद ७ सोम ढंढु डेरा हुवा। राः आसी नीबावत राः स्यामसिंघ गोयंददासोत आया। वैसाष सुद ८ रावळै साथ पोकरण दिन घड़ी ४ चढतै जाय डेरा कीया। भाटीयां रौ साथ गढ छोड नीसर नै रूपा रो तळाई गया। प्रोळ कोट री आडा भाठा जड़ीया था सु षोलाया। माहलौ साथ सारौ राः जगमाल राः चंद्रसेन पोकरण आयौ, मीळीयौ। संमत १७१४ चैत्र सुद ५ राः चंद्रसेन पोकरण आयौ। चैत्र सुद ११ मुः हरचंद घाः कांनौ पोकरण थी चालीया। चेत्र सुद १३ भाटीयां पोकरण घेरी दिन २५ वीग्रह रहौ। वैसाष सुद ९ मुकांम पोकरण हुवौ। आघा षड़ण रौ सामान कीयौ। श्री माहाराजाजी री हजूर नुं कासीद री जोड़ी[2] दिन ९ री बोल देनै[3] चलाई। इण दिन असवार १०००, पाळा २००० श्रीजी रौ साथ भेळौ हुवौ[4]।

वैसाष सुद १० तथा ११ तथा १२ पोकरण रहा, अठै दिन ३ माहे देस रौ साथ रावळ भारमल रावळ महेसदास बीजा सारा परगना रा आदमी ४००० आया।

२२२. वैसाष सुद १३ रूपा री तळाई गांव वणीया कोस ६ तठै डेरा हुवा। भाटीयां रा डेरा वचीहाय छै। वीच आदमी फिरिया। चोः रतनसी काः फतैसिंघ राजा जैसिंघ रा चाकर जैसलमेर मेलीया था सु आया। वैसाष सुद १४ रावळा साथ रा डेरा पोकरण री हद लोप नै[5] लाठी नजीक वचीहाय ताळाव डेरा हुवा। वोचा चारण री पणाइ[6] तळाई छै। उठा थी कोस १॥ गांव चारणथळ छै। वैसाष सुद १५ भोम वचीहाय था कूच हुवौ। कोजा री तळाई कोस ५ डेरा

1. गांव के ठीक निकट। 2. दो पत्रवाहक। 3. ९ दिन में पहुंचने का आदेश देकर। 4. शामिल हुआ। 5. सीमा का उल्लंघन करके। 6. खुदवाई हुई।

हुवा । इतरा गांव जैसलमेर रा श्री माहाराजाजी रे साथ मारीया-कोजा री तळाई जसहरड़ां[1] रौ उतन जैसलमेर १५ ।

१ डोलासर १ घायसर १ जीवंद १ कोझव रौ गांव १ जेसुरणौ।

जेठ बद १ बुध कोभा री तळाई मुकांम कीयौ ।

जेठ वद २ चांधण डेरा हुवा । भोजक रै तळाव जोगणीहेत डेरा कीया । उठै कोहर वेरा घणा । पांणी हात ८ तथा १० मीठौ[2] । दिन ३ मुकाम हुवा, चारूं तरफ धरती लूटी ।

जेठ वद ६ चांधण था साथे चढीयौ । वासणपी पीर जैसळमेर उरै कोस ५ तिण री लोहर तळाई ऊपर डेरौ हुवौ तद इतरा गांव बाळीया[3] लूटीया—

१ वासणपी १ लोहर रौ गांव १ धनवौ १ भेंसड़ेचरौ गांव ।

जेठ बद ७ डेरा अहप कीया । गांव पाखती रा[4] मरिया ।

जेठ बद ८ अहप सुं फौज चढी । सु देवड़ां रौ गांव छोडौ मारीयौ नै दिन पोहर १।। चढतां आसाणी कोट डेरौ कर नै इतरा गांव मारीया। घणी लूट हुई । १ आसाणी कोट बड़ी ठौड़ जैसलमेर था कोस १२, घणा माहाजन बांभण, पवन रा घर । जैसलमेर उतरती ठौड़ राव रिणमल मारीयौ थौ

६ बीजा गांव—

१ छीडौ देवड़ा री बोलो १ नाथरौ वास १ संगवणी १ नेडाणी १ कोटड़ी चारण री ।

२२३. जेठ बद ९ तथा १० भेळी हुई । आसणी कोट था कूच कर नै देग कोस ७ डेरा तळाव री पाषती हुवा । उठे देवी संगवीयां[5] रौ बडौ थांन छै । बड़ी मेहमा[6] छै । तळाव रौ पांणी मास ८ तथा १० रहै छै । तद इतरा गांव मारीया लूटीया—

1. भाटीयों की एक शाखा । 2. ८ तथा १० हाथ की गहराई पर मीठा पानी निकलता है । 3. जलाये । 4. आसपास के । 5. भाटियों की कुलदेवी । 6. महिमा, प्रसिद्धि ।

१ ग्रणंद पढीयांरो वास १ रायसळ रौ वास १ ग्रचळा जसड़ रौ वास १ वीरदास जसहड़ रौ वास १ केराड़ी कोसे ३[1] १ सांवत रौ वास १ मुलड़ी कोसे ३।

जेठ वद ११ सुकर, देग था फौज चढो, सु कोस ६ गांव नेडणा रा वास ४ मारीया, लूटीया। भा: ग्रासौ लषमणोत, जसड़ देवड़ौ साजन, गांव रा धणी सोनगरे मारीया। साकड़ै पोकरण रै चूंडा री कोटड़ी माहे हुय नेता री तळाई डेरौ कीयौ।

जेठ वद १२ सनरूपा री तळाई डेरौ हुवौ।

जेठ वद १३ पोकरण ग्रांण[2] डेरा कीया।

राः भींव गोपाळदासोत मेड़तीयौ ग्रायौ। मुकाम ६ पोकरण कीया, कोट रौ सामांन कीयौ[3]। इतरौ साथ पोकरण थांणै राषीयौ—

१ राः सवळसिंघ पिरागदासोत।

१ राः रूघनाथ ळिषमीदासोत।

१ राः किसनौ ईसरदासोत।

१ राः पीथौ षेतसीयोत।

१ राः रामचंद गोपाळदासोत।

१ राः दयाळदास भोपतोत।

१ राः हरीदास गोपाळदासोत।

१ राः गोवरधन जगनाथोत।

१ भाः देईदास सगतसिंघोत।

१ राः सुंदरदास नारायणदासोत नै स्यामदास सुंदरदासोत कोट मैं रहै।

१ इंदा चौरासीया[4] ग्रादमी ४० कोट में रहै।

१ राः हमीर देईदासोत।

१ भाः राघोदास सुरतांणोत।

१ सींधल दवारकादास जगनाथोत।

---

1. तीन कोस की दूरी पर। 2. बाहर। 3. कोट [illegible] रहने के लिये सामान आदि की समुचित व्यवस्था की। 4. ईंदों के आदि निवासस्थान के वासी।

१ टाक जगनाथ दलपतोत ।

१ पिढ़ीयार नाथौ सादुळोत ।

१ राः हेमराज गोयंददासोत ।

१ भाः हरीसिंघ सगतसिंघोत ।

१ भाः रतन केसरीसिंघोत ।

१ माः लाडषांन भेरूंदासोत ।

१ मांगळीया आदमी २० कोट में रहै ।

१ भाः गोकळदाल हरीदासोत ।

१ सींधल लाडषांन रायसिंघोत ।

१ सींधल अषैराज पंचाईणोत ।

१ पिडीयार लषमणदास गोपाळोत ।

१ माः भांण सैहसमलोत ।

जेठ सुद ४ सनीवार मुः नैणसी दिन घड़ी ४ चढतां पोकरण चालीयौ । कोसे ४ गांव लोहवे पोकरण रै गांव रोटी खाधी । इतरौ साथ अठा थी विदा कीयौ—

१ सीवांणा रौ साथ– भाः लालचंद ।

१ फळोधी रौ साथ ।

१ मेवा रौ साथ—रावळ महेसदास भारमलोत ।

दिन घड़ी २ दो पाछलौ[1] ले चालीया सु जेठ सुद ५ दिन पोहर १ चढतें लोलटै आया ।

२२४. जेठ सुद ५ दिन घड़ी २ पाछलौ ले लोलटै सुं चालीया सु रात घड़ी ६ गयां जेलु रै तळाव पोहर २ रहा । जेठ सुद ६ बाल्हरवै आंण डेरौ कीयौ । आथण रौ पोहर १ दिन ले चालीया भुहरी कनै आवतां सांवण री पाल हुई[2] । जेठ सुद ७ भोम वार जौधपुर आय श्रीकंवरजी रै पांवे लागा ।

२२५. जेठ सुद १५ पोकरण था कासीद आया, भाटीयां रौ साथ भेळौ हुवौ थौ सु रावळ भाः रामसिंघ पंचाईणोत भाः बिहारीदास दयाळ-

1. पीछे का । 2. प्रतिकूल शकुन हुए ।

दासोत भाः गिरधरदास वाघोत षेतसी रौ पोतरौ चढीया। पाळा मांणस २००० आसणी कोट आय ऊतरीया छै। तिण ऊपर मुः नैणसी ही जोधपुर था साथ नुं सारै देस छड़ा मेलौया[1] आसाढ बद १ फळोधी था षबर आई— भाटीयां रौ साथ पोकरण आयौ। गांव नुं ढोवो कीयौ[2], श्रीजी रै साथ बाहर नीसर बेढ की। ऊवै हाटां तांऊ आया, मंढी कनै बेढ की। तरै राजाजी रौ साथ जीतौ, बेढ भाटीयां हारी। आदमी १० भाटीयां रा मर गया। आदमी २ श्रीजी रा कांम आया। भाटीयां पोकरण गांव लगयौ[3] घर २०० बळीया। भाटीयां पाछा हार नें डूंगरसर ऊतरीया। रात अेक रह नै फळोधी नुं कूच कीयौ। जगीया डेरौ हुवौ। उठा थी चढ नै सांवराज मांहे हुय नै फळोधी सहर आया, तळाब राणीसर ऊतरीया।

आसाढ वद १० मुः नैणसी जोधपुर सुं फळोधी नुं चढीया—
असाढ वद १० चैनपुरे डेरौ।
असाढ वद ११ देवीझर डेरौ।
असाढ वद १२ वाल्हरवा डेरौ।
असाढ वद १३ विराई डेरो।
असाढ वद १४ भेड़ री तळाई झळेलाई।
असाढ वद ७ जोलीवाड़ौ।
असाढ सुद १ कसबै फलोधी डेरा।

पछै मुः नैणसी फळोधी रह नै साथ मेल नै जैसलमेर रा गांव मराया। घणा धाड़ा आया।

२२६. पछै राजा करन वीकानेरीयौ जैसलमेर परणीजण जातौ थौ नु रावळा साथ रौ डेरौ कीरड़ै हुतौ। तठा थी राजा नैणसी नुं तेड़ायौ[4]। पछै राः विहारीदासजी राः राजसिंघ सुरजमलोत राः आसौ नींबावत मुः नैणसी सारौ साथ लेनै सेपासर राते आपर असवारां चढ नै सांमौ कोस १ गया। तठै जाय राजा श्री

1. [illegible] । 2. गांव पर हमला किया। 3. आग लगादी। 4. बुलाया।

करणजी रै पांवे लागा। रूपीया १०००) मेहमांनी गुदराया[1]। कोस १ साथे गया उठे जाय ऊतरोया, बात विगत करनै श्रीजी रा साथ नै सीष दी। राजा री डेरौ रांमदेरै हुवौ। सांवण सुद २ मिळ नै पाछा कीरड़ै आया। पछै राजा करण तौ जैसलमेर जाय परणीयौ दिन २० उठे रहौ। वांसै भाटीये वीगड़ १ तथा २ श्रीजी रै देस पोहकरण रा कीया। तिण ऊपर मुः नैणसी वीगाड़ १० जैसलमेर रै देस रा कराया। राजा जैसलमेर सुं हालतौ रावळ सबलसिंह सुं बात कर नै भाः रामसिंघ भाः रूघनाथ नुं भेळा करण नुं साथे ल्यायौ। राजा रौ डेरौ रामदेवरै हुवौ। फळोधी था मुः नैणसी नुं प्रोः ऊदैसिंघ नरहरदासोत नुं तेड़ायौ। भादवा बद ८ श्रीजी रौ साथ देऊरै गया। ऊठे राजा करण वात विगत कराय नै आगली वात सोह गई कराई[2]। लिषत कराया, पछै भुजाई कराय नै राः विहारीदासजी नै भाः रांमसिंघ नुं राः राजसिंघ नुं नै रूघनाथ भाणावत नुं भेळा बैसांण[3]] षीच भेळौ षुवाय नै भेळा कीया। भाः वदि ६ सीष दीवी। रावळौ साथ फळोधी आयौ, भाः वदि १२ फळोधी था कूच कीयौ। भाः वदि १३ चेराई डेरौ कीयौ। भाः वदि १४ श्री कुंवरजी रै पांवां लागा।

२२७. संवत १७१० रा माह वदि १३ पातसाहजी सालगिरै रै दिन माहाराजा रौ षिताब दीयौ साहजहांनजी, मुनसब छव हजारी जात, असवार हजार ६ तामैं हजार पांच दोसपै नै एक हजार इक सपै[1]।

श्री माहाराजाजी संवत १७१५ रा वैसाष वदि १२ साही वाग डेरौ दिन ६ रहौ। पछै अहमदावाद पधारीया। वांसै दरगाई उकील मनोहरदास सुं डौळ कीयौ[4]। वैसाष सुदि ४ पातसाही मोहौला पधार डेरौ कीयौ।

अहमदावाद माहे डेरौ।

---

१. वावरदो।

---

1. नजर किये। 2. पहले की सारी बात समाप्त करवाई। 3. एक ही थाली पर शामिल बैठकर। 4. कुछ बात बनाई।

१२८. मनसप री विगत, सात हजारी जात। सात हजार असवार। तिण में पांच हजार दोसपै नै दोय हजार असवार एक सपै। तिणां री हिसाब—

दांम	रुपिया	आसांमी
१४००००००	३५००००	जात सात हजारी रा हजारी १ नै हजार ५० लेखै वडी जागीर
९६००००००	२४०००००	असवार बारै हजार, राज में पांच हजार दोसपै। दोय हजार एकसपै, असवार १०० दांम लाष ८ ताराड़ु हजार २० रै लेखै हजार १२ लाष २४ हुवा।
११०००००००।	२७५००००)	जमीयत मांगै।

किरोड़ दांम उण डौळ माहे ईनांम रा कटीया, तिण में जागीर तनपावां—

दांम	रुपिया	आसांमी
१४७२५०००)	३६८१२५)	प्राः जोधपुर
		६०००००० हवेली मोहल ५
		२५००००[1] पींपाड़
		३००००० वाहाळी वळुंदो मोहोल २
		१२००००० म्हेवो[2]
		१००००० भाद्राजण
		६००००० वीलाड़ो
		५०००० ईंदावट वहळवो
		४००००० पाली रोहट पारल म्हैल ३

---

१. २२६०००००) २. मेहवो।

१५०००००	आसोप
३०००००	दुनाड़ौ
२०००००	गुदवच
३०००००	षैरवो
७५०००	कोढणौ
३०००००	षींवसर
१४७२५०००	

८०००००	२००००)	प्रा: पोकरण सातलमेर भेळा ही मंडै छै[1]
१४००००००	३५००००)	प्रा: मेड़तौ
८००००००	२०००००)	प्रा: सोभत
८००००००	२०००००)	प्रा: जैतारण
३००००००	७५०००)	प्रा: सीवाणौ
११५०००००	२८७५००)	प्रा: जाळौर
२७०००००	६७५००)	प्रा: फळोधी
५०००००	१२५००)	प्रा: गजसिंघपुरौ[1]
६३२२५०००	१५८०६२५)	
४३३३५०००	१०८३३७५)	परगना गुजरात रा

१००००००००	२५००००)	वीरमगांव
२०००००	१५००००)	अहेमदनगर
४००००००	१०००००)	धुंधकौ
१५०००००	३७५००)	बीरपुर
१२०००००	३००००)	मांसुराबाद
९०००००	२२५००)	बालाबारौ
२००००००००	५०००००)	पटलाद
२७३५०००	६९३७५)	बडनगर

१. रुपए (अधिक)।

1. सातलमेर के शामिल ही लिखे जाते हैं।

१०००००० । २५०००) बीसलनगर

४३३३५००० । १०८३३८५)[1]

१०६५६०००० । २६६४०००)

३४४०००० ।   ८६०००) तलब रही ।

इण मामलै इतरी ठोड़ तागीर हुई—

दांम	रुपया	आसांमी
१००००००००	२५००००)	परगनो रेवाड़ी
	२९०२९६)	परगनो नारनोल
	१५७७५०)	परगनो रोहतक
	३२५०००)	परगनो केथल
	१२९०७९)	परगनो मुहीम
	१७२५०)	परगनो षंडो
	११६९३७५)	

२२९ः संमत १७१७ रा भादवा सुद ४ करोड़ दांम श्री महाराजाजी रा अहमदावाद मैं ईजाफे हुवा ।

हिसाव—

दांम	रुपिया	आसांमी
१४००००००	३५००००)	जात
९६००००००	२४०००००)	असवार सात हजार तिण मैं पांच हजार दोसपा
१००००००००	२५००००)	ईनांम हुवा संमत १७१७ भादवा सुद ४
१२००००००००	३००००००)	

जागीर—

दांम	रुपिया	आसांमी
६३२२५०००	१५८०६२५)	देस रा परगना ९ जोधपुर सुं।

१. [illegible]

दांम रुपिया आसांमी

४३३३५००० १०८३३७५) परगना ९ गुजरात रा संमत १७१६ ऊपना संमत १७१७ ऊपना

१०००००००। २५००००) झालावार वारम
३४९००००) २८६०००)

४००००००। १५००००००) धांधुको
६६०००) ८४३२५)

२००००००। ५००००) अहमदनगर
१४१००) १४७००)

१५०००००। ३७५००) बीरपुर
२०८८६) २२५००)

१२०००००। ३००००) मामुरावाद
१८९८३) ३१२९६)

९०००००। २२५००) वालवारो
८०००) ४१५८)

२०००००००। ५०००००) पटलाद
३६००००) २८६३७०)

२७३५०००। ६८३७५) बड़नगर
३२०००) १६७००)

१००००००। २५०००) बीसलनगर
१२०००) ४९२३)

४३३३५०००। १०८३३७५)))

१००७४०००। २५१८५०) परगना ४ पछै हुआ ईजाफे गुजरात रा दांमांपदे।

७९७४०००। १९९३५०) बीजापुर
१२०००००। ३००००) तेरवाड़ी
३०००००। ७५००) मेरवाड़ी

१२००००००। ३००००) ममुरावाद
६०००००। २२ ५००) छालाबारो
२७३५०००। ६८३७५) वड़नगर
१०००००० । २५०००) वीसलनगर
४००००००। १०००००) धंधुको
२००००००। ५०००००) अहमदनगर
७९७४००० । १९९३५०) बीजापुर
१२०००००। ३००००) तेरवाड़ो
३००००। ७५००) मेरवाड़ो
६०००००। १५०००) काकरेची

दांम   रुपिया   आसांमी

१२००००००

तलव—

११००००००० मुनसप सात हजारी

जात सात हजार असवार

तिण मैं असवार ५००० दोसपा।

१४००००००० जात सात हजारी।

९६०००००० आ: १२०००

००००००० ईनांम।

जागीर—

दांम	रुपिया	आसामी
६३२२५०००	१५८०६२५)	देस रा परगना बरकरार छै।

१४७२५००० । ३६८१२५) जोधपुर

१४००००००। ३५००००) मेड़ती।

८००००००। २०००००) जैतारण

८००००००। २०००००) सोभत

८०००००। २००००) सातळमेर

११५०००००। २८७५००) जाळोर

३००००००। ७५००) सीवांणी

२७०००००। ६७५००) फळोधी

५०००००। १२५००) गजसिंघ-पुरो।

इतरा गुजरात रा तगीर हुवा—

२००००००० । ५०००००) परलाद

१००००००० । २५००००) वीरमगांव

१५०००००। ३७५००) वीरपुर

[illegible] रा परगना हुवा, गुजरात रा परगनां रै बदळै—

आपरै हाथ रै झटकौ लागी, आंगळी १ पड़ी। सहेली १३ मारी। आदमी १०० इण रा वगतरीया[1] मारीया और आदमी ४ सीव रा मुवा। माल कितराहीक ले गयौ। नबाब रौ सूबौ उतरीयौ। संमत १७१९ रा आसाढ सुदि ६ नबाब कूच कीयौ। सूबौ श्री माहाराजाजी नुं हुवौ।

२३२. संमत १७२० आसाढ सुदि १५ दिन घड़ी १५ चढीयां सूबा रौ दीवांन कीयौ। काती वदि ११ सुकरात पूना सुं कुडाणा नुं असवार हुवा, मंगसर सुदि ७ कुडाणै री तळहटी जाय डेरौ कीयौ। गढ़ तै घणी ही षसीया[2] वार दोय सुरंग लगाई सु दषल गढ़ नुं पोहोतौ, पिण गढ नहीं आयौ।

२३३. संमत १७२० असाढ वदि ३ पछै पूनै आया। पछै संमत १७२१ रा चैत्र वदि १२ राजा जैसिंघ सूबै हुवां पूनै आया। श्रीजी [[1]कूच कर दिली श्री पातसाहजी कनै आया। जेठ बद १० पगै लागा। देस था श्री कुंवरजी नुं तेड़ाया[3] था सु संमत १७२२ रा प्रा: सांवण सुद ५ आय पगे श्री माहाराजा जी रै श्री पातसाह जी रै लागा......
संमत १७२२ रा बैसाष वद ८ गौड़ां रै परणीजण नुं विदा कीया। सु कंवरजी जोधपुर आय साहे परणीजीया।

संमत १७२१ रा वैसाष सुद ४ श्रीजी रामपुरै परणीया। संमत १७२१ जेठ बद १२ जादमां रै[4] परणीया।

२३४. श्री महाराजाजी सुं गुजरात रौ सूबौ तागीर हुवौ। दौलताबाद रौ हुकम आयौ सु श्रीजी पोस बद ३ असवार हुवा तद गुजरात रा परगनां री वरसाळी श्रीजी नुं दिराई[5]। तिण रै वासतै मीरजां मेहमद अमीमीया सुंदर पं. गंगादास उठै राषीया तद हिसाब दरगाह हुवौ[6]।

---

१ 'ख' प्रति का अंश।

---

1. जिरह बख्तर पहने हुए सिपाही। 2. खूब प्रयत्न किया। 3. बुलवाया। 4. यादवों के यहां। 5 उस वर्ष की सावन की फसल की आमदनी दिलवाई। 6. शाही दरबार में हिसाब-किताब हुआ।

दांम रुपिया आसांमी

१२००००००

तलव—

११००००००० मुनसप सात हजारी
जात सात हजार असवार
तिण में असवार ५००० दोअसपा।
१४०००००० जात सात हजारी।
६६०००००० आ: १२०००

००००००० ईनांम।

जागीर—

दांम	रुपिया	आसामी
६३२२५०००	१५८०६२५)	देस रा परगना बरकरार छै।

१४७२५००० । ३६८१२५) जोधपुर
१४०००००० । ३५००००) मेड़ती।
८०००००० । २०००००) जैतारण
८०००००० । २०००००) सोझत
८००००० । २००००) सातळमेर
११५००००० । २८७५००) जाळोर
३०००००० । ७५००) सीवांणी
२७००००० । ६७५००) फळोधी
५००००० । १२५००) गजसिंघपुरो।

इतरा गुजरात रा तगीर हुवा—
२०००००००। ५०००००) परलाद
१००००००० । २५००००) वीरमगांव
१५००००० । ३७५००) वीरपुर

३३५. हंसार री तरफ रा परगना हुवा, गुजरात रा परगनां रै बदळै—

१२०००००। ३००००)	ममुरावाद
६०००००। २२ ५००)	छालाबारौ
२७३५०००। ६८३७५)	वड़नगर
१००००००। २५०००)	वीसलनगर
४००००००। १०००००)	धंधुको
२००००००। ५०००००)	अहमदनगर
७६७४०००। १९९३५०)	बीजापुर
१२०००००। ३००००)	तेरवाड़ौ
३००००। ७५००)	मेरवाड़ौ
६०००००। १५०००)	काकरेची

१३३५२२५)

हंसार री ठौड़ संमत १७१८ री ऊनाळी सुं[1]

६०६३६४०। १५१५५६१)	टोहणौ	६०१६२००
८१२६५४४। २०३२३८॥)	सरसौ	८११००००
३२०००००। ८००००)	साहाबाद	३२००००
६२७४४००। १५६८६०)	जीद	६२६२४००
२४०००००। ६००००)	वेहणीवाल	२४०००००
२००००००। ५०००००)	अठषेड़ौ	२००००००००
११२०००००। २८०००)	षांण्डो	११२००००
५०१९७३२। १२५४९३)	जमालपुर	५००००००
१५६५०००। ३९१२५)	सोरांग	१५६५०००
८०१५६२६। २००३९०)	मुहीम	८००००००
१२५००००। ३१२५०)	अहरोई	१२५००००
१०८२०००। २७०५०)	घातराठ	१०८२०००
५७७७५००। १४४४३७)	रोहीतक	५७७७५००

५१८९७४४२। १२९७४३६)

1. रवी की फसल से।

१२००००० । ३००००) प्रा: वाहलगांव ५ करावै वरणेल संमत १७१६ री वरसाळी थी[1] ।

८८४१३१ । २२१०३) प्र: ववाळ में संमत १७१६ री ऊनाळी था हुई हुती ।

जुमलै दांम १२१४१३१ पछै संमत १७२० रा सांवण मांहे दांम ३३०००० तागीर हुवा ।

विगत—

२८००००	रा: त्रिंदावन
५००००	रा: अपैराज

११७२०६५७३ । २६३०१६४।)

२७६३४२७ । ६६८३५।।।) तलव

नगदी लाष दांम रूपीया १०००) पावै । रूपीया २८६६ दांम ३४४००००० रा हुवै तिण में मास १ रूपीया २८६६) हुवै, तिण में रूपिया २०२) कसूर गया । बाकी २६६४) लीजै छै ।

१२००००००० । ३००००००)

जागीर री डौळ १ पं: मनोहरदास संमत १७२० रै फागुण में लिष भेजीयौ । संमत १७२० री षरीफ थी ईण भांत छै—

तनषाह दांम	रूपीया	आसांमी
११०००००००।	२७५००००	मुनसप सात हजारी सात हजार असवार तिण में असवार ५००० सेसपा दोसपा, असवार २००० वावरदी अेकसपा ।
		१४००००००० जात सात हजारी
		६६००००००० तावीनदार ।

1. खरीफ की फसल से ।

असवार १२००० रा असवार १०००
दांम ८००००० पावै ।

१०००००००। २५०००० ईनांम ।

१२००००००। ३००००००)

जागीर रौ हीसाब—

६३२२५०००।

परगनै जोधपुर वगैरै सूबे अजमेर ।

४८७२५००० सरकार जोधपुर ।

६००००० हवेली
२५००००० पींपाड़
१५००००० आसोप
१०००००० भाद्राजण
१२००००० महेवौ
८००००० सातळमेर
६००००० बीलाड़ो
४००००० पाली रोहठ षारला
३००००० बाहाळौ बळुंदो
३००००० षींवसर
३००००० षेरवौ
३०००००० दुनाड़ौ
२००००० गुदवच
७५००० कोठणौ
५०००० ईंदावटो

११५००००० जाळोर
८०००००० जैतारण
८०००००० सोझत
३०००००० सीवांणौ
२७००००० फळोधी

४८७२५०००

१४५००००० सिरकार नागोर
१४०००००० मेड़तो
५००००० गर्जसिंघपुरो

६३२२५०००

प्रगना हंसार रा — मुहीम वगेरे

८०६५६२६ मुंहीम

८०००००० असल १५६२६ ईजाफो संमत १७१६ रवी

६०६३६४० टोहणों ६०१६२०० असल ४४४४० ईजाफो

८१२६५४४ सरसो

८११०००० असल

१६५४४ ईजाफो

६२५४४०० जोद

६२४२४०० असल

१२००० ईजाफो

५०१६७३२ जमालपुर

५०००००० असल

१६७३२ ईजाफो

३२००००० साहावाद

२४००००० वहणीवाल

२०००००० अठपेड़ो

१५६५००० सोरांण

१२५०००० अहरोई

१६२०००० षांडो

१०८२००० घातरठ

४६०६६६४२ विगत

४५६८८६०० असल

१११३४२ इजाफो

षरीफ संमत १७१६

५७७७५०० सरकार जाहानावाद रोहतक ।

१२०००० प्रः वाहल सरकार सूबे अजमेर ।

८८४१३१ प्रः बंवाळ सरकार सूबे अजमेर ।

गांव १८॥ जुः १२१४१३१ तिण में संमत

१७२० री षरीफ सु दांम ३३००००

तागीर गांव ९ बाकी ८८४१३१

पहले का—

२६०००० संमत १७२० रा बैसाष ।

११४४१३१

११७१८६५७३

२८१३४२७ तलब रहै तिण रा नगदी पावै, दांम १००००० तिण रा रुपीया १०००) रा रुपीपा २८१३४।) हुवै तिण में सूं १०५) कटै, सु बाद रुपीया १४६।।।) बाकी २६७२६।।।) षरा पावै। सु दबाब दाषल षरच ।

२६०००० संमत १७२० रा बैसाष बद

माहे गांव ४।। प्रः बंवाळ रा ताः राः मानसिंघ

रूपसीयोत रा ऊनाळी सुं हुवा ।

२५५३४२७ री तलब रही ।

२३६. संमत १७१६ रौ वरस, श्री माहाराजाजी गुजरात रै सूबै हुता। उठा सुं श्री कंवरजी नुं दरगाह[1] भेजण रौ विचार कीयौ । हजूर सुं राः भींव गोपाळदासोत राः फतैसिंघ नरहरषांनोत मुः सुंदरदास नुं विदा कीया । अै पोस...जोधपुर आया ।

श्री कंवरजी पोस सुद...जोधपुर सुं असवार हुवा, पोस सुद १२ गुरवार मेड़तै पधारीया, माह वद ३ मेड़ता थी असवार हुवा। डेरौ अरणीयाळै हुवौ । मुकांम २ उठै हुवा । माह वद ६ नींबाड़ी काला डेरौ हुवौ, दिन १ मुकांम हुवौ । माह वद ८ सोम डेरौ भापरी हुवौ,

1. बादशाह का दरबार ।

तठै अेक मुकांम हुवौ। माह वद १० बुध जाजोत डेरौ हुवौ। उठै रा: मानसिंघ रूपसिंघोत श्री कंवरजी सुं मिळण आयौ। माह वद ११ देस रा साथ नुं श्री कंवरजी विदा कीयौ। पछै जाहानाबाद श्री कंवरजी पधारीया। पातसाहजी तठा पहली असवार हुवा था। पछै सोरभ पातसाहजी रा डेरा हुवा। तद राह मांहे श्री कंवरजी जाय पातसाहजी रै पांवे लागा। तठा आगे पातसाहजी समसाबाद तांऊं[1] पधारीया। उठा थी पाछा फिर आया[2] सु होळी जाहानाबाद परै कोस १० की। चैत वद २ पातसाहजी जाहानाबाद पधारीया।

संमत १७१७ रा मंगसर वद ४ श्री पातसाहजी जाहानाबाद सुं सिरपाव हाथी कलंगी दे विदा कीया। मंगसर सुद १ स्यावलेजी पधारीया उठे मु: नैणसी पांवे लागौ।

मंगसर सुद २ माहरोठ
मंगसर सुद ३ मकड़ाणे
मंगसर सुद ४ कीतलसर
मंगसर सुद ५ मेड़तौ
मंगसर सुद ६ गगड़ाणौ
मंगसर सुद ७ तथा ८ बुचकलै
मंगसर सुद ९ जोधपुर धाय री बावड़ी
मंगसर सुद १० गढ।

संमत १७१९ रा माह सुद ९ कागळ[3] १ उकील मनोहरदास लीषीयौ थौ--दरगाह माहे श्री माहाराजा जी रै माथै इतरौ मुताळबो छै--

६०००००) पातसाह साहजहां दीया था संमत १७१४
१०००००) उजीण नुं विदा हुतां इनांम
५०००००) अजमेर से भरथा दीराया था।

1. तक. 2. वापिस लौट आए 3. पत्र।

१४००००) साहजादे दारासाह ।
१०००००) पेसषाना रा ।

---

२३७. समत १७२१ रा आसोज बद ७ उकील मनोहरदास कागळ आयौ तिण माहे लिषीयौ छै—मुताळब श्री माहाराजाजी रै रूपीया ८०००००) इण भांत छै किसत भाळी[1] नै रूपीया २०००००) कीया छै ।

६००००००) पहले का
२०००००००) संमत १७२० लीया ।

परगनै जोधपुर री रकम लागै—

आसांमी	जमे असल	संमत १७१५	१७१६	१७१७	१७१८	१७१९)
सेरीणो	६५६३)	४७७५)	५७१५)	५६६६)	५१७६)	१५५२)
बळ	१११४॥)	७५०)	९३२)	९४२)	८०८)	८६०।)
कड़ब घास	५६०)	२४३)	५५२॥)	५६४)	५८८)	७१८)
रसत	१९९८)	१३२५)	०	१५२५)	०	१६०८॥)]
घुमाळो	५७१)	४८८)	४९१)	१९४)	४९४)	५००)
पांनचराई	०	२१०५)	१८५२)	२१८६)	२६७५)	२५१७)

संमत १७२७.

सेरीणो	४२५०)
बळ	४४२)
कड़ब घास	५७७)
रसत	०
घुमाळो	३९७)
पांनचराई	२३३९)
लिखावणी	६९१)
रसत	०
फरोही	१७१९)
तळवानो	१३९)
मीलणो	१०९)

---

1. किस्त देखी ।

वाड़ ४४७५)
वारलो दांण ३२५२)
विसवो ५०१०)

परगनै मेड़तै री लागत—

आसांमी । जमा । १७१५ १७१६ १७१७ १७१८ १७१९.
सेरीणो नेंघ असल ७७९४।) ५१०१-) ६४५१॥≡) ५६७४।≡)
घोड़ां कावल ६०१४॥।=) ६४६४)
पोचड़ो ९३४) ५६२) ६७५॥।) ६२५॥) ६२३॥।-) ७०९।)

८७२८।) ५६६३-) ७१२७॥) ६२९९॥।≡) ६६३७॥≡) ७१७३।)

फरीई रा— ३०३०)

परगने सोझत री लागत—

आसांमी	जमा आः	सं. १७१५	१७१६	१७१७
सेरीणो	२३९१)	२१०२)३।	२२४१)४।	२०६८)२।
गुघरी	६९३॥)२।	५४१)१।	६००)	५३०॥)
बळ रा	३९७)	२४७)।२५	२८४)१।	२२६)३।
दुमालो	३४३॥।)	१२२।)	१३३॥)	१३४)
अरहट माडली	१६४॥)	७१॥)१।	११४॥।)	९१॥।)
मुकाती	.	५६॥)	६३।)१।	४५॥)३।
पांनचराइ	.	२४५॥।)१।	५०।)२।	९०॥।)२॥
रसत	१३३३)	८७२॥।)	.	८७२॥)

वरस कर— संमत	१७१८	१७१९	१७२०
	२१९४॥।)	२१६१-)	९०९२)[1]
	५९३)३।	५७३॥)	५१४)
	२७३॥।)	२४८॥।)	२६०)
	१३४)	१३३॥)	१३३॥)
	९३॥)	९३॥)[2]	८५॥)[3]

१. २०८२) । २. ९३॥।) । ३. ५८॥) ।

४७।।)	६१।)२।	३१)
९८।।।)२।	१५४।)२।	१४६।)
०	८८८।।)	०
०	०	४१७)

परगने जैतारण री लागत—

आसांमी	। जमे असल	संवत १७१५,	१७१६,	१७१७,	१७१८;	१७१९,	१७२०
सेरीणो	१७८१।।)	९४५।)	१५४०)	११०४)	९१९)	१०२४।)	८०७)
सीकिदारी	१३९७।।)	९९६।)[1]	१२९५।।)	९३०।।)	८३८)	९२५)	७४२)
बळ रा	१९५)	१६९)	१६९)	१५९)	१५५)	१४०)	११५)
मिलणो	५६)	३८)	५१)	४६)[2]	४०)	६७।)	३८।)[3]
रसत जगात	५७९।।।)	५३६)[4]	०	५३८)३।	०	५३६)	०
पांन चरांई	०	०	०	०	०	०	६७)
	४००९।।।)	२५८५)	३०५५।।)	२७७७।।)३।,	१९५२)	–	–

परगनै सीवांणां री लागत—

आसांमी	। असल जमे	संवत १७१५,	१७१६,	१७१७,	१७१८,	१७१९
सेरीणो	६२८)	३५५)	४९४)	४८७।।।)	४८७।।।)	४२८)
घीआई	७२०।।)	२२९)	४३०)	४३२)	४३२)	३९९।।)
वळरा	६९२।।)	३४४)	४९६)	४०५।।)	५०६।।)	४२३)
पानचराई	२७६।।)	२२६)	१००)	१००)	१००)	१००)
सिकदारी	०	२३।।।)५।	३०।)६।	२८।)३।	२८।।)	४७)३।
डुमालो	२६८।)	१६५।।)	२६८)	२६८)	२६८)	२६८)
सांढीया री गिणती	०	८०)	२७५।।।)	२५२)	१९२)	२५०)
रसत	९७)	९५)	०	९१।।)३।	०	८२।।)१।
	०	१५१८।)५	२०९४)६।	२०६५)६	२०१४।।।)	०

परगनै फळोधी री लागत—

आसांमी जमे असल संवत १७१५, १७१६, १७१७, १७१८, १७१९,
मावरा १६७६।।।) १३८७।) १५८४।।) १६९८।।)१। १७८६।।।) १८३४।।)४।

---

१. ८९६।) । २. ४५) । ३. ८३) । ४. ५३६।)१।

मेळी—

आसांमी	कापरड़ो	फळोदी	रामदे
संमत १६९२	०	८२९)	०
,, १६९३	१०५१)	५३९४)	०
,, १६९४	१०४३)	९५०९)	०
,, १६९५	२०१२)	४७५०)	०
,, १६९६	२११२)	१६४१)	०
,, १६९७	२०७४)	४७५०)	०
,, १६९८	०)	७४२८)	०
,, १६९९	३७०१)	६८७०)	०
,, १७००	५६४६)	८४०६)	०
,, १७०१	५२८३)	९०६१४)	०
,, १७०२	६४३७)	९५५४)	०
,, १७०३	६७५४)	१०१८८)	०
,, १७०४	२३०९)	१०३७५)	०
,, १७०५	३७०१)	५८५४)	०
,, १७०६	१०२९२)	७९७७)	०
,, १७०७	१०४०८)	७२७७)	१२९९)
,, १७०८	१५०५५)	८३३८)	४२१९)
,, १७०९	२०४२०)	१०१२९)	६२११)
,, १७१०	१४८३४)	१०३७२)	३४११)
,, १७११	१८०८४)	१४९०६)	३६६५)
,, १७१२	१४०५२)	९५१२)	२९९१)
,, १७१३	१४५२३)	१२०४४)	४६६५)
,, १७१४	१६०२८)	७५८१)	२९८१)
,, १७१५	०)	१६२३०)	२९९४)
,, १७१६	३७०००)	२४२००)	०
,, १७१७	८८४०)	१५८२०)	३६३२)

संमत	८	१३५००)	११८००)	३७०२)
,,	१७१९	१२७५४)	७२३०)	१७०१)
,,	१७२०	३८५०)	१७२०)	०
,,	१७२१	१३७९२)	७४६४)	०

२३८. परगनै जोधपुर पाय तषत संमत १५१५ रै जेठ बद ११ शने स्वात निषत[1] राव जोधै चिड़ीया टूंक रै भाषर ऊपर मंडायौ[2]

सु इतरा रावराजे जोधपुर भोगवीयौ—

वरस	मास	दिन	आसांमी
३०	०	०	राव जोधा, संमत १५१५ रा जेठ वद ११ शने स्वात निषत व्रष लग्न ।
३	०	०	राव सातळ जोधा रौ ।
२४	०	०	राव सुजो जोधा रौ, संमत १५४८ टीकै बैठौ, संमत १५७२ रा काती बद ९ काळ कीयौ ।
०	०	०	कंवर वाघौ सुजा रौ कंवर पदै हीज मुवौ, टीकै बैठौ नहीं, संमत १५५१ रा पोसं बद ७ जनम, संमत १५७१ भादवा सुद १४ काळ कीयौ ।

वरस	मास	दिन	आसांमी
१६	५	१३	राव गांगौ वाघा रौ ।
३०	५	८	राव मालदे गांगा रौ ।
१८	१	०	राव चंद्रसेन मालदे रौ ।
२	५	८	वरस राव चंद्रसेन काळ वस

1. नक्षत्र । 2. चिड़िया टूंक नामक पहाड़ी पर राव जोधा ने किला बनवाया ।

			हुवौ[1], नै मोटा राजा नु संमत १६४० धरती हुई।
			२ वरस ५ मास ८ दिन तुरकांणी[2] वरा माहे अेकलो रहो। वरस १॥ तथा २ राजा रायसिंघ बीकानेरीया नुं हुई।
११	११	०	राजा उदैसिंघ
२५	२	११	राजा सूरसिंघ
१८	७	२३	राजा गजसिंघ
			राजा जसवंतसिंघ संमत १६८३ माह वद ४ जनम, संमत १६९४ आसाढ वद ७ पाट बैठौ।

२३९. संमत १६४० काती वद ८ मोटौ राजा जोधपुर आयौ, पाट बैठौ, संमत १६३९ रै जेठ, आसाढ माहे अकबर पातसाह इतरा रुपीयां माहे—

आसांमी	मोटा राजा रुपीया	राजा सूरसिंघ रुपीया	राजा गजसिंघ रुपीया	माहाराजा रुपीया
जोधपुर	१५३६७५)	१९९१२५)	२५३५७५)	३६८१२५)
मेड़तौ	०	२०००००)	३०००००)	३५००००)
प्राः जैंतारण अेक वार रुपीया २५००००) दी थी संमत १७११ रुपीया ५००००) घटाया।	०	९८५०७)	१२५०००)	२००००)
सोझत टीकौ हुवौ तद रुपीया १५००००) दी हूती ५००००) वधी संमत १७११	१२५०००)	१२५०००)	१५००००)	२०००००)

1. काल कवलित हुआ. २. मुगल शासन।

सोवाणौ	३७५००)	३७५००)	६२५००)	७५०००)
फळोधी	०	६७५००)	६७५००)	६७५००)
जाळोर	०	२८७५००)	२८७५००)	२८७५००)
पोकरण	०	१४०००)	१४०००)	२००००)
गजसिंघपुरौ	०	०	०	१२५००)

२४०. परगनो जोधपुर रौ तफा १४ पातसाही मांहे तकसीमा[1] मांडै छै। तठा पछै संमत १७१९ कांनुगो महेसदास नुं मुः नैणसी पा: नरसंघदास इण भांत मंडाया छै, गांव १०९१ मंडाया सांवण बद ४—

तफा—

१ हवेली गांव ५०५
१ पींपाड़ गांव ७९
१ महेवौ गांव १०१
१ भाद्राजण गांव ८०
१ हवेली २६९   १ सेत्रावा २७
१ केतु २३   १ देछु ९
१ अईसा ११०   १ लवेरा ६७
१ आसोप गांव १६   १ वीलाड़ो गांव १५
१ वळुंदी वाहळो मोहळ २ गांव ८
१ पाली रोहीठ पारलौ मोहल ३ गांव ३५
१ पेरवो गांव ११
१ गुदवच गांव १०   १ पींवसर गांव ३८
१ दुनाड़ो गांव ३०   १ काठणो गांव ६१
१ ईंदावटी वहळवो गांव ४९
१ पोकरण सातळमेर गांव ५४ आगे जुदौ हुतो। संमत १७१९ हाफल मूर दळ वदळ कर[2] तफो कीयो।

६

१३६ [illegible]   ६९ फळोधी

[1] [illegible]

२४१. इतरा तफा दरगाह न मांडे नै देसी फिरसत[1] मांहे छै पिण ग्रै तफा ५ हवेली माहे मंडाया छै, संमत १७१८ रै असाढ माहे—

१ अईसा गांव ११०

१ सेतरावौ गांव २७

१ रोहीठ पाळी भेळी सदा दरगाह छै।

१ लवेरौ गांव ६७

१ देछु गांव ६

१ केतु गांव २३

परगनै जोधपुर पालसै हासल जमे बंधी री, गोतवारा री ठोक—

८७२६७)	संमत	१६६२
७४२८६)	"	१६६३
६६०६७)	"	१६६४
८८४२८)	"	१६६५
८३४८५)	"	१६६६
६३८०४)	"	१६६७
७८२१६)	"	१६६८
१०५६६६)	"	१६६६
१०६५२६)	"	१७००
६५७५८)	"	१७०१
११४५४०)	"	१७०२
१०२३८६)	"	१७०३
६५६७२)	"	१७०४
५४५४६)	"	१७०५
१३७८५०)	"	१७०६
६२३८५)	"	१७०७
८७२५६)	"	१७०८
१०७६८८)	"	१७०६
७६६०६)	"	१७१०
१४५८६८)	"	१७११

1. फहरिस्त।

१३९७७१)	संमत	१७१२
१३७६५०)	"	१७१३
१४५१९२)	"	१७१४
७२२७१)	"	१७१५
१२७४३४)	"	१७१६
१७८०८४)	संमत	१७१७
१९८१४३)	संमत	१७१८
)	संमत	१७१९
६५८०७॥)	संमत	१७२० रै बरस ।

परगनै जोधपुर रौ सालीनो संमत १७११ पुरवां विगत—

३०४५८२) संमत १७११

१७५३८० बरसाळी ९७६७२) ऊनाळी

२२३८६) घासमारी ९१४४) सांसण

३०४५८२)

२६३०५९) संमत १७१२

१४७३२०) बरसाळी ९२२८४) ऊनाळी

१८१२९) घासमारी ५३२६) सांसण

२६३०५७)

२८९२२१) संमत १७१३)

१५७६९२) बरसाळी १०३७२४) ऊनाळी

१८६४०) घासमारी ९१६५) सांसण

२८९२२१)

२८७८७१६) संमत १७१४

१३४७८२) सांवणु १२७३२४) ऊनाळी

२०६९०) घासमारी ५०६५) सांसण

२८३८७४६)

१५५९६७) संमत १७१५

३५७३४) सांवणु ११२६७२) ऊनाळो
६२९२) घासमारी १२६०) सांसण

१५५९६७)

६८१९४९) संमत १७१६

२४८६८) घासमारी ४४२०२५) सांवणुसांग
११९८५०) ऊनाळो ६१८२४) मापो,
१८७३६) वाजे रकमां १४६४६) सांसण

६८१९४९)

४७८७४४) संमत १७१७

२४२१३) घासमारी १८२३४९) वरसाळो
२१११२०) ऊनाळो २८५१४) मापो
११२७४) सांसण २१२७५) वाजे रकमा

४७८७४४)

७१९७५८) संमत १७१८

२४०१८) घासमारी ४६८१४८) वरसाळो
१२८०९७) ऊनाळो २८५४६) मापो मेळो
१८२९४) वाजे रकमां ३०६६५) सासण
२०००००) मेहवो

७१९७५८)

४६७७७२) संमत १७१९

२३६१५) घासमारी २७७९२०) वरसाळो साष
६८४८७) ऊनाळो ३३४२१) मापो मेलो
२१२७६) सांसण २०७१५) मापो
२५०५३) वाजे रकम १२७०६) मेळो

३३४२१)
१८०००) महेवो

४६७७७२)

१३१८२६) संमत १७२० रै बरस जोधपुर रै देस साल तमाम जमै ।

६५८०६) षालसौ

४४२५४) हासल

२८६७) माल घासमारी

२६७३६) ऊनाळु साष

२६७५) सांवणुं

५५७१) तुलाबट

२१०५) धांन

——————

४४२४५)

२१५५३) बाजे रकम

——————

६५८०७)

६६०२२) जागीरदारां सांसणां[1] रै गांवां रौ ।

——————

१३१८२६)

परगनै जोधपुर री सालीनौ नै तफा वरसाळी नै तक संमत १७११ पुरवा—

आसांमी	सं० १७११	१७१२	१७१३	१७१४	१७१५
हवेली	६८६६१)	५२११६)	६६२८१)	६५०००)	३३४२८)
पींपाड़	५६९९४)	४९५९२)	५८५६०)	५४५४२)	४५७०१)
वीलाड़ौ	२८२२५)	२१२०१)	२११९०)	२०३३०)	२६६१२)
वाहाळौ	१०४०९)	८९२१)	९३७४)	१०००२)	७७१४)
रोहीठ	८८७९)	११९८६)	९९३०)	८८३६)	३९८६)
पेरवौ	८५६१)	८३५०)	६२३७)	७५९`)	४२६०)
पाली	१३९७८)	१३४४०)	१२३५५)	१२१४८)	४९९३)
गुदवच	६३८३)	५०९७)	५४१०)	५६२९)	१४५३)
भाद्राजूण	२४४८३)	२११५५)	१८८८३)	१८९१८)	७२८६)
दुनाड़ौ	११७९०)	१६१३)	१२४९७)	१३२०२)	५७३८)

1. दान में दी हुई भूमि में आने वाले जागीरदार ।

कोढणो	५९६७)	६६१८)	५६८७)	७६९५)	१८०१)
बहेळवो	३४७०)	३५९४)	३३८०)	३४३८)	१३३६)
सेत्रावो	१५९०)	१४५०)	१८१६)	२०४०)	५९८)
देछु	९१५)	८७०)	६५०)	६६१)	२३८)
केतु	८६५)	९६६)	९२१)	७६९)	४०२)
आईसां	१३४५४)	१५६१२)	१८५०१)	१८९५८)	२७४८)
षींवसर	५८८३)	३१६७)	४६२९)	४८८८)	११०५)
लवेरो	१३०६०)	७५९२)	१८८३२)	१२९०९)	१२२२३)
आसोप	२१०२५)	१५५५८)	१९१८८)	२०१९१)	४३९१)
	३०४५८२)	२६३०५९)	२८९२२१)	२८७८७५)	१५५९६७)

आसांमी	संवत १७१६,	१७१७,	१७१८,	१७१९
हवेली	१४६४५५)	८६८६०)	१५५३३४)	९७०३४)
पींपाड़	१६७०७५)	१२०१६४)	१४११४३)	९४३४१)
बीलाड़ो	२९५९७)	५६९६८)	२९१६०)	२४४०६)
वाहाळो	१८५२८)	१६२९८)	१७८६९)	११९७२)
रोहीठ	२१९९१)	१३८५७)	२२३३२)	१३३२७)
घेरवो	१३४१४)	१३४९५)	१४९८१)	१०३९५)
पाली	१८३६१)	९५३८)	२२९०२)	१६८२३)
गुदवच	६०५६)	६५६७)	८११७)	४६०७)
भाद्राजण	३५३४४)	१३२३४)	४९१०७)	२७२४८)
दुनाड़ो	२३६८६)	२२४१५)	३११८८)	१८१३२)
कोढणो	१६३८६)	६८८३)	१८००३)	१०२९५)
वेहळवो	५४२७)	४५२२)	११५०८)	७४०६)
सेत्रावो	३३७०)	२४८५)	२४४६)	२३७७७)
देछु	१३८५)	९७०)	९८९)	९५०)
केतु	१७६५)	१३५०)	१९६१)	१५७०)
आसोप	४२१९६)	१५९५९)	२६१८९)	१९८८४)
लवेरो	४३८१२)	७२३५)	४४७२७)	२२३४१)
षींवसर	११९५९)	४०५१)	१८७३६)	९५६६)
आईसा	४२७१२)	३११९९)	६३७७२)	३११९७२)
	६४८२०२)	४३२०५९)	६८०४६४)	४२४७१९)

महेवो	०	०	०	०	०	१५०००)	२५०००)	२०००)	१८०००)
बाजे रकमां	०	०	०	०	०	१८४४७)	२१६८५)	१९२९४)	२५०५३)

३७४६४) था तिण में
१२४११) जूना सुरबी रा बाद

६६१६४६) ४७८७४४) ७१६७५६) ६७७७२)

२४२. संमत १७१४ रै भादवा सुद ७ पातसाह साहजहां नुं जहमत[1] आई। पातसाही सारी री मदार साहजादे दारासकोह माथै छै। दारासाह हजूर छै। पछै पातसाह साहजहां नुं जहनावाद जहमती थकां माहाराजा श्री जसवंतसिहजी राजा जैसिघ, गौड़ अनरूध, पठांण दलेलषांन राजा रूघनाथ और सारा हिंदु मुसलमान साथे हुय अभी जमना ले मथुरा आया। दीवाळी मथुरा की, काती सुद ५ तषत बैठ नै कोट माहे पातसाहजी पधारीया। उठै पधार नै पछै साहिजादा सलेमासको राजा जैसिघ नुं हजारी जात हजार असवार ईजाफो कर साथे घणा हिंदू मुसलमांन देनै पूरब साहजादा सुजा ऊपर विदा कीया। तठा पछै संमत १७१४ रा पोस बद ७ माहाराजा श्री जसवंतसिघजी नुं साहजादो औरंगजेब दिषण थौ, साहेजादो मुरादबगस दीषण थौ सु इण सिर उठायौ तरै श्री माहाराजाजी नुं ऊजेण रै सूबां नुं विदा कीया। सिरपाव कांब १ तरवार १ हाथी १ हथणी १ दे विदा कीया। श्री महाराजाजी हीडवांण माहे हुय ऊदेही रै परगनै हुय कोट[1] माहे हुय माह सुद १३ उजीण पधारीया। होळी उजीण की। दिषण थी औरंगजेब असवार हुवौ। गुजरात थी मुरादबगस चढीयौ। अे दोनुं भेळा हुवा। अेक वार बैसाष बद २ श्रीजी षीचरोद[2] नुं असवार हुआ।
२४३. इण मुनसपदार श्री माहाराजाजी साथे विदा हाजर था सु कीया, दूजां नुं फरमान हुवा।

असवार २३२४७ मुनसबदार आसांमी २६६ बरंकदाज १००० पातसाही तिण री विगत—

१८५३५ जावता चौथाई असवार
आसांमी ११२ त्यां में असवार १८५३५ कलमो।

१. कोटे। २. पाचरोद।

1. बीमारी, कष्ट।

२९१४ जावतां पांचमे हेंसै[1] तिण रा कलमी १४५७ आसांमी
१५२
८०२ आसांमी २ जावता आधोआध कलमी १६००

२२२५१

बरकदांज १००० अलाहधा[2]।

१२६८३ रिकाव आसांमी १७६

९५६४ जागीरी सुधा आसांमी

२२२४७

तफसील[3]—

३००० तफसील ऊमदे राजा हाईलीतवार माहाराजा जसवंतसिंघ सात हजारी असवार तिण में पांच हजार दोसपा सेंसपा, दोय हजार बावरदी

२५८० आसांमी ५ कासमषांन वगेरै

२५०१ कासमषांन पंचहजारी पांचहजार असवार, दुसपा सेसपा।

२६ जानीबेग बाकी बेगरी बेटो कासमषांन रो भतीजो। सातसै तीस असवार।

५१ सैद अैहमद सैद मेहमद रो बेटो कासमषांन रो जंवाई पांचसदी असवार दोयसो।

१ फरीदहुसेन तरबीयतषांन री मां रै काका रो बेटो।

१ मुदफरहुसैन पौण सदी।

२५८०

१६५९ आसांमी महबतषांन वगेरै राजा रायसिंघ आयो।

१५०० महबतषांन षां: लोहरासषांन महबतषांन रो बेटो, पंचहजारी पांच हजार असवार चार हजार बावरदी अेक हजार दुसपा सेसपा।

1. हिस्से के। 2. अलग से। 3. विवरण।

५१ तेहमास महबतषांन रौ बेटौ सात सदी अढाई सौ असवार ।

१५ दलेल हीमत बड़ा महबतषांन रौ बेटौ ।

७ दिलदलेल अढाइ सदी, तीस असवार ।

३९ गौड़ उदैभांण चार सदी दोय सै असवार ।

२६ गौड़ हरीभाण तीन सदी सौ असवार ।

१५ मीर इसमाल तीन सदी आठ असवार ।

४ लाहोरीगर ससत रौ बेटौ दोय सदी बीस असवार ।

१ षोजौ ईलास षोजा षिदर रौ बेटौ, अेकसदी ।

१६५९ आसांमी ९

महबतषांन नुं काबल मेलीयौ नै राजा रायसिंघ सीसोदीया नुं ताबीन बीजा ही दीया ।

१२५१ मालुजी दिषणी पांचहजारी पांच हजार असवार ।

१२०८ इकतयारषां वगैरै आसांमी २

११५१ ईकतयारषांन अबदुला जषमी रौ भतीजौ । तीन हजारी तीन हजार असवार तिण में सोळैसै दुसपा सेंसपा चवदैसै वावरदी ।

५७ अवलमकारम ईफतयारषां रौ बेटौ तीन सदी दोय सै असवार पचास दुसपा सेसपा अेक सौ वावरदी ।

१२०८

६५२ नवसेरीषांन वगैरै आसांमी २ ।

६२६ नवसेरीषांन षांनदोरां रौ बेटौ तीन हजारी तीन हजार असवार ।

२६ षोजौ अइय वारासदी सौ असवार ।

६५२

५५२ आसांमी ४ हाडा मुकंदसिंघ वगैरै ।

५०१ हाडौ मुकंदसिंघ माधोसिंघोत तीन हजारी दोय हजार असवार ।

२६ हाडौ झुंजारसिंघ चार सदी सौ असवार ।

१६ हाडौ कानीरांम तीन सदी साठ असवार ।

९ हाडौ फतैसिंघ दोय सदी चाळीस असवार ।

५५२

२५१ परसोजी दिषणी तीन हजारी हजार असवार ।

१३१४ बुंदेला आसांमी ७ राजा सुजांणसिंघ वगेरै ।

११२६ राजा सुजांणसिंघ अढाई हजारी अढाई हजार असवार दुय हजार दोसपा सेसपा ।

१०१ ईंद्रमिण सुजांणसिंघ री भाई पांचसदी पांच सै असवार ।

२६ जगदेव नरहरदास रौ राजा बरसिंघ रौ पोतौ चार सदी रौ असवार ।

११ गौड़ हीरामणि किरपाराम गौड़ रै काका रौ बेटौ दोय सदी चाळीस असवार ।

१० गौड़ परसरांम अेक सदी पैंतीस असवार ।

२६ बुंदेलौ चुतरंग चंद्रमण रौ दोय सदी सौ असवार ।

१४ परवतसिंघ चंद्रमण रौ दोढ़ सदी पचास असवार ।

१३१४

६९१ राजा सिवरांम वगेरै आसांमी ३

६२६ राजा सिवरांम अढाई हजारी अढाई हजार असवार ।

३९ गौड़ सदारांम चार सदी दोढ सौ असवार ।

२६ गौड़ सुरजमल सिवरांम रौ बेटौ तीन सदी सौ असवार ।

६९१

३८७ कुतबषांन वगेरै आसांमी ४३ ।

२५३ सैद सेरषांन वगेरै आसांमी ५

२५१ सीसोदीयौ सबळसिंघ ...

४२२ अबदुलाषांन ईदलषांन रौ बेटौ दोय हजारी ।
६३१ राजा देवसिंघ बुंदेलौ ।
६२६ राजा देवसिंघ भारथसाह रौ दोय हजारी दोय हजार असवार ।
५ गजसिंघ देवसिंघ रौ जंवाई ।

५१० राः रतन महेसदासोत आसांमी २
५०१ राः रतन दोय हजारी दोय हजार असवार ।
६ राः फतैसिंघ महेसदासोत अढाई सदी ।

५१०

३६२ अरजन गौड़ वगेरै आसांमी २
३७६ गौड़ अरजन वीठलदासोत । दोय हजारी दोढ हजार असवार ।
१६ गौड़ सूरसिंघ दोय सदी तीस असवार ।

३६२

२६० चंद्रावत अमरसिंघ वगेरै आसांमी ३
२५१ राव अमरसिंघ हरीसिंघोत । दोय हजारी हजार असवार
२६ चंद्रावत सुजाणसिंघ बीठळदासोत । तीन सदी सौ असवार ।
१३ किल्यांणसिंघ वीठळदासोत दोय सदी पैताळीस असवार

२६०

३३४ सीसोदीयौ सुजांणसिंघ वगेरै बेटां सुधौ ।
२५१ सुजांणसिंघ सुरजमलोत दोय हजारी हजार असवार ।
५१ फतैसिंघ सुजांणसिंघोत पंचसदी ।
२१ दौलतसिंघ सुजांणसिंघोत तीन सदी ।
११ रामचंद सुजांणसिंघोत ।

३३४

२२७ मुकलसषांन वगेरै आसांमी २, चकतौ ।
२१२ राजा अमरसिंघ कछवाहौ नरवर रौ धणी ।

२५१ राजा अमरसिंघ दोढ हजारी हजार असवार ।

६१ जगतसिंघ अमरसिंघोत दोय सदी साठ असवार ।

३१२

१५९ सैद मुदफरषांन सुजायतषांन री दोढ़ हजारी आठ सै असवार ।

२२७ सैद महमद वेग चांदवेग तीन हजारी ।

६०१ रावळ समरसी वास वाहळा री जमीदार । हजारी हजार असवार दुसपा सेसपा । आठसै वरावरदी, जमीदार आवा रापै ।[1]

२५१ सैद सोलार हजारी असवार हजार ।

१४१ षाजो ईनाइतुला अवदुलाषांन री जंवाई हजारी जात सो असवार ।

१५३ दौलतषांन हजारी जात छसै असवार ।

१५१ चौहाण चुतरभुज लषमणसेन री पोतो । हजारी जात छ सै असवार ।

१४० रा: महेसदास सुरजमलोत आसांमी २ ।

१२६ रा: महेसदास हजारी जात पांच सै असवार ।

१४ रा: झुंझारसिंघ महेसदासोत । दोढ सदी पचीस असवार ।

२४४. इतरो साथ तावीन दे श्रीजी नुं विदा कीयो हुतो । सु संमत १७१४ रै माह सुद १३ श्री माहाराजाजी उजीण पधार नै राजा वीकमादीत रा जठै मोहथल आगे था तठै डेरा कीया । होळी अठै की ।

पातसाही उमराव इतराहक आय हाजर हुवा । हिंदू—

१ माहाराजाजी श्री जसवंतसिंघजी ।

१ रा: रतन महेसदासोत ।

१ गौड़ ऊरजन वीठळदासोत ।

१ राव अमरसिंघ चंद्रावत ।

१ सीसोदीयो सुजांणसिंघ सुरजमलोत ।

1. जमींदार आधी सेना रखते हैं ।

१ षेलुमालु दीषणी ।

३ सीसोदीया सकता ऊतरावत नारणदास रा बेटा ।

१ राजा रार्यासघ भींवोत सीसोदीयौ ।

१ हाडौ मुकंदसिंघ ।

१ गौड़ भींव वीठळदासोत ।

१ राः गोवरधन चांदावत ।

१ राः महेसदास सुरजमलोत ।

१ राजा सुरजांणसिंघ ।

१ झाला दयालदास राघोदासोत ।

मुसलमांन

। कासमषांन

॥ अकतयारषांन

उजीण री बेढ़—

२४५. अेक वार संमत १७१४ बैंसाष बद ७ षबर आई। उजेण जुझाव-आरी घाटी हुय मुरादबगस आवै । तरै श्री माहाराजाजी उजेण था बैसाष बद २ कूच कीयौ। सिपराजी रे पार डेरौ कीयौं ।[1] दिन ३ उठे रहा पछै षाचरोद उजेण था कोस १० ताऊ[2] पधारीया । उठे गौड़ सिवरांम माडव किलेदार थौ । तिण षबर मेली जु औरंगजेब नरबदा लोपी । तरै श्री माहाराजाजी षाचरोद था असवार हुवा । दिन २ बीच डेरा हुवा । बैसाष बद ८ चोर नराईण गांव गंभीर नदी ऊपर आंण डेरौ कियौ । उजीण था कोस धरमातपुरी[3] उठे ठौड़ तिण दिन औरंगजेब पण कोस १॥ आयौ । डेरा बैसाष वदि ८ कीया । बैसाष बद ६ दिन पोहर १ चढा चढतां पोहर १॥ चढा । श्री माहाराजाजी लड़ाई कीवी । पातसाही फौज हारी । तठै इतरौ साथ श्री माहाराजा जी रौ कांम आयौ, विगत—

६ चांपावत

१ राः वीठळदास गोपाळदासोत ।

---

१. क्षिप्रा नदी के दूसरी ओर डेरा किया । २. तक । ३. यह युद्ध इस स्थान के नाम पर ही धरमत का युद्ध कहलाता है ।

१ रा: षेती षानावत ।

१ भोजराज ।

१ रा: गिरधरदास मनोहरदासोत ।

१ रा: दयाळदास सुरजमलोत ।

१ रा: भींव वीठळदास गोपाळदासोत ।

१ रा: बीजैराम हरीदासोत गोपाळदासोत ।

१ रा: नरसिंघदास अमरी सुरजनोत ।

१ रा: रांमचंद नरहरदासोत ।

१ रा: लिषमीदास जोगीदासोत ।

१ रा: कीरतसिंघ मांनसिंघोत ।

९

६ कूंपावत

१ रा: किलांणदास वैरीसालोत ।

१ रा: अमरौ हरीदासोत ।

१ रा: लाडषांन जैंसिघोत ।

१ रा: षेतसी बलुवोत ।

१ रा: भावसिंघ किसोरदासोत[1]

१ रा: दुवारकादास लाडषांनोत[2]

६

६ ऊदावत जैतारणीया

१ रा: बलरांम दयाळदासोत ।

१ रा: कुंभकरण बलरांमोत ।

१ रा: वीरमदे मुकंददासोत ।

१ रा: सूरदास बैणीदासोत ।

१ रा: देवीदास सूरदासोत ।

१ रा: आसकरण बलरांमोत ।

६

१. केसोदासोत । २. वीकावत री ('ख' प्रति में अधिक) ।

४ जैतावत

१ राः करण सुजांणसिघोत ।

१ राः जोगराज[१] कुंभकरणोत ।

१ रा. ऊदैभांण भगवांनदासोत ।

१ राः कांनो[२] गोवंददासोत ।

४

५ करमसीयोत

१ राः पिरथीराज दलपतोत ।[३]

१ राः जैतसी मुकंददासोत ।

१ राः गोरधन माधोदासोत ।

१ राः इंद्रभांण सवळसींघोत ।

१ राः गिरधरदास माधोदासोत ।

५

६ मेड़तीया

१ राः सवळसिंघ उदैसिंघोत रोहणीयौ ।

१ राः गोपीनाथ गोकळदासोत ।

१ राः मुरारदास गोयंददासोत ।

१ राः गिरधदास सुजांणसींघोत ।

१ राः किलांणदास मोहणदासोत ।

१ राः हेमदास ऊगरौ[४] सुंदरदासोत ।

६

५ जोधा

१ राः परतापसिंघ करमसींघोत[५]

१ राः जगतसिंघ देईदासोत[६]

१ राः रतन गोपाळदासोत ।

---

१. जुगराज । २. कान । ३. हरदासोत ('ख' प्रति में अधिक) । ४. महेसदास ऊगरा । ५. भोजराजोत ('ख' प्रति में अधिक) । ६. रायमल रो पोतरो ('ख' प्रति में अधिक)

१ राः ईसरदास माहासींघोत ।
१ राः वीरमदे मोहणदासोत ।

५

['४ भादावत
अषैराजोत रावळ अपैराजोत रा ।
१ राः पुरणमल जसावत रावळोत ।
१ राः गोयंददास मांनावत रावळोत ।
१ राः गोव्रधन भगवांनदासोत ।
१ राः विहारीदास केसोदासोत

४

२ ऊहड़
१ ऊहड़ मेघराज उरजनोत ।
१ ऊहड़ नारायणदास गोयंददासोत ।

२

४ पातावत
१ राः भगवांनदास मांडणोत राणावत ।
१ राः भगवांनदास सकतावत ।
१ राः तोगो रांमदासोत ।
१ राः जगनाथ चांदावत ।

४

१ रूपावत
१ सबळसिंघ आसकरन पुरावत रौ ।

१

१ पुरबीया
१ राः ऊदैसिंघ बाजषांनोत ।

१

१. 'ख' प्रति का अंश ।

१ महेचा

१ रा: मनोहरदास किसोदासोत

१

१ कुम्हांणीयो नारांण वाघावत गांव थापण पटै देवीदास रै बदळै था।

४ भींवोत

१ रा: अमरो सुजावत

१ रा: रूपसी सुजावत

१ रा: सुरतांण

१ रा: लखो लिखमीदासोत

४

१ वालावत

१ किसनदास वैणीदासोत

१

२१ भाटी

१ भा: महेसदास अचळदासोत

१ भा: केसरीसिंघ अचळदासोत

१ भा: विसनसिंघ रांमचंदोत

१ भा: दुरगदास केसोदासोत

१ भा: माधोदास केसोदासोत

१ भा: नरसंघ भांणोत

१ धा: जतमाल जगनाथ भैंरूंदासोत

१ भा: दयाळदास लिषमीदास गोयंददासोत

१ भा: मांनसिंघ गोपाळदासोत

१ भा: भांण मनोहरदासोत

१ भा: ऊदैसिंघ माधोदासोत

१ भा: रतन भींव पिराघदासोत

१ भा: गोकळदास सांकरदासोत

१ भा: केसरीसिंह वीठळदासोत

१ भा: भगवांनदास रायमलोत
१ भा: कुंभो सुरताणो[1]
१ भा: सुजांणसिघ सुंदरदासोत
१ भा: लीषमीदास ईंदरदासोत
१ भा: रतनसी स्यामदासोत
१ भा: रामचंद सादुळोत
१ भा: गजसिघ लपा भानीदासोत

२१

३. सोनगरा

१ सो: माधोदास केसोदासोत रजपूत ५ था
१ सो: गोकळदास भाषरसीयोत
१ सो: नाहरषां भाषरसीयोत

३

६. चौवांण

१ चौ: दयाळदास लिषमीदासोत
१ चौ: नरसिघदास लिणमीदासोत
१ चौ: जैतसो सेहसमलोत
१ चौ: दुदो गोरधनदासोत
१ चौ: किसनदास दयाळदासोत
१ चौ: प्रिथीराज दयाळदासोत (णबर करणी)[1]

६

६. ईंदा

१ ईंदो दयाळदास जगनाथोत
१ ईंदो नाथो जैतावत

१. सुरतांणोत।

1. नाम के बारे में लेखक को संशय है।

१ ईंदो नांदो कनळावत
१ ईंदो सारंग नरहरदासोत
१ ईंदो मनोहर गुणेसोत
१ ईंदो रांम टोलावत

६

२. भायल

१ रामसिंघ कचरावत गुठन
१ देदो सांवळोत सांवत रो बदलो गोवड़ी पटै

२

१. मुंहतो

१ मो० किसनदास सिंघोत

१० राः सुजानसिंघ केसरीसिंघोत रा चाकर कांम आया—

१ राः रांमचंद सेणावत वालावत
१ रा दुरजनसिंघ गोयंददासोत
१ सींघवी देदो गोपी रो बेटो
१ सुंडा रांमसिंघ सांवळोत
१ आसायच नाहरखांन ईसरोत
१ पंवार चुतरो साजनोत
१ मेहर सादूळ
१ वागड़ोयो हदो
१ भाटी मनोहर
१ गुडालो दुरजन

१०

१८ खवास पासवांन

३ धांधळ

१ धांधळ जसवंत ईसरदास रो
१ धांधळ सारंग हींगोळावत कोठार
१ धांधळ सेहसो सांवळदास पंचाईणोत रो

३

१ धायभाई पिरागदास चांपावत

३ सांहाणी पड़ीयार

१ सांहाणी कमौ अणैराजोत

१ सांहाणी राघौ केसोदासोत

१ सांहाणी सादौ भींवा नांदावत री

३

४ चौहांण अवदार

१ चो: राघोदास सादुळोत अवदार

१ चो: रांमदास पांचावत अवदार

१ चो: मानो सुजावत वरंकदाज

१ चो: भांनो सुजावत वरंकदाज

४

४ पंवार चीतीवांन

१ पंवार सुजो सांवळ रौ

१ पंवार भोजौ जसंवतोत

१ पंवार करन माधावत

१ वंवार धनौ रतनावत

४

१ वेसा जगमाल

२ सोलंकी हीड़ागर

१ सोळंकी सूरो रतनावत बरकंदाज

१ सोळंकी हदौ चरवादार

२

१८

४ दफतरी

३ पंचोळी

१ पा: कांन नरसिंघदासोत भाबरीयौ

१ पा: गोरधनसि चांदासोत भीवांणी

१ पा: केसोराय मलुकचंदोत

३

१ भगता नारानंद पुरांणो

४

४ बांमण

१ श्रोमत दलपत मनोहरदासोत सिवड़

१ व्यास देईदांन सांकळोत पोकरणो

१ बोरांमण हरी पाठक रतोड़ा रो चाकर

१ जोसी रिणछोड़ गिरधर रो चौडावतणी रो

४

१० बीजा हीड़ागर

१ पलाणीयो नरो मानावत

१ पेरा रोहड़ो रतनावत

१ नुतरो आलेचो भाः ताराचंद री चाकर

१ बांणदार वीठळ

१ जळेबदार दोलतखा

१ पीची जोगीदास कलावत

१ ईंदो मनोहर रराोड़ा री चाकर

१ पिड़ियो जगमाल

१ आसायच जगो पीरागोत फोजदार

१ वाघो आघोळीयो कानावत

१०

१ फौजदार जगो पिरागोत

उमरावां रा चाकर कांम आया—

राः करन सुजाणसिंघोत रा रजपूत कांम आया

१ हूल वीठळदास भाखरसीवोत मांडा री पोतरो

१ रा अणैराज आसकरनोत जैतमाल

१ चौहाण फरसो धनराजोत

१ सीसोदीयो जींवंराज सादुळोत

१ गुगो रांमदास

१ कोठारी नेतो]

९ राः उदैभांण भगवांनदासोत रा रजपूत

१ राः करन गोयंददासोत[1]

१ भाः दलपत सुजावत

१ चौः अचळौ लषसेण[2] रौ

१ चुः मेहौ सुरजनोत

१ घांधळ डूंगर वीणसीत[3]

१ सींधल वलु सहेलावत रौ

१ तुंवर सांवळ

१ मोहण नाई

१ सोहड़ सतौ भानावत

९

१ राः जगराज कुंभकरनोत चाकर सोलंकी जैसिंघ।

२ राः वछराज दलपतोत रा चाकर

१ हुल लाडषांन मेघराजोत मंडरी पोतो

१ दहीयौ ईसर

१ राः राजसिंघ भगवानोत र चाकर

१ राः मानसिंघ ठाकुरसोत भादावत

७ राः प्रथीराज दलपतोत रा रजपूत

१ सांषलौ अचळौ हदावत

१ रांमसिंघ राठौड़[4]

१ सोळंकी सांईदास कांधलोत

१ राः गोरधन माधावत

१ राः किरतो बघेरामोत रौ

१ साः भगवान कमावत

१ धाईभाई षेतौ भगवानोत

७

---

१. उरजनोत (अधिक)। २. लखणोत। ३. रेणावत। ४. रांमोत (अधिक)।

१२६ दरवाज़े माहे आवतां पोळ कनां सुं डावै रसतै पुवासपाना सामले रसतौ—

१२१ माहाजनां री

३ सौदागीरां री

४ गांछां री

१२६

२६५

२३ जाळोरी दरवाजा बाहर हाटां छै।

५ जीवणै बाजु दरवाजे में पैसतां

१८ डावै बाजु दरवाजा में पैसतां

२३

४०५ जाळोरी दरवाजा माहे पैसतां पदमसर सुधी[1]—

१९८ दरवाजै माहे पैसतां जीवणै वाजु

१७७ माहाजनां री

१८ तेरवां री

३ कसारां री

१९८

२०७ दरवाजा माहे पैसतां डावै वाजु—

१८९ माहाजनां री

१५ तेरवां री

३ मोचीयां री सु घाटी में

२०७

४०५

१८ मढां माहे

३ ठाकुरदास सांमी

1. पदमसर तालाब तक।

५ चोतरा री बाजु
१० श्री ठाकुरदवारो

१८

४ रातानाडा रै दरवाजे बारै छै
३ जीवणी बाजु
१ डावी बाजु

४

३६ दरवाजा माह गंगदास री पोळ सुधी—
रातानाड़ा री दरवाजे सुधी
२० जीवणै रसतै
१६ डावै रसतै

३६

६ माहावीरजी रै देहरा पाछै साडण सुथार रै घर कनै ही
३ सिलावटां री गळी में रामचंद्र मुंधड़ा[1] कनै
४ मुलनायकजी रा देहरा नीचै
१५ गधयारी[2] गळी माहे दरवाजा सुधी
१५ दरजीयां री हाटड़ीयां छै

८१५

संमत १७२१ बैसाष वदि १ श्रीकंवरजी पाः हरकिसन नुं हुकम करनै धरती मापी।

डोरी	पांवडा	आसांमी
६५	१३००	बाग[3] कागो नागोरी दरवाजा सुं कुंज सुधौ।
८५	१७००	वहूजी सरूपदे री तळाव नागोरी दरवाजा सूं।

१. घर। २. गादहीया। ३. कागो।

५ गुदौंच	३३ दुनाड़ौ
२१ सेत्रावो	१५ केतु
१६ ग्रासोप	७ देछु
७ बाहाळो	७६ ग्रोसीयां
५६ भाद्राजण	

७३५

१७८ गांव बेरांन

१२६ गांव सांसण छै

गांव १०३६ तफा १६

गांव १ १२८ तफै १ महेवो

११६७ गांव

विगत गांव तफा वार इण भांत बसै ३१४ जाटां रा गांव—

२१५ निषालस जाट गांव में बसै छै[1]—

७५ हवेली	४१ पींपाड़
३ पाली	५ दुनाड़ो
२२ ग्रोसीयां	२६ लवेरौ
३ बीलाड़ा	३ वाहाळौ
७ कोढणी	३ वहैळवा रा
१२ पींवसर	३ ग्रासोप

२१५

६ जाट विसनोई भेळा वसै छै।

२ हवेली	१ पीवसर	४ ग्रोसीयां
१ पींपाड़	१ लवेरो।	

६

७६ जाट रजपूत भेळा वसै छै—

३७ हवेली	६ पींपाड़
१ बीलाड़ो	१ पींवसर

१. केवल जाट गांव में बसते हैं.

१७ ओसीयां १ वाहाळी
११ लवेरी १ पाली
१ दुनाड़ी ३ आसोप
७६

५ जाट रजपूत बोहोरा वांणीया भेळा वसै छै।
४ गांव पीपाड़ रा १ वाहाळी
५

२ जाट सीरवी वांणीया भेळा वसै।
१ हवेली १ वीलाड़ो
१ जाट वांणीया षारोळ भेळा वसै छै। तफै हवेली री गांव
१ जाट रैबारी भेळा वसै छै तफै पींपाड़ री गांव
१ जाट पलीवाळ वांमण वसै तफै ओसीयां री गांव
१ जाट नै पटैल भेळा वसै तफै हवेली री गांव
३१४

५ नंदवाण वोहीरा वगैरे रैत[1] वसै छै।
३ हवेली री १ पींपाड़ १ लवेरी
१२ माहाजन रैत रजपूत भेळा वसै छै।
३ हवेली १ पाली १ रोहठ २ कोढणी १ पींपाड
१ दुनाड़ो १ गुदोच १ रोहठ १ पींवसर
१२

४२ बिसनोयां रा गांव वसै छै।
३० निषालस बिसनोई वसै
१० हवेली रा २ कोढणी
१ लवेरी ६ पींपाड़
१ आसोप १० ओसीयां
३०

११ बिसनोई जाट भेळा वसै छै।

1. जनता।

५ हवेली ३ ओसीयां ३ पींपाड़ रा

११

१ बिसनोई रजपूत भेळा बसै छै

१ ओसीयां रौ गांव

४२

४५ पळीवाळां रा गांव

३७ निषालस पालीवाळ बसै ।

१० हवेली रा ५ पाली रा

६ रोहीठ १२ कोढणो १ ओसीयां

३७

४ पलीवाळ नै जाट भेळा बसै

१ हवेली १ रोहठ २ पाली

४

४ पलीवाळ जाट रजपूत पटेल भेळा बसै

१ पाली १ ओसींया १ भाद्राजण १ कोढणौ

४

४५

६ माळीयां रा गांव । तफै हवेली रा गांव ।

३ कुंभार रजपूत भेळा बसै

१ हवेली १ पेरवौ १ भाद्राजण

३

सीरवो जाट भेळा वसै

२ हवेळी २ वाडाळौ १ गुदोच

२ पींपाड़ १ पाली ४ पैरवौ

३ वीलाड़ौ १ भाद्राजण

१३६

८१ पटेलां रा गांव

४७ निषालस पटेल वसै छै ।

५ हवेली रा ४ पाली १६ दुनाड़ो

७ रोहठ १५ भाद्राजण

४७

४ पटेल नै जाट भेळा वसै

तर्फ हवेलो रा गांव

२३ पटैल रजपूत भेळा वसै छै

१ हवेली १६ भाद्राजण १ कोढणी

१ रोहठ ४ दुनाड़ी

२३

३ पटेल नै विसनोई भेळा वसै ।

तर्फ हवेली रा गांव ३

३ पटेल नै वांमण[1] भेळा वसै ।

१ हवेली २ रोहठ

१ पटेल नै कुंभार भेळा वसै ।

तर्फ हवेली री गांव

८१

१९६ रजपूतों रा गांव

१६७ निपालसै गांव रजपूत वसै छै ।

२७ हवेलो	१ रोहठ	९ पाली
५ देछु	२८ सेत्रावो	४ षींवसर
१७ भाद्रजण	३ दुनाड़ो	२३ वहेळवो
२ गुडुवो	२६ कोढणो	१ वीलाड़ो
१ षेरवो	१३ केतु	१४ ओसीयां
३ लवेरो ।		

१६७

1. ब्राह्मण ।

११ रजपूत जाट भेळा बसै ।

१ हवेली ३ लवेरौ ३ बहेळवौ

२ ओसीयां २ दुनाड़ौ ।

११

४ रजपूत मैणा बांणीयां रबारी भेळा बसै

३ भाद्राजण १ गुदवच

४

६ रजपूत मुसलमांन भेळा वसै छै ।

१ कोढणौ २ केलु २ सेत्रावौ

१ देछु

६

४ रजपूत बांणीया बसै

२ बहेळवौ १ सेत्रावौ १ देछु

१ रजपूत जाट पलीवाळ भेळा बसै

१ बहेळवे रो गांव

२ रजपूत विसनोई भेळा वसै

१ ओसीयां रौ १ पींपाड़ रौ

१ रजपूत जाट सोरवी भेळा बसै

१ पैरवा रौ गांव

१९६

८ रवांरीया रा गांव

४ हवेली १ लवेरौ

१ पींपाड़ २ ओसीयां

८

२ पारोळां रा गांव

१ हवेली १ पींपाड़

२

१ घांची रजपूत भेळा वसैं
१ पालो रौ गांव
१ सुताहरां रौ वास
१ हवेली रौ गांव
३ फुटकर
२ भाद्राजण १ लवेरौ
बांमण जाट सैणा चारण वसै छै।
तर्फ वीलाड़ी १ हेसो षालसै ३ सांसण गांव १ माहे।
७३५। तफा १९ रौं मेळ छै
४३१।।। बीजा
३०३।।। तफा १९ माहे
१७७।। बेरांन १२६ सांसण छै
१२८ तफो १ महेवा री
६७ बसता ४३ सूना १८ सांसण छै।
४३१।।।
११६७

२४८. **परगनै जोधपुर रा गांवां री विगत**

४२ बिसनोयां रा
१५ हवेलो रा
१० निषालसै बिसनोई बसै
१ षारौं लुणावौ
१ सालवड़ी १ रिड़कली
१ ढोलावासणी गुढा रौ वास
१ फींच १ फीटका वासणी
१ दसोर १ धनावासणी गुढा रो
१ नादीवड़ो १ षेजड़ली बडी
१०

५ विसनोई भेळा बसै

१ पीथळवास १ ताबड़ीयौ बडौ

१ रामड़ावास षुरद

१ जुढ १ रसीदौ

५

१५

९ पींपाड़ रा—

६ निषालसै बिसनोई वसै

१ घौरू[1] १ अरटीयो षुरद १ कुहड़

१ रामड़ावस वडौ १ तिलवासणो

१ होगवाणोयो

६

३ बिसनोई जाट भेळा बसै

१ बुरछा १ बाघोरीयो १ लांबो

३

९

२ तफै कोढणा रा विसनोई निखालस बसै

१ डोहळी १ जोलीयाळी

२

१४ ओसीयां रा तफा रा—

१० निषालसै विसनोई बसै छै।

१ काभड़ौ[2] १ माणवड़ौ

१ वेगड़ीयौ १ पीदाकोहर[3]

१ आपु २ पेतासर वास

३ वीकुकोहर रा वास

१ पुवांरां री

---

१. घोरू । २. कानड़ौ । ३. वीदा कोहर ।

१ काभड़ी पुरद
१ सरमटीयौ
१०
३ विसनोई जाट वसै
१ मतोड़ो १ जापण १ डांवरो
१ विसनोई रजपूत भेळा वसै ।
१ मालांसरीयो
१४
१ तफै लवेरै री विसनोई निपालस वसै छै ।
१ गांव वीरणी
१ तफै आसोप-निपालस विसनोई वसै छै ।
१ हींगोळी
४८
४५ पलीवाळां रा गांव—
११ तफै हवेली
१० निपालस पलीवाळ वसै छै ।
१ राजपुरौ गुढारौ १ वीराहमी[1]
१ पारीवेरी भींवोता री
१ वीरड़ावास १ जाजीवाळ नाथु री
१ काकेळाव १ पारी वेरी वडी
१ वांणीयावास
१ नीवली कांकाणी री
१ गुजरावास वीराहमी री
१०
१ पलीवाळ नै जाट भेळा वसै छै ।
१ लुणवास वडी
११

१. ब्राहमली ।

७ रोहीठ तफै—

६ निषालस पलीवाळ बसै छै ।

१ मुगलो   १ ढुढड़ी   १ नींबली

१ भांडेवी   १ हरावास   १ षारला

६

१ पलीवाळ जाट भेळा बसै ।

१ लालकी

७

८ तफै पाली——

५ निषालस पलीवाळ बसै ।

१ नीबीयाहड़ो   १ कानावास   १ वागड़ीयौ

१ भायल लावी[1]   १ भांभेळाई

२ पलीवाळ नै जाट भेळा बसै

१ मंढली वडी   १ सांवलतो षुरद

२

१ पलीवाळ नै रजपूत भेळा वसै छै ।

१ आटरड़ो[2]

८

१३ तफै कोढणो

१२ निपालस पालोवाळ वसै छै ।

१ पतासर   १ मेंढली   १ नेवरी

१ तेहरीयो   १ तोलीसर   १ लोरडी वडी

२ रोढवा   १ पालाड़ीयो   १ वावळली

१ गोगाहो   १ नेडली[3] मोहणपुरो

१२

१. भाइल लाव । २. आटरड़ । ३. नेडोलो ।

१ पालीवाळ रजपूत जाट भेळा वसै ।

१ छाछोळाई

१३

३ तफै बहळवौ निधालस पलीवाळ वसै ।

१ चोइथ रौ वास वणसीसर री

१ चिडवाइ पुडीयाळी १ डुंगर

३

२ तफै श्रोसीयां

१ घाघावड़ी नीजावद पलीवाळ

१ चेराई जाट रजपूत रबारी वांणीया भेळा वसै

२

१ तफै भादराजण । १ सिणगारी - पलीवाळ पटेल वसै

४५

५ बोहीरा नंदवांणा वगेरै रैत[1] वसै छै ।

१ तफै बळुंदो १ तफै वहेळवौ

१ तफै पीपाड़ १ प्राः फळोधी १ ....

३ तफै हवेली

१ सूरपुरो १ बोहरा वांणीया

१ बालरवौ बांणीया कुंभार रहै ।

१ तफै पींपाड़ वड़लुरौ वास वोहोरा नंदवाणा रहै छै ।

१ तफै लवेरै - वावड़ी वडौवास वांणीया रजपूत कुंभार वसै छै।

५

१६ सीरवीयां रा गांव जाटां रा भेळा छै ।

२ तफै हवेली - सीरवो जाट बांणीया भेळा

१ सथलांणो १ पालावासणी

२ तफै पींपाड़ १ भावी वास जाटां रौ

1. जनता ।

१ रांमपुरी रांमासड़ी री

३ तफै बीलाड़ौ

१ बीलाड़ौ माहाजन बसै

१ मुडोयारड़ौ[1] १ पीचाक जाट हीज छै।

२ तफै बाहाळौ – जाट बांणिया

१ बौलबी[2], जाट हीज छै

१ तफै पाली–

१ गांव केरलो नीजावद सीरवी बसै।

४ तफै षेरवौ ने बुधावाड़ै रजपूतां माहे मंडौ छै, ते म्हें सीखी छै।

१ षेरवौ बांणोया रजपूत घांची

१ हीगोलो वडौ बांमण छै

१ धामली १ लांबीयां

१ तफै गुदोच

१ अनहल-

रजपूत वांणीया सीरवी बांमण भेळा वसैं छै।

१ तफै भाद्राजण १ चांगल[3]

सीरवी रजपूत जाट वांणीया वसै छै।

१६

८१ पटेलां रा गांव

१५ तफै हवेली

५ नोजावद पटैल वसै

१ लोरड़ी १ सर[4] १ सरेचां

१ डोहळी १ सिकारपुर

५

४ पटेल जाट भेळा वसै

१. मुडियारड़ौ। २. बोलवी। ३. चांगला। ४. सोरा।

१ नारनडी १ कड़वड़
१ मौगड़ो १ झावरवास

४

१ दहोपुड़ौ पटेल रजपुत भेळा वसै ।
३ पटेल बिसनोई भेळा वसै ।
१ षीडालो १ सीणली
१ धावो, जाट बिसनोई वसै

३

१ पटेल पलीवाळ जाट भेळा
१ चंवाधा घीया
१ पटैल कुंभार भेळा बसै ।
१ चवावडो

१५

१० तर्फे रोहठ
७ निषालस पटैल बसै छै
१ तीघरी[1] १ अरटीयो
१ डूंगरपुर १ सांभी[2]
१ वीठु १ षाडी
१ नीबली रौ वास

७

१ पटेल रजपूत बांमण भेळा बसै ।
१ गांव दुधली
२ पटेल बांमण भेळा बसै ।
१ कलाळी १ चोटीलौ

३

१०

४ तर्फे पाली

१. तीघरो । २. साजी ।

निपालस पटेल वसै ।

१ हीमावास	१ दातो
१ मांढलो वीका	१ सांवळती वडी

४

३१ तफै भाद्राजण

१५ निपालस पटेल वसै छै ।

१ गोयंदळाव	१ देवांणदी	१ वीजळी
१ घवलरोयो[1]वडो	१ पुटांणो[2]	१ नीलकंठ
१ मुडावाई[3]	१ वीभा	१ चेहड़ो
१ रहाणो	१ लांबड़ो	१ मुरड़ीयो
१ पगधारी	१ जैतपुर	१ भांडवळाव

१५

१६ पटेल रजपूत भेळा वसै ।

१ धीगांणो	१ सीहरांणो	१ पांचपदरो
१ वाणण[4]	१ धांणा	१ वरवा
१ सुगाळीयो	१ वुसीयाथळी	१ नवसरो, बांणिया छै
	१ वावड़ीबांमणछै	१ बाविद
१ भंवरी	१ वांकुली	१ रहांमो
१ सहैदरी[5]	१ गेलावास[6]	

१६

३१

२० तफै दुनाड़ौ

१६ निषालस पटेल बसै छै ।

१ टांटीया रौ वास	१ दुदां रौ वाड़ौ
१ करणीयाळी	१ करमां रौ वाड़ौ

---

१. घवलेहरीयो । २. पुहाणी । ३. मुडावाय । ४. वांणणी । ५. सेहदरीयो ।
६. गोलावस ।

१ मजल	१ पीपळली	१ रोईचो	१ भापरी
१ पातां री वाडो	१ समुजो	१ पीराटीयो[1]	
१ चारण री वाड़ी		१ दुध्रीयो	१ रहैनड़ी
१ ढीढस		१ रातड़ी	

१६

४ पटेल रजपूत भेळा वसै।

१ भाचराणो	१ पेजड़ीयाळी
१ भांना री वाडी	१ डाभली

४

२०

१ तफै कोढ़णो – पटेल रजपूत भेळा वसै छै।

१ जासती

८१

१८९ विगत ठीक

४२ विसनोई

४५ पलीवाळ

८१ पटेल

१६ सीरवी

५ वोहोरा

१८९

२४९. परगने जोधपुर रै गांमां री तफा वार मेळ कीयौ—

आसामी	जुमलै गांव	आवादांन बसता	वेरान[2]	सांसण
हवेली	२७७	२०७	३६।।।	३३।
पींपाडी	७९	६९	२	८
वीलाड़ो	१५	९।	२	३।।।

१. खींरांहटीयो। २. खेड़ा (अधिक)।

पेरवो	११	७	२	२
वाहळो	८	७	०	१
पाली	४४	२८	६	१०
गुदोच[1]	१०	५	५	०
रोहठ	२०	१९	०	१
भाद्राजण	९५	५६	३०	९
दुनाड़ो	४४	३३	६	५
कोढणो	८४	५२	१४	१८
वहेळवो	६२	३५	१५	१२
सेत्रावो	२८	२१	७	०
देछु	१०	७	२	१
केतु	२३	१५	७	१
ओसीयां	११२	७९	२०	१३
षींवसर	३५	१९	१४	२
लवेरो	६६	५१	९	६
आसोप	१६	१६	०	०
सहेवो	१२८	६७	४३	१८
तफा २०	११६७	८०२।	२२०।।।	१४४

२५०. परगनै जोधपुर री फीरसत[1] दरवार सुं दांम
कुल तफा रा १५५२५०००)

तर्फ हवेली

१ कसबै जोधपुर

१ गांव पुंदलौ वास २ दुसषीयो[2] जाट रजपूत वसै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९	रेष
२०५)[2]	५६८)	१९६)	३९५)	३३४)	८००)

१. गुदवच। २. १०५)।

1. फहरिस्त। 2. दो फसलों वाला।

१ गांव भादावासीयो २००)

कोस ११, रजपूत वसै नै पांणी वहूजी रै तळाव पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९	२०
१०)	४२)	५८)	१२०)	१२६)	०

१ गांव देबीभर ५००)

कोस ६, जाट वांणीयां वसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७१)	८६)	१०३)	३२८)	२४७)

१ चहुवाणां री वासणी ४००) दुसाखीयौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७२)	२३०)	१६५)	२८७)	१२४)

१ गांव बोहरावास १०००)

जाट वसै, कोसीटा[1] १०, चांच[2] १०

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०२)	१४४५)	४५९)	२०११)	४६२)

१ गांव भादावस षारलां रौ, षारवाळ वसै छै, २००) सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	७०)	३०)	१००)	१००)

१ गांव गुजरावस १५००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	८१४)	२३५)	७२५)	६९५)

१ गांव दसोर वडीवास ४००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२७)	१५८)	५५)	३१०)	२४१)

---

1. वह कुआ जिसका पानी ज्यादा गहरा न हो और हाथी की सूंड के आकार के चरस (सूंडियो) से पानी निकाला जाता हो। 2 साधारण छोटा व कच्चा कुआ जिसमें पानी बहुत ऊपर हो और एक लम्बे लट्ठे के पीछे पत्थर आदि बांध कर अगले हिस्से में पानी निकालने का बर्तन लटका कर, लकड़ी को हाथों से नीचे ऊपर करके पानी निकाला जाता है।

१ गांव आंगणवी बडी ४००)

जाट रजपूत वसै छै कोहर[1] १ छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४६) २००) १२०) २८५) १६३)

१ गांव वेरी तीवड़कीया री २००)

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२७) ५१) ३६) १५६) १२६)

१ गांव सूरपुर री १६००)

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१५७) ९५१) २६१) ७११) ३६५)

१ डीघाड़ी षुरद २००)

रजपूत बसे छै पांणी बहूजी रै तळाव पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२०) १००) ९०) ११५) १२२)

१ गांव जेसला वासणी[1] ३००)

जाट रजपूत बसै छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

७२) १२०) ९५) २४९) ९३)

१ ऊंचीया हेड़ो दुसाषीयो ४००)

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६०) २६०) १८५) ३७९)[2] २५२)

---

१ गांव डीघाड़ी बड़ी ४००)

जाट रजपूत बसै कोहर १ कोसीटो

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६०) २६०) १९०) ३६५) २५८)

---

१. अेक साखियो (अधिक)। २. २७९)।

---

1. गहरा कुआ।

१ गांव डोघाड़ी तीजी ५०)

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	५०)	६६)	६९)	३९)

१ देवळीयो ४००)

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१००)	८०)	११०)	१०९)

१ भीवरड़ी पहली वीरसल री वासणी[1] १००)

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	४५)	३०)	४८)	७६)

१ गांव लुगादेवत री वास, पांचा अवदार री वासणी २००)

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	१००)	८२)	१७३)	१२६)[2]

१ गांव करणां री वासणी, भाषरी वासणी कहीजे छै ५००)

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७०)	३९६)	२५९)	३९०)	३२५)

[[3]१ वनाड़ वास ३ १५००)

कोसीटा १०, चांच २५, रेल सेंवज[1], जाट वांणीया वसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४१)	८२२)	१९६)	१३३०)	९३०)

१ सांगरीया २०००)

जाट वसै, अरट कोसीटा, दुसापीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३१०)	११०७)	३६७)	५३३)	६७८)

१. नांव को (अधिक)। २. ३७५)। ३. 'ख' प्रति का अंश।

1. वर्षा का पानी वह कर आता है उससे गेहूँ व चने होते हैं।

१ नाहनडो षुरद ७००)

जाट रजपूत बसै, कीसीटा चांच हुवै, दुसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३०) ५९०) १५४) ६२८) ३२५)

१ थहीया वासणी, रजपूत बसै, षारड़ो पीवै २५०)

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२०) ५०) ३५) २००) १६७)

१ जाळली षुरद ४००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ षारौ[1] काकाळाव पीवै[2], अेक साषीयौं ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३१) ११७) १०९) ३६२) १०१)

१ वीनाइकीयो २००)

रजपूत बसै, कोहर १ षारौ, बासणी पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१४) १२०) ५४) २०२) १५१)

१ तीणावड़ो षुरद ७००)

जाट बसैं, अरट[3] २, कोसीटा २० हुवै, दुसाषीयो ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१९०) ५६०) ४३९) ६६१) २७५)

१ रसीद ४००)

रजपूत, षाती, विसनोई बसै, कोहर १ षारौ सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५०) १७२) १०६) ३०१) १३७)

१ पाल अेक साषीयौ १६००)

बांणीया जाट रजपूत बसै, कोहर ३, ऊनाळी नहीं ।

1. खारे पानी का कुआ । 2. काकाळाव से पीने का पानी लेते हैं । 3. रहट ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१७०)	११०१)	१११४)	१५३६)	१२४६)

१ जालेली बड़ी ५००)

रजपूत बसै कोहर १ षारौ, अेक साषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	१८०)	१३५)	२५६)	१७१)

१ षारड़ो रिणधीर रौ ४००)

जाट रजपूत बसै, कोसीटा ४ हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४०)	३४५)	२०१)	४६६)	२४८)

१ तणावड़ो बड़ो १०००)

जाट बसै, अरट २, कोसीटा २० हुवै, दुसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२१)	५५५)	२६४)	४८०)	४१७)

१ झालामल १२००)

जाट रजपूत बसै अरट कोसीटा हुवै, दुसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२४६)	१२७०)	७८५)	६२२)	८२३)

१ कुवड़ी ४००)

जाट बांणीया बसै, कोसीटा ४ हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८५)	५६०)	२००)	२५८)	२२६)

१ ग्रीमावासणी ४००)

जाट बांमण बसै, कोसीटा ४ हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२४)	१५०)	१५८)	२८०)	१४५)

१ भाटीयां री बासणी, चांपा वासणो।

जाट रजपूत बसै, अरट २ कोसीटा ४, चांच १० हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५) ३००) ३६०) १८५) १५१)

१ सुंतलो १५००)
जाट बसै, कायंलणे री षावे रौ पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५) ९०) १३५) ११५) १२१)

१ रोहलो बडौ ४००)
रजपूत बसै, कोहर १ पांणी षारौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२७) १९५) ७५) २१४) १५२)

१ मोकळावस ४००)
जाट रजपूत बसै, कोहर १ पांणी मीठौ अेक साषोयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५) ४३२) ५३२) ४३१) ४२६)

१ बेरूबास ५ १३००)
जाट बसै, कोसीटा ३० हुवै, सेंवज हुवै दुसाषौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
११४) ९२०) १२९०) १७५२) ७१५)

१ पालड़ी बड़ी ५००)
रजपूत जाट बसै, बावड़ी १ पांणी मीठौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) ७५) १०१) २००) २५०)

१ पालड़ी तीजी २००)
जाट रजपूत बसै, कोहर १ मीठौ सोवड़ा चिणा हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) १४५) १३८) २८०) १०८)

१ गंधाणो ४००)
जाट वसै, कोहर १ मीठो अेक साष ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७७)	२१५)	११०)	१००)	१५०)

१ रोहलो बुरद २००)

रजपूत बसै, कोहर १ मीठो, भले वरसे[1] सेंवज हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४)	१३०)	१८३)	१७०)	१३२)

१ केरूवास ४ २५००)

जाट रजपूत बांणीया वसै, कोसीटा ४० अरट १ दुसाषो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७५०)	१११५)	१५८१)	१२६२)	११६५)

१ गोहला वसणी १५०)

माळी रजपूत बसै, कोसीटा ४ अरट २ हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	३४५)	२७३)	२१५)	१५७)

१ पालड़ी पुड़द ३००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ ऊनाळो[2] नहीं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१८)	१२५)	११९)	१५९)	१२६)

१ पालड़ी वजी री वासणी २००)

जाट रजपूत बसै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	६५)	१४)	७३)	५१)

१ त्रीसगड़ी २००)

जाट रजपूत वसै वीजेळाव पीवै[3], अेक सावीयो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	१३५)	३६)	९२)	९७)

1. अच्छी वर्षा होने पर । 2. गेहूं चनों की फसल । 3. पीने का पानी बीजेलाव से लाते हैं ।

१ मांणकळाव २०००)

रजपूत, बाणीया, जाट बसै, अरट ४ कोसीटो १ हुवै, दुसाषो।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४०)	५५१)	५४०)	७२८)	५४९)

१ षोषरी १५०)

रजपूत वांणीया बसै, ढीमड़ा[1] ३ हुवै, दुसाषीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	२४)	८०)	१५०)	१०४)

१ मांडहाई ४००)

जाब रजपूत बसै, कोहर १ मीठी, अेक साषीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४)	२५०)	४४)	३३४)	१४७)

१ सालबड़ी १२००)

बिसनोई, रजपूत बसै, कोसीटा १० तथा १२ हुवै, दुसाषो।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४७)	८९५)	४१३)	७१५)	४०५)

१ नहरवो ४००)

रबारी, पलीवाळ बसै, कोहर १ मीठो, अेक साषीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०५)	६८)	९५)	२७९)	१३५)

१ बुजावड़ ५००)

जाट, रजपूत बसै, कोहर १, अेक साषीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१८२)	१३८)	३२२)	२३६)

१ नाहरसो ७००)

रजपूत, जाट, षाती, कुंभार बसै।

1. छोटा कुआ जिस पर एक बैल से चलने वाला रहट लगा होता है, कभी-कभी आदमी उसे हाथों व पैरों से भी चला लेता है (पगवटियो)।

कोहर १ मीठौ, अेक साषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४०) १२५) १८१) ४११) २४०)

१ वीझवाड़ीयो १३००)

कुमार, रजपूत बसै, ऊतनी अरट १० हुवै दुस षीयो ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१२५) २६२) ४५६) ३७५) २३९)

१ सीरोड़ी ५००)

जाट बसै, कोहर १ मीठौ, अेक साषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१४) १२५) ९०) १७५) १५७)

१ वालरवो १५००)

कुंभार, वोहरा, वांणीया रजपूत बसै, अरट ६ कोसीटा ६ चांच १० हुवै, दुसाषी ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२६८) १३८६) १२७०) १२२२) १०२०)

१ कोटड़ो ४००)

रजपूत, जाट बसै, अरट ४ कोसीटा ६ चांच ६ हुवै, दुसाषी ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२०) १९१) १७६) १४०) १०३)

१ ईंद्रोषो ५००)

रजपूत, जाट, वांणीयां बसै, कोहर १ मीठो अेक साषो ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १३

३५) १७२) २१८) २५१) २२६)

१ जुढि १०००)

जाट रजपूत, विसनोई वसै, ढीमड़ी ३ सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३०) ४१०) ४६१) ६१२) ४७२)

१ ढींकाई १०००)

रजपूत, जाट बसै, अरट १० हुवै, दुसाषी ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

८४) ४१०) ४६१) ६१२) ४०२)

१ सिणली पंवारां री ७००)

पटेल, रजपूत, बिसनोई बसै, घवोरो कोहर पीवै, अेक साषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३०) ६३७) २९१) ५६४) ११५)

१ हीरादेसर १५००)

जाट, बांणीया, रजपूत बसै, कोसीटा २ हूवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६०) ७८५) १६८) ८४४) ५०१)

१ बेराही २०००)

जाट, वांणीया रजपूत. रबारी बसै, कोसीटा ५०, चांच २०, दुसाष ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१०५८) ८५६) १३७०) १२८४) ६५४)

१ भिड़षाली २००)

जाट ६ बसै, माणकळाव पीवै, अेक साषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१७) २४५) २२) १५०) ८३)

१ बाला कुवो ४००)

रजपूत, जाट बसै, कोसीटा १०, चांच सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१५०) ३७५) १८७) २७०) १६१)

१ सोफड़ो ४००)

जाट, रजपूत बसै, कोहर १ मीठो, सेंवज सेर (१) बीघा २०० हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२०)	३७५)	१३५)	४२१)	२८४)

१ तांबडियो बड़ौ ७००)

बिसनोई, जाट बसै, कोहर १ मीठो सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८०)	३१०)	२५०)	६५१)	३२९)

१ उछतरावास २ २०००)

जाट वांणीया बसै, अरट ५, कोसीटा ५ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४७)	१४९०)	२४७५)	१५६०)	१२५०)

१ बांधड़ो ४००)

जाट बसै, कोहर १ पांणी थोड़ो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१७)	१४०)	१०)	५००)	२०२)

१ तारावसणी २५०)

जाट, रजपूत बसै, कोहर नहीं जाय तरै पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१५०)	७०)	२११)	२०२)

१ सेवकी बड़ी २२००)

जाट, बांणीया, रजपूत बसै, अरट १२, कोसीटो ५०, चांच ३०, दुसाषौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४४२)	२३६५)	८५४)	१४६२)	८५५)

१ चंगावड़ौ षुरद २००)

जाट रजपूत बसै, सेवकी री नदी पीवै, अेक साषीयौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८)	११६)	३०)	२५१)	१२१)

१ बोड़वी पुरद ३००)

जाट बसै, कोसीटा ४ हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४२)	१५०)	३५)	२२४)	११२)

१ नांदीयो बडौ १२००)

बिसनोई, रजपूत, तुरक बसै, अेक साषीयौ, सेंवज हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९०)	१०६५)	१८०)	८६६)	६६६)

१ देवातड़ो

जाट बांणीयां, रबारो रजपूत बसै । कोसीटा ४ सेंवज हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५५)	१०६५)	२५७९)	२२०६)	१४९४)

१ लुणावस घांघाणी रौ ५००)

जाट बसै, कोसीटा १०, चांच सेंवज हुवै, दुसाषीयौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३६)	३१८)	२५१)	३९७)	२८८)

१ भेलाबस ४००)

जाट, रजपूत बसै, तळाव री बेरीयां पीवै[1] अेक साषीयौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	३००)	४०)	३०५)	२१५)

१ भोवादि १५००)

जाट, रजपूत, बिसनोई बसै, अरट २, कोसीटो १ हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०१)	७००)	५५०)	७००)	५२४)

१ घड़ाय ४००)

जाट बसै, अेकसाषीयौ ।

1. तालाब सूखने पर तालाब में खुदी बेरियों से पीने का पानी लेते हैं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	२३७)	१६३)	२५१)	७८)

१ सुरज बासणी ६०९)

जाट बसै, कोहर १ षारी, वीसलपुर पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७०)	३७५)	१२५)	३२६)	२७७)

१ गाधांणी, बड़ौ गांव ४०००)

जाट, बांणीया, षारवाळ बांमण रजपूत वबसै, दुसाषी ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६९२)	३६४२)	२३७३)	४६६०)	२३६६)

१ नवे नगरीयो २००)

जाट बसै, चांच १ कोसीटा १० हुवै, दुसाषीयौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३६)	२४५)	१३२)	२२२)	१०९)

१ ग्रासरानंडो ४००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ षारो, श्रेक साषीयौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१७)	१६०)	५९)	२८०)	१५६)

१ कुकड़नड़ो ९००)

जाट, रजपूत बसै, दांतीत्राड़े पीवैं, एक साषीयौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	२४१)	३४५)	५५७)	२७०)

१ थबूकड़ो २५००)

जाट बांणीया वांभण बसै, कोसीटा १२, चांच ७०, सेंवज घणा, दुसाषीयौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४७)	२०१४)	३७८)	१९६१)	१२१८)

१ रामड़ावास ८००)

जाट रजपूत बिसनोई बसै, कोहर १ षारौ, बुचकले पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४५) २४६) १३३०) ३५) ३२४)

१ बावळवो १०००)

जाट बिसनोई बांणीया रजपूत बसै, कोहर १ षारौ, अेक साषौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
१८१) १०८५) ५७५) ९५२)

१ पालावासणी ४०००)

सीरवी जाट बांणीया कुंभार माळी बसै, ऊनाळी घणी, दुसाषीयौ बड़ौ गांव ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२३७) २९१६) ३९४२) ३२९८) २४७८)

१ ढीहलीयो ४००)

जाट रजपूत बसै, जासेळाव पीवै, अेकसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
२०) ६१) ९२) २११)

१ दांतीवाड़ो २५००)

जाट रजपूत बांणीया बसै, ऊनाळी अरट २०, चांच कोसीटा घणा, सेवंज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५०) ९६०) ५६०) १०५२) ७५७)

१ षालावसणी १२००)

जाट रजपूत बसै,कोहर १ मीठौ, अेकसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०१) २४२) ४३६) ५५७) ४१५)

१ रड़कुळी ६००)

अेक साखीयौ, बिसनोई वसै, ऊपजता ५००)।

संवत १७१५ १६ १७ १८

२८०) ८१०) २०३) ६९२)

१ लोहरड़ी १००)

पटेल बिसनोई, पलीवाळ बसै, सेंवज हुवै छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

३४) १२६०) ६८३) १२१६)

१ वीसलपुर ४०००)

जाट वांणीया रजपूत सीरवी बसै, ऊनाळी घणी, दुसाखौ वडो गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२७१०) २५१०) ३९३८) ४२६५) २६७२)

१ डांगीयाबस १०००)

जाट रजपूत बसै, कोहर १ मीठौ, अेकसाखीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१६२) ६२८) ९९) ७२५) ४७०)

१ गोवळीयो ५००)

जाट रजपूत बसै, कोसीटा ४, चांच ६ हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

८०) १५७) १०९) २२९) १८०)

१ वेधण ३०००)

जाट वांणीया बांभण बसै, अरट ३०, कोसीटा १५, चांच २०, ऊनाळी घणी, दुसाखो वडो गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१३१४) १५३३) २३८७) १२६१) ६२०)

१ चोढो १५००)

दुसाखौ, जाट बसै, भलो गांव रूपीया १५००) ऊपजतरौ

संवत १७१५ १६ १७ १८
१०६) ११९६) १९७९) ११५५)

१ ब्रंहमी २५००)

दुसाषीयौ, पलीवाळ बांणीया बसै, रूपीया १३००) ऊपजत रौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
२७८) ९५१) ६७३) १६८४)

१ गुजरावस ५००)

दुसाषौ, कोसीटा २, बांभण पलीवाळ बसै, रूपीया ३००) ऊपजत रौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
८१) १९५) ८७) ४५३)

१ मेहावसणी ६००)

दुसाषीयौ, जाट बसै, रूपीया २००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
१७०) ५०१) २६५) ५११)

१ बांणीयावस ५००)

अेक साषीयौ, सेंत्रज हुवै, पलीवाळ बसै, रूपीया २५०) ऊपजै, कोहर नहीं[1], षेजड़ली पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
१०) १९३) २०) २३५)

१ बीरड़ावस ६००)

दुसाषौ, पलीवाल बांभण बसै, घर ४ जाट, रूपीया ४००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
३७०) ५००) ८२०) ५४०)

---

1. कोई कुआ नहीं है।

१ भगतां वासणी ४००)

अेक साषौ, जाट बसै, कोहर नहीं, रूपीया २००)।

संवत १७१५ १६ १७ १८
२०) १८५) १८०) ३२५)

पीथावस ५००)

अेक साषीयौ, बिसनोई बसै, रूपीया ४००) ऊपजै

संवत १७१५ १६ १७ १८
२४) ३१८) १५३) ५६५)

१ सांगाबसणी ५००)

दुसाषौ, सेंवज हुवै, जाट बसै, रूपीया २५०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८
६०) ३४५) ६५) २४७)

१ काकाला १०००)

षारा ढीमड़ा ४, पलीवाळ बसै, रूपीया १०००) ऊपजै, भलौ गांव[1]।

संवत १७१५ १६ १७ १८
४०) १२५) १८१) ४११)

१ षेजड़ली बड़ी २०००)

दुसाषौ, सेंवज निपट घणौ[2] हुवै, बिसनोई बसै, रूपीया १०००) ऊपजै।

संवत १७१५ १३ १७ १८
१६६) १२२१) ११४) १०५८)

१ जाटीयाबास बड़ौ १५००)

दुसाषौ, जाट बसै, रूपीया ८००) ऊपजै।
३०) ३६२) ११०) ३२२)

---

1. अच्छा गांव है। 2. अत्यधिक सेवन से अनाज होता है।

१ नरावस ४००)

अेकसाषौ जाट वसै, रूपीया २००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

२०) १६५) १०६) ३२५)

१ पेसावस ४००)

दुसाषौ, जाट बसै, धांधळ[1] सारा मांहे, रूपीया २००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

२०) ४००) ३०) ३०२)

१ संझाड़ो १४००)

दुसाषौ, जाट बसै, रूपीया ४००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

२०) ७३०) ११६) ६१२)

१ फीटका वासणी ३००)

अेकसाषौ, विसनोई बसै, रूपीया २००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

१६) २२५) १३२) २६१)

१ सथलाणो ५०००)

दुसाषौ, सेवज घणा, सोरवी बसै रूपीया २५००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

१२३०) ३४३५) ३६८४) ३४६०)

१ चवाबड़ा ३०००)

दुसाषौ जाट बांणीया बसै, रूपीया १०००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

४००) १४२५) १०४५) १०६६)

१ धींगाणौ ५००)

दुसाषौ, जाट बसै, रूपीया २००) सेंवज पण[2] हुवै।

---

1. राजपूत जाति की एक शाखा। 2. भी।

संवत १७१५ १६ १७ १८
८५) ६७८) ८४) ३६३)

१ मोगड़ो १००)
अेकसाषौ, पटेल जाट बसै, रूपीया ७००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
८१) ८५५) १४०) १४६७)

१ षेजड़ली षुरद १५००)
दुसाषौ, जाट बाणीया बसै, रूपीया ५००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
११०) ५१०) ३२२) ५८६)

१ चोड़ी सिकारपुर २०००)
दुसाषौ, पटेल बसै, रूपीया ५००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
१४५) ८०१) ३७२) ६५६)

१ डोहळी ७००)
अेकसाषौ, पटेल बसै, रूपीया ७००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
११५) १२००) ३७०) ५५२)

१ चवा धांधीयां ३०००)
दुसाषौ, षाराढी बडाप नदी । ३६००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
३००) १२००) ४१३) १३६९)

१ सर २५००)
अेकसाषौ, पटेल रजपूत बसै, चिणा हुवै, रूपीया १०००) ऊपजै ।

१ फींच २५००)
अेकसाषौ, बिसनोई बसै, पांणी कुवै षारौ । रूपीया ८००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
१६२) ११२५) ५११) १५६३)

१ सरेचां १६००)
अेकसाषौ, पटेल बसै, रूपीया ७०० उपजै ।

१ कांकाणी २५००)
दुसाषौ, सेंवज जाट बसै, रूपीया १०००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
१८८) ११६५) १९९) १२९४)

१ नीबलो ७००)
अेकसाषौ, पलीवाळ बसै, रूपीया २००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
३२) १२७) ६६) ३९६)

१ सालावस १५००)
दुसाषौ, कोसीटा ५० अरट ५ जाट, बोहरा पटेल बसै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
५४०) २४६५) २३९१) २५३६)

१ बीहड़नड़ौ बडौ ५००)
अेकसाषौ, जाट बसै, रूपीया ४००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
६०) ११७५) ३४०) ११७५)

१ नंदवाण ३०००)
दुसाषौ, कोसीटा जाट बसै, नदवांण वांभण ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
४३७) ८३१०) २४५०) २५३५)

१ नाहरनड़ी ८००)
अेकसाषौ, पटेल बसै, रूपीया १०००) ऊपजै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८
६४) १८५०) २९७) १२१९)

१ लुणावस १०००)

अेकसाषीयौ, वांणीया, जाट वसै, रूपीया ४००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

६०) ३५५) ४६७) ६७५)

१ वोहड़ा नडौ तीजौ, जोलुवां री वासणी रूपीया १५०)

संवत १७१५ १६ १७ १८

१०) १४०) १३०) ११०)

१ षडाला वास ३ १७००)

अेकसाषीयौ, विसनोई पटेल वसै, रूपीया ८००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

६०) १०३५) १८७) १२०२)

१ षारी लुणाहो १०००)

अेकसापीयौ, विसनोई वसै, मांगळीयां री कदीम गांव[1] कुवौ १ मीठौ, रूपीया ५००) ऊपजत रौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४०) ४१०) १५१) ५५१) ३६)

१ झंवर वास ३ ४०००)

अेकसापौ, सेंवज घणे मेह हुवै[2], पटेल जाट वसै, रूपीया २५०) तथा ३००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२२५) ६०००) ११६८) ३२८३) १००४)

१ रांमपुरौ विसाईण वास ६ १८००)

त्यां में वास ५ मांजरे दुसाषौ, पांणी घणौ, जाट वसै, ३८००) रूपीया ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

७९१) ६९०) ५३०) ११४०) ६९५)

---

1. मांगलिया शाखा के राजपूतों का पुराना मूल ग्राम।
2. अधिक वर्षा होने पर सेवज होती है।

१ भुंहरी ६००)

अेकसाषौ, रजपूत जाट घर १ बसै, रूपीया २००) ऊपजतां रौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२५) ११५) ३१०) १९२) १६०)

१ लुणावस करनोतां रौ १५००)

अेकसाषीयौ, कोसीटा ४ षारा कदेके हुवै[1], जाट बसै, रूपीया ७००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

१२०) १९३०) २१४२) १२६५)

१ दहीपड़ी चौहाणां रौ ५००)

अेकसाषौ, रजपूत जाट बसै, कुवौ नहीं, रूपीया २५०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८

३०) २३०) ११५) ३७१)

१ काळीजाळ ५००)

अेकसाषौ, जाट बसै, कोहर कदीम नहीं, रूपीया ४००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२५) ५५२) २७०) ४९१) १५२)

१ चैनपुरी ५००)

दुसाषौ, जाट माळी बसै, मीठौ पांणी, रूपीया २५१) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२५) ३७८) १९३) ३९७) २२६)

१ मांणेवां ४००)

दुसाषौ, अरट २ जाट रजपूत बसै, रूपीया १५०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१२) १८८) २४०) ३३०) ११२)

---

1. कभी कभी प्रयोग में आते हैं।

१ वड री वासणी ३००)

अेकसाषौ, रजपूत वसै, रूपीया १५०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२०) १२२) ८५) १२१) १२०)

१ गोधावास ३००)

अेक साषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२०) १०१) ५८) ५०) ६४)

४ चांषवास ४

१ वडोवास माळीयां री ४०)

दुसाषौ, माळी वसै, ढींवड़ी १५ मीठी, रूपीया ३००) ऊपजै।

१ करमा गूजर री वास १००)

सिः भगवांन नुं, दुसाषौ, माळी गूजर वसै, रूपीया २५०) ऊपजै।

१ गूजरां री वास २५०)

षवास गिरधर गुणराय रौ, दुसाषौ, माळी वसै, रूपीया १००)

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१०) ७०) १५०) १८०) ७३)

१ रवारीयां री वास १५०)

दुसाषौ, माळी रवारी वसै।

४

७ कड़वड़ रा वास ९ तामैं ७ वसै[1]।

१ वडो वास ५००)

सेंवज सरैं अेक पटैल जाट वसै, रूपीया ५००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

११५) ५९१) १६१) २२५) १९५)

१ कुंडळीयौ १००)

अेकसाषौ, रजपूत वसै, रूपीया ५० ऊपजै।

1. जिनमें से ७ गांव आबाद हैं।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) १५) १५) १११) ४०)

१ भींका बासणी ५००)

अेकसाखौ, जाट बसै, सेवज हुवै, रूपीया २५०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१६) १५५) १२१) ४१५) २०५)

१ वीरम रौ बास ४००)

अबदार राधा री बासणी, दुसाखौ १ अरट १ चांच कोसीटा जाट रजपूत बसै, रूपीया २००) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२०) २१०) २६३) २८७) १५०)

१ सुडां रौ बास ३००)

लाछां री वासणी, दुसाखौ, जाट बसै, १५०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) १००) ७१) १३०) ६२)

१ भाटीबास १५०)

अेकसाखौ, रजपूत बसै, रूपीया ८०) ऊपजै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ६०) ४२) १५६) १००)

१ ऊजळीयो २००)

अेकसाखौ, रजपूत, मुसला बसै, सांसण वाकुलीयो बांभण रौ हुतौ संवत १६४३ लोपाणौ[1]।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) १००) ७१) १३०) ६२)]

७

1. जब्त हुआ।

४ गांव गुढा रा वास ता माहे बास २ सूना मांजरे छै।

१ वडोवास ३०००)

वांणीया, रजपूत बसै, अरट १० षारी सेवज घणी[1]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९४०)	२०१५)	३३२०)	२२३१)	१९५०)

१ बिसनोयां रौ बास ३००)

घर[2] ५०, जाटां रा घर ९

१ ढोलावासणी २००)

अेकसाष, बिसनोई बसै, रूपीया १००) ऊपजै।

राजपुरी ५००)

दुसाषो, बांभण[3] बसै, २००) ऊपजै।

४

५ गाँव धवा रा वास १० ता माहे वास ४ मांजरे वास १० सांसण।

१ बडौवास ३०००)

सेंवज पटेल, जाट, बांणीया। बिसनोई बसै छै, कुवा २ षारा।

१ दहीपड़ी जोर रौ अेक साष ६००)

रजपूत बसै, कुवौ १ षारौ, रूपीया २००)

१ गुदी १००)

अेक साष, कोहर नहीं, धवे पीवै, जाट रजपूत बसै।

१ महैलवो[4] २००)

अेकसाषी, जाट बसै, कोहर षारौ, ऊपज २००)

---

१. सालीनो सगळ भेळो (अधिक)। २. बिसनोई घर। ३. पालीवाळ। ४. मांहलवो।

१ सेवालो १००)
अेकसाषौ, रजपूत बसै, कुवो १ चोढ़ो मीठों।

५[1]

४ गांव साळवो, बास ४ बसै छै ४०००)

१ साळवो
जाट बसै, कोहर ५ पांणी घणौ, अेकसाष।

१ सूरपुरौ
जाट बसै, अेकसाषौ, कोहर पांणी षारौ, सेंवज हुवै।

१ षेड़ी
जाट बसै, अैकसाषौ, कोहर १ षारौ।

१ ढांणी
जाट बसै, जाळेळी पांणी पीवै कोहर नहीं।

४

संवत १७१५	१६	१७	१८	१
५५०)	३५६१)	५५७८)	३४६६)	२१

३ देवीषेड़ी बास ५ ता में २ बास सूनां २०००)

१ देवीषेड़ौ
जाट बांणीया रजपूत बसै, कोहर २ सेंवज हुवै।

१ जाळेळी
जाट बसै, कोहर १ षारौ अेकसाष।

१ कसवारीयौ
कोहर १ षारौ, जाट बसै, सेंवज हुवै

३

संवत १७१५	१६	१७	१८	१६
१५०)	१०६५)	२५७६)	२२०६)	७८२)

१. सालीलो भेळो — ६६०) २७३२) १०६२) १६६६) ६६७)

२ षारा वेरा षेड़ा ५ तां में १ सूनो २, सांसण २०००)

१ वडोवास १०००)

पलीवाळ, रजपूत वसै, कोहर नहीं, सेवज, भींवोतां रै षारा वेरां पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	९
३०)	११२०)	६१)	५९६)	२७८)

१ पुरदवास भींवोतांरै १०००)

वांभण[1] रजपूत वसै, चांच ३०[2] सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२)	३१०)	२२८)	८३२)	४५३)

२

१० जाजीवाळ १० ते में २ सूनी मांजरे छै ।

१ भांकर[3] री १३००)

जाट रजपूत वांणीया वसै, तळाव में वेरियां पीवै, सेंवज

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५०)	७४५)	६३७)	१३३४)	३९७)

१ वांणीया री ६००)

रजपूत जाट वसै, बावड़ी १ अरट ऊपर छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२)	४००)	६८)	३००)	१७१)

१ राठौड़ां री ८००)

जाट वसै[4], सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१३	१७	१८	१९
३०)	३९०)	४२)	६०६)	२३८)

१ सोळंकीयां री ५००)

जाट घर ४, रतनसी री जाजीवाळ पीवै, कोहर नहीं ।

१. पालीवाळ। २. २०। ३. सांकर। ४. सेभो नहीं (अधिक)।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) ३७२) ३३६) ४११) २०७)

१ कांटेचां री ४००)

जाट रजपूत बसै, कोहर षारौ, चांच ५, सेंवज बीघा ५० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) २३९) १३१) ४५२) १५४)

१ ईंदां री १२००)

जाट रजपूत बसै, सेवज तळाव री बेरी पीवै, कोहर नहीं ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६६) ५१०) २१३) ६६०) ३४७)

१ नाथु री ६००)

पलीवाळ बसै, सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) ४९२) ६७) ६७५) ३५५)

१ भींवा री नादा री ६००)

जाट रजपूत बसै, सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४५) १००) १८०) ६६८) ६३)

१ जोलुवां री ५००)

रजपूत बांणीया, कोसीटा चांच छै, दुसाषो ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ४००) ६८०) ३८०) ३३०)

१ नींवां री ४००)

जाट वसै, जोसीया नुं, चांच १० सेंवज बीघा १५१ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	२३९)	१३१)	४५२)	१५४)
२५)	१९५)	२२०)	१६४)	१५८)

१०

५ भुंडुवास, ५ वस

१ वडोवास ७००)

जाट रजपूत वसै, कोहर १ पारी, अेकसापी।

संवत १७१५	१६	१७	१८
४०)	८७५)	५०)	५८६)[1]

१ भुंडु पुरद १०००)

जाट रजपूत वसै, कोहर १ पारी, कटारड़े पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८
५०)	७००)	२३९)	११८५)

[[2]१ घारड़ो २००)

जाट रजपूत वसै, कुवो १ मीठी।

संवत १७१५	१६	१७	१८
२०)	११०)	४५)	१३६)

१ जाटीया वसणी १५०)

रजपूत वसै, अेकसापी।

संवत १७१५	१६	१७	१८
२२४)	२३०)	३८)	२१५)

१ कटारड़ो २००)

जाट रजपूत पटेल वसै, कोहर १ भळभळी[1]

१. ५८५। २. 'ख' प्रति का अंश।

1. कुछ खारे पानी वाला।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	२०)	२४८)	६१)	१५५)

५

२ बाजे

१ आसायचां री वासणी १००)

रजपूत बसै, माळीगो पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	२०)	२५)	०)	२४३)

१ जौगीया वासणी २००)

रजपूत बसै, लुणावस पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	२०)	३०)	७०)	४४)

२

२५१. सूना षेड़ा मांजरा—

१ रांमावट ४००)

वालरवा रा लोग षड़ै।

१ कुंडा द्रहे ३००)

बोड़ानडा में षेत षड़ै।

१ गीगाथळे २००)

झालामळ में मांजरे।

१ चारण बसणी ६०)

सांगी कनै बसती, हिमें षबर नहीं[1]

१ देवड़ां री बास

कुड़ी में मांजरे।

१ दुदा ओळगण[2] री वासणी

अबदार बाघो नुं पाही षेत षड़ै, बावड़ी १ अरट हुवै, रूपीया १००) ऊपजतां री।

1. अब पता नहीं। 2. गायन का पेशा करने वाले।

१ रातानाडा षेत १००)
कसबै दाषल ।
१ हरचंद री बासणी
बड़ला षेवड़ा बिचे षबर नहीं ।
१ सांवरा री बासणी ।
आकथळे जाजीवाळ पीथा री भेळी रूपीया ५०)
१ पटेलां री बासणी ८०)
माणकळाव में
१ जाजीवाळ षींवा री ४००)
पाही षेत षड़े मुकातौ[1] आवै ।
१ कड़वड़ रौ वास १००)
षेत पाही षड़े, रूपीया १०) मुकाते ।
२ देवीषेड़ा रा वास
१ डंवचो १ भीडाय
२
४ धवां रा वास
१ रावड़ीयो १ अरणीयाळो
१ देवड़ां रौ १ सिणली
४
१ जाजीवाळ ६०)
राजघर री पीथा री जाजीवाळ भेळी[2] ।
१ सुजा रौ बास १००)
कड़वड़ रा बडा बास भेळौ ।
५ बीसांण रा बास
रांमपुरो बसीयौ तरै मांजरे गया ।
१ बुधा रौ बास १ लषा री वास

1. रुपयों में लगान । 2. शामिल ।

१ लुंभा रौ बास १ भाट रौ बास

१ भवरड़ा रौ बास

५

२ गुढ़ां रा बास

१ गुसांई रौ १ अरागीयाळौ।

२

०॥। ऊपादीयां री बासणी, हेसे[1] १ सांसण छै. हेसे ३ रा षेत, षालसै छै। १५००)

३३॥।

२५२. ३३। सांसण गांव तोलक हवेली

१२। बाभणां नुं—

१ तिवरी २०००)

राव जोधाजी रौ दत्त, प्रोहत दांमा हरपाळोत नुं, गयाजी में, हमें अषैराज दळपतोत।

बांणीया रजपूत कुंभार बसै, कोहर १ मीठो, ऊपर तरकारी[2] हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	८००)	१३००)	९७५)	१३४२)

१ माडाहाई ५००)

राव जोधाजी रौ दत्त, प्रोहत दामां हरपाळोत नुं, गयाजी में दीयौ तिंवरी भेळौ।

जाट बसै कोहर १ मीठौ तिंवरी में।

सालीनो ५००)

१ बड़ली ७००)

राव चूंडाजी रौ दत्त, प्रोहत पीजल वीवल रा नुं, हिमें भगवांनदास नै दयाळ मांनसिघोत छै, बांभण वांणीया रज-

1. हिस्सा, भाग। 2. सब्जी।

पूत बसै, अरट ६ कोसीटो १ दुसाषौ, भलौ गांव ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	२००)	३९७)	२९५)	४२०)

१ मोंडी षुरद

राजा श्री उदैसिंघजी री दत्त, नास नाराईण तेजावत आचरज सोथड़ा नुं संमत १६४० दीयौ। हमें गोयंददास सांमदासोत छै। बांभण बसै, कोसीटा ३ चांच ४ हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५)	१५०)	१८०)	१९५)	२००)

१ मोडी वड़ी ३००)

राजा श्री उदैसिंघजी रौ दत्त जोसो चंडीदास हिमें भांनींदास चंडीदास रौ नेहररांम भगवांन सोरंग रा छै।

जाट पलीवाळ बसै, ढीमडा ३, कोसीठा ६, चांच ६ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	१००)	३४५)	२८०)	१८२)

१ वीढा बसणी ३००)

राव श्री मालदेवजी रौ दत्त, जोसी नरपत सांकरोत श्रीमाळी नुं संमत १५९५ दीयौ। हिमें नीलकंठ गिरधर रौ छै।

जाट बांभण बसै। कोहर २, अेक मोठौ अेक षारौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१००)	७०)	२५५)	१६०)

१ चवंडवा

राव श्री चूंडाजी रो दत्त आ० तेजा राढवत पांचलोडा अचारज नुं हिमें ऊरजो मानां रौ छै। बांभण बांणीया बसै, कोसीटा १६, दुसाषौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	२१०)	१५०)	१६०)	११०)

१ षारा बेरा

दत्त राव श्री गांगाजी रौ, प्रोहत षेता षीढावत आचारज सीवड़ नुं दीयौ ।

१ बास चोथौ

वांणीया रजपूत बांमण बसै, ऊनाळी सेंवज छै, तळाव रै बेरां पीवै, प्रोहत भोपत गुणेस भारमलोत नुं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	२००)	४५६)	३७०)	१५९)

१ बास १ पांचमौ १००)

प्रोहत डूंगरसी जसावत छै । बांणींया रजपूत बांभण बसै, सेंवज हुवै, तळाव रै बेरां पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	७०)	१२०)	१४०)	४४

२

१ सुरजमल रौ बास २५०)

राव श्री मालदेजी रौ दत्त बास पीतांबर बागदे रा श्रीमाळी नुं हिमें सारंगधर दवारकेसर छै । जाट बसै कोहर १ छै तठै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८
	४०)	५०)	७२)	९५)

१ राजावसणी २००)

राठौड़ भींव वाघाव सुजावत रा रौ दत्त । प्रो० राजा चेहरा सीवड़ नुं, हिमें कचरौ नेतसी रौ छै । रजपूत जाट वांणीया वांभण वसै । अरट ९ हुवै, दुसाषौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	११०)	३१०)	२१५)	१५०)

१ कांनावस २००)

राव श्रीमालदेजी री दत्त, देरासरी काना रंगावत पोकरण नुं ।

हिमें जसवंत अषैराज नीलकंठ किसनदासोत छै। जाट बांभण बसै, कोहर १ षारौ, ऊनाळी नहीं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	१२०)	२१५)	१२५)	७४)

१ ऊपांधीया री बासणी हेसे[1]

दत राव श्री जोधाजी रौ ब्रा० पदमा पोकरणा नुं गांव री हेस ३ षालसै बेची, तिका हिमें हरजी कलावत छै, षेत ४ छै।

१२।

चारणां नुं—

१ मथांणीयौ १२००)

राव श्री जोधाजी रौ दत्त वाहरट अमर दुदावत रोहीड़ा[2] नुं दीयौ। हिमें चवंडदास मेहराजोत छै। जाट बांणीया रजपूत चारण बसै, ऊनाळी घणी, बडौ गांव।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३००)	६७०)	१२९०)	९७५)	१२४०)

१ तांबड़ीयौ षुरद २००

राजा ऊदेसिंघजी रौ दत्त, मीसण मोटस सांरगोत नुं हिमें महेस मोटलोत छै। चारण बसै कोहर नहीं, बधड़े पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	२१०)	१६०)	१२५)	१५०)

२ षारी बास २ ५००)

बडोबास राव सते चूंडावत री दत्त बारहट महेस दुदावत रोहड़ीया नुं। हिमें नाथौ रतनसींघोत छै। अरट १ सेंवज हुवै, चारण जाट वांणीया बसै। २५०)

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	१६०)	१९०)	१२०)	७५)

1. हिस्सा। 2. रोहड़िया चारण।

१ षारी थीरावस

दत्त राव श्री जोधाजी रौ बारहठ थीरा दुदावत रोहड़ीया नुं। चारण जाट बांणीया रजपूत बसै। कोहर २। हिमें चवंडदास कलावत नै दईदास रांमदासोत छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	१६०)	१९०)	१२०)	७५)

२

२ षाडाला रा बास २

षाढावस नेवेवठो

राव श्री जोधाजी रौ दत्त आसीया पुनराव नै। हींगोला बारू रा नुं दीयौ। पेहली राव रिणमल, आसीया षुढा मंडलक रा नुं थी।

१ षाढाबस, अचळौ चांदावत हिमें छै १५०) चारण रजपूत बसै, कोहर ३, पांणी मोटो[1]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	८०)	७०)	९०)	११५)

१ देवढो—हिमें केसो जजाण रौ छै २००)

कोहर १ मीठौ, चारण रजपूत बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	५०)	३५)	७०)	११०)

२

१ बरबड़ा री बासणी १५०)

राजा श्री उदैसिंघजी रौ दत्त, बरसड़ा गोपाळ रांमदासोत नुं हिमें मनोहर पीथावत छै। चारण जाट बसै। ढीमड़ा २, सेंवज हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	५०)	७५)	८७)	१००)

1. हाजमे के लिए भारी।

१ चारणां री बासणी १५०)

राजा उदैसिंघजी रौ दत्त षीड़ीया भैरव हरषावत नुं, हिमैं चंदौ षंगारोत छै। चारण रजपूत बसै, कोसीटा ४ चांच २।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	१०५)	१२०)	१००)	१०२)

१ वीसीयावस १५०)

राव श्री रिणमलजी रौ दत्त थेहड वीसां मांडणोत नुं। हिमैं दांनौ ईसरोत छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	७०)	१२०)	१९०)	१८५)

१ मोगढो षुड़द (१११६ काती सुद १५)

आदु[1] नाहड़राव पड़ीहार रौ दत्त, संढाइच नरसिंघ नुं, हिमैं किसनदास देदावत छै। कोहर १ बडाबास रौ पांणी पीवै, जाट चारण वसै। १००)

१ तीघरीयौ १००)

राजा श्री सुरजसिंघजी रौ दत्त, मीसण जीवा नेतावत नुं, हिमैं पूरण जीवावत छै। षेड़ौ सूनौ[2] साहलां री षेड़ी भेळी बसती, चारण वसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	२५)	१५)	२०)	१५)

१ चंगावड़ो तीजौ १००)

राव श्री गांगाजी रौ दत्त, थेहड़ चकोर अमरावत नुं, हिमैं नगराज षेतसी छै। चारण वसै, कोहर १ पारौ, सेवकी पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	६०)	२५)	५०)	७०)

1. आरम्भ में, प्राचीन समय में। 2. गांव सूना पड़ा है।

१ बणलीयौ १००)

राव श्री जोधाजी रौ दत्त, रतनुं करमा पुनावत रीछड़ा नै मुगल लषणीयां नुं । हिमें देवराज भारमलोत करमा रौ पोतरौ छै, नै षमीदास मेघराजोत मुगल रौ पोतरौ छै। चारण बसै, कोहर १ षारौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१००)	१०७)	१२०)	२७०)

१ चांपावसणी १००)

रा० भींव वाघावत सुजावत रा रौ दत्त, रतनुं मेघराज गेहावत नुं, हिमें करमसुन्दर रौ छै। चारण बांभण बसै। अरट १ ढीबड़ा ६ चांच ५ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	४०)	१२०)	१७५)	१२१)

१ षेड़ी

दत्त राव मालदेजी रौ बीठु मेहा दुसलोत नुं। हिमें मेघराज डुंगरसी रौ छै जाट बांणीया रजपूत चारण बसै। बुड़कीयै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	६०)	७५)	८०)	१७१)

१ रलावसे १००)

राव श्री मालदेवजी रौ दत्त जगहटरला गोयंदोत नुं, हिमें नादे करनोत छै। जाट रजपूत बसै। कड़वड रै तळाव पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	१५)	२०)	२५)	३०)

१ झुठा रो वासणी १००)

राव श्री मालदेजी रौ दत्त आसीया झुठा वीकावत नुं। हिमें नाथौ दासावत छै। चारण जाट वसै। कोहर पारौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	३०)	६०)	७२)	५०)

१ लुणावस तीजौ १००)

राव सातल जोधावत रौ दत्त मोसण भोजा जेसावत नुं। हिमें साजण भींव रौ छै। चारण बांणीया रबारी जाट बसै। कोहर नहीं, बड़ौ लुणावस पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	७०)	१३५)	१७१)	५०)

१ छाहली ५०)

रा० जैतसी ऊदैसिंघोत रौ दत्त आसोया मांना रांमावत नुं। हिमें जसौ मांनावत छै। पटेल रजपूत बसै, घवै पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	३५)	३०)	५०)	३५)

१ अषा रौ वास १५०)

कड़वड़ रौ रा० पंचाईण अषैराजोत रौ दत्त संढायच गोयंद नुं। हिमें सुंदर गुणेस रौ छै। षेत १ छै, बीजौ कुं नहीं[1]। लाछां री वासणी थकी षेत षड़ै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	७०)	१२०)	९५)	२०)

१ मदा दवे री बासणी

राव श्री मालदेजी रौ दवे मदा श्रीमाळी नुं छै। घणा बरस सूनी रही। वांभण कठी गया तरै झुठा री बासणी में मांजरे गळत गई[2]।

२९

१ हुनावस पुरद

जैतारण था कोस १ आथण था डावौ[3]। जाट बसै, धरती हळवा २५ षेत काठा कंवळा[4], ऊनाळी अरट ढीबड़ा ५ तथा ७ हुवै। तळाव जाषण नडी मास ४ पांणी। सेंवज घणा हुवै छै।

1. बाकी कुछ नहीं। 2. कोई वंशज न रहने से राज्य में मिलाली गई। 3. पश्चिम में बांई ओर। 4. सख्त व पोली जमीन वाले।

२५३. तालको पींपाड़

१ पींपाड़ षास ५०००)

बडौ कसबौ, माहाजन जाट घणी बसती, दुसाषीया ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२११९)	३४३३)	६४८९)	३७०७)	३१६२)

१ सातसेण ५५००)

बडौ गांव जाट बसै, अरट १५ कोसीटा २० हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३६१)	११३०४)	५११५)	७२५२)	४४९६)

१ रैयां ४०००)

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११०७)	२९१०)	४४३०)	४०५०)	३०२८)

१ रिणसीगांव ४०००)

जाट बांणीया रजपूत वसै, कोसीटा ३, षारचीया[1] गांव, अेक साषीयौ बसी रौ गांव ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०४६)	१७९१)	१३७०)	२६१०	११११)

१ रावासड़ी ४०००)

जाट बांणीया रजपूत बसै, अरट ९ कोसीटा १४, दुसाषी ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३८७)	१६५६)	१३४७)	१९४८)	९९९)

१ भावी ८००)

वडौ गांव सीरवी जाट वांणीया वसै, ऊनाळी घणी ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९२२६)	१६१२१)	१९५७१)	१४४८३)	८४३६)

---

१. खारे पानी से पैदा होने वाले विशेष किस्म के गेहूँ।

१ लांवो ५०००)

विसनोइ जाट बसै, नदी री साट[1] सुं ऊनाळी हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१७८७) ४१०५) ४९५८) ४०४९) २३५३)

१ झाक ४०००)

जाट बांणीया रजपूत बसै, ऊनाळी घणी, दुसाषौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४९५) ९६०) १३८७) १५०५) ९९०)

१ बोल ४५००)

जाट बांणीया बसै, अरट १, चांच ४ हुवै । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । बडौ गांव ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३१६४) ५६५७) ३८२७) ४०००) ३५०६)

१ कुसांणो ३०००)

जाट बांणीया बिसनोई बसै, ऊनाळी घणी, दुसाषौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

८२४) ३२८०) ४१९८) ३९२७) २९४७)

१ काळाऊना ३३००)

जाट बांणीया रजपूत बोहरा माळी बसै, ऊनाळी घणी, दुसाषीयौ वडौ गांव ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

७४३) २३५३) २१८३) १९२१) ११८८)

१ हरीयाडांणी ३०००)

जाट रजपूत बांणीया बसै, सेजो नहीं[2], सेंवज चिणा हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

७२३) ४५५४) १३३०) २८०८) २३१४)

1. नदी के आस-पास की गीली जमीन । 2. कुओं के लिए पृथ्वी-तल में पानी नहीं ।

१ सिलारी ४०००)

जाट बसै, अरट १० हुवै । सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११७०)	१६७०)	१३४९)	२८०८)	२३१४)

१ बुचकलौ ३०००)

जाट बसै, ऊनाळी अरट २० घणा दुसाषौ, भलौ गांव ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७००)	२०००)	४०४१)	१९३०)	११००)

१ रतकूड़ीयौ)

जाट बसै, सेजौ नही, थळी रौ गांव, अेकसाषौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५४)	१९९६)	३०४५)	३३४७)	१३६४)

१ लोहारी २५००)

जाट बसै, ऊनाळी अरट १० कोसीटा २५ हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५००)	१७१२)	३११८)	१९२७)	१४८६)

१ चिरड़ाणी ३४००)

जाट बांणीया बांभण बसै, कोसीटा ३, सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४८८)	४६९५)	२०८५)	३१८५)	१२३८)

१ कापरड़ो ३०००)

जाट वांणीया बसै, अरट १०, ढीबड़ा ४ हुवै । सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११६७)	३६६०)	३८८४)	३२५९)	५५३८)

१ पेजड़लौ ३०००)

जाट रजपूत वसै, कोसीटी, अेकसापीयौ, सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४४४)	३८०६)	३०८०)	२१७८)	२३७०)

१ षांवटो ४६००)

जाट रबारी वसै, कोहर १ ऊपर कोसीटो १, सेंवज हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५२)	४४३३)	१५७०)	३९४६)	२१०१)

१ रांवणीयांणो ३०००)

जाट वसै, कोसीटा १०, सेंवज वडा धोरा-बंध षेत[1] ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६६२)	२१६८)	१३२७)	२५७१)	१८०२)

१ वड़लु ३१००)

जाट बांणीया नंदवाणा वसै, कोसीटा ३० तथा ४० हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७४१)	३१८५)	१९८२)	२७०१)	२४१८)

१ तिणवासणी ३०००)

विसनोई बांणीया वसै, सेजी नहीं, अेकसाषीयौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५८१)	५०५१)	२९८५)	३२००)	११८५)

१ नांदण २५००)

जाट बांभण वसै, ऊनाळी अरट कोसीटा घणा ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२२७)	१८५०)	४४८८)	१०२९)	१०९८)

१ षेपाळी २५००)

जाट वसै, दुसाषी ऊनाळी घणी ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६०८)	१४९२)	२५८६)	१०५४)	१३८५)

१ चांदाळाव २५००)

1. मेड़बंदी किये हुए बड़े-बड़े खेत ।

जाट बांणीया रजपूत बसै। अरट ५, कोसीटा ७, चाच १० हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२११)	३७४)	४३३)	६९३)	३३०)

१ समुहाड़ीयौ २०००)

जाट बसै कोसीटा १४, सेंवज हुवै, दुसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८८४)	१४७९)	१३४८)	१४६४)	७५३)

१ बुरछा २०००)

बिसनोई जाट रजपूत बसै, कोहर १ षारौ, अेकसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	२१०)	२१५)	५२३)	४२५)

१ रामड़ावास बडौ ३०००)

बिसनोई बसै, ऊनाळी नहीं, थळ गांव[1], अेकसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५४)	१३१०)	४२०२)	१७७५)	१६५६)

१ मालावस २५००)

जाट बसै, ऊनाळी कोसीटा २०, अरट १२, दुसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००३)	१५६७)	२१३१)	१०५१)	२५७२)

१ मादसीयौ २५००)

जाट वांणीया रजपूत वसै, अरट १५, कोसीटा १२, दुसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००३)	१७८०)	७५०)	१०२३)	९१४)

1. मरुस्थल वाला गांव।

१ घोरू २०००)

विसनोई रबारी वसै। ऊनाळी नहीं, अेकसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

८०) ७७५) २२९) ७६०) ४८५)

१ षारीयौ २०००)

जाट वसै, कोसीटा १० सेंवज चिणा हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

८८२) ८५०) २५५) १०५१) ६८२)

१ वीरावस २०००)

जाट वसै, सेझो नहीं, धोरावंध षेत, अेकसाषोयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३४५) १२२१) ३६३) १८८७) ३७६)

१ सिणलौ २०००)

जाट रजपूत वसै, कोहर १ षारौ, अेकसाषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१६२) ८६८) ३५७) १०७८) ४१५)

१ घाणा मगरी २५००)

जाट वसै, सेझौ नहीं, अेकसाषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

९११) २४६५) ४८५) २२८८) ४७५)

१ वाडावास २ २०००)

जाट वसै, कोहर १ पांणी पारौ, अेकसाषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२२७) ८५५) ९७५) २५६) ६८२)

१ भुडांणो १५००)

जाट रजपूत वसै, कोहर १ पांणी पारौ, अेकसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

४०) ८४५) १०७०) ७२३) ६९०)

१ अनावास ९००)

जाट रजपूत बसै, कोसीटा १०, चांच ५, सेंवज हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५६०) ८८६) ५८३) ४७८) ४२६)

१ जोयावस १०००)

जाट बसै, अरट ४ कोसीटा २, चांच दुसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३५) ३६६) ३५६) २८४) १८०)

१ अरटीयौ बडौ ३००)

जाट बसै, कोसीटा १३, चांच २० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२४०) १८७०) ४३४) ९९४) ५७५)

१ मलार १५००)

जाट रजपूत बसै, ऊनाळी नहीं, अेकसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२८०) १०१०) ६५९) ८९७) ५६०)

१ वीनावस बडौ १५००)

जाट बांणीयां बसै, अरट ५, कोसीटा १०, चांच ३० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८

१७३) ३१५) ११५१) १२५०)

१ जालको १४००)

जाट वसै, अरट १ हुवै, सेंवज चिणा हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२७९) ७३०) १०९६) ९९९) ६९०)

१ कुवडी ८००)

जाट रजपूत वसै, कोसीटा १०, चांच २० हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३०५) १२४०) २५१) १४८३) ६०४)

१ कोहड़ १३००)

विसनोई बसै, अरट २ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६३) ४२५) १८०) ६१०) ४४७)

१ वांकुली १०००)

जाट बसै, अरट १०, चांच २० हुवै, दुसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५९०) १६१०) १७५६) ४९०) ३९५)

१ रुणकीयौ १०००)

जाट बसै, सेजो नहीं, कोहर १, पांणो भळभळो, षेत सेंवज चिणा हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६२४) ४८१) ३७२) ६८७) ५३४)

१ अरटीयो पुरद १०००)

विसनोइ बसै, कोह १ पांणी मीठो, सेवज नहीं, अेकसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६६) ८७०) १७३) ८८३) ४५६)

१ वगड़ी ७००)

जाट रजपूत बसै, कुवौ १ मीठौ, ऊनाळी नहीं, अेकसाषीयौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१५) ५५५) २०२) ५४८) ३१८)

१ जालीवाड़ो वडो ८००)

जाट बसै, अरट ८, कोसीटा १०, चांच ५ हुवै, दुसापो ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२८६) ७०३) ५७५) ६८३) ६८७)

१ हीगवणोयो ६००)

विसनोइ बसै, ऊनाळी नहीं, कोहर १ पारो, कोहड़ पोवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१८०) ३१०) ६०४) ३१०) २५७)

१ वाघोरीयौ १०००)
नेनाहरपूरै बास २ बसै, जाट बिसनोई बसै, कोसीटा २०, दुसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३४८) १०००) ५७५) ७९३) ५४९)

१ वीनावस षुरद १०००)
जाट रजपूत बसै, अरट २ कोसीटा ८, चांच २०, दुसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१६१) ४०६) १०५३) ६५६) ३२६)

१ झालामलीयौं १०००)
जाट विसनोई बांणीया रजपूत बसै।

१ झुड़ली ७००)
जाट बसै, अरट १०, कोसीटा १५ हुवै, दुसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४४२) ७३५) ७२८) ५३७) ५८७)

१ रांमपुरौ काळा ऊना रौ ७००)
जाट बसै, अरट ४, कोसीटा २ हुवै, सेंवज हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२७२) ४८०) ३७७) ४९३) ३३४)

१ रांमपुरौ रावासड़ी रौ १०००)
सीरवी जाट बसै, अरट ९, कोसीटा ५, चांच १० हुवै। संवत १७१२ वसीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१७२) ५८८) ८४६) १०९९) ५३२)

१ सरगांयो वडो ६०००)
जाट वांणीया बसै, ऊनाळी नहीं, कुवौ १ अेकसापो।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ६५५) ११४४) २५१) ३९४)

१ षोषरीयौ ४००)
रबारी जाट बसै, कोहर १ षारौ, पछै दांतीवाड़ौ पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४०) २५५) २२७) ३६६) १९५)

१ मुरकावसणी ३००)
जाट बसै, कोहर १ भळभळो, सेंवज चिणा हुवै।

१ कापरड़ा री वासणी ५००)
षारवाळ बसै, कापरड़ा भेळी, षारवाळां री बास कहीजै।

१ भागावसणी ६००)
जाट बसै, कोसीटा ८, ढीबड़ा ४, दुसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४४२) ९५४) ४००) ७७६) २५०)

१ कागली ४००)
जाट बसै, ऊनाळी नहीं, गांव अेकसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७०) ६९०) ६७) ४९६) ३२०)

१ सोरगीयौ षुरद ३००)
जाट बसै, बड़े सीरगीये पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५) ४००) ९५) ३४०) २६५)

१ सहलवौ षुरद १५००)
जाट वांणीया रजपूत रवारो बसै, कोहर १ षारौ, अेकसाषीयौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७०) ११६५) ५२८) ८५०) ६५८)

२५४. २ सुना षेड़ा मांजरा

१ हरबाई री बासणी २००)

षेत पींपाड़ में षड़ीजै।

१ सारगीयो तीजौ १५०)

वडा सारगीया भेळा षेत षड़ै।

२

२५५. ८ सांसण रा गांव—

१ षेड़ेचौ

दत्त राव श्री गांगाजी रौ, ब्रीहामण रांमा मुरार रा श्रीमाळी नुं हिमें ब्री० कचरौ दामोदर रौ छै। जाट बांभण बसै, अरट ६, कोसीटा ५ दुसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	३८०)	१८०)	३७५)	४००)

१ वड़ां षुरद

दत्त राव श्री मालदेजी रौ प्रोहत षींवा देवाकर रा आचारज सीवड़ नुं। हिमें प्रौ० कचरौ देईदासोत छै। जाट बांभण बसै। कोहर १ पांणी षारौ। पाषती रा गांवां पीवै[1]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	७०)	९०)	८५)	६५)

१ कानावस

रा० काना विजा सिवराजोत रौ दत्त, संढायच रतना चाचावत नुं। हिमें नाथौ रूपावत छै। जाट चारण वसै। अरट ६ कोसीटा २।

सवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१३०)	११०)	२७१)	२१२)

१ जालीवाड़ौ पुरद

राजा श्री गजसिंघजी रौ दत्त वारहठ राजसी परतापमलोत नुं,

१. आस-पास के गांवों से पानी पीते हैं।

हिमें किल्याणदास कांनु राजसींघोत छै। जाट बांणीया बांभण चारण वसै। अरट ६ कोसीटा २ चांच ४ हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५०)	३१०)	५१०)	३२०)	४०२)

३ वड़लू रा बास ३ सांसण

१ सांदुवां रौ बास ५००)

रा० वैरसल प्रीथीराज जैतावत रौ दत्त, सांदु गेहलांणंद देवावत नुं। हिमें वुढो दलौ सेहसा रा बेटा छै। चारण जाट बसै, कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	१९०)	१४०)	१८०)	१८०)

१ डूंगरसी रौ वास ३००)

रा० महेस घड़सीयोत री दत्त, वीठु पीथांणंद देवाणंद नुं, हिमें नैतसी जसावत छै। कोहर १ ऊपर कोसीटो छै। चारण बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	८५)	१६०)	१००)	८०)

१ वींजा रौ वास १२०)

रा: महेस घड़सीयोत री दत्त, वीठु दुदा वीदावत नुं। हिमें गोयंद चोला रौ छै। चारण वसै कोसीटो १।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	११५)	१८०)	९०)	१००)]

३

१ गांव वुजड़ो

मोटा राजाजी रौ दत्त, भाट मनौ रूपसोत नुं। संवत १६५१ हुवौ। हिमें भाट रिणछोड़ विहारीदासोत नै छै। जाट नै भाट वसै। अरट ४।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३५) ११०) ७०) २७५) २२५)

८

७९

२५६. तर्फ बीलाड़ौ

१ बीलाड़ौ षास— २००००)

बडौ कसबौ, माहाजन सीरवी, घणी वसती छै[1]।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१६८१०) १५१९०) ३६०६९) १६०५६) १५११८)

१ षारीयौ भांणा रौ ४०००)

जाट सीरवी बांणीया बसै[1]।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२३००) ३३८७) ५८०३) २५२७) २००७)

१ जैतीवस २०००)

जाट कुंभार बांभण रजपूत बसै। अरट २ चांच २०।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
९५६) ११४७) ९४६) १०२३) ५२२)

१ हरस १०००)

जाट रजपूत बसै, अरट ४, कोसोटा ५, चांच ४, दुसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०९) ३५०) २१५) ३९०) ३५५)

१ ऊंचीयाहेड़ौ ५००)

बीलाड़ै रा चोधरीयां दाषल भेळौ, सीरवी कुंभार बसै, अरट ढीबड़ा[2] सीरवी करै छै।

१. ऊनाळी घणी बडो गांव (अधिक)। २. बलाड़ा रा।

---

1. बड़ी आबादी वाला है।

१ पचीयाक ४००)[1]

जाट सोरवी वांणीया वसै, सेंवज ऊनाळी घणी ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४१९७)	४९७८)	८६४५)	४८६०)	३४५२)

१ वींझवाड़ीयौ २५००)

जाट वसै, अरट १५ चांच १०, दुसाषौ[2] ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११७०)	१८९१)	२१८७)	१३०१)	९२१)

१ वींझीया वसणी १५००)

रजपूत वांणीया कुंभार वसै । अरट २१ चांच २५ हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३०)	१८३५)	१०५३)	७०२)	५५४)

१ कुंपड़ावस ७००)

पटेल वसै, अरट ४, चांच ५, दुसाषौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३८०)	४९६)	३५५)	५९७)	२६५)

१ मुरीयारड़ौ[3]

सूनो षेडौ, बीलाड़ा में मांजेर, लूण रा आगर ।

१ ऊदेपुरौ

सूनो षेड़ौ, बीलाड़ा रा जोड़ में मांजरै छै ।

११

२५७. ४ सांसण

१ जेसलवस

राव श्री मालदेजी रौ दत्त, व्यास अंबाल हुवा रा श्रीमाळी नुं दीयौ, संमत १५८० दीयौ । हमें हेंसा ३ सांसण छै । हेंसो १ षालसे चाकरी रौ छै । सीरवी जाट वसै छै, षारोळ वसै ।

---

1. ४००० । 2. भलो गांव (अधिक) । 3. मुंडियारड़ौ ।

३ सांसण

१ श्रीदेव आचारज नुं[1]

१ केलण नारणोत नुं नैतसी नुं ।

१ लाधो किसनदासोत नुं ।

३

१ हैंसो १ वीदाधर किसनदासोत राः किसनसिंघजी साथे गयौ। तरै सतीदास नुं छै ।

४

गांव १ इण भांत छै। ४००)

सीरवी जाट बांणीया बसै, षारवाळ, ऊनाली अरट ३० ढीबड़ा, सेंवज ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३२०)	७२०)	६२०)	६२०)	२२९)

१ ऊदळीया वास २५०)

राजा उदैसिंघजी री दत्त बारैट केसा जीवाउत रोहड़ीयै नुं, हिमें किलांणदास रूपसोत छै। ऊनाळी रा अरट १२, जाट रजपूत सीरवी बसै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३२०)	७२०)	६२०)	६२०)	२२९)

२ वडी रा बास

राव श्री रिड़मलजी रौ दत्त बारैट अमरा दूदावत नुं। हिमें सारंग जैतमालोत रांमचंद गोपाळोत छै।

१ बास १ सारंग रौ, जाट बांणीया चारण बसै, २००)

१ बास १ रांमचंद रौ, २०००)

जाट बांणीया चारण बसै ।

२

---

१. श्रीदत्त सीवरांम सांकरदास रा नुं ।

अरट १६ ढीबड़ा ४ चांच १० नकस   ४००)

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१००) ६८०) २१०) १०२०) ६७४)

४

२५८: तफै बाहलो

१ बाहळो षास   ४०००)

माहाजन जाट सीरवी रजपूत बसै, सेंवज बीघा १००१ माहे पीवै, चांच ४०, दुसाषौ बडौ गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२१११) ६१४५) ३६४५) ४४८१) २९१०)

१ मालकोसणो   ५५००)

जाट बसै, अरट १०, कोसेटा, सेंवज बीघा २०० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१७८६) ३९३५)[1] ३९००) ३७४७) १६७१)

[2][१ बळुंदो   ४०००)

माहाजन रजपूत जाट बसै, बोहरा बांभण चारण सोह बसै[1], अरट १५ कोसीटा २० चांच हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१३७७) २४१०) २८४५) ३३४०) २६७१)

१ घोड़ारड़ी   ३५००)

जाट रजपूत बसै, अरट १०, कोसीटा ४० दुसाषौ, बडौ गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६१५) १४००) ११५५) १०५६) १३३०)

१ रावीर   ३०००)

जाट बसै, ढीमड़ा १० चांच १५ हुवै, सेंवज बीघा ५०० ।

१. ३९५३। २. 'ख' प्रति का अंश।

1. सभी जातियों के लोग बसते हैं।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१४७०) २०७०) २५२५) २२३३) १५२६)

१ ओलवी २०००)

सीरवी जाट बांणीया बसै, अरट १५, चांच २० हुवै। दुसाषौ, भलौ गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३१६) २१६०) २११०) ०) १४०८)

१ वाघावस ५००)

जाट बसै, ढीमड़ा २ षारचीया सेंवज बाहे, वीघा १०० हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७२) ३८६) ४०) ३४६) २६६)

७

१ सांसण गांव

१ कांनावस १५०)

श्री मोटा राजा जी रौ दत्त बांभण बछा गुगली द्वारकाजी रा सेवगां नुं, हिमें सांवळदास छै। जाट बसै अरट २, चांच ४ हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५) १२०) १८०) २२५) १६०)

२५९. तालकै षैरवौ

१ षेरवो षास ६०००)

सीरवी घांची माहाजन बांभण सोह पवनजात बसै। बडौ कसबो, अरट १८, कोसीटा १०, चांच ४० हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२७५) ७२२५) ६९१७) ६९३३) ४७९३)

१ लांबा २०००)

सीरवी रजपूत बांभण बसै, अरट ५, चांच ५ दुसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२३१)	९१५)	३२६)	१०९३)	६३९)

१ सानेही १०००)

रजपूत बांभण बांणीया जाट रबारी वसै, अरट ८, कोसीटा १०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१८०)	५३५)	२२०)	९९५)	५२०)

१ धांमळी ३५००)

सीरवी बांणीया वसै, अरट ६, वडौ गांव दुसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९३४)	१५९१)	३१९४)	३३५१)	२२१७)

१ हींगोलो बडौ १०००)

बांभण रजपूत वसै, अरट ६ दुसाषीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११४)	९४६)	७५४)	१२००)	३३६)

१ वुधवाड़ौ ५००)

सीरवी जाट रजपूत वसै, अरट १०, कोसीटा ३०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२००)	३८१)	४०७)	६५८)	५४६)

१ सुगाळीयौ २००)

७

२ सूनाषेड़ा

१ आयची सूना ३००)

वुधवाड़ा भेळी मांजरौ।

१ बापुनी २००)

षेड़ो सूनौ वीजा गांव रा लोग षड़ै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०	०	५१)	६७)	७८)

२

२ सांसण ता० षेरवा रा—

१ हींगोलो षुरद ६००)

राजा श्री गजसिंघजी रौ दत्त आढ़ा किसना दुरसावत नुं। हिमें महेसदास छै। सीरवी बांभण बांणीया बसै, अरट २० हुवै, दुसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२००)	४००)	२१०)	७३०)	८१८)

१ सांषीड़ो २००)

दत्त राव श्री जोधाजी रौ षिड़ोया चांदण लुणावत नुं। हिमें भैरवदास जसौ जाडो छै। चारण बसै। अरट १, कोसीटा ४, चांच २ हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	१००)	१२०)	१३५)	१३०)

२

२६०. तालकै पाली

१ पाली षास ४०००)

माहाजन घांची बांभण रजपूत सगळी जात पवन बसै। बडौ कसबौ, अरट ४०, कोसीटा २०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५३५)	३४३३)	३२२१)	४४९८)	३०७५)

१ देणो १५००)

पटेल रजपूत बांभण बसै, अरट २ कोसीटा २ चांच २०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२५)	७१०)	९५)	४०५)	३६०)]

१ हांमावास १३००)

पटेल रजपूत बांणीयां। अरट ५ कोसीटो १, लूण रौ आगर।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१३०)	९१५)	५८१)	११८६)	६९३)

१ सांवळतो षुरद १०००)

जाट रजपूत बांभण बसै, कोसीटा २२, चांच १० दुसाषी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५०)	४२०)	८०)	४८५)	४९०)[1]

१ ऊतवण १०००)

रजपूत जाट बांणीया। अरट ५ कोसीटा १० दुसाषी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४०)	३८१)	२८७)	३०१)	३१०)

१ गीड़ाघड़ो[2] १०००)

रा० अचळे वीकावत री वसी, ढीबड़ा १० कोसीटा १५।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२६३)	११४३)	४८७)	८९६)	७४०)

१ जवड़ी ६००)

रजपूत तेली[3] बसै, अरट १ कोसीटा १५।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२३३)	७९२)	५१२)	७४१)	५८०)

१ भाभेळाई ५००)

पलीवाळ बसै, सेभो नहीं, भालेलव रै वेरै पीवै[4]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५३)	२२५)	६३)	७१७)	३८०)

१ आटरड ५००)

बांभण[5] रजपूत बसै, कोसीटो १ चांच २।

---

१. ४२०। २. गीडाधरा। ३. घांची। ४. तळाव रै वेरै पीवै।
५. पालीवाळ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५६)	३२०)	३१)	४३५)	१५८)

१ मढली वीकां री ४००)

बांभण जाट बसै सेंवज षेत १० धोरा भरीयां पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१३६)	५२५)	८५)	८२५)	४०५)

१ केरलो १०००)

सीरवी रजपूत बसै, अरट ५ कोसीटा १५ चांच ४।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१७३)	५७४)	६८९)	७९५)	७२०)[1]

१ गुरलाई[2] ७००)

रजपूत बांभण बसै, तळाव री बेरियां पीवै, ऊनाळी नहीं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२००)	२८२)	४०)	४००)	३१०)

१ वालेळाव ६००)

राजणदास[3] नाथावत री बसी। अरट १, कोसीटा १०, ढीमड़ा ४, चांच १०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२१)	२४०)	४३५)	४३०)	३५५)

१ भालेळाव ६००)

बांभण बसै, अरट १।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	२२५)	११९)	७६१)	५५६)

१ नीबीयाहेड़ी ५००)

बांभण बसै, कोसीटा २।

---

१. १२०। २. गडलाई। ३. जोगीदास।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२८)	३८१)	९६)	४१२)	३०४)

१ कांठद्रहो[1] ५००)

रजपूत जाट वसै, सेझौ नहीं सेंवज छै। तळाव वेरै पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	३४५)[2]	१२५)	५२०)	३२५)

१ आकड़ावास ६००)

रजपूत जाट वसै, अरट ४, चांच ४ सेंवज।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	२५०)	६०)	३२५)	२८३)

१ कानड़वास[3] ४००)

पलीवाळ रजपूत वसै, कोसीटा ७।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	४७०)	२१८)	४३५)	३४८)

मंढीयौ ३००)

जाट-बांभण वसै, कोसीटा १७।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८७)	५८२)	४०५)	६८२)	५९०)

१ भुरीयावासणी ४००)

रजपूत जाट वसै, कोसीटा १५[4] चांच १५[5]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१७२)	१५)	३५०)	२७०)

१ पेतावास ४००)

जाट रजपूत वसै, सेझो नहीं, सापै पीवै।

---

१. काठद्रो। २. ३४१। ३. कानावास। ४. ५। ५. १०।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८१)	१५५)	१२०)	११५)	१८०)

१ रांमावास ३००)

रजपूत बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	१६२)	४०)	१६५)	१५५)

१ भुंमादड़ौ ३००)

रजपूत बसै, कोसीटा २, चांच २ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	१३०)	१२५)	२२५)	२०७)

२८

२६१. ६ सूना षेड़ा मांजरे

१ मुलीयावास चांगल भेळो षेडो[1] ८००)

१ पटेलां री वासणी १००)

१ नीबलो १००)

१ सांडवास पाही बाहै १००)

१ सोमावस १५०)

१ दासावस १००)

६

२६२. १० गांव सांसण

१ मादड़ी २००)

आदु दत्त राव कानड़दे सोनगरा रौ, ब्रा० सांकर हरहरा नुं रायगुर नुं । हिमैं जेतौ जसावत[2] छै । राठौड़ दलपत भोजराजोत री बसी छै । चांच १० सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	८५)	७०)	२१५)	११५)

१. पड़ीजै । २. सजावत ।

२ गांव ढावरवास २ ४००)

आदु दत्त राव कानड़दे सोनगरा रा ब्रा० सीवदे सांकर राय रै नुं गुर आचारज नुं दीयौ।

१ भारमल री वास

वीरदास महेसोत नुं, वांभण रजपूत वसै, कौसींटा १०, चांच ८ हुवै।

१ सांईदास री वास

रूपसी गोपाळोत नुं, वांभण वसै छै। कोसीटा १, चांच ५ हुवै।

सालीणो रेष भेळी मंडी छै[1]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	२१०)	७५)	५२५)	३१०)

२

१ आकेलड़ी १००)

सोनगरा अपैराज रिणधीरोत री दत्त, प्रा० पंगार चांपावत राय गुर नुं। हिमें महैराज टोकरी[2] छै। वांभण रजपूत वसै, अरट ४, कोसीटा ५, चांच १० छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२३)	७०)	२०)	१००)	१००)

१ पुनाईता ३००)

राव श्री रिड़मलजी री दत्त प्रा० पूना अषाव्रत रायगुर नुं। आचारज हमें ठाकुरसी वीठल री छै। रजपूत वांभण वसै। अरट ६ कोसीटा ४, चांच १ हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	६५)	३०)	२००)	३३५)

१ रावळवास १५०)

---

१. वंट जुदै (अविक)। २. टकारो।

सोनगरा मांनसिंघ अषैराजोत रौ दत्त, प्रा० माहाव रायगुर नुं। हमें जीवौ किसनावत छै। बांभण रजपूत बसै . अरट १४ चांच हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	१३०)	१६०)	१०२)	१००)

१ धरमदवारी १५०)

राव श्री रिड़मलजी रौ दत्त प्रा० हरभा माला लषमणोत आचारज नुं पांचलड़ा नु हमें मालौ दिदावत छै, बांभण रजपूत बसै कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	६२)	२५)	२००)	२००)

१ दुपावास[1] ६००)

राजा गजसिंघजी रौ दत्त बारैट राजसी अषावत रोहड़ीयै नुं सं० १६८६ दीयौ। हिमैं भैंरू[2] भींवराज राजप्रोत छै। रजपूत चारण बांणीया बसै। अरट २ कोसीटा ५ चांच ४ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८०)	३७५)	११०)	४२५)	४५०)

१ पुनलां री वासणी २००)

षेड़ा री षबर नहीं। देवी पुनली रा पुजारा नुं हुती। पुनाषर री पाषती ढुंढा छै[1]। सु वेह बांभण मर गया। हिमें सीनासी[2] सेवा करै छै। १००)

१ बालुवास री षबर नही। १००)

१०

४४

१. रूपावस। २. नंदु।

1. मकानों के खंडहर हैं। 2. संन्यासी।

२६३. तफै रोहठ

१ रोहीठ षास २५००)

बडौ कसबो, माहाजन जाट रजपूत वसै, अरट कोसीटा घणा, ऊनाळी दुसाषौ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६०३) ३२२)[1] ५१३५)[2] ३३१८)[3] १७७१)

१ मुंगलो ५००)

बांभण रजपूत वसै, कोसीटा २०।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२०) ५०६) २३७) ३७६) २३३)

१ तीघरी ५००)

पटेल बांभण वसै। अरट कोसीटी २० चांच ४० हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३५१) ४१०) ६२४) १६०६) १०२५)

१ चोटीलो २०००)

पटेल रजपूत वसै। कोसीटा १२ चांच १०[4] हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५५) ८८२) ६१३) ११८१) ६१८)

१ वीठुल ४५००)

पटेल बांभण वांणीया वसै। कोसीटा १९ ढीबड़ा २।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२८६) २०७३) १०७०) ३१७२) १५८४)

१ पांडी ३०००)

पटेल रजपूत वसै। अरट ४ कोसीटा २० चांच ४०।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१९०) १९४७) ७४०) ६५५) ६७०)

---

१. ३२२७)। २. ११३५। ३. ३३७८)। ४. २०।

१ अरटीयौ १५००)

पटेल बसै । कोसोटा २० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११४)	१४५५)	४१५)	१५०)[1]	५७७)

१ डूंगरपुर १०००)

पटेल रजपूत बसै । कोसीटा १५ सेंवज बीघा ४०० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३६०)	१५१३)	९११)	१२७५)	३७१)

२ नींबली १०००)

पटेल बांभण बसै ।

१ पटैला री १ बांभणाई

सेंवज बीघा हुवै सीकारपुर पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५८०)	१४०८)	११५)	१४८९)	९७१)

१ दुघली ७००)

पटेल बांभण सीरवी बसै । कोसीटा १५, ढीबड़ा ३, चांच ३० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२०)	९९०)	५२९)	७६४)	५८२)

१ कालकी कलानी[2] १०००)

पटेल बसै । कोसीटा ३० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२३६)	१०९६)	५४३)	१५२०)	८१७)

१ लालकी १०००)

जाट बांभण बसै सेझो नहीं सेंवज हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४८)	१०३१)	२०३)	१०३०)	४५८)

---

१. १५०६) । २. कालाली ।

१ सांभी १०००)

पटैल वसै, अरट २ कोसीटा २०, चांच २० हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	०	१०२६)	६९८)	७२८)

१ भांडवी ६००)

वांभण रजपूत वसै। कोसीटा १० चांच ५ सेंवज वीघा २०० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१०)	५७०)	१६५)	५९९)	४७५)

१ ढुंढड़ी ५००)

वांभण रजपूत वांणीयां वसै । सेंवज वीघा २००) ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११०)	४१७)	७५)	४३४)	२५०)

१ मोरढंढ

रजपूत वसै, अरट २ चांच ४ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	११९)	१३१)	२२८)	२३०)

१ पारलो २०००)

वांभण रजपूत वांणीया वसै । सेंवज वडी पेंती ऊनाळी[1] ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६८०)	१९८६)	१५०)	१६७९)	११७०)

१ हरावास ५००)

रजपूत वांभण वसै । कोसीटा ७ हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३०)	३६४)	५७०)	४१२)	२३०)

१९

१. चेम्को नहीं (अधिक) ।

१ गांव सांसण

पातावास दानावासणी

रा० पता घड़सीयोत रौ दत्त, रोहड़ीया दांमौ हरषावत नुं। हिमें जसौ रूपौ छै। चारण पटेल बसै। कोसीटा ७, चांच ४।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	७०)	२५)	१२५)	१००)

२०

२६४. तर्फ गुदोच्छ

१ गुदोच षास ६०००)

माहाजन सीरवो घांची सगळी जात छै। बडौ कसबौ छै। अरट ४, कोसीटा ढीबडा ३० चांच ४०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८२५)	३५३०)	४९६१)	४५८०)	३५५७)

१ ग्रैदलां १५००)

सीरवी बांणीया[1] बसै। अरट १, चांच ५।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१७६)	९८९)	४९७)	१११८)	३३४)

१ कुंरणो[2] ३०००)

रजपूत बांणीयां बांभण माळी बसैं। कोसीटा २ चांच १०।

१ वाळौ १५००)

१ साहली ८००)

रजपूत मैणा बसै। राजसिंघ जसवंतोत री बसी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२०)	२०५)	१२०)	३००)	१००)

५

१. रजपूत (अधिक)। २. कुडणी।

५ सूना षेड़ा—

१ पादरलां	—
१ पातावास	१००)
१ तोगावास	१५०)
१ देवळीयौ	१००)
१ बेरी	१००)

१०

तर्फे भाद्राजण

१ भाद्राजण २०००)

२६५. रजपूत मैणा बसे। ऊनाळू भरीजती[1], सेंवज हुवै। बीघा ५००।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४०)	१०६०)	५०)	२००६)	१०८६)

१ मुंडावाय ३८००)

पटैल वसै। अरट कोसीटा १०, ऊनाळी बीघा ५००।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२७०)	१२४२)	३७०)	२७९९)	१३६२)

१ राहणो २०००)

पटैल वांणीया बांभण बसै। ऊनाळी बीघा २००० सेंवज।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५५)	१७५५)	१७५)	३५५०)	९८२)

१ देवासणदी[1] २०००)

पटैल वांणीया रजपूत बसै। कोसीटा ७५ दुसाषी। वडौ गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५००)	२००१)	२१७०)	२१२०)	१२८५)

१. देवांणदी।

1. वर्षा का पानी एकत्रित होता है।

१ गेलावास २०००)

पटैल रजपूत बसै । कोसीटा १० सेंवज बीघा १० दुसाषो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०५)	१०२५)	३७३)	७५४)	२८९)

१ भांडवली १५००)

पटैल रजपूत बांणीया बसै । सेंवज बीघा ५०० ऊनाळी ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१०)	११४०)	२१८)	२३३६)	८४४)

१ वरवा १२००)

पटैल बांणीया रजपूत बसै । अरट ६ ढीबड़ा ४ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२०)	१६४६)	९२४)	१४६७)	८५४)

१ सिणगारी १०००)

पटैल बांभण रजपूत बसै । कोसीटा १५, चांच १० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१३०)	१३३५)	४३६)	१५५४)	८३८)

१ नीलकंठ १०००)

पटैल रजपूत बांभण वसै । ऊनाळी वीघा ४००, सेझो नहीं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७०)	३३५)	८२)	६०७)	३८३)

१ मुरड़ीयो ७००)

पटैल रजपूत वसै । कोसीटा ४, चांच ५ सेंवज वीघा २०० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१०)	५२५)	१३२)	३९५)	२९०)

१ पुटांणी ३०००)

पटैल वांणीया । कोसीटा १५, ऊनाळी वीघा २०० ।

१७१५	१६	१७	१८	१९
२२८)	१०२९)	३२५)	२२८१)	६८७)

ा २०००)

टैल वांभण वसै । अरट २, ऊनाळी वीघा ५०० ।

१७१५	१६	१७	१८	१९
१५०)	९९०)	७४)	१०००)	५४०)

ळो २५००)

रजपूत पटैल वांभण वसै । ऊनाळी बीघा १००० सेझो नहीं ।

१७१५	१६	१७	१८	१९
२१०)	१६६०)	१३०)	१५४९)	९४२)

ांठला[1] १२००)

सीरवी वांणीया रजपूत वसै । अरट १० कोसीटा ७ चांच ५ ।

त	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२०)	१२२६)	१६९५)	८७१)	५५५)

ांचपदरी १०००)

पटैल बांभण रजपूत वसै कोसीटा १० हुवै ।

त	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	४००)	१९२)	३३०)	२८८)

रांहांमो १०००)

पटैल रजपूत वसै ।

वत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५०)	१८०)	८९)	१३५)	६१८)

वावड़ि १०००)

पटैल रजपूत वसै । अरट २ कोसीटा १५, ऊनाळी बीघा २०० ।

---

१. चांठाला ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८२)	७८०)	४७४)	३९४)	३२६)

१ लांबड़ौ

पटैल रजपूत बसैं। ऊनाळी, सेझो नहीं। लाषण धुब[1] पीवै। सेंवज वीघा २००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	२८६)	५६)	५७७)[2]	३२७)

१ चेहड़ां ७००)

पटैल रजपूत बसै, सेझो नहीं मुडवाय पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२८)	३६७)	६५)	४६२)	४८४)

१ घवेलरीयौ ७००)

पटेल वांणीया रजपूत बसै। अरट ५, कोसीटा ८ सेंवज वीघा १००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३१)	२६७)	७५८)	४६०)	३०१)

१ फैकारीयौ[3] ४००)

रजपूत कुंभार षाती वांणीया बसै। अरट ४, कोसीटा १२ सेंवज।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	४१०)	४१०)	५८६)	३२६)

१ नवसरौ २५००)

पटेल वांणीया रजपूत[4] वसै। कोसीटा ५० तथा ६० फेर सु हुवै। ऊनाळी वीघा ३०००।

---

१. दुब। २. ५१७। ३. केफारियों। ४. बडो गांव (अधिक)।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१७५) २३८५) ६६०) १५०) ९६६)

१ भंवरी १५००)

रजपूत पटैल वांणीया वसै। ऊनाळी बीघा ४००, सेझो नहीं। तळाव रै वेरै पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
११०) ११२२) ४७) १३७७) ४३५)

१ कुलग्रांणो १०००)

रा० मुकदसी कीसनसींघोत री वसी रा घर ४०। कोसीटा १८ सेंवज हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) ४१०) २६२) ५७६) ४९५)

१ उदरा ७००)

रजपूत वसै। कोसीटा १५ सेंवज हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४५) १७०) २८३) ५७४) ४१०)

१ गोधावासण ५००)

मुकंददास री वसी[1] अरट १, कोसोटा ५, सेंवज हुवै। घर १५०।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४०) १७०) २१५) ४४२) ४१०)

१ सुंगाळियौ ५००)

रजपूत बांणीया पटैल रैबारी वसै। सेझो नहीं। नवसर रै उना पीवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) २००) ४०) १७५) २०४)

---

१. रा० मुकंददास सादुळोत री वसी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८२)	७८०)	४७४)	३९४)	३२६)

१ लांबड़ौ

पटैल रजपूत बसै। ऊनाळी, सेझो नहीं। लाषण धुब[1] पीवै। सेंवज वीघा २००।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	२८६)	५६)	५७७)[2]	३२७)

१ चेहड़ां ७००)

पटैल रजपूत बसै, सेझो नहीं मुडवाय पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२८)	३६७)	६५)	४६२)	४८४)

१ घवेलरीयौ ७००)

पटेल बांणीया रजपूत बसै। अरट ५, कोसीटा ८ सेंवज बीघा १००।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३१)	२६७)	७५८)	४६०)	३०१)

१ फैंकारीयो[3] ४००)

रजपूत कुंभार पाती वांणीया बसै। अरट ४, कोसीटा १२ सेंवज।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	४१०)	४१०)	५८६)	३२६)

१ नवसरो २५००)

पटेल वांणीया रजपूत[4] वसै। कोसीटा ५० तथा ६० फेर सु हुवै। ऊनाळी वीघा ३०००।

---

१. ध्रुव। २. ५१७। ३. फेंफारियो। ४. बडौ गांव (अधिक)।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१७५)	२३८५)	६६०)	१५०)	९६६)

१ भंवरी १५००)

रजपूत पटैल वांणीया बसै। ऊनाळी बीघा ४००, सेझो नहीं। तळाव रै वेरै पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११०)	११२२)	४७)	१३७७)	४३५)

१ कुलग्रांणो १०००)

रा० मुकदसी कीसनसींघोत री वसी रा घर ४०। कोसीटा १८ सेंवज हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	४१०)	२६२)	५७६)	४९५)

१ उदरा ७००)

रजपूत बसै। कोसीटा १५ सेंवज हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	१७०)	२८३)	५७४)	४१०)

१ गोधावासण ५००)

मुकंददास री वसी[1] अरट १, कोसोटा ५, सेंवज हुवै। घर १५०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१७०)	२१५)	४४२)	४१०)

१ सुंगाळियौ ५००)

रजपूत बांणीया पटैल रैबारो वसै। सेझौ नहीं। नवसर रै उना पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	२००)	४०)	१७५)	२०४)

---

१. रा० मुकंददास सादुळोत री वसी।

१ सहैदरीयौ ५००)

पटैल रजपूत बसै। कोसीटा ४ सेंवज बीघा १००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	२३६)	९७)	४३४)	२६१)

१ पगथारी ५००)

पटैल रजपूत बसै। अरट ३, कोसीटा ४।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	१७२)	७०)	२५४)	१४३)

१ राषांणो ४००)

रा० राजसिंघ राघौदासोत री बसी। घर १०, कोसीटा ८ सेंवज बीघा १००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	२१०)	१५६)	७)	२१०)

१ नीवली ४००)

वांणीया बांभण मैणा बसै। रा० रामसिंघ दलपतोत री बसी। घर ४५, अरट १ मोतीसरां[1] मैं वंट बीघा १०००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	२२१)	१००)	६२५)	३६०)

१ पांभी ४००

रजपूत बसै। नवसरो पीवै। सेभी नहीं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१४६)	४०)	१५१)	

१ वाघुंदो ४००)

रजपूत वांणीया वसै। कोहर १ पारो।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०	१४६)	२५)	१०५)	८२)

1. चारणों के याचक जो अच्छे कवि भी होते रहे हैं।

१ तोडवी २००)

रा० विहारीदास कुसलसिंघोत री वसो। घर ३०, गिरवरीये वाहाळै पांणी पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१)	३७)	५०)	१०५)	१००)

१ कुडली १५०)

चारण बांभण वसै। नदी री वेरीयां पांणी पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	५०)	२५)	२२५)	१५०)

१ कालां री पादर २००)

देवड़ो नणराज नराईणदासोत री बसी, घर ४०। नवसरै पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	३५)	२१)	१०५)	३५)

१ घांणां ७००)

पटैल रजपूत वांणीया वसै। अरट २ षारचीया नदी पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४०)	८४२)[1]	१७०)	७४५)	३६१)

१ सीहराणो ६००)

पटैल रजपूत वसै। कोसीटा ८, चांच ४ ऊनाळी वीघा १५०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	३१६)	२२४)	५५६)	३४०)

१ वीजलो ४००)

पटैल वसै, घांघा भरलै पीवै। सेझो नहीं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६५)	६१२)	२४)	५८४)	३२४)

---

१. ४४२)।

१ गोयंदळाव १५००)

पटैल मैणा बांभण बसै। ऊनाळी मोतीपुरा में बीघा ८०० हुवै। कुवौ १ षारौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७५)	५९५)	३८)	७०८)	२३५)

१ पातीवास २ १०००)

रजपूत बांभण बसै, कोसीटा ९, चांच ५। ऊनाळी बीघा २००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२००)	४६०)	३१४)	५०१)	४२५)

१ जैतपुर[1] १२००)

अरट १, कोसीटा ३१, चांच १०। दुसाषौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३८०)	५३५)	८७५)	१४२३)	७८६)

१ घीगांणो ५००)

पटैल रजपूत वसै। कोसीटा १०, चांच ५।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	२६२)	११६)	४७२)	४९५)

१ वीणंण ६००)

पटैल रजपूत वसै। तळाव रै वेरे पीवै। सेभौ नहीं। वीघा २००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२७)	२१०)	८०)	६८०)	१५२)

१ चुडांवाई ६००)

रा० दयाळदास नराणदासोत री वसी। घर २५, कोसीटा ४, चांच ४।

१. पटैल रजपूत बांमण कुंभार बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११०)	१५५)	२०)	२२१)	१४१)

१ बावड़ी ५००)

पटैल राजपूत बांभण बसै । नवसरीये पोवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५)	१४२)	३०)	१५५)	६२)

१ रेवड़ा ५००)

सीधला रांणा सुंदर पेमोतरी बसी । घर ३० कोसीटा २ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१६१)	१४६)	१२५)	१३३)

१ हाजावासणी ४००)

भगवान रांमोत री बसी । कोसीटा १० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	६३५)	७०)	५८०)	२७५)

१ वांकली ४०)

रा० गोपाळदास उदैसिंघोत री बसी घर ५० चांच ४ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	४०२)	२५)	१५६)	१६०)

१ दुधीयौं ४००)

बांभण मेणा बसै । घर ५५ नवसरै पोवे ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३८)	१५५)	१२०)	२६०)	११०)

१ वुसीयाछली[1] ३००)

रजपूत बांणीया पटैल बसै, देवड़ा वगैरै[2] री बसी ।

---

१. वुसियाथळी । २. ऊमरा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	४७)	०	१००)	११०)

१ रेवड़ा २००)

कुंपा रा रजपूत घर ५ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	४१)	२६)	४५)	४५)

१ गिरवरीयो २००)

रा० सुंदरदास प्रथीराजोत री बसी । घर २०, कोसीटा १२ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	१७०)	३२२)	४३१)	१९९)

१ डुमरो २००)

रा० जगरूपराम सादुळोत री बसी । घर ३० नदी री बेरीयां पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	११३)	२१५)	१३५)	११०)

१ भींडर १५०)

रा० लपमण सादुळोत री वसी रा घर ६० कोसीटा ८ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	११६)	२९६)	१०३)	११०)

५४

२९६. ३० सूना पेड़ा माजरे—

१ कोरणो ५००)

पेड़ो सूनो बांभण रा लोग पड़ै ऊनाळी बीघा ५०० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	२७२)	३०)	२७१)	१८०)

१ माहूल बावड़ी ५००)

[illegible] रा लोक पड़ै, ऊनाळी बीघा ४०० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१७०)[1]	२०)[2]	१००)	११०)

१ मालगढ ५००)

भाषर माह वलती हिमै सूना षेत पड़ीया छै।

१ मुलेव ४००

सींधलांह ठाई[3]

१ सीलां रो वाड़ी ३००)

घांणा मांहे

१ थांपण २००)

रहेपां[4] री जोड़ छै।

१ कुवरड़ो षुरद २००)

षबर नहीं, सांसण रै गांव भेळो वसै।

१ खेड़ा २००)

नरबद री वाघेलां रै रबड़ा माहै मांजरे।

१ सासर ढंढ १५०)

सरवड़ी नवसर बीच १ ढंढ छै।

१ पातुवास ५०)

षबर नहीं।

१ घोसारीयौ २००)

षबर नहीं।

१ पासा कोलर १००)

षबर नहीं।

१ भाषरी ५०)

षबर नहीं।

१ दाती ५०)

षबर नहीं।

---

१. १७७)। २. २००)। ३. सीधलां हेठे गई। ४. राहमां।

संवत १७१५	१६	१७	१८
२०)	४५)	११०)	१२५)

१ सुकरलाई १००)

सींधल वीर रौ दत । बा: षेती वोलावत उजागर मोहणदास भोजराजोत री बसी रा घर ६०, कोसेटा सुंदरा रा छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८
२५)	५५)	२५)	११५)

१ महीलावाई षुरद १००)

राव श्री मालदेजी रौ दत्त बांभण आवौ षीं बांभण रजपूत बसै । चांच २ सेंवज चिणा हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८
५१)	८५)	५०)	७५)

५

२६८. ५ चारणां नुं सांसण छै ।

१ कुंवड़ो १५००)

सींधल चांपा मैणावत रौ दत्त काछेसा ना चारण, वांणीया सगळा पवन जात वसै कोसी राज छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८
११०)	७२०)	६१०)	८२[illegible]

नेनड़ो ५००)

सींधल वीसळदे वीरावत री दत्त, आ चारण वांणीया पटेल बसै । अरट २ को जिमें नेनो पोवो मानावत छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१[illegible]
[illegible]०)	[illegible]१०)	७०)	[illegible]

१ वसी २००)

राज श्री सुरजसिंघजी रौ दत्त आसीया मांन रांमावत नुं. पटेल बांभण रजपूत बसै। सेंवज वीघा १००। हिमें जसौ पीथौ आसीयो छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	७२)	२०)	११५)	२१२)

१ मोतीसरी २००)

राजा श्री उदैसिंघजी रौ दत्त, वणसूर सिवदास सोभावत नुं पटेल चारण बसे। कोसीटा ४ सेंवज षेत ४। हिमैं कांन लिषमीदास छै।

संवत	१७१	१६	१७	१८	१९
	१०)	३५)	१०)	६७)	६१)

४

९

२६९. विगत

५६ आवादीन बसता, ३० सूना षेड़ा मांजरै, ९ सांसण।

९५

तर्फ दुनाड़ै

१ दुनाड़ो षास वास ३०००)

१ दुनाड़ो

१ षतेसर[1] वसै

१ जेसौ वसै

३

महाजन घांची रजपूत जाट वसै। कोसेटा ५० अरट १० चांच ४०, वडौ कसबौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१९९१)	९५८)	१९०४)	१९२१)	११७०)

१ मजल ४०००)

१. उतेसर।

पटेल बांणिया बसै । अरट २० कोसीटा ३० । बडो गांव ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८२०)	२७६५)	४२००)	३८७१)	०

१ षीराटीयो ४०००)

पटेल बांभण रैबारी बसै । कोसीटा १००[1] अरट ३ चांच ४० । दुसाषौ, सारी सींव सेझो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५४०)	२५५५)	२५३६)	१४१२)	०

१ दुदां री वाड़ौ २०००)

पटेल रजपूत बसै । अरट ४ कोसीटा ३० चांच ६ दुसाषी ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	४६५)	२८९)	२९६)	६२०)

१ ढीढस १४००)

पटेल रजपूत बांणिया बसै । अरट १ कोसीटा २६ चांच २, दुसाषी । ऊनाळी वीघा १०० । भलौ गांव ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५५)	१४६०)	२३७५)	२४२२)	०)

१ पींपळी १५००)

पटेल जाट रजपूत वसै । सेझो नहीं, कोहर १ मीठो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४७)	९५०)	१६२)	१२०९)	३५४)

१ रोहैचो पटेलां रो १०००)

पटेल कुंभार रजपूत वसै । कोहर १ ऊनाळो जैताकोहर पीवै, घणो मीठो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६२६)[1]	१०६०)	१४०)	६४१)	६६७)

१ दुधीयौ ६००)

पटेल वांणीया वसै । अरट ४ कोसेटा ४ हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१)	४५०)	३४३)	४४०)	५३७)

१ रहैनड़ी ६००)

पटेल रजपूत बसै । कोसीटा ४ चांच १० हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२५)	३७०)	११९)	३७६)	३६०)

१ गोयंद री वाड़ी ५००)

पटैल बसै । अरट ४ कोसीटा ४ हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	३८५)	१६०)	२८८)	१६२)

१ महेस री वाड़ी ४००)

जाट वसै, कोसीटा १० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१४५)	५६)	२९०)	२४८)

१ ढाढीयां री वास ३००)

पटेल वसै । कोसीटा २०, चांच ४ छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२५)	३८०)	४३७)	४०६)	४०५)

१ गोधां री वाड़ौ ३००)

पटेल रजपूत बसै । कोसीटा ६, चांच हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	१६३)	१६४)	२५३)	१८३)

---

१. ६३६ ।

१ पातां री वाड़ी १००)

पटेल रजपूत वसै । कोसीटा ६, चांच १० हुवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१६८) ४८७) ३९३) ६२८) ३९३)

१ भाचरणो १५००)

पटेल जाट रजपूत वसै । कोसीटा १४ चांच १० सेभो घणी, दुसाषी ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१००) ४३५) ५३६) ६३८) ५३९)

१ रोहीचो जाटां री १०००)

जाट रजपूत वसै । पीपळला रै तळाव पीवै, कोहर नहीं ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१३०) ७६०) १६५) ८२०) ६६०

१ डाभली[1] ६००)

पटेल रजपूत वसै । तळाव रै वेरां पीवै । सेंवज षेत ८ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१०) १५१) ७०) १२४) ११५)

१ कांमा री वाड़ी ७००)

पटेल रजपूत वसै । कोहर १ मीठो पांणी, सेभो नहीं धोरावंध षेत छै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१२५) ५९५) ५५) ५८५) ४४१)

१ मनड़ां री वाड़ी ८००)

जाट बांभण वांणीया रजपूत वसै । अरट ४ कोसीटा १० ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

७४) ४०८) २१२) ६५४) ३५६)

1. डाभड़ी ।

१ भांनारी वाड़ौ 		४०)

पटेल कुंभार रजपूत वसै । कोसीटा ४ चांच १० ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४)	१८१)	२३०)	३६८)	१२१)

१ षेजड़ीयाळी 		५००)

पटेल कुंभार वसै । कोहर १, तळाव रै वेरै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	३६०)	५०)	५६१)	३७६)

१ सोमढंढ 		५००)

जाट रजपूत वसै । कोहर १ षारौ, सेंवज षेत १० छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१७)	१५१)	२६६)	४०९)	२८१)

१ चरडीयो 		४००)

रजपूत वसै । कोहर नहीं, कोस १॥ लूणी पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१६०)	४०)	१५१)	२५७)

१ कागनडो 		३००)

जाट वसै । कोहर नहीं, दुनाड़ै जैता कोहर पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१२४)	५२)	१६७)	११८)

१ समुजो 		३०००)

पटेल रजपूत वसै । कोसीटा २० सेंवज बीघा ३०००[1] ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७५)	१४६०)	२७४)	२१३६)	८११)

३३

1. १०० ।

२७०. ६ सूना षेड़ा मांजरै

१	जगमाल रौ वाड़ो	३००)
१	सनेही दुनाड़ै में	२००)
१	दहीयां रौ वाड़ौ	२००)
१	तीरजाली पींपळी में	३००)
२	षेजड़ीयाळी रा वास	

६

२७१. ५ सांसण—

२ बांभणां नै

१ गैलावास षुरद १५०)

राजा सुरजसिंघजी रौ दत्त सिरीमाळी व्यास जागेसर किसनदासोत नुं। हिमें रिणछोड़ नीलकंठ री छै। जाट कुंभार बांभण बसै। कोहर १ षारी, लुणावास पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१२०)	३५)	१२५)	१०२)

१ अरट नडी २००)

राव चंद्रसेन रौ दत्त। बांभण गोपाळ वेळा रौ आचारज नुं[1]। कुंभार बांणीया बसै। कोहर नहीं षेड़ापे रै वेरां पीवै। हिमैं उदो किसना री छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	२०५)	७०)	१२५)	१८०)

२

२७२. ३ चारणां नुं छै

१ लापण छुंभ[2] ३००)

रा० पता नगावत रौ दत्त, आसीया दला चोभावत नुं। हिमैं

१. फदर नुं। २. थुंभ।

जोगौ सेसमलोत छै। चारण बांभण वसै। अरट ४ कोसीटा १०० करै जितरा।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	२८०)	७५०)	४२५)	०

१ सरवड़ी सींधलां री २००)

रणधीर कोभावत रौ दत्त। चारण बोकसी सांकर भैरावत नरवदोत नुं। हिमैं कलो रांमदासोत छै। चारण पटेल रबारी बसै। बास २, कोहर नहीं। पार री बेरीयां पीवैं।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	११०)	६०)	३००)	२००)

१ लेलावासणी २००)

राजा सुरजसींघ रौ दत्त चारण दांना मोकल रा रतनुं नुं नै हिमैं लिषमीदास मेघराजोत छै। पटेल पलीवाळ बांणीया जाट सीरवी चारण बसै। कोहर १ षारी, नदी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५०)	२७२)	१७०)	२१५)	११०)

३

५

गांव ४४

२७३. तफै कोढणे रा गांव

१ कोढणो षास २०००)

वास ४ माहे ३ सूना। बांणीया बांभण कुंभार वसै। सेंवज चिणा गेहूं षेत १०, सेझो नहीं, तळाव रै वेरां पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	५८५)	८६०)	८५४)	६०२)

१ जवणादेसर १५००)

जाट वसै। कोहर १ षारी।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५) १७०) ५३) ४३८) १५२)

१ जोलीयाळी १०००)

बास २ बिसनोई बसै । कोहर १ षारौ । राजवै पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६०) १७१) २२१) १२१५) ९५३)

२ वंभौर १०००)

बास २, जाट रजपूत बसै । १ पटेलां रौ । २ घांघल वास । सेंवज वीघा २००), कोहर नहीं । नदी रा बेरां पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१००) ८३८) ३००) ६५१) ५८१)

१ जासती ७००)

पटेल बांणीया रजपूत बसै । सेझो नहीं । सेंवज वीघा २०० । बैरी पीवै वेहले री ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
९०) ३६२) १२२) २६२) २००)

१ डोहळी ६००)

रजपूत विसनोई बसै । कोहर नहीं ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५) २७८) ६७) ७८) १५०)

१ छाछेळाई ५००)

जाट वांभण रजपूत वसै । सखड़ी सींहछली पीवै, पांणी नहीं ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ४७०) ८९) ३०३) २०७)

१ वालाउ ५००)

रजपूत वसै । कोहर षारौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) ११०) ७०) ११०) ५०)

१ जापणसर वास २ ४५०)

१ वांणीया वास १ देवणांद वुधरौ

२ रजपूत बसै । सेंवज षेत वहूले[1] ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	५८०)	११४)	०	०

१ चींचड़ली ४००)

जाट बसै, कोहर १ षारो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२)	९९२)	१६६)	३३९)	१२८)

१ मंढली ४००)

बांभण रजपूत बसै । कोहर नहीं, वाघावास पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	४९४)	१८९)	५९०)	३६६)

१ पालड़ीयां ४००)

बांभण रजपूत बसै । कोहर नहीं, षेत १० सेंवज, वडो वास पलीवाळ रौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१८४)	४९)	१५०)	१२५)

१ वडनावों ५००)

मुसला वसै, कोहर षारौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	४००)	११०)	५०)	११५)

४ वणली ३००)

वास ४ रजपूत वसै ।

१ वडोवास १ देवड़ां रौ

१ चवाणां रौ १ गहेलोतां रौ

४ कोहर नहीं, नाछणो कोस ५ पीवै ।

१. सेंवज खेत ६ हुवै वाहलां रा वेरां पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	२९४)	१४९)	१३०)	२५०)

१ सींवरषीयो ३००)

बांभण मुसला बसै । कोहर नहीं । बाघावास पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९)	१००)	४०)	४०)	५१)

१ सोनगरो २००)

जाट बसै । कोहर नहीं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७)	३५१)	८९)	२००)	१००)

१ नेढलो २००)

बांभण बसै । बाघावास पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	३२२)	५२)	२८१)	५१)

१ ढांढणीयो बास २ २००)

रजपूत बसै । कोहर बुरीयो छै[1] । राजवै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३६)	१०४)	१००)	२७५)	५०)

१ गोपावासणी २००)

रजपूत बसै । कोहर १ खारो, चंवडाय पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	८०)	२०)	३२२)	१४२)

१ राबड़ी[१] १५०)

जाट चारण बसै । तळाव रै वेरै पीवै ।

१. राबड़ियो ।

1. रेत से पट गया है ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१५०)	४०)	५०)	५०)

१ मोडीथळी पुटीथळी[1] १००)

रजपूत वसै लुणावास पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	२०)	८०)	६१)	१०)

१ बावळली १५००)

बांणीया रजपूत बांभण बसै । रैंज[2] रा षेत २० सेंवज, कोहर ८ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२७)	१४४१)	३३१)	१०४५)	८५८)

१ गीगाही १०००)

वास २ कहीजै । बांभण बसै । ऊना वीघा ७०० । कोहर १ षारो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३)	१७७८)	१२१)	१२१०)	७२६)

१ नेवरी १०००)

पलीवाळ वसै । कोहर नहीं, बाधावास पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	९५५)	२५२)	७००)	३५०)

३ बाधावास, बास ३ १०००)

१ बाधावास

१ पतासर

१ हेमावास

३

---

१. वृढी कली । २. रेल ।

रजपूत बांणीया वसै । रेल बीघा १५०० सेंवज । बावड़ी[1] मीठी पीवै[2] ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	७६०)	५१४)	६८७)	६८५)

१ आसरावौ ६००)

वास ४, रजपूत बांभण बसै । सेंवज षेत २, कोहर नहीं सीवांणा रै आसरावै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१००)	१००)	२६०)	२००)

१ लोहरड़ी ६००)

बांभण बसै । कोहर नहीं, राजवै पीवै । एक साष छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	३९४)	७२)	५१६)	२००)

१ पोपावास ५००)

जाट बसै । कोसीटा १५, चांच २० छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५५)	६६०)	३६५)	३७०)	२०२)

१ राजवो बास २ ५००)

रजपूत बसै ।

१ राजवो १ मकत री ढांणी । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	३२०)	१७०)	१०३)	२००)

१ तोलीसर ५००)

बांभण वसै । षेत १ बीघा ५० सेजै बावळली पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	२००)	८६)	१२२)	१०१)

---

१. वावाड़ी । २. मीडे पीवै ।

१ हींगोलो ४००)

रजपूत वसै, कोहर नहीं, राजवै पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	८०)	७०)	१०५)	१००)

१ नागाणौ ४००)

रजपूत बांभण बसै, कोहर १ मीठौ[1] ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	१४१)	१११)	१७३)	४१)

१ सोयंतरो ३००)

रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७२)	५००)	११०)	५०)	१०५)

२ भांडु वास ४ छै ३००)

१ वडौ वास १ गोगादेवां रौ कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	२७५)	१४०)	३४६)	१००)

१ चांदा रौ वास ३००)

रजपूत बसै । कोहर नहीं । सखड़ी[2] पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	०	०	१६३)	११२)

१ दिहुरीयो २००)

वांभण वांणीया बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५)	२३७)	५३)	१७५)	७१)

१ मेघलावास

रजपूत वसै, कोहर १ राजवै पीवै ।

१. कोहर २ मीठा सखरा । २. वरवड़ी ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४१)	५६)	११०)	१००)	१७५)

१ चंदरोही २००)

रजपूत बसै । षेत २ सेंवज, कोहर १ छै, बुरीयो छै । देहरीयै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२)[1]	१८१)	७५)	१६१)	१००)

१ वाकीबाहौ २००)

रजपूत बसै । कोहर षारौ, तळाव रै वेरे पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	२३५)	१७५)	२१०)	५१)

१ दुदाविरौ १००)

रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३२)	५१)	७०)	७१)	५१)

१ रौढवौ ३००)

वास ४ कहीजै ।

१ बडौ वास १ भोजा रौ

बांभण बसै । बालाउ पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	५९७)	१०४)	३२)	३०१)

५३

२७४. १३ सूना षेड़ा मांजरै छै ।

१ आकेली २००)

वाघावास केलणकोट वीच[2] षेत षैड़ौ नहीं ।

१ पींपलो थळ छै । १००)

१. ८२ । २. पीवै ।

कोटणौ रा वाहै छै[1]।

२ रोढवा रा वास — १ जसां री। १ सुजा री।

१ गांगाह री वास – वाहाळी री।

१ ढांढणीया री वास–कुलरीया री।

१ कांना गोधा री वास, चींचड़ली रा लोग वावै। १००)

१ सेवली री भाषरी छै, कोढणां रा षड़ छै। ६०)

३ कोढणा रा वास — १ चेलेळाई १ डाहा वासणी

१ ऊदा री वास

१ भीछालो। १००)

१ लोहरड़ी वास राजवा कनै।

१३

२७५. १९ सांसण गांव तर्फे कोढणा रा।

१० वांभणां नुं—

१ भाटेळाई षुरद १५०)

राव चूंडा री दत्त, वां० ताराईत नै मांडा सीहावत नुं। वांभण वसै। सेंवज षेत ३।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	७५)	३०)	२०५)	१२१)

१ डोहळी षुरद १५१)

रांणा देवीदास वीजावत री दत्त, वां० गोदा कोहावत नै वीस हेमावत नै। दूदा कांनावत नुं हेंसा ३। वांभण वसै। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१९६)	१२१)	१००)	१५०)

१ हींगोलो षुरद १००)

राव चूंडा री दत्त वां० महेराज सीहावत नुं। हिमैं दमोदर छे।

१. कोठणै रा रजपूत खेत खड़ै।

कोहर १ षारौ। चारण घर १० छै।

संवत	१७१५	१६		१८	१९
	१५)	८०)	३५)	१५०)	६१)

१ सोढा बांभण रौ वास ८०)

रा० ईहड़[1] रौ दत्त प्रा० पीथड़[2] नुं पड़ीहारां री बाहर में दीयौ[1]। कलौ बाघौ नेतसोत बसै। कोहर १ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	८०)	३५)	६०)	४०)

१ मेघावास १५०)

जाषणसर रौ वास। रा० हीषा जैतमलोत रौ दत्त, सोढा बांभण घीघा नुं। हमैं दुपौ[3] जीवावत बसै। नागाणै पीवैं। बांभणां रा घर १५ छै।

१ नागाणै रौ बास ५०)

रा० भारमल जोधावत रौ दत्त, प्रा. रणमल अणदोत पुरणायचा आचारज नुं। हिममैं प्रा० नाथौ टीकम रौ छै। घर ६।

१ तोलीसर षुरद १००)

राव जोधै रौ दत्त प्रा० पीथा देदावत केसरीया नुं। हिमैं हापौ किसनावत छै। घर १५ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१२०)	६५)	१५०)	६१)

१ आसराबौ १००)

रा० भारमल जोधावत रौ दत्त, प्रा० नाढा दामावत नुं, हिमैं मांडण हरदासोत वसै छै। घर ३०[4] छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६)	७०)	३५)	२००)	१००)

१. घूहड़। २. छोपड़। ३. रूपो। ४. ३।

1. पड़िहारो के समय का दिया हुआ।

१ बाकीवाहो षुरद १००)

राणा देवीदास बिजैपाळोत रौ दत्त प्रा० देवा केलण राजगरवाळ[1] नुं, हिमें तेजसी पोमा री बसै। घर १६ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२)	६०)	४०)	१००)	५१)

१ लोरड़ी षुरद १५०)

राव मालदेजी रौ दत्त प्रा० टोहा षेतावत पालीवाळ नुं। हिमें दुपो[2] जसपाळ रौ छै। घर १६।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	६०)	७०)	७०)	१५०)

१०

२७६. ७ चारणां नुं छै—

१ करांणी १५०)

उहड़ मांडण गोपाळदासोत रौ दत्त, धीरण माला कचरावत नुं। कोहर १ पांणी भळभळौ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१५०)	३०)	१५०)	८०)

१ ढांढणीयो षुरद १००)

राव चूंडा रौ दत्त वसड़ो जीमौ हरावत लाधौ, हिमें धरमो लालारौ छै[3]। वडे ढांढणवे पीवै।

१ षोनावड़ो १००)

उहड़ जैमल नेतसोत रौ दत्त। आसीया दूदा अमरावत नुं। हिमें सादूळ रूपा रौ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	१४५)[4]	३४)	४०)	२१)

---

१. जागरवाळ। २. रूपौ। ३. लधरमो लोला रौ छै। ४. ११५)

१ भूंडुरौ वास ५०)

राव चूंडा रौ दत्त, रोहड़ीया बाबट आलावत रौ लाधा नुं। हिमें दुदौ डुंगरोत छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	४०)	२०)	४०)	५०)

१ भाटेळाई बडी ५००)

राजा गजसिंघ रौ दत्त, लाल षेतसी परवत[1] नुं। बांभण रजपूत चारण बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६५)	२१०)	१२०)	२२५)	१२५)

१ छुबली (थुबली) १००)

रा० जैतमाल षाषावत रौ दत्त, गाडण पीथा भांणावत नुं। हिमें वीरम कमौ[2] छै।

संवत	१७१	१६	१७	१८	१९
	१५)	११०)	७०)	९५)	५०)

१ बाळा १००)

उहड़ नैतसी काजावत रौ दत्त, आसीया हमीर पुनावत नुं। हिमें राघौदास नें सूरौ छै।

७

२७७. २ भोपां नै—

१ आसरवा रौ वास १००)

रा० भारमल जोधावत रौ दत्त, भोपा[1] देवसी राठौड़ नागणेचां जी रौ भोपौ। चांपो गेला वसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१००)	१०)	१००)	१०१)

१. परदतोंत। २. कमावत।

१. देवी का पुजारी, जो देवी की इच्छा के अनुसार पुजारी का कार्य स्वीकार करता है।

१ नागाणा रौ वास १५०)

रा० कीलांण[1]रायपालोत री, सोढा बांभण नुं दीयो थो। पछै आं भोपा पुजारी नुं दीयो। देवसी भोपा रा पोता नुं षेत १ छै।

२

१६

८५

२७८. तफै बहेलवा रा गांव

४ बहेळवो बास ६

ता मैं वास १ वाघावतों रा वास। रजपूत बांणीया घर ६० तथा ७०, कोहर १। १५०)

१ देभावतां रौ, रजपूत वसै १००)

४ जां में वास ६ माहे

५ सूना षेड़ा मंडे छै।

३ बहेळवौ

नींबा रो वास ४ ता माहे बास १ ऊजड़ छै।

१ जेतावतां री वास १००)

रजपूत बसै, कोहर १ नीबा रो।

१ झींझणीयाळो १००)

रजपूत बसै।

५ रा षेड़ा सूना मांजर छै

१ जैतावता रौ बास। जाट रजपूत बसै। कोहरी छै बांणीयां।

१ भांडावै रो जीवै रो बास, रजपूत बसै

१ नरबदे रो बास १००)

रजपूत वांणोया बसै।

३

५ वालसीसर वास ६ तां माहै वास १ सूनौ मांजरै छै।

१ गोगादेवांरो बास १५०)

रजपूत कुंभार बसै। वावड़ी २ पांणी मीठौ, अरट २ छै।

१. केलण।

१ सतावती रौ बास २५०)

रजपूत बांणीया बांभण बसै। बेरो ४ वाहाळा में।

१ महेरावण रौ वास १५०)

कोहर १ महेस वेरै मीठो पांणी।

१ कुई रौ वास २००)

रजपूत षाती कुंभार बसै। कोहर १ मीठो।

१ चोहथ रौ वास २५०)

बाडी रो पलीवाळ बांणीया मुसला[1] बसै। कूवो मीठो।

५

३ गांव भाळु रा वास ४ तामें बास १ सूनो मांजरै छै।

१ बडौ वास ३००)

रजपूत बाणीयां षाती बसै। कोहर १ रात बुहौ[2]।

१ रतना रौ बास १५०)

जाट रजपूत बसै। रात बांधै पीवै।

१ लोलां रौ बास १५०)

तालम रौ, रजपूत बांणीयां कुंभार बसै। कोहर रात बंध।

३

४ गांव बसतवा रा वास ४

१ बसतवो बांणीया वास २००)

रजपूत बसै। कोहर बसतवो।

१ सुंडा रौ वास १५०)

बांणीया रजपूत बसै।

१ डेहरीयौ १००)

३ पुडीयाला वास ४ ता माहे वास १ सूनौ मांजरै।

१ वडो बास ४००)

ईदारी, रजपूत पलीवाळ बसै।

१ चिड़वाई भेळी ५०)

पलीवाळ रजपूत बसै।

१ बडो वास माला रो ३००)

वुधा रौ माहे भेळौ[1] रजपूत बांणीया वसै।

३

२ गांब देवातु बास २ ५००)

कोसीटा २ पांणी मीठौ।

१ वडो वास ३००)

रजपूत बसै।

१ कुंभारां री वास २००)

रजपूत बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	१००)	१११)	३४०)	१००)

२ गांव गोपाळसर वास २ ५००)

कोहर १ मीठौ पांणी।

१ वडौ बास ३००)

२ कालुवां री वास २००)

रजपूत बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९०)	१२५)	१५४)	२००)	१५०)

२ गांव संथोड़ा २ जुदा पेड़ा

१ संथोड़ो वडो ४००)

रजपूत वसै कोहर १ वुही गांव पीवै।

---

1. शामिल।

१ सतावतां रौ बास २५०)
रजपूत बांणीया बांभण बसै । बेरो ४ वाहाळा में ।
१ महेरावण रौ वास १५०)
कोहर १ महेस वेरै मीठो पांणी ।
१ कुई रौ वास २००)
रजपूत षाती कुंभार बसै । कोहर १ मीठो ।
१ चोहथ रौ वास २५०)
बाडी रौ पलीवाळ बांणीया मुसला[1] बसै । कूवो मीठो ।

५

३ गांव भाळु रा वास ४ तामें बास १ सूनो मांजरै छै ।
१ बडौ वास ३००)
रजपूत बाणीयां षाती बसै । कोहर १ रात बुहो[2] ।
१ रतना रौ बास १५०)
जाट रजपूत बसै । रात बांधै पीवै ।
१ लोलां रौ बास १५०)
तालम रौ, रजपूत बांणीयां कुंभार बसै । कोहर रात बंध ।

३

४ गांव बसतवा रा वास ४
१ बसतवो बांणीया वास २००)
रजपूत बसै । कोहर बसतवो ।
१ सुंडा रौ वास १५०)
बांणीया रजपूत बसै ।
१ डेहरीयौ १००)
रजपूत वसै । कोहर १ मीठौ पांणी । बसतवै पीवै ।
१ सांषलां रौ वास १००)
रजपूत वसै । डेहरीयै पीवै ।

४

1. मुसलमान । 2. रात को चलने वाला ।

३ षुडीयाला वास ४ ता माहे वास १ सूनौ मांजरै।

१ वडो बास ४००)

ईदारी, रजपूत पलीवाळ बसै।

१ चिड़वाई भेळी ५०)

पलीवाळ रजपूत बसै।

१ बडौ वास माला रौ ३००)

वुधा रौ माहे भेळी[1] रजपूत बांणीया बसै।

३

२ गांब देवातु बास २ ५००)

कोसीटा २ पांणी मीठी।

१ बडो वास ३००)

रजपूत बसै।

१ कुंभारां री वास २००)

रजपूत बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१००)	१११)	३४०)	१००)

२ गांव गोपाळसर वास २ ५००)

कोहर १ मीठौ पांणी।

१ वडौ बास ३००)

२ कालुवां री वास २००)

रजपूत बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	१२५)	१५४)	२००)	१५०)

२ गांव संथोड़ा २ जुदा षेड़ा

१ संथोड़ो वडो ४००)

रजपूत वसै कोहर १ वुही गांव पीवै।

---

1. शामिल।

१ संथोड़ो षुरद २००)

रजपूत बसै । कोहर १ दोनूं गांव पांणी पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१००)	६५)	१२३)	१०७)

२

३ गांव आगोळाइ रा वास ४

१ आगोळाइ नै चित्राली ८००)

जाट बांणीया बसै । कोहर १ षारौ, ऊनाळी बीघा ७०० ।

१ उदीवास ३००)

जाट बसै । कोहर नहीं, बावकली पीवै ।

१ कोनरी ३००)

रजपूत बसै । कोहर नहीं, बावळली पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२)	१२५)	३६)	२७५)	१००)

३

१ डुगरां वास ३, ता मांहे वास २ सूना मांजरै । २०००)

पलीवाळ बांणीया रजपूत बसै, ऊनाळी सेंवज बीघा १००० गेहुं हुवै । सेझो नहीं । बावळली पोपावास पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४४)	१०००)	५४०)	१११५)	४०५)

१ सुरांणो बडी ४००)

रजपूत बसै । कोहर नहीं । जवणांदेसर भांडु पांणी पीवै । सेंवज बीघा २०० रा हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	४००)	१२५)	२१५)	२१०)

१ महैरोयी २००)

जाट रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	२३)	१००)	७०)	३८०)	१२५)

१ उटांबर ३००)

जाट बांणीयां रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	१५)	४००)	१५०)	३२६)	२१७)

३५

२७६. १५ सूना षेड़ा मांजरे

५ बेहेळवा रा वास ६, मैं वास ४ बसै बाकी ५

१ घड़सी रौ बास १००) १ आसायचां री बास १००)
१ बोहौरां रौ बास १००) १ षारड़ी १००)
१ कुवलीयो १००)

५

३ झांझणीवाळी वास ३ सूना गोपाळसर में १५०)

१ झांझणीयां वाळो[1] १ नरा री वास
१ जांझा रौ वास

३

१ बहेळवै नींबां री वास माहलो वास, १ परवत री सूनी मांजरे। १००)

१ पुड़ीयाळी बुधां रौ वास, मालां रै वास में १००)

२ डुगरावास सूना डुगरां में षड़ीजै ।

१ छींकणवास १ जेसावास

२

१. जींझणियाळों ।

१ भाळु जैता रौ वास, भाळु में मांजरै । २००)
१ वालसीसर रौ वास गोगादेवां रौ । १००)
१ चीत्राळी आगोळाई भेळी बसै । २००)

१५

२८०. १२ सांसण रा गांव

४ बांभणा नुं—

१ सेपाउवां री वासणी २००)

राव जोधा रौ दत्त प्रा० भवणौ[1] रांमावत जेतसेपाउ आचारज, हिमैं कीसनौ बसै छै। बांभण बसै, कोहर नहीं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	५०)	२५)	५०)	६०)

१ केलरीयांरी बासणी १५०)

राव मालदेजी रौ दत्त, प्रा० राईसल राजावत नुं। हिमैं कलौ जेसावत हरीदासोत छै। भाटी सुरतांण रहै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४)	२५)	१२)	२००)	१५०)

१ सुराणी पुरद[2] १००)

राव गांगाजी रौ दत्त। प्रो० सोमौ मदन जात सोथड़ै लाधो। हिमें कानौ अषौ तोगो छै। सेवज चीणा हळ ९।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	५०)	३०)	५०)	४०)

१ घटीयाळो ४००)

राव गांगै रो दत्त पिरोहित केसा कूंपावत नुं। हिमें जगनाथ ठाकुर गोपी छै। बांभण वसै। चांच ५ सेवज पेत चिणा हुवै।

---

१. भवांणो। २. सुरतांणी।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) ७०) ३०) २००) २५०)

४

२८१. ८ चारणां नुं—

२ चंचळाव[1] २००)

राव जोधाजी रौ दत्त, लाळस कान्हा उत्तमसीयोत नुं। हिमैं टीलौ सिवदास छै। वास २ छै, कोहर १ छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ७२) ३५) १००) १००)

१ सुवेरी[2] १००)

राव जोधाजी रो दत्त, लाळस कान्हा उतमसीयोत नु चांचळवा साथे दीन्हो।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५) ६०) २५) १००) ७०)

१ चगांवड़ो आदु २००)

सांसण पड़ीहारां रो दत्त, पछै राव चूंडै कवीयै टीमके[3] गीथावत नुं दीयो। हिमें मेणराज चंड[4] वसै छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३५) ८०) १३५) २००) ५०)

१ जुढियो आदु ३००)

ईंदा रांणा टोहु रो दत्त। पछै राव गांगेजी लालो सुरतांण सुजावत नुं दीयो। वास ४ पटे, हिमें समुरसो राजो असर[5] छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४०) १०५) ७५) १००) २५०)

३ वेराही वास ३ ४००)

---

१. चांचळवो। २. सुनेरी। ३. टीकम। ४. मेथारा चूंडो। ५. अमरो।

राव चूंडाजी रौ दत्ता कवीयै टीकम गीथावत नुं। हिमैं चांवडै मेघराजोत मोटोला ईसरोत छै। तळाव री वेरीयां पीवै। चारण रजपूत बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३६)	९५)	१३०)	३००)	२५०)

८

१२

६२

२८२. **तर्फ सेतरावौ**

१ सेतरावौ षास २००)

बांणीया रजपूत सगळी पवन बसै। कोहर ३ मीठा।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	६१०)	२७०)	६००)	४८०)

१ बुठीकीयो ४००)

रा० सुरतांण षेतसीयोत बसै। कोहर मीठा सागरी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७३)	११०)	५०)	१२०)	१५०)

१ नाथड़ाउ ६००)

रजपूत बांणीया बसै। कोहर २ सागरी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	३१०)	२००)	१५०)	१२०)

१ गांव सेरड़ो २००)

रा० रासै कंवरावत री बसी। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१२०)	६०)	७०)	५०)

१ दड़ो[1] २००)

---

१. देड़ो।

रजपूत पाती वसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)[1]	९०)	५५)	६०)	६०)

१ दुरजणसल री वास १००)

रजपूत वसै । कोहर २ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	१००)	६०)	८०)	६०)

१ वाकरी ४००)

वांणीया रजपूत वसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१०५)	६०)	७१)	१००)

१ कलाउ रा वास १

संमत १७१६ रौ वसाही, रजपूत घर २० वसै छै।

१ लोहरी धरती

उण ऊपर रजपूत वणीवीर देवराजोत रा पोतरा ठौड़ ३ वसै । देवातु पीवैं, तळाव मास री पांणी[1] ।

२१

१ पुंगळीयो १००)

रजपूत वसै कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	०	०	३०)	५०)

४ लोंलटा रा वास ४

रजपूत वसै । कोहर १ मीठौ वेतीणो[2], सपरी वासद छै।

---

१. २५) ।

---

1. तलाव में एक महीने के लिए पानी रहता है। 2 दो वार में जिससे पानी निकाला जा सके।

४ असल रा १ पीथा रौ १ देवड़ा रौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	६९०)	२९५)	२००)	३८०)

१ पीलवौ ४००)

रजपूत बांणीया बसै । कोहर १ पांणी भळभळो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	१६०)	१६५)	१६०)	१२०)

१ लाषण कोहर २००)

रजपूत बसै । कोहर छै, पांणी नहीं, पीलवै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	२१०)	१८०)	१५०)	८०)

१ भोजा कोहर २००)

रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	१२०)	१४०)	१००)	५०)

१ अषीयां रौ बास

रजपूत तुरक बसै । सेत्रावा पाछी कोस २।। कोहर १ पुरस २० मीठौ । अषो वणवीर रौ वणवीर देवराज रौ ।

१ मंढीयो ८०)

रजपूत वसै । कोहर १ मीठौ चौढां ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	७५)	१३०)	५०)	६५)

१ जेठाणीयो ४००)

रजपूत वसै । कोहर मीठो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	८५)	६०)	६०)	५०)

२८३. ७ सूना षेड़ा

१ कलाउ वास २ ७००)

हिमैं रजपूता घर २०, संवत १७१६ वसायो। कोहर १२ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०	०	१००)	५०)	०

१ सोलंकीया रौ कोहर २००)

सोलंकी बसै। कोहर १ पांणी भळभळो।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	१६०)	१२०)	२००)	१७१)

१ चावौ १००)

कोहर षारी, षेत पड़ीया रहै।

१ लूणी, षेत पड़ीया रहै। षेत षारी।

१ देराणीयो ४००)

कोहर सागरी सेवाळीयो षेत पड़ीया रहै।

१ सेवाळीयौ १००)

षेत पड़ीया रहै। षेत[1] सागइ।

१ दासालीयो ८०)

कोहर षारो चाहड़दे रौ गांव।

१ लोलटा रौ वास ८०)

कोहर १ भळभळो, षेत पड़ीया रहै। चाहड़देवां रौ गांव।

८

२८

२८४. तर्फे केतु गोगादेवां रौ वास

३ केतु षास, वडो वास ५००)

१. कोहर।

मदा रौ, सातल रौ। रावत रासौ[1] रतावत रा घर ६०, बांणीया रा घर २०, कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	३९०)	३००)	५२५)	४८०)

३ षीरजां बास वडोबास ५००)

भोजा रौ, तेजा रौ। रजपूत बसै। कोहर ४ मीठा।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८५)	१५०)	१००)	२१०)	२३०)

२ तेनावास ४००)

मेहर रौ, जेसल रौ। रजपूत बांणीया षाती कुंभार बसै। कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	२७०)	१३०)	१२५)	११०)

१ टीबड़ी १००)

रजपूत बांणीया बसै। कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१८०)	१२०)	१६०)	११०)

२ सेषाळो वडो वास ६००)

रजपूत बांणीया षाती बसै। कोहर मीठौ सागरो। १ सातल रौ १ राघवा रौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	२१०)	२००)	२५०)	१२०)

१ भुंगरी वडौ वास २००)

रजपूत वसै। कोहर पांणी भळभळो।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	१३५)	९०)	९०)	१६०)

---
१. ईसो।

१ सोई १५०)

रजपूत बसै । कोहर १ मीठो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	७०)	५०)	५०)	७०)

१ गड़ौ ३००)

रजपूत बांणीया षाती बसै । कोहर मीठौ । सरब बसै सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१४०)	१३०)	१००)	१५०)

१ रावसीसर, वास ३ तिण में बाम १ राजपुरो बसै ।

२८५. ७ सुना षेड़ा मांजरै—

२ रामसीसर कोहर १ ३००)

नीलवा रो वास १ रा० उरजन बीरावत समत १७१९ वसायो, कोहर १ मीठो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१२०)	७५)	९०)	५०)

१ सेषाळो वास देवड़ा घावड़ास १

१ रानीयो[1] १००)

कौहर नहीं । षेत पड़ीया छै ।

१ भुगड़ां रो वास

सुवेऊ सूना ।

१ केतु रो वास

नापे रो सुनो ।

१ षीरज रो वास, वेढोया रो ।

७

१. रनियो ।

२८६. १ सांसण

१ भांडु रौ बास

राव चौंडा रौ दत्त बारैठ आलु[1] बाबट रौहड़ीया नुं। हिमैं मानो राईमल छै। रजपूत चारण बसै। षारच रा माताणी १ भांडु रा छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	२०)	१०)	२५)	४०)

२३

२८७. तफै देछु, चाहड़देवां रा गांव

१ देछु षास ८००)

रजपूत बांणीया बसै। कोहर १० छै। पांच बहै[1]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	३१०)	२००)	२००)	२७०)

१ वौठवालीयो[2] ४००)

रजपूत मुसला बांणीया बसै। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	१६५)	१००)	१०१)	६०)

१ छाढीयो[3] ३००)

रजपूत बसै। कोहर मीठो।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४१)	१९०)	१४०)	१३१)	१२०)

१ सुकमटीयो १००)

सूनो, थळ में कठै छै तिण री षबर नहीं।

१ कांनौटीयो[4]

सूनो, घण बरसों देवराजां रै दापल छै[2]।

१. आला। २. ठंठवाळियो। ३. पादीयो। ४. कानोढीयो।

---

1. पाच यान में लिये जाते हैं। 2. कई वर्षों से देवराजों के तालके किया हुआ है।

१ कोलु ६००)

नीबै री कोहर, रजपूत वसै। कोहर ३ मीठा।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१७०)	१००)	१२५)	१२०)

१ कुसलावो ४००)

रजपूत वसै। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३१)	१८०)	१००)	१००)	१००)

१ गीलांकोहर १००)

रजपूत वसै। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	१२०)	१००)	१०१)	१२०)

१ सोमसीसर २००)

सूनो, कोहर मीठो, षेत पड़ा छै, गोवली बसै।

९ गांव, ७ बसै २ सूना।

२८८. १ सांसण

१ कांनुढीयो—

रा० वीरम कलावत[1] प्रा० वीजड़ वीमलां रा नुं दीयौ। हिमें माधौ रांमदासोत छै। प्रोहत बांणीया बसै। कोहर १ मीठो।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	७१)	८०)	७५)	५०)

१० गांव

२८९. **तफै ओसियां**

१ ओसीयां पास २०००)

वास ५ मैं वास ३ बसता छै। नै २ सूना। कोहर ४ पांणी घणौ।

1. लखावत।

[illegible] रा सीम पड़ै, जुदौ गांम, खेत मला।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	११६)	२३६)	२४१)	१२०)

१ [illegible] री पांनी १००)

[illegible] रा वास रा पड़ै जुदा।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४)	६१)	१४०)	२६०)	१७०)

१ रामगल री पांनी ४००)

जाट रजपूत विसनोई रजपूत वसै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४)	४१६)	६०८)	४६८)	७०)

१ नागु री पांनी २००)

रामगल रा पड़ै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०	०	०	२२४)	५०)

१ रीणपीर री पांनी २००)

[illegible] पांना भेळौ, खेत जुदौ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८)	१२६)	६८)	१८६)	१२०)

१	वडी बास, रजपूत वांणीया बसै	१२००)
१	सरमंढीयो, बिसनोई बसै	४००)
१	डाभड़ी, रजपूत छै	३००)
१	पंवारां रौ, विसनोई बसै	२५०)
१	गोपावासणी, सूनो	२००)
१	काभड़ो रौ वास, जाट बिसनोई बसै	१५०)
१	वडलां रौ, सूनो	१५०)
१	मांछरा रौ वास, जाट बसै	४००)
१	देवराजां रौ, सूनो	२००)
१	भींवां भोजा रौ, सूनो	१५०)
१	बिसनोयां रौ, जाट बसै, लाला रो कहीजै छै	२००)
१	जैसिंघ रौ वास, जाट बसै, षीचड़ कहीजै	१५०)

१२ जमा रेष

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५८)	२०००)	४२७२)	२७८३)	१६७८)

८ बेषुवास रा पांना ८, २१४०)

बास ३ बसतौ, पांना अढाई भेळा षेत पटै जुदा, कोहर १ मीठो सगळा पीवै।

१ कूंपावास २५०)

संसारचंद रौ, जाट बिसनोई रजपूत बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२)	३३८)	२६५)	१५४)	११०)

१ चाचा रौ पांनौ २००)

रायमल रौ बास रा लोग षड़े।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	०	५०८)	२००)	१६०)

१ जैतसी रौ पांनौ ४००)

रजपूत जाट बांमण भोजग बसै ।

१ वडोबास १ षातीयां री वास १ भोजग रो
१ बांभण बास १ वानरां रौ बास ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३६)	६००)	५८०)	१६६४)	७०३)

५

१ चांमु वास ५ २०००)

तिणां में ३ बसै । नै २ सूना, कोहर ४ मीठा भळभळा, जाट रजपूत बसै ।

१ वडो वास १ डुंगरसी रौ १ जाटां रौ
१ पंडतां रौ १ किसन रौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	३५०)	६४७)	१२५०)	८६७)

५

चेराई रा वास ९ ३०००)

तिणां में ६ बसै, नै ३ सूना, कोहर ७, पांणी मीठो ५ नै षारा २ । जाट रजपूत बांणीया बांभण बसै । सेंवज षेत ३७ तथा ४० ।

१ वडोवास १ विसनोई १ भोजा रौ
१ गेसीया रौ १ षालत रौ १ रजपूतां रौ
१ पींचीयां रौ १ नाहरवौ १ आसायचां रौ

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५५)	२७८०)	२५२१)	२२२७)	१२८८)

९ रेप

१२ वीकुं कोहर रा वास १२ २५००)

ता माहे ८ बसै, वास ४ सूना मांजरे। कोहर ३। मीठा । कोहर ३ आवगा[1] नै आधो कामडा रौ ।

1. पूर ।

१	वडी वास, रजपूत बांणीया वसै	१२००)
१	सरमंढीयो, बिसनोई बसै	४००)
१	डाभड़ी, रजपूत छै	३००)
१	पंवारां रौ, विसनोई बसै	२५०)
१	गोपावासणी, सूनो	२००)
१	काभड़ो रौ वास, जाट विसनोई बसै	१५०)
१	वडलां रौ, सूनो	१५०)
१	मांछरा रौ वास, जाट बसै	४००)
१	देवराजां रौ, सूनो	२००)
१	भींवां भोजा रौ, सूनो	१५०)
१	विसनोयां रौ, जाट बसै, लाला रो कहीजै छै	२००)
१	जैसिंघ रौ वास, जाट बसै, षीचड़ कहीजै	१५०)
१२	जमा रेष	

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५८)	२०००)	४२७२)	२७८३)	१६७८)

८ वेपुवास रा पांना ८, २१४०)

वास ३ बसती, पांना अढाई भेळा षेत पटै जुदा, कोहर १ मीठो सगळा पीवै।

१ कूंपावास २५०)

संसारचंद रौ, जाट विसनोई रजपूत वसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२)	३३८)	२६५)	१५४)	११०)

१ चाचा रौ पांनौ २००)

रायमल रौ वास रा लोग षड़े।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	०	५०८)	२००)	१६०)

१ जैतसी रौ पांनौ ४००)

कूंपावास रा लोग षड़ै, जुदौ बास, खेत भला ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	११६)	२७६)	२४१)	१२०)

१ भांना री पांनौ १००)

रतना रा बास रा षड़ै जुदा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४)	६१)	१४०)	२६०)	१७०)

१ रायमल री पांनौ ४००)

जाट रजपूत बिसनोई रजपूत बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४)	४१९)	६०८)	४६८)	७०)

१ नाथु री पांनौ २००)

रायमल रा षड़ै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	०	०	२२४)	५०)

१ रीणधीर री पांनौ २००)

रतनरा पांना भेळौ, षेत जुदौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८)	१२६)	९८)	१८९)	१२०)

१ रतनां री पांनौ २००)

जाट वसैं ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२)	७१)	२९६)	६८०)	२१०)

८

२ पेतासर ८००)

१ पेतासर, बिसनोई जाट वांणीया वसै । कोहर १ मीठो ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०५)	३१९)	२७५)	११०६)	७७६)

१ वासणी षेतासर री ३००)
बिसनोई रजपूत बसै। षेतासर पीवै।

२

३ इसदु[1] ६००)
१ षेता री बास, रजपूत बसै ४००)
१ मेरवा री बास, रजपूत बसै १००)
१ वरजांग री बास १००)
रजपूत वांणीया बसै[2]।

३

७ वैदु[3] वास सात छै। ९००)
१ वापोणी, रजपूत बसै १ जोधा री १ कलावती री
१ सांवत री १ राणा री वास १ कड़वा री
१ सुरजन री बास १ नीवा री तळाव
सिगळां बासां रजपूत बांणीया जाट बसै। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	१२८०)	७००)	१२७०)	१२५०)

७

५ जैलु वास ५ १२००)
तां मांहे २ वसै नै ३ सूना छै।
१ जैलु वास ६००)
रजपूत वांणीया जाट वसै। कोहर १।
१ वींजासर मांजरै ५०)
१ वास तीजो मांजरै १५०)

१. ईसरु। २. कोहर १ मीठो पांणी घणो। ३. वेहु।

१ लोरड़ो १००)

१ घाघावड़ी ३००)

पलीवाळ रजपूत बसै । कोहर, सुनौ मांजरै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४७)	३००)	१४०)	४७८)	४३७)

५ रेष

४ तापू बास १५००)

बडीबास षेड़ौ १ वसै, ३ षबर नहीं । कोहर १ भळभळो ।

१ बडीबास १ घड़सी री बास

१ भलड़ा री बास १ षैपाली

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	२२८६)	१५०५)	२२२७)	२५१०)

४ जमा भेळी रेष

१ जाषण बास—५ बास, १ बडौ बास नै बास, ४ मांजरै ।

विसनोई जाट वसै ।

१ वडौ वास १ काना वास १ जाटां री वास

१ जैता तोगा री वास १ सांईदास री

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	३८८०)	१५६८)	२०३५)	१४१९)

५ कोहर २ मीठा ।

१ करणु वास ४ ३०००)

वास २ वसै । जाट वांणीया, कोहर ३

१ वडी वास नगावत री रा० गोरधन जगतो[1] री वसी । कोहर २ मीठा ।

१ संकर वासणी, जेमलोत री वास, राणावतां वास में ।

१ कुंभासरीयो, कलावतां री वास, वड़ावास में ।

---

१. जगमालोत ।

१ राणा रौ बास, रा० हेमराज गोईंददास री बसी। कोहर १ मीठौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३८०)	१३०९)	२१५४)	३०१०)	१२००)

४ रेष भेळी

१ पांचौड़ी बास ४

बास २ बसै। २ सूना षबर नहीं। जाट रजपूत नै वांणीया बसै।

१ वडौ बास　　　१ रायसल रौ

१ सीवराज रौ　　　१ वैरा रौ बास

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	५५५)	१७१२)	१४६४)	९६६)

४ कोहर ३ पांणी।

२ विरलोषौ　　३००)

१ विरलोषौ बडौ　　३०००)

जाट बसै। कोहर १ सागरी पांणी मीठौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	२२८४)	१३९१)	३०२७)	०

१ भलगरां री वासणी—वीरलोषा मैं षेत षड़ीजै। ३००)

२

१ नवसर वास १२　　२०००)

बास ४ वसै नै ८ सूना मांजरे छै। पहली कदेक वसता—

१ वडौवास　　१ गोगावास[1]　　१ सुरावास

१ जाटोवास　　१ जैमलवास　　१ मालुणां[2]

१ सैसमल　　१ तुवरवास　　१ सोभारो

१ भींवावास　　१ वीसलवास　　१ सारंगवास

कोहर १ पांणी मीठो। जाट विसनोई वसै।

१. गांगावस। २. मालणवस।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	१९६३)	११०७)	१४९६)	७९३)

१२

२ बड़लौ बास २

साद[1] गेहलोतां नुं।

१ बड़लो बडो बास ४७००)

जाट राजपूत बसै। कोहर १ कोसीटा[2]।

१ षाता वासणी २००)

रजपूत बसै कोहर ३।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	३५०)	१५०)	३८०)	१६२)

२ करमसीसर

षेड़ा दोय रैबारियां रा। कोहर १ पांणी भळभळो, छवाही बास पीवै।

१ वडोवास ४००)

करमसी रैबारी बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१९०)	८५)	३००)	१०५)

१ करमसीसर पुरद ३००)

रैबारी जाट बसै। कोहर नहीं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	१५०)	२८)	५०१)	१०१)

२ भाटां रा वास २ १४००)

कोहर १ भळभळो। वडो वास पीवै।

१ भाट री वडो ६००)

जाट रजपूत बसै। कोहर पांणी भळभळो।

---

१. देसा र गिहलोतांनु। २. कोसीटा ४।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	५३०)	३६१)	६०७)	४२१)

१ भाटां री पुरद ८००)

रजपूत जाट बसै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	५९५)	१३७)	५०५)	४२३)

१ पुनासर बास ८ २०००)

आगे कदे बसता, हिमैं बसती सगळी भेळी । जाट बांणीया बसै ।

१ गोपाळ रौ १ बड़ो वास १ अरड़कमल रौ

२ भाटीयां रौ बुधा रौ १ पाहुवां रौ

१ सांषलां रौ १ गोपाळ रौ १ – –

८

कोहर २, एक मीठौ नैं १ भळभळौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	१६७७)	८००)	१६२७)	७१०)

१ दांतणीयौ बास २ ७००)

कोहर १ मीठौ, जाट रजपूत बसै[1] ।

१ वडीवास १ लोधां री बास

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	२८३)	२५५)	७८५)	३४५)

१ भोजावास वास २ १०००)

जाट रजपूत वसै । कोहर नहीं । वीकानेर रा गांव सांदूड़ै में तीण[1] १ छै ।

---

१. वास एक ही वसै ।

---

1. कुए में से पानी निकालने का एक निश्चित समय ।

१ भोजावास १ षाबाणीयो सूनौ

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	७४५)	४४६)	७९६)	५५५)

२ चाडी, माणेवडौ २२००)

१ चाडी २०००)

जाट रजपूत बांणीया वसै । कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५१७)	१२००)	७४७)	२२९५)	१०८३)

१ माणेवड़ो २००)

विसनोई वसै । कोहर १ छै । चांपासर पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	२७०)	८१)	१५२)	६१)

१ दुनाड़ीयो ४००)

जाट रजपूत वसै । कोहर छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	१६०)	३०५)	३३३)	२१२)

१ चंडाळीयौ ५००)

जाट रजपूत वसै । कोहर २ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	३२०)	१०७)	४००)	२२०)

१ वेगडीयो २००)

विसनोई वसै । कोहर १ पांणी थोड़ो, डांवरै पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	२९२)	२१७)	२५१)	१०७)

१ भींवड़ीया ४००)

जाट वसै, वीकुकोहर पीवै सांवतसर ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	२००)	२१७)	३८०)	३६०)

१ चांमू री वासणी ३००)

सूनी, षेत चांमू रा जाट षड़ै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१५०)	८५)	२५०)	१५१)

१ भालसरीयो ३००)

रजपूत बिसनोई बसै। कोहर नहीं, वड़लै षेतासरीये पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६)	१४५)	१६७)	२९४)	७७)

१ डांवरो १५००)

बिसनोई रजपूत बसै। कोहर ३ मोठा।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	५६५)	५७०)	९५०)	७३३)

१ षुडीयाळो ६००)

जाट बांभण बांणीया बसै। कोहर २ मीठा।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	३२०)	१२०)	७२०)	१५७)

१ माळंगो १४००)

जाट रजपूत बसै। कोहर २ मीठा। ऊनाळी हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	२८५)	७७)	४००)	१७५)

१ पांचलो पुरद

जाट रजपूत बसै। कोहर १ मीठो। वास जुदा-जुदा बसै। वास ३।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	४८९)	२८९)	६११)	४६८)

१ पारड़ो ६००)

जाट वांणीया रजपूत बसै। कोहर पारो।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	२५०)	१२५)	८६०)	४०२)

१ काभड़ौ ४००)

बिसनोई बसै । कोहर सरवै पीवै ।

संवत १७१५	१६	१	१८	१९
१८)	२००)	३००)	६०२)	२३५)

१ रायमल बाडौ[1] ६००)

रजपूत जाट बसै । तापू रै कोहर पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२८०)	६१७)	७८४)	३४३६)	०

१ कपूरियौ ७००)

जाट बसै, वीसालु पीवै, कोहर नहीं ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७)	३१०)	९६)	२०२)	१४०)

१ षटोड़ौ ५००)

जाट रजपूत बसै । कोहर २ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	८७२)	६७०)	८२०)	४८१)

१ भाभु वासणी ५००)

करणु रा लोग षड़ै । सूनो षेड़ौ ।

संवत १	१६	१७	१८	१९
४०)	१२०)	१४१)	३००)	४०२)

१ रनीयौ ४००)

जाट रजपूत वसै । कोहर षारी भैंसेर पीवै ।

---

१. रायमल वाळो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	६६०)	१६१)	६१६)	६३३)

१ रोहणयौ ७००)

जाट रजपूत वसै । कोहर १ छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२८)	५००)	६१२)	८७८)	३७०)

१ रिड़मलसर १०००)

जाट रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७०)	५४०)	१९०)	११९४)	५४०)

१ पंचायणसर २००)

जाट बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	१००)	१५६)	२०५)	१००)

१ चांपासर १०००)

जाट वांणीया बसै । कोहर २ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११५)	७३५)	७३७)	२०६५)	६२०)

१ अजासर ६००)

जाट वसै । कोहर षारौ, चांपासर पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	१४४)	६२६)	३८१)	३६०)

चंद्रासर १००)

चांपासर भेळो, सूनो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१२५)	७०)	१५०)	१२७)

१ बुगड़ी ६००)

जाट रजपूत बसै । कोहर ३ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	११२०)[1]	२८४)[2]	१३४७)	४३२)

१ हरभुसर ३००)

बुगड़ी में मांजरै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)[3]	३८०)	२८०)	६८०)	१४५)

१ देपासर १००)

सूनौ षेड़ौ । रजपूत बसै । नागोर री देहु[4] पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	४२)	३२)	१)	५०)

१ बांभण वाळौ ५००)

पांचौड़ी षड़ै । जाट रजपूत बांणीया । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१७२)	२२८)	३१८)	१३९)

१ लुंभासरीयो २००)

करणु में मांजरै भांभु वासणी रा षड़ै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३)	१९०)	१०१)	३००)	१४५)

१ तातुंवास २०००)

जाट वसै । कोहर २ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४)	५२६)	३४७)	११[illegible]२)	५९०)

१ मतोड़ी १४००)

विसनोई जाट वसै । कोहर मीठौ ।

१. ११२८) । २. ६२४) । ३. २००) । ४. देऊ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६६) १२८०) ६७६) १७३१) ८३७)

१ रांवणसरी पळासलो ४००)
जाट वसै, वेठवास पीवै, कोहर नहीं ।
३०) ४१२) १९३) ४११) २२८)

१ कींझरी ४००)
जाट रजपूत वसै । कोहर मीठौ ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०) ५१३) ५१७) ५१६) २०४)[1]

१ सीली ७००)
जाट रजपूत वसै । कोहर मीठौ ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) ३०३) ४२६) ४८६) २८७)

१ गीघालो ७००)
जाट वसै । कोहर १ मीठौ ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०) २८०) ७९६) ४५८) ३३०)

गोपासरीयौ ३००)
जाट वसै । मंडायाही पीवै ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५) २४५) ५०) १४४) १०२)

१ पीदा कोहर ६००)
जाट विसनोई वसै । कोहर छै ।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२०) ३००) ४४७) ६६७) ०

९९ तिण माहै गांव ७९ वसता छै । २० मांजरै छै ।

१. ३०४) ।

री चढीयौ । रजपूत बसै । बडाबास रै कोहर पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१२०)	८०)	१५०)	१५०)

२

१ डांवरै री बासणी १००)

रा० महेस पंचायणोत रौ दत्त, गाडण देवा नुं ।

१ पींडतां रौ बास ।

१३

११२

२९१. तर्फै षींवसर रा गांव

४ षींवसर बास ४०००)

रजपूत बांणीया बसै । कोहर ४ मीठा । बास ३ बसै ।

१ षींवसर १ सेरड़ीयौ

१ लोळावास १ महेसपुरौ

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६१)	२०००)	१२५७)	२३४४)	१५९२)

४

१ आचीणो १५००)

जाट रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९२)	७००)	२७४)	१०८)	६७७)

१ नाल्हावास[1] १०००)

जाट वसै । षींवसर रै कोहर पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	[illegible]
	५०)	११००)	१७०)	[illegible]

१. नालावस ।

१ कांटीयो ८००)

जाट बसै कोहर मीठो ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६०) ४२५) ११३) १४४७) १०७५)

१ नाहरसुवो बास ४ ७००)

जाट राठौड़ बसै । कोहर १ मीठौं ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५४) ७५०) ११२७) ११२२) ५७७)

१ आकलौं बडो

जाट बसै । षींवसर पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५०) २२५) १४८) ४००) २३०)

१ लुणावास ५००)

जाट बसै । षींवसर बरबटै पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२०) ५०) ७०) १०७) ८७)

१ अषावास ३००)

जाट रजपूत चारण बसै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१५) २५०) ३०) १५८) ७५)

१ वैरावास वडो ४००)

जाट रजपूत बसै । कोहर नहीं । षींवसर पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३८) ५२५) १७७) २७२) १४०)

१ कीलांणपुर

रजपूत वसै । कोहर नहीं । षींवसर पीवै ।

रौ चढीयौ । रजपूत बसै । बडाबास रै कोहर पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१२०)	८०)	१५०)	१५०)

२

१ डांवरै री बासणी १००)

रा० महेस पंचायणोत रौ दत्त, गाडण देवा नुं ।

१ पींडतां रौ बास ।

१३

११२

२९१. तर्फ षींवसर रा गांव

४ षींवसर बास ४०००)

रजपूत बांणीया बसै । कोहर ४ मीठा । बास ३ बसै ।

१ षींवसर १ सेरड़ीयौ

१ लोळावास १ महेसपुरौ

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६१)	२०००)	१२५७)	२३४४)	१५९२)

४

१ आचीणो १५००)

जाट रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९२)	७००)	२७४)	१०८)	६७७)

१ नाल्हावास[1] १०००)

जाट वसै । पींवसर रै कोहर पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५०)	११००)	१७०)	११३४)	६२१)

१. नानावास ।

१ कांटीयो ८००)

जाट बसै कोहर मीठौ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

६०) ४२५) ११३) १४४७) १०७५)

१ नाहरसुवो बास ४ ७००)

जाट राठौड़ बसै । कोहर १ मीठौं ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५४) ७५०) ११२७) ११२२) ५७७)

१ आकलौं बडो

जाट बसै । षींवसर पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

५०) २२५) १४८) ४००) २३०)

१ लुणावास ५००)

जाट वसै । षींवसर बरबटै पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

२०) ५०) ७०) १०७) ८७)

१ अषावास ३००)

जाट रजपूत चारण बसै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

१५) २५०) ३०) १५८) ७५)

१ वैरावास वडौ ४००)

जाट रजपूत बसै । कोहर नहीं । षींवसर पीवै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९

३८) ५२५) १७७) २७२) १४०)

१ कीलांणपुर

रजपूत वसै । कोहर नहीं । षींवसर पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	१४०)	२४)	३६)	५०)

१ बीकडावास ३००)

सूनौ, ताड़ावास रा लोग षड़ै छै[1] ।

१ जैचंद रौ बास ३००)

षेड़ौ सूनौ नालावास रा लोग षड़ै । कोहर १ थौ सु बूरीयौ ।

१ आंबा बास २५०)

षेडौ सूनौ, षींवसर रा लोग षेत षड़ै ।

१ भीरडां रौ बास २००)

सूनौ, नाहरासुवा रा लोग षेत षड़ै छै ।

१ रतना वासणी १५०)

रतनकुड़ीयौ कहीजै । षींवसर रा षड़ै । कोहर छै ।

१ नरभुवास १००)

षेड़ा री षबर नहीं । षबर नहीं । षींवसर में मांजरै छै ।

२ नाहरसुवा रा बास २, ७००)

१ बडौवास १ रोहड़ीयांरौ

२

६ पांचलौ सीधा रौ ४०००)

१ पांचली १ कुभावास

१ रणवास[2] १ वुधवास[3]

१ अणगरो १ माडपुरीयौ ।

६

जाट वांणीया रजपूत वसै । कोहर २ मीठा[4] ।

१. कोहर छै सु बूरीयो । २. राणा रो वास । ३. वुधा चाचग रो ।
४. कोहर १ मीठो छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६५)	१५००)	२५१९)	२४१५)	११३०)

१ नागड़ी १५००)

जाट रजपूत वसै । कोहर २ मीठा ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८०)	१२००)	१२१९)	११७५)	८११)

१ हमीराणो १०००)

रजपूत वसै । षींवसर पीवै । सेंवज सरसुं होवैं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	५००)	७७९)	२५५)	३०५)

१ ताडावास ७००)

जाट वसै । षींवसर पांणी पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५४)	७००)	२७७)	१३५९)	७१२)

१ वैराथल पुरद

जाट वसै । पींवसर पीवै ।

१ रूडाथल

रजपूत जाट वसैं । कोहर मीठौ, रा० हलसर पटै छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४१)	५२५)	२२०)	८६६)	४१५)

१ आकलो पुरद ६००)

जाट वसैं । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	१८०)	१६२)	२४०)	३०)

१ रांणावास ३००)

जाट वसैं । कोहर नहीं । कांटीयो पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	१२५)	५०)	१००)	४५)

१ वेरावास षुरद २००)

रजपूत बसै। कोहर नहीं। षींवसर पीवै।

१ मेघलाबास षेड़ा ३००)

षबर नहीं, षींवसर रा बावै[1]।

१ गोड़ां री वासणी

षेडां री षबर नहीं। नालावास रा बावै।

१ कीलांणपुरौ २००)

हमीरांणौ षुरद कहीजै। षेड़ा री षबर नहीं।

१ षींबाबास सूनौ २००)

महेसपुरौ कहीजै। षींवसर रा षड़ै छै।

१ मोहलां री बासणी १५०)

मांनपुरौ कहीजै। षेड़ौ सूनौ।

१ बोड़ां री बासणी १००)

सूनी छै, बोडाणौ थळ छै। षींवसर रा षड़ै छै।

१ दुरगा वासणी

३३

२९२. २ सांसण

१ नारसुवा[1] रौ बास २००)

राव जोधाजी री दत्त। प्रो० दामा हरपाळोत नै। हमें गोदो नेतलोत[2] छै। घर १०, वड़ेवास पीवै[3]।

१. नाहर सुवा। २. नेतसीयोत। ३. जाट बांमण वसै (अधिक)।

1. षींवसर के लोग खेत जोतते हैं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	१२५)	६५)	१५०)	१२०)

१ डोडीयाळ २००)

माहाराज श्री जसवंतसिंघजी रौ दत्त, श्रीमाळी देव वीणो[1] नुं। जाट वसै। सोवले रै कोहर पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	१००)	७०)	२२०)	१५०)

२

३५

तिण माहे १९ गांव वसै, नै १४ सूना गांव। २ सांसण छै।

२९३. तफै लवेरै रा गांव—

१ लवेरौ षास वास ६ छै। तामें वास ३ वसै। कोहर २ मीठा नीवास १७००)।

१ वडौ वास जाटां रौ। रजपूत वांणीया वसै।
१ गांगा वासणी। जाट वसै।
१ षीचीयां रौ वास। सूनौ।
१ लहुवां रौ वास। जाट वसै।
१ धरमा वासणी। सूनौ।
१ धांधलां रौ। सूनौ।

६ रेष

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९०)	१६७५)	१४३०)	१६७५)	१०८०)

८ वावड़ी रा वास ४४००)

वास ७ वसै। १ सूनौ। कोहर ३, वावड़ी[3] रै ऊपर ऊनाळी सेंवज वीघा १०००।

१. वेणु। २. सोहले। ३. वावड़ी २।

१ बडो बास । जाट बांणीया बसै ।
१ हेली । जाट बसै । १ गोयंदपुर ।
१ कछहावां री बासणी । जाट व राजपूत बसै ।
१ रैबारीयां रौ बास । १ जगनाथ री बासणो ।
१ कचरा री बासणी । सूनी । १ जेता री बासणी । नहीं छै ।

८

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०५)	२५००)	११५०)	२३५०)	१८३७)

१ कंजणाऊ बडी १८००)
जाट बसै । कोहर २ मीठा, षारो एक । सेंवज षेत २ छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५६)	१७५०)	२५२०)	१२१६)	७५८)

१ सोयालो १५००)
जाट रजपूत चारण बसै । कोहर ३ बावड़ी १, मीठौ पांणी ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४४)	६४५)	१२९०)	११५४)	३०३)

१ मोरना वडौ ७००)
जाट बसै । कोहर मीठो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	४१७)	२७८)	५४६)	३२९)

१ चंटासीयो[1] १०००)
जाट बसै । कोहर २ मीठा ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१२००)	१३०८)	९१५)	५४९)

१ मंडली ४००)

---

१. चटानीया ।

जाट बसै । कोहर १ षारौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	४२६)	६४)	४१०)	१५६)

१ गादेहरी ६००)

रजपूत बांणीया जाट बसै । कोहर १ पांणी नहीं, ऊसतरां पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	५८६)	९७५)	१०७६)	४९०)

१ सांवत कुवौ बडौ

जाट रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ बेऊगांव मील ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	४६०)	६७१)	५२०)	४६४)

१ जावतरी ४००)

रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	२५०)	१०४)	१८५)	१४४)

१ अणवाणी

जाट रजपूत बांभण बांणीया बसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५८)	१७८०)	२७३४)	३७०७)	०

१ केलावौ षुरद

जाट बसै । कोहर मीठौ । वावड़ी षारी ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	६००)	४८०)	५१०)	२६०)

१ हरढाणी १५००)

जाट रजपूत बांणीया बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	११५०)	६१३)	२६६१)	०

१ मेवरो १५००)

जाट रजपूत बसै। कोहर मीठौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	८००)	९७०)	८३०)	५१६)

१ कुड़छी २५००)

जाट रजपूत बसै। कोहर मीठौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४५)	२४०५)	१७८०)	५२४२)	०

१ कोहरड़ा री वासणी २००)

केलावै में मांजरै।

१ आसा री वासणी २००)

प्रोहत सुन्दरदास बसै। चीनड़ी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	१६)	२१)	२५)	५५)

१ राय कोहररोयो ३००)

जाट बस। कोहर मीठौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	३८७)	५६९)	३७१)	०

१ ईसरनांवड़ी ५००)

जाट वसै। कोहर पांणी थोड़ौ। पांचलै पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	५२७)	८३८)	४२५)	२८०)

१ वाणारी पुरद ५००)

जाट वसै। कोहर नहीं, वरवटे पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	७४०)	९५०)	५२५)	२३७)

१ मगेरीयो[1] १२००)

जाट वसै, कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	७८०)	१३३२)	१२२८)	७३९)

१ चीनड़ो ४००)

जाट वसै, कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७१)	२२५)	१५१)	२५०)	१८५)

५ नादीया वडो २२०)

१ नादीयो वडो। रजपूत वसै।

१ जैतावास। जाट वसै।

१ जाहड़वास। सूनौ।

१ वीवौवंध[2]। सूनौ।

१ उमांदेसरीयौं। जाट वसै।

५ कोहर ३ मीठा। वास ३ सूनौ[3]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२८)[4]	१९८५)	१२७०)	३३१९)	११९८)

१ कुजणाउ पुरद ६००)

जाट रजपूत वसै। वडै गांव पीवै। पेत ४ सेंवज।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२९)	११००)	२१४०)	५०१)	२०५)

१ आसरनडौ ५००)

जाट वसै। कोहर नहीं। सोयालै[5] रै कोहर पीवै। पेत १० सेंवज गोहूं चिणा हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४४)	१११०)	१८८६)	५९०)	३६९

१. मांगेरीयो। २. वीवीवाघ। ३. २ सूना। ४. ३८)। ५. सोहने।

१ महेलाणे[1] ७००)

जाट बसै । कोहर षारौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१३९५)	१२१५)	१३५५	७२२)

१ नागलवाय ८००)

जाट रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	५२५)	७७०)	६३)	४११)

१ कुवी रूंदीयो १०००)

जाट रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	८२७)	२१०१)	१११९)[2]	४३२)

१ वीराणी २०००)

विसनोई रजपूत बसै । कोसीटा २०, दुसाषौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१०)	११०५)	१३४४)	२१७०)	७८५)

१ सांवतकुवो षुरद ३००)

जाट बसै । बडैवास कोहर पीवै । भेळा बसै[1] ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	३९२)	६८०)	३९०)	२३४)

१ भटकोहरीयो १००)

रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१२५)	२८०)	१०५)	८२)

---

१. महीलाणो । २. ११९) ।

---

1. शामिल रहते हैं ।

१ नेतड़ां बास ५

जाट रजपूत बांणीया वसै। बिसनोई बैड़ी १, कोहर ५। बावड़ी १ कोसेटा अरट छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	११००)	१८००)	३१३३)	०

१ चांदरष ७००)

जाट रजपूत बसै। कोहर १ षारो।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	१३६५)	१०९९)	१८०९)	५५५)

१ षारी १०००)

जाट रजपूत बसै। कोहर २ षारा, भवाद पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	३३०)	४९८)	७३४)	१३८)

१ थांणारी[1] बडी ५०००)

जाट रजपूत बसै। कोहर १ मीठा[2]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८१)	२०९५)	२७५)[3]	४१०)[4]	७१५)

१ केलावी बडी २०००)

रजपूत जाट वांणीया बसै। कोहर षारा[5] मीठा कोसीटा २।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	७८०)	१२६०)	८६१)	३७५)

१ पात्राणीयो ४००)

जाट वसै। कोहर मीठो।

---

१. धणारी। २. कोहर २ मीठा। ३. २७५७)। ४. ४१०७)। ५. कोहर २ खारा।

१ महेलाणे[1] ७००)

जाट बसै । कोहर षारी ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१३९५)	१२१५)	१३५५	७२२)

१ नागलवाय ८००)

जाट रजपूत बसै । कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	५२५)	७७०)	६३)	४११)

१ कुवी रूंदीयो १०००)

जाट रजपूत बसै । कोहर १ मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	८२७)	२१०१)	११११)[2]	४३३)

१ वीराणी २०००)

विसनोई रजपूत वसै । कोसीटा २०, दुसाषौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१०)	११०५)	१३४४)	२१७०)	७८५)

१ सांवतकुवो पुरद ३००)

जाट वसै । वडैवास कोहर पीवै । भेळा वसै[1] ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	३९२)	६८०)	३९०)	२३४)

१ भटकोहरीयो १००)

रजपूत वसै । कोहर मीठौ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१२५)	२८०)	१०५)	८२)

१. महेलाणो । २. ११९) ।

1. शामिल रहते हैं ।

१ नेतड़ां वास ५

जाट रजपूत वांणीया वसै। विसनोई घैड़ी १, कोहर ५। बावड़ी १ कोसेटा अरट छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	११००)	१८००)	३१३३)	०

१ चांदरष ७००)

जाट रजपूत वसै। कोहर १ षारो।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	१३६५)	१०९९)	१८०९)	५५५)

१ षारी १०००)

जाट रजपूत वसै। कोहर २ षारा, भवाद पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	३३०)	४९८)	७३४)	१३८)

१ थांणारी[1] वडी ५०००)

जाट रजपूत वसै। कोहर १ मीठा[2]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८१)	२०९५)	२७५)[3]	४१०)[4]	७१५)

१ केलावी वडी २०००)

रजपूत जाट वांणीया वसै। कोहर पारा[5] मीठा कोसीटा २।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	७८०)	१२६०)	८६१)	३७५)

१ पाबाणीयो ४००)

जाट वसै। कोहर मीठो।

---

१. पणारी। २. कोहर २ मीठा। ३. २७५७)। ४. ४१०७)। ५. कोहर २ खारा।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२)	२००)	२५०)	२२७)	११७)

१ नांदीयौ भाहर रौ १०००)

जाट रजपूत बसै । कोहर बड नांदीये पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१८)	१७०६)	१४७९)	६६४)	५२२)

१ भीरड़ा री वास २००)

नादीयां वाळां रा सांजरै सूनौ ।

१ बरबटो २००)

मांगळीयां रौ, जाट बसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	३१६)	२७४)	४०१)	१७०)

१ नांदीयो २००)

नरसिंघ रौ, जाट बसै । कोहर नहीं । बडै नांदीये पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९०)	१७००)	६२०)	११००)	५७१)

१ तोडीयांणौ १०००)

जाट बसै । कोहर षारौ । षेड़ापै प्रोहतां रै पीवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	८७०)	११३५)	९५१)	७०३

१ हथुंडी ७००)

जाट रजपूत वसै । कोहर मीठौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	८९८)	१०३२)	५३६)	२७१)

१ वळदमारां री वासणी

सूवो मढली तोडीयाणै वीच, षेत सूना पड़ीया छै

२६४. ६ सांकण

१ गांव पेड़ापौ

राव मालदेजी री दत्त, प्रो० मूळा कूंपावत नुं। हमें माधोदास मोहणदासोत छै। जाट कूंभार बांणीया बसै (बांभण) छै। कोहर १ मीठौ। १ सापीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	६९०)	१३८०)	६७५)	६२०)

१ ढंढोरीयौ

राव मालदेजीरौ दत्त प्रो० मूळा कूंपावत नुं। हमें दवारकादास गोयंददासोत नै माधोदास छै। जाट वसै कोहर मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	३२०)	५१०)	३५०)	३१८)

१ छीडीयो

राजा सुरजसिंघजी री दत्त, गाडण सांदु दुदावत लाधौ। हिमें माधोदास छै। जाट वसै। कोहर १ मीठौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	२८०)	१३०)	३७५)	१९५)

१ घुढालो[1]

राजा मोटा रौ दत्त, संमत १६४० सांदु माला ऊदावत नुं। हिमें आसौ सांवतसी माला रा वेटा नै कुंभौ ईसरदासोत छै। जाट रजपूत चारण वसै। कोहर २।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	२९०)	४६०)	२९०)	१००)

१ मीठोली

मोटा राजा रौ दत्त गाडण चोला मेहावत नुं। पहली राव सूजै

---

१. फुलाळो।

गाडण चांपा अणदोत नुं, जगहट अड़सी नरावत नुं दोयौ थौ। पछै मोटै राजा वळे दीयौ। हिमें गाडण जाभो सुजा रौ नै जगहट सोढौ दासावत छै। चारण बसै। कोहर नहीं, महेलाणै रै कोहर में तीण १ छै, तठै पांणी पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	४२६)	१२०)	३२५)	१२५)

१ षारी षुरद २००)

राव सुजाजी रौ दत्त, चारण थीरा[1] बरसंघोत भादा नुं दीयौ। हिमें भादो कलौ लाषा रौ छै। चारण बसै। कोहर भळभळौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५)	७०)	३०)	९२)	५०)

६

६६

२९५. तफै आसोप रा गांव—

१ आसोप षास १५०००)

बडौ कसबो, जाट रजपूत बांणीया सगळी पवन जात बसै। कोहर २ सेंवज चिणा गेहूं हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१८६०)	१३४७१)	५७११)	६६०९)	६५०८)

१ रजलांणी ३५०)

जाट कुंभार बसै। कोहर २ बावड़ी १, सेंवज घणौ हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२९)	४३१०)	१८६१)	३२८०)	१९७५)

१ सूरपुरी १५००)

जाट वांणीया बसै। कोहर नहीं, हींगोली रै कोहर पीवै।

१. घीरा।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५)	१४८५)	२८५)	१२४५)	१०८५)

१ वारणी वडो १३००)

जाट वसै । कोहर मीठौ । सेंवज गेहूं हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३३)	१२१०)	२८०)	११९२)	२०६)

१ पालड़ी ११००)

जाट वांणीया रजपूत वसै । कोहर २, एक मीठौ, एक षारी ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१२२५)	५३०)	५५४)	६३९)

१ कुभांरी १०००)

जाट वसै । कोहर १ मीठौं ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७२)	१७००)	४२५)	८८८)	५९६)

१ छापलो ७००)

जाट वसै । कोहर भळभळौ । ऊनाळी वीघा २०० ।

संवत १५७१	१६	१७	१८	१९
३८)	११३८)	२८५)	५६५)	४१७)

१ वारणी पुरद ५००)

जाट वसै । वडी वारणो पीवै सेंवज छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४९)	६१२)	११२)	४४१)	८९८)

१ रड़ोद ३०००)

जाट वांणीया वांभण वसै । कोहर मीठौ । सेंवज घणो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३७)	४४७५)	८०५)	२७१४)	१८५८)

१ नाहड़सर ३०००)

जाट बांणीया रजपूत बसै । कोहर ३ मीठा, सर बीघा ३०० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४६५)	४९४०)	३१७६)[1]	२५७०)	२३३२)

१ रामपुरौ १४००)

जाट बसै । कोहर मीठौ । सेंवज गोहूं चिणा सरसुं ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३७५)	१३७५)	१२११)	८४१)	५८३)

१ कुकड़ढो १२००)

जाट बसै । कोहर नहीं, आसोप पीवै । सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१९६)	१७००)	१३६२)	११८८)	७३०)

१ हीगोली ११००)

बिसनोई बसै । कोहर छै । सूरपुरौ पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६७)	२३६०)	१९५०)	१२५०)	७७८)

१ दाड़मी ७००)

जाट बसै । कोहर नहीं, बडी बारणी पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६३)	१२१०)	२९१)	७५७)	६३०)

१ लुहारी ५००)

जाट रजपूत वसै । कोहर नहीं, रड़ौद पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७९)	८०५)	१९५)	१०००)	४०२

१ गोयंदपुरी ३००)

जाट बसै । रांमपुर पीवै । पेत २ सेंवज ।

---

१. ३७०६)।

१ नाहड़सर ३०००)

जाट बांणीया रजपूत बसै । कोहर २ मीठा, सर बीघा ३०० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४६५)	४९४०)	३१७६)[1]	२५७०)	२३३२)

१ रामपुरौ १४००)

जाट बसै । कोहर मीठौ । सेंवज गोहूं चिणा सरसुं ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३७५)	१३७५)	१२११)	८४१)	५८३)

१ कुकड़ढो १२००)

जाट बसै । कोहर नहीं, आसोप पीवै । सेंवज हुवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१९६)	१७००)	१३६२)	११८८)	७३०)

१ हीगोली ११००)

बिसनोई बसै । कोहर छै । सूरपुरौ पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६७)	२३६०)	१९५०)	१२५०)	७७८)

१ दाड़मी ७००)

जाट बसै । कोहर नहीं, बडी बारणी पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६३)	१२१०)	२९१)	७५७)	६३०)

१ लुहारी ५००)

जाट रजपूत बसै । कोहर नहीं, रड़ौद पीवै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७९)	८०५)	१९५)	१०००)	४०२

१ गोयंदपुरौ ३००)

जाट बसै । रांमपुर पीवै । षेत २ सेंवज ।

---

१ २७०६)।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	६
	६५)	६८५)	११०)	२६४)	२५५)

१६

२६६. तफै मेहवै रा गांव—

१ नगर वीरमपुर १०००)

रावळ वीदे वासीयो भाषर सेहरवाद महाजन रजपूत वसै। रावळा रा घर बड़ी ठौड़। कोहर २ तळाव १ वरस दिन पांणी रहै। सेझो नहीं, भाषर री गांव।

रावळ भारमल जगमालोत

रावळ महेसदास पतावत

१ जोधपुर था कोस ३४ संमत १५११ आ ठौड़ वसी।

१ सिणली २०००)

बडी गांव, नदी सुं रेलीजै[1] सारी सींव में गोहूं हुवै। पलीवाळ नै रजपूत बसै। सेझो थोड़ो।

रावळ भारमल

रावळ महेसदास

नगर थी कोस ३ पिछम नुं।

१ वोहरावास ५००)

कोस ५, बांभण बसै। नदी सुं सेंवज कोसीटा १० तलवीड़ कनै। भली गांव खेत भला।

जगमाल नुं भारमल नुं,

महेसदास नुं।

१ बावीसैंण २००)

ऊपजै उनाळी अरट ४, सेंवज हुवै। पलीवाळ रजपूत बसै। नगर

1. नदी के पानी से खेत भरते हैं।

था कोस ३ रावळ महेसदास रै वंट बावी सैणीयां केसौ[1] नुं पटै ।

१ कलावास २००)

उपजै षेत रूड़ा[1] । ऊनाळी नहीं । घोड़ा सषरा[2] घोड़ीयां चरै । बीजा गांवां रा षड़ै । कोस ३ धु माहे[3] रावळ भारमल रै बंट ।

१ जसौल ५००)

षेड़ा ७ में बडौ गांव भाषर रै षुढै बसै[4] । उपजै कोसीटा ५० तथा ६० । सेंवज बीधा ५००, रजपूत बांणीया बसै । कोस २ ऊगोण[5] नुं रावळ भारमल महेसदास दोनां नुं बंट भेळो हो ।

१ जेरलाव १००)

जसौल रा बांभण बसै । थळ रौ गांव षेत कंवळा । नदी अळगी कोस ७ । भारमल महेसदास नुं भेळी छै ।

१ आसाढौ १०००)

भलौ गांव ऊपजै । बांणीया पटेल जाट रजपूत बसै । नदी नजीक अरट २०, कोसीटा ५० हुवै । बडा षेत छै । सहेरावाद था कोस ३ पूरब नुं रावळ भारमल नै पटै छै, बंट में ।

१ टांपरा

रजपूत बसै षेत भला । घोराबंध, सेंवज हुवै । कोहर १ षारौ छै । सेहरावाद था कोस ३ नीवास नुं । भारमल महेसदास नुं ।

१ सीमालीयो २००)

रजपूत बसै । खेत भला, कोहर नहीं । सिणली पीवै सेहरावाद थी कोस ५, भारमल रै वंट पटै छै ।

१ भुंभौ

१. केसावत ।

1. खेत अच्छे हैं । 2. घोड़े अच्छे होते हैं । 3. उत्तर दिशा में । 4. पहाड़ की दाल में बसा हुआ है । 5. पूर्व ।

वडी गांव, रजपूत वांणीयां रेवारी वसै । वरसाळी । वडा पेत, ऊनाळी नहीं । नदी नजीक सहैरावाद था कोस १० भारमल रै वंट, सोढौ अमरौ भोजावत[1] वसै ।

१ मीठौ डाहीभर ८००)

रजपूत वसै, रवारी वसै । थळ रा वडा पेत । कोहर १ पांणी मीठौ । रु० ४००) ऊपजै कोस १०, भारमल महेसदास नु पटै । सेभी सीर आधो-आध छै ।

१ धाषां १५००)

वडो गांव, रजपूत वसौ । वडा षेत, कोहर १ षारौ । रु० ८००) ऊपजै । कोस ७ सहैरावाद सु महेसदास रै पटै । वंट मांहे छै ।

१ भाटी[2] १०००)

बडो गांव, रजपूत वसै । थळां रा वडा पेत । ऊनाळी नहीं, कोहर २, पांणी मीठौ । सींव घणी, रु० ५००) । सहेर था कोस १०, रावळ भारमल रै वंट ।

१ वेदरळाई २००)

छोटी गांव, रजपूत वसी, षेत भला सेवज गोहूं रु० १५००) । सेहर था कोस ७, भारमल रे पटै ।

१ बीजावास ४००)

पलीवाळ बसै । सेंवज गोहूं रु० ३००), सहेर था कोस ७[3] । महेसदास रै बंट ।

१ गुलली ३००)

रजपूत बसी । षेत भला कांठा रौ गांव । ऊनाळी नहीं । ऊपजै रु० १५०) सहेरावाद था कोस ६, भारमल रै बंट में ।

१ भींवरलाई ६००)

---

१. भोजराजोत । २. भाढो । ३. सिणधरी कोस १० (अधिक) ।

बडौ गांव, रजपूत बसै । थळरा षेत ऊनाली नहीं । नदी पीवै । कोस ७ लूण री षांन घणी । रु० ५००) ऊपजै । रावळ महेसदास रै पटै, बंट मांहे ।

१ बुरीवाड़ो २००)

रजपूत बसै । षेत भला, कोहर एक मीठौ । कोस ५ सहेरावाद थी भारमल रै पटै, बंट मांहे ।

१ चांदसरौ २००)

रजपूत बसै । षेत भला थळरा । कोहर १ मीठौ । बाहड़मेर रै कांकड़[1] कोस १० रावळ महेसदास भारमल रै साझै[2] ।

१ जाजवौ २००)

रजपूत बसै, षेत भला कोहर नहीं । बीजा गांवां रा षडै । सहर था कोस ११ । भारमल महेसदास रै साझे ।

१ झीलसीली[1] १००)

रजपूत बसै । बरसाळी भली, ऊनाळी नहीं । कोहर १ मोठौ । सहेर था कोस ८ । रावळ भारमल रै पटै बंट मांहे ।

१ सीणतरौ ६००)

बडो गांव, सींव घणी । षेत भला । थळ रा पार में बेरा १०, पांणी हाथ ४ मीठौ । रजपूत बसै । सेहर था ११ । रावळ भारमल रै वंट में ।

१ चीड़ीयो १००)

रजपूत वसै । पेत भला कोहर १ मीठौं, कोस १४[2] । भारमल महेसदास रै साझे पटै ।

२ जोरो कुवो २००)

वास २ भेळा । रजपूत वसै, थळ रा पेत भला । नदी पीवै, कोस

१. झाझामनी । २. ४ ।

1. सींमा । 2. साझे में ।

१० भारमल रै पटै ।

१ महैकरनां २००)

रा० वीदा रा पोता वसै । नदी ऊपर गांव । षेत भला सेंवज हुवै । कोस ६ सेहरावाद था । महेसदास रै पटै ।

१ सिणधरी २०००)

महेवा था कोस १[1], नदी लूणी ऊपर अरट करै, जितरा हुवै । सांवणु वडा षेत । रजपूत वांणीया चारण वसै । कोस १५ सहेरा था । महेसदास रै पटै ।

१ टाकु ४००)

षेत भला, कोहर १ मीठो । रजपूत वसै । सहेरा था कोस ४ । रावळ महेसदास नुं पटै ।

१ अंबहाडी २००)

नदी लूणी ऊपर थळ रा षेत । सिणधरी था नजीक छै । कोस १३ सेहर था । महेसदास नुं पटै ।

२ डांगीयावस २००)

षेत भला, ऊनाळी कोसेटा चांच हुवै, नदी ऊपर । रजपूत वसै, बास २ भेळो । कोस २० सिणधरी कोस ३, महेसदास नुं छै ।

१ होडु षेड़ो १५०)

सूनो, बाहड़मेर रै कांकड़ कोहर । पांणी षारो, रावळ महेसदास नुं ।

१ षीराटीयो भाषर ८०)

वेरान, कुवो बधवा कोस २० । सिणधरी कोस ५ । महेसदास नुं ।

१ हाजीबास १००)

वेरान, महेसदास नुं ।

---

१. १२ ।

१ भांभी तळाई ५०)

वेरांन, राव महेसदास नुं पटै ।

१ षारडौ १००)

टांपरा मैं सांजरै । कोहर १ छै । सहेरा था कोस २० । रावळ भारमल महेसदास नुं ।

१ झुंड ६०)

जालेचा[1] राठौड़ बसै । कोहर भळभळौ । थळ रा षेत । सहेरा था कोस ८ । भारमल महेसदास नुं ।

१ कोलु २००)

वेरान, कोहर १ मीठौ । षेत षडीजै । सहेसवाद था कोस १८ । महेसदास भारमल नुं ।

१ कोणेड़ो १००)

वेरान, कोहर मीठौ, षेत षडीजै । सहेरा था कोस १५ रावळ भारमल महेसदास नुं ।

१ तरली १००)

वेरांन, पार रा बेरां पीवै । षेत वरसाळी, सेहरा था कोस १० । रावळ भारमल महेसदास नुं ।

१ कुसमलरो[2] १००)

वाहडमेर रै कांकड़ चारण सुषवासी बसै । रावळ भारमल महेसदास नै पटै ।

१ लुणसड़ौ ६०)

वेरांन, कोहर १ मीठौ । कोस सेहरा २५ था । भारमल महेसदास नुं ।

१ सोभा[3] रौ ५०)

---

१. जहेचा । २. कुसमल सरो । ३. गोना ।

वेरांन, रावळ भारमल महेसदास नुं पटै ।

१ भीरड़ा कोट

वेरांन, पेड़ी तलवाड़ा वीच सूनी । भारमल महेसदास नुं ।

१ पैणाऊं १००)

वेरांन, कोहर मीठी । कोस १५ सहेरा था । भारमल महेसदास नुं साझे ।

१ लेच

वेरांन, कोहर षारो । लचषीणी था वूरी भेळी । कोस १६ सहेरा था । भारमल महेसदास नुं ।

१ गांव तलवाड़ो २०००)

महेवो कहीजे । लूणी नदी ऊपर वडो गांव । सारी सींव सेझो घणो[1] । सेंवज हुवे । महाजन रजपूत वांभण वसै । नगर था कोस ३ ऊतर नुं—

रावळ भारमल

महेसदास

२ षेड़ २०००)

वडो गांव, नदी लूणी ऊपर । सेझो घणो । वडा षेत बांभण वसै ।

१ षेड़ो १ षेडुलीयो नगर था कोस ३ ऊपर नुं ।

भारमल महेसदास

१

१ सोभावास २००)

नदी लुणी ऊपर कोस ३०[1] सेंवज हुवै । पलीवाळ वसै ।

१. कोसेटा २० ।

1. गांव की पुरी सीमा में जमीन के नीचे खूब पानी है ।

कोस २ रावळ भारमल रै पटै, सोढा अमरा नुं पटै दीयौ छै।

१ मांडावास १५०)

नदी ऊपर अरट ४, कोसेटा १० सेंवज हुवै। षेत सषरा। पलीवाळ रजपूत बसै। लूंण री षांन १ छै[1]। सहेरा[१] था कोस ३, रावळ महेसदास रै पटै छै।

१ बरीयो १५०)

भाषर रै षेड़े षेत भला ऊनाळी नहीं, कोहर १ छै। रजपूत बसै सहेर था कोस २ पछिम नुं, रावळ भारमल रै पटै छै।

१ तेमावस १५०)

जसोल रौ बास ७। पलीवाळ बसै। लूणी नदी ऊपर कोसेटा २० सेंवज हुवै, राठोड़ दमा री उतन कोस २ ऊगोण नुं[2]। रावळ भारमल महेसदास रै भेळौ पटै छै।

४ पेउ ५०)

जसोल रा षेड़ा सूना घास रा उपजै[२] षेत थळ रा। कुवौ १ कोस १०।

१ षंड १ टुपली १ षोषरसर १ सेवरषीयौ

४

रावळ भारमल महेसदास नुं।

१ जागसवास ५००)

रजपूत वांणीया वसै। वडा षेत धोरावंध। सेंवज हुवै। कोहर १ तळाव छै। कोस ५ नीवास नै, रावळ भारमल महेसदास नुं।

१ कोलर

भापरी कन्है, रजपूत वसै। थळ रा षेत, पांणी पारौ। छोटो गांव

१. सहेराबाद। २. घास रा रुपिया ५० ऊपजै।

1. नमक की एक खान है। 2. पूर्व में।

छै। रावाद[1] था कोस ३, रावळ भारमल रैं वंट में पटै छै।

१ कीतपाल ३००)

सिणली कनै। रजपूत वसै। कोहर नहीं। सिणली पीवै, षेत भला। सेंवज कोस ५। भारमल रै पटै।

१ लोहारडी[2] २००)

रजपूत वसै। षेत रूड़ा, ऊनाळी नहीं। नदी पीवै। सहेरावाद था कोस १०। भारमल रै वंट में पटै।

१ षारी डाहीभर २००)

रजपूत वसै। षेत भला कोहर १ षारी। रु० १००) ऊपजै। सहेर था कोस ६ पिछम नुं। भारमल रैं वंट छै।

१ धनवो २००)

भलो गांव, रजपूत वसै। षेत सषरा, कोहर १ षारी। सहेर था कोस ६। भारमल महेसदास रै सीर[1]।

१ सांभीयाळी ४००)

भलो गांव, षेत सषरा। कोहर १ पांणी मीठो। रजपूत वसै। कोस १० सहेर था। भारमल रैं वंट में पटै छै।

१ चांपलां वेरी १००)

षेड़ो सूनो छै। षेत भला, सींव घणी। बीजा गांवां रा षड़ै छै। सहेर था कोस ७, रु० ५०) उपजै, भारमल रैं वंट छै।

१ दुधवो २००)

षेत भला, पांणी पार वेरां हाथ ४ मीठो। ऊनाळी नहीं। सहेर था कोस १०। रावळ भारमल महेसदास नुं।

१ आंबभर ३००)

---

१. सेहरवाद। २. लोहरड़ी।

---

1. हिस्से में।

कोस ८, षेत भला, सेंवज हुवै। नदी नजीक कोसेटा १०। रजपूत बसै। रावळ भारमल महेसदास साझै।

१ समीसरी ५००)

रजपूत बसै। षेत भला ऊनाळी नहीं। नदी पीवै। सहेर था कोस ६। रु० २५०) ऊपजै। भारमल महेसदास साझै।

१ गोवलवास २ ६००)

गांव भलौ। नदी नजीक कोसेटा ४०, सेंवज हुवै। रजपूत नंदवाणा बांभण बसै। कोस ७ सहेराबाद था छै। रावळ भारमल महेसदास नुं साझै पटै छै।

१ नवसर ४००)

वडौ गांव। षेत भला, सेंवज हुवै। षेड़ौ सूनौ। बीजा गांवां रा षेत षड़ै। वाहड़मेर रै कांकड़ कोस १२ भारमल महेसदास रै पटै साझै।

१ सीणपा वास २ २००)

रजपूत वसै। कोहर मीठौ। १ सीणपां १ हासड़ावस। कोस १२, भारमल रै पटै।

१ गुगड़ी[1] १००)

रजपूत वसै। षेत भला, कोहर १ सहेर था कोस ८। रावळ भारमल महेसदास रै साझै छै आधोआध।

१ पटु ४००)

वडो गांव। रजपूत वसै। थळ रा षेत भला। कोहर १ मीठौ। वाहड़मेर रै कांकड़ कोस १०, भारमल महेसदास रै पटै।

१ सोहाणीयां री वासणी ५०)

षेड़ौ सूनौ, तलवाड़े महेवा रै कनै षेत छै। घोड़ा मुकरे छुटै।

---

१. गुगाड़ी।

कोस ४, भारमल रै पटै।

१ गादसरो १०००)

वडो गांव। नदी ऊपर अरट कोसेटा करै सु हुवै। सेंवज धोरा-वंध पेत। सीरवी कुंभार रजपूत वसै। सहेरावाद था कोस १६, महेसदास रै पटै।

१ कमठाई २००)

पेत रूड़ा, ऊनाळी नहीं। नदी पीवै, कोस १५ सहेरा थी। महेस-दास रै पटै।

१ नाकोड़ो[1] ३००)

नदी ऊपर थळ रा पेत भला, ऊनाळी नहीं, सहेर था कोस १५, नदी पीवै। महेसदास नुं।

१ दोतड़ीयो २००)

पेत रूड़ा, ऊनाळी नहीं, थळ रा गांव नदी पीवै। रजपूत वसै। पानळ था सींव[1] सिणधरी था कोस १। महेसदास नुं पटै।

१ डंडाली ८००)

ऊगां री, वडो गांव, नदी नजीक। अरट कोसेटा हुवै। सेंवज हुवै। रजपूत वांणीया वसै। सहेरा था कोस १०। महेसदास नुं।

१ वायतम

वेरांन, वाहड़मेर रै कांकड़ कोहर पारी। सहेरा थी कोस १५। रावळ महेसदास नुं साझे।

१ भोजहरी[2] ६००)

वेरांन, रजपूत लहुवा वसै। कोहर १, कोस १५ सहेर था। रावळ भारमल महेसदास नुं पटै।

---

१. कानोड़ो। २. भोजाहरी।

---

1. सीमा पानळ गांव से मिलती है।

१ गोडागड़ो १००)

वेरांन, बाहडमेर रै कांकड़ वेरां पांणी, चोखा षेत वरसळी। राव महेसदास भारमल नै।

१ मांडणो ५००)

वेरांन, कोहर १ पांणी षारौं। सहेरावाद था कोस १४। रावळ महेसदास भारमल रै पटै छै।

१ कानासर १००)

कोहर १, वेरांन षेत पड़ीया। कोस २२ सेहरा था। भारमल महेसदास नुं पटै।

१ वानरसर ६०)

वेरांन, कोहर १ छै। कोस १८। भारमल महेसदास नै।

१ हीरकीसंणी[1] १००)

नदी ऊपर, षेत षेड़ौ सूनौ कोस १८। रावळ भारमल महेसदास नै।

१ मीठड़ो ६०)

वेरांन, कोहर १ मीठो। कोस १८। भारमल महेसदास नुं पटै।

सेहड़ी ५०)

लूणसर कनै। वेरांन, कोहर नहीं। कोस ६ सहेरा था। भारमल महेसदास नुं पटै।

१ मोरड़वी[2] ५०)

षेड़ो सूनो, करनी सीणली वीच पाटी षेत षेड़ी। सहेरावाद था कोस ५, भारमल महेसदास नै।

१ पचराणो ५०)

वेरांन, कोहर मीठो। भारमल महेसदास नुं।

१. हीरकी री ढांणी। २. मोडर।

१ पुनावडी ५०)

कोहर मीठौ। कोस १५। भारमल महेसदास नुं।

१ सेवाउ ५०)

वेरांन, कोहर मीठौ। भारमल महेसदास रै साझै।

११०

रेष तिण सें गांव ४३ वैरांन सूना मांजरे छै, गांव ६७ आवादांन छै[1]।

२६७. १८ सांसण छै—

६ बीरांमणां नुं—

१ वीलासर १००

रावळ मेघराज री दत्त ग्रा० लीला मनांणी नुं। हिमें साजन छै। षेड़ौ वसै। थळ री, नदी पीवै। सेहरा था कोस १४।

[१ कवलली ५०)

रावळ पता रौ दत्त ग्रो० किसनै नुं दीयौ। हिमें जगनाथ छै। षेड़ौ बसै, पाटोधी रा पार रा वेरीयां पीवै, सहेरावाद था कोस ६।

१ पलाळीयौ १००)

ग्रा० सीहा आचारज नुं। षेड़ौ सूनौ। बालोतरा थका षेत पड़ै। सेहरावाद था कोस ५।

१ काळु वडी

रावळ जगमाळ मालावत रौ दत्त, ग्रा० सोमाईत गोहला रा शुर। हमें करमांणद लीषमीदास छै। वेड़ौ बसै। गांव सषरौ, सोणली था नजीक। सेहरावाद था कोस ६।

१ नगा रौ वास २५०)

१. 'ख' प्रति का अंश।

1. आबादी वाले हैं जिनकी आमदनी आती है।

रावळ पता रौ दत्त सोढा बांभण नुं। हिमें हमीर छै। षेड़ो बसै। नवसर री बेरीयां पीवै। सिणधरी कोस ५।

१ डाहां रौ वास ५०)

भुकां मांहे सोढा बांभण नुं।

---

६ रु० ६५०)

२९८. १२ चारणां नुं—

१ आकोधणी १००)

रावळ जगमाल मालावत रौ दत्त, बारट अचळा चंदरीयां नुं। हिमें लषौ अदा रौ छै। षेड़ो बसै। कोस ६।

१ वाघोडी १००)

रावळ मलीनाथ री दत्त बारट मोकळ नुं। हिमें जगी गोपाळ छै। षेड़ो वसै। कोस ५।

१ मालवी १००)

रावळ भारमल जगमालोत रौ दत्त, बारट वसता भाषरोत नुं। संमत १६९० रा दीयो। गंगादास ऊधरण छै। षेड़ो वसै, कोस १०।

१ सांवरो ५०)

रावळ मालाजी री दत्त, बारट मेहा रोहड़ीया नुं। हिमें कोस ४ षेड़ो वसै।

१ लापुनड़ो

रावळ जगमाल री दत्त बारट भापर नुं छै। षेड़ो वसै। कोस १० सेहरावाद।

१ रंतु १५०)

रावळ महेसदास भारमल रो दत्त संमत १६९५ आसीया भींवा नरसलोत नुं। वाहड़मेर री गडा सवे कोहर २ छै। षेड़ो मूनो वरसाळो षेत पड़ीजै। हिमें षेतसी भींवावत छै। कोस २२ सेहरावाद।

१ गुड़ली १००)

रावळ हापा री दत्त मेहडु पंगार नुं। हिमें नेतौ छै। पेड़ी वसै। नदी पीवै। कोस ८।

१ सेब्री ५०)

रावळ जगमाल मालावत री दत्त, बारट ठाकुरसी नुं। हिमें गंगादास छै। पेड़ो सूनौ। सेहरवाद था कोस १४।

१ कांर ०)

रावळमेघराज री दत्त, चारण मुहड़ ठाकुर सोनाव्रत। हिमें जगमाल अषाव्रत छै।

१ चीषी ५०)

पेड़ौ सूनौ। वारठ रुग रा बेटां नुं।

१२	रु० १०५०
१८	रु० १७००
१२८	

२६६. विगत—

जुमले गांव	आवादान	वेरांन	रेप रु०	आसांमी
५५	२५	३०	२०८६०)	रावळ महेसदास भारमल री साझौ आधो २।
३२	२१	११	११३६०)	रावळ महेसदास नुं आवगा[1]।
२३	१९	४	९३५०)	रावळ भारमल नुं आवगा।
११०	६५	४५	४१५७०)	
१८	११	७	१७३०)	सांसण
१२८	७६	५२	४३३०००)	

1. पुरे, जिसमें किसी का हिस्सा शामिल नहीं।

३००, महेवाँ रा गांवां री मेळ—

गांव	आसांमी	
५५	रावळ महेसदास भारमल नु' गांव साझो आधो-आध छै। वुही री पटो।	
	१ नगर बीरमपुर	१०००)
	१ सिणली	४०००)
	१ बोहरावास	५००)
	१ जगसा	५००)
	१ टायरा	४००)
	१ धनवो	२००)
	१ दुधवो	२००)
	१ जाजवो	२००)
	१ गुगड़ी	१५०)
	१ सांमीसरे	५००)
	१ गोवल	६००)
	१ तलवाड़ो महेवौ	४०००)
	१ षेड़	२०००)
	३ जसवल	१५००)
	विगत—	
	१ जसोल १ जेरला १ तेमावास	
	१ सोभावस	२००)
	१ मीठौ डाहीझर	८००)
	१ षंडु	४००)
	१ चीड़ीयौ	२५०)
	२ सीपावास २	२००)
	२ गोरड़ीयौ	४००)
	१ नवसरो	

२५ रु० १८५००) गांव बसता आबादांन।

३०१. ३० सूना षेड़ा मांजरै—

१ षारडो टांपर में मांजरै	२१००)
१ कुसमलो	२००)
१ माऊड़े	५०)
१ भोजहरे	६०)
१ वांणाड़ो	१००)
१ कांनासर	२००)
१ तरली	१००)
१ कुसमसरो	१००)
१ गोभारो	५०)
१ सेहड़ी	५०)
१ भीरड़ाकोट	१००)
१ पांणाऊ	६०)
१ लेच	१००)
१ भुढि	६०)
१ वाटारू	५०)
१ गोड़ागड़े	१००)
१ वाग्रेतम	१००)
१ कांनासर	१००)
१ वानरसर	६०)
१ हीरकी री ढांणी	६०)
१ लूणसड़ीं	१००)
१ मीठड़ीं	६०)
१ मोडरड़ी	५०)
१ पथरांणी	६०)
१ पुनड़ाऊ	१००)
१ सेवाऊ	१००)
४ पोऊ जसोल रा	१००)

३० रु० २३६०)

५५ रु० २०८६०)

२०२. ३२ रावळ महेसदास नुं आवगा गांव वांटे आया—

१	सिणधरी	२०००)
१	वावीसेण	४००)
१	वींजावस	४००)
१	भींवरळाई	६००)
१	टांकु	४००)
१	अवहाड़ी	१००)
१	डांगीयावास	२००)
१	लौहीड़	२००)
१	गोग्रांण	२००)
१	सलणु	३००)
१	रांणसर	)
१	गादसरो	१०००)
१	मांडावस	३००)
१	आंवझर	२००)
१	मेहकरना	२००)
१	कमठाई	२००)
१	नाकोड़ो	३००)
१	दोतड़ीयो	२००)
१	मांडाली	८००)
१	करजा	७००)
१	धाधा	७००)

२१ रु० ६७००) वसता आवादांन

११ वेरांन—

१	कोजा तळाव	२००)
१	अरव	२००)
१	हाजीवस	१००)
१	जीवासो	१००)

१	डावड़ी	१००)
१	ऊगीवस	१००)
१	होड़ु	१००)
१	पोराटीयो	
१	तांती तळाई	५०)
१	चेनईचो	५००)
१	धरमलणो	६०)
११	रु० १६६०)	
३२		

३०३. २३ भारमल नुं श्रावगा—

१	श्रासाढे	२०००)
२	सिणतरा	६००)
१	सिरमाळीयौ	३००)
१	वेदरळाई	१००)
१	कीतपाळ	५००)
१	सोनवस	४००)
१	कलावसीयो	२००)
१	सीहाणीयां री बासणी	५०)
१	भुकां	१००)
१	वरीयौ	३००)
१	लोहड़ी	२००)
१	बुड़ी वुड़ो	२००)
१	सीमाळीयौ	५००)
१	गुगली	३००)
१	चंपला वेरौ सूनौ	१००)
१	भाटो	१०००)
१	कोलर	५००)
१	सांभीयाळी	४००)

१ चंदलरो	२००)
१ जोरा कुवो	२००)
१ झोलमल	
१ षारो डाहीझर	
२३ रु० ६३५०)	

३०४. परगने जोधपुर री सींव[1] इण परगनां सुं इणे भांत लागै—

परगने मेड़तो ऊगवण[2] नुं, तिण सुं जोधपुर रा गांवां री सींव लागै—

१ रजलांणी १ गोठण
१ कुसलांणो १ सीहारो
१ हरीयाडांणा सुं
१ बोरूंदो १ सोवणीयो
१ कुरलाई १ डीगराणो

१ लोहारी सुं चौकड़ी सीहारो
१ रिणसीगांव १ सोवणीयो
१ रतकूड़ीयो १ षारीयो षंगार
१ घोड़ारड़ १ अणंदपुर
१ बळूंदो
१ अणंदपुर १ फालको
१ कांणेचो १ षड़हाड़ी

१ सिणलो १ षड़हाड़ी १ डींगरांणो।
१ षांषटो
१ मोरीयावस १ पालड़ी
१ षारीयो षंगार।

1. सीमा, हद। 2. पूर्व की ओर।

१ मादळीयौ । १ गीडसुंरीयौ
१ सीवणीयौ ।

३०५. परगनै जैतारण नै जोधपुर सींव—

१ कालाऊना । वहेड़
१ ऊदळीयावस । वहेड़
१ कूंपड़ावस । वहेड़

१ षारीयौ भांण रो
१ वहेड़ १ प्रिथीपुरो

१ मुरका वासणी १ वहगुणां री वासणी
१ जाक
१ वहेड़ १ नींबोल
१ लोटोधरी
१ वहगुणां री वासणी ।

१ मुरड़ाहो नै घोड़ारड़
१ गेहावस नै घोड़ारड़
१ कानावस १ बीकरलाई १ मालपुरीयौ
१ सीणला
१ नीबोल १ वहगुण वासणी

१ घोड़ारड़
१ पीपळीयो काडीया १ वलाहड़ो ।

१ वीझावडीयौ
१ झंझणवस १ पाटवौं
१ गळणीयौ १ प्रिथीपुरी ।

१ बळूंदो वांभाकुड़ी नै मालपुरीयौ घोड़ारड़
१ देऊरीयौ प्रोहतां री नै घोड़ारड़ ।

३०६. परगने सोभत नै जोधपुर—

१ बीलाड़ो
 १ अटवड़ो १ वरणों
१ जैतीवस
 १ महेवे १ थाहर वासणी
 १ अटवड़ो १ वरणो
१ बाहळो
 १ गुजरबास १ पलासळो रांमा रो
 १ हसलपुर
१ बाघबसीयो
 १ पळासलो बांभणां री
 १ पळासलो रांमा रौ
 १ हासलपुर षुरद
१ ब्रह्मी सींघा बासणी
१ षारो चारणां री
 १ राजळवो १ मोरटऊको
 १ भरणीयो
१ मोड़ी भेटनड़ो
१ अरटोयौ मोरड़ी
१ मढली वीकार
 १ मोरड़ी १ भीथड़ो
१ षेतावस सापौ
१ वागड़ीयौ नीबली ऊहड़ां री
१ आकड़ावस
 २ राजगीयवस १ गोधावस

१ ढावर
१ दूदोयौ
१ भोरड़ो
१ सुगाळोयौ
१ काराडो
१ वाहड़ो सो
१ गोधावस

१ हींगोलौ
१ भींवाळोयौ
१ हरसवरणो
१ वीजायावसणो
१ थाहरवसणी
१ जेसलवस
१ थाहरवसणी
१ मालकोसणी
१ थाहरवसणी
१ ओलवी
१ हसलपुर
१ ऊणागांव ।

१ रावर हासलवड़ो
१ रावांसड़ी
१ भांणीयौ
१ ऊणांगांव ।
१ संभाड़ो
१ सीधावासणी
१ गोवळीयौ
१ मोरटऊको
१ कलाळी
१ भोरडी
१ ऊंतवण
१ सापो
१ भुरीयावसणी
१ भोरड़ी
१ भुभादड़ो
१ पाळासलो बडो
१ भाभेळांई
१ सोवणीयो
१ भागेसर
१ सांवळतो बडौ
१ दुहड़ीया वासणी
१ भोरड़ी
१ भेटनडो
१ भीथड़ो

१ लांबी
१ पळासलो पुरद
१ धांमल
१ बतो
१ कराडी
१ भींवाळीयो ।

१ षेरवो
१ गोधावस
१ हींगोलो
१ गोधावस ।

३०७. परगनै गोढवाड़ जोधपुर सींव—

१ काठधरो
१ डीहड़ो
१ मादड़ी
१ डीहड़ो
१ षेरवो
१ षुसी
१ बापुनी
१ गोधावस
१ गुदवच
१ डीघड़ी
१ सोढावस
१ डीहड़ो
१ ठाकुरला
१ जुढ ।

१ कुडणो
१ चांणोद
१ डेहड़ो
१ वीगड़ी

१ भाद्राजण
१ मुलेव
१ सीहा री पाद्र
१ साकदड़ो
१ कवला
१ मुळेव

१ मुळेंव
१ कवळा

१ मीणीयारी

१ चरचड़ो १ सुलीयो ।

---

१ सानेही १ सोढावस

१ हींगोलो षुरद १ वापुनी

१ अहीनला

१ सोढावस १ डीहड़ो ।

---

१ ——————

१ कोड़वो १ तपा १ अहनला चारणां री

१ साहली

१ चांणोद १ आकदड़ो

१ मालगढ

१ साकदड़ो १ सुलीयो १ चरचड़ो

१ मुळेव माथा री

१ मेरी

१ साकदड़ो १ चरचड़ो ।

---

३०८. परगने जाळोर नै जोधपुर सींव—

१ नीबलो संषवाळी

१ सांसर ढंढकाव भंवरणी

१ नवसरा जोगण

१ षांभी

भंवरणी देभावस बेड़ीयौ

१ षांडप

१ भंवरांणी

१ दुधीयौ संषवाळी कबा जोगण

१ मुळेव संषवाळी

१ बुसीयाथळ

१ संषवाळी १ जोगण

१ बावड़ी

१ देभावस वेड़ीयो

१ बालौ

१ भंवराणो

१ मोतीसरी चारणां री

१ भंवरांणी

---

३०६. परगनै सीवाणा रा गांवां जोधपुर सुं सींव–

१ षांडप

१ वीहाळी १ सेवाळी

१ कंमा रौ वाड़ौ

१ अंबा रौ बाड़ौ १ सेवाळी

१ षीरहाटीयौ

१ जगीसा कोटडी

१ भलाड़ा रौ बाड़ौ

१ सूरपुरौ

१ आसराबो

१ आसराबो बांभण रौ १ कालांणौ

१ डोहळी

१ नेढ़ली

१ तिसींगड़ी

१ चांदा रौ वास । तीतरगड़ी । कालाड़ौ

१ आकेली

१ केलण कोट १ सतोसण

१ फळसूंड १ डाभली
१ पाटोधी १ मोतीसरो १ रादुसी

१ मजल १ वीहाली
१ लालीया १ छाछेळाई

१ भानां री बाड़ो १ कावाणा १ तीसींगड़ा
१ दहीपुड़ो १ सूरपुरो १ सोवरषीयो

१ दहीपुड़ो वाघा री वास १ सतेसीण १ परड़ी

१ सूरपुरो
१ घड़ोई धरमदास रा वास

१ वाघावस
थोव

१ वड़नावो
१ पाटोधी १ सतोसण

१ वाकीबाहो
१ कालांणो

---

३१०. पोकरण नै जोधपुर सींव—

१ गांव देछु
१ मढलो १ चंदसमो

१ काळाऊ
१ चंदसमो १ झालरीयो १ रातड़ीयो
१ पद्रोड़ो १ सांकड़ीयो

१ फळसूंड
१ गीडागड़ो १ भीषोला १ झाबरो
१ दत्ताल १ रातड़ीयो

१ मुळेव संषवाळी

१ बुसीयाथळ

    १ संषवाळी १ जोगण

१ बावड़ी

    १ देभावस वेड़ीयो

१ बालौ

    १ भंवराणो

१ मोतीसरी चारणां रो

    १ भंवरांणी

---

३०६. परगनै सीवाणा रा गांवां जोधपुर सुं सींव—

१ षांडप

    १ वीहाळी १ सेवाळी

१ कंमा रौ वाड़ौ

    १ अंबा रौ बाड़ौ १ सेवाळी

१ षीरहाटीयौ

    १ जगीसा कोटडी

१ भलाड़ा री बाड़ी

    १ सूरपुरौ

१ आसराबो

    १ आसराबो बांभण रो १ कालांणौ

    १ डोहळी

१ नेढ़ली

    १ तिसींगड़ी

१ चांदा रौ वास । तीतरगड़ी । कालाड़ौ

१ आकेली

    १ केलण कोट १ सतोसण

१ फळसूंड १ डाभली
१ पाटोधी १ मोतीसरो १ रादुसी

१ मजल १ वीहाली
१ लालीया १ छाछेळाई

१ भानां री वाड़ी १ कावाणा १ तीसींगड़ा
१ दहीपुड़ी १ सूरपुरी १ सोवरपीयो
१ दहीपुड़ी वाधा री वास १ सतेसोण १ परड़ी

१ सूरपुरी
१ घड़ोई धरमदास रा वास

१ वाघावस
थोब

१ वड़नावो
१ पाटोधी १ सतोसण
१ वाकीवाहो
१ कालांणो

---

३१०. पोकरण नै जोधपुर सींव—
१ गांव देछु
१ मढली १ चंदसमी
१ काळाऊ
१ चंदसमो १ झालरीयो १ रातड़ीयो
१ पद्रोड़ो १ सांकड़ीयो
१ फळसूंड
१ गीडागड़ो १ भीषोला १ झाबरो
१ दत्ताल १ रातड़ीयो

१ बुढकीयो
  १ चंदसरो

१ आठेवाली
  १ चंदसमो १ झाबरो १ मढली

१ पुंगळीयो
  १ झाबरो १ रातड़ीयो

१ फासाणीयो
  १ झाबरो १ रातड़ीयो

---

३११. परगने फळोधी नै जोधपुर सींव—

१ नवसर
  १ राढीयो १ पळी

१ मुडेलाई मांगळीयां री
  १ देहणोक १ भोजासर

१ रोहणवो
  १ केलणसर १ देछु

१ ईसरू कोळु
  १ आऊ १ बेरू

१ बेराई देहणोक
  सांवड़ाऊ १ थाढीयो

१ नाथड़ाऊ भेड़
  सांवड़ाऊ वरणाऊ

१ चाडी
  आंऊ

१ रता री तळाव मांगळीयां री
  १ नीबां री तळाव

१ बुगडी
  १ केलणसर

१ वीकुंकोहर
१ सांवड़ाऊ १ माळो

१ पीलवो
१ दहीयाकोहर

१ भोजाकोहर
१ दहीयाकोहर

१ लाषणकोहर
१ लोहीयावट

१ कुसलावो
१ जालीवाड़ो १ कोळू १ सावराज

१ देरांणीयौ
१ वारणाऊ

१ चौमुं
१ वारणाऊ ।

---

३१२. वीकानेर नै जोधपुर रै गांव सींव —

१ रोहीणवो १ वुगडी
भेलु १ भेलु नायुसर

१ करणुं १ चंपासर
१ सोंभाणो १ सोभांणो

१ भोजावस १ तातुवास
१ सांरूंडो १ भादल १ भादलो ।

---

३१३. परगने नागोर था जोधपुर था सींव—

१ देपासर १ पांचोड़ी
१ देऊ देऊ

१ दांतणीयौ १ आचीणौ—मांडपुरीयौ
१ भुंडेल १ माडपुरीयौ १ वेरावस भोऊडा
१ वाराथळ १ सुंडाथळ भेड़
१ भेड़ १ मांड़पुरौ १ ताडावस
१ हमीरांणौ भोऊडा
१ टुकलो १ गीरावड़ी १ आसोप
१ आकीलो दहावडी डुबरषीयौ
भेड़ १ रड़ोद
१ बेराव षुरद गजसिंघपुरौ
गीरावड़ी १ रजलांणी
१ दाड़मी हरसाला
१ हरसाळ १ गीराबसणी १ आसरनडो
१ कुकड़दो गजसिंघपुरौ
१ मांणकपुर १ मंगेरीयौ
१ भदोरौ १ वासणी गजसिंघपुरौ]

मारवाड़ रा परगनां री विगत

(२) वात परगनै सोझत री

१. सासत्र नांव सुधदंती छै। लांका थी जोतग मांहे ग्रह सांझै छै। तठै मारवाड़ मांहे दूजा सहेर किण ही नांव मंडै न छै, तठै सोझत री नांव मांडै छै। आगै केहोक दिनां त्रंबावती नगरी। त्रंबसैन राजा हुतौ। तिण राजा री सोझत कहाणी छै। तिण दिनां सोझत त्रंबसेन राजा हुतौ, तिण री तौ जात कांई सुणी नहीं छै। पिण उनमांन[1] कर जांणीजै छै–आबू नै अजमेर वीच कीराडु लुईवा[१] पुंगळ सारी धरती पंवार हुता। ते जांणीजै छै[2] सोझत ही पंवार हीज हुसी। तिण त्रंबसेन राजा रै सोझत नांवै एक वेटी हुई। सु देव-कळा सकत री औतार हुऔ[3]। तिका डावड़ी[4] वरस ८ तथा १० री हुई तरै रात आधी जाय तरै सूता मांणसां प्रौळ जड़ीया[5] देवी री भापरीयां उठै चौसठ जोगणीयां रमण आवै[6], सु उठै आ जाय। सूतै मांणसां जड़ीया प्रौळै पाछी आय सूवै। आ बात हुती-हुती कन-कन[7] राजा त्रंबलसैन सांभळी[8]। तिण राजा रै वांवरी हुल प्रधान छै। राजा वांवरा हुल नुं कह्यौ–आज तुं मोहल[9] री ढोढी[10] रहै। आ डावड़ी जाय तठै वांसै हुयौ[11] जाय नै जिका षबर होय, सु मांहां नै देई[12]।

२. बांधरी उठै ऊभौ छांनौ रह्यौ छै। रात आधी गयां सोझल

१. लुद्रवो।

1. अनुमान। 2. इससे माना जाता है। 3. देवताओं की कला को प्राप्त कर शक्ति का अवतार हुई। 4. लड़की। 5. मुख्य द्वार वन्द रहते हुए। 6. चौसठ योगिनियों के साथ खेलने आती है। 7. कानोकान। 8. सुनी। 9. महल। 10. ड्योढी। 11. पीछे लगा। 12. मुझे देना।

रमण नुं नीसरी, सु देवीजी री भाषरी गई। बांधरौ हुल वांसै हुवौ गयौ। सोभ्कल नुं जोगणीए कह्यौ–आज तौ तूं एकली नहीं। तरै सोभ्कल कह्यौ–मांहारै साथै तौ म्हारै जांणीयौ[1] कोई नहीं छै। तरै सकत कह्यौ—एक बार पाछी जाय देप आव। तरै सोभ्कल पाछौ आय भाषरी हेठै ऊभी रही। आगे देषै तौ मांटी[2] १ ऊभौ छै। तरै इण बुलायौ, कह्यौ–तूं कुण छै? तरै इण कह्यौ–हूं बांधरो हुल छूं। तरै सोभ्कल दौड़ दंड दबायो, कह्यौ–थारी आ कुण जायगा आवण री[3]। हूं सराप दोउं, तोनुं बाळ देईस। तरै इण कह्यौ—माताजी, मांहारौ दोस कोई नहीं छै। हूं पार रौ[4] चाकर छूं। थांहारै बाप मोनुं घणो गाढ कर नै मेलीयौ छै तरै हूं आयो छूं। म्हें तौ ऊजर कीयौ[5]। पिण राजा बरजीयौ[6] रहै नहीं। तरै सोभ्कल कह्यौ–राजा रौ राज तो नुं दीयौ। मांहारै नांवै सहर रौ नांव सोभ्कत देई। नै म्हारो थापना फलांणी ठौड़ मांडजौ। बांधरा रै माथै हाथ देनै सीष दीवी। आप जोगणीयां भेळै उड गई। सवार हुवौ। बांधरौ राजा रै हजूर आयौ। राजा वात पूछी। इणै कह्यौ–वात पूछण वाळो[7] नहीं। राजा हठ कर वात पूछी। इण कही। राजा मुवौ। इण ठौड़ राज बांधरै पायौ। तरै सेहर रौ नांव सोभ्कत दीयो। तिण बांधरा रौ करायौ पावटा रा जाव वांसै[8] बाघेळाव तळाव छै। ऊतर नुं सेहर अड़तौ[9]।

३. पछै केईक पीढीयां सोभ्कत हुलां रौ राज रह्यौ। तठा पछै केईक दिनां रांणा री दीवी कहै छै, सोभ्कत सोनगरां रै हुई छै। तठा पछै सोभ्कत केईक दिनां सींधलां रै कहै छै हुई नै चाकरी रांणा री करता। तिण समै राव चूंडौ नागोर कांम आयौ। तरै आप मरतै

कंवरां नुं काढीया सु लायक बेटौ तौ रिड़मल हुतौ। पिण राव चूंडौ बूढो हुवौ मोहोल उडीट वाळां रै परणीयौ हुतौ। तिण मोहीलांणी रै पेट बेटौ १ कान्हौ चूंडावत राव रै हुवौ थौ। सु कान्है सुं राव रौ हेत घणौ हुतौ। सु कंवर काढीया तरै राव चूंडौ रिड़मल नुं कहैण लागौ—एक बात रै वासतै मांहांरौ जीव दोहरौ[1] छै, सु तूं बोल बचन मांहांनै देवै नै कहै—म्हे थांहरौ कहौ करसां, तौ म्हे तोनुं कहां। तरै राव रिड़मल कहौ—थे कांय[2] जीव दोहरौ राषौ, राज फुरमावसौ सु म्हे राज रै पेट रा छां तौ करसां[3]। तरै राव चूंडै कह्यौ—मंडोवर री रावाई कान्हा नुं देजौ। नै थे कान्हा सुं ग्रासी वेध[4] मत करौ। रिड़मल वात कबूल कीवी। कह्यौ—राज जीव सोरौ करौ[5], म्हे कान्हा री धरती मैं पांणी ही नहीं पीवां। राव कुवरां नुं सीष दीवी।

४. वांसै राव कांम आयौ। राव रिड़मल मंडोवर आय कान्हा नुं पाट बैसांणीयौ। टीकौ काढ नै[6] आप मेवाड़ रांणा मोकल भांणेज थौ उठै गयौ। रांणै मोकल राव रिड़मल री बसी नुं[7] मारवाड़ नजीक धणलौ सोझत रौ कितराहेक गांवां सुं दीयौ। राव रिड़मल री थोड़ा विभा ऊपर[8] धणलै बडी ठकुराई हुई छै। वडा-वडा प्रवाड़ा[9] धणलै थका कीया छै। तठा पछै कितराहेक दिन तांऊ राव कान्है मंडोवर राज कीयौ। पछै राव कान्हौ जांगळु सांषलां ऊपर गयौ छै। तिण समै चारणी करणी कान्हा नुं आषा आंण[10] बदावण लागी[11]। तरै कान्हौ कह्यौ—इणां आषा लीयां कासुं हुवै? तरै चारणी कह्यौ—इणां आषा लीयां राज कमायौ होय।

५. तरै राव कान्हौ कह्यौ—राज मांहांरौ कोई आषां सारै छै

---

1. दुखित, अनमना। 2. क्यों। 3. हम आपकी औलाद हैं तो करेंगे। 4. झगड़ा वैर भाव आदि। 5. मन में संतोष लाओ, आश्वस्त हो। 6. राज्यारोहण का दस्तूर करके। 7. रहने के लिए। 8. कम आदमियों के सहारे भी। 9. प्रसिद्धि के वीरतापूर्ण कार्य। 10. अक्षत लेकर। 11. शुभ शकुन की रस्म पूरी करने लगी।

नहीं[1] राज सांहांरी तपसीया री छै। तरै चारणी कोप कीयौ। कह्यौ-जो इतरा दिन में राज जाय तौ आषा जांणजौ, राज गमायौ। तठा पछै कितराहेक दिन मांहे राव सतै चूंडावत रावत रिणधीर चूंडावत भेळौ हुवौ[2] नै कान्हा कनै मंडोवर लीयौ। पछै कितराहेक दिन राव सतै चूंडावत भोगवीयौ। सु राव सतौ छै, नै धरती सारी री मदार कांम-काज रिणधीर चूंडावत ऊपर छै। रिणधीर भली भांत साहबी चलावै छै।

६. औ करतां सता रै बेटौ नरबद मोटौ हुवौ छै। सु नरबद काळ पूंछीयौ[3], उपाधौ[4]। सु नरबद दिन-दिन जोर चढतौ गयौ[5]। नरबद नै रिणधर अदावत दिन-दिन वधती गई। सतौ सु ठाकुर हुतौ, सु नरबद नुं घणौ ही वरजीयौ[6]। रिणधीर नुं दलगीर[7] मत कर। पिण नरबद जोर चढीयौ सु मांनै नहीं। चूक[8] २ तथा ४ रिणधीर मारण रा नरबद कीया। पिण रिणधीर जांणीया[9]। पछै रिणधीर रीसाय नै[10] राव रिड़मल कनै धणलै गयौ। रिड़मल घणौ आदर कीयौ, राषीयौ। पछै रिणधीर रिड़मल नुं कह्यौ, समझायौ-थे विषाइत हुवा[11] काय फिरौ, नै बाप की धरतो री चींत करौ नहीं[12], सु कुण वासतै? तरै रिड़मल कह्यौ-मोनुं राव चूंडै सुंस लीरायौ थौ[13]। तरै रिणधीर कह्यौ-कान्है कनै राज लेण रौ सुंस करायौ थौ, कान्हा या कह्यौं[14] थौ-कदेई मंडोवर रै राज री हर मत[15] करौ। तरै राव रिड़मल कह्यौ-राव चूंडै मोनुं कान्है दिसा कह्यौ थौ। राव रिड़मल रै वात दाय आई।

७. पछै राव रिड़मल रिणधीर दिन १० नुं सुल सामी कर[16]

---

1. इन अक्षतों के भरोसे नहीं हैं। 2. एक हुए। 3. बुरे लक्षणों वाला। 4. विग्रह पैदा करने वाला। 5. ताकत पकड़ गया। 6. मना किया। 7. दुखित। 8. धोखे से प्रयत्न। 9. मालूम हो गये। 10. नाराज होकर। 11. दुख के दिनों को काटते हुए। 12. चिंता करते नहीं। 13. सौगंध दिलवाई थी। 14. अथवा यह कहा था। 15. आशा मत करो। 16. सब व्यवस्था करके।

चीतोड़ रांणा मोकल कन्है आया । रांणाजी सुं आपरी हकीकत कही । दीवांण अरज मांन मदत साथ दीवी । राव रिड़मल रिणवीर नुं विदा किया । तद मारवाड़ ती वापी कीमत कर दिराड़ी । प्रा० सोभत री रांणै आपरी तरफ री दीयी । मंडोवर नजीक आया । सतौ तौ विण विढीयौ[1] नीसर गयौ नै नरवद वेढ एक सांम्है आय कीवो । नरवद घावां पड़ीयौ । वेढ राव रिड़मल जीतो । रांणा रा साथ नुं सीप दीवी । राव आय मंडोवर बैठा । वडी ठकुराई वणाई । राव रिड़मल धणलै छै । तिण दिन राव री वेटी १ सायर तळाव मांहे वूड मुवी छै[2] । तिकौ पितर[3] हुग्रो, तिण री उठै थड़ौ छै[4] । तिण दिन सोनगरा पिण राव रिड़मल घणा मारीया छै, धणलै वसतां थकां । तठा पछै मंडोवर पायौ । सोभत रांणै आपरी तरफ सुं दीवी छै । तठा पछै कितराहीक दिनां रांणै मोकल नै सीसोदीया चाचै-मेरा वेध वांधीयौ । राव रिड़मल घणौ मेवाड़ हीज रहै । पछै पीची अचळदास नुं रांणै मोकल बेटी परणाई हुती सु अचळदास ऊपर मांडवा रो पातसाह आयौ सु रांणौ मदत नुं चढै छै । राव रिड़मल नुं रांणौ मोकल कहै छै–थे मारवाड़ जाय नै घणौ साथ ले आवौ । तरै राव नुं अठी नुं विदा कीयौ । वांसै दिन १५ तथा २० रांणै वागोर डेरौ कियौ । उठै चाचो-मेरौ रांणा मोकल नुं मारीयौ नै कुंभौ नीसरीयौ, चीतोड़ पैठौ[5] । वांसै इण घेरौ कीयौ । राव रिड़मल नागौर रौ चढीयौ मदत आयौ । चाचो-मेरौ पई रै भाषर पैठा । तठै वेरौ कर नै राव चाचै-मेरै नुं मारीयौ । पछै वरछीयां री चंवरी कर नै परणीया । रांणा कुंभा नुं आण चीतोड़ बैसांणीयौ । सारी मदार राव रिड़मल माथै छै । पछै सीसोदियां चूंडै लषावत, पंवार मोहैप राणां कुंभा नुं भषायौ[6] नै राव वीच दुभांत[7] घाती ।

८. राव रिड़मल चीतोड़ रै गढ़ ऊपर सुवै छै । कंवर जोधौ असवार ४०० सुं तळेहटी डेरौ रहै छै । पछै सीसोदियां भषाय नै राव

1. विना लड़े ही । 2. डूब कर मर गया । 3. पितृ योनि । 4. स्मारक । 5. घुस गया । 6. सिखाया । 7. मन-मुटाव ।

रिड़मल सूता नुं चूक कर मारीयौ[1]। नै कंवर जोधा ऊपर साथ विदा कीयौ। कुंवर जोधौ नीसरीयौ। रांणै री फौज वांसै लागी। पग-पग वेढ हुई। राठौड़ां री साथ घाटै सुधौ घणौ कांम आयौ। जोधौ कुसळे घाटै पार हुवौ। रांणा री फौज फिर पाछी आई। पछै जोधौ तौ काहूनो गयौ, नै रांणै मंडोवर लेण नुं फौज विदा कीवो। तिण में इतरा सिरदार छै, तिण री विगत—

१ आहाड़ौ हींगोलो	१ आको सीसोदीयौ
१ सींधल हरभामौ[1]	१ झालौ विकमादीत
१ पीरोजषांन पातला रौ बेटौ	१ मु० रेणयर
१ हाजो घौराणीयो	१ चहुवांण जेसौ, सांचोर
१ रावत रा० राघौदास सहेसमलोत।	

९

९. तिण दिन रा० राघवदास सहेसमलोत नुं रावताई[2] दे नै, सोझत पटै दे नै, आपरौ चाकर कर नै, जोधा रौ आसीयौ कर मेलीयौ छै। सोझत लषमीनारायण रौ ठाकुरदवारौ जोधपुर रै फळसैं छै। सोझत इतरी ठौड़ हुई छै—

१ आद[3]तौ पंवारा रै
१ पछै हुलै[2]
१ सोनगरां रै, रावळ कानड़दे रै[3]
१ राव रिड़मल नुं रांणै दीवी थी मंडोवर भेळी
१ रांणै कुंभे हुई, रा० राघोदास नुं पटै, राव रिड़मल नुं मार मंडोवर लीवी तद।

१. हरभम। २. हुलां रै। ३. इसके पहले—को दिन सोलंखी राजा भींमदेव रै।

1. धोखे से मरवाया। 2. राव का खिताब, शासन-अधिकार। 3. प्रारम्भ में।

१ राजा प्रथीराज चहुवांण नाहड़राव पंवार मधो लहर री वेढ।

१ केईक दिनां सोलंकी राजा भींवदे रै।

१ तठा पछै सींधलां रै हुती, रांणा रा चाकर।

१ राव जोधै मंडोवर रांणा री थांणो मार नै धरती वाळी[1] तद सोझत लीवी, दवाई वैर में, नै जोधी सोझत वसीयौ[१]।

१ राव सूजो......[२] सैदां नुं पातसाह री दीवी हुई[३]।

१ राव वीरमदे वाघावत नुं भाई वंटे।

१ राव गांगौ वीरमदे कन्हा संमत १५८८ में रायमल पेतावत मार लीवी[2]।

१ राव मालदे सोझत हुवी, राव चंद्रसेन टीकै वैसतां सोझत थी।

१ राव रांम मालदेवोत नुं संमत १६२१ पातसाह अकवर चंद्रसेन कना ले दीवी।

१ राव कला रांमोत नुं एक वार हुई[४]।

१ रा० सुरतांण जैमलोत मेड़तीया नुं अकवर पातसाह एक वार दीवी। संमत १६३४ मेड़तीयां री वसी सारे गांव आया था[५]।

१ राजा सुरजसिंघ नुं संमत १६६५ वळे फेर दीवी।

१ राजा गजसिंघ नुं टीकै सुं संमत १६७६ दीवी सु कदे ऊतरी नहीं।

१ राजा जसवंतसिंघ नुं वरकरा रही सदा, संमत १६९४ थी।

१ राव चंद्रसेन डूंगरपुर थी पाछी आयौ। वळे सोझत लीवी, संमत १६३७ काळ कीयौ।

१ राव रायसिंघ चंद्रसेनोत नुं अकवर पातसाह दीवी[६] संमत

---

१. तिण री साख गुण जोवायण मांहे वसै छै। २. रा० वीरमदे वाघावत नुं भाई-वांटे। ३. 'ख' प्रति में अलग से थोड़ा आगे यह वृत्तांत है—सैदां नुं पातसाह री दी हुई जिण वेढ़ ऊहड़ सवराड़ संमत १६३५ कांम आयो। ४. अकवर दी रांम रै मरण। ५. वारहठ महेसदास चुतरावत वात कही (अधिक)। ६. पछै सीरोही रायसिंघ (अधिक)।

---

1. वापिस ली। 2. छीन ली।

१६४० रा काती वदि ११ कांम आयौ ।

१ मोटा राजा नुं संमत १६४१ नवाब षांनषांना दीवी ।

१ राजा सुरजसिंघ नुं संमत १६५१ ।

१ रा० सकतसिंघ उदैसिंघोत नुं पातसाह अकबर दीवी, संमत १६५६, बरस १ रही ।

१ राजा सुरजसिंघ नुं फेर रांणे मालपुरौ मार नै सोझत रा परगना मैं नीसरीयौ तरै वळे पाछी दीवी ।

१ राव करमसेन उगरसेनोत नुं संमत १६६४ वैसाष में जांहांगीर दीवी, पार[1] रही ।

सोझत सहर री वात

१०. छोटी-सी भाषरी ऊपर छोटौ-सो कोट छै । मांहे सादा-सा घर मुळगा[1] हुता । तिके तौ सारा पड़ गया छै। घर १ राजा श्री गजसिंघजी री वाहार मांहे[2] नवौ हुवौ छे, दुड़ौ छै। घरां मांहे वीरमदे वाघावत देवरूप हुऔ छै, तिण रौ थांन छै । पूजा हुवै छै । घोड़ा १० बांधै तिसड़ी पायगा री ठौड़ हुती । घर बारै दरबार बैसण रौ चौतरौ छै । गढ री प्रौळ १ छै । इतरी तौ रा० नीवा जोधावत री कराई छै । तिण गढ हेठै परकोटौ छै । सु तौ तुरकां करायौ छै। तिण में रावळा घोड़ा-घोड़ी बांधण री पायगा छै । बागर घास री छै[3] । परगनै मांहै हाकम सिरदार रहै तिका डेरा २ तथा ४ छै । घर ५० तथा ६० के हुजदारां पंचोळीयां बांणीयां पंडव[4] नट-घुट कोट मांहे वसै छै । परकोटा री प्रौळ छै । तिण ऊपर दीवांणषांनौ छे । हेठै कोठार छै । तठै हाकम परगना रौ दीवांण करै छै । परकोटा मांहे देहरौ १ प्रौळ नजीक श्रीचत्रभुजजी रौ छै । तकीयौ[5] १ सिन्यासी

---

१. मास ।

---

1. केवल । 2. समय में । 3. घास का ढेर । 4. घोड़ों की देखभाल करने वाले । 5. समाधि ।

गीतसगिर री देहरा नजीक छै। सेहर पाधर में[1] वसै छै। घर २२०० साहाजन बांभण कायथ सीरवी घांची माळी छत्री सौ[1] [2] पवन जात बसै छै। कोट मांहे वावड़ी १ सी० हरचंद रै घर वांसै[3] हुती सु वूरी पड़ी छै।

फसबे सोझत री वसती

११. घरां री उनसांन संमत १७१६ रा फागुण रा मास मांहे मांडीयौ, मंगायो पा० वांमदास[2] लिष मेलीयो।

विगत—

७३८ माहाजन	८ पंचोळी	३०५ करसा
१४२ रजपूत	७२ मुसलमांन	३६४ बांभण

१६१९

६२५ पवन जात—

२१ सुनार	२२ कुंभार	२६ जुलाहा
४ साटीया	६ न्यारीया	११ धोबी
५४ सिलावटा	४ भरावारा	५ सरगरा
४७ कलाळ	११ भाट वासती	१२ लुहार
३३ दरजी	६ नाचण	२० सूतधार
३५ छींपा	३ वणकर	१४ कसारा
२० वैद	१२ पींजारा	४ कारटीया
१० डूम भाट[3]	२ भड़भुंजीया	५ हलालषोर
८९ मोची	८६ ढेढ	१२ नाई
८ नायता	४३ षटीक।	

६२५

२२५४

१. छतीस। २. रांमदास। ३. भांड।

1. समतल मैदान में। 2. सभी। 3. पीछे।

१६४० रा काती वदि ११ कांम आयौ।

१ मोटा राजा नुं संमत १६४१ नवाब षांनषांना दीवी।

१ राजा सुरजसिंघ नुं संमत १६५१।

१ रा० सकतसिंघ उदैसिंघोत नुं पातसाह अकबर दीवी, संमत १६५६, बरस १ रही।

१ राजा सुरजसिंघ नुं फेर रांणे मालपुरौ मार नै सोझत रा परगना में नीसरीयौ तरै वळे पाछी दीवी।

१ राव करमसेन उगरसेनोत नुं संमत १६६४ वैसाष में जांहांगीर दीवी, पार[1] रही।

सोझत सहर री बात

१०. छोटी-सी भाषरी ऊपर छोटौ-सो कोट छै। मांहे सादा-सा घर मुळगा[1] हुता। तिके तौ सारा पड़ गया छै। घर १ राजा श्री गजसिंघजी री वाहार मांहे[2] नवौ हुवौ छै, दुड़ौ छै। घरां मांहे वीरमदे वाघावत देवरूप हुऔ छै, तिण रौ थांन छै। पूजा हुवै छै। घोड़ा १० बांधै तिसड़ी पायगा री ठौड़ हुती। घर बारै दरबार बैसण रौ चौतरौ छै। गढ री प्रौळ १ छै। इतरी तौ रा० नींबा जोधावत री कराई छै। तिण गढ हेठै परकोटौ छै। सु तौ तुरकां करायौ छै। तिण में रावळा घोड़ा-घोड़ी बांधण री पायगा छै। बागर घास री छै[3]। परगनै मांहे हाकम सिरदार रहै तिकां डेरा २ तथा ४ छै। घर ५० तथा ६० के हुजदारां पंचोळीयां बांणीयां पंडव[4] नट-षुट कोट मांहे बसै छै। परकोटा री प्रौळ छै। तिण ऊपर दीवांणषांनौ छै। हेठै कोठार छै। तठै हाकम परगना रौ दीवांण करै छै। परकोटा मांहे देहरौ १ प्रौळ नजीक श्रीचत्रभुजजी रौ छै। तकीयौ[5] १ सिन्यासी

---

१. मास।

---

1. केवल। 2. समय में। 3. घास का ढेर। 4. घोड़ों की देखभाल करने वाले। 5. समाधि।

सोझत सहर री हकीकत

१२. देहरा[1] इतरा गांव मांहे छै—

८ जैन रा देहरा छै।

८ सिव रा देहरा छै।

३ ठाकुर दवारका—

१ श्रीचत्रभुजजी १ लिषमीनारायणजी

१ मुलनायकजी रौ।

५ श्री माहादेवजी रा—

१ पाताळेसुरजी रौ १ जोगेसुर १ नीलकंठ

१ सुरेस्वुर, वाघेळाव १ कपाळेसुरजी।

८

१६

१३. सोझत में इतरा तळाव छै—

१ बघेवाळ[1]—सहर सुं दिषण था जीमणै-रौ पांवडा २०० । सहर था धुव-ली वाड़ी कन्है, कुंवर वाघा सुजावत रौ करायौ छै। सु पांणी घणौ को दन रहै नहीं[2]। मांहे रेत घणी। बावड़ी २ मांहे छै तिण रौ पांणी मीठौ छै।

१ रिड़मेळाव—ईसांन कूंण मांहे गढ रै पाठा हेठै[3] राव रिड़मल रौ करायौ छै। सहर सुं लगतौ। मास ६ तथा ८ पांणी रहै, तळाव मांहै।

१ वाघेळाव—सहर सुं उतर सुं डावौ। पाटवा बांसै आगै सषरौ तळाव हुतौ। पिण हमें वूरांणौ। मास ४ रौ पांणी रहै। पाळ ऊपर

---

१. वाघेळाव।

---

1. देवालय। 2. अधिक दिनों तक पानी नहीं रहता। 2. गढ़ की दीवार के नीचे।

साळ १ होद १ छै। एक पावटी मेड़ता रै फळसै सीरवी हरषा री षणाई, पांणी घणौ। सहर री तीन बाजु अरट गांव दोळा छै; पिछम उत्तर दिषण। नै उगवण दिसी अरट को न छै। नदी धरेसरी सुकड़ी रोहीसा री तरफ रौ पांणी धारेस्वुर नाव रै आवै। उठा थी हरीया-माळो आगे होय सीहाट[1] ऊपर आवै। तठै वैजनाथजी दिसी गीलड़ी आवै। दोनूं नदी भेळी हुवै। सहर रै फळसै आगै नीसरै, पछम नुं पांवडा २०० नदी बीच छै। तिणरी पैलो कांनी पांणी भळभळौ, कठै ही मीठौ। बडा अरट २५ तथा ३० नदी री पैली कांनी हुवै छै। अरट चांच नदी ऊपर सहर री तीन बाजू करै जितरा हुवै। पांणी री कमी सोभत री सींव में घणी कोई नहीं। सहर पाषती मीठी वणीयां छै। तिण ऊपरा वाग वाड़ी छै। आंब सहेलड़ीयां[1] करै छै।

सोभत चाबड़ीयाक नै जोधपुर रै मारग बीच बडौ जोड़ छै। घास गाडा २००० री ठौड़ छै। अरट ७ तथा ८ जोड री पाषती सु गळै षारचीया हुवै छै। चणो नीलौ उगै न हुवै।

१६. करसा गांव रै षेड़ै घांची सीरवी माळी कलाळ[2] नै बांणीया रजपूत षेत वाहै। हळ २०० देजगर रा कसबै जुपै छै। ८० घांची ४० माळी ४० सीरवी २० कलाळ २० साह रजपूत।

षेतां री विगत

१७. हळ २० वहै छै, कसबै मांहे तिणां रा अै षेत छै—

१ उत्तर दिसा नदी हद अठी उनाळी छै, बरसी नहीं[2]।

१ उगवण नुं षेत कंवळा उनवड़ी री सरह[3] हळवा ५० धरती आछी, मोठ वाजरी रा षेत छै।

---

१. री जीमणी कांनी हुय नै ऊनवडी री सरेद (अधिक)। २. मुदाहत (अधिक)।

---

1. गन्ना। 2. सांवणू साख नहीं। 3. सरहद।

१ पछम नुं नदी रै उवार-पार[1] अरट छै। इण तरफ घणो कोई न छै। अरट री पैली कांनी जोड[2] छै।

१ दिषण नुं नै पछम बीच सोभत री पेतो री मदार छै। इण तरफ रा षेत ऊपर छै। कोस २ अठी सींव छै।

चिणा सेंवज घणा महे षेत दीठ[3], वीसे चाळीसा हुवै।

बाजरी जुवार मूंग मोठ तिल सारी सींव षेत छै। हळवा ४०० धरती कसबा बांसै छै। हळ १ वांसै धरती वीघा ५०।

१८. इतरा गांवां सुं सोभत री सींव लागै छै—

१ उगवण - पचनडो १ लुढावास । पालणपुर राध सीहाट परवांण वासणी त्रवाड़ी कांन्हा री पांवडा ४०, १ रांमा वासणी।

१ दीषण - मोतां री वासणी पांवडा ४००।

१ दीषण - रहैनडो मढलै नदी आडी लूणकरण री
वड री वासणी षोपरो नदी आडी वासणी
वाघावास नजीक भाट रा षेत घेनावास
घनहड़ी नीलावास[1] चावड़ीयाक

१९. कसबै सोभत हासल री ठौड़

सांवणु साष—

२००) माल

७० महाजनां रा नै पवन जात रा—

७८। महाजनां रा नांवां ३। कवारा
२३। सुनार १।२ भड़ीयांरा

---

१. वीलावास।

---

1. दूसरी ओर। 2. जमीन का वह रक्षित भाग जो घोड़ों और गायों के चरने के काम आता है। 3. प्रत्येक खेत के अनुसार।

५।१६ जाटीया ढेढ ५।१६ कलाळ

१४।१२॥ मोची ३।२६ कलाळ

१३३।४

१०८) करसा तेली सोनार कलाळ माळी सीरवी ।

७॥) पंचोळीयां री सरहे रौ आधौ माल । सं० १७१६ था

१४।) बीजा ७॥)

२००।)

१८००) वरसाळी

५००) वण वीघे १ मीठी वणीया रु० १॥) षारचीया वीघे १ रु० १।) वीघा ५०० तथा ४०० तथा ३०० वांसे लागै १०४) ।

संमत १७१८ संमत १७१६ लाटौ

३२१।) ६६६) १२४७) ऽ१८

५८२) ऽ१६

७५०) लाटौ धांन म० १५००) प्र० रु० १) म० २) ।

४००) षारचां म० ३॥ रु० १) ।

८५) मुकातीयां रा ।

६५) असल षरड़े लागत भोग ।

।) भोग म० १ रु० ।) ।

४) चीड़ोतरी सुं षेड़ ।

१२) वाजे ।

२) भरोतो ।

२) पीड़ोतरी धांन म० १०० ।

१) वणीया नुं म० ६ रु० १) ।

५) पाठा रा ।

५) जीमण रा ।

३११)

१८००)

१३७०) ऊनाळी रीं परड़ी—

१५०) बीघा १००, छै तेरा प्रत बीघे १ रु० १॥) लागत रा

१५६) ऽ१८ १५३) ऽ१६

८५०) गेहूं भोग म० १६५० असल भोग रा लागत रा—

१२५०	१०००	२५०	करसां ।
२००	१७५	२५	पाही ।
२००	२००	०	नटपुट ।
१६५०	१३७५	२७५	

३५०) परड़े म० ३॥ रु० १) री भोग बांसे ।

।) असल ।) चीड़ोत री १३) बाजे ।

३०) चांच ४ प्र० १॥) ६

नीलो कुवें चिणो २०)

१३७०)

१३७०)

२०. सोभत रा हासल री उनमांन—

३३७०) माल वरसाळी ऊनाळी ।

५२१) बाजे

१०) देड़मैं[1] आंबली रा ।

---

१. दाड़म ।

१५०) मेंहंदी माळीयां रै सदा री छै, रु० ५) सिकदार रै सु षड़ रा दै।

संमत १७१८ संमत १७१९
१७६) १३८)

४८) नींबुआं री माळीयां रै ५४)।

४८) संमत १७१८

४८) संमत १७१९

२१) तरकारी पहैली टका ८ ऊधड़ा था। पछै मीयांजी बीघे १ रौ रु० ॥)।

१८) गुळी रा षेत कदेक हुवा था[1], तिण री जमा चली जाय थी, छींपा, पींजारा।

५०) ताबा सं० १७१८ १७१९
५२) ५५)

३६) आधोड़ी रंगै सु भांभी देवै।

८०) साबणगर पाटा रा देवै मास १२

संमत १७१८ १७१९
४८) ८०)

१५) छींपा माल गुळी रा दै।

३०) कलाळ दारू री भठी रा दै। संमत १७१८ १७१९
३०) ३४)

१०) षटीकां रा कसायां रा ३) १०)

३०) षटीकां षाल रंगै छै तिकां रा २१) ४६)

२३) घांणी तेलीयां री १९) २५।)

५२१)।

1. कभी हुए थे।

५५) फुटकर रकमां रा

		संमत १७१८	१७१६
१०)	तेरीया री साल	८)	१२)
१५)	गेहर तेहवारी ३	१४)	१६॥)
३०)	एवड़ां री चराई चरधी १ दा० रु[1]	२८॥)	३७)

५५)

५००) कसबे रु० ५०० तथा ६००) तुलावट ।

४४४६)

देसाई बाव	असल सं० १७१५ जमा	१६	१७	१८	१९	२०
सेरीणो	२३६१)	२१०२)	३२४१)	२०६८)	२१६५)	२१६१)	१६००)
गुघरी	६६३)	५४१)	६००)	५३०)	५६३)	५७३)	०
दुमालो	१४४)	१२२)	१३३)	१३४)	१३४)	१३३)	०
बळ	३६३)	२४७)	२८४)	२२६)	२७३)	२४६)	०
रसत	१३३३)	८७३)	०	८७२)	०	८८८)	०
बांणीया री अरट मढली	१६४)	७८)	११५)	६२)	६३)	६४)	०
पांनचराई	२४५)	२४५)	५०१)	६१)	६६)	१५४)	०
फरोही	५००)						
सारण री वरस फर	४१७)						
मीलणो	५०)						

१. रु० १६) ।

१५०) मेंहंदी माळीयां रै सदा री छै, रु० ५) सिकदार रै सु षड़ रा दै।

संमत १७१८ संमत १७१९
१७६) १३८)

४८) नींवुआं री माळीयां रै ५४)।

४८) संमत १७१८

४८) संमत १७१९

२१) तरकारी पहैली टका ८ ऊधड़ा था। पछै मीयांजी बीघे १ री रु० ॥)।

१८) गुळी रा षेत कदेक हुवा था[1], तिण री जमा चली जाय थी, छींपा, पींजारा।

५०) तावा सं० १७१८ १७१९
५२) ५५)

३६) आधोड़ी रंगै सु भांभी देवै।

८०) सावणगर पाटा रा देवै मास १२

संमत १७१८ १७१९
४८) ८०)

१५) छींपा माल गुळी रा दै।

३०)	कलाळ दारू री भठी रा दै। संमत	१७१८ ३०)	१७१९ ३४)
१०)	षटीकां रा कसायां रा	३)	१०)
३०)	षटीकां षाल रंगै छै तिकां रा	२१)	४६)
२३)	घांणी तेलीयां री	१९)	२५।)

[1] ...ये।

५५) फुटकर रकमां रा

		संमत १७१८	१७१६
१०)	तेरीया री साल	८)	१२)
१५)	गेहर तेहवारी ३	१४)	१६॥)
३०)	एवड़ां री चराई चरबी १ दा० रु[1]	२८॥)	३७)

५५)

५००) कसबे रु० ५०० तथा ६००) तुलावट।

४४४६)

देसाई वाव	असल जमा सं० १७१५	१६	१७	१८	१६	२०
सेरीणो	२३६१)	२१०२)	३२४१)	२०६८)	२१६५)	२१६१)	१६००)
गुघरी	६६३)	५४१)	६००)	५३०)	५६३)	५७३)	०
दुमालो	१४४)	१२२)	१३३)	१३४)	१३४)	१३३)	०
वळ	३६३)	२४७)	२८४)	२२६)	२७३)	२४६)	०
रसत बांणीया री	१३३३)	८७३)	०	८७२)	०	८८८)	०
अरट मढली	१६४)	७८)	११५)	६२)	६३)	६४)	०
पांनचराई	२४५)	२४५)	५०१)	६१)	६६)	१५४)	०
फरोही	५००)						
सारण री वरस फर	४१७)						
मीलणो	५०)						

१. रु० १६)।

लिषावणी १२०)

तलबानो २०)

वटाव

बाहारलौ दांण ० ० ० ०	२५३८)	३६५३)
कणवार	५०)	३५०)
तगीरात बळ	२६)	२६७)

२१. सोझत पातसाही तरफ था पाई जागीर में, तनषाह दांम मांहे—

दांम लाष	रुपीया	आसांमी
५००००००	१२५०००)	मोटा राजा नुं।
५००००००	१२५०००)	राजा सूरजसिंघजी नुं।
६००००००	१५००००)	राजा गजसिंघ नै इजाफै कीया
		संमत १६७६ १००००००
		,, १६८६ ५००००००
८००००००	२०००००)	माहाराजा जसवंतसिंघ नै।
		आगे संमत १६९५ ६००००००
		इजाफे ,, १७११ २००००००
२४००००००	६०००००)	

२२. परगने सोझत रौ पालसै हासल ऊपनो, तिण री जमा-बंधी सालीण[1] री—

६०४८५)	संमत	१६९२
४९९८७)	,,	१६९३

1. प्रत्येक साल की।

२२९६४)	संमत	१६९४[1]
४५१६३)	,,	१६९६
३६६४५)	,,	१६९७
३२४७४)	,,	१६९८
३५९९४)	,,	१६९९
४९२३५)	,,	१७००
३५६६१)	,,	१७०१
५७५२६)	,,	१७०२
४१७२२)	,,	१७०३
३०३९९)	,,	१७०४
१७४५५)	,,	१७०५
३३७७४)	,,	१७०६
२४५७२)	,,	१७०७
३२६१६)	,,	१७०८
३६८५४)	,,	१७०९
२६९०८)	,,	१७१०
४७९०१)	,,	१७११
५१५९०)	,,	१७१२
४३१०९)	,,	१७१३
४१८५८)	,,	१७१४
३००९३	,,	१७१५
४५५२७)	,,	१७१६
५०८६८)	,,	१७१७

१. ४७१८६) संमत १६९५।

कुल सालीणो सोझत परगने री जागीरदार सांसण सुधौ ठीक छै—

१३८६००)	संमत	१७११
१६८४०२)	,,	१७१२
१२४५७३)	,,	१७१३
१२०१११)	,,	१७१४
९४१६८)	,,	१७१५
१४६४१०)	,,	१७१६
१६९४२४)	,,	१७१७
१८५५५०)	,,	१७१८
१५७८१०)	,,	१७१९
७२१८७)	,,	१७२०
११७००९)	,,	१७२१

१०९५५) बालसो

संमत १७२० ६१२३२) जागीरदार सांसण।
७२१८७)

संमत १७२१ २८८१९) हासल
७९०६) वाजे
७२२५७) जागीरदार
७९२७) सांसण
११७००९)

परगने सोझत रा गांवां रा हासल री विगत

२३. ४९ अतरा गांव आबादांन अवल ऊनाळी हुवै—

गांव आसांमी—

१ सोझत कसबौ १ रामावासणी
१ मुहाळीयौ १ सीहाटी १ सीवराड़
१ वगड़ी १ दुघवर १ वीठौरी वडौ १ वासणी
१ वीलावास १ घेनावास १ धाकळो[3]
१ सुरायतौ १ सहैवाज १ नींबली मंढा री
१ दुणलौ १ सांडीयौ १ षोपरौ
१ ईसाली १ वापारी १ घणलौ
१ देवळी अषा री १ कीराड़ी १ सेषावास
१ वातौ वाडीयौ[1] १ वाहड़सा १ मेलावास
१ झाड़ढंढ १ मढलौ बडौ १ धनेहड़
१ षारड़[2] १ वीर नडी १ राजलवो तेजा
१ फारोलीयौ १ गादाहलौ १ रोसांणीयौ
१ चांवडीयाक १ सिणलौ १ सिरीयारी
१ जांनोदी १ वडी १ करमावास
१ मलसा बावड़ी १ राणावास १ हरठावास
१ चेलावास १ चिरपटीयौ १ गींडगड़ी[4]

४६

२४. ४५ इतरा गांवां दौम ऊनाळी हुवै—

१ मोढी १ षारीयौ नीवरौ १ कंटाळीयौ
१ गागुरड़ी १ चंडावस १ बरणो
१ भेवली १ आंवो १ साडारड़ो
१ दाघीयौ १ वोलमाला १ सांडपुरौ[5]
१ पीपळाज १ हरीयामाळी १ ढुंढो

१. वतौ वाड़ीयौ। २. पारड़ी। ३. घाकड़ो। ४. गोडा गड़ी। ५. सझपुरो।

१ केलवाळ	१ षांभळ	१ भढलो षुरद
१ भैंसणौ	१ डौयनडी	१ षारीयो फदा रौ
१ पांचनाडौ हुलां	१ सीधा बासणी	१ रायमल री बासणी
१ मांनसिंघरी वासणी	१ हींगावास	१ पंचनडो टाक
१ हमीरवास	१ हूण गांव वडौ	१ सोवणीयौ
१ भांणीयौ	१ पचनडौ लाला[2]	१ सींचणौ
१ सारंगवास	१ भोजावास	१ वीठोरौ षुरद
१ साढरौ[1] षारीयौ	१ ठाकुरवास	१ भरहावास
१ गोपावास	१ रेवड़ी	१ राजगीयावास षुरद
१ चवावडी	१ छीतरीयौ	१ अषवास ।

४५

२५. ३४ अतरा गांवां सहेल ऊनाळी हुवै समै–

१ आल्हावास	१ वाघावास	१ वीरावास
१ सीसरवादौ	१ नीबली ऊहड़ा	१ भोरड़ो
१ झीथड़ी	१ देवळी हुलां	१ महड़ासौ
१ महेलाप	१ दांमा धांधल री वासणी	१ पळासलो वडौ
१ पाटेलोयौ[3]	१ धवळहरौ	१ थारावासणी
१ हूणगांव पुरद	१ महेव	१ माडपुरीयौ
१ मामावास	१ गुजरावास	१ हासलपुर वडौ
१ लोळावास पुरद	१ पारचो	१ कादु
१ पारीयौ वडौ	१ हेमलीयावास वडौ	१ लालपुरौ
पळासलो पुरद	१ जोगरावास	१ हेमलीयावास पुरद
१ वड़ रो वासणी	१ हासलपुर पुरद	१ रांकणो
१ वोलीयावास[4] ।		

३४

१. मोटा रो। २. नारो। ३. पोटलीयो। ४. वाणीयावास।

२६. इतरा गांवां सेंवज हुवै तथा पारचीया ऊनाळी ढीबड़ा के थोड़ा वोहोत हुवै—

१ धागड़वास	१ अटवड़ी	१ झूंपेळाव
१ चोपड़ौ	१ हरसीयाहेड़ौ	१ पांचवौ
१ पुटलो	१ हायत	१ लीलावास वडौ
१ गोघेळाव	१ दुदीयौ	१ वाहली
१ भींवाळीयौ	३ भेटनडौ	१ भागेसर
१ चांदांवासणी	१ राजलवौ वडौ	१ चुल्हैळाई
१ दूधीयौ	१ वीचपुडी	१ सांपो
१ सुरड़ाहो।		

२४

१५२

२७. ३२ अतरा गांव सूना था मांजरै मंडै छै। दापली करां—

१ रेवारियां री वासणी	१ सूरीया वासणी	
१ झुलीयौ[1] मांढा री	१ दुधव रा वास	
१ गोइंदपुरी	१ जोधड़ावास	
१ घंटीयाळी	१ पातुवास	१ रांमपुरी
१ हरसोयाहेड़ौ षुरद	३	
३ षोषरा मांहे	१ नीवाहेड़ौ	
१ वांणावास[2]	१ मांडलावास	१ होगोला री वासणी
१ देवळोयावास	१ गोपावास सांडोयां रौ	
३	१ माल्हेको	

१. रुलियो। २. वाणियावास

१ जेसावस

२ बुटेळाव–

१ पुरद वास जोड़ में १ तीजो वास भाटी गोपाळदास री।

२

३ कंटाळीया रा वास ४ बगड़ी मांहे

१ महेवड़ौ १ कोटड़ौ १ धनाज १ पीपळपुरौ

१ त्रीपमारीयौ[1] १ हसावस १ दुरगावस

३ ४

२ भेटनडो

१ जैतसी री वासणी

१ रा० जसा रौ[2] वास

१ कासवो

१ रायमल री वासणी

१ पारची प्रोहतां री

१ पाटमो गढ

३२

२८. २७ अतरा गांव मेरां रै दाषल–

१६ वसता

१२ ऊनाळी पीवल हुवै–

१ सारण १ नोवड़ी १ थट

१ वोडीया १ वणीयामाळी सोहल १ नापरो

१ सीचीयाई १ लापोड़ी[3] सेहल १ गजणाई

१. तीपमारीयो। २. राजमा रो। ३. नांपोड़ी सहल।

१ सिरीयारी   १ केरां री वडी[1]   १ गजणाई दाघी[2] माहेली

१२

२९. ७ ऊनाळी सेंवज हुवै, एक सापीयौ—

१ वोरीमादो   १ डीघोड़   १ लालव[4]

१ त्रीझारड़ी[3]   १ फुलाद   १ रसाड

१ रायरौ पुरद

७

१९

३०. ८ मेरां रा गांव सूना पेड़ा—

१ वीलणवास   १ नाहाड़ो   १ मराजर

१ राणावास   १ पाडली[5]   १ कालोकोठ

१ पीरणी पेड़ो   १ गजणाई रा०[6] कनीया री

२७

३१. ३३ सांसण रा गांव—

२३ दुसाषीया पीयल ऊनाळी हुवै—

१२ वांभणां रा—

१ रूपावास   १ लुढावास

१ राधा री वासणी   १ पांचवो वड़ो पारोटग[7]

१ अनत रो वासणी   १ पळासलो चासरे

१ नरसिंघ री वासणी   १ कांना रा[8] वास

१ मालपुरियौ   १ वासटकीये[9]

१ नाथलकुड़ी   १ मालपुरीयौ ।

---

१. पेड़ो ।   २. दामा ।   ३. झोझरड़ी   ४. कालव ।   ५. पालड़ी ।   ६. सारंग ।
७. पारो पांणी ।   ८. काना ।   ९. तालकीयो ।

१० चारणां रा—

१ पांचेटियौं १ मोरटहुकौ १ गोधावस

१ रयेड़ा रौ बास[1] १ राजगीया बास १ अंगद बास

१ लाटण[2] हैडो १ रैहनड़ी १ पळासलो रांमा रौ

१ बीजळीयावस सहे[3] ।

१०

१ जोगीयां नुं – हीरावस

२३

६ एक साषीया सेंवज हुवै—

३ बांभणां रा—१ वडीयाळौ १ घुहड़ाया[4] वासणी

१ चाहड़वास ।

३

३ चारणां रै—१ सोमड़ावस १ नापावस

१ रांमा री वासणी

३

६

४ सूना गांव चारणां रा—

२ रयड़ां रौ वास[5]—१ मुळीयावास १ बूटेळाव

३३

४४

परगनै सोभत

३२. १५२ गांव हासलीक—

११ नंदवांणां बोहरा वसै मांहे बीजी रत वसै घणी ।

---

१. रेपड़ावस वडो । २. लाहिण । ३. हसलं । ४. घूहड़ीया । ५. रेपड़ावस ।

१ सीववाड़	१ मांढो	१ वाघावस
१ चंडावड़[1]	१ पारड़ा	१ महेव
१ दुधवड़ी	१ वगड़ी	१ सुरायतो
१ वरणो	१ थारावासणी ।	

११

१८ पलीवाळ बांभण वसै–

१ भुंपेळाव	१ भागेसर	१ भटनडै रा वास
१ पाटलीयो[2]	१ चांदा वासणी	१ मालावस
१ चुलेटळाई[3]	१ षाभेल	१ डूंगरसी री वासणी
१ कारोलीयौ	१ सहुपुरौ	१ भीथड़ो
१ माडपुरीयौ	१ वीचपुड़ो[4]	१ ल ळावास वडौ
१ दुधीयौ	१ पुटल	१ सोवाणोयौ
१ भांणोयो ।		

१८

१ विसनोई वसै - हूण गांव वडौ।

३०

३३. परगने सौभत रै गांवां रौ मेळ इण भांत कीयौ, गांव २४४ ।

रुपिया रेष	गांव	आसामी
१००२००)	३८	इतरा तौ वडा गांव छै।
	२८	इतरा निषालस ।

१ सीहाट	४०००)	१ कसवो सोजत	८०००)
१ अटवड़ौ	५०००)	१ सीवराड़	५०००)

१. चंडावल । २. पीटलीयौ । ३. चुलेलाई । ४. बीजपुड़

१ रांमावासणी	३५००)	१ मुटाळीयो[1]	४०००)
१ षारीयो नीवा री	३०००)	१ दुधवड़	४०००)
१ धाकड़ो	३०००)	१ वीठोरी वडी	३२००)
१ गागुरड़ी	३०००)	१ सुरायतो	४५००)
१ सटवाज	३०००)	१ अलहवास[2]	३०००)
१ वापारी	३०००)	१ दुणलो	३०००)
१ देवळी आंवा री	३०००)	१ नीवली माढा	३०००)
१ सेषावास	३०००)	१ भेवली	२०००)
१ काराड़ी	३०००)	१ वाहड़सी	३०००)
१ भेटनडा	३०००)	१ ईसाली	३०००)
१ वासणो	३०००)	१ वरणो	३०००)
१ वीलावास	५०००)	१ षेनावास[3]	

१० वडा पिण रईयत ईंयां गांवां घटै, सदा वडा ठाकुरां री वसो लायक गांव छै—

१ मांढी	६०००)	१ वगड़ी	१००००)
१ षोषरो	४०००)	१ चंडावळ	५०००)
१ कंटाळीयौ	४०००)	१ सांडीयौ	४०००)
१ आवो	—	१ घणली	४०००)
२ वातो	३२००)		
१ वडो वास			
१ वरायौ			

१० रु० ४०२००)

३८ रु० १४०४००)

---

१. मुहाळीयो । २. आलावास । ३. षेनावास ४०००) ।

९३०००) ५२ दोम गांव

३४. २८ निपालस रैती गांव

१	मेळावास	२०००)	१	वाघावस	२०००)
१	सीसरवादो	१५००)	१	भागेसर	२०००)
१	झाड़ढंढ	२३००)	१	वीरावास	१५००)
१	दाधीयो	९००)	१	चोलमाळी	१५००)
१	धनेड़ी[1]	—	१	छतरीयो	२०००)
१	वींरनड़ी	१०००)	१	रावळवो[2] जैंतरो[3]	२०००)
१	रोसांणीयो	२५००)	१	चोपड़ो	२०००)
१	हूणगांव	८००)	१	पारड़ी	२०००)
१	करोळीयो	१५००)	१	हरसीया हेड़ा	१५००)
१	सीराड़रो[4]	२०००)	१	सोउपुरो	
१	नीवली उहड़ांरी	१५००)	१	गांघाणो	२०००)
१	भुंपेळाव	१५००)	१	राजलवो वडो चोपड़ो[5] (नीलकंठ)	२०००)
१	मंढलो वडो	२०००)	१	झीथड़ो	२०००)
१	भोरड़ी	२०००)			
१	चंवड़ीयाक	१५००)			
२८	रु०	४८२००)			

२५ वसीयां लाइक रयत घणी-सी कांई नहीं।

१	पीपळाउ[6]	१५००)	१	हरीयामाळी	३०००)
१	देवली हुलां री	१२००)	१	केलवाळ	१०००)
१	सिणलो	२५००)	१	सिरीयारी	२२००)

---

१. १२००)। २. राजलवो। ३. तेजारो। ४. सडारड़ो। ५.
६. पीपळाज।

१	रांमावासणी	३५००)	१	मुटाळीयो[1]	४०००)
१	षारीयो नीबा रौ	३०००)	१	दुधवड़	४०००)
१	धाकड़ो	३०००)	१	वीठोरौ बडौ	३२००)
१	गागुरड़ौ	३०००)	१	सुरायतौ	४५००)
१	सटवाज	३०००)	१	अलहवास[2]	३०००)
१	वापारी	३०००)	१	दुणलो	३०००)
१	देवळी आंबा री	३०००)	१	नीबली माढा	३०००)
१	सेषावास	३०००)	१	भेवली	२०००)
१	काराड़ी	३०००)	१	वाहड़सौ	३०००)
१	भेटनडा	३०००)	१	ईसाली	३०००)
१	वासणो	३०००)	१	बरणो	३०००)
१	वीलावास	५०००)	१	षेनावास[3]	

१० बडा पिण रईयत ईंयां गांवां घटै, सदा बडा ठाकुरां री बसी लायक गांव छै—

१	मांढौ	६०००)	१	बगड़ी	१००००)
१	षोषरो	४०००)	१	चंडावळ	५०००)
१	कंटाळीयौ	४०००)	१	सांडीयौ	४०००)
१	आवो	—	१	धणलौ	४०००)
२	वातो	३२००)			
	१ वडो वास				
	१ वरायौ				

१० रु० ४०२००)

३८ रु० १४०४००)

१. मुहाळीयो। २. आलावास। ३. घेनावास ४०००)।

१ वडी	१५००)	१ जांणीदो	१५००)
१ करमावस	१५००)	१ मलसा बावड़ी	१५००)
१ षोहड़ासौ	१५००)	१ हरढावस	२२००)
१ मुरड़ाहो	२०००)	१ भैंसेणी	३०००)
१ डोईनडी[1]	१५००)	१ षारीयो फदरा रौ	१०००)
१ महेव	—	१ ढुंढौ	११००)
१ षीभल[2]	१५००)	१ चेलावास	२७००)
१ भींवाळीयौ	१५००)	१ चिरपटीयौ	३२००)
१ मंढलौ	१२००)	१ धवळहरौ	२०००)
१ रांणवास	३०००)		

२५ रुपिया ४४८००)

५३ रुपिया ६३०००)

४०२००) ६१ छोटा इतरा गांव समै पारला छै।

३५. ३३ निषालस, इतरा—

१ पंचनडी दुनारौ[3]	७००)	१ चवांनडी[4]	१०००)
१ मोकला वासणी	६००)	१ मोहालीयौ	१०००)
१ सोधा वासणी	१०००)	१ रायसल[5] री वासणी	८००)
१ गोधेळाव	७००)	१ गोडागड़ी	१०००)
१ पोटलीयौ	५००)	१ हींगावास	७००)
१ हासलपुर बडौ	६००)	१ हूणगांव षुरद	६००)
१ चांदा वासणी	४००)	१ थारा बासणी	८००)
१ चुल्हळाई	६००)	१ रुदीयौ	७००)
१ पांचवो	४००)	१ गुजरावास	५००)

१. डोयनडी। २. पंभल। ३. हुलां रो। ४. चवावड़ी। ५. रायमल।

	‍‍रची	६००)
	जावास	५००)
	कुरवास	१०००)
	गडपुर	२००)
	सींचणो	६००)
	षारीयों सीढां रो	१०००)
	भरहावास	५००)
	रीधड़ी	६००)
१	राजगीयावास	६००)
१	धंगड़वास	८००)
१	हायत	१०००)
१	रायरो बडो	१०००)[1]
१	बणीयांवास	५००)
१	सारंगवास	६००)
१	कारू[2]	१०००)
१	जेठा रो वास	१०००)
१	हेमलीयावास षुरद	५००)
१	अषावास रूधौर रो	२००)
१	— —	—
२८	रुपिया	१८४००)
६१	रुपिया	४०२००)

१५२

६२००) २७ इतरा गांव रा—

१	षारची	६००)
१	भोजावास	५००)
१	ठाकुरवास	१०००)
१	लाडपुर	२००)
१	सींचणौ	६००)
१	षारीयौ सीढां रौ	१०००)
१	भरह्यवास	५००)
१	रीधड़ी	६००)
१	राजगीयावास	६००)
१	धंगड़वास	८००)
१	हायत	१०००)
१	रायरौ बडौ	१०००)[1]
१	बणीयांवास	५००)
१	सारंगवास	६००)
१	कारू[2]	१०००)
१	जेठा री वास	१०००)
१	हेमलीयावास षुरद	५००)
१	अषावास रूधौर री	२००)
१	— —	—
२८	रुपिया	१८४००)
		२००)

१६ वसता—

१	सारण	२०००)
१	थळ	२००)
१	सिरीयारी महीली	२००)
१	झींझारड़ो[1]	१००)
१	राघोड़ो	२००)
१	नींबड़ी	२००)
१	कुलाज	२००)
१	नांबरौ	१००)
१	गजणाई वडी	३००)
१	रायरौ	१००)
१	रसाड़	१००)
१	षोड़ीयौ	१००)
१	सचीयाय	५००)
१	गजणाई दाधी	१००)
१	केरौ री षेड़ी[2]	२००)
१	लाबड़ो[3]	१००)
१	वणीयामाळ	१००)
१	बोरीमादौ[4]	२००)
१	कालब	१००)
१	—	—
१६		५४००)

३७. ८ सूना—

१: झीझरड़ो। २. केरा रो पेड़ो। ३. लबोढ़ी। ४: वोरीडादो।

१ बीलणवास—सारण था उगोण नुं[1], तठै कुवौ १, तळाई २ छै।

१ मसजरौ[1] भाषर रौ, नवौ षेड़ौ को नहीं।

१ पालड़ी रौ षेड़ौ—देवो रामणरा बसै। बावड़ी १ तठै छै।

१ कालोकोट—बावड़ीयां रा बीच री चोता मेर बसाई, मेवड़ीया म्हां।

१ षीरणी षेड़ी[2]—नवौ बसीयौ थौ।

१ नाहटौ

१ राणावास रौ षेड़ौ—बोरीमादा था कोस ॥ छै। ढूंढा छै।

१ गजणांई सारंग षाती वाळो दाधी भेळी, षेड़ौ बड़ी गजणाई परै कोस ॥।

८	६२००)
२७	
१७६	

२२३००) ३३ सांसण रा गांव—

३८. १५ बांभणां नुं—

१ तालकीयौ	५००)
१ लुढावास	८००)
१ अनतवासणी	५००)
१ चाहड़वास	८००)
१ पळासलो बासा रौ	५००)
१ पांचवौ बडौ	५००)
१ धुहड़ीया वासणी	५००)

१. मसजर। २. षीरणा षेड़ा।

1. पूर्व दिशा में।

१	मालपुरी प्रोहतां री	४००)
१	कानावास	५००)
१	नाथलकुड़ी	७००)
१	मांणपुरौ देरासरीयां री	४००)
१	बडीयाली[1]	६००)
१	नरसंघ बासणी	७००)
१	रूपावास	१५००)
१	राधा री बासणी	७००)

१५ रु० ६५००) मांजरे, रेष आगे नहीं लिषी थी। पछै पत्र देष लोषी छै।

३६. १७ चारणां रा–

१३ गांव बसता,

१	पंचेटीयौ	२५००)
१	रांमा बासणी	५००)
१	नापावास	३००)
१	लहरीहणहेड़ौ[2]	५००)
१	गोधावास	५००)
१	रहैनडी	१५००)
१	राजगीयावास	७०)
१	वीजळीयावास	७००)
१	रेपड़ावास बडै राव[3] जोधा रौ दत्त बारेट पांचाहेड़ोत नुं –	
१	मोरटूको[4]	६००)

१. वड़ियालो। २. लीहणड़ो। ३. वड़ोवास। ४. नवो दियो (अधिक)।

१ सोभड़ावास ५००)

१ पळासलो, रांमा रौ, नवौ दीयौ १०००)

१ अंगदवास ४००)

[1][४ सूना सांसण मांहे—

२ रैपड़ावास

अै षेड़ा २ रा षेत पीजै छै।

१ गांव—

राव गांगा रौ दत्त ब्रा० भैरव नींबावत, बड़ावास थी कोस ०। ऊगवण में षेड़ौ। ऊंचा दड़ा[1] माथै बसतौ, ढूंढा[2] केर १ मोटौ छै। भैरवनडी तळाई।

१ रा० प्रीथीराज कूंपावत बा० देवीदास भैरवोत नुं, हळवा १० थाहरवासणी रै १ धरती।

१ मुळीयावास सूनौ

लाहीणहेड़ा था कोस ०।। ऊगवण मांहे। षेड़ा री ठौड़ नींब ३ छै। तद राव गांगा रौ बारट तेजसी वीरसलोत नुं। पछै संमत १६६४ रा करमसेन नुं सोझत हुई तद रा० राजसी अषावत नुं दीयौ। पछै तुरत सोझत राजा सुरजसिंघ नुं हुई तरै पाछौ बारठ सांकर नुं दीयौ। लाहीणहेड़ा री सींव नै इण री भेळी हीज छै[3] सु हिमें लाहीणहेड़ा मांहे षेत हळवा २० छै सु षड़ीजै छै। अरट २ षारचीया छै। संमत १६८४ सूनौ हुवौ।

१ बूटेळाव

१. 'ख' प्रत का अंश।

1. बालू का टीला। 2. खंडहर। 3. शामिल ही है।

बडा बूटेळाव मांहे पेड़ौ मांडै छै सु तौ कचोळीया नाडा कनै छै। सांसण थौ, सु मोटै राजा लोपीयौ[1] नै धरती हळबा ३ रूपावस दीयौ छै। तिण वासतै पेड़ौ मांडीयौ छै, चारण कनीया नुं।

४

१ जोगीयां नुं हीरावस

४०. मांजरा इतरा गांव मांहे छै—

१ रैबारीयां री बासणी

कसबै मांहे रनीयाकुवा तीरे सोझत था कोस २ कोहर सागर छै। माळी कलाळ पेत षड़ै।

१ रुलीयौ

मांढा मांहे वास १ मंडै छै, मांढा था कोस ०॥ आथूण सूं जीमणे, तठै बावड़ी १ छै। पींपळ १ छै।

१ गोयंदपुरौ

बडेरा मांहे रा० गोयंद ऊदैसिघोत उठै वसीया था। पेड़ा री ठौड़ सीवा २ भाटा रा, सीवा नदी नजीक।

१ घटीयाळी सुरांइता मांहे

सुराईतां था कड़ी बीच पेड़ौ, तठै कोहर १ छै। नदी सोझत वाळी पेड़ा नजीक।

१ नीबीयाहेड़ो

पळासला मांहे पेड़ौ लांबीयां रावळवस विचै, तठै तळाई २ छै।

१ सूरीया वासणी

अटवड़ा मांहे, गांव था कोस १ कुंभाळाव तळाव कनै पेड़ौ छै। नाडी केरली ऊपर पींपळ ४ छै।

---

1. जब्त कर लिया।

३ दूधवड़ मांहे मांडै छै सु दुधवड़ मांहे षड़ीजै छै।

१ जोधड़ावास

दुधवड़ था दिषण नुं षोडीयाळी रै थान परै षेड़ा री ठौड़ नींब २ अर बड़ १ छै। तळाई जोधस।

१ पातुवस जौंड मैं

पिछम नुं दुधवड़ अषावास बीच, षेड़ा री ठौड़ पींपळ २ ऊकरड़ो[1] छै। अरट १ पताळीयौ नाडी ऊपर।

१ रांमपुरौ

दुधवड़ थी तीरवा २, वीठारा रै मारग षेड़ो छै। दिषण नुं नाडी षेजड़नडी, षेत पातळा[2]।

१ हरसीहायड़ो षुरद

चोपड़ा मांहे आगे ढंढणीयौ कहीजतौ। षैड़ौ चोपड़ा रा जोड मांहे छै। संमत १६६७ भा० वेणोदास चोपड़ा भेळौ कीयौ।

१ देवलीयावस

षबर नहीं, देवलो अरट छै।

१ षोषरौ

मांहे मांजरा बांणीया बसै। षोरल रौ मोड री नाडी था तीरवा २ नाथलकुड़ो। षोषरा बिचै आगर ५ लूंण रा हुवै छै। अरट हळे १२ षोषर मठला रा करै।

१ मांडलावस

षबर नहीं। मोडे री नाडी मांजरा रौ अहजन।

१ हींगोला री बासणी

षोषरा मैं षड़ीजै। षोषरा था कोस ०॥, षोषरा पंचनडा बीच

1. मलबे का ढेर। 2. कम उपजाऊ।

नदी षेड़ा तीरे वगड़ी वाळी । अरट १ षेड़ा तीरे छै । रा० जगनाथ वाघोत अठै बसीयौ ।]

१ मालको

चिरपटीया में रांणावास बीच षेड़ी छै । तठै पींपळ २ छै, नै तळाव १ छै ।

१ जेसावास

भागेसर में षेड़ी । गांव था पांवडा २०० तळाव गोपेळाव नजीक पाधर में छै ।

२ बूटैळाव

नै चोषावास मोटै राजा उरी लीयौ, हळवा ३ धरती दीवो कांना षाहाषी[1] नुं ।

१ षुरद बूटैळाव

षेड़ी कचोळीया नडी नजीक ।

१ तीजो बास

भा० गोपाळदास नुं थौ, सु संमत १६६९ नुं दो पटै हुवौ बरसला जी नै ।

२

४१. ३ कंटाळीया रा मांजरा—

१ महैवड़ी

मगरा री जड़ विणजारी घाटी तळै ढूंढा छै । वावड़ी एक छै, मनु' तळाव छै, पड़ीहार वाळौ ।

१. पिछम ।

1. खोज पहिचानने वाला ।

१ कोटड़ौ षेड़ौ

भाषर में मात्रदेवी कनै बावड़ी १ कंटाळीया वधवी था कोस १ ऊगण नुं। आषळी बडी षेड़ा री ठौड़ छै। सुरावास ओहीज।

१ त्रीसमारीयौ

षेड़ौ ऊंचौ थळ माथै। तठै बड़ छै, पांणी नहीं, थळ पीवता।

३

१ कसबौ जेठ

उगरै सांवळदासोत गुढौ बसायौ थौ। हमें सूनौ छै। तळाव १, कुवौ बुराणीयौ[1]।

१ रायमल रो बासणो

केईक सहैबाज पिण कहै छै। बात में मांजरौ कोस ०॥ पछम नुं, भाषर री षंभ तळाव १ सहेजळाव उगण नुं[2]। भाषरो ऊपर माता रौ थांन।

१ — —

---

१ गोपावासणी[3]

सांडोया मांहे षेड़ा री ठौड़ बसीया। चिड़ीयाबास छांड नै बसीया। तळाव १ छै। पांणी मास १० हुवै।

४२. ४ बगड़ी मैं मांजरै छै—

१ धनाज

वगड़ी में नाडी अषरणी तीरे षेड़ौ, पींपळ मोटा छै। गडी री सींव री मुदौ धनाज ऊपर छै।

---

१. गोढ़वाड़ श्रो खेड़ो कांकड़। २. पांणी मास ८ रहे, अरट १ वूरीयो पड़ियो। ३. गोपावास।

१ पीथलपुरी

कोस ११, रा० प्रथीराज देवलीया था आयौ तद अठै गाडा छोडीया। पछै हींगोला पींपाड़ा नुं पटै हुवौ। पींपळ देवली मुहरड़ा बीच छै षरड़ रौ।

१ हासावस

देवलो री सींव में षेड़ौ नदी कनै पांवडा १०० देवीजी था। सींधल हासौ अठै बसतौ। चौतरौ छै हासै रौ।

१ दुरगाबास

देवली रा[1] तळाव सीबाटलो १ छै। तीं पर षेड़ौ छै कोस ०।०

४

२ भेटनडी

१ जैतसी री बासणी

भेटनडा था कोस १ पछम नुं पाधर में। पांणी थोड़ौ मांडा री नाडी पीवै। संमत १७०५ सूनौ हुवौ। रा० कांनौ सादुळ इण षेड़ै वसीयौ।

१ रा० जसौ कलावत

रा० जैतसिंघ रौ चाकर, भाटनडा थी कोस १ षेड़ौ पाधर छै। — — —।

२

१ पाटमोगढ

सोभत था कोस ८ मगरै लगतै भाषरा था कोस ५ आगै हुलीजण

---

१. देवलो हुलांरी रा।

बरसाळी कंवला पेत, बाजरी अण हुवे । ऊनाळी पीवल सेंवज घणी, गांव री फळसी[1] । दिषण नुं वडो तळाव पांणी बरसोदीयो हुवे, सीवराड़ कनै ।

संवत	१५७१	१६	१७	१८	१९
	१३४८)	१५०५)	२६६८)[1]	१७७६)	१३६४)

१ अटवड़ी

सोभत था कोस ५ ऊतर नुं । सीरवी वांणीया वसै । बरसाळी वडा षेत ऊनाळी रेल मगरा री पांणी आवै । वीघा २००० रेलीजै, काठा गेहूं हुवै । पील घणी कोन्हो । वीलाड़ था कोस २ तळाव १ कुवो भेळाव[2] नाडो १, मास ४ पांणी हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५२८)	६१७१)	५११)	६१६८)	२०३१)

१ रांमावासणी

सोभत था कोस १ ऊतर नुं नदी रै पैले कांनी । सीरवी जाट बांणीया बसै । बरसाळी षेत कंवळा ऊनाळी अरट १५ तथा २०, पांणी भळभळो, वण नहीं । तळाव १ गांव आगै । पांणी मास १० रहै । सोभत री सींव में गांव बसीयौ । संमत १६४४ रै टांणै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५२१)	६११)	१६६६)	५५७)	७२३)

१ दुधवड़

सोभत था कोस ४ दिषण नुं जीमणै । जाट सीरवी बांणीया[3] बसै । रांमदास वैरावत वडो दातार अठै हुवै । बरसाळी काठा षेत

१. २५६८) । २. कुंभेळाव । ३. नंदवांण (अधिक) ।

1. अनेक गांवों का निकास उस ओर से है ।

४४. परगने सोझत री हकीकत गांवां री मेल

१ कसबौ सोझत

जोधपुर था कोस २२ रूपारास सुं कहण मांहे वसती घर २२५०। बरसाळी धरती हळवा करै तितरा नै ४०० ऊनाळी। अरट हुवै गांव आगे पछम रै फळसै नदी। महाजन सीरवी घांची माळी छत्तीस पवन बसै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६१३)	५००३)	५९२७)	४६६२)	४२८०)

१ सीहाट

सोझत था कोस ४ ऊगवण नुं जीवणी। सीरवी जाट वांणीया बसै। बरसाळी षेत कंवळा, ऊनाळी अरट ५० तथा ६० मीठा वण छोतरा आली-नीली घणा तळावे हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०३१)	३९३६)	३०४५)	३५११)	३०४२)

१ सीवराड़[1]

सोझत था कोस ४ दिषण दीसी वास २ एक जाट सीरवी वांणीयां दूजै वास बोहरा नंदवाणा। बरसाळी बडा षेत जुवार बाजरी चिणा गेहूं घणा हुवै। अरट ३० तथा ४० मीठा षारा। गांव आगे नदी दोनां बासां बीच बहै छै। तळाव दो घड़ो मोडरी। वीघा १०० जोड़।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३९९)[2]	३९५०)	२२९५)	२२०१)	२०४८)

१ मुहाळीयो

सोझत था कोस ४ रूपारास मांहे। सीरवी जाट वांणीया बसै।

---

१. सवराड़। २. ३३८९)।

री बडी ठुकराई हुई, बडी ठौड़, सेहर सूनौ दुकानां छै। गोरी पातसा रा कराया महोल छै[1]।

१ षारेची

प्रो० नु सांसण थौ। सु सोझत कोस ७ षरक बास, तोरबा १ षेड़ौ षारची था ऊगण तणा नु[2] संमत १६४३ प्रोहत लोपीयौ। हमें बडा षारची में षड़ीजै छै।

४३. ३०२५००) रेष री ठीक मांजरै षेड़ा तिण री रेष बिना ठीक गांव २४४, विगत हासलीक गांव १५२.

१५२ हासलीक गांव			२७ मेरां रा गांव
	३८ बडा गांव		१९ सांसण
	२९ निषालस, वसी	९	८ मांजरै
			२७

५३	दोय	२८	२५
६१	दोय	३२	१९
१५२			

	३३ सांसण
३२ मांजरै सूना	१५ चारणां नै
२४४	१० जोगियां नै
	३३ सु तामें ४

२४४

---

१. पाटमोगढ—सोझत था कोस ८ मगरे लागतो, नाबरा घा कोस १ आगै हुल जिण री वडी ठुकराई हुई। आगै वडो सेहर वसतो, सहर सूना, रासा रा आरख छता छै। मांहे वावड़ी कुआ द्रह पांणी रा छै। गोरी पातसाह रा कराया के महल पिण छ। षेत तो इण

४४. परगने सोझत री हकीकत गांवां रौ मेल

१ कसबौ सोझत

जोधपुर था कोस २२ रूपारास सुं कहण मांहे वसती घर २२५०। बरसाळी धरती हळवा करै तितरा नै ४०० ऊनाळी। अरट हुवै गांव आगे पछम रै फळसै नदी। महाजन सीरवी घांची माळी छत्तीस पवन बसै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६१३)	५००३)	५९२७)	४६६२)	४२८०)

१ सीहाट

सोझत था कोस ४ ऊगवण नुं जीवणी। सीरवी जाट बांणीया बसै। बरसाळी षेत कंवळा, ऊनाळी अरट ५० तथा ६० मीठा वण छोतरा आलौ-नीलौ घणा तळावे हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०३१)	३९३६)	३०४५)	३५११)	३०४२)

१ सीवराड़[1]

सोझत था कोस ४ दिषण दीसी वास २ एक जाट सीरवी बांणीयां दूजै बास बोहरा नंदवाणा। बरसाळी बडा षेत जुवार बाजरी चिणा गेहूं घणा हुवै। अरट ३० तथा ४० मीठा षारा। गांव आगे नदी दोनां बासां बीच बहै छै। तळाव दो घड़ो मोडरी। वीघा १०० जोड़।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३९९)[2]	३९५०)	२२९५)	२२०१)	२०४८)

१ मुहाळीयौ

सोझत था कोस ४ रूपारास मांहे। सीरवी जाट बांणीया बसै।

---

१. सवराड़। २. ३३८९)।

वरसाळी कंवला षेत, बाजरी वण हुवै । ऊनाळी पीवल सेंवज घणौ, गांव रौ फळसौ[1] । दिषण नुं बडौ तळाव पांणी बरसोदीयो हुवै, सीवराड़ कनै ।

संवत	१५७१	१६	१७	१८	१९
	१३४८)	१५०५)	२६६८)[1]	१७७६)	१३६४)

१ अटबड़ौ

सोभत था कोस ५ ऊतर नुं । सीरवी बांणीया बसै । बरसाळी बडा षेत ऊनाळी रेल मगरा रौ पांणी आवै । बीघा २००० रेलीजै, काठा गेहूं हुवै । पीथल घणौ कोन्हो । बीलाड़ था कोस २ तळाव १ कुवौ भेळाव[2] नाडो १, मास ४ पांणी हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२५२८)	६१७१)	५११)	६१६८)	२०३१)

१ रांमावासणी

सोभत था कोस १ ऊतर नुं नदी रै पैले कांनी । सीरवी जाट बांणीया बसै । बरसाळी षेत कंवळा ऊनाळी अरट १५ तथा २०, पांणी भळभळौ, वण नहीं । तळाव १ गांव आगै । पांणी मास १० रहै । सोभत री सींव में गांव बसीयो । संमत १६४४ रै टांणै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५२१)	६११)	१६६६)	५५७)	७२३)

१ दुधवड़

सोभत था कोस ४ दिषण नुं जीमणै । जाट सीरवी बांणीया[3] वसै । रांमदास वेरावत वडौ दातार अठै हुवै । वरसाळी काठा षेत

१. २५६८) । २. कुंभेळाव । ३. नंदवांण (अधिक) ।

हळवा ५०० ऊनाळी। षारा-सा बड़ा अरट ३० हुवै। सेंवज हुवै षेड़ा ३ गांव में मांजरै गांव आगे। तळाव रांमेळाव मास १० पांणी रहै। बड़ी जोड़ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०५३)	२३६९)[1]	२९५०)	२५५३)	१६९९)

१ षारीयौ नीबा रौ

सोभत था कोस ३ रीतहड़ में। जाट सीरवी बांणीया रजपूत बसै। षेत कंवळा, बाजरो मौठ मूंग बण हुवै। ऊनाळी ढीबड़ा १० तथा १२ हुवै, मीठा। सींव षणी हळवा २००, नीब रा भाषर रा बाहळा घणा सींव में आवै। रा० सांगा सूजावत री उतन छै। डोहळी गांव में घणी छै। जोड़ बीघा २००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७०१)	१३३६)	१६४७)	१४२३)	१०४५)

१ वीठोरौ बडौ

सोभत था कोस ८ दिषण नुं आऊवा था नजीक। जाट सीरवी बांणीया बसै। बरसाळी बडा षेत काठा कंवळा, ऊनाळी अरट ढीबड़ा ३० तथा ४०। पांणी भळभळौ। तोड़ १ चेलावास दीसी नै, तळाव १ काळौ ढंढ। मास ६ पांणी षड़ोइ मास ८, हळवा २०० षरती मांजरौ १ गोईंदपुरौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५८४)	१२३६)	१६८३)	२०१२)	१३४७)

१ वासणो

सोभत था कोस ३ भेरहर में, जाट सीरवी वांणीया बसै। पहली नंदवाण वसै। संमत १६७५ छांड नै देवळी बसीया। षेत बरसाळी नै

1. २३६९)।

वरसाळी कंवला षेत, बाजरी बण हुवै। ऊनाळी पीवल सेंवज घणी, गांव रौ फळसौ[1]। दिषण नुं बडौ तळाव पांणी बरसोदीयो हुवै, सीवराड़ कनै।

संवत १५७१ १६ १७ १८ १९
१३४८) १५०५) २६६८)[१] १७७६) १३६४)

१ अटबड़ौ

सोझत था कोस ५ ऊतर नुं। सीरवी बांणीया बसै। बरसाळी बडा षेत ऊनाळी रेल मगरा रौ पांणी आवै। बीघा २००० रेलीजै, काठा गेहूं हुवै। पील घणौ कोन्ही। बीलाड़ था कोस २ तळाव १ कुवौ भेळाव[२] लाडो १, मास ४ पांणी हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५२८) ६१७१) ५११) ६१६८) २०३१)

१ रांमावासणी

सोझत था कोस १ ऊतर नुं नदी रै पैलै कांनी। सीरवी जाट बांणीया बसै। बरसाळी षेत कंवळा ऊनाळी अरट १५ तथा २०, पांणी भळभळौ, वण नहीं। तळाव १ गांव आगै। पांणी मास १० रहै। सोझत रो सींव में गांव बसीयौ। संमत १६४४ रै टांणै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५२१) ९११) १६९६) ५५७) ७२३)

१ दुधवड़

सोझत था कोस ४ दिषण नुं जीमणै। जाट सीरवी बांणीया[३] वसै। रांमदास वैरावत वडौ दातार अठै हुवै। बरसाळी काठा षेत

१. २५६८)। २. कुंभेळाव। ३. नंदवांणा (अधिक)।

1. अनेक गावों का निकास इस ओर से है।

हळवा ५०० ऊनाळी। षारा-सा वड़ा अरट ३० हुवै। सेंवज हुवै पेड़ा ३ गांव में मांजरै गांव आगे। तळाव रांमेळाव मास १० पांणी रहै। वड़ी जोड़ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०५३)	२३६९)[1]	२९५०)	२५५३)	१६९९)

१ षारीयौ नीबा री

सोभत था कोस ३ रीतहड़ में। जाट सीरवी वांणीया रजपूत वसै। षेत कंवळा, बाजरी मौठ मूंग वण हुवै। ऊनाळी ढीवड़ा १० तथा १२ हुवै, मीठा। सींव घणी हळवा २००, नीव रा भाषर रा वाहळा घणा सींव में आवै। रा० सांगा सूजावत री उतन छै। डोहळी गांव में घणी छै। जोड़ वीघा २००।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७०१)	१३३६)	१६४७)	१४२३)	१०४५)

१ वीठोरी बडी

सोभत था कोस ८ दिषण नुं आऊवा था नजीक। जाट सीरवी बांणीया बसै। वरसाळी बडा षेत काठा कंवळा, ऊनाळी अरट ढीबड़ा ३० तथा ४०। पांणी भळभळौ। तोड़ १ चेलावास दीसी नै, तळाव १ काळौ ढंढ। मास ६ पांणी घड़ोइ मास ८, हळवा २०० घरती मांजरौ १ गोईंदपुरौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५८४)	१२३६)	१६८३)	२०१२)	१३४७)

१ वासणो

सोभत था कोस ३ भेरहर में, जाट सीरवी वांणीया बसै। पहली नंदवाण वसै। संमत १६७५ छांड नै देवळी बसीया। षेत बरसाळी नै

१. २३६६)।

ऊनाळी अरट मीठा-षारा २० तथा २५ सींव में नदी षोषरी दिसी। तळाव १ राघेळाव १ गांव रै फळसै आथूंण नुं, बरसोंदीयौ पांणी रहै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८९६)	१०६६)	२४५०)	१४९२)	१५०४)

१ धेनावास

कोस २ षरक कूंण मांहे। सीरवी बांणीया जाट बसै। नदी सेतरी बरसाळी, बडा षेत ऊनाळी अरट ४०। गेहूं चिणा छोतरा हुवै। मीठा षारचीया छै। तळाव १ बाघेळाव सुडा[1] बाघा री करायौ हळवा १४०।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२६५)	२७९४)[2]	२५८४)	३६९४)	२३०५)

१ सुरायतौ

सोभत था कोस ४ मुळ षरक मांहे। बास २, वास १ लोक बसै। वास १ बोहीरा बसै। सींव घणी, नदी मांहे बड़ा द्रह। अरट २५ तथा ३० गेहूं चिणा अरट पीपळीयो पांणो हट छै। तळाव १ चीहणणी छै। तिण ऊपरां रा० करण री छतरी छै। नाडो १ कचोलड़ी पांणी मास ४ रहै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९४१)	१७३२)	३१०९)	२६१५)	१७३३)

१ आलाहवस

कोस २ रुपरास, बास २ सीधे जाट बांणीया बसै। बरसाळो हळ ७० बाजरी मोठ मूंग ऊनाली अरट ८ तथा १०। ऊंडो पांणी भळभळो, तळाव १। पछै पांणी अरट पीवै[1]।

१. रुडा। २. २७६५)।

1. तालाब का पानी समाप्त होने पर अरट से पीते हैं।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९५१)	१८३६)	११२६)	१४३६)	९७३)

१ नीबलो मंढां री

कोस ७ दिषण नुं, सीरवी जाट वांणीया रजपूत वसै। वरसाळी षेत सषरा, ऊनाळी फेर सु हुवै[1]। अरट पारचीया मीठा। नदी षेत रेलै छै। आधा एक चणा सेंवज हुवै। नाडी[2] १ मास ८ पांणी दिषण री सींव गांव लायक छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५६३)	१६८५)	२७८०)	२१९४)	१७०२)

१ सांडीयौ

सोझत था कोस ४ ईसांन कूण मांहे। सीरवी जाट रजपूत वांभण वसै। वरसाळी षेत भला। जुवार मूंग चिणा हुवै। ऊनाळी अरट ४० चांच ५० सेंवज चिणा बीघा ४००, तळाव १ वरसोंदीयौ पांणी। गोपावास रौ षेड़ौ मांजरै छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७५७)	११९७)	१७३४)	१८०७)	१३५२)

१ ईसाळी

सोझत था कोस ११ रूपारास नीवास रै सांधै। सीरवी वांणीया कुंभार वसै। बसी रौ गांव, कांठा रौ गांव गोढवाड़ रै कांकड़[1]। ऊनाळी अरट १५ चांच हुवै। चिणा हळवा १००, भाषरी लगते गांव तळाव १ पांणी मास ६।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६४०)	१७९०)	२६०५)	१४२७)	११३४)

१. करो तितरी सींव हुवै। २. घड़ोई नाडी।

1. सीमा।

१ माढो

सोझत था कोस ५ दिषण नुं। बांभण लुहार फुटकर कूंपावतां रौ उतन। षेत कंवळा। बाजरी मोठ मूंग वण घणी। ऊनाळी अरट ५ तथा ७ षारा। मुदै सेंवज चिा घणा। तळाव २ पांणी बरसौदीयौ[1], जोड़ बीघा २००।

संवत				
१७१५	१६	१७	१८	१६
१५६६)	२३४८)	१०५४)	३७११)	२२८०)

१ बगड़ी

सोझत था — ऊगवण नुं जाट बाणीयां सीरवी छत्तीस पवन बसै। सोझत सरीषौ कसबौ रा० जैतावता रौ उतन। बरसाळी बडा षेत। ऊनाळी अरठ ३०० हुवै वास १ नंदवाण। गांव आगै नदी बहै। रु० १०००) तळाव बंट रा ऊपजै, तळाव ४ छै।

संवत				
१७१५	१६	१७	१८	१६
७३११)	६३२८)	१२३१४)	६८३५)	६५१३)

१ काढळीयौ

कोस ५ परवाण मांहे, घणी रैत को नहीं। कदीम मेरां रौ गांव। हमें वांणीया जाट बसै। कूंपावतां रौ गांव। षेत कंवळा बाजरी मोठ मूंग वण हुवै। ऊनाळी पील हुवै, ढीबड़ा १० तथा २० पगै काचा। सेंवज चिणा घणा हळवा २००, गांव आगै तळाव बडौ[1]। मांजरा ३।

संवत				
१७१५	१६	१७	१८	१६
२०७१)	१६३८)	२३४४)	१८७०)	२१७४)

१ वील्हावास

कोस २ परक में सोझत था। वांणीयां जाट वसै। सोझत री सींव

१. दिषण दिस नुं हल करमा रो करायो।

1. वर्ष भर चलने लायक।

में बसै। संमत १६०० सोरवी नवा बसोया। बरसाळो वडा षेत, ऊनाळी अरट ४० तथा ५० मीठा-षारा, तळाव १ लालौळाई पांणी मास ८, जोड़ सु अड़तो सोझत था।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२९८२) १६०८) ४११०) २४६८) ३३२९)

१ धाकड़ी

सोझत या कोस ३ षरक कूण मांहे। सीरवी बांभण बांणीया रजपूत बसै। बावड़ी १ बी० वोदा री कराई छै। ऊनाळी अरट ४५ तथा ५० गेहूं बण केढोतरा हुवै, बरसाळी षेत सषरा षेत ५ तथा १० चिणां रा। तळाव १ चेहनडी गांव नजीक छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६३९) २०२१) २२९२) १८७२) १३९८)

१ गागुरड़ो

कोस ४ मूळ मांहे। सीरवी बांणीया बसै। नदी तीरवा २। रेल सेंवज गेहूं चिणा हुवै। अरट २२ नवां हुवा छै। कोहर १ गांव आगै ती० ४ पणहट छै। षेत आधा एक ढीबड़ौ आधा रेलै। जुवार कपास सषरा हळवा १५, तळाई २ छै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१३६४) २१४६) १६७६) ९३५) ८९४)

१ सेहवाज

कोस ३ पूरब मांहे। बगड़ी था कोस ०॥, सदा बगड़ी री पटा री गांव छै। बगड़ी री सींव में माळी जाट बांणीया बसै। षेड़ौ तुरक सहैवाजषांन रौ वसायौ। बरसाळी षेत सषरा। अरट २ ढीमड़ा २१ कोसेटा १० छोतरा मोठ बण तरकारी घणा। वाग १ कोस १ छै। मांह आंव नै बीजा झाड़ छै हळाव १००। तळाव १ में महीना ६ रौ पांणी रहै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१३९२) १७५९) ३१५२) २५५) २३०६)

१ दुणलो

कोस ३ परवाण कूंण मैं। जाट सीरवी बांणीया बसै। ६० जुपै, ऊनाळी अरट १५ तथा २० मीठा। बणीयावण छोतरा चिणा गेहूं हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६६८)	१४७५)	१२२४)	१६४२)	७५९)

१ षोषरो

कोस २॥ ईसांन कूण मांहे। कदीम सीधलां री गांव। सीरवी बांणीया रजपूत षारौल बसै। सींव घणी। जवार मूंग रा षेत हुवै। अरट ढोबड़ा ४०, चांच २०, तळाव १ बरसोंदीयौ पांणी। जोड सषरौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५११)	१२०७)	२९८२)	२११३)	१४१३)

१ वापरी

कोस ९[1] परवाण कूंण मांहे। मगरा वाळा था कोस ०॥ छै। माळीगर बांणीया बसै। सीरवी मेर बसै छै। घणी अरट २२ मीठी वणीयां। मगरा रै पांणी घणी सींव रेलीजै, बणवाडी[2] छै। तळाव १, मास ८ पांणी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४९६)	१५३०)	२२१५)	१४८९)	१२०५)

१ देवली आंवा री

कोस १२ दिपण मांहे। सीरवी जाट वांणीया वांभण रजपूत वसै। हळ १०० ऊनाळी, अरट २५ तथा ३० गेहूं छोतरा कपास घणी। मेवाड़ रै कांकड़ छै। तळाव १ आवादेसी पांणी मास ६ हुवै छै। बडौ गांव।

१. ८। २. बागवाड़ी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३५३)	१६८०)	१८१०)	१९५२)	१५५४)

१ धणली

कोस १२, नीवास कूण मांहे। वांणीया वांभण वसै। वसी री गांव राव रिड़मल नै दीवांण[1] वसी नुं दीयौ थौ। सींव हळवा ५०१, धांन सोह हुवै। पेत सषरा, ऊनाळो अरट ढीवड़ा ६० तथा ८०, पांणी मीठौ। तळाव में वरसोंदीयौ पांणी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६०१)	३०२३)	५८८८)	२९८८)	३८८५)

१ कीराड़ी[1]

सोझत था कोस ११ दिषण दिसी। आंवां[2] था कोस १। सीरवी रजपूत वांणीया वांभण वसै। वसी री गांव हळवा १५०। कपास निपट सषरी, ऊनाळी अरट १५ तथा २० करै तितरा हुवै। डोहळी[2] घणी छै। तळाव १ चूंडासर चरडावतां[3] री, मास ७ पांणी हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६३७)	१०५०)	११४६)	७४५)	८९७)

१ वरणो वास २

सोझत था कोस ६ उतारध नुं, जाट वांणीया वांभण वसै। हळवा १५० पेत सषरा, जुवार बाजरी कपास हुवै। ऊनाळी अरट १५ तथा २० छै। निपट काचा छै। अरट ३ छै। रेल अठवड़ा री आवै तरै गेहूं चिणा सेंवज हुवै। तळाव १ तोबरकया राठौड़ां री, पांणी मास १० हुवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९२२)	१४४४)	९३०)	२०२२)	०)

१. कराड़ी। २. आवा। ३. चूंडावतां।

1. उदयपुर के महाराणा। 2. दान में दी हुई भूमि।

१ भेवली

कोस ५ परवाण कूण मांहे । सीरवी बांणीया जाट बसै । पहली प्रोहतां नुं सांसण थी सु मोटे राजा उरो लीयौ । गांव निषालस, ६० षेत सषरा, कपास घणौ, चिणा हुवै । अरट ५ तथा ७ हुवै । कुवौ १ तळाव १ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९३५)	१०३८)	१२९४)	७५८)	७३९)

१ सेषाबास

सोझत था कोस ७ परवांण । रूपारास रै सीधे सारण नजीक । सीरवो बांणीया बसै । सींव थोड़ी, षेत निपट अवल[1] । बाजरी मूंग कपास घणो, अरट १२ तथा १५ मीठवाणीया, रेल आवै । सेंवज चिणा घणा हुवै । बाग १ गांव रै फळसे, आंबा गुलाब हुवै । निषालस गांव छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८०१)	९६८)	१७६२)	१२५८)	११६७)

१ आंबो

सोझत था कोस १० नेवास कूण में । चांपावतां रो बैसणौ छै । वांणीया वांभण रजपूत सीरवी, वसी रा सीरवी वांणीया जाट रजपूत वसै । हळ २०० तथा २५० षेत सषरा । जवार बाजरी कपास नीपजै । अरट ३० चांच ५० पांणी पारो भळभळो छै । बीठोरा दिसी चिणा हुवै । रा० महेसदास सुरजमलोत कोट करायो छै । तळाव १ वरसोंदो कुंडळ कहीजै छै । जोड वीघा ४०० छै । कदीम सींधलां रो वास छै[2] । मेरां री कांठो छै । वड़ी वसीयां लायक, रिणमल रा गुढा रा चोर घणा लागै छै ।

---

1. बहुत अच्छे । 2. प्रारम्भ में यह सींधलों का निवास स्थान था ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६४३)	२२१०)	१४७१)	५७०२)[1]	१३९१)

१ साडारड़ो

सोझत था कोस ३।। षरक मूल कूण में। सीरवी जाट बसै। गांगा साझा[2] री बसायौ। सोझत री नदी रेलीजै। वण चिणा गाडा गेहूं सेंवज हुवै। अरट ४ चांच ८ मीठवाणीया छै। तळाई १ साडेळाई मास ६ रौ पांणी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१६)	६३२)	६७२)	७१९)	४२०)

१ झाड़ढंढ

सोझत था कोस ५ षरक कूण में। जाट बांणीया बसै। रजपूत गूजर बसी रा छै। तुरक घणा रहै छै। षेत मगरा रा, जुवार हुवै, चिणा हुवै। अरट ४ हळ ९० री धरती छै। वाहाळी १ बहै। पांणी षारो। तळाव १ बाघेळाव मास ८, जोड़ बीघा २०१।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३३१)	८१३)	७९७)	१३६०)	११९६)

१ वीरावास

सोझत था कोस ३ मूल कूण मांहे। कुंभार बांभण बसै। पहली बांभणां नुं सांसण थौ, सु मोटै राजा लोपीयौ। सोझत री नजीक नदी गांव सु रेलै। गेहूं चिणा हुवै। षेत सषरा, अरट ७ षारचीया। गागुरडा दिसे तळाव १ घड़ोई, मास १० पांणी हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८२)	४४४)	३३०)	५१८)	३३८)

१ झूंपेळाव

---

१. १७०२)। २. सझा।

सोझत था कोस ५ मूल कूण मांहे। जाट बांणीया पलीवाळ बसै। हळवा ६० सोझत री नदी रेलै। जवार गेहूं चिणा सेंवज हुवै। भलौ गांव। ऊनाळी नहीं, केरीयौ गांव तळाव १ गांव री नजीक, मास ८ पछै बेरीयां पीवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७२०)	८५४)	१०९)	१४०३)	५२३)

१ सीसरवादो

सोझत था कोस ३ नैवास कूण मांहे। सीरवी जाट बांणीया कुंभार रजपूत बसै। षेत सषरा, ज्वार बाजरी कपास हुवै। अरट ३० तथा ४० षारचीया कै मोठा। वण चिणा पिण हुवै। तळाव पांणी मास ८। नानौ-सो जोड, ऊनाळो पाही करै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५१)	९२७)	३६७)	१०१५)	३१२)

१ भागेसर

सोझत था कोस ६ षरक पंचाध रै सांधे। पलीवाळ बांभण जाट रजपूत वसै। सींव घणी। जवार हुवै। त सषरा, उनाळी चांच १० तथा १५ हुवे छै। तळाव सषरी छै। एक साषीयौ षेत, वडौ गांव जेसावस री पेड़ौ भागेसर मांहे षड़ीजै छै। निषालस गांव छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९३)	१०५२)	७३)	९४४)	११०१)

१ चंडावळ

सोझत था कोस ४ भरहर कूण में। वास २ जाट वोहरा रजपूत वांणीया वसै। हळवा ४०० षेत भला जवार बाजरी कपास हुवै। अरट ३० तथा ४० करै सु हुवै। रेल सारी सींव करै जव, गांव वसी लायक। तळाव १ मास १० पांणी हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१९९५)	२२२९)	२७४४)	३२९३)	३५५९)

३ भेटनडो

सोभत था कोस ११ षरक कूण मांहे । हळवा १०० षेत सषरा, जवार बाजरी कपास हुवै । ढीबड़ौ १ छै, सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ८ पांणी ।

१ वडौवास वसीयांवाळो

राजपूत बांणोया बसै ।

१ मलावस

पलीवाळ बांभण बसै । षेत भेळा ।

१ डूंगरसी री बासणी

सीसोदीया वाघा री बसी छै । पलीवाळ बसै ।

३

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६६०)	१३१३)	४२५)	१६९७)	१२७२)

२ वातो नैवाडीयो

सोभत था कोस ११ नेवास षरक रै सांधै । मेवाड़ गोढ़वाड़ रै कांठै[1] । सदा वडा ठाकुरां री बसो रही ।

१ बडीवास नै सेहवाज भेळी

सीरवी वांणीया घांची जाट बांभण बसै । रजपूत बसी रा लोक वसै । हळ ४०० जुपै । षेत सषरा जवार मूंग हुवै । अरट २५ तथा ३० चांच ४० हुवै । मीठवणीया बेसास पटो चिणा हुवै । तळाव पांणो मास ९ ।

१ वाड़ीयो

वाता था कोस ०॥। ऊगवण नै । सदा बसीयां रहै । हळ ४० तथा

2. सीमा पर ।

५०, षेत सषरा, चिणा हुवै । अरट ५ मीठा छै । तळाव मास ८ रौ पांणी ।

२

विगत

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६८०)	११०९)	२१६६)	२२२०)	२००४)

१ बाहडसो

सोझत था कोस ९, दिषण षरक रै सांधे । सीरवी जाट बांणीया वसै । षेत काठा कंवळा ऊनाळी अरट १५ तथा १६, पांणी भळभळी । वण गेहूं हुवै । गेहूं निपट सषरा हुवै । तळाव पांणी मास ८ तथा १० री, गांव रै फळसे छै[1] । पहली सांसण पिरोहतां नै, मोटै राजा लीयो।

संवत.	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८९५)	१४५४)	२९८२)	१७५४)	१४७८)

१ मेळावास

सोझत था कोस ४।। परवांण अगन कूण मैं । जाट वसै । षेत पातळा । वाजरी मोठ ऊनाळी अरट १० हुवै । वण छोतराणो चिणा वाहसां नदी में हुवै छे । तळाव १ नानीसी[2] छै । षुलासा गांव छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५८२)	८९२)	८२८)	७५२)	४००)

१ वाघावस

सोझत था कोस २, परक कूण मांहे । रा० वाघा रौ वसायो पेड़ो छै । वोहरा वांणीया जाट वांभण वसै । वडा पेत जवार, ऊनाळी अरट ११ चांच ३० हुवै । चिणा सेंवज हुवै । तळाव १ चोहथेळाव वरसों- दीयो । जोड १ गाडा १०० घास ।

1. [illegible] । 2. छोटी-सी ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	२६०)	१०७०)	८७६)	१८७२)	१३६८)

१ नीबली-ऊहड़ां री

सोभत था कोस ६, षरक कूण में। जाट बांणीया बसै। ऊहड़ मांहे रहै। सूनौ षेड़ो बसायो नहीं, सोभत वाळो दिषण दिसी नुं। अरट ५ तथा ६ चांच हुवै। तळाव मास १० पांणो रहै। जोडीयौ छै। तळाव ऊहड़ मेहा री वणायौ छै। नीपालस गांव छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	६१)	१०५१)	३१८)	१०८७)	७६७)

१ दाघीयो

सोभत था कोस ४ ऊगण में। सीरवी कुंभार बांणीया बसै। नदी मेळावस दाघी बीचै अरट ६ हुवै। तळाव मास ४ पांणी, पहैली नांव दुघीयो थौ, पछै अलीतो घणौ हुवौ तरै दाघीयो कहाणौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	३४६)	५३१)	७४२)	५६४)	४३२)

१ बोलमारीयो[1]

सोभत था कोस ४ भरहर मांहे, जाट बांणीया बसै। पहैली चारण माला नुं सांसण थौ सु राजा सुरजसिंघजी उरौ लीयौ। सींव थोड़ी हळवा ४०। रेल बीघा ४०० अटवड़ा दिसो चिणा हुवैं। ढीबड़ा ८ चांच ४ मीठवांणीया, बण छोतरा हुवै। तळाव पांणी मास ४ हुवै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१६
	१६८)	६६५)	४७२)	६७३)	११६५)

१ भारेडी

१. बोलमालारो।

सोभत था कोस १२ मूळ कूण मांहे। जाट बांणीया बसै। ह २०० तथा २५ री सींव में छै। अरट २५ तथा ३० रा तेड़ छै। षारचीया गेहूं हुवै। सदा वसीयां लायक गांव छै। तळाव १ मास ६ पांणी छै। निषालस गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७६)	८९८)	८७७)	७८२)	८३७)

१ मंढलो वडौ

सोभत था कोस ३, भरहर में। जाट कुंभार बांभण रजपूत बसै। षेत बारूसा उन्हाळी, बडौ गांव। अरट १० निपट सषरा छोतरा वण हुवै। नाडी कुं० जोधा री कराई,। गांव रै फळसै, पांणी मास ६ री हुवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४९०)	८११)	११४७)	१२७९)	७३६)

१ दाघीयो धनेहड़ी[1]

सोभत था कोस १ नीवास कूण मांहे। जाट सीरवी कुंभार वसै। हळवा ४० जवार बाजरी हुवै। अरट १५ मीठवणीया, वण घणी हुवै। नदी महादेवजी रा देहरा कनै नीसरी छै, सदा बहै। पांणी षारो। नाडी मास ४ पांणो। जोड कांस री छै। निषालस गांव छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५४)	६६३)	१५९३)	९४५)	८९८)

१ छीतरीया

कोस ५ उतराध भरहेर रै सांधै। जाट वसै, निपालस सारी सींव हुवै। अरट ५ पारड़ो पारचीयो छै। गांव अटवड़ा री सींव में सी० ऊगरसी रै पटै थकां वसीयो। तळाव १ मास १० पांणी, सा० छीतर री कराई नाडी, मास ४ पांणो।

1. धनेड़ी (दाघीयो नहीं)।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२८)	१०००)	३९६)	८९१)	७९०)[1]

१ बोरनडी

सोझत था कोस ५ षरक कूण मांहे। जाट बांभण बसै। सींव थोड़ी हळवा ३० षेत सषरा, बाजरी तिल मूंग बण हुवै। उन्हाळी ढीबड़ा १५ चांच २० षारचीया मीठवणीया, तळाव १ मास ७ पांणी। निषालस गांव सषरो छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३७७)	७९०)	१५८७)	७३३)	५८६)

१ राजलवो तेजां

सोझत था कोस ६ परवांण रूपारास रै सांधै। जाट बांणीया बसै। हळवा ५० तथा ६० छै। बाजरी तिल वण, सषरी सेंवज चिणा हुवै। ढीबड़ा ६ तथा ७ मीठा छै, तळाव मास ८ पांणी। निषालस गांव छै। मेरां रा मढ मारग था कोस ३ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२३३)	३२२)	५८७)	५००)	४३२)

१ भींवाळीयौ

सोझत था कोस १२ नीवास कूण षरक रै सांधै। बांणीया बांभण बसै। बड़ी २ बसीयां रहै। हळवा ४० धरती, जवार रा षेत घणा मेह बण हुवै। अरट १ ढीबड़ा ४ हुवै। पिड़ीहार भींव री बसायौ छै। तळाव १ भींवनडी[2] छै। भींव लात मारी थी, पांणी नीसरै छै। हासल घणो कोनी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२७२)	७९२)	५२०)	६३६)	७५५)

१ वडी

१. ७२०)। २. भींवतोड़।

कोस ७ नवास कूण मांहे। बांणीया बांभण बसै। सदा वसी रहै छैं। षेत रुड़ा ऊनाळी अरट १० ढीबड़ा छै। निपट बडो गांव। पांणी गेहूं हुवै। पाही षड़े। जोड़ बीघा २०० छै। पांणी फळसा आगै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४२७)	५८३)	८७५)	४९४)	११४९)

१ करमावस

सोभत था कोस ७ ईसांन कूण मांहे रहै। सींव बीघा हीज छै। जुवार मूंग हुवै। ऊनाळी अजाईब[1], अरट ५ ढीबड़ी हुवै। छोतरा वण गेहूं सेंवज चिणा हुवै, हळवा ६०। तळाव मास ९ तथा १० पांणी, नदी नजीक डोइनडा[2] दिसी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३३९)[3]	५३५)	५६५)	१०७३)	१००९)

१ रांणावस

कोस ९ नीवास कूण मांहे। बसी री गांव। सीरवी रांणा रौ बसायौ गांव। सींव घणी, जुवार मूंग तिल वण हुवै। अरट ढोबड़ा २० वाग १ मेर सु कांठा, तळाव मास ४ पांणी, नाडी कुलाज[4] रा भाषरी हरढावास दिसी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८३५)	१२८०)	७५५)	८३०)	१११५)

[[5]१ हरढावस

सोभत था कोस ९ नेवास कूण मांहे। लोक कोई नहीं। सदा वसीयां मांहे रहै। कदीम सींधलां री गांव। हळवा ८० षेत निपट सपरा। वण चिणा हुवै। अरट ४ ढीवड़ा १० मीठवणीया निपट सपरा हुवै। तळाव मास ३ पांणी, नदी सूकड़ी फुलाज री वाड़ अड़ती[1] वहै।

१. [illegible]। २. [illegible]। ३. ३४१)। ४. फुलाज। ५. 'ख' प्रति का अंश।

१. [illegible]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५१)	८२५)	१८१९)	११११९)	११४८)

१ राजलवो बडो

सोझत था कोस १० मूल कूण मांहे। जाट बसै, निषालस छै। षेत पातळा, सींव घणी। ऊनाळी मामुर नहीं। तळाव मास ८ पांणी। कोहर १ बाडसु अड़तौ। पांणी भळभळी डूंगरोतां रौ गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३१)	४३७)	३०६)	११८२)	४५८)

१ षारड़ी[1]

सोझत था कोस ५ षरक पंचाध रै सांधै। सीरवी बांणीया नंदवांण वसै। सींव घणी, जवार मूंग वण रा सषरा षेत छै। रेल सेंवज चिणा हुवै छै। अरट १२ तथा १५ हुवै। लूण रा आगर छै। तळाव १ वरसोंदोयो पांणी। निषालस गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५११)	१३३७)	८२७)	१४७६)	१२७५)

१ झीथड़ी

सोझत था कोस १० षरक मूल रै सांधै। पलीवाळ जाट बांणीया कुंभार वसै। षेत सषरा ऊनाळी ढोबड़ा ७ तथा ८ षारचीया। तळाव वरसोंदीयौ पांणो। चीहान रांणे तगो मारीयो, जाळोर जातो घोड़ो झीफो मुवौ, तिण रै नांव करायौ। निषालस छै। माहे देवरौ जानरायजी रौ छै नै कुबैजी रौ असतल छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६५)	७०५)	४२९)	१४७६)	८४८)

१ कारोळीयो

सोझत था कोस ७ नवास षरक रै सांधै। पलीवाळ वांभण वसै।

---

१. पारड़ीयो।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५११)	८२५)	१८१९)	११११)	११४८)

१ राजलवो बडो

सोझत था कोस १० मूल कूण मांहे। जाट बसै, निषालस छै। षेत पातळा, सींव घणी। ऊनाळी मामुर नहीं। तळाव मास ८ पांणी। कोहर १ बाडसु अड़तो। पांणी भळभळो डूंगरोतां रो गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३१)	४३७)	३०६)	११८२)	४५८)

१ षारड़ी[1]

सोझत था कोस ५ षरक पंचाध रै सांधै। सीरवी बांणीया नंदवांण बसै। सींव घणी, जवार मूंग वण रा सषरा षेत छै। रेल सेंवज चिणा हुवै छै। अरट १२ तथा १५ हुवै। लूण रा आगर छै। तळाव १ वरसोंदीयो पांणी। निषालस गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५११)	१३३७)	८२७)	१४७६)	१२७५)

१ झीथड़ौ

सोझत था कोस १० षरक मूल रै सांधै। पलीवाळ जाट बांणीया कुंभार बसै। षेत सषरा ऊनाळी ढोबड़ा ७ तथा ८ षारचीया। तळाव वरसोंदीयो पांणी। चौहान रांणे तगो मारीयो, जाळोर जातो घोड़ो झीफो मुवो, तिण रै नांव करायौ। निषालस छै। माहे देवरो जानरायजी रो छै नै कुबैजी रो असतल छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६५)	७०५)	४२९)	१४७६)	८४८)

१ कारोळीयो

सोझत था कोस ७ नवास षरक रै सांधै। पलीवाळ बांभण बसै।

---

१. पारड़ीयो।

कोस ७ नवास कूण मांहे । बांणीया बांभण बसै । सदा वसी रहै छैं । षेत रुड़ा ऊनाळी अरट १० ढीबड़ा छै। निपट बडो गांव। पांणी गेहूं हुवै। पाही षड़ै । जोड़ बीघा २०० छै। पांणी फळसा आगै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४२७)	५८३)	८७५)	४९४)	११४९)

१ करमावस

सोझत था कोस ७ ईसांन कूण मांहे रहै । सींव बीघा हीज छै। जुवार मूंग हुवै । ऊनाळी अजाईब[1], अरट ५ ढीबड़ी हुवै । छोतरा वण गेहूं सेंवज चिणा हुवै, हळवा ६० । तळाव मास ९ तथा १० पांणी, नदी नजीक डोइनडा[2] दिसी ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३३९)[3]	५३५)	५६५)	१०७३)	१००९)

१ रांणावस

कोस ९ नीवास कूण मांहे। बसी री गांव। सीरवी रांणा रौ बसायौ गांव । सींव घणी, जुवार मूंग तिल वण हुवै । अरट ढोबड़ा २० वाग १ मेर सु कांठा, तळाव मास ४ पांणी, नाडी कुलाज[4] रा भाषरी हरढावास दिसी ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८३५)	१२८०)	७५५)	८३०)	१११५)

[[5]१ हरढावस

सोझत था कोस ९ नेवास कूण मांहे । लोक कोई नहीं। सदा वसीयां मांहे रहै। कदीम सींधलां रो गांव। हळवा ८० षेत निपट सषरा। वण चिणा हुवै। अरट ४ ढोवड़ा १० मीठवणीया निपट सषरा हुवै । तळाव मास ३ पांणी, नदी सूकड़ी फुलाज री वाड़ अड़ती[1] वहै।

१. मजायब। २. डोयनडी। ३. ३४९)। ४. फुलाज। ५. 'ख प्रति का अंश।

1. फुलाज को छूती हुई।

सींव हळवा ५० तथा ६०, षेत जवार रा । अरट ४ ढीबड़ा ८ सेंवज चिणा हुवै । तळाव १ सी० उदा रौ करायौ । वरसोंदीयौ पांणी । निषालस गांव छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६५१)	७९०)	५२५)	९४८)	६९८)

१ हरसीयाहेड़ो

सोझत था कोस ७ रीतहर कूण मांहे । जाट बांणीया षारोल बसै । सींव घणी, हळवा २०० षेत जवार बाजरी रा उन्हाळी न हुवै[1] । पांणी षारौ । सेंवज गेहूं काठा चिणा हुवै । जोड १ निपट बडो छै । कोस २ मांहे लूण रा आगर २० हुवै । तळाव १, मास ८ पांणी । निषालस गांव छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५०)	९८३)	२२४)	९०६)	३६१)

१ जीनौदौ[1]

कोस १२ दिषण मांहे । बांणीया बांभण बसै । बसी रा गांव षींवड़ा नजीक मेरां रौ जोर थको, पहलो गुदवच रा बांभण नु सांसण थो । मोटै राजा लीयौ । सींव घणो, बडौ गांव, उनाळी चिणा सेंवज हुवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८०७)	९२५)	७९५)	१०३७)	७९०)

१ मढलो षुरद

कोस २ ईसांन कुण मांहे । जाट सीरवी बसै । हळवा ४० षेत सषरा । अरट १० षारचीया । तळाव मास ८ पांणी । सदा मांहै वसी रहै आई है । गांव निषालस । जोड छोटोसो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३००)[1]	६१२)	९३६)	५२५)	३१३)

१ मलसोया बावड़ी

कोस ९ रूपारास में। सदा वसी रहै। सींव घणी, षेत सेंवज भला चिणा हुवै। अरट ४ ढीबड़ा १० षारचीया मीठा, नदी नजीक छै। द्रह छै। कांठा रौ गांव मेरां रै मुहडै। तळाव मास ८ पांणी। जोड छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४४०)	५७०)	७५८)	५२५)	६६१)

१ मेहड़ासी

सोभत था कोस ६ षरक मूल रै साधै। वसी रौ गांव। सींव घणी हळबा ७० जवार रा षेत। चिणा सेंवज रूपेळाव दिसी अरट ५ तथा ६, मीठीवणीया हुवै। तळाव हाडा चाचा रौ करायौ छै। जोड छोटौसो छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९७)	५७६)	६२३)	१४४१)	९८०)

१ मुरढावो

सोभत था कोस ५ भरेहर कूंण मांहे। लोक कोई नहीं। सदा वसीयां मांहे रहै हमार जैतावतां री वडी वसी। माहाजन रजपूत वांभण वसै। हळवा ठरड़ा रा षेत। सेंवज चिणा हुवै। ढीवड़ा ४ चांच १० हुवै। वसी देषतां सींव थोड़ी[1]। तळाव मास १० पांणी, नदी नजीक छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६३०)	५७६)	२३३)	११९६)	१०२७)

१. २००)।

१. आबादी को देखते हुए जमीन कम है।

सींव हळवा ५० तथा ६०, षेत जवार रा। अरट ४ ढीबड़ा ८ सेंवज चिणा हुवै। तळाव १ सी० उदा रौ करायौ। वरसोंदीयौ पांणी। निषालस गांव छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६५१)	७९०)	५२५)	९४८)	६९८)

१ हरसीयाहेड़ो

सोझत था कोस ७ रीतहर कूण मांहे। जाट बांणीया षारोल बसै। सींव घणी, हळबा २०० षेत जवार बाजरी रा उन्हाळी न हुवै[1]। पांणी षारौ। सेंवज गेहूं काठा चिणा हुवै। जोड १ निपट बडौ छै। कोस २ मांहे लूण रा आगर २० हुवै। तळाव १, मास ८ पांणी। निषालस गांव छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५०)	९८६)	२२४)	९०६)	३६१)

१ जीनौदौ[1]

कोस १२ दिषण मांहे। बांणीया बांभण बसै। बसी रा गांव षींवड़ा नजीक मेरां रौ जोर थको, पहलो गुदवच रा बांभण नुं सांसण थौ। मोटै राजा लीयौ। सींव घणो, बडौ गांव, उनाळी चिणा सेंवज हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८०७)	९२५)	७९५)	१०३७)	७९०)

१ मढलो षुरद

कोस २ ईसांन कूण मांहे। जाट सीरवी बसै। हळवा ४० षेत सपरा। अरट १० पारचीया। तळाव मास ८ पांणी। सदा मांहे वसी रहै आई छै। गांव निपालस। जोड छोटोसो।

१. जानादो।

१. गेहूं आदि नहीं होते।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३००)[1]	६१२)	६३६)	५२५)	३१३)

१ मलसोया वावड़ी

कोस ६ रूपारास में। सदा वसी रहै। सींव घणी, षेत सेंवज भला चिणा हुवै। अरट ४ ढीबड़ा १० षारचीया मीठा, नदी नजीक छै। द्रह छै। कांठा रौ गांव मेरां रै मुहडै। तळाव मास ८ पांणी। जोड छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४४०)	५७०)	७५८)	५२५)	६६१)

१ मेहड़ासी

सोझत था कोस ६ षरक् मूल रै साधै। वसी रौ गांव। सींव घणी हळवा ७० जवार रा षेत। चिणा सेंवज रूपेळाव दिसी अरट ५ तथा ६, मीठीवणीया हुवै। तळाव हाडा चाचा रौ करायौ छै। जोड छोटौसो छै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९७)	५७६)	६२३)	१४४१)	९८०)

१ मुरढावो

सोझत था कोस ५ भरेहर कूंण मांहे। लोक कोई नहीं। सदा वसीयां मांहे रहै हमार जैतावतां री वडी वसी। माहाजन रजपूत वांभण वसै। हळवा ठरड़ा रा षेत। सेंवज चिणा हुवै। ढीवड़ा ४ चांच १० हुवै। वसी देषतां सींव थोड़ी[1]। तळाव मास १० पांणी, नदी नजीक छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६३०)	५७६)	२३३)	११९६)	१०२७)

१. २००)।

1. आबादी को देखते हुए जमीन कम है।

१ भैंसांणौ

सोभत था कोस ३ नेवास कूंण मांहे। सीरवी बांभण बांणीया बसै। बसी रहै छै। सींव घणी हळवा १५० षेत सषरा, जवार मूंग तिल वण हुवै। चिणा गेहूं सेंवज हुवै। अरट ४ ढीबड़ा १० चांच २० हुवै।

१ चरपटीयौ

सोभत था कोस ७ नेवास षरक मांहे। लोक कोई नहीं। बडी बसी लायक। सींधलां रौ गांव। जोगी चिरपट रै नांव बसीयौ। सींव घणी हळवा ३०० षेत सेंवज हुवै। निपट सषरा षेत छै। अरट १० ढीबड़ा १२ चांच २० हुवै। तळाब मास ८ पांणी। मालको चिरपटीयौ मैं मांजरे षड़ै छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७२२)	१२१३)	९८७)	१३९०)	१४५०)

१ डोयनडी

सोभत था कोस ८ भरेहर कूंण मांहे। लोक कोई नहीं, बसीयां रहै। षेत सषरा ऊनाळो ढीबड़ा १० हुवै, षारचीया मीठवाणीया। जोड सषरौ छै। वाहळौ करमावस दिसी छै। तळाव मास ५ पांणी। वसी लायक गांव कदीम षेड़ौ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४८१)	७५८)	५०७)	१०३८)	६५७)

१ पारीयौ फदरां रौ

सोभत था कोस ४ नेवास परक रै सांधे। लोक कोई नहीं, बसीयां रहै। सींव थोड़ी हळवा ६० तथा ७० षेत सषरा। जवार तिल कपास हुवै। अरट ४ ढीवड़ा ५ चांच १० सेंवज चिणा हुवै। पेहली ग्रा० राजा फदर नुं सांसण थो। मोटा राजा लोपीयौ। तळाव मास ७ पांणी। जोडीयो छै। वसी लायक।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४११)	५९०)	६९७)	८९५)	४६४)

१ हापत

सोभत था कोस ६ रीतहड़ मांहे। बांणीया जाट बसै। वसी घणी रहै छै। गांव निषालस छै। धरती हळबा ५० तथा ६० षेत रूड़ा। षारच घणों छै। ऊनाळी वाहळा ऊपर चांच हुवै। तळाब मास ४ पांणी। पेहलो चारण दांना नुं सांसण थौ। मोटै राजा लोपीयौं। बसी लायक गांव छै।]

१ पांचनडो हुलां री

कोस ३ सोभत था पूरब दिसा। जाट बसै, षेत रूड़ा सीव थोड़ी। ऊनाळी अरट ४ चिणा गेहूं सषरा हुवै। नदी कोस ०॥ सोभत री, तळाव मास ४ पांणी, बास २ भेळा छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३९७)[1]	२८०)	२०९)	१७३)	१३५)

हासलपुर षुरद

सोभत था कोस ९ रीतहड़ कूण मांहे। जाट षारोळ बसैं। हळवा २० जवार काठा गेहूं सेंवज हुवै। लूण रा आगर। ऊनाळी पीयल नहीं। तळाई मास ४ पांणी। वाहळौ १ षारौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४०)	४६५)	८७)	५८५)	३१२)

१ दामा धांधल री वासणी

कोस ५ षरक कूण मांहे। जाट कुंभार रजपूत बसै। हळबा २०, अरट २ चांच[2] षेत सषरा। धांधल दामौ राव सूजा री बार में वसीयो। तळाव पांणी मास ६ रहै छै[3]। सुरातो नजीक छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२५)	१२५)	१६०)	१००)	१००)

---

१. २९७)। २. आडावणिया (अधिक)। ३. बडा द्रह सदा भरीया रहै (अधिक)।

१ रायमल री वासणी

सोभत था कोस २॥० दिषण षरक दिसी । जाट बसै, गांव मैं बसी था मुदौ छै । हळबा ८० षेत सषरा चिणा हुवै । अरट १० तथा १५, रायमल भींवराजोत रौ बासायौ । तळाव मास ४ पांणो । श्रीमाळीयां नै सांसण थौ सु छूटौ[1] सांगरीया रै बदळै हुवौ थौं ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१८०)	२९६)	३०१)	३९७)	३८७)

१ गोधेळाव

कोस ४ रीतहरी कूंण मांहै । जाट बसै । धरती हळवा ३५ । षेत पातळा, बाजरी मोठ हुवै । नै ऊनाळी नहीं, सेंवज तळाव मांहे गेहूं चिणा हुवै । तळाव १ गोधेळाव मास ४ पांणी । लूण रौ आगर १ छै । पहली राव जोधै रौ दीयौ षड़ीया[2] नुं सांसण थौ, सु मोटै राजा लीयौ । निषालस छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५४)	४६५)	८७)	५८५)	३१२)

१ पळासलो वडौ

कोस ७ परक कूंण मांहे । जाट माळी बसै । हळवा ४०, षेत काठा जवार बाजरी हुवै । ऊनाळी ढीवड़ा ४ पांणी भळभळो । तळाव मास १० पांणी हुवै । पुनापर नजीक निषालस गांव छै । छोटो-सो जोड छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१८०)	५१८)	३३५)	४९५)	८०५)

१ हींगावास

सोभत था कोस ३ परक कूण मांहे । सीरवी वांणीया वसै ।

---

१. [illegible] । २. दीया ।

भण ही छै। धाइभाई सूरा रा जाट रजपूत बसै। हळबा ५० तथा ६० छै[1]। सेंवज गेहूं चिणा। अरट ६ षारा, तळाव मास ६ पांणी हुवै, कुवौ १[2]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२०)	२६८)	२८०)	३१४)	३२१)

१ हासलपुर बडौ

कोस ८ पंचाध मांहे बाटाब रै सांधै। जाट कुंभार बसै। सींव घणी। हळवा ८० जुवार मूंग कपास हुवै। षारी नदी लूणी कोस ०।[3], ऊनाळी ढीबड़ा ४ चांच १० पांणी तळाव झलरावौ मास ६, हाडा हांसा री वसायौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४०)	३४०)	५७८)	२२८)	३२३)

१ हूणगांव षुरद

कोस ६ वायब कूण मांहे। बेऊ बास भेळा बसै। जाट कुंभार वसै। हळवा ३० तथा ४० षरा। अरट ४ ढोवड़ा ४ चांच १०, नदी लूणी नजीक। तळाव मास ५ पांणी रहै। निषालस लाहूणहेड़ौ नजीक छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५८)	३८७)	४२०)	२४६)	३६३)

१ धवलेहरो[4]

सोझत था कोस ८ पचांध कूण मांहे। सीरवी कुंभार वसै छै। धरती हळवा २५०, वरसाळी षेत सषरा। नै ऊनाळी अरट ४ ढीवड़ा १० पेड़ौ भापरी पांभ। सदा जैतावतां रै पटै री। देहुरौ १ सिषरबंध[1] छै। तळाव धवलेळाव पांणी मास १०। वावड़ी १ वेरा ४

१. षेत सखरा। २. पाछी पण खडे छै (अधिक)। ३. ०।।। ४. धवलहरो।

1. शिखर वाला मन्दिर।

तळाव में नदो सोझत वाळी उत्तर मांहे बावड़ी कनै छै। बसी मांहे रहै छै।

१ षुटलो[1]

कोस ६ रीतहर कूण मांहे। जाट पलीवाळ बसै। बसी रा रजपूत था मुदौ। धरती हळबा ४० तथा ५०। षेत सबरा मगरै छै। ऊनाळी जेसलवास री भाषरी रौ बाहळौ कोस ०। छै। तठै चांच २०, पांणी षारौ। तळाव १ दुधेळाव मास ७ पांणी। मांहे बेरी २। राव सकतसिंघ रो बार मांहे चवांणां बसायौ छै।

१ थाहर वासणी

कोस ५ रीतहर कूण में उतर रै सांधै। जाट रजपूत बांणीया बसै। सींव घणी। हळवा ७० तथा ८० जुवार मूंग तिल हुवै। अरट ३ तथा ४। चांच षारचीया सेंवज चिणा। आगर ४ लूण रा छै। गूजर थाहारु री वसायौ। बीलाड़ौ नजीक छै। तळाव मास ४ पांणी। जोड सषरो। निषालस गांव १ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२३५)	५७८)	७५)	४६०)	८४३)

१ चुलेळाई

कोस १० पंचाध कूण में। बांभण[2] कुंभार रैबारी बांणीया बसै। सींव हळवा ४० षेत भला। उनाळी नहीं। तळाव वरसोंदोयौ पांणी। सुतरार चुहलै रौ वसायो। नदी मालपुरीयो दिसी बहै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९५)	६१८)	७९)	४२५)	४७३)

१ पांचवो पुरद

कोस ७ मूल कुण मांहे। जाट रजपूत वसै। हळवा ४० तया ५० छै। जुवार मूंग हुवै। ऊनाळी कुआ १५ तथा २०, सेंवज चिणा[3]।

---

१. [illegible]। २. [illegible]। ३. जव चिणा हुवै।

लूण रा आगर ४। चारणा नुं सांसण थौ। पछै संमत १६ आवौ गांव षालसै कीयौ नै आधौ चारणां रतनुवां नुं राषौ थौ। हमें चारणां नुं वीघा १०० । बीजी धरती घायभाई गिरधर दीवी छे[1]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४५)	१७०)	१३०)	६२)	९६)

१ मामावास

सोझत था कोस २॥ दिषण दिसी । गूजर रजपूत बसै छै। सींव थोड़ी हळबा ३५ षेत रूड़ा। सेंवज चिणा। ढीबड़ा १४ चांच ५ (नाना मोटा) हुवै। तळाब १ फळसा आगै, मास ८ पांणी रहै। पहला बांभणां नुं सांसण थौ। पछै बांभण छांड गया तरै जागीरदारां दावीयौ थौ। पछै बांमण आया तरै डोहळी सोंपी, धरती दी छै सु हमें छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४६)	१४९)	३५५)	२३८)	२०४)

१ वुटेळाव

सोझत था कोस २॥ रीतहर कूण मांहे। जाट कुंभार रजपूत वसै, धरती हळवा ६०, षेत भला, ऊनाळी घणी को नहीं, चांच छै। जोड १ निपट सपरो छै। तळाव १ मास ८ पांणी रहै। पहली वास ३ सांसण था हमें डोहळी चारणां नुं छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४३)	३०५)	१९२)	३४६)	३७०)

१ मांडपुरीयो

कोस ९, मूल पंचाव मांहे। बांभण जाट बसै। सींव रूड़ी। हलवा ६० जुवार मूंग वण हुवै। ढीवड़ा ७ तथा ८ नदी सोझत री नजीक। कुवो १ पारो बंवायो। निपालस छै।

१. दबाई छै।

संवत	१५७१	१६	१७	१८	१९
	१३)	३७१)	१७९)	५२३)	४३४)

१ लोळावास षुरद

कोस ५ षरक कूण मांहे[1] । बसी रौ गाव । डोहळीयां छै हळवा ३० । जुवार मूंग तिल वण अरट ४ चांच १०, षारचीया सेंवज चिणा हुवै । छोटो-सो जोड तळाव लोलोळाव[2] मास ८ पांणी बा० लेला[3] रौ बसायौ । पहली सांसण थौ । मोटे राजा लीयौ । वसी रौ गांव दूधौर[4] कनै छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२५)	२५१)	२९०)	२९०)	२००)

१ षारचीयौ[5]

कोस ७ षरक नीवास रै सांधे । बांणीया बांभण बसै । वसी था मुदो । पहली वास २ था, १ सांसण प्रोहतां नुं १ रावळो थौ । हमें पेड़ौ भेळौ छै । हळवा ७० जुवार मूंग । ढीबड़ा ४, चांच ५ चिणा सेंवज । तळाव मास १० पांणी रहै[6] ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०५)	२०५)	९२)	२०१)	२०१)

१ धागड़वास

कोस ५ मूल कूण मांहे । जाट कुंभार रजपूत वसै । हळवा १०० षेत काठा जुवार वाजरो । ऊनाळी थोड़ी, केईक चांच छै । सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ८ । जोड रूड़ो वसीयां लायक । परावै छै[7] ।

संवत	१७२५	१६	१७	१८	१९
	१३४)	३४१)	१३२)	४३५)	४६१)

१ वीचपुड़ी

सोझत था कोस ६ पंचाव मांहे। वांभण वसै। हळवा ५० धरती जुवार मूंग। वड़ा षेत, ऊनाळी नहीं। तळाव मास ५ पांणी। पछै पापती रा गांव पीवै। वसी रौ गांव। वेरा तळाव में छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४९)	२०७)	१००)	२०१)	२२६)

१ भोजावास

कोस ६ परवांण कूण मांहे। वसी रौ गांव। हळवा ३० षेत रूड़ा। ऊनाळी ढीवड़ा ६ मीठा सेंवज चिणा। तळाव मास पांणी रहै। वसी रौ गांव।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०१)	३५०)	३५१)	३५०)	३०१)

१ पारीयौ सोढां रौ

कोस ३ परक कूण मांहे। जाट वांणीया रजपूत वसै। वसी मांहे छै। हळवा ६० धरती जुवार मूंग[1]। ढीवड़ा ७ चांच हुवै। पांणी पारौ तळाव में पांणी मास ६। पहली सांसण थौ वांभणा नुं, मोटै राजा लीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३११)	६१८)	४८७)	६९४)	४६०)

१ कांदु

सोझत था कोस १० निवास कूण मांहे। जिण रै पटै हुवै तिणरी वसो रहै हळवा ६० तथा ७० जुवार मूंग वण। अरट २ ढीवड़ा ८ तथा १० परचा रो गांव। जोड आंवा दिसी। तळाव मास ६ पांणी। पहला गुदवच रा वांभण नुं सांसण थौ हिमें डोहळीयां थका छै।

---

१. कपास (अधिक)।

संवत	१५७१	१६	१७	१८	१९
	१३)	३७१)	१७९)	५२३)	४३४)

१ लोळावास पुरद

कोस ५ परक कूण मांहे[1] । वसी रो गाव । डोह्ळीयां छै हळवा ३० । जुवार मूंग तिल वण अरट ४ चांच १०, पारचीया सेंवज चिणा हुवै । छोटो-सो जोड तळाव लोलोळाव[2] मास ८ पांणी वा० लेला[3] रो बसायो । पहली सांसण थो । मोटे राजा लीयो । वसी रो गांव दूधौर[4] कनै छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२५)	२५१)	२९०)	२९०)	२००)

१ षारचीयौ[5]

कोस ७ बरक नीवास रै सांधे । बांणीया बांभण वसै । वसी था मुदौ । पहली वास २ था, १ सांसण प्रोहतां नुं १ रावळो थो । हमें षेड़ो भेळो छै । हळबा ७० जुवार मूंग । ढीवड़ा ४, चांच ५ चिणा सेंवज । तळाव मास १० पांणी रहै[6] ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०५)	२०५)	९२)	२०१)	२०१)

१ धागड़वास

कोस ५ मूल कूण मांहे । जाट कुंभार रजपूत बसै । हळबा १०० षेत काठा जुवार बाजरी । ऊनाळी थोड़ी, केईक चांच छै । सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ८ । जोड रूड़ो वसीयां लायक । षराबै छै[7] ।

संवत	१७२५	१६	१७	१८	१९
	१३४)	३४१)	१३२)	४३५)	४६१)

---

१. लोक कोई नहीं (अधिक) । २. लोलासर । ३. लोला । ४. धूधोड़ । ५. पारची । ६. जोड छै वसी रो गांव (अधिक) । ७. षराब गांव ।

१ वीचपुड़ी

सोझत था कोस ५ पंचाध मांहे। बांभण बसै। हळवा ५० धरती जुवार मूंग। बड़ा षेत, ऊनाळी नहीं। तळाव मास ५ पांणी। पछै पापती रा गांव पीवै। बसी रौ गांव। बेरा तळाव में छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४९)	२०७)	१००)	२०१)	२२६)

१ भोजावास

कोस ६ परवांण कूण मांहे। वसी रौ गांव। हळवा ३० षेत रूड़ा। ऊनाळी ढीबड़ा ६ मीठा सेंवज चिणा। तळाव मास पांणी रहै। वसी रौ गांव।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०१)	३५०)	३५१)	३५०)	३०१)

१ पारीयौ सोढां रौ

कोस ३ षरक कूण मांहे। जाट बांणीया रजपूत बसै। बसी मांहे छै। हळवा ६० धरती जुवार मूंग[1]। ढीबड़ा ७ चांच हुवै। पांणी पारौ तळाव में पांणी मास ६। पहली सांसण थौ बांभणा नुं, मोटै राजा लीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३११)	६१८)	४८७)	६९४)	४६०)

१ कांढु

सोझत था कोस १० निवास कूण मांहे। जिण रै पटै हुवै तिणरी वसो रहै हळवा ६० तथा ७० जुवार मूंग वण। अरट २ ढीबड़ा ८ तथा १० परचा रो गांव। जोड आंवा दिसी। तळाव मास ६ पांणो। पहला गुदवच रा वांभण नुं सांसण थौ हिमें डोहळीयां थका छै।

---

१. कपास (अधिक)।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१६६) २५५) ३०७) २५०) ३७३)

१ हेमलीया वास[1]

सोझत था कोस ६ परक कूण मांहे। कुंभार वांणीया जाट वसै। वसी रो गांव। हळवा ६० जवार तिल कपास हुवै। अरट १ ढीवड़ा ९[2] चाच ३० तथा ४०, सेंवज चिणा रेल मांहे घणा हुवै। तळाव मास ८, सीरवो हेमा रो करायो कांठा रो[3]।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१४७) ४१५) ३०३) ३५०) २५१)

१ महरावास

कोस ११ रूपारास कूण मांहे। लोक कोई नहीं, सदा वसी रो गांव। हळवा ३० पेत सपरा। ढीवड़ा ५ कांठो निपट घणो वाहडोतां रो गांव। नीचै सिरीयारी नजीक वसी रो गांव।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५१) १५१) १५१) १५१) २०)

१ महेलाप

कोस ७ परवांण कूण मांहे। सुराते रा जाट वसै। हळबा ४० षेत सषरा सेंवज चिणा गेहूं। अरट ७ तथा ८ मीठा छै। चिणा हुवै[4]। तळाव मास ८ पांणी रहै छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२४७) ३७१) ६१०) ५४७) ३४५)

१ मोकल वासणी

कोस १० पचांध कूण में। जाट वसै। हळबा ४० जुवार बाजरी

---

१. वडो (अधिक)। २. २। ३. दुधवड़ नजीक (अधिक)। ४. सारण नजीक छै (अधिक)।

चिणा हुवै । ऊनाळी नहीं । छोटो-सो जोड छै । तळाव मास ७ पांणी, पछै वेरे पीवै । बाहळौ १ षारौ पळासला सु आवै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	३७५)	४८)	२४७)	४६)

१ सोधा बासणी

सोझत था कोस १३ पंचाध कूण मांहे । जाट बसै, बसी पण छै । हळवा ७० तथा ८० षेत रूड़ा । जुवार बाजरी तिल हुवै । ऊनाळी करै सु हुवै छै । रा० जैतसी वाघावत री बार में[1] बसीयौ । सींधल हुलां रै नांवै' । अरट ८ चांच १०० तळाव मास ७ पांणी षारी लूणी नजीक छे नदी छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६२)	१५४)	३१८)	३४६)	२८०)

१ मु० मानसिंघ री वासणी

कोस ०। सीवराड़ दिसी । जाट बसै हळबा ४० धरती षेत सषरा ऊनाळी अरट सषरा । उनाळी अरट सषरा २ तथा ४ । तळाव मास ७ पांणी हुवै । मोटा राजा री वार में बसायौ[2] ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२३०)	३६०)	३०३)	५७०)	३६९)

१ गोडांगड़ी

सोझत था कोस ५ परवांण पूरब बीच । जाट रजपूत बसै । हळवा २५ अरट ३ ढीबड़ा ६ मीठौ पांणी अरट छै, पाही षड़ै षेत । बाजरी मोठ हुवै । नदी गांव नजीक रेल चिणा सेंवज । मगरो नजीक

१. सोधा हुल री वसायो ; २. मु० मानसिंघ (अधिक) ।

1. समय में ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६६)	२५५)	३०७)	२५०)	३७३)

१ हेमलीया वास[1]

सीझत था कोस ६ परक कूण मांहे। कुंभार वांणीया जाट वसै। बसी रौ गांव। हळवा ६० जवार तिल कपास हुवै। अरट १ ढीवड़ा ९[2] चाच ३० तथा ४०, सेंवज चिणा रेल मांहे घणा हुवै। तळाव मास ८, सीरवी हेमा रौ करायो कांठा रौ[3]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४७)	४१५)	३०३)	३५०)	२५१)

१ मइरावास

कोस ११ रूपारास कूण मांहे। लोक कोई नहीं, सदा वसी रौ गांव। हळबा ३० षेत सषरा। ढीवड़ा ५ कांठौ निपट घणौ वाहडौतां रौ गांव। नीचै सिरीयारी नजीक बसी रौ गांव।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५१)	१५१)	१५१)	१५१)	२०)

१ महेलाप

कोस ७ परवांण कूण मांहे। सुराते रा जाट वसै। हळबा ४० षेत सषरा सेंवज चिणा गेहूं। अरट ७ तथा ८ मीठा छै। चिणा हुवै[4]। तळाव मास ८ पांणी रहै छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२४७)	३७१)	६१०)	५४७)	३४५)

१ मोकल वासणी

कोस १० पचांध कूण में। जाट बसै। हळबा ४० जुवार बाजरी

---

१. वडो (अधिक)। २. २। ३. दुघवड़ नजीक (अधिक)। ४. सारण नजीक छै (अधिक)।

चिणा हुवै । ऊनाळी नहीं। छोटो-सो जोड छै। तळाव मास ७ पांणी, पछै वेरे पीवै । बाहळौ १ पारौ पळासला सुं ग्रावै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५)	३७५)	४८)	२४७)	४६)

१ सोधा वासणी

सोझत था कोस १३ पंचाध कूण मांहे । जाट बसै, बसी पण छै। हळवा ७० तथा ८० षेत रूड़ा । जुवार बाजरी तिल हुवै । ऊनाळी करै सु हुवै छै । रा० जैतसी वाघावत री बार में[1] बसीयौ । सींधल हुलां रै नांवै[1] । अरट ८ चांच १०० तळाव मास ७ पांणी षारी लूणी नजीक छै नदी छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६२)	१५४)	३१८)	३४६)	२८०)

१ मु० मानसिंघ री वासणी

कोस ०। सीवराड़ दिसी । जाट बसै हळबा ४० धरती षेत सषरा ऊनाळी अरट सषरा । उनाळी अरट सषरा २ तथा ४ । तळाव मास ७ पांणी हुवै । मोटा राजा री वार में बसायौ[2] ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३०)	३६०)	३०३)	५७०)	३६९)

१ गोडांगड़ी

सोझत था कोस ५ परवांण पूरब बीच । जाट रजपूत बसै । हळवा २५ अरट ३ ढीबड़ा ६ मीठौ पांणी अरट छै, पाही षड़ै षेत । बाजरो मोठ हुवै । नदी गांव नजीक रेल चिणा सेंवज । मगरो नजीक

१. सोधा हुल रो वसायो ; २. मु० मानसिंघ (अधिक) ।

1. सनद में ।

गांव। पहली देरासरी कान्हा नुं सांसण थो। मोटै राजा लोपीयो तळाव मास ८ पांणी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३२९)	५२३)	१५०५)[1]	६५०)	५९७)

१ पोटलीयौ

कोस ८ मूल कूण मांहे। जाट पालीवाळ वसै। सींव थोड़ी, हळवा ४० षेत सषरा, पातळा पिण छै। ढीवड़ा ६ चांच छै। जोड थौ सुं भांजीयौ। जाट पटैल वसै[2]। तळाव आपानडी, मास ९ पांणी।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)[3]	१४७)	१०७)	१७२)	१७०)

१ पांचनडो टाकां रौ

कोस ६॥ सोझत था पूरव मांहे। बडौ बास भेळौ बसै छै। हळबा ३० षेत भला। अरट ६ तथा १०, चिणा हुवै। तळाव मास १० पांणी रहै। सीहाट नजीक छै। सोझत री नदी तांई सींव। टाक रजपूत बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३००)	२६८)	४५३)	७०६)	४००)

१ हूणगांव बडौ

कोस ६ वायब कूण मांहे। बडौवास भेळौ छै। जाट विसनोई बांणीया बसै। हळवा ४० सेंवज चिणा। अरट ७, चांच लूण रौ आगर २ लूणी नजीक छै। तळाव मास ४ पांणी रहै छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३६)	७६६)	९७३)	७३६)	५९१)

१ लोळावास बडौ

कोस १० मूल कूण मांहे। पलीवाळ बांणीया जाट बसै। धरती

---

१. १५०१)। २. जाट पोटला री बसायो। ३. १०७)।

हळवा ६० जुवार, मूंग तिल कपास हुवै। ऊनाळी पीवल नहीं। सेंवज चिणा काठा गेहूं हुवै। भायल लोला रौ बसायौ। बसी गांव मांहै छै। निषालस गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७५)	५२१)	८९)	३८०)	६६६)

१ महेव

कोस ४ रीतहर कूण उत्तर रै सांधै। जाट बांणीया मुलतानी बसै। बसी गांव में छै। धरती हळबा २५० जवार बाजरी हुवै। नंद वांणा वोहरा रहै छै। अरट २ चांच ५ मोटा। ढीबड़ो १, लूण रा आगर ५, जोड सषरौ। गाडा २०० री ठौड़[1]। तळाव ३, मास ८ तथा १० पांणी रहै। वेरा तळाव में छै। बाहळा २ हायतां नै चावड़ी-याक दिसी छै। नीव था नजीक छै।

१ चांदा वासणी

कोस ७ पचांध था जीवणो। आगे षेड़ौ चांपड़ा मैं सूनौ थौ। संमत १७११ भाः ताराछंद नाराणोत भुंपेळाव रा बांभण आण गांव वसीया। धरती हळवा ३० जुवार मूंग हुवै। षेत काठा, ऊनाळी नहीं। सेंवज रेल सुं गेहूं चिणा वीघा २००, तळाव मास १[1] पांणी रहै। वेरीयां छै, भळभळो पांणी। निषालस गांव छै।

१ सोवणीयौ

सोझत था कोस ७ पंचाध मांहे। जाट पलीवाळ रजपूत बसे। सींव रूड़ो[2], हळवा ४० जुवार, मूंग, तिल हुवै। ढीवड़ा ४, चांच ८, तळाव मास ८ पांणो। भाट सिवा रौ वसायौ। तळाव भाटेळाव छै। सांपा नजोक छै। वाहळो सुरायत रौ को० ॥ छै।

---

१. मास ५।

---

1. २०० गाड़ी घास पैदा हो जितनी जगह। 2. अच्छो।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५)[1]	२३५)	१७३)	३९७)	३१७)

१ दूदीयो[2]

कोस ३ उतर दिसी। जाट राजपूत वसै। सींव हळवा ४० षेत अवल बाजरी मोठ। ऊनाळी नहीं। तळाव मास ४। कोहर १ मोठौ बोहोरा बीणा[3] रौ करायौ छै। जोड १।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
९०)	२०९)	१११)	४१४)	३८१)

१ भाणीयो

कोस १० वायब कूण मांहे। बांमण[4] जाट बसै छै। धरती हळवा ४०, षेत सषरा। जुवार बाजरी हुवै। ऊनाळी ढीबड़ा ८ नदी नजीक तळाब १ झालरो, पांणी मास ६ निषालस छै। लाहणहेड़ा था नजीक बसी घणी को नहीं।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	१८८)	१६६)	२४१)	१७१)

१ गुजारावास

कोस ७ षरक मूळ रै सांधै। जाट बसै। धरती हळवा ४० तथा ४५। जवार, मूंग, तिल, कपास हुवै। षेत भला छै। अरट २ ढीबड़ा २, चांच ७ छै। पांणी षारौ। तळाव १ अबदेळाव तळाव मांहे साल हुवै छै। सिव राव जोधावत री बहू रौ करायौ, मास ७ पांणी रहै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५०)	२३०)	१८४)	५८०)	४१५)

१ हमीरवास

कोस ६ दिषण नुं डावौ। जाट बसे। धरती हळवा। षेत पातळा

---

१. ३०)। २. सुदीयो। ३. वेणा। ४. पालीवाळ।

ऊनाळी अरट ५ ढीबड़ा मीठवाणीया । तळाव पांणी मास ४, निषालस गांव, नै रजपूत ही बसै छै[1] । रूपारास कूण मांहे ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०३)	२०६)	२०४)	११९)	१३६)

१ दूधीयौ

कोस ११ षरक कूण के बीच मैं । बांभण बांणीया बसै । हळवा ४० षेत । जुवार मूंग कपास हुवै । सुरायतां रै बाहळा ऊपर चांच १५[2] । पांणी ढाबार री नाडी गांव रै फळसै तिके पांणी पीवैं छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४०)	३१३)	३१२)	३६८)	३१२)

१ पांचनडो लाला[3] री

कोस २ पुरब में सदा वसी रौ गांव । पहली बसी रा सीरवी जाट नै भाट बसता । हळवा ३०० बाजरी मोठ । षेत कंवळा, ढीबड़ा १५, वण गेहूं, नाडो १, मास ४ पांणी, सोहाट नजीक वसी रौ गांव ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६०)	४९२)	११०)	२०९)	१५०)

१ सीचांणो

कोस ८ रूपारास कूण मांहे । बसी रौ गांव । सीरवी कुंभार गूजर वसै । हळवा ३५ षेत भला, सेंवज चिणा ढीबड़ा ८, चांच १० तथा १५ । तळाव मास ४ पांणी । षेड़ौ कदीम न राईत[4] नीसरै । मगरै थां कोस १।। सिरहारी नजीक ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२४)	३४५)	५६७)	४९४)	५३०)

१ सारंगवास

कोस ५ पुरब मांहे । वसी रौ गांव । बगड़ी रै पटै रै भेळौ ।

१. सरवाड़ नजीक (अधिक) । २. खारचीया (अधिक) । ३. लोंला । ४. ईंटां ।

धरती हळवा ६०, षेत पातळा । ऊनाळी ढोबड़ा १२ मीठा घणा। सीगजो नहीं। सेंवज चिणा। तळाव मास ४ पांणी। पहली मेर महेव वाळो गांव थौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०५)	४३८)[1]	३९०)	३२८)	५००)

१ वीठोरौ षुरद

कोस ८ नीवास कूण मांहे। बांणीया बांभण वसै। मुदै बसी था छै। धरती हळवा ६०, षेत सषरा। अरट ३, ढीवड़ा ३, चांच १६, चिणा सेंवज हुवै। तळाव पांणी मास ६ रहै। वसी री गांव।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२९१)	४३०)	६५०)	२९४)	४००)

१ सांपो

कोस ७ षरक कूण मांहे। जाट बांणीया कुंभार बसै। बसी रै गांव, सींव घणी। हळवा १५० जुवार मूंग रा षेत छै। ऊनाळी नहीं। जोड १ सषरौ छै। तळाव १ सापेळाव मास ६ पांणी। कुंड १ सहंस लींग[1] रौ पुनाकर नजीक छै। अणतूट पांणी[2], सांपां री वांई छै[3]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४१)	२३१)	२८)	५९९)	३७४)

१ ठाकुरवास

कोस ७ रूपारास कूण मांहे। लोक कोई नहीं। जिण नुं पटौ हुवै तिण री बसी आय रहै। धरती हळबा ५०, बाजरी मोठ कपास। अरट ३ ढीबड़ा ५ मीठा। सेंवज चिणा हुवै। तळाब मास ६ पांणी, मेरां रै गुढै नीबलो माढां री नजीक छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२७)	४४०)	३७०)	३९५)	३४६)

१. २३९)।

1. सहस्रलिंग। 2. कभी समाप्त नहीं होने वाला पानी। 3. सर्पों की बाम्बी है।

१ रायरो वडो

सोभत था कोस ६ भरहर कूण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रहै। वला था कोस १। हळवा ६०। बाजरी मूंग तिल हुवै। तळाव मास ८ पांणी। ढीवड़ा ५ तथा ६, मीठो पांणो चिणा हुवै। मेर चीलीयात महेस रौ गांव थौ। रा० देवीदास लीयौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२५)	१२५)	१२५)	१२५)	६३)

१ पळासलो पुरद

सोभत था कोस ७ षरक कूण मांहे। लोक नहीं। बसीया रहै। हलवा ५०। जवार मूंग हुवै। अरट २, ढीबड़ा ५ तथा ७ षारचीया छै। जोड १ छै नदी फुलाज वाळी नजीक सेंवज, तळाब मास १० पांणी। पहली सांसण चारणा नुं थौ। मोटै राजा लीयौ। पुनाषर नजोक वसी लायक गांव।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६५)	५०९)	३४०)	५२२)	४४६)

१ लाडपुरो

सोभत था कोस ७ पूरव मांहे। मगरा सुं कोस १। वाहारै मूढै रा० लाडपांन सुरतांणोत देवीदासोत रौ वसायौ। बसेवांन लोक कोई नहीं। रा० दयाळदास लाडषांनोत री वसी रा सीरवी रजपूत बसै। धरती हळवा ४० षेत सपरा। ढीवड़ा ४ तथा ५ हुवै। तळाब मास ४ पांणी। डुरगावास री ठौड़ वसोयौ। बगड़ी रा पटा रौ। वाहळौ १ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	६०)	६०)	६०)	६०)	६०)

१ गोपाळवस[1] [मांढा रौ वास]

---

१. गोपावस।

कोस ६ दिषण मांहै माढो कोस १, लोक कोई नहीं, वसी रहै। त्यांरा रजपूत छै। धरती हळवा ३० तथा ४० वाजरी मूंग हुवै। षेत बारू छै। अरट ५ तथा ६ सबरा सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ८ पांणी। मेर गोपै रो बसायो। रा० कूंपाजी री वार मैं।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६०)	३००)	६२५)	६००)	३०२)

१ रेवड़ी

सौभत था कोस ६ नीवास षरक रै सांधै। लोक कोई नहीं छै। सदा बसीयां मांहे रहै। सु बसती सींव हळवा ४० जवार मूंग तिल हुवै, ढीबड़ा ५ तथा ६, चांच ५ तथा १० षारचीया छै। तळाव मास पांणी, दुधवड़ नजीक बसीयां रो गांव छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३१)	२०१)	२७४)	३००)	३०१)

१ वड़ री बासणी

कोस २॥ षरक कूण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रौ गांव, जिण नुं पटै हुवै तिण री बसी बसै। सींव थोड़ी हळवा २० तथा २५ जवार, षेत रूड़ा[1]। अरट २, ढीबड़ौ हुवै। चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी, निषालस री ठौड़ छै। बसी रौ गांव। बाघावास नजीक छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३६)	२००)	१४०)	१३३)	१९४)

१ चौचावड़ी

सोभत था कोस ७ षरक कूण मांहे। लोक कोई नहीं। सदा वसी रौ गांव। सींव घणी हळवा ७० तथा ८०, जवार, मूंग, तिल, कपास हुवै। अरट २ ढीबड़ा ८ चांच २० तथा ३० षारा छै। सेंवज

1. अच्छे।

रेल में चिणा हुवै । जोड १ छै । तळाब मास ८ पांणी । बिणजारै रौ वसायौ, गांव वसी लायक छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४५)	२८९)	६९१)	५५३)	८१३)

१ रांकणो

सोझत था कोस ११ दिषण दिसी । लोक कोई नहीं, सदा बसी लायक पेहली सूनौ थौ । हमें बसीयौ छै । आवा था कोस ०॥। छै । धरती हळवा २० षेत रूड़ा । ऊनाळी ढीबड़ा ४ हुवै । तळाब मास १ रौ पांणी । कांठा रौ गाव छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४०)	२१०)	१३५)	१३५)	१७५)

१ जोगरावास

कोस ७ षरक कूण मांहे । लोक कोई नहीं । बसी रा सीरवी वांणीया रजपूत कुंभार बसै छै । सींव हळबा १५०, जवार, मूंग, तिल कपास हुवै । अरट २ चांच १० षारा छै[1] । चिणा हुवै । जोड १ छै । तळाव मास ६ पांणी रहै छै । पहला सांसण चारणां नुं थौ । मोटै राजा लोपीयौ । सिणला नजीक बसी रौ छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५३१)[2]	४२४)	२९६)[3]	६२२)	३५४)

१ मालपुरीयो

प्रोहतां रौ, सोझत था कोस ५ मूल कूण मांहे । सीरवी बसै । वांणीया कुंभार छै । हाल बसी रौ लोग रहै । धरती हळबा ८० जवार रा खेत । सेंवज चणा हुवै । गेहूं अरट ४ सषरा छै । कापड़ीया रहै छै । तळाव पांणी मास ८ । प्रोहतां नै सांसण हुतौ, संवत १७१९ हाली चोरी, तरै गांव षालसै कीयौ ।

१. षारचीया हुवै छै । २. १३१) । ३. २८६) ।

१ जसवंतपुरा

बाहली[1] री ठौड बसीयौ। सोझत था कोस ४ निवास षरक रै सांधै। लोक कोई नहीं वसीया। राज जांनुं पटै हुवौ सु बसै। धरती हळवा ६१, जवार, मूंग, तिल, कपास हुवै। षेत सषरा, ऊनाळी ढीबड़ा छै। तळाव मास पांणी। मांढा दुधवर नजीक, बसी रौ छै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८०)	६९)[2]	१०७)	५४१)	१५८)

१ राजकीयाबास षुरद[3]

कोस ७ षरक कूण मांहे। लोक कोई नहीं। सदा बसीयां री बसती हुवै। सींव थोड़ी। हळवा ४० बाजरी, मूंग, तिल हुवै। अरट २ ढीबड़ा ४ चांच हुवै। पांणी षारौ, जोड़ीयौ छै। तळाब मास ८ पांणी। काछेला राजा रौ बसायौ। राव जोधा री वार[1] में बसी रौ गांव, बाहड़सा नजीक छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९०)	३१०)	२८०)	...[4]	१०१)

१ हेमलीयावास षुरद

सोझत था कोस ६ नोवास षरक रै सांधै। लोक कोई नहीं। बसी रौ लोक मांहै बसै छै। हळबा ५० तथा ६० जवार, मूंग, तिल, कपास हुवै। ढीबड़ा १० चांच ४० पांणी मोटौ। चिणा हुवै। तळाव मास ७ पांणी। जोडीयौ १ छै। बसी लायक गांव, करोलियो नजीक छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०१)	२९६)	३५०)	१५०)	३७१)

१ अषावस दुधवर[5] रौ

---

१. बाहरी। २. ६९०)। ३. राजगीयावस। ४. १७९)। ५. दुधबड़।

---

1. राव जोधा के समय में।

देवीदासोत आण[1] बसायौ।

१ कांलव

सोझत था कोस १० उगोण ईसांन रै सांधै। मेर बसै। धरती हळवा २५ तथा ३० छै। बाजरी, मोठ, तिल ऊनाळी घणी का नहीं। वाहळा ऊपर चांच ४ तथा ५ हुवै। बावड़ी १ मीठौ पांणी। बगड़ी रै पटा रौ गांव। मेर चीताषांन पहली बसतौ। पछै सूनौ हुवौ तरै मेर दोवो करमावत गोड़ात नुं रा० देवीदास जैतावत कालझर था राव रांमा री बार मैं आंण बसायौ।

१ डीघोड़[1]

कोस १० रूपारास मांहे। मेर बसै। हळवा ४० तथा ५० वाजरी, मोठ, तिल, बण हुवै। ऊनाळी नहीं। तळाब १, मास ६ पांणी। आद्र षेड़ौ सिरीयारी था छै। तठै राव रांम विषै मांहै[2] जाय रही छै। तठै कोट छै, पोळ छै। मांहे घर छै, ठौड़ भली छै। बावड़ी ३ वाहाळो १ छै[2]। पछै मेर तेजौ अमरौ आसकरनोत सिरीयारी था कोस १ नवौ षेड़ौ कर बसीयौ। बेरी पीवै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	६०)	८०)	६०)	६०)

१ रायरौ षुरद

कोस १० भरहर कूण मांहै। मेर बसै छै। धरती हळबा २० तथा २५ वाजरी, मोठ, तिल, बण हुवै। ऊनाळी धणी नहीं। कुवा ४ वाडाळो १ उत्तर में छै, तिणां री बेरी पांणी पीवै छै। मेर डीघाड़[3] नें राजोरीया चीता बसै। रायरौ लीहोड़ौ[3] झूंबरको[3] कहीजै।

१ केरां रौ षेडौ

१. डीघोड़सो। २. गोरंजी रै कोट री पोळ माहे हुय निकळे। ३. डीघात।

1. ला कर। 2. कष्ट के समय में। 3. छोटे वाला।

सोझत था कोस ७।। अगन कूण मांहे । मेर बसै । धरती हळवा २० बाजरी, मोठ, तिल बरण हुवै । षेत पातळा । ढीबड़ा ७ तथा ८ तळाब १ तीखा १ मास ६ पांणी हुवै छै । नदी धाराजी री तीरवा २ छै । रा० जैसल षेमणोत मेर चांदो तेजो रतनु बार था आंण[1] बसायौ छै । हरीया माळी नजीक छै ।

१ वाल्हणवास

सोझत था कोस ८ परवांण कूण मांहे । सारण परै[2] छै । कोस १ षेड़ौ छै । गोरंभजी था जीमणी कांनी तळाई २, कुवो १, नींब १ मगरा री जड़ ।

१ नाहटो

षबर कांई नहीं[3] ।

१ पालड़ी

सोझत था कोस ६ परवांण कूण मांहे । षेड़ा री जायगा मात्र-देवीराम गीरा बांसै सीचीयाई गीगारड़ी बीच, मगरा मांहे छै । तठै बाहळौ १ बावड़ी १ छै । फरसतां मांहे गांव पाडली मांडै छै, सु छै[4]।

१ गजणाय[1]

कोस ६ परवांण कूण मांहे । सारंग षांनीयो रौ षेड़ौ परै । कोस ०।। छै । भाषर मांहे हमैं सूनौ छै । दाधी गजणाई भेळी हुई ।

१ षीरण[2] षेड़ो

सोझत था कोस — रा० सुजांणसिंघ भगवांनदासोत मेर अमरा हीरावत चीता नुं नवौ षेड़ौ कर वसीयौ थौ । धरती हळवा १०० ढीबड़ा २ छै । षेड़ौ मगरा ऊपर बसायौ थौ, सु सूनौ छै ।

---

१. गंजणाई । २. बीरणो ।

---

1. बाहर से आकर । 2. आगे । 3. कोई जानकारी नहीं । 4. 'फहरिश्तों' में जो पाउली गांव लिखा मिलता है वह है ।

कोस ५ नीवास पचांध रै सांधै। लोक कोई नहीं। बसी रहै। दुधवड़ था कोस १ पिछम नुं जोड नजीक नाडी १ पोलावास दिसी, मास ४ पांणी। धरती हळबा ३० षेत सषरा। अरट ४ तथा ५ हुवै। वाहळो १ गांव आगै छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९९)	३२०)	३२०)	२१७)	१०५)

१ सारण

कोस ७ परवांण कूण मांहै। बांणीया मेर मैणा ढेढ बसै। धरती हळवा...चांच हुवै। सेंवज चावळ गेहूं चिणा हुवै। तळाब १ आसण कन्है छै। पांणी रौ मुदौ झरणा माथै छै। कुल झरणा भाषर रा वाहळा रा घणा छै, गोरीभरा' भाषर हेठै। पहली मोटा राजा मेरां रौ गांव थौ। मेरै बुरड़ मार नै सारण ली। कदीम हुल रजपूतां रौ गांव। कबाड़ो[1] भाषर रौ घणौ आवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७००)	१४९०)	९४७)	९८८)	७८२)

१ नीवड़ी

सोझत था कोस ८।। परवाण कूण मांहे। मेर हीज बसै छै। धरती हळवा ५० बाजरी, मोठ, तिल, कपास हुवै। ढीबड़ा ३० पांणी मीठौ। सेंवज चिणा। तळाब पांणी मास ८। बाहाळौ गांव नजीक। तोडा रा भाषर आगै वसीयौ छै। पहली मेर पातलौ बसतौ। पछै मेर सूजो रतना मेरउत रौ सारण था वसीयौ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	१००)	१०१)	१०१)	१००)

१. गोरानरा।

I. लक्ड़ी।

१ रसाड़

कोस १० परवांण कूण मांहे छै। मेर कांनी जसौ बसै। धरती हळवा २८ तथा २५। बाजरो, मोठ, मूंग हुवै। चांच ५ तथा ७ पांणी मीठौ। वाहळो १ थळ रौ, नोचै सीण री बेरो पीवै। मेर तेजौ किसने उदावत रौ नीबड़ी था आया। मोटा राजा री बार मांहे बसीयौ थौ। बीच षेड़ौ सूनौ हुवौ। हमें फेर बसीयौ छै। भाषर लोहड़ा में साजर री जड़ां नींबड़ी चीयाई बोरीमादा था सोस २॥।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	४०)	४०)	४०)	४०)

१ लांबोड़ी

कोस ६ पूरब दिसी। मेर नै कलाळ बसै। धरती हळवा २१, षेत भला। अरट १ बेल दो छै। सेंवज चिणा हुवै छै। तळाब १ राबड़ीयौ मास···पांणी। नदी गांव हेठै बहै छै। मेर डूंगौ पातळोत बसै। ढुंढा सारंग बसै। नजीक बगड़ी रै पटै रौ गांव छै।

१ गजणाई बड़ी

कोस ८ परवांण कूण मांहे। मेर बसै छै। धरती हळवा ४०। बाजरी, मौठ, तिल, कपास हुवै। ऊनाळी अरट १० चांच ५ तता ७। पांणी मीठौ, सेंवज। बाहळो १ गांव नजीक छै, तिणां रै बेरीयां पीवै। हेंसौ ४ मेरां रौ छै। कदीम हुलां रौ गांव छै। सु हुल मुवा तरै तेजौ नरसावत नुं रा० देवीदास जैतावत अठै बसायौ।

१ षोड़ीयौ

सोभत था कोस ११ परवांण कूण मांहे। मेर हीज रहै छै। धरती हलवा ३० तथा ३५, बाजरो, मोठ, तिल हुवै। ढीबड़ा ४ मीठा गेहूं हुवै। बाहळौ १ उगोण नुं छै। तिण री बेरीयां पीवै। बगड़ी रा पटा रौ गांव। पहळौ मेर चीताषांन बसतौ। पछै सूनौ हुवौ थौ। पछै मेर देवा करमावत नुं कालभर[1] था रा० प्रथीराज

---

१. कालभल।

१ सिरीयारी महेली

कोस १० रूपारास कूण मांहे। मेर बसै छै। हळवा ३० तथा ४० वाजरी मोठ तिल हुवै। ऊनाळी ढीबड़ा २ चांच ६ पांणी मीठौ। तळाव १, सहसमेळाव मास ६ पांणी रहै। सोंधलां रौ करायौ छै। द्रह १ वरसोंदीयो पांणी छै। मेर लालौ पातलोत बसै। जसवंत रै सरीयात रै वसीयौ आदू षेड़ौ तीरवा १ छै। रावत चाचा रौ थापीयौ। वावड़ो १ छै, पिछम नुं छै। बाहळौ १ बीजमारीयौ, उत्तर दिसी मांहे वेरा[1] छै, तठै पीवै छै। वरसोंदीया[1] पांणी मीठौ।

१ नांवरो

सोझत था कोस ६ छै। पूरब दिसी। मेर बसै। धरती हळवा ४०। पाली रौ गांव छै। ढीवड़ा १० तथा १२ भाषर धीरस री[2] नदी कोस ०॥ महादेव रौ थांन[2] छै। झरणा कुंड छै, पहला हुलां रौ गांव। पछै सवरात मेर बसता पछै वेगौ कूंपावत बसतौ, पछै बेरौ सांईदासोत वसीयौ थौ। पछै हमैं मेर माला चांदावत रौ बेटौ बसै छै। गांव घणी वार सूनौ रह्यौ छै। नै फैर बसीयौ छै।

१ राणावास

सोझत था कोस ६। वोरीमादा था कोस ०॥, मगरा री षंभ ढूंढा छै। वाहळो नजीक छै। कदीम मेर पातलोत रौ षेड़ौ छै।

१ मंसाजी री भाषर

सोझत था कोस १० परवांण कूण मांहे छै। बीजु षेड़ा री जायगा कोई नहीं।

१ कालोकोट

सोझत था कोस १० ईसांन कूण मांहे। षेड़ौ मगरा री षंभ

---

१. वेरियां। २. घारेसरो।

---

1. वर्ष भर तक चलने वाला। 2. स्थान, देवालिया आदि।

चांबंडीया रायरा नीचै। पहसी चीता मेर बसता। रा० दयाळदास रा गांव चांवंडीया भेंट कीयौ। षेत रूड़ा, चणा हुता। नाडी कुबोई छै। बाहळी १ छै। गांव चांवंडोयौ जैतारण री छै।

४५. परगने रा गांव सूना मांजरै मंड छै तिणरी विगत गोसवारा मांहे लिषी छै[1]।

१ रैबारीयां री बासणी

सोझत था कोस २ दिषण मांहे, रनीया कुवा कनै। कसबा मांहे षड़ीजै। कोहर सागरी छै। माळी कलाळ षेत षड़ै।

१ डुलीयो[2]

सोझत था कोस ५ दिषण मांहे। माढा था कोस ५[3] पंचाध षरक रै सांधै। तठै १ बावड़ी छै। तळाव १ मांणको षेड़ा री ठौड़ नींब ५ पीपळ १ छै। माढा री तीजौ बास मांडे छै।

१ गोयंदपुरौ

सोझत था कोस ६ नीवास दिषण में, बड़ा बींठोरा था छै। रा० गोयंद उदैसिंघोत बसार्यौ थौ। नाडी १ षेड़ा नजीक छै। षेड़ा सींव १ छैं। बडा वीठोरा री मांजरौ।

१ घटीयाळी

सोभत था कोस ४ मूल षरक रै मांहे। सुरायत धाकड़ी बीच षेड़ौ १, तठै कोहर १ छै। नदी सोझत वाळी षेड़ा नजीक सुरायतां री मांजरौ। सीरवी धनौ आय बसीयौ थौ।

१ सीरियारी बासणी

सोझत था कोस ५ उत्तर मांहे। अटबड़ा षड़ीजै छै। कुंभेळाव तळाव कनै केरली नाडी ऊपर पींपळ ४ छै। संमत १६५३ भेळी

---

१. 'ख' प्रति में यह शीर्षक नहीं दिया गया है। २. भुलीयो। ३. ०॥। ४. सुरीया।

१ सींचीयाई

घोस ८ परवांण कूण मांहे। मेर वांणीया कलाळ जाट कुंभार वसै। हळवा ५० धरती। वाजरी, मोठ, तिल हुवै। ढीवड़ा २१ ढांकुवां ११ मीठा। सेंवज चिणा हुवै। वावड़ी १ उगवण नुं द्रग वावै छै। नदी १ फळसा आगै छै। पहली मेर थांपर द्रग वसता। पछै मेर मेरौ आपा द्रग पात्त[1] रौ आय वसीयौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३००)	३०१)	२१०)	३९०)	२२५)

१ वोरीमादो

कोस ९ परवाण कूण मांहे। मेर हीज वसै। धरती हळवा ५० तथा ६०, वाजरी, मोठ, तिल, कपास हुवै। वेत पातळा[1], ऊनाळी नहीं। सारण परै कोस १ छै। मेर वोरोयौ मगरा रै वसीयौ। तिण वोरीमादो कहीजे। मेर वोरीयौ मुवौ तरै मेर गोमो धरीया था छांड नै आय वसीयौ। तळाव मास ४, वावड़ी १ वाहळौ १ नजीक छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०१)	१०१)	१०१)	१०१)	१०१)

१ गीगावड़ी[2]

कोस ७ परवांण कूण मांहे। मेर नै वांणिया वसै छै। हळवा ५० तथा ६०। जुवार, वाजरी, तिल, चिणा हुवै। चांच २० तथा २५ सेंवज गेहूं चिणा हुवै। हेंसै ६[3] मेरां नु गांव छै। कंटाळीया रै पटै रौ कोस १ छै। परै भापर छै तै ऊपर गाड[4] घणा छै। तिण वांसै[2] गीगारड़ी कहीजै छै। वाहळौ १ पछम दिसी छै।

१ थळ

सोभत था कोस ७ परवांण कूण में। मेर हीज वसै : धरती

१. दुगावता। २. गोगारड़ी। ३. हेंसा ५। ४. भाड़।

1. कड़ी जमीन वाले। 2. जिसके पीछे, कारण।

हळवा ४० बाजरी, मोठ, तिल, बण[1] हुवै । ऊनाळी ढीबड़ा ८ चांच ४० तथा ५०, पांणी मीठौ । करै तितरौ[2] सेंवज चिणा । तळाव पांणी मास ६ रहै । सींघोड़ा मांहै हुवै । वाहळो १ गांव नजीक छै । कंटाळीया रा पटा, कंटाळीया था कोस ०॥। छै । थळ १ मोटौ थौ तिण वासतै थळ हीज कहीजै छै । मेर हेंसै २, हुल कहीजै छै ।

१ फुलाज

सोझत था कोस १० रूपारास मांहे मेर हीज बसै । धरती हळवा ४० तथा ५०, बाजरी, मोठ, तिल, कपास हुवै छै । ऊनाळी नहीं, सेंवज गेहूं चिणा हुवै । तळाव २ पांणी मास ८ । नदी गांव रै नजीक छै । गांव रौ षेड़ौ विणजारे[3] फूल रौ बसायौ छै । देहरौ १ कुवौ १ फूल रौ करायौ छै । सु फुलाज कहीजै । सु मेर सुबरत[1] बसै बुरड़[2] बसै, हेंसा दो छै ।

१ गजणांई दाधी

सोझत था कोस ६ परवांण कूण मांहे । मेर बसै छै । धरती हळवा २० बाजरी मोठ तिल कपास पिण हुवै । अरट ३ चांच २ नदी नजीक । सेंवज नहीं । मेर वीकौ, चीतौ बसै छै ।

१ बांणीयामालो[3]

कोस ६ रूपारास कूण मांहे । मेर बसै । धरती हळवा २५ बाजरी मोठ हुवै । ऊनाळी चांच ५ छै । सेंवज चिणा, पांणी मीठौ । तळाव १ सिरीयारी दिसी छै । पांणी बेरी १ तिण पीवै । बाहाळो १ सिरोयारी दिसी छै । पहली मेर बांणीया अठै कदेक बसता । सु बांणीयामाळी कहीजै । मेर सींवरा ··· बुरड़ बसै । रावत डूंगो सारा[4] बसीयौ तद षेड़ौ बसीयौ ।

१. सवरात । २. करड़ । ३. वणीयामाली । ४. सारण ।

---

1. कपास । 2. जितना करे उतना ही । 3. बनजारे ।

कीयौ[2]।

३ दुधवड़ मांहे मंडीजै छै।

दुधवड़ मांहे षड़ीजै छै।

१ जोधड़ावास

दुधवड़ था दिषण नुं षोडीयाळै रै वानरै उपरलै कनै षेड़ा री ठौड़। नींब २, बड़ १, नाडी १ छै।

१ पातुवास

जोड मांहे पछम नुं। दुधवड़ अषावसी बिचै छै। पीपळ २ उकरड़ो १ अरट १ पताळीयौ[2]। नाडी वापरी[1]।

१ रायपुरौ[2]

दुधवड़ थी तोरवा २ वींठोरा रै मारग। दिषण नुं नाडी १, पेजड़ी नहीं।

३

१ नीवीया षेड़ो[3]

कोस ७ परक कूण मांहे। पळासला मांहे षेड़ौ लांबीया रावळ वास विच। षेड़ा री ठौड़ नाडी २ छै।

[4][१ हरसीयाहेड़ो

सोझत था कोस ८ पंचाध मांहै। चौदड़ा - था छै। पहली ढंढणीयौ। कहीजतौ। चोपड़ा रा जोड मांहै षेड़ौ छै। संमत १६६७ भा० देणीदास चोपड़ा भेळौ कीयौ।

१ हींगोलां री वासणी

सोझत था कोस २॥, घोषरा कोस ०॥, घोषरा पंचनडा बीच

१. छापरी। २. रामपुरो। ३. हेड़ो। ४. 'ख' प्रति का अंश।

1. शामिल किया। 2. पाताल तोड़ कुआ।

तळाई १, नदी वगड़ी वाळी षेड़ा नजीक छै। अरट १, षेड़ा तीरे। रा० जगनाथ बाघोत अठै बसीयौ। षोषरा मांहे षड़ीजै।

३ षोषरा मांहे बसता मांजरा—

१ बांणीयावस षारोळां रौ

सोझत था कोस २॥ ईसांन कूण मांहे। मोडरी नाडी था तीरवा २। षारोळ वसता। नाथलकुड़ी षोषरा बिचै आगर[1] ५ लूण रा हुवै। अरट १ हुवै छै। षोषरा में षड़ीछै[2]।

१ मंडलावस

षबर नहीं।

१ देवलोयाळी

षबर नहीं।

३

१ गोपावसणी

सोझत था कोस ४ ईसांन कूण में। सांडीया री बसी औ षेड़ौ छोड नै इण षेडै आय बसीया छै। सांडीयां रै षेड़ै तळाव १ मास १० पांणी सांडीया मांहे।

१ जेसावस

सोझत था कोस ६ षरक पचांध रै सांधै[3]। भागेसर था। सादवा १ नींबली रै मारग, तळाव गोपेळाव नजीक। पाधर में षेड़ौ[4]।

१ मालको

सोझत था कोस ७ नेवास मांहे। चिरपटीया मैं मांजरे। रांणावस चिरपटोये बिचै षेड़ा री ठौड़ पींपळ २ छै। तळाव १ छै।

---

1. खानें। 2. पीपर की धरती बोते हैं। 3. संधि-स्थल पर। 4. मैदान में बसा हुआ गांव।

रूपावास गोधेळाव षारीया लुढावस चाबड़ीयाक सुं सींव ।

२

३ कंटाळीया रा बास आंजरे

१ महेबड़ौ

सोझत था कोस ६ परवांण में । मगरा री जड़ां बिणजारा री घाटी रै मुंहडै[1] । बावड़ी १, ढूंढा छै । तळाव १ पड़ीहारां वाळौ । नाबरो हरीयामाळी सुं सींव ।

१ कोटड़ौ सुरावसती

कोस १ हीज कंटाळीया था, कोस १। पुरब में षेड़ौ । भाषर में मावादेवी कनै बावडी १, षेड़ा री ठौड आबली बड़ छै। बाहळो झरणा छै ।

१ तोसमारीयौ

कंटाळीया था कोस ... षेडौ ऊंचौ थळ माथै । तठै बड़ १ छै । पांणी षेड़ै नहीं[2] । थळ पोवता । रा० किसनसिंघ उदैसिंघोत बसायौ थौ ।

३

१ पाटमोगढ

सोझत था कोस ८ मगरे लगतौ, नाबरा था कोस १ आगे । हुल जिणुं री वडी ठकुराई हुई[3] । आगै बडौ सहर बसतौ । सहर सूना रा सारा अरष छै[4] । मांहे बावड़ी के कुवा द्रह पांणी रा छै । गोरी पातसाह रा कराया को महल पिण छै । षेत तो इण षेड़ा वांसे कोई नहीं । धारेश्वर महादेव था नजीक ।

---

1. सामने । 2. गांव पानी में नहीं है । 3. बड़ा राज्याधिकार हुआ । 4. चिन्ह मौजूद हैं ।

१ षारचीया प्रोहतां री

सोझत था कोस ७ परक नेवास रै सांधै। वडी षारची था कोस १ तीरवा १ ऊगवण मांहे। षेड़ा री ठौड़ वाड़ी छै। प्रोहत षेतावतां नुं राव गांगा रौ दीयौ सांसण थौ। पछै संमत १६४३ मोटै राजा प्रोहत मांडण करन कना लीयौ, नै गांव वाहड़सो गोधावस था सुं लीया। कंवरां सिकार षेलतां षांनाजंगो[1] हुई, तरै गांव लोपीयौ। हमें बडी षारची मांहे षड़ीजै छै।

२ भेटनडा रा मांजरा

१ जैतसी री वासणी

भेटनडा था कोस १ आथवण[2] मांहे। षेड़ौ पाधरौ, पांणी इण षेड़ै न थौ। मोडी री नाडी पीता। रा० तेजसी ईसरोत अठै ढांणी कर रहौ थौ सु संमत १७०५ सूनौ हुवौ। रा० काना रा० सादूळ इण षेड़ा वसता। रा० जैतसी उदैसिंघोत रा० जैतसी ईसरोत रूपावत नुं अठै बसाया था।

१ रा० जसा कलावत

रा० जैतसिंघ रौ चाकर भेटनडा था कोस १। षेड़ौ पाधर मैं, नींव ४ उठै आगे बाहळो १ चौपड़ वाळो बहै। तठै बेरीयां पीता। नाडी थोड़की मास ४ पांणी। बिसनोयां री वास कहीजतौ।

२
———
३२

४६. सोझत रा गांव सांसण चारणां नुं बांभणां नूं—

गांव, आसांमी गांव ३३ तांमें १५ बांभणा रा, १७ चारणां रा, १ जोगीयां रौ।

---

1. झगड़ा। 2. पश्चिम।

१४ बांभणां नुं सांसण तिणरी विगत—

१ रूपावस

सोभत था कोस ३ ऊतर मांहे। दत्त राव श्री मालदेजी री, प्रोहत राजा चोहथोत जात सीवड़ नुं संमत १५८८ जेठ सुद ७। पछै राव रांम मालदेश्रोत संमत १६६१ काती सुद ६ प्रो० रायमल राजावत नुं फेर दियौ। हिमें प्रो० चांदावत नै थळौ ऊदावत नै मोणदास जैतसीयोत वगेरै छै बांणीयां बांभण कुंभार रजपूत जाट षाती बसै। धरती हळवा २५० बडा षेत धोराबंध। अरट ५ चांच ४ सेंवज चिणा। लूण रा आगर ४ हुवै। तळाव बरसोंदियौ, पांणी बाहळा १ छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४५१)	६५२)	३९२)	६५६)	४६८)

१ वडीयाळौ

सोभत था कोस ४, ऊतरा था डावौ। रूपावस थी कोस १ छै। दत्त राव श्री मालदेवजी रौ प्रोहत राजौ चोथौ सीवड़ नुं। रूपावस पछै दीयौ थौ। पछै विषै गांव लोपांणौ[1]। पछे प्रो० रायसल राजावत राजा जगनाथ कछवाहा। ऊपर धरणै बेठौ थौ, तरै राव रायसिंघ चन्द्रसेनोत गांव धरणौ ऊठायौ। हिमें प्रो० लधै ऊदावत नै मोवणदास जैतसीयोत नुं छै। षारोळ बसै। धरती हळवा २० बाजरी मोठ हुवै। ऊनाळी नहीं, सेंवज चिणा हुवै। लूण रा आगर करै तितरा हुव। तळाव बरसोंदीयौ, पांणी बाहळा २ आगरां में रेलै छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५१)	२४७)	२६६)	३७९)	११६)

१ लुढावस

सोभत था कोस २ ऊतर दिसी। दत्त राव श्री जोधाजी रौ। श्रीमाळी आसलो हटदेवरोत नुं श्री गयाजी मांहे दीयौ। तिंवरी दी

---

1. प्रतिकूल समय में गांव जब्त हुआ।

तदे । पछै मोटै राजा बरकरार रापीयो[1] । हिमें वास गोगीनाथ चांन चंदोत नै मनोहर अणंदोत रांमजी हरनाथोत हरजी किसनोत रो छै । बाभण नै कुंभार वसै । धरती हळवा ३०, पेत काठा[2] जवार रा, अरट ढीवड़ा १० तथा १२ हुवै । सेंवज चिणा हुवै । तळाव १ मास ७ पांणी । बावड़ी १ नवी हुई छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३१५)	४१५)	३४७)	३९७)	४३७)

१ राधा री वासणी

सोझत था कोस ०।। ऊगवण था जीमणी १ । दत्त माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी रौ, श्रीमाळी त्रिवाड़ी कांना जगावत नुं । संमत १७०९ दीयौ । श्री कंवरजी हुवांरो[3] वधाई आई तरै । हिमें त्रिवाड़ी कांना जगा री छै । जाट वांणीया कुंभार वसै । पेत सपरा । धरती हळवा ४० अरट ४ ढीवडा २, वावड़ी १ छै । तळाव १ तोवांनो, बरसोंदीयौ पांणी ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५५)	३८५)	४२०)	६४२)	४३१)

१ धुहड़ीया वासणी

सोझत था कोस ९ आथण मांहे । दत्त राव श्री गांगाजी कुं० श्री मालदेजी रौ । प्रोहत मूळा कूंपावत सींवड़ नुं । धुहड़ीया वासणी चाहड़वास भेळा दिया । हिमें प्रोहत गोरधन जगनाथ सादूळ रा बेटा छै । प्रोहत जाट रजपूत वसै । धरती हळवा ४० पेत सपरा जवार बाजरी रा छै । ऊनाळी नहीं । सेंवज चिणा के हुवै । लूण रा आगर ६ हुवै । तळाव मास १० पांणी । गांव पोटलीयै पीवै । वाहळो १ मोकल नडी रै कांकड़[4] छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१३१)	२८१)	८२)	२१८)	२५६)

1. कायम रखा । 2. बालू रहित । 3. राजकुमार के जन्म की । 4. [illegible] में ।

१ पांचवौ

सोझत था कोस ७ आथवण मांहे । दत्त रा० वीरमदे वाघावत रौ, प्रौहत नरसिंघ चोथोत सीवड़ नुं । पछै मोटै राजा चोलण की तरै प्रोहत सीहे पीथावत प्रो० रायसल राजावत नुं आधौ गांव कबूल करणौ करायौ[1] । तरै गांव पाछौ दीयौ । हिमें प्रो० लाधौ ऊदावत मोणदास जैतसीयोत धनराज तिलोकसी रौ छै । रजपूत बांणीया बांभण बसै । धरती हळवा ४०, षेत कंवळा[2] । अरट २ कोसीटा २ चांच १५ । षारचीया हुवै, तिण सेंवज हुवै । तळाव मास ७ पांणी । बाहळो कोस ०। ऊपर छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५१)	१५६)	२१०)	१७५)	१५५)

१ चाहड़वस

सोझत था कोस ६ आथण था जीमणो[3] । दत्त राव श्रीमालदे जी रौ प्रोहत मूळो कूंपावत सीवड़ नुं, धुहड़ीया वासणी साथै दीयौ । हिमैं प्रो० राघोदास धनौ किसनावत नै रूपा सांवळदासोत नुं छै । जाट रजपूत बांणीया बसै । धरती हळवा ८० षेत कण नै कंवळाठी बड़ा २ कोसीटा २ चांच ६ । सेंवज चिणा हुवै । तळाब मास ४ पांणी । पछै बेरीयां पीवै । बाहळा २ कोस ०।। छै । कोहर नहीं ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६४)	२८४)	५४७)	३७८)	३६६)

१ धरमावसणी – अनंत री बासणी

सोझत था कोस ५ आथवण मांहे । दत्त राव श्री गांगाजी रौ । श्रीमाळी बास अनंत रीषावत नु गांव बोहड़ानडो नै धरमावसणी दीया था सु बोहड़ानडी मोटै राजा उरो लीयौ[4] । अै गांव छै, हिमें बास

1. स्वीकार करना, मंजूर कराया । 2. कोमल मिट्टी वाले । 3. दांई ओर । 4. जब्त कर लिया ।

जीवण सांवळ रा नै हरदास राघोदास रा छै। धरती हळवा ३० षेत काठा मटीयाळा। अरट ढीबड़ा ६ हुवै छै। श्रीमाळी बास छै। तळाव मास ७ सूं ८ पांणी। सुराइतां गांव नजीक छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	२०६)	३३०)	२४०)	१३५)

१ पळासलो बासरौ

सोझत था कोस ७ ऊतर मांहे। दत्त राव श्री गांगाजी रौ श्रीमाळी बास सदा ऊछतोत नुं संमत १५८५ बैसाष बद १२ दीयौ थौ। पछै राव श्री मालदेजी संमत १५९४ रै माहवद ७ तांबापत्र कर दीयौ। हिमें बास श्रीरांम नै कलौ माधोदासोत छै। नै नरांईणदासं श्रीवात रौ छै। जाट नै बांभण बसै। धरती हळवा ४० षेत काठा कंवळा। ढीबड़ा २ कोसीटा २ चांच २ सेंवज गेहूं हुवै। तळाव था मास ७ पांणी। भाषरी २ छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१७०)	२००)	५०)	१६९)	१८१)

१ नरसिंघ री वासणी

सोझत था कोस २ दषण मांहे। दत्त राव श्री जोधाजी रौ, श्रीमाळी जोसी मुरार बेतावत भाटीड़ा नुं। पछे राजा श्रीऊदैसिंघजी पटै कर दीयौ छै, संमत १६४२ आसोज सुद ४। हिमें जोसी कचरो दामोदर रौ नै वीसनदास मथुरादासोत रौ छै। सीरवी कुंभार बांभण रजपूत घांची बसै। धरती हळवा ३० षेत सषरा। अरट १० तथा १२ हुवै। तळाव मास ८ पांणी हूंमालीया पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	८६)	५५४)	२३५)	११५)

१ कांनावस

सोझत था कोस ६ आथवण मांहे। पहली ताव वेरालौ हुतौ। दत्त राव श्री मालदेजी रौ पोकरणो देरासरी कांना रंगावत नुं जात

कोलांणी नुं। हिमें बिरांमण जीवण जसावत रौ नै मनोहर रांमावत छै। जाट रजपूत बांभण बांणीया बसै। धरती हळवा २५, षेत काठा मटीयाळा। ढीबड़ा २ हुवै, सेंवज चिणा हुवै। तळाव १, मालपुरीया रै कांकड़ बहै। बोराल कोटेचां री कदीमी। गांव कोटासण देवी रौ थांन[1]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३२)	३८७)	१७५)	२४६)	१९६)

१ मालपुरीयौ

सोझत था कोस ५ आथवण मांहे। दत्त रावश्री सालदेजी रौ, पोकरणा देरासरी कूंपा रंगावत जात कोलांणी नुं। हिमें बिरांमण पीतांबर पीरागोत नै हरबंस दमा रौ छै। बांभण सीरवी बसै। बसी रा० अचळदास री। गूजर बांणीया रजपूत। धरती हळबा २० षेत सषरा, अरट ३ चांच २ सेंवज चिणा हुवै। तळाव कूंपासर मास ४ पांणी। बाहळा २ गांव नजीक छै। भाषरी ऊपर देरासरी कूंपा रा घर छै। ग्रहण मांहे गांव दोयौ[2]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३४)	३७७)	२११)	१८०)	२१९)

१ तालकीयौ

सोझत था कोस ६ पंचाध मांहे। दत्त राव गांगाजी रौ बिरांमण डूंगर नाथावत विसनो जात कुचलाऊ दीवांन नुं। हिमें ब्री० गंगादास तीकम रौ जगनाथ, गोपीदासोत मेघराज केवळ रौ छै। रजपूत बांभण बसै, बास २ गांव छै। धरती हळवा ३० धांन रूड़ा[3]। अरट ढीबड़ा ३ सेंवज चिणा हुवै। तळाव डूंगरसर मास ८ पांणी पूनासर नजीक पहली गूजर तालो बसतौ।

---

1. देवी का स्थान। 2. ग्रहण के अवसर पर पुन्य के रूप में दिया गया गांव। 3. अनाज अच्छा पैदा होता है।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१००) २२५) १२८) २०४) १८०)

१ नाथलकुंड़ी

सोभत था कोस ४ ऊगवण मांहे। दत्त राजा ऊदेसिंघजी री। भट्ट तिलंगा रा बेटा नाराइण नुं। हिमें भट्ट गोपाळ बाळमुकंदोत छै। नराइण रै छोरु[1] न हुवौ सु भाई रा छोरुवां नुं गांव छै। जाट नै सीरवी बसै छै। धरती हळवा ३६ षेत सषरा। अरट ४ ढीवड़ा ४ चांच १२ सेंवज गेहूं चिणा हुवै। लूण रौ आगर १ छै। तळाव मास ८ पांणी। बाहळौ १ धु[2] मांहे छै। तिण ऊपर ऊनाळी हुवै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५०) २००) ३२४) ४२०) ५८१)]

१४

४७. १७ चारणां नुं सांसण—

१ पंचेटीयो

सोभत था कोस १२ दिषण मांहे। दत्त माहाराजा गजसिंघजी रौ आढा दुरसा मेहावत कीसन··· दुरसावत नुं। संमत १६७७ रा काती सुद ७ री बही में आढो महेसदास किसनावत छै। बांणीया सीरवी बांभण[1] बसै छै। धरती हळवा ४०० जवार बाजरी मूंग तिल हुवै। ऊनाळी अरट १२। तळाव किसनेळाव पांणी बरसां २ रौ छै।
संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७८४) १०५७) २०७१) १२९५) १२९२)

१ अगंदवास

सोभत था कोस ९ दिषण मांहे। दत्त राजा ऊदैसिंघ रौ बारैट

१. चारण।

1. वंशज, वच्चा। 2. ध्रुव, उत्तर।

चुंवडदास कलावत नै देवीदास रांमदासोत[1] छै। सीरवो कुंभार रजपूत चारण बांणीया बसै छै। धरती हळवा ३० षेत काठा कंवळा। अरट १० तथा १२ हुवै। तळाव १ मास ५ पांणी। नदी सूकड़ी चेलावस रै कांकड़ बहै छै। मगरो गांव था कोस ४ छै।

१ मोरटहुको

सोझत था कोस १० उतराध[2] मांहे। दत्त माहाराज जसवंतसिंघजी रौ कुंवर प्रथीसिंघ रौ बारैट नाथा रतनसीयोत रोहड़ीया नुं। संमत १७१५ रा फागण सुद ७ सुक्र दीयौ। जाट पलीवाळ रजपूत बांणीया बसै। धरती हळवा ६०, षेत काठा कंवळा। ऊनाळू नदी ऊपर। अरट ४ कोसीटा १० चांच ४। तळाव मास ३ पांणी हुवै। नदी लूणी कोस ०। ऊपर छै।

१ गोधावास

सोझत था कोस ७ दिषण मांहे। दत्त राजा जसवंतसिंघजी रौ आढा महेसदास मेघराज किसनावत नुं, संमत १७०२। हिमें आढा महेसदास किसनावत नुं छै। सीरवी जाट बसै। धरती हळवा ७० षेत काठा। ऊनाळी अरट १० हुवै। तळाब मास ८ पांणी नदी बाहड़सा दिसी। पहली प्रोहत षेतावत नुं सांसण थौ। मोटै राजा लोपीयौ।

१ लोहणहेड़ो[3]

सोझत था कोस ६ वायब कूण मांहे। दत्त राव रिड़मल[4] रौ बाहारैट सांकर नेतसीयोत नुं। कहै छै राव मालदे रौ दीयौ छै। हमैं बारेट चांवडदास किलांणदासोत छै। कुंभार रजपूत चारण रैबारी बसै। धरती हळवा ४०। बाजरी मोठ हुवै। ऊनाळी, अरट १ चांच २०। लूण रौ आगर १ हुवै छै। तळाव १ मास ८ पांणी बेरीयां हाथ ५, पांणी भळभळो। वाहाळो १ पारो दिषण मांहे वहै।

---

१ रामचन्दोत। २. उतराध या डावो। ३. लाहिणहेडो। ४. राव रांम मालदेवोत रो।

१ रहैनडी

सोझत था कोस २ दिषण मांहे। दत्त राजा सूरजसिंघजी री बारहट लषा नांदणोत रोहड़ीया नुं संमत १६७२ मंगसर सुदि ७। हमें बारेट आसकरण प्रीथीराज गिरधरदासोत छै। जाट वांणीया रजपूत बांभण चारण बसै। धरती हळवा १००। षेत काठा कंवळा। ऊनाळी अरट ढीबड़ा २२ छै। सेंवज चिणा करै जितरा हुवै। तळाव १ वीसलनडी। वरसोंदोयौ पांणी हुवै। कुवौ १ बंधवां नाडो मांहे छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५६)	५७२)	६०२)	१०८०)	९७१)

३ रेपड़ावास

सोझत था कोस ५ उत्तर मांहे। षेड़ौ एकहीज छै।

१ रेपड़ावास बडौ

दत्त राव श्री जोधाजी रौ। बाहरेट रेप चाहैडोत रोहड़ीया नुं। पछै रेपा री हेंस गळी। तेजा चाहड़ोत री हेंस रा हमें बारैट चूंडौ अषावत छै। जाट रजपूत चारण बांभण बसै। धरती हळवा ८० ऊनाळी। ढीबड़ा ४ सेंवज चिणा हुवै। तळाब मास १२ पांणी।

१ रेपड़ावास षुरद

वडावास था कोस ०।, उगोण मांहे। सूनो षेड़ौ छै। दत्त राव श्री गांगाजी रौ बारैट भैरव नीबाबत रौहड़ीया नै। वीर[1] मुठ साथे दीयौ। हमैं गजसी नरावत नै माधौ मेवाहरोत[2] छै। धरती षेत रूड़ा अरट १ तळाव १, भैरवनडी पांणी मास १०।

१ रेपड़ावास तीजौ

तिण रौ षेड़ौ कोई नहीं। षत्रां रीस रहै छै। दत्त रा० प्रथीराज कूंपावत रौ, बाहरेट देवीदास भेरवोत नुं। धरती हळवा १० गांव था हारावासणी री दीवी थी। सु हमें षुरद रेपड़वास भेळी षड़ीजै छै।

---

१. पीर। २. मनोहरोत।

३

१ पळासलो रांमा रौ

सोझत था कोस ७ ऊतर मांहे। दत्त माहाराजा श्री जसवंतसिंह जी रौ, कुंवर श्री प्रीथीसिंघजी रौ सांदु नाथा अषावत नुं, संमत १७१५ रा पोस सुदि २ सोम सु गंगा ऊपर दीयौ। जाट बसै धरती हळवा ६०। षेत सषरा काठा कंवळा। अरट २ तथा ४ चांच २, सेंवज गेहूं चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी, पछै बेरां हाथ ८ मीठो भळभळौ पीवे। पहला ही औ गांव सांदु राम नुं सांसण हुतौ।

१ राजगीया वास बडौ

सोझत था कोस ७ दिषण था जीवणौ। दत्त माहाराजा श्री गजसिंघजी कुं० श्री जसवंतसिंघजी रौ दधवाड़ीया षींवराज जैमलोत नुं संमत १६९४ रा काती सुद ९ भोम दीयौ। हिमें दधवाड़ीयौ आसकरण प्रीथीराज षींवराजोत छै। सीरवी जाट बसै। धरती हळवा ५० षेत सषरा। ढीबड़ा ७ सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ८ पांणी। बाहळौ १ छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३३६)	४०७)	६६८)	५१९)	४३०)

१ सोभड़ावास

कोस ८ था जीवणौ। दत्त माहाराजा श्री गजसिंघजी रौ। गाडण केसोदास सांदुवोत नुं। संमत १६८३ रा जेठ सुदि १३ लाषपसाव[1] मांहे दीयौ। हिमें गाडण उदैकरण भोजराज, भींव केसोदास छै। जाट वांणीया चारण रजपूत बसै। धरती हळवा ५० धांन सारै हुवै। ऊनाळी नहीं। सेंवज गेहूं, नै लूण रौ आगर १ हुवै। तळाव १ मास १० पांणी। पछै मांगै पीवैं[2]।

1. लाख रुपये की कीमत का पुरस्कार जो प्राचीन काल में कवियों को सम्मानित करने के लिए दिया जाता था। 2. पड़ौस के गांव से मांग कर पानी पीते हैं।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
८२) ३०३) ३९) २५९) २६७)

१ रांमा री वासणी

कोस ५ कूण मांहे[1] । दत्त राजा श्री उदैसिंघजी री सांदू रांमौ धरमसीयोत नूं सांदू महेस नै थीरी रांमा रा बेटां नुं पहली । रा० प्रथीराज कूंपावत सांदू रांमौ धरमसीयोत नुं राव माळदेजी री बाहार मांहे दीयौ थौ, पछै नबाब षानषाना कह लरायौ थौ । पछै श्री पातसाहजी री हजूर नबाब वळे अरज कर नै वळे औ गांव पाछौ दीरायौ, अर हिमैं सांदू गोयंददास राघावत नै रतनसी देदु री कुंभो मनोहरदास रौ नै नाथौ अषावत छै । जाट रजपूत चारण बसै । धरती हळवा १०० षेत काठा कंवळा । चांच १० षारचो । सांडेव तळाब मास[2] पांणी पीवै छै । बेरीयां पांणी मीठौ पीवै । बाहळो नजीक ।

[3][१ नापावस

सोझत था कोस ६ आथण था जीवणौ । दत्त राजा श्री सूरजसिंघ जी रौ दधवाड़ीया माधवदास चूंडावत नुं । संमत १६५४ दीयौ । हिमैं दधवाड़ीयौ सूरदास नै मोवणदास माधोदासोत नै बिसनदास सांमदासोत छै । जाट बसै । धरती हळवा २० बाजरी मोठ हुवै । षेत कंवळा, ऊनाळी नहीं । सेंवज हुवै । करेके[1] चांच ही हुवै छै । तळाब मास ४ पांणी मीठौ । पछै मांगीयो पांणी पीवै । बाहळौ १ छै ।

१ बीजळीयावस

सोझत था कोस ४ दिषण था जीवणो । दत्त राव श्री सूरजसिंघ जो रौ कं० श्री गजसिंघ जी रौ । आसीयो वेरा करमसोयोत री बहू

---

१. धु माहे । २. मास २ । ३. 'ख' प्रति का अंश ।

---

1. कभी-कभी ।

देवलिगा आढी नुं संमत १६६४ रा माहवद ११। पेहली गांव लोळावस दुधवड़ रौ दीयौ थौ सु बरस १४ रहौ पछै वदळाय नै[1] बीजळीयावस दीयौ। हिमैं आसीयौ नरसिघदास नरहरदास जगावत छै। कुंभार सीरवी जाट चारण रजपूत बसै। धरती हळवा ३० षेत काठा ऊनाळी ढीबड़ा २ हुवै। तळाव १ मास ६ पाणी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११५)	२९४)	६२८)	४२५)	१२२)

१ मुळीयावस

सोझत था कोस ९ बाय व मांहे। लाहणहेड़ा था कोस ०॥ ऊगण मांहे। सूनौ षेड़ौ छै। दत्त श्री गांगाजी रौ बारहट तेजसी वीसलोत रोहड़ीया नुं। संमत १६६४ रा० करमसेण अग्रसेणोत नुं सोझत हुई तरै बारट राजसी अषावत नुं औ गांव दीयौ थौ। सु जितरै करमसेण नुं सोझत रही तितरै न ऊतरीयौ[2]। पछै राजा सूरजसिघजी फेर पाछौ दीयौ। हिमें बारट चांवडदास किलांणदासोत छै। धरौ हळबा २० षेत सषरा। अरट २ षारचीया नैं चांच हुवै छै। तळाव मास ३ पांणी रहै। षेत लाहणहेड़ा रा लोक षड़ै छै।

१ बुटेळाव

सोजत था कोस ३ ऊतर मांहे। षेड़ौ सूनौ छै। बडा बूटेळाव भेळा बसै। तळाब कचोळीया कनै षेड़ौ छै। दत्त राव श्री जोधाजी रौ कनीयां वीका नुं। पछै राजा ऊदैसिघजी सांसण था चोलण की तरै वास ३ बुटेळाव रा चारणां नुं सांसण था सु षालसै कीयौ। तरै यांरौ ही वास षालसै कीयौ नै धरती हळवा ३ रूपाबस दिसी नुं दी सु छै। हमें कनीयौ रूपसी ठाकुरसी चतरावत छै।

१७

1. वदलकर। 2. लिया नहीं गया, हटाया नहीं गया।

४८ जोगीयां नुं—

१ हीराबस

सोभत था कोस ७ ऊगवण दिसी। दत्त माहाराजा जसवंतसिंघजी रौ जोगी षेचरषांन नीरमळवन रा चेलां नुं, संमत १७०३ दीयौ। पेहली रा० सुजांणसिंघ भगवांनदासोत औ गांव षेचरषांन नुं दीयौ थौ। पछै सुजाणसिंघ मुवौ[1]। तरै गांव था चोलण हुई तरै श्री माहाराजाजी तांबा रै पत्र सांसण कर दीयौ[2]। हिमें जोगी हरषवन षेचरवन रै पाट छै। जोगी बसै छै। के हाळी छै। धरती हळवा २० षेत रूड़ा अरट ५ बंधवां[3] छै। ढुंढा था नजीक सदा बगड़ी रा पटा रौ गांव छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०१)	१००)	२२०)	१९६)	१९१)

३२

४९. तारीज दत्त दीया त्यांरा सांसणां रो—

जुमले	बांभण	चारण	जोगी	आसामी	रेष रु०
४	२	२	०	राव जोधा रिणमलोत	१५५०)
८	६	२	०	राव गांगा बाघावत	२६५०)
१	१	०	०	राव बीरमदे बाघावत	४००)
४	४	०	०	राव मालदे गांगावत	२५००)
२	१	१	०	राव ऊदेसिंघ मालदेवोत	१३००)
१	०	१	०	राव रांम मालदेवोत	७००)
३	०	३	०	राजा सूरजसिंघजी	१२५०)
३	०	३	०	राजा गजसिंघजी	२२००)
५	१	३	१	माहाराजा जसवंतसिंघजी	३०००)
२	०	२	०	रा० प्रिथीराज कूंपावत	४५०)
३३	१५	१७	१		

1. मृत्यु हो गई। 2. ताम्रपत्र पर दान के रूप में गांव लिख दिया। 3. पक्के बंधे हुए।

विगत सांसण रा गांवां री—

गांव		आसांमी
४		राव जोधा रिणमलोत
२	६५०)	बांमण मालीयां नुं
१	६००)	लुढावस
१	३५०)	नरसिंघ वासणी।
२	६५०)	
२	६००)	चारणां नुं
१	४००)	रेपड़ावस बडौ बारटां नुं।
१	२००)	बुटेळाव रौ बास कनोया नुं।
२	६००)	
४	११५०)	
८		राव गांगौ बाघावत
६	२३००)	बाभणां नुं
१	४००)	धुहड़ीयावसणी
१	४००)	मालपुरीयौ
१	२००)	पळासलो आसा रौ
१	४००)	चाहड़बस
१	४००)	धरमावसणी
६	२३००)	
२	३५०)	चारणां नुं बारटां नुं
१	२००)	मूळीयावस
१	१६०)	रेपड़ावस षुरद
२	३५०)	
८	२६६०)	

१ रा० बीरमदे वाघावत

१ ४००) बांभण प्रोहत सीवड़ नुं
१ गांव पांचवो

१

४ राव मालदे गांगावत

४ २५००) बांभणां नुं
१ १५००) रूपावस
१ २००) कानावस
१ ६००) वड़ीयालो
१ २००) मालपुरीयौ

४ २५००)

१ राव राम मालदेवोत चारणां बारटां नुं

१ ३००) लाहणहेड़ो

१

२ राजा ऊदेसिंघ मालदेवोत

१ ३००) बांभणां नुं गांव नाथलकुड़ी
१ १०००) चारणां नुं अंगदवस

१ १३००)

३ राजा सुरजसिंघ ऊदेसिंघोत चारणां नुं

१ ७००) रेहनडी
१ ३००) नापावस
१ २५०) बीजळीयावस

३ १२५०)

३ राजा गजसिंघ सूरसिंघोत चारणां नुं

१ १५००) पांचेटियो
१ ४००) राजगीयावस वडो

१ ३००) सोभड़ावस

३ २२००)

५ माहाराजा श्री जसवंतसिंहजी

१ ७००) बांमणां नूं १ गांव राधा री वासणी

३ २२००) चारणां नुं

१ १०००) मोरहटहूको

१ ७००) गोधावस

१ ५००) पळासलो

१ १००) जोगयां नुं

१ गांव हीराबस

५ ३०००)]

२ रा० प्रिथीराज कूंपावत चारणां नुं

१ रांमा री वासणी ४००)

१ रेबड़ावास तीजो ५०)

२ ४५०)

३३ १६००)

(३) वात परगने जैतारण री

१. परगनो जैतारण जोधपुर था कोस २७ ऊगवण था कूण जीवणे री। वडी ठौड़ बडी ऊनाळी। संमत १५२५ नवौ सहर बसीयौ। आद सहर आगै वारी ठौड़ वसतौ। तिण री अजेस था आगली वणी अमारत धरती मांहे थी नीसरै छै[1]।

जैतारण कसबा री ठौड़ जैतु गूजर रहती[2]। तिण जायगां राव जोधौ राज करै तद बसीयौं। कितराहेक दिन सीधलां जैतारण हुती। सींधल रांणा री चाकरी करतौ,चाकर थकौ नै कायलांणै बसतौ। सु नरवद रूण रा साषलां रै परणीयौ हुतौ। सु सुपीयारी नरसिंघ री बैर तिण री बहन नुं नरवद परणीजै। तरै उणरै बाप आंणौ मेलीयौ[3] तरै सुपीयारी नरसिंघ कन्हा सीष मांगी। तरै नरसिंघ कह्यौ- तौ कन्हा नरबद आरती करावसी, तूं आरती नहीं करै तौ सीष देवूं, नहीं तौ सीष नहीं देऊं। तरै घणौ हठ हुवौ, कुंही कीयां[4] सीष न दै। तरै नरसिंघ गळै हाथ बहाड़नै[5] सीष दी, कह्यौ- तूं सुपीयारी आरती मत करे। पछै सुपीयारो पीहर आई। नरबद सतावत परणीयौ। आरती री बेळां हुई तरै नरबद हठ पड़ीयौ। कहै—कै तौ सुपीयारी आरती करै कै हूं उभी मेल लाडी[6] जाऊं। नरसिंघ आपरौ षवास नाई साथे सुपीयारी रै छांनौ मेलीयौ छै। घणो हठ हुवौ तरै सारै राज लोगे हठ कर नै सुपीयारी कन्हा आरती कराई, मांडां[7] कराई। नरसिंघ नुं षवर पोहती। सुपीयारी पाछी आई। तरै नरसिंघ घणा हवाल

---

1. जिसकी इमारतों के अवशेष अभी तक जमीन से निकलते हैं। 2. जैतू नाम की गूजरी रहती थी। 3. सुपियारी को वुलावा भेजा। 4. कुछ भी करने पर। 5. गले पर हाथ रखवा कर सोगंध निकलवाई। 6. दुल्हिन को यहीं छोड़कर। 7. जबरदस्ती से।

कीया[1]। सुदीयारी नरबद नुं समाचार दीया मो मांहे आ हुई छै, थे वेगा आवजो। पछै नरबद छांनौ घोड़े-वहल[2] बैस नै जैतारण था कोस १ अरट छै तठै रहौ। सु सुपीयारी आथण री मजूरणी रौ वेस कर नै माथै घड़ौ ले नीसरी। षीदौ दीवान थो सु बैठौ हुतौ। षीदे किसड़ी सी, अटकळी[3], आ तौ मजूरणी न हुवै। रषै[4] नरसिंघ वाळी सांषली हुवै। बात कहतां वार लागै नरबद उठै ऊभौ थौ सुपीयारी उठै गई। अरट रै कनारै कुंही गहणौ कपड़ौ वांसलां नुं[5] बहकावण रै वासतै नांषतो गई। नरबद तौ इण नुं घोड़ै-बहल बैसांण नै उडाया सु रात थकी कायलांणै आया। वांसै षीदा नुं चटपटी लागी[6]। कह्यौ—षबर करौ नरसिंघ वाळी सांषली घर मांहे छै? उठे जाय देषै तौ सुपीयारी नहीं। इण रा आदमी बाहार चढीया, आगै उण अरट कन्है गया। आगै कुंहीक कपड़ौ गेहणौ उठै लाधौ। तरै बाहारवां जांणीयौ आ कोहर मांहे पड़ी[7]। रात पोहर १ गइ छै तरै सहर षीदा नुं षबर मेल दीवी—तेरू कोहर मांहे पैसै सु मेलौ। अठा थी महैनुं षबर करां। उठै मेलीया तितरै किणहीक कह्यौ– आज तौ रा० नरबद सतावत आदमी १०० सुं फलांणै अरट उतरीयौ थौ। तरै जांणीयौ नरबद ले आयौ। वांसै दिनेक मास विमास लागा नरबद तौ मेवाड़ राणां कुंभा कन्है गयौ। सींधल साथ कर नै कायलांणै ऊपर आयौ। पाळ कन्है रा० आसकरन सतावत सिकार षेलतौ थौ सु तिण ऊपर हेरौ लागौ[8] थौ सु ले गयौ। आसकरन कितराहक साथ सुं मार नै कायलांणै ऊपर आया, गांव लूटीयौ। राठौड़ां री बेर घणी बंध कीवी[9]। नरबद रा घर भाषर रै षुडै[10] वांका था प्रोळ भींत हुती सु मिळीया नहीं[11] उवै नरवद रै झाल[1] वैठा तठै वेढ़ हुई पिण मांणस हाथ पड़ीया[12]

१. चाकरे झाल वैठा।

---

1. बड़ी दुर्दशा की। 2. घोड़ा गाड़ी। 3. अनुमान लगाया। 4 ऐसा न हो कि। 5. पीछे आने वालों को। 6 आतुरता हुई। 7. कुए में गिर गई है। 8. गुप्त रूप से पीछा किया। 9. औरतों को बंदी बनाया। 10. पहाड़ की ढाल में। 11. प्रवेश नहीं पा सके। 12. आदमी हाथ नहीं लगे।

नहीं। और राठौड़ां री १४० बैर बंध पड़ी। सु उठै रा हीज गाडा सैं जोतराया नै जैतारण ले गया। पछै सारी बहूबेटीयां नुं कपड़ा दे नै सोष दीवी। उहीज[1] बहल जोतराय पाछी आदमी साथे दे मेलीया। तठा सुं राठौड़ सींधलां बडौ वेध बधीयौ[2]। पछै राव जोधै री वारी रिड़मल रै मरण धरतो वांट ली। तरै सोजत जतारण रांणा री षोस[3] लीवी। तौ ही सींधला जैतारण मांहे था भागा मुड़ीया रहता। पछै राव सूजौ संमत ...... जोधपुर पाट बैठो। तरै पहली तौ आपरौ बेटौ ऊदा सुजावत नुं जैतारण बसायौ, सींधल परा काढीया[4], ऊदावतां रौ बडौ जमाव अठै हुतौ गयौ।

इतरा ऊदावतां नुं जैतारण हुई—

१ रा० ऊदा सूजावत नुं।

१ डूंगरसी ऊदावत नुं।

१ रा० तेजसी डूंगरसोत नुं।

१ रा० जसवंतसिह डूंगरसोत नुं।

१ रा० रतनसी रै बेटै नुं।

१ रा० रतनसी षींवावत नुं राव मालदे री दी हुती। पछै संमत १६१४ रा चैत बद ६ पातसाह री फौज कांमषांनी आयौ। साथै रा० जैमल वीरमदेवोत आयौ, तरै रतनसी कांम आयौ।

के दिनां पातसाहो चाकर हुवा छै। अकबर री पातसाही मांहे।

राव चंद्रसेण कणुजे थो तद रा० रतनसी रा बेटा किलांणदास गोपालदास रांम के तुरकां सुं मिळ नै जैतारण रहा हुता। पछै राव चंद्रसेण इणां नुं कहौ—हमारू[5] म्हांसुं गांव छांडीयौ जावै नहीं। तरै पछै राव चंद्रसेण इण री वसी आसरलाई मांहे थी तठा ऊपर आयौ। के रजपूत मारीया छै। ऊदावत फौज लेनै काणुजै ऊपर आया।

---

1. वे ही। 2. बड़ी दुश्मनी हो गई। 3 छीन ली। 4 निकाल दिया। 5. अभी इस समय।

मोटा राजा नुं संमत • • • पातसाहा अकबर आध दीयौ। गाव ६५ कसबे आधौ नै आधौ थौं। संमत १६५१ असाढ बदि १ लाहोर काळ कीयौ[2] तरै औ गांव पातसाहजी मोटा राजा रा बेटां नुं बांट दीया—

आधी जैतारण ऊदावतां नुं हुती। रा० गोपाळदास रतनसीवोत नुं रा० किलांणदासोत नुं पातसाह रा दीया गांव ७२, कसबो आधौ-आध हुतौ।

संमत १६६१ पोस अकबर पातसाह राजा सूरजसींघ नुं सारी जेतारण दीवी। सु राजा सूरजसिंघ संमत १६७६ भादुवा सुदी २ काळ कीयौ तठा सुधी रही।

राजा गजसिंघ नुं जैतारण बरकरार रही। राजा सूरजसिंघ रै रै मरणै बरस १६ भोगवी। रेष दांम रु० ६८५०८) मांहे टीकै बैंसतां हुई। पछै संमत १६८६ धरती ऊपर ईजाफौ हुवौ[2]। तरै जैतारण पिण रु० १२५०००) मांहे हुई। पछै संमत १६६४ जेठ बद ३ राजा गजसिंघ आगरै काळ कीयौ। तद एक बार जैतारण तागीर हुई[3]। रा० भींव किलांणदासोत जैतारण ऊपर ईजाफो कीयो रू० २०००००) मुकातो कर नै राजा जसवंतसिंघजी रै रा: राजसिंघ षींवावत लो। संमत १६६६ फागुण मांहें माहाराजा श्री जसवंतसिंघ नुं देस नुं विदा कीया, तद हजारी जात हजार असवार ईजाफौ हुवौ। तद दांम कोड़ १ मांहे रू २५००००) मांहे कर जैतारण दी। संमत १७११ रा काती मांहे पातसाह जी अजमेर पधारीया तद षबर पोंहची। जैतारण हासल घाट छै[4]। सोभत हासल बांध छै[5]। तरै दांम लाष २० जैतारण रा घटाया। दांम लाष ८० राषीया रु: २०००००) मांहे छै।

परगने जैतारण कसबा री वसती संमत १७१६ बरस मांडी छै—

---

1. मृत्यु हुई। 2. रेख में वृद्धी हुई। 3. जब्त हुई। 4. कम है। 5. अधिक कहे।

७२०	महाजन	२६८	वांभण
१७	कायेथ[1]	२५	तेली[१]
१२	सोनार	१००	तुरक
१०	दरजी	१०	पींजारा
२०	कुंभार	४	सिलावटा
१०	छींपा	२	मड़भूंजा
३५	ढेढ	१०	डूम[२]
२	कारटीया	१०	थोरी[३]
६०	माळी	२०	सीरवी[४]
१०	कलाळ	१५०	मुलतांणी
६०	रजपूत	१७०	जुलाहा बणगर
१२	कसारा	२०	सुतहार[2]
५	लुहार	५	भाट दसोंधी
५०	मोची	६	धोबी
५	नाचणा	६	हलालषोर

१८३९

परगनै जैतारण रा गांव सांसण छै, तिकां री विगत दत्त री[3]—

जुमले	वांभण	चारण	जोगी	रेष	आसांमी
२	२	०	०	१५००)	रा० ऊदा सुजावत री दत्त
३	३	०	०	२०००)	रा० जैतसी ऊदावत
२	१	१	०	६००)	रा० डूंगरसी ऊदावत
१	०	१	०	२००)	रा० षींवो ऊदावत

१. तेली-घांची। २. डूम-मगत। ३. थोरी-सरगरा। ४. सीरवी २००।

1. कायस्थ। 2. खाती। 3. दान दी हुई भूमि की विगत।

॥	॥	०	०	१०००)	राव मालदे गांगावत
३	१	२	०	१३००)	रा० रतनसो षींवावत
१	१	०	०	७००)	रा० जसवंत डूंगरसीयोत
॥	०	॥	०	६००)	रा० सुरतांण जैतसीयोत
१	०	१	०	४००)	रा० भांनीदास षींवावत
१	०	१	०	६००)	रा० सूरजसिंघजी
१	०	१	०	५००)	रा० सगतसिंघ उदैसिंघोत
१	०	१	०	३००)	रा० दलपत उदेसिंघोत
१	०	०	१	२००)	मेहरावत देवौ म्हेरावत ।
१८	८॥	८॥	१	१०२००)	

सांसण री विगत गांवां री विगत गांव = १८

२ राव ऊदो सूजावत रेष १५००)

१ वांभणां नुं तालकोयो नुं सवाड़ा नुं १२००)

१ वाभरवासणो[1] श्रीमाळीयां नुं ३००)

३ रा० जैतसो ऊदावत २००)

१ मोरवी वडी बांमण सींवडा नुं १५००)

१ मेरवो पुरद राजगुरां नै २००)

१ ब्रह्मापुरी गूजरगौड़ नुं ३००)

२ रा० डूंगरसी उदावत ९००)

१ गाव वजनां वासणी वांभण श्रीमाळीया नुं ३००)

१ गांव जोवावास चारण मेहडुवां नुं ६००)

१ रा० पींवो उदावत, चारण कवीयां नुं[1]

१ गेहावासणी २००)

---

१. भाभरवासणी ।

---

१. कविया शाखा के चारणों को ।

०॥ राव मालदे गांगावत

गांव करलाई[१] आधी बांभण सीवड़ीया नै १००)

३ रा० रतनसी षींवावत १३००)

१ लाषावासणी चारणां काछेला[1] नुं २००)

१ देहूरीयौं बांभण सीवड़ा नुं ६००)

१ गेहावास चारणां षड़ीयानुं ५००)

१३००) ३

१ रा० जसवंत डूंगरसोयोत

१ गांव करोलोयो श्रीमाळी बांभणां नुं ७००)

०॥ रा० सुरतांण जैतसीयोत

०॥ षीनारड़ो आधी बारैटां नुं ६००)

१ रा० भानीदास षींवाउत

१ बोहोगुण री वासणी चारण षड़ीयां नुं ४००)

१ राजा सूरसिंघ उदैसिंघोत

१ सींधला नडी चारणा षड़ीयां नुं ६००)

१ राव सगतसिंघ[२] उदैसिंघोत

१ तेजावासणी चारण आसीया नुं ३००)

१ मेर रावत देवौ मेहरोत

१ झीलेळाव जोगीयां नुं २००)

१८ १०२००) रेष रा छै

१. वीकरलाई। २. दलपत 'ख' प्रति सगतसिंह उदैसिंघोत द्वारा दिया गया संसण— आढां नुं गांव दागुलो—५००)।

1. कच्छ प्रदेश के मूल निवासी, चारणों की एक शाखा।

परगने जैताराण खालसै जमांबंधी री ठीक गोसवारा रौ सालीणौ–

८९६२६) संमत १६९२
८३४२४) संमत १६९३
८३३१९) संमत १६९४
७११०१) संमत १६९५
६७६६५) संमत १६९६
८७५५१) संमत १६९७
६०७३५) संमत १६९८
७००६४) संमत १६९९
८७५९१) संमत १७००
७६४५१) संमत १७०१
११०२२६) संमत १७०२
९२८६६) संमत १७०३
८६०३८) संमत १७०४
६६४६१) संमत १७०५
७०७९८) संमत १७०६
६०९८७) संमत १७०७
७५८५७) संमत १७०८
७२२५८) संमत १७०९
६०५४०) संमत १७१०
८३७५९) संमत १७११
७३६२६) संमत १७१२
६८८४५) संमत १७१३
७३६३६) संवत १७१४
५९३५४) संमत १७१५
६८५२९) संमत १७१६
११९३८१) संभत १७१७
) संमत १७१८
) संमत १७१९

२. कुल ठीक परगनै जैतारण तकमीनां रौ षालसो जागीरदार सांसण रा गांवां सिगळां रौ हासल रा दांम ऊपजे तांरी विगत–

११९५६५) संमत १७११ री साल
१०९०७६) संमन १७१२ री साल
१०९७९४) संमत १७१३ री साल
१०७६१६) संमत १७१४ री साल
९४१६८) संमत १७१५ री साल
१६७५१७) संमत १७१६ री साल
२२६३०६) संमत १७१७ री साल
१९३९७८) संमत १७१८ री साल
१२३४७६) संमत १७१९ री साल
४७७३२) संमत १७२० री साल
६०६३१) संमत १७२१ री साल

४०३९९) षालसै
२९५८८) षालसै रा
३३१०३) हासल गांव २९
१५५७१) जागीरदार

४२९३) वाजे रकमां		२५९३) सांसण	
४०३९९)		४७७३२)	

१२०४०) जागीरदार गांव ८१
११९२) सांसण गांव १८

६०६३१) १२७

परगनै जैतारण रा गांवां री फिरसत रौ गोसवारौ, मेळ—

रेख	गांम	आसांमी	
१०१२००)	२४	बडा गांव आवादांन षलासा अवल छै[1]।	
	१	कसबा जैतारण	७०००)
	१	देवली पीरागरी	७०००)
	१	देहूरीयो	६५००)
	१	बांसीयो	३८००)
	१	सांगाबस	३५००)
	१	कुटांणो	५०००)
	१	चांवडीयौ बडौ	२०००)
	१	वघीयाहेड़ौ	३५००)
	१	आगेवौ	६५००)
	१	नोबाज	७०००)
	१	भुभणदो	४०००)
	१	रावड़ीयाक	४५००)
	१	भांभणबास	३०००)
	१	पीपळीयौ कावडीयांरी[1]	३०००)
	१	रांणीवाळ	२५००)
	१	पाटवौ	३०००)

१. कापड़ीयां रौं।

1. आवादी व आमदनी की दृष्टि से खालसा के श्रेष्ठ गांव।

१	छीपीयौ षुस्याल[1]	६०००)
१	लोटौंधरी	७०००)
१	गलणीयौ	३०००)
१	बांझाकुड़ी	३५००)
१	नींबोळ	३०००)
१	रांमपुरौ	२०००)
१	बहेड़ो	२१००)
२४		१०१२००) अटकळ[1] सुं रेष[2]

३. ३६०००) ८ बडा गांव कांठा रा[2] मांहे रैत घणी बसैवांन लोग कीन्ही । सदा बसी रहै[3] ।

१	रांणपुर	६०००)
१	गिरी	५०००)
१	रास	४०००)
१	आसरलाई	४५००)
१	जुंठो	२०००)
१	बावरौ	५०००)
१	वलाहड़ौ	४५००)
१	करमावस माळीया रौ	४०००)
८		३६०००) अटकळ सुं रेष

४. ३३४००) २३ दोम गांव षुलासा रैत वसै छै ।

१	हुनीयावास वडौ	२०००)
१	रांमावास वडौ	१७००)

१. कुमावपुर । २. 'ग' प्रति में सभी गांवों की रेख अंकित नही है । 'ख' प्रति में [illegible] गांव [illegible] मिलाने से कुल गांवों की संख्या २४ होती है । ३. सदा वडो वसीयां [illegible] ।

1. [illegible] से । 2. सीमा पर स्थित ।

१	हुनोबास षुरद	९००)
१	रांमवास षुरद	१३००)
१	सोमावास	२३००)
१	श्राकहळी	१७००)
१	राजाढंढी	१५००)
१	वीरलौ	२३००)
१	पीपळीयौ वीठा रो	२३००)
१	ठाकुरवास	१०००)
१	षीनाबड़ी	११००)
१	लुभड़ावास	७००)
१	मोडरौ	२९००)
१	प्रथीपुरौ	१६००)
१	वीकरळाई[1]	११००)
१	मुरड़ाहो	११००)
१	मालपुरीयौ	१८००)
१	रतनपुरौ	७००)
१	लाहाबासणी	११००)
१	षातीवास	६००)
१	पालुवास	१७००)
१	भाषरवास	१०००)
१	सीतरीयो[2]	५००)
१	बलुपुरो	५००)
२३		३३४००)[3]

५: १२४००) ११ दौम गांव वसीयां लायक रैत घणी कोई नहीं[1]।

१. 'ख' प्रति में इसे आधा गांव गिना है. आधा 'षीनावड़ो'। २. लीतरीयो। ३. 'ख' प्रति में रेख अंकित नहीं।

1. आबादी अधिक नहीं।

१	सामोषी	६००)
१	षराटीयौ	१७००)
१	बरि	८००)
१	नीलाबो	१३००)
१	नीबहेड़ो गीररी रो	११००)
१	बुटीळाव	१७००)
१	ऊदेसी कुवो	७००)
१	हाजीवास	६००)
१	षरांटीयो षुरद	१६००)
१	महेसीयो	१७००)
१	उषलीयो	६००)
११		१२४००)[1]

६. ४५००) ८ दोम गांव रैत नहीं बसीयां लायक–

१	पालीयावास रासे री[2]	६००)
१	धूलकोट	७००)
१	वांघणी	२००)
१	लोहामाळी	२००)
१	चांवडीयौ गिररी री	६००)
१	वीचपुड़ी	५००)
१	टुकड़ो	७००)
१	चांवडीयो रायपुर री	५००)
८		४५००)[3]

७. ६४००) २० मेरां रा गांव–

१२ बसता गांव अमल मांने[1] आवादांन—

१ रेहड़लो[१] गिररी री	७००)
१ नांदणी गिररी री	२५०)
१ लोहचौं	३००)
१ मोडरीयौ	१००)
१ देवली हुलां री	३००)
१ कांणवो	१५०)
१ मांकड़वाळी	१०००)
१ कालब	१००)
१ रातड़ीयौ	६००)
१ चीतार	२००)
१ माल्हणी	३००)
१ पंचायणपुरौ	१००)
१२	४१००)[२]

८. ८ गैर अमल गांव वसै, अमल न मांनै[2]—

१ काणुजो	१००)
१ लालपुरा अजमेर बांसै गयौ[२]	२००)
१ मांनपुरो अजमेर बांसै गयौ	२००)
१ कोटड़ो	१००)
१ चांग[३]	५००)
१ सीराधणो अजमेर बांसै गयौ	१००)
१ कोवरो[४]	१००)

१. रेहलड़ो। २. 'ख' प्रति में रेख नहीं। ३. चांगू। ४. कोवड़ो।

1. मारवाड़ का राज्याधिकार मानते हैं। 2. राज्याधिकार नहीं मानते।

तळाव मास ५ पांणी । बावड़ी १ पांणी भळभळो[1] ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२४४७)	३७८७)	८३०१)	५५३८)	४५५२)

१ बांसीयौ

जैतारण था कोस ६ दषण मांहे । जाट बसै । धरती हळवा १५०, षेत सघरा । अरट ११ ढीबड़ा ४२ हुवै । गांव हाळी थोड़ा छै, वासत वसी १ गांव मांहे राखै छै । हमार रा० बलू परतापोत बसै छै । सेंवज चिणा सारी सींव हुवै । धोरा छै, तळाव वरसोंदीयौ पांणी । बाहळो १ पींपळीया था आवै । असल षालसा रौ गांव । पटे ही हुवै छै ।[2]

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२२०)	३०८५)	३३७१)	४३२८)	२०६७)

१ नीबाहेड़ो

जैतारण था कोस ४ दिषण मांहे । जाट बाणीया कुंभार सीरवी वसै । धरती हळवा ६० षेत काठा कंवला । अरट ५ ढीबड़ा २५ चांच ४, सेंवज चिणा गेहूं सारी सींव में हुवै । तळाव मास ७ पांणी बाहळो जुठोरायपुर रौ दिषण में बहै । बावड़ी १, कोहर १ मीठौ छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५६८)	१८११)	४१६५)	२७४१)	१६२९)

१ कटाहड़ो[1]

जैतारण था कोस १॥ उगोण मांहे । जाट बांणीया बांभण वसै । धरती हळवा १२० षेत कंवळा बाजरी मोठ रा । अरट १० ढीवड़ा ३० चांच १० हुवै । सेंवज चिणा रेल आधी सींव में हुवै । तळाई मास ४ पांणी । कोहर १ गांव बीच मोठो । जोड़ १ वीघा ५०० छै । नदी पेरवा[2] भापर रेलीजै छै । असल षालसै रौ गांव ।

---

१ कुटाड़ो । २. परवा ।

---

1. कुछ आसानी से हुवे । 2. जागीरदार के पट्टे में भी दिया जाता है ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
	२२६५)	३८४०)[1]	४७२९).	३१५७)	३७५४)

१ वाघीया हेड़ो

जैतारण था कोस ३ दिषण था डावौ। जाट बांणीया बसै। धरती हळवा १०० बाजरी मोठ हुवै। षेत कंवळा उन्हाळी अरट ८ ढीवड़ा १०, सेंवज चिणा हुवै। नदी कांणुजा वाळी गांव नजीक तिण री बेरीयां पांणी पीवै। तळाव बावड़ी कोई नहीं। असल षालसै रौ गांव।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
	२३६१)	२८१८)	२०४८)	४२००)	२३१९)

१ पाटवो

जैतारण था कोस ४ आथण था डावौ। जाट बांणीया वसै। धरती हळवा २०० बाजरी मोठ तिल हुवै। षेत कंवळा, अरट ८ ढीवड़ा ८, सेंवज हुवै। तळाव मास ८ पांणी। देहूरीया वाळा चारणां नुं अठा री हीज धरती छै[1]।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
	११६३)[2]	१७५७)	३४६८)	२२७३)	१२५०)

१ वहेड़

जैतारण था कोस ३॥ आथवण था जीवणी। जाट बांणीया बांभण रजपूत वसै। धरती हळवा १०० जवार बाजरी षेत सषरा। ऊनाळी अरट ७, ढीवड़ा ५ हुवै। सेंवज चिणा रेल जैतारण वाळी[2] हुवै। तळाव मास ४ पांणी। पालौ[3] गांव सषरौ हुवै छै। निपालस

१. ३८३०)। २. ११६३)।

1. इसो गांव की जमीन देहूरीया के चारणों को भी दी हुई है। 2. जैतारण की ओर से वहकर आने वाला पानी। 3. छोटी बेर की झाड़ियों के पत्ते जो विशेष रूप से ऊंट और बकरी खाते हैं।

गांव १ षाळसै रौ छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८४७)	१४३७)	२७२१)	१६३३)	१०१०)

१ रांमपुरौ

जैतारण था कोस ५ दिषण था जीवणौं । जाट बांणीया बांभण बसै । धरती हळवा ५०, बाजरी मोठ षेत कंवळा । अरट ढीबड़ा २८, सेंवज चिणा हुवै । सींव घणी, हाळी[1] थोड़ा तिण वासतै बसी मांहे राषी छै । रा० बलु ईसरदासोत री तळाव वसडो[1] नहीं । नदी भुठ वाळी नजीक ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३६९)	१५७६)	२६८४)	१९२२)	१३५४)

१ पीपळीयौ कापड़ीया रौ

जैतारण था[2] डावौं । जाट रजपूत बसै । धरती हळवा ५० बाजरी मूंग षेत कंवळा । अरट ढीबड़ा २० कोसटा ४ चांच १० हुवै । सेंवज चिणा सगळे हुवै । जाट कापड़ीया रौ बसायौ छै । जोड २ छै । नदी लूणी गांव नजीक । तळाव मास ४ पांणी । बाहळो १ जोड में रेळीजै छै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०९१)	२२५०)	३५५२)	१९८२)	८१७)

१ चावडीयौ वडौ

आगेवा कन्है जैतारस या कोस ३ दिषण था डावौं । जाट बसै । धरती हळवा ४५ बाजरी मोठ पेत कंवळा । ऊनाळी अरट ७ हुवै । हाळी थोड़ा छै सु बसो एक गांव में राखै छै । तळाव मास ८ पांणी ।

१. मढो । २. कोस २ ऊगवण (अधिक) ।

[illegible]

कदीम षीचीयां रो गांव। कुवौ १ पांणी मोठौ। असल षालसै रौ गांव। रा० अणंदरांम दवारकादासोत री बसी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९१५)	१४७२)	९४०)	२५७०)	११०७)

१ रांणीवाळ

जैतारण था कोस ३ पिछम मांहे। जाट नै नंदवाणा बोहोरा बसैं। धरती हळवा ३० तथा ४० षेत सषरा। जवार बाजरी मोठ हुवै। ऊनाळी ढीबड़ा १२, सेंव्रज चीणा हुवै। तळाव मास ५ पांणी। निषालस गांव पटै ही रहौ छै[1]।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९४०)	२९४५)	३६५१)	१४७१)	११५५)

वसीं वाळा बडा गांवां री विगत—

'[१ रायपुर

जैतारण था कोस ६ रूपारास कूंण मांहे। बांणीया जाट रजपूत बांभण तेली बसै। धरती हळवा ४०० सषरा षेत, ऊनाळी। बडौ गांव सारी सींव सेझौ। बाग २ सषरा छै। मांहे कूवौ मीठौ छै। कांठा रौ गांव। बसती रौ मुदौ बसो माथै छै। बसीयां सदा रहै। तळाव १ रै वरसोंदीयौ पांणी। नदी रायपुर था डावै[2] जैतारण आवै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३२३६)	४३०४)	५५०७)	२६५७)	१९३७)

१ गीररी

जैतारण था कोस ६ ऊगवण। बांणीया रजपूत माळी बसै।

---

१. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. जागीर के पट्टे में रहता है। 2 बांई ओर से।

गांव १ षाळसै रो छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
८४७) १४३७) २७२१) १६३२) १०९०)

१ रांमपुरौ

जैतारण था कोस ५ दिषण था जीवणौं। जाट वांणीया बांभण बसै। धरती हळवा ५०, बाजरी मोठ षेत कंवळा। अरट ढीबड़ा २८, सेंवज चिणा हुवै। सींव घणी, हाळी[1] थोड़ा तिण वासतै बसी मांहे राषी छै। रा० बलु ईसरदासोत री तळाव वसडो[1] नहीं। नदी भुठ वाळी नजीक।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१३६९) १५७६) २६८४) १९२२) १३५४)

१ पीपळीयौ कापड़ीया रौ

जैतारण था[2] डावौं। जाट रजपूत बसै। धरती हळवा ५० बाजरी मूंग षेत कंवळा। अरट ढीबड़ा २० कोसटा ४ चांच १० हुवै। सेंवज चिणा सगळे हुवै। जाट कापड़ीया रो बसायौ छै। जोड २ छै। नदी लूणी गांव नजीक। तळाव मास ४ पांणी। बाहळो १ जोड में रेळीजै छै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०९१) २२५०) ३५५२) १९८२) ८१७)

१ चावडीयौ बडौ

आगेवा कन्हे जैतारस था कोस ३ दिषण था डावौं। जाट बसै। धरतो हळवा ४५ बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी अरट ७ हुवै। हाळी थोड़ा छै सु बसी एक गांव में राखै छै। तळाव मास ८ पांणी।

---

१. सडो। २. कोस २ ऊगवण (अधिक)।

---

1. हल जोतने वाला।

कदीम पीचीयां रो गांव । कुवौ १ पांणी मोठौ । असल पालसै रौ गांव । रा० अणंदरांम दवारकादासोत री वसी ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९१५)	१४७२)	९४०)	२५७०)	११०७)

१ रांणीवाळ

जैतारण था कोस ३ पिछम मांहे । जाट नै नंदवाणा वोहोरा वसै । धरती हळवा ३० तथा ४० षेत सपरा । जवार बाजरी मोठ हुवै । ऊनाळी ढीवड़ा १२, सेंवज चीणा हुवै । तळाव मास ५ पांणी । निषालस गांव पटै ही रहीं छै[1] ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९४०)	२९४५)	३६५११)	१४७१)	११५५)

वसीं वाळा वडा गांवां री विगत—

'[१ रायपुर

जैतारण था कोस ६ रूपारास कूंण मांहे । वांणीया जाट रजपूत वांभण तेली वसै । धरती हळवा ४०० सपरा षेत, ऊनाळी । वडौ गांव सारी सींव सेभौ । वाग २ सपरा छै। मांहे कूवौ मीठौ छै। कांठा रौ गांव । वसती रौ मुदौ वसी माथै छै। वसीयां सदा रहै। तळाव १ रै वरसोंदीयौ पांणी । नदी रायपुर था डावै[2] जैतारण आवै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३२३९)	४३०४)	५५०७)	२६५७)	१९३७)

१ गीररी

जैतारण था कोस ६ ऊगवण । वांणीया रजपूत माळी वसै ।

१. 'ख' प्रति का अंश ।

1. जागीर के पट्टे में रहता है । 2 बाईं ओर से ।

धरती हळवा ५०० बाजरी मौठ । ऊनाळी अरठ ढीबड़ा ५०, सेंवज चिणा हुवै । कांठा रौ बडौ गांव । मगरी ऊपर रा० षींवा रौ करायौ कोट छै । तळाव नहीं । बाहळौ १ चांग ता आवै । तिणरै झरणै पांणी मीठौ पीवै । नदी गांव नजीक । जिण नुं पटै हुवै तिण री बसी आय रहै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०३९)	२६०४)	४११४)	२६२३)	१८२३)

१ रास

जैतारण था कोस ८ ऊगवण था डावी । जाट बांणीया बसै नै मुदो बसी रा लोकां था छै । धरती हळवा ४० षेत सषरा । ढीमड़ा कोसीटा ५० तथा ६०, सेंवज चिणा सारै ही हुवै छै । तळाव वरसोंदीयौ पांणी । नदी चांग मानपुरा वाळी नै बाहळौ १ गांव नजीक छै । कांठा रौ बडौ गांव ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१३६)	२८५४)	३२६४)	२७२९)	२०७१)

१ करमावस माळीयां री

जैतारण था कोस ५ दषण मांहे । वसेवांन घणौ को नहीं । रा० भारमल दलपतोत री बसी रा । बांणीया रजपूत जाट बसै । धरती हळवा १०० षेत कंवळा । अरट ढोबड़ा १३ कोसोटा २ चांच ४ । सेंवज चिणा हुवै । तळाव तसलो को नहीं । बाहळो १ जुठा वाळौ नजीक । कांठा रौ गांव ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२६३)	१७७३)	३१००)	१९३०)	१७००)

१ आसरलाई

जैतारण था कोस ३ ऊगवण मांहे । जाट बांणीया कुंभार बांभण बसी रा रजपूत गूजर बांणीया बसै । धरती हळवा ४० षेत काठा कंवळा । ढोबड़ा अरट १७ हुवै । तळाव मास ८ पांणी । बावड़ी १,

पांणी भळभळौ नदी काळा झरणा वाळी कोस १, बसी रौ बडौ गांव ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१२०३)	४०६६)	४६९८)	२६८९)	१९६९)

१ जुठो

जैतारण था कोस ६ परवांण कूण मांहे। वसेवांन लोक घणो को नहीं। बसी रा बांणीया जाट रजपूत कुंभार बांभण बसै। धरती हळवा २०० षेत कंवळा। अरट ढीबड़ा ४० तथा ५०। सेंवज राजपुर बीच बहै। कांठा रौ गांव।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८०१)	१३०१)	२०९४)	१०००)	१०००)

१ बाबरौ

जैतारण था कोस ९ ऊगवण मांहे। कुंभार बांणीया माळी बसै। बसो समुंदो[1] रजपूत बांणीया बसै। धरती हळवा ४०० बाजरी मोठ हुवै। षेत कंवळा अरट ४० ढीबड़ा ५० हुवै। तळाव मास ... पांणी। नदी गांव था नजीक। तिण रा द्रहा[2] गांव ३ पीवै छै। कांठा रौ गांव। सदा बसीयां रहै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२००)	३७७८)	५५३७)	३५७९)	३१२९)

१ बलाहड़ो

जैतारण था कोस ५ ऊगवण था डावौ। जाट बांणीया बसै। बसी रौ मुदो रजपूत बांणीया सुं। कांठा रौ गांव। सदा बसियां रहै। धरती हळवा २५० षेत काठा कंवळा। अरट ८, सेंवज चिणा हुवै। तळाव वरसोंदीयौ पांणी। कोसीटो १ बंधवौ छै। कोटड़ी री पोळ १ छै[3]। भलौ गांव, दोम षुलासा।

---

1. पूरे के पूरे। 2. नदी में बने गड्ढे। 3. गांव के अधिकारी के रहने के लिए एक प्रोल है।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८७५)	३१५४)	३९९०)	२९६६)	१६५९)

१ ऊनावस बडौ

जैतारण था कोस १। आथण मांहे। जाट नै बांभण बसै। धरती हळवा ३० षेत काठा मटीयाळा। ऊनाळी अरट १० ढीबड़ा २ हुवै। पहली आगे वाळी रेल आवती। चिणा हुवै। तळाव मास ८ पांणी। बावड़ी १ रतनपुरा रै कांकड़ ऊषेलिजै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०५)	७०१)	३०३४)	१४३५)	१२२६)

१ सोमावस

जैतारण था कोस ०।।। आथण था जीमणो। सीरवी कुंभार बसै। धरती हळवा ३० षेत काठा जवार मूंग। अरट १० ढीबड़ा ३ हुवै। तळाव मास ७ पांणी। कोहर १ पांणी मीठौ, सीरवी सोमे पड़ी-हारीये नवौ बसायौ। असल षालसा सारौ गांव छे।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०८५)	१६८०)	२३५०)	१४२९)	११२१)

१ राजाढंढ

जैतारण था कोस ३ आथण मांहे। जाट सीरवी बांणीया बसै। धरती हळवा ३० षेत काठा कंवळा। अरट ढीबड़ा २७ चांच ३० सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। कोहर १ सागरी मीठौ। रेल आगेवा वाळी आवै। पहली गांव बारहठां नुं सांसण थौ सु सोह मर षपीया[1] तरै संमत १७१७ षालसै कीयौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२५)	९३४)	२१६६)	१४६८)	९२६)

1. सारे बारहठ मर कर समाप्त हो गये।

१ ऊनावस षुरद

जैतारण था कोस १ डावौ। जाट वसै। धरती हळवा २५ षेत काठा कंवळा। ऊनाळी अरट ढीवड़ा ५ तथा ७। तळाव जाषणनडी मास ४ पांणी। सेंवज चिणा घणा हुवैं।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०७)	७९१)	१३२१)	५४२)	४१३)

१ आकेली

जैतारण था कोस ३॥ दषण मांहे। जाट वांभण वसै। धरती हळवा ३० बाजरी मोठ हुवै। षेत कंवळा, ऊनाळी अरट ढीवड़ा ८ गेहूं हुवै। नदी कांणुजा रा भाषर री दषण मांहे वहै। तळाव नहीं। ऊनाळीयां[1] पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११७४)	१२२३)	१४३४)	१४१६)	५०८)

१ विरोल

जैतारण था कोस २ उत्तर था डावी। जाट कुंभार बांणीया वसै। धरती हळवा ५० षेत काठा कंवळा। ऊनाळी अरट १२ ढीवड़ा १५ वांझाकुंडो री रेल में सेंवज गेहूं चिणा हुवै। नदी लूणी गांव था नजीक ऊतर में। तळाव मास ४ पांणी। पछै नदी रो बेरीयां पीवै। वालवस रौ षेड़ौ। सोमावस विरोळ में षड़ीजै। मांजरै, असल पालसा रौ गांव।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५९)	२६२५)	२२९७)	१५८३)	११२३)

१ रांमावस षुरद

जैतारण था कोस २ उत्तर था डावौ। जाट सीरवी वसै। धरती

---

1. कुए से पानी पीते हैं।

हळवा ३० बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी अरट ४ ढीबड़ा २ हुवै। नदी लूणी वीकरलाई रै कांकड़ मास ५ पांणी कुंभारां रौ बसायौ छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६९३)	७७१)	१३७०)	१३१०)	५७६)

१ पातुवस

जैतारण था कोस ०।ऽ। धु मांहे। सीरवी बसै। धरती हळवा ३० जवार मूंग कपास, षेत काठा। ऊनाळी अरट ७ ढीबड़ा ५ हुवै। तळाव मास ८ पांणी। बावड़ी २ मीठी। अेक भळभळो अरट १ बंधवौ। रेल जेतारण वाळी आथण माहे बहै। असल षालसा रौ गांव पातु गूजर रौ बसायौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५६१)	१८३८)	१६ ९)	१०९२)	९२८)

१ मालपुरीयौ

जैतारण था कोस ३ उत्तर नुं था डावौ। जाट बसै। बसी रा गूजर घणा बसै। धरती हळवा ४० षेत काठा कंवळा। अरट २ ढीबड़ा १०। रेल मांहे सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ३ पांणी। नदी लूणी दषण मांहे बहै। राव श्री मालदेजी रौ गांव बोरोल री सींव में, नवौ बसायौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४३०)	११२६)	२१०२)	१२४१)	५६९)

१ ठाकुरवस

जैतारण था कोस १। ऊतर मांहे। जाट बांभण बसै। धरती हळवा २० षेत सषरा। ऊनाळी ढीबड़ा ६। सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। नदी लूणी ऊतर मांहे बहै। जागीरदार लायक गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०२)	९५७)	१९४७)	७०३)	४१६)

१ रतनपुरी

जैतारण था कोस ०।।। आथण मांहे । जाट बसै । धरती हळवा २० षेत काठा । जवार मूंग हुवै । अरट ढीबड़ा ४ हुवै छै। तळाव १ मास २ पांणी । राठौड़ रतनसी ऊदावत रौ बसायौ षेड़ौ जागीदारां नुं रहै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३३६)	५२३)	४३६)	५४८)	३६६)

०।। षिनावड़ी

जैतारण था कोस २ ऊगवण था जीवणी । कुंभार बसै । बसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा ४० षेत कंवळा । ऊनाळी ढीबड़ा १४ सेंवज चिणा हुवै । बास १ चारणां नुं सांसण छै। सु आधौ गांव मांडे । तळाव मास ४ पांणी ।

संमत	१७२५	१६	१७	१८	१९
	१८०)	६२५)	१३६४)	१२१३)	९४१)

१ प्रिथीपुरी

जैतारण था कोस ३ आथण मांहे। जाट बसै। धरती हळवा १५ षेत सषरा, ऊनाळी अरट ३ तथा ४, सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी । संमत १७०९ सांवण मांहे। कंवर श्री प्रिथीसिंघजी रै नांव गांव । गळणीया री सींव मांहे नवौ षेड़ौ बसायौ ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०५८)	९७१)	१६८७)	०)	०)

०।। वीकरळाई

जैतारण था कोस ४ ऊतर मांहे। जाट बसै । धरती हळवा २५ बाजरी मोठ हुवै । षेत कंवळा, कोसीटा ९ । सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ५ पांणी । नदी गांव था नजीक । पहली प्रोहत मूळा नुं सांसण थौ । पछै प्रोहत करमसी मूळावत री हेंस गळी[1] तरै प्रो० कला

---

1. हिस्से का अधिकार समाप्त हुआ ।

नुं दी हुती। सु षालसै हुई, राजा उदैसिंघजी री बार मांहे।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३००)	७१५)	१७१५)	७४८)	४१२)

१ भाषरावस

जैतारण था कोस ०॥। दिषण दिस। जाट बांभण बसै। धरती हळवा २० बाजरी मोठ। षेत कंवळा ऊनाळी अरट ढीबड़ा ८ तथा १० हुवै। सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ७ तथा ८ पांणी। बाहळो १ दषण मांहे बहै। मांगळीया भाषर रौ बसायौ[1]। सदा षालसा रौ गांव।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२६१)	७२७)	१३५२)	८६४)	४७२)

१ लाहावसणी

जैतारण था कोस २॥ ऊगवण मांहे। जाट बसै, रजपूत बसी रा बसै। धरती हळवा १५ षेत काठा सषरा, ऊनाळी अरट ३ सेंवज चिणा हुवै। नदो लूणी आथण साहे बाहळो टोकड़ो रौ आवै, गांव नजीक बहै। तळाव मास ८ पांणी। जाट लाहापा रासरीयां रौ बसायौ षेड़ौ छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३६१)	८१५)	१५२०)	६१४)	५१८)

१ लीतरीयौ

जैतारण था कोस ४॥ ऊतर मांहे। जाट बसै नै बसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा १५ षेत काठा जवार घणी। ऊनाळो अरट २ हुवै छै। तळाव १ मास ४ पांणी। वाहळो १ गांव नजीक ऊगवण मांहे। सदा जागीरदारां री गांव।

---

1. राजपूतों की मांगळीया शाखा के 'भाषर' नामक व्यक्ति का बसाया हुआ।

संगत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१७)	४०५)	३५७)	५६७)	२५३)

१ वलुपुरौ

जैतारण था कोस ७ ऊगवण मांहे । जाट रजपूत बसै । धरती हळवा ३० वाजरी मोठ हुवै । षेत कंवळा । ऊनाळी घणी कोई नही[1] । कोसीटा २ तथा ४ सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ५ पांणी । बाहळो १ दिषण में । कांठा रौ गांव । रास कनै रा० बलु बीकावत रौ बसायौ ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२४१)	३६३)	४६५)	६०२)	१७०)

१ मुरढाहो

जैतारण था कोस ३ ऊगवण मांहे । जाट रजपूत बसै । धरती हळवा २० जवार बाजरी । षेत काठा, उनाळी अरट ६ ढीबड़ा ६ सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास १० पांणी । बाहळो कोई नहीं । पछै ऊनाळीयां पीवै । कांठा दिसी । मेरां घणी वार बाळीयो[2] । जागीरदार लायक ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३४६)	७७५)	१३२९)	१३४१)	३४४)

१ लुंभड़ावस

जैतारण था कोस ३ आथण था डावौ । जाट वांणीया सीरवी रजपूत वसै । धरती हळवा ३० षेत काठा कंवळा । अरट ढीवड़ा ८ । सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ४ पांणी । बाहळौ को नहीं । रवारी लुंभा रौ वसायौ, लुंभड़ावस कहीजै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४१८)	७०६)	२६२)	९५१)	३७१)

२१]

1. रबी की फसल कम होती है । 2. जलाया ।

१ नीबेहेड़ो गिररी रौ

जैतारण था कोस ५ उगोण मांहे । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत सीरवी बांणीया रैबारी गूजर बसै। धरती हळवा १५० बाजरी मोठ, षेत कंवळा। ढीबड़ा २० सेंवज चिणा हुवै । तळाव नहीं। सूकड़ी रास वाळी गांव नजीक, तठै पीवै । बडौ गांव छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३४४)	१००४)	१५७७)	१३०१)	१००१)

१ बीटवस[1]

जैतारण था कोस ७ ऊगवण था डावै । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत जाट बांणीया कुंभार रैबारी बसै । धरती हलवा ७० । षेत सषरा जवार मोठ छै। तळाव मास ६ पांणी नदी रास वाळी नजीक छै। कांठा रौ गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७४२)	१०२२)	२४२७)	१२४३)	४९१)

१ बरि

जैतारण था कोस ७ परवांण कूण मांहे । लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बांणीया कलाळ गूजर कीरमेर बसै । धरती हळवा ४० बाजरी जवार षेत सषरा । ढीबड़ा ४ सेंवज चिणा छै । तळाव बरसोंदीयो पांणी, सीघाड़ा नै गेहूं षरबूजा हुवै । कदीम मेरां चीता गोड़ातां रौ गांव । मेर सूरौ नरसा रौ बसतौ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४१५)	५७५)	५६७)[2]	१०२९)	५९५)[3]

१ पीपळीयौ वीढा रौ

जैतारण था कोस ७ दिषण मांहे । जाट बांभण बसे । मुदौ बसी था । रजपूत बांणीया बसै । धरती हळवा १०० षेत सषरा । जवार

१. वीटावास। २. ६६७)। ३. ५८५)।

बाजरी। ऊनाळू अरट ढोबड़ा २० चांच २० सेंवज चिणा छै। तळाव मास ८ पांणी। नदी सोधपुरा रायरा[1] वाळी दिषण में वहै। कांठै रौ गांव। सींधल बसता। बडो वास छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१११६)	१८२८)	२५१८)	१९७०)	२२६२)

१ षातीवास

जैतारण था कोस १ आथण मांहे। लोक कोई बसी रा रजपूत जाट बसै। पाहू लोक षेती करै छै। धरती हळवा १५ जवार बाजरी षेत काठा। ऊनाळू ढोबड़ा ५ तथा ६ हुवै। तळाव मास ४ पांणी। लोक बसतौ। निषालसै रौ गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६६)	४७७)	४८८)	४७०)	३६७)

१ समोषी

जैतारण था को ३॥ ऊगवण थी जीवणौ। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत कुंभार बांणीया बसै। धरती हळवा ३०। जवार बाजरी, षेत सषरा। ऊनाळौ अरट ४ ढोबड़ा ६ चांच २, सेंवज चिणा छै। तळाव मास ५ पांणी नदी मौरेई रै कांकड़ बहै। षेड़ौ पहली सूनो थौ नावोजे मैं षड़ोजतो। षालसे रौ गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८१)	४५७)	८३८)	२७५)	४६२)

१ ऊषळीयौ

जैतारण था कोस ७ दषण मांहे लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत जाट गूजर वसै। धरती हळवा ३० बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळू अरट ४ कोसीटा चांच हुवै। तळाव कोई नहीं। नदी रायपुर वाळी

१. रायपर।

नजीक गांव सु [1] पांणी अषारीयौ [1] पगी [2] रा मगरा था नजीक गांव वसी लायक कांठा रौ ।

संसत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३६२)	४६१)	४२०)	५३२)	४८८)

१३. सेम्र गांव वसीयां रा रैत कोई नहीं

१ पालयाबास[3]

जैतारण था कोस ८ ईसांण कूण मांहे । लोक कोई नहीं । जिण नुं पटै हुवै तिण री बसी रा रजपूत बांभण बसै । धरती हळवा ५० बाजरी मोठ षेत कंवळा । ऊनाळी ढीबड़ा ५ तथा ७ हुवै । रास रै पटा रौ गांव । नदी दिषण मांहे । पांणी बाहळौ उतर मांहै छै, तठै पीवै, षैरवा रै कांकड़ ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०१)	३६५)	५१७)[4]	६२७)	२१६)

१ लोहामाळी

जैतारण था कोस ५ परवांण कूण मांहे । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत गूजर बांणीया बसै । धरती हळवा ५० बाजरी मोठ, षेत कंवळा । ऊनाळी ढोबड़ा १० तथा १५ हुवै । नाडी १ मैं पांणी, बाहळो १ मांनपुरा रौ गांव नजोक तठै पांणो पीवै । गिररी रै नजोक कांठा रौ गांव ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३४०)	३५१)	११३६)	११००)	८००)

१ टुकड़ो

जैतारण था कोस ५ ऊगवण मांहे । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत जाट बांणीया बसै । धरती हळवा ४० तथा ५० बाजरी मोठ षेत कंवळा । ऊनाळी ढोबड़ा ६ कोसेटा २ चांच ४ हुवै । तळाव

१. पारो । २. पेती । ३. पालायावास । ४. ५७७) ।

नहीं। नदी रास वाळी ऊगण मांहे गांव नजीक, तठै पांणी पीवै। कांठा रौ गांव गिररी पटा रौ। वसी रहै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३४१)	३०७)	७८६)	६४१)	६०१)

१ धूलकोट

जैतारण था कोस ५ ऊगवण मांहे। लोक कोई नहीं। वसी रा रजपूत जाट गूजर वसै। धरती हळवा ६० बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी अरट ढीबड़ा १० तथा १२ हुवै। तळाव को नहीं, ऊनालीया पीवै, वरंटीयां विचे, पहली सूनौ हूतौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२५)	३१२)	९८०)	८७२)	३१३)

१ चांवडीयो गिररी रौ

जैतारण था कोस ७ ऊगण मांहे। लोक कोई नहीं। वसी रा सीरवी रजपूत गूजर वसै। धरती हळवा ५० षेत कंवळा। ऊनाळी अरट ढीवड़ा १० तथा १५ छै। सेंवज चणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। वाहळो गांव नजीक तठै पीवै। गिररी नजीक कांठा रौ गांव, वसी रहै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०१)	३०१)	५५१)	६०१)	३४६)

१ चांवडीयो वीठा रौ[1]

जैतारण था कोस ८ रूपारास कूण मांहे। लोक कोई नहीं। वसी रा रजपूत जाट वांणीया गूजर मेर कुंभार वसै। धरती हळवा ५० जवार बाजरी षेत सषरा। ऊनाळी ढीवड़ा ५ तथा ७ सेंवज चिणा छै। तळाव मास ८ पांणी वाहाळौ उतर में। गांव नजोक रायपुर रा पटा रौ गांव, कांठा रौ। वड़ी वसी छै।

---

१. वीडा रौ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०१)	३०१)	३०१)	३०१)	३५१)

१ बांधाणी[1]

जैतारण था कोस ५ परवांण कूण मांहे । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत जाट गूजर बसै । धरती हळवा २० षेत सषरा । ऊनाळी नहीं । तळाव मास पाणी बाहळो गांव नजीक, बरांटीया कनारै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७६)	१०१)	३१)	१०२)	१०२)

१ बीचपुड़ी[2]

जैतारण था कोस ८ रूपारास कूण मांहे । लोक कोई नहीं । बसी रा बांणीया रजपूत गूजर जाट कुंभार बसै । धरती हळवा ४० बाजरी मोठ षेत कंवळा । ऊनाळी ढीबड़ा १५ तथा १६ सेंवज चिणा हुवै । तळाव मास ५ पांणी । बाहळो षीवल रौ तेण पांणी पीवै । कांठा री गांव नडी[3] बसी छै । पैला सूनौ हुतौ ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	२००)	५८४)	४०१)	४०१)

१ रहलड़ौ[4]

जैतारण था कोस ८ पूरब मांहे । मेर लागसीयोत बसै । धरती हळवा २० बाजरी मोठ षेत कंवळा । ऊनाळी ढीबड़ा १० कोसेटा ७ चांच ४ हुवै । तळाव मास पांणी नदी चांग वाळी उतर में तठै पांणी पीवै । चांग था नजीक मगरी री जड़ां बसै, गिररी रा पटा रौ ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१८०)	३६५)	१०५०)	८०१)	४७१)

---

१. वोघाणी । २. विचपुड़ी । ३. वडी । ४. यहां से पहले शीर्षक—मेरां रा गांव वसता ग्रमल मांने ।

१ देवळी हुलां री

जैतारण था कोस ७॥ पूरब मांहे । मेर लागसीयोत वसै । धरती हळवा १५ बाजरी मोठ षेत कंवळा । ऊनाळी ढीवड़ा १० छै । तळाव नहीं । नदी चांग वाळी गांव नजीक तठै पीवै । वावरा सुं सीवडो मगरी री षंभा गिररी रा पटा मांहे ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६२)	१५१)	२६५)	२५१)	२३५)

१ चीतार

जैतारण था कोस ८ पूरब मांहे मेर मेहरात[1] वसै । धरती हळवा ३० वाजरी मोठ, षेत कंवळा । ऊनाळी चांच ४ सेंवज हुवै । तळाई मास २ पांणी । वाहळो थो बाकरा[2] लालपुर आयौ तठै पांणी पीवै । लालपुर नजीक मगरी ऊपर वसै । गिररी रा पटा रौ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५५)	६१)	६१)	६१)	६१)

१ रातड़ीयौं

जैतारण था कोस १० ऊगण था डावौं । मेर भीलात पीपळीयात वसै । धरती हळवा २० षेत कंवळा । ऊनाळी ढीबड़ा १० सेंवज चणा छै । तळाव मास २ पांणी । नदी पंम[3] नुं बहै, तठै पांणी पीवै । चांग नजीक भाषरी षंभ वसै । वावरा रा पटा रौ गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५४)	२७४)	८५१)	५१२)	३११)

१ नांदण

जैतारण था कोस ७ पूरब मांहे, मेर लागसोयोत वसै । धरतो हळवा १५ बाजरी मोठ षेत कंवळा, ऊनाळी ढीवड़ा १ कोसेटा ५

---

१. हरावत । २. वोवा कर । ३. पछिम ।

चांच १ छै। बाहळौ १ चांग वाळौ उत्तर में बहै, तठै पीवै। गिररी नजीक मगरा ऊपर बसै। गिररी रा पटा री।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७२)	२५१)	२६५)	१६५)	१६१)

१ कांणचो[1]

जैतारण था कोस पूरब मांहे। मैंहरात बसै। धरती हळवा १० षेत कंवळा। ऊनाळी कोसेटा ६ हुवै। बाहळो चांग वाळो गांव नजीक, तठै पीवै। रहलड़ा रातड़ीया कनै। षेड़ौ मगरी षांभ, गिररी रा पटा रौ छै।

१ लोहचो

जैतारण था कोस ७ पूरब मांहे। मेर महरात बसै। धरती हळवा २० षेत कंवळा सषरा। ऊनाळी नदी मांहे बाजरौ गेहूं करै। हरयापुर वाळी गांव नजीक तठै पीवै। रायपुर था कोस ३, रायपुर रा पटा रौ मगरी उपर बसै छै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	१००)	२६८)[2]	१०१)	१०१)

१ माकड़वाळी

जैतारण था कोस २ रूपाराम कूण मांहे। मेर मेरहसी[3] नै कलाळ बसै। धरती हळवा ३०। षेत सषरा जवार बाजरी। ढीबड़ा ११ चांच २५ सेंवज चिणा छै। द्रहा १ हींडोळ भाषर री भांष[4] पीवै। बाहळो १ ऊगण में बहै। बार नजीक रड़ी ऊपर बसै। सझुझो षेड़ौ घाट चढै बारर[5] पटै रौ गांव।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४८५)	८५६)	१०५१)	११५४)	२४६)

१ महलणी[6]

१. कांणेदा। २. २५८)। ३. मोहसी। ४. पंभ लठै। ५. वरीरा। ६. मालणी।

जैंतारण था कोस ७ पूरब[1] मांहे। मैंहरषांना जसा चीता बसै। धरती हळवा २० षेत कंवळा ऊनाळी ढोबड़ा ४ हुवै। सारंगवास नजीक नदी राहपुर वाळी, गांव नजीक तठै पीवै। षेड़ौ भाषरी षंभ, रायपुर रा पटा रौ गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१)	५१)	२३४)	५१)	५१)

१ मोडरीयो

जैंतारण था कोस ७ परवांण मांहे। मेहरात चीता बसै। धरती हळवा १० षेत कंवळा। ऊनाळी ढीबड़ा २ चांच २ सेंवज हुवै। नदी रायपुर वाळी गांव नजीक तठै पीवै। रायपुर रा पटा रौ षेड़ौ। मगरी ऊपर बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	११	२९)	११)	११)

१ कालब

जैतारण था कोस ९ रूपरास मैं। मेर चीतौ षांन कांनौ बसै। धरतो हळवा २० बाजरी मोठ षेत कंवळा, ऊनाळी ढीबड़ा ४ हुवै। नदी रायपुर वाळी गांव नजीक, तिण था पीवे। षेड़ौ मगरा री षांभ बसै। पंचाईणपुरा रै नजीक।

१ पंचाईणपुरौ

जैतारण था कोस ९[2] परवांण मांहे। मेर महरात। किसनात चीता वसै। धरती हळवा २० षेत सषरा। ऊनाळी कोसेटा ४ चांच ५ हुवे। नदी रायपुर वाळी गांव नजीक तठै पीवै। षेड़ौ भाषरी षंभ, रायपुर रा पटा रौ गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४)	२१)	२५)	२५)	२५)

---

१. परवांण। २. कोस ८।

१ काणुजो[1]

जैतारण था कोस १० पूरब में रावत नराइणदास। चीतौ मेर बसै। धरती हळवा ५० षेत सषरा। ऊनाळो ढोबड़ा १० तथा १५ चांच ५ बावड़ी १ बधवा[2] तीण पीवै। नदी रायपुर वाळी नजीक। विषा मांहे राव चद्रसैण अठै रह्यौ छै। हिमें रतना चीता रौ गांव। विषै रहाण सारीषौ[1]।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१)	२१)	२५)	२१)	२१)

१ कोहड़ो

जैतारण था कोस १० ऊगवण परवांण मांहे। मेर जसौ मानावत बसै। धरती हळवा १२ षेत सषरा, ऊनाळी सेंवज चिणा नै नाडो १ मांहे साल हुवै। मानपुरा नजीक षेड़ौ पाधर मांहे। सीधसर रै कुवै पांणी पीवै। बाहाळो छै चीत कांठोत।

१ काबरो

जैतारण था कोस १२ दिषण मांहे। मेर नरसा चीता रौ गांव उदा री नाई वाळा बसै। धरती हळवा २५ मगरा बंध में छै[3]। बावड़ी १ ऊगवण मांहे हाथ ५ पीवै। नाळै मांहे बेरीयां पीवै। बाहळो छै। झीलेळाव नजीक छै। षेड़ौ ऊंचौ तोरवा ५ छै।

१ चांग[4]

जैतारण था कोस १० ऊगवण मांहे। मेर चीत काठोत बसै। बास २ छै। धरती हळवा १०० षेत सषरा। ऊनाळी बंधै। गोहूं हुवै। वावड़ी १ वेहीवास वीच। पांणी मीठौ। तळाव मास ४ पांणी। मूळै हुल रौ गांव। भाषर कमळ माळ रा ऊपर देवी रौ थांन।

१. इस वृतांत के पहले 'ख' प्रति में शीर्षक है—'मेरां रा गांव बसता अमल न मांनै।' २. वदवां। ३. मगरा रा वधा में छै। ४. चांठा (प्र)।

१. संकट के समय में रहने योग्य।

१ वोराड़

जैतारण था कोस १० ऊगवण था जीवणी। बडी ठौड़, मेर चीत गोडात वसै। धरती हळवा २०० अरट कोसीटा चांच करै तिलरी छै। सेंवज चिणा चावळ हुवै। बावड़ी ३ बंधवी। पांणी मीठौ। तळाव मांहे गेहूं हुवै। सपरौ कोट छै। मांहे तळाव बावड़ी छै। कोट री भींत गज ४ प्रोळ षांध रा० जसवंत रा कराया छै।

१ ... ...

मेरां रा गांव सूना

१४. १ नाई ऊदारी

जैतारण था कोस १० पूरब[1] मैं। मेर गोडात ऊदी घर २० था परवाण मेर गोडात वाला बसतो। षेड़ो भाषर रै ऊपर वाहळा री वेरीयां पांणी पीवता। कोराणा कने बावड़ी १ तळाव ५ पेतीवाळी हल १०० री वषवी, तठै पेता तळाई, काणुजा नजीक।

१ गुदरड़ो

जैतारण था कोस १० परवांण में। मेर गोडाता वीढो परवत रौ वसतो। वोराड़ वाळै भाषर रै आवफरै[1] षेड़ो छै, वाहळो तिण वरापणोयतां वोराड़ नजीक।

१५. ५ रास मांहे मांजरै—

१ पीरहटी

रास था कोस १॥ परक मांहे। पहला तिला[2] पुंवार री मेड़ी कहीजती। पेड़ो भाषर री पंभ, वाड़ीयां रै कड़पै। नदी पुकड़ी पीवै। धरती हळवा २ ऊनाळी छै।

---

१. परवांण। २. तोला।

---

१. पहाड़ के मध्य भाग में।

१ नीबाहटी

रास था को ०।।। मंगरा वड़ीया रै। ढूंढा रौ छै। बीरांटीया रास बीच मैदान में। नदी सूकड़ी पीवै। धरती हळवा २० ऊनाळी हुवै।

१ जगहथीयौ

रास थो कोस ०।।। रूपारास मांहे। बाबा रै मारग षेड़ा री ठौड़ छै। बाहळो १ लाषुवास जगहथीया बीच नदी सूकड़ी नजीक रास मांहे षड़ीजै। घटटी री घाटी आही, दयाळपुरौ पिण औहीज।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५२)	५२)	५०)	१५१)	१५१)

१ रैबारीया री बासणी

रास था कोस १ पाहड़ डुबड़ा मांहे। दयालपुरा नजीक पांणी री ठौड़ कोई नहीं। षेत घणौ को नहीं कांठ मोहर था कांकड़।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५२)	५२)	०)	१०१)	०)

१ लापुवास

रास था पांवडा ४०० दिषण मांहे, षेड़ा री ठौड़। पींपळ १ वड़ १ छै। लापुवास नै रास बीच नदी छै। धरती हळवा ५० रास मांहे षड़ीजै छै। नदी सूकड़ी गांव था नजीक। ऊनाळो ४ हुवै।

५

१६. ३ गिररी पटा रा गिररी मांहे षड़ीजै—

१ रांमावास

जैतारण था कोस ६ परवांण। गिररी था कोस १ षेड़ो। पाधर ढूंडा छै। पींपळ २ छै। नाडो १ वावड़ी १०० धरती हळवा २० डोयड़ा ४ हुवै। वुटीवास री वाहळौ नजीक गिररी में षड़ीजै छै।

१ चीड़ीयाहेटा

कोस १० पूरव। चांग नजीक षेड़ा रा ढुंढा छै। घाटो छै[1]। षेत घणा को नहीं। गिररी रा पटा रो।

१ टीकड़ो

कोस २ ऊपर राव सगतसिंघ बसायो थो। नदी चांग वाळी नजीक। सींव नहीं। गिररी रै पटै।

३

१ नाई सूजा री

जैतारण था कोस १० परवांण। मेर गोडात वाळा रा षेड़ो भाषर री जड़ां भीगड़ी कोरांणा कनै बावड़ी १ बंधवी, तठै षेता तळाई ५ षेती वाळी हळवा ६० री धरती।

१ पुनेसर

जैतारण था कोस ११ रुपारास कूण मांहे। मेर मेहराता चीता जसो मांनावत वसतो। धरती हळवा ४०। तळाव १, वीघा १०० ऊनाळी। पांणी कंवार री नदी पीता। डलेळाव[1] विहार नजीक षेड़ो, तीरवा १ ऊंचो।

१७. २ कसबे जैतारण मांहे पड़ीजे छै—

१ झुंझणदो पुरद

जैतारण था कोस ०॥ दिषण मांहे। वडा झुंझणदा था ऊगवण कांनी। पहली जाट की लक वसता। षेड़ा री ठोड़ पींपळ १ छै। धरती हळवा २५ नै ऊनाळी थी सु कसवा मांहे पड़ीजे छे।

१ वघीयाहेडो पुरद

१. झलेळाव।

1. पहाड़ की घाटी है।

जैतारण था कोस ०। दिषण मांहे। आगेवा रा मारग सुं जीवणी षेडा री ठोड़ छै। तिण कनै सीरवी षरथौ अरट करै छै। धरती हळवा कसबै मांहे षड़ीजै छै।

२

१८. २ नीलाबा मांहे षड़ीजै–

१ वालूवाड़ी

जैतारण था कोस ५ रुपारास मांहे। नीलबा थी कोस ०॥। षेड़ौ मगरा री षांभ ढुंढा छै। तळाई १ ऊगोण मांहे छै। धरती हळवा ५० ढीबड़ा १० तथा १२ सेंवज चिणा हुवै। ऊनाळियां हुवै। नदी जुठा वाळी नजीक।

१ वसीयाबास बडो

जैतारण था कोस ४ परवांण मांहे। षेड़ो पाघर रो भींव कीलांण-दासोत रो करायो कोट छै। नदी गांव नजीक। धरती हळवा ५०० ऊनाळी नहीं, षेत कंवळा, बाहळे पीवै। कसबा में षड़ीजै छै।

१९. २ नीबाज मांहे मांजरै षड़ीजै—

१ वीरम री बासणी

जैतारण था कोस ३ दिषण डावै बाजू। ऊतर मांहे ऊदावतां री वार मांहे गौड़ वीरम वसतो। पछै जाट वसीया था। रा० जगनाथ कीलांणदासोत रै पटै हुवो थो। तळाव मास ४ पांणी। धरतीं हळवा २० अरट १५ हुवै। षेड़ा री ठौड़ पींपळ २ छै।

१ वसीयांवास पुरद

जैतारण था कोस ४ परवांण कूण मांहे। नोवाज था — मेरा भोजपांन वाळो षेड़ो पाधर मांहे, तठै रूष २ छै, द्रह १ छै। तठै पीवै। धरती हळवा १५, नींवाज मांहे षड़ीजै छै।

२

२०. २ आसरळाई मांहे मांजरै षड़ीजै—

१ करमावास

जैतारण था कोस ४ आसरळाई था कोस ०।। ऊतर मांहे । जाट करमी वसती । षेड़ौ पाघर गांव नाडो आसरळाई दिसी तठै पीवै । धरती हळवा छै । सु आसरलाई रा जाट षड़ै छै।

१ सुरीयावास

जैतारण था कोस ४।। आसरलाई थी कोस १ ऊगवण मांहे । चारण सूरौ वसीयौ थौ । षेड़ौ पाधर तठै देवळी १ भाठे री छै[1] । नाडी थी सुं वुरांणी । धरती हळवा — छै ।आसरळाई रा रजपूत षड़ीजै छै ।

२

२१. २ बीचपुड़ी मांहे मेरां षड़ीजै—

१ षिवळ

जैतारण था कोस ८ रुपारास मांहे मांनी परवत मेरगात चीता वसतौ । षेड़ौ भाषरी रै पंभ ढुंढा । तळाव छै तठै पीवता । धरती हळवा ४० ऊनाळी ढीवड़ा २ हुवै । वाहळा दिषण मांहे वहै । पहली वरि रा पटा मांहे मंडै छै । नांवै चापुड़ी री षेड़ौ छै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११)	५१)	३३७)	१५१)	१५१)

१ भीचराड़ी[1]

जैतारण था कोस ५ परवांण में । जुण नजीक षेड़ौ पाधर, तठै पींपळ १ छै । तळाव नहीं । धरती हळवा १० । ऊनाळी ढीवड़ा ४ हुवै । राईपुर रा पटा मांहे मंडतां । हिमें बीचपुड़ी ता षडै छै ।

---

१. भींवराड़ी ।

---

१. एक पत्थर की मूर्ति है ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४०)	२००)	५८४)	४००)	४००)

फुटकर मांजरै षेड़ा—

२२. १ षेतावास

जैतारण था कोस २ पछम मांहे। गळणीया था कोस ०। दिषः मांहे। रा० रतनसी रा वार में गूजर षाती[1] बसता। गळणीया र षेत दीया था, पछै षेता रै बेटो न हुवो। तरै डोहळी री धरती भोप थका नुं दी छै। गांव रा षेत पाछा गळणीया भेळा कीया। षेड़ै रं ठौड़ देवीजी रौ थांन छै। नाडी १ मास ४ पांणी। गळणीया रं मांजरौ।

१ जैतपुर

कोस ८ उगवण नुं। बरांटीया षुरद था कोस २ षेड़ो। मगरं उपरां रा० करन कीसनसिंघोत बसतो। बोराड़ै नजीक नदी सुहड़ा आगं तठे पीवता। धरती हळवा ५०। ढीबड़ा २० छै। बरांटीया रं मांजरो।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	६००)	१००८)	३०१)	२६०)

१ वालु[2] षुरद

कोस ५ नीलवा था, कोस १ नदी डुठावाजी[3] रै ढाहै बसतो। धरती वीघा २०० ढीबड़ा ४ तठै पीता। हिमें पाही षड़ै बर रा पटा रो वरमांकड़ वाळी रा पड़ै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७५)	१०१)	१४१)	१०१)	१०१)

---

१. पेतो। २. वलो। ३. जुगवाबी।

गांव जैतारण सांसण—

२३. ८॥ बांभणा नुं

१ मेरो वावड़ी

जैतारण था कोस ४ ऊगवण मांहे दत्त रा जैतसी ऊदावत री प्रो० राजा चोहोथोत सीवउत नुं। हिमें प्रो० अचळदास नै ठाकुरसी राईसलोत नै कचरौ नेतसीयोत नुं छै। तळाव २, मास ३ तथा ४ पांणी नदी कांलीभर[1] परवा वाळी तठै षरवूजा छै। धरती हळवा १०० बाजरी मोठ जवार छै। षेत कंवळा ऊनाळी अरट ढीवड़ा कोसेटा ४० हुवै। सारी सींव सेभो छै। सेंवज हुवै वड़ी ठीड़। रजपूत वांणीया प्रोहत जाट कुंभार वसै। भाषरोयां वीच षेड़ो छै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३१५)	१५००)	१५२०)	१४५०)	१०००)

१ तालूकीयो

जैतारण था कोस १॥ धु मांहे दत्त रा० ऊदा सूजावत री। प्रोहत भोजा कूंपावत सीवड़ नुं भोजो जोधपुर था आयो तरै दीधी। हिमें प्रोहत हरीदास नरा रौ, नै सूरौ गोइंदासोत रांम अचळदासोत छै। जाट प्रो० वांणीया वांभण वसै। षेत कंवळा, उनाळी अरट ढीवड़ा २५ तथा ३०, पांणी वावड़ी १ पुरस ७ मीठौ पांणी। नदी लूणी कोस ०॥ ऊतर में वहै। कदीम षेड़ौ तालणपुर कहीजतो।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३००)	१२५०)	१३००)	१२७५)	८००)

१ देहूरीयो

जैतारण था कोस २॥ धु मांहे। तालकीया था कोस १ धु मांहे। सूनो षेड़ो तालूकीया रा षड़े। दत्त रा० रतनसी षींवावत री। प्रो० कांधल भोजावत सीवड़ा नुं। हिमें प्रो० हरीदास नरा री नै रांमो

---

1. कलंदर।

अचळदासोत छै। बसै कोई नहीं, धरती हळवा २० जवार छै। षेत काठा, उनाळी अरट ढीबड़ा ७ कोसेटा ४ हुवै। तळाव मास ६ पांणी, नदी लूणी दिषण मांहे। तिण रै द्रह पीवै। वाषळौ पींपळीया रौ नजीक। एक बार राजा श्री सूरजसींघजी गांव उरौ ले नै हाडा सूजा नुं वरस १ पटै दीयौ थौ पछै फेर वळे सांसण कर दीयौ।

१ ब्रामू[1]पुरी

जैतारण था कोस ३ ऊगण मांहे। दत्त रा० जैतसी ऊदावत रौ ब्रा० डूंगर पदमावत जात राजगुर नुं भाटी राजै पातावत अरज कर गांव मोरेवी री सरहै द्वारकाजी मांहे दिराई। राजा रौ प्रो० डुंगर गुर हुतौ। पछै षेड़ौ बसीयौ। बांभण नै बसी रा रजपूत बांणीया सुतार बसै। धरती हळवा बीघा १००० बाजरी मोठ छै। षेत कंवळा। ऊनाळी ढीबड़ा १० तथा १२ चांच २ हुवै। तळाव २, मास ५ पांणी नदी कांलरा वाळी आथण मांहे बहै। बाहाळौ १ गांव नजीक ऊनाळीयां पीवै। हिमें ब्रा० वीरौ षेतसी रौ नै धनौ पीतावत नै पीराग इसर रौ छै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	९०)	२१०)	२१५)	२२०)	३००)

।।० मोरवी षुरद

जैतारण था कोस ४ ऊगवण मांहे, दत्त रा जैतसी ऊदावत रौ व्रि० वरसंघ पीथावत जात राजगुर नुं। मोरवी वडी प्रोहत राजा उदीत दोया नुं अै षेत दीया वै भडवा मोरेवां मांहे षेत छै। पहली षेड़ौ वसतौ। हिमें सूनौ छै। हिमें व्रि० लिषमीदास वीठळोत नै डूंगर दयाल रौ छै। धरती हळवा ६ सांवणु छै। गिररी वाळी नजीक षेड़ौ मातारी डूंगरी था नजीक वसतौ। तठै बांवळी १ छै। वीजौ कोई नहीं।

८।।

१. अमपुरी।

४ रायपुर रा पटा रा मांजरै पड़ीजै—

१ दीपावास

जैतारण था कोस ८ रूपारास रायपुर थी कोस १ ईसांन में। नदी लूणी नजीक पेड़ी। पाधर धरती हळवा २० ढीबड़ा ५। नदी रायपुर वाळी उगोण में तठै पेत।

१ सारंगवास

जैतारण था कोस ८ परवांण रायपुर था कोस २ ईसांन में। पेड़ी मगरा रै ऊपरा ढुंढा छै[1]। धरती हळवा २० ढीबड़ा ५ तथा ७ छै। नदी गांव था नजीक तठै पीवै। बर रा पेड़ा।

१ देवलो

जैतारण था कोस ... बरी नजीक कणुजा गुदरड़ा बीच।

१ धुलपुरीयौ

जैतारण था कोस ... बोराड़ कनै चांग मांहे गयौ। मेरां रौ गांव।

४

२ वावरा मांहे मांजरै—

१ हीयादी'रा वास

कोस ६ ऊगवण मांहे। बाबरा था कोस ०॥ ऊतर। पेड़ा रौ आरप[2] कोई नहीं। भाटी सांवळदास बसीयौ थौ। नदी नजीक धरती हळवा ५०, कोसेटा २५ छै।

१ ढसुरो

जैतारण था कोस १० पूरव में। वावरा थी कोस १॥ तळाव १

१. हाहीरावत।

1. खंडहर। 2. चिन्ह, खंडहर आदि।

फुलेसो[1] बावड़ी १ बूरी पड़ी छै। धरती हळवा ६० बावरा में पड़ीजै। भाषर री नांव ढसुरी छै। तिण रै नांवै गांव।

२

१ हीगवाणीयौ

जैतारण था कोस ५ ऊगवणी थी डावौ। वालाहेडा था कोस ०। पिछम था डावौ। तळाव १ हींगवणीयौ मास ८ पांणी। षेड़ै रौ घणौ आरष को नहीं। रा० हरीदास ठाकुरसीयोत कान्होत रौ वसायौ थौ। पछै यांनुं बलाड़ै बसाय नै घरतो बलाड़ै भेळी कीवी, पहलो बलाड़ै सींव थोड़ी थो। बलाड़ा रौ मांजरौ।

१ वालुवास

कोस १ पिछम नुं सोमावास था कोस ०।। पिछम जीवणै। कदीम वेड़ौ हुतौ पाघर ऊंची ठौड़ में, नाडी १ लोटाघरो रै मारग छै। षेड़ा री ठौड लिषमण षड़ै। घरती हळवा ... सोमावास रौ षेड़ौ। अरट ६ वोरोल रा लोक षड़ै वे आंहो गांवां बीच मांजरै मंडै छै।

१ वोकरलाई

प्रोहतां रौ बास। जैतारण था कोस ४ ऊत्तर थी डावौ। दत्त राव श्री मालदेजी रौ प्रोहित मूळा कूंपावत सोवाड़ नुं। हिमें प्रोहत रामसिंघ गोपाळदासोत नै नरसिंघदास रांमदासोत छै। प्रोहत नै जाट वसै। घरती हळवा ३० वाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी कौसेटा १० सेंवज चिणा छै। तळाव मास ४ पांणी नदी लूणी दिषण मांहे। पहसी नवौ पेड़ौ नीवोल री सींव में बसाय दीयौ थौ। पछै प्रो० करमसी मुळावत रै वांसै कुं न हुवौ[1], तरै करमसो री हेंस[5] षालसै कीयौ। सु जागीरदार नुं छै। भली वसती छै।

---

१. फूटोसो।

---

1. वंश में कोई नहीं रहा। 2. हिस्सा।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२५)	४२५)	५३०)	४१५)	६००)

१ कारोलीयो

जैतारण था कोस १ धू मांहे। दत्त रा० जसवंत डूंगसीयोत रौ श्रीमाळी व्यास वांजा गदाधर रा नुं, राव श्री मालदेजी री वार मांहे गांगाजी ऊपर सूरज परब मांहे दोयौ[1]। हिमें व्यास नरौ वछा रौ नै हररांम गवाल रौ छै। जाट नै श्रीमाळी बांभण बसै। धरती हळवा २५ जुवार बाजरी छै। ऊनाळी अरट ढीबड़ा ७ हुवै। तळाव मास ८ पांणी। नदी लूणी कोस १ धु मांहे। रेल वधनौर रै भाषरां वाळी। अरट २, रेल पहली सीरवी बसता[2] सु गांव सोमावास जाय बसीया।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	३१५)	५२५)	३३१)	५००)

१ जैना वासणी[1]

जैतारण था कोस २ दिषण मांहे। दत्त रा० डूंगरसी उदावत रौ श्रीमाळी व्यास जैना रामावत नुं। जैतारण पटै थी तद गांव आगै वासांगा वास षेत दीया था पछै नवौ षेड़ौ बसायौ। हिमें व्यास रामचंद सांवळोत नै हरजी जनावत छै। जाट नै बांभण बसै। धरती हळवा १५। बाजरी मोठ षेत कंवळा। ऊनाळी ढीबड़ा ४ सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। नदी बधनोर री भाषरां वाळी ऊगोण मांहे बहै। पहली सांगावास थी नजीक वसीयौ थौ हिमें—।[2]

१ भाषर वासणी

१. जनावसणी। २. संमत १६८८ पछै सांगावस था कोस ०॥ आथण मांहे बसै छै। रेख—

१२५)	३२५)	४१५)	३४०)	६००)

1. सूर्य ग्रहण में दान दिया। 2. पानी की रेल आने के पहले सीरवी वसते थे।

जैतारण था कोस २।। आथवण मांहे। दत्त रा० उदा सुजाबत रो श्रीमाळी व्यास भाषर नरहरोत डुगा वागळणीया रा रजपूत री सरेह दीया था। पछै माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी संमत १६९५ अटक ऊतरतां व्यास पीराग मुकंदोत[1] नुं फेर पटै कर दीयौं छै। हिमैं व्यास चत्रभुज भगवांन रौ नै वीजेरांम पिराग रौ छै। बांभण नै जाट बसै। धरती हळवा १५ मोठ मूंग छै। षेत काठा ऊनाळी ढीबड़ा ४ सेंवज चिणा हुवै। तळाव १ मास ४ पांणी गळणीया, रेल आवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११०)	२२५)	३५०)	३१५)	४५०)

२४. ८।। चारणां नुं—

१ सींधला नडी

जैतारण था कोस ३।। आथवण थी डावौ। दत्त राजा श्री सूरजसिंघजी रौ बाहारैट लाषा नांदणोत रोहड़ीया नुं संमत १६७२ मांगसर सुद ७ गांव ३ रैं भेळौ छै। हिमैं बारठ नरहरदास लाषावत नुं छै। जाट कुंभार बसै। धरती हळवा २० बाजरी मोठ षेत काठा कंवळा। ऊनाळी अरट ५ ढीबड़ौ १ सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। बाहाळो १ गांव नजीक आथवण मांहे। पहली मांगळीया गोयंददास चांपावत नुं पटै हुवै। पटावा देवली नजीक छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
०)	०)	०)	०)	४००)

।। षिनावड़ी चारणां रौ वास

जैतारण था कोस २ ऊगण मांहे दत्त रा० सुरतांण जैतसीयोत रौ। वारट साजण मेरावत जात रोहड़ीया नुं दीयौ। रा० सुरतांण नुं जैतारण हती तद षिनावड़ी आधी षालसै थी, आधी जागीरदार नुं पटै हती पछै षालसा रो सारी ही सांसण कर दीवी। बार मेरै

---

१. मुको।

भाद्रसा था आयी थो। हिमें बारठ गोरधनदास मेघराज री नै गरबदास दुदा री छै। वांणीया जाट चारण बांभण वसै। धरती हळवा २५। षेत कंवळा। जवार बाजरी। ऊनाळी अरट डीबड़ा ५ तथा ७ हुवै। तळाई १ कोहर १ छै। तिण बेऊ ही बास[1] पांणी पीवै। वसती पेड़ा भेळा वसै छै। जुदो पेड़ो नहीं।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३१०)	०)	४२५)	४३५)	६५०)

१ गेहावास

जैतारण था कोस ५ ऊगवण थी डावै। दत्त राव रतनसी षींवावत री षड़ीयौ गेई रतनावत नुं गांव रावड़ीयाक घोड़ाबळ लांबीया आणंदपुर वालाहेड़ वीचार षेत दीया था। पछै नवो षेड़ो बसायो। हिमें षेड़ो आसो पीथावत नै बीको देईदांन रै छै। जाट चारण बसै। पाहू पण पड़ै छै। धरती हळवा २० षेत सपरा मटीयाळा। ऊनाळो अरट १०। तळाव मास ४ पांणी पछै वालाहेड़ा पीवै। वाळाहेड़ा कनै वसै छै। षेड़ो सूनो। पिड़ीया गेहा रै वसु कुंन हुवो। हरपा रतनावत रा बेटां नुं गांव हुवो छै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११५)	१५०)	२००)	१७५)	४००)

१ गेहावासणी

जैतारण था कोस ४ दषण था जीवणो। दत्त रा० षींवो ऊदावत री, चारण नींबा षेतावत जात कविया नुं। हमें कविया रांमदास मांडण रो नै चावंडादास देईदास री छै। बास २ छै। जाट चारण बांणीया सीरवी बांभण बसै। धरती हळवा ३० बाजरी मोठ। षेत कोळा, ऊनाळी अरट १० तांई सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ५ पांणी। पछै उनाळीयां पीवै। आदु षेड़ो छै। पेली रैबारी बसता सु छाडगा[2]।

1. दोनों ही बस्तियें। 2. छोड़ गये।

षेड़ौ सूनौ दीयौ थौ। पाछै कविया गेहा बसायौ। तठा पाछै गेहवासणी कहीजै छै। देवळी चांवडीया नजीक।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११०)	३२५)	२७५)	२१५)	६००)

८॥

१ जोधावास

कोस १। आथूण था डावै। दत्त रा० डूंगरसी ऊदावत रौ मेहडु जोधा सारंगोत नुं। गांव हुनावास वडा री सींव रा षेत दीया था तिण में नवौ गांव बसायौ। हिमें मेहडु वाघौ सुरतांण रौ नैं हरीदास लुणावत छै। चारण जाट बसै। सांवणु धरती बीघा ६०० षेत काठा सषरा। ऊनाळी ढीबड़ा ८ सेंवज चिणा छै। तळाव मास ५ तथा ७ पांणी। पहली झुंझणदा वाळी रेल आवती।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११५)	२५०)	३५०)	२३५)	३००)

१ दागलो

जैतारण था कोस ४ ऊगरा मांहे। दत्त रा० सगतसिंघ ऊदेसींगोत रौ आढा दुरसा मेहावत नुं। गिररी पटा हती तरै दीयौ थौ।[1] हमैं आढा रतनसी डूंगरसीयोत नै रांमा सारदुळोत नुं छै। रजपूत वांणीया जाट कुंभार चारण बसै छै। धरती हळवा ३५ षेत सषरा। ऊनाळी अरट ३ ढीबड़ा ७ हुवै। तळाव मास ८ तथा १० पांणी। नदी कालंझर रा चांग मांनपुरा वाळी ए तीनई दागला री सींव में भेळी हुवै छै। मोरवी नजीक कांठा रा गांवां आदु[2] गांव छै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२१०)	४५०	४७५)	४२५)	६००)

१ वोहोगुण री वासणी

जैतारण था कोस ५ वायव कूण मांहे। दत्त रा० भानीदास

1. गिररी गांव पटे में था तब यह गांव दिया था। 2. प्राचीन।

पींवावत री पड़या वोहीगुण मालावत नुं। रा० भवांनीदास गांव नींवोली लोटोधरी पटै होतो तरै नींबोळा रा पेत दीया था, ते मांहे नवो पेड़ो वसीयो। हमें पिडीयो पेतसी पहराजोत छै। वीजो कोई नहीं। जाट नै चारण वसै। धरती हळवा १० पेत सपरा। ऊनाळी अरट १ कोसेटा १ हुवै। तळाव मास ४ पांणी हुवै पछै ऊनाळीयां पांणी पीवै। जोधपुर रै कांकड़ रो गांव छै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११५)	३३५)	३१०)	२१०)	३००)

१ लापा वासणी

जैतारण था कोस ३ आथूण मांहे। दत्त रा० रतनसी पींवावत रो। चारण लापा दासावत जात काछेला नुं गांव गळणीया रा रैवारीयां री ढांणी रा पेत दीया था। पछै लापै रै गांव नवो वसायो। लापै काळ मांहे गुडै रा मांणसां री घणी टाहर[1] वाळी की थी ताद दीयो। हमें कछेला गोदा गेलां रो पेमो सेपा रो माधो तेजां रो छै। चारण मोतीया जाट वसै। धरती हळवा २०। वाजरी मोठ पेत काठा। ऊनाळी अरट ढीवड़ा ४। सेवज चिणा छै। तळाव मास ८ पांणी। मांहे वेरीयां छै। नदी आगे वावाळो रेल।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	२१०)	३२०)	२३५)	५००)

१ तेजा री वासणी

जैतारण था कोस ५ दषण मांहे। दत्त रा० दलपत उदैसीयोत रो। चारण तेजा करमसोयोत आसीया नुं संमत १६५३ गांव नींबहड़ रांमपुरा री सींव रा षेत दीया था। तां मांहे नवो षेड़ो बसायो छै। हमें आसीया हाथी नै मोटो तेजावत छै। जाट गूजर चारण बसै। धरती हळवा ३० षेत सषरा। ऊनाळी ढोबड़ा ६ तथा ७ हुवै। तळाव १, मास ४ पांणी। पछै ऊनाळीयां पीवै। रेल आवै छै। रा० दलपत

१- ठहर।

जी नुं आगे गांव १० था, पटै था, तद दीयौ ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८५)	१५०)	१२५)	२५०)	५००)

जोगियां नुं—

१ झीलेळाव

जैतारण था कोस १२ दिषण था डावै उली पाहड़ां परै । दत्त मेर रावत देवा मेहरोत री जोगी थान रावळ नुं दमां रावळ रा नु रा० रतनसी पींपावत री बार में ही दीया । पहली रा० रनलीगी[1] भार-पुर रावळ करसां रावळ री छै । जोगी हीज बसे । धरती हळवा १० बाजरी छै। घणी को नहीं । उनाळी बावड़ी ऊपर अरट २ गेहूं षेत रा हुवे । तळाव वरसोंदीयौ पांणी । बावड़ी १ मीठी पुरस ४ छै। बाहाळो १ कोस ०।। ऊपर छै । षेड़ौ मगरी ऊपर बसै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७०)	१२५)	१३०)	११५)	२००)

परगने जैतारण रा गांव ७ मेरां रै दाषल छै । तिकै जैतारण री फिरसत मांहे अगे न छै[1] नै हिसार मेरां रा गांव मांडीया तरै मेरां रा ऐ गांव जैतारण दाषल मांडीया[2] छै ।

३ मेर वसे छै—

१ मांनपुरी

जैतारण था कोस १० ऊगण मांहे । मेर मांनो मालावत[3] चीतौ कांठोत री वसायौ । नवा षेड़ौ गांव चांग री सींव में बसायौ । बसती घणी । धरती हळवा ४० छै । ऊनाळी नहीं । कालंभर व्याव २ वोराड़ा री केर वाहळौ गांव नजीक छै । तठै वेरीयां छै । बावड़ी १ बाहाळे

१. रतनसी गांव वींवाज रा खेत दीया । २. मंडाया । ३. कालावत ।

1. पहले नहीं थे ।

मांहे छै। भाषर पुभराड़ीयो कहीजै। भाषर री पांभ वसै। वांसै मांझेवळो छै। कोटड़ी नजीक छै।

१ लालपुरो

जैतारण था कोस ६ परवांण कूण मांहे। मेर लाली गांव चांग री सीव मांहे नवौ पेड़ौ वसायौ थौ। मेर करमौ हवा[1] री बाहादर री पोत्रो चीतौ कांठोत वसै। धरती हळवा २० पेत। ऊनाळी ढीवड़ा १५ तथा २० हुवै। नदी गांव था नजीक तिण री वेरीयां पांणी मीठौ। चोढो पेड़ौ भापरी री पंभ पूठ वांसैवौ वापर[2] छै। भाषरां वीच गांव छै।

१ सीरावणो

जैतारण था कोस १० ऊगण मांहे चांग गजीक मेर चीतौ काठीता माडौ जसा रौ दिदा रौ पोत्री वसै। धरती हळवा २० सांवणू। ऊनाळो ढीवड़ा चांच २ छै। घणी कांई नहीं। तळाव मास ४ पांणी। वाहळो १ दिषण मांहे। तठै पाणी पीवै। पेड़ौ भाषर री पंभ ढौसा मगरा रै मांहडै श्री गांव। बधनोर री ही फिरसत मांहे मांडै छै। ऊनाळी पांणी री कमी[I]।

३

४ सूना गांव—

१ कोटेड़ो

जैतारण था कोस ११॥ ऊगवण मांहे। मैरा गोडात ऊदा री नाई वाळौ नरौ बसतौ। षेड़ौ भाषरी ऊपरां वसीयां था कोस ०॥ छै। धरती हळवा ५०, तळाई ४ षेतीवाळी, बावड़ी १ बंधवी तठै पांणी पीवै। हमारू चांगवाळो तोरण बांधीयौ छै।

१. हदा। २. घोवा कर।

I. सिंचाई के लिए पानी की कमी है।

जी नुं आगे गांव १० था, पटै था, तद दीयौ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८५)	१५०)	१२५)	२५०)	५००)

जोगियां नुं—

१ झीलेळाव

जैतारण था कोस १२ दिषण था डावै उली पाहड़ां परै। दत्त मेर रावत देवा मेहरोत रौ जोगी थान रावळ नुं दमां रावळ रा नु रा० रतनसी पीथावत री बार में ही दीया। पहली रा० रनलीगी[1] भार-पुर रावळ करमां रावळ रौ छै। जोगी हीज बसै। धरती हळवा १० बाजरी छै। घणी को नहीं। उनाळी बावड़ी ऊपर अरट २ गेहूं षेत रा हुवै। तळाव वरसोंदीयौ पांणी। बावड़ी १ मीठी पुरस ४ छै। बाहाळो १ कोस ०।। ऊपर छै। षेड़ौ मगरी ऊपर बसै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७०)	१२५)	१३०)	११५)	२००)

परगने जैतारण रा गांव ७ मेरां रै दाषल छै। तिकै जैतारण री फिरसत मांहे आगे न छै[1] नै हिसार मेरां रा गांव मांडीया तरै मेरां रा ऐ गांव जैतारण दाषल मांडीया[2] छै।

३ मेर बसै छै—

१ मांनपुरौ

जैतारण था कोस १० ऊगण मांहे। मेर मांनौ मालावत[3] चीतौ कांठोत रौ बसायौ। नवा षेड़ौ गांव चांग री सींव में बसायौ। बसती घणी। धरती हळवा ४० छै। ऊनाळी नहीं। कालंभर व्याव २ बोराड़ा री केर वाहळौ गांव नजीक छै। तठै वेरीयां छै। बावड़ी १ बाहाळे

१. रतनसी गांव वींवाज रा खेत दीया। २. मंडाया। ३. कालावत।

1. पहले नहीं थे।

मांहे छै। भाषर पुभराड़ीयो कहीजै। भाषर री पांभ वसैं। वांसै मांझेवळो छै। कोटड़ी नजीक छै।

१ लालपुरी

जैतारण था कोस ६ परवांण कूण मांहे। मेर लालौ गांव चांग री सीव मांहे नवौ षेड़ौ वसायौ थौ। मेर करमौ हवा[1] रौ बाहादर रौ पोत्रो चीतौ कांठोत वसै। धरती हळवा २० षेत। ऊनाळी ढीवड़ा १५ तथा २० हुवै। नदी गांव था नजीक तिण री वेरीयां पांणी मीठौ। चोढो षेड़ौ भाषरी री षंभ पूठ वांसैधौ वाषर[2] छै। भाषरां बीच गांव छै।

१ सीरावणो

जैतारण था कोस १० ऊगण मांहे चांग गजीक मेर चीतौ काठौता माडौ जसा रौ दिदा रौ पोत्रौ वसै। धरती हळवा २० सांवणू। ऊनाळी ढीवड़ा चांच २ छै। घणी कांई नहीं। तळाव मास ४ पांणी। वाहळो १ दिषण मांहे। तठै पाणी पीवै। षेड़ौ भाषर री षंभ ढोसा मगरा रै मांहडै ग्रौ गांव। बधनोर री ही फिरसत मांहे मांडै छै। ऊनाळी पांणी री कमी[1]।

३

४ सूना गांव—

१ कोटेड़ौ

जैतारण था कोस ११॥ ऊगवण मांहे। मेरा गोडात ऊदा री नाई वाळौ नरौ वसतौ। षेड़ौं भाषरी ऊपरां वसीयां था कोस ०॥ छै। धरती हळवा ५०, तळाई ४ षेतीवाळी, बावड़ी १ बंधवी तठै पांणी पीवै। हमारू चांगवाळो तोरण बांधीयौ छै।

१. हदा। २. धोवा कर।

1. सिंचाई के लिए पानी की कमी है।

१ डायटौ[1]

जैतारण था कोस —- षेड़ै री षबर कोई नहीं।

१ पींपळोदो[2]

जैतारण था कोस १० ऊगवण मांहे। मेर जगमाल डूंगा रौ। गोडात पहली बसतो। षेड़ौ आषरी री जड़ां बोराड़ था नजीक। हमें मेर जगमाळ समोबी रहै छै। धरती हळवा ४० री। वाहाळो बोराड़ वाळो तठै कुवौ थौ, तठै पीवता पांणी।

१ भैसापो

जैतारण था कोस १॥ ऊगवण मांहे। मेर तेजो पांचावत गोडात वसतौ। षेड़ौ मगरी ऊपरां। हमें मेर तेजा मांनपुरा बसै। धरती हळवा ५० तळाब १ मांहे गेहूं बीघा २०० हुवै। बावड़ी १ बंधवा छै। कोटड़ा नजीक मांनपुरा रा षड़ै छै।

७

गांव ३ जैतारण रा अजमेर दाखल छै। एकर सुं राजा श्री सुरज-सिंघजी अै गांव सुणीया तरै सीसोदीया जसवंता ऊगरावत नुं दीया था। बरस २ अमल हुवौ[1]। पछै संमत १६०२ सुं पछै अजमेर दाषल छै[3]।

१ जैन गढ तळाव छै

१ हमरळाई

१ कुंपावास

३

---

१. डावड़ो। २. पींपळरोदो। ३. इसके पश्चात मूल प्रति के ४ पत्र अनुपलब्ध हैं। 'ख' प्रति में भी यह वृत्तांत नहीं है।

---

1. दो वर्ष तक मारवाड़ के अधिकार में रहे।

परगनै जैतारण री सींव इण-इण परगनां लागै—

१ मेड़तौ

। रावड़ीयाक

१ अणंदपुर १ लांबीया

। बलाहड़ो

१ अणंदपुर १ लांबीया

। वांझाकुड़ी अणंदपुर

। गेहावास अणंदपुर लांबीया

। बालपुरे

१ दुदावास १ लांबीया १ कठमोर १ अमरपुर

। बकरालादी काणेचो

। लातरयौ काणेचौ बड़हड़ो

। नींबलौ काणेचौ षड़हाड़ी

। वासां

१ देहूरीयौ १ कठमोर २ बनसो

। पलीयावास देहरीयौ रजपूतां रौ

। जगहथीयो कठमोर

। सूबै अजमेर

। बाबरी

१ समेल १ करनो १ सषरवर

। चीतार

१ बावड़ी सुमेल री १ षाप सुमैल री

। रातड़ीयो

१ बावड़ी सुमैल री

---

१ परगनै जोधपुर—

। बहेड

१ काला ऊना १ ऊदळीयावास १ कुंपड़ावास

१ भांक १ षारीयो

। नींबलौ

१ सिणलो १ झांक

। वीकरळाई कान्हावास

। मालपुरीयौ बळुंदौ कांनावास

। प्रथीपुरौ बारीयो वीझवाड़ीयौ

। बलाहड़ौ घोड़ारट

। बहौगुण री बासणी

१ सिणलो १ झांक १ मुरकाबासणी

। झंझणवास वींझवाड़ीयौ

। पाटवौ वींझवाड़ीयौ

। लोटोधरी झांक

। वांभाकुड़ी बळुंदो घोड़ारट

। मुरड़ाहौ घोड़ारट

। देहूरीयौ प्रोहतां री घोड़ारट

। मेहावास घोड़ारट

। पींपळीयौ कापड़ीयो री घोड़ारट

---

१ परगनै सोझत—

। देवळी

१ चंडावळ १ छीतरीयौ १ वरणो १ अटेवड़ो

। रांमपुरौ रंडवाल

। वासीग्रो

१ चंडावळ १ डोयनंडो

। वीचपुड़ी रायरौ

। ऊदेसी कुवौ

१ करमावास १ चंडावळ १ मुरडाहो

। ऊपळीयो

१ करमावास १ रायरौ १ सीधपुरौ

। पंचाईणपुरो कालव

१८३२ री साल मंयलो वाग नै झलरो करायौ नै वाग री कमठो मैल कंवळ-चोकी वंगलो आददे सारा पासवानजी हा० हुवो, तिण रा ५००००) पांच लाख अंदाज लागा।

तळाव गुलाबसागर १८४५ संपूर्ण हुवो।

तळाव तेजसागर पासवांनी आपरै वाभेरे नांव सु करायो। जिको रै गयौ। तरै मा० भीवसिंघजी फतैसिंघजी रै खोळै था तिण रै नांम सु वंदायौ ने नांव फतैसागर दीयौ। जिण री मरमत हमार १९३६ अंद विजैसिंघजी रै हा० माहा० जसवंतसिंघजी रै राजलोग ऐ खुदीज नैर[1] तांही वांदी।

मेड़ते रै मारग में नांनडो गांव सु परली तरफ १ बावड़ी कराई। वेतो[2] सो मुसाफरां यै जळ री अड़चन रैती[3] ने नांव सोडो-सर री व दीयौ।

सोजत में इण मुजब :—

सैरपना री कोट पको करायौ नै गढ़ नै सैर विचलो कोट करायो नै पायगा[4] कराई।

१५. माहाराज श्री भींवसिंघजी री वखत में—

जोधपुर गढ में इण मुजब:—

फतै-मैल कने लोवा-पोळ रै ऊपर झरोखा कराया।

नै फतै-मैल में कोठार कोटड़ियां कराई।

ओर फूल-मैल आगे दुर न थो तिण नै करायो। तिको मैल माराज त सिंघजी नवो करायो।

नाजर री वावड़ी वाईजीसा रा तळाव सूं आथूणी[5] नरसींघजी रा कने नाजर .... कराई। सं० १८५९।

वाल समंद में—

वागां री पोळ नै ऊपरलो मैल करायो।

तळाव रै पठै ऊपरलो ताळां नै वागां रै मांय साळ कराई।

ईयां रै गंगी भटियांणीजी देरावजी था तिणां वालसमंद रै मारग तळाव आपरै नांव सुं करायो। अठै हमार माराज श्री तखतसिंघजी रै रा

जाड़ेचोजी वाग लगायो है।

१६. माराज श्री मानसिंहजी रै राज में इण मुजब। किला में इण मुजब—

आयसजी देवनाथजी रै ऊपर संमाद[1] कराई। नै टांके री खाडो तो सगळो वूरियोड़ो[2] थो, तिको दुरसत करायो।

लोवा-पोळ रै आगे पठी जै-पोळ रै ऊपर हा० ६५ भरो भरा गजगी री ताळा-कुंची ऐ कांम ऐ करायो, पथर सींघोरीये री भाकरी सूं मंगाय नै।

लखणा-पोळ सूं लगाय नै जै-पोळ री कोट नै जै-पोळ नवी कराई।

और धायभाईजी री हवेली हमार जाड़ेचोजी रै नोरी है तिको १८६४ में विरखा रै सवव सुं पड़ गयी थी तिको पाछी ताळा कुंची रै कांम री करायो। चोकेळाव रै चौफेर[3] नै रांणीसर में चोकेळाव सुं परवारी मारग रांणीसर में में जावण नै करायो। तळाव रांणीसर री कोट तरफ दीखणा १८५३ में सोर भुरज मांय सुं उडीयो थो जिणसुं पड़ गयो। तींसूं पाछो नवो पूठोवंद[4] करायो। किला में लंब घणो पड़तो[5] तिणसूं गोपाळ पोळ रै उरलो तरफ नै चोकेळाव रै परली तरफ भेरुं-पोळ नै वुरज और फेर, नवी कराई। नांव भेरुं-पोळ दीयो। भेरुंजी री थांन हो जिण सुं नांव दीयो।

सेवा री मैल चित्र-सेवा रै ऊपर श्रीनाथजी री करायो। नै जनांना में भटीयांणीजीसा रै मैल करायो जिण रै ऊपर मा० तखतसिंघजी रे रांणीजी वडा रांणावतजीसा मैल करायो।

जूनीवाळ पेला देवनाथजी माराज रै रेवण वासते कराई। पछै वे मामिंदर पधारीया तरै सिरकारी मकान है।

सैर में इण मुजव—

गुलाबसागर ऊपर श्रीनाथजी री मिंदर निज मिंदर १८६१ में करायो। तिको सूरतनाथजी, नै सूंपीयो, संमत १८६२ रा मा सुद्ध ५ नै मामिंदर री प्रतिष्ठा हुई नै झालरो करायो। वाग करायो नै रेवास रा मैल नै आसण री जायगा आयसजी देवनाथजी नै सूंपी, भेंट कीयो। इण कमठा में रु० दसलाख अंदाज लागा वतावै है।

---

१. समाधि। २. पटा हुआ। ३. चारों तरफ। ४, बड़े-बड़े घड़े हुए पत्थरों से। ५. लंबी दूरी पड़ती थी।

तळाव मांनसागर मामींदर में नै नैर पक्की कराई तिण में पांणी ठेरै नहीं। और मामिंदर सैर बसायौ नै सैरपना री कोट करायौ १८७१ में, सारो कुल कमठो रु० चाळीस लाख री गिणीजै हैं[1]।

ऊदैमिंदर नै श्रोनाथजी री मिंदर नै झालरो नै वाम आसण नाजर इमरत-रांम हस्ते कराय नै आयसजी भींवनाथजी रै भेंट किया, नै ऊदैमिंदर सैर बसायौ नै सेरपना री कोट करायौ। चेजै री नव नाथों री मिंदर सोजतीये दरवाजे मांय बारे करायौ जिण में हमार बग्गीखांनो है।

चौरासी सीधों री मिंदर सोजतीये दरवाजे रै बारे करायौ जठै हमार माराज जसवंतसिंघजी १९३१ जेळखांनो करायौ।

जनांना सिरदारां[2] मिंदर कराया :—

मिंदर पदमसर ऊपर..................करायौ।

मिंदर तळेटी रा मैलां कनै..................करायौ।

हमार डाकखांनो मढ़ी में..................करायौ।

मिंदर ३ गुलाबसागर ऊपर—

१. राजमैलां में।

१. लालबाबे रै मिंदर कनै।

१. हमार फरासखांनो है तिको।

१. मांयलेबाग में।

फुलेळाव रै ऊपर सिंघवी करायै नाथजी री, बालसमंद रै पठै ऊपर मंदर करायौ। मा० नाथजी री मिंदर मंडोर में नाथजो री माराज करायौ।

मंडोर में देवतावां री साळां में जळंधरनाथजी गोरखनाथजी वगेरां री मूरतां कोरांई[3] नै साळ कराई।

बाईस ही प्रगनां में नाथजी रा मिंदर कराया।

नागौर में वडजी री मिंदर ने मेलायत कराई। मांय नाथजी रा पगलीया पधाय नै[4] देवनाथजी रै भेंट कीवी।

---

१. चालीस लाख रुपये का माना जाता है। २. रानियों उपपत्नियों आदि ने। ३. मूर्तियें खुदवाई। ४. प्रतिष्ठा करवाकर।

जाळोर में सिरे मिंदर करायौ नै आसणयौ कोट में पांचुई भाई आयसजी रा जिणां री हवेलियां आसण में कराई नै आव कायस्थां मे आयसजी री दडेर कदीमी सांसण जठै मेलायता[1] कराई।

वाईजी श्री सिरै कंवर वाईजी भटियांणीजी राजेश्वर जगतसिंघजी नै परणाया तिणां जाळोरी दरवाजे कनै तळाव करायौ। तींरी मरमत नै कड़ो नै नळि वगेरै घाल मा० जसवंतसिंघजी करायौ।

१७. महाराज श्री तखतसिंघजी कमठा करायां री विगत।

किले में कराया :—

खाब का मैल ऊगणा आथूणा उखेलाय नवा कराया फूल-मैल आगलो उखेलाय नवौ लदावरै कांम[2] सु ं करायौ।

मोतीमैल में नवा पाट घालय नै करायौ, सोने रै कांम रौ करायौ।

तखत-विलास मैल नवो करायौ। ओर १९१४ रा भादवा वद ५ नै वीजळी पड़ी[3] जिण सु ं सोर उडीयौ तरै गढ में नुखसांण हुवो। वीगत—माताजी श्री चांवडाजी रै आगलो मिंदर उडगयौ, नवो करायौ।

कालका जी रौ नवो करायो।

गोपाळ-पोळ उड गई जिका नवी कराई, हस्ते जो० सिवनारायण।

फतैपोळ में आगली साळां उड गई तिके पाछी नवो कराई।

फतैपोळ ऊपरली छतरियां नै कांगरा नवा कराया।

चोकेळाव में मैल नवो करायौ।

जनांना में श्री रांणावतजीसा रौ मैल नै फेर ही जुदा-जुदा मैल कराया।

जैंपोळ रै कोट रौ कमठो अदुरो थौ सो संमपूरण करायौ। पौळ रै पठे ऊपर साळां आदम्यां रै रैवण नै वराई।

रांणीसर रै वुरज ऊपर अरट मंडाय नै नाळां घलाय नै अरट नग ४ रा कुंडीया कराय फतैमैल रा हवद में पांणी लावण वास्ते कराया।

---

१. महल आदि। २. जिसकी छत में पत्थर की पट्टियां अथवा लकड़ी नहीं होती। ३. विजली गिरी।

खास सैर में—गुलाब सागर रै बचे रै ऊगुणी त्रफ मैल कराया नै मैलां रा नांम राजमैल दिया। चौफेर पड़कोटो है। औ कमठो नाजर हरकरण हस्ते हुवौ।

सैर रे बारे इण मुजब कराया—

सेखावतजी रै तळाव रै उरै ने राईकेबाग रै परै लोक रै रैवण सारू छांवणी कराई। तीं वडा लालजी री डेरो रहतो।

वाड़ी घाटी में पड़दायतजी मगराजजी इण मुजब—वाड़ी घाटी में तळाव नै साळ कराई। नागोरी दरवाजे बारे बावड़ी कराई। नैं ऊपर नोरौ नै मिंदर करायौ। नांव मगराजी री बावड़ी कहीजै।

पड़दायतजी लछरायजी जाळोरी दरवाजे बारे बावड़ी कराई। ऊपर बाग लगायौ। मिंदर करायौ। पांणी भळभळो[1] नै अचाल[2] है।

नागोरी दरवाजा बारे नाजर हरकरण हस्ते बेरो १ खीणोजीयौ नै चोबीसौ हुवौ तीको हमार चांपावत सुलतांनसिंघजी नै सुंपीजियौ। तथा दिरीजियौ।

नागोरी दरवाजे बारे सूरपुरा रा मारग में तळाव १ लालसागर नै बाग नाजर हरकरण हस्ते हुवौ।

नाजर ऊजीरवगस रै हस्ते वेरो नै वाग ने मांय पोळ में मेलायत कराई, लालसागर रै कनै।

कासवा रा वेरा ले० नाजर हरकरण हस्ते करायौ चोबीतो ने मांय रैवास री जायगा कराई। वेरा तो आगला था तिणां री मरमत कराई।

चहुवांणजी सोयंतरे[3] री वेरो ने बाग उठेहीज करायौ।

मूंता विजैसिंघजी हस्ते मंडोर रै नजीक वाग वेरो करायौ ने मैल करायौ।

खींची उमेदजी हस्ते झालरी[4] तो आगलो थौ नै मंडोर रै परै कमठो करायौ।

सूते पूनमचंद हस्ते मंडोर कने वेरो नै वाग करायौ।

मंडोर कनै खोखरियां वेरा छापर वाग रांणीजी श्री रांणावत करायौ तीं कमठो करायौ तिको हसार माराज प्रतापसिंघजी नै है।

---

१. कुछ खारा। २. काम में न आने वाला। ३. मारवाड़ का एक ग्राम। ४. एक प्रकार की बावली जिसमें चारों ओर सीढ़ियां होती हैं।

देरावजी रै बाग ऊपर रांणी जाड़ेचीजी बाग लगायौ बाळसमंद में पठै ऊपर बड़ी भारी तीनखण री महल करायौ। तिको १९०९ फाट गयौ, तरै पाछौ नवो करायौ।

मांय जनाना रैंवास पठै ऊपर कराया नै पठै रै ऊपर पोळ नै साळां कराई।

दूजोड़ा बाग में बंगळो १ नवो नै मांयली कांनी जनांना रैंवास री जायगा कराई।

और महाराज री असवारी घणे बीसतर बाळसमंद विराजता तिण सं मुदत पछां मुतसदी खवास पासवांनां रा डेरा जुदा-जुदा सु हुवोड़ा है।

छैल-बाग आगे बाळसमंद सं पिछम त्रफ सिरमाळी पोकर री बगेची वाजती तठै बेरो, बाग नै मैलायत करायी नै नांव छैलबाग दियौ।

चीणां रै वाड़ियौ जठे कमठो करायौ।

सड़क री बंगलो नाजर हरकरण हस्ते हुओ नै तळाव बंदीजतो सु अदूरो रेयौ।

रांमदांन रै वाड़ीये बाग बावड़ी नै मेलायत कराई। नै नांव तखतबिलंद दीयौ। कमठो हस्ते पंवार अनाड़सिंघ। नाडेळाव तळाव तो आगलो है[1] नै मांय बेरो मैलायत नै बाग करायौ, पड़दायत मगराज जी हस्ते।

मीठीनाडी तळाव नै बाग कमठो प्रोयत जसकरण हस्ते हुवौ। मांचीये[2] भाखर ऊपर कमठो नाजर हरकरणा हस्ते हुवो। ऊपर बंगलो नै कोट अदूरो है।

कायलांणे नाजर सालगरांम हस्ते तळाव भारी बंदायौ नै बाग करायौ। मांय मेलायत पठो करायौ।

कायलांणा में आगे तो मैल नै सूरां री वाड़ो पोळ थो खालो, सारो माराज तखतसिंघजी रै करायोड़ो है। नै कायलांणो त्रफ दिखणांद नाजर हरकरण तळाव मोटो नै बाग कमठो कराया।

नाजरां रा तथा कारखांना रा रसोड़ो न्यारी-न्यारी जगवां है।

बीजोळाई तळाव प्रोयत जसकरण हस्ते बंदायो नै कमठो साळां और बंगळा बाग वगेरै कराया।

भिड़क[3] में जायगा प्रो० जसकरण हस्ते हुई।

---

१. पुराना है। २. चारपाई के आकार का। ३. अभी यह स्थान भीम भड़क कहलाता है।

तळाव अभैसागर ऊपर वेरो जाळीयो तो आगे थौ सुं बंदायौ मगराजजी हस्ते, नै वाग बंगळा ने मांय कमठो सारो नवो करायौ।

विदोयासाळ[1] रौ कमठौ संमत १६०२ फोरंच साब अजंट रा कैणा सुं लड़कां नै पढावण सारू तठै ई साळ रौ कमठो बड़ो मजबूत वीयौ[2] नै अंगरेजी नवेस १ फारसी नवेस १ पंडत २ संसक्रत पढावण सारू, ४ वथा ५ वरस रया। नै पछै वात ढीली पड़ गई। मांय ब्रांमणां री वरणीयां घणा वरस तक रही। पछै संमत १६२३ री साल तेलग सायब रौ डेरौ हुवौ। पछै मुनसीजी हाजी मेंमदखांजी रौ डेरौ हुवौ, तरै कमरा कमाड़ वगेरा दुरसत हुआ नै पछै दीवांण मरदांनअलीखांजी रौ डेरौ रयौ, तिणां कमठो अेक आथमणी[3] नवौ करायौ। नै हमांम रौ हक करायौ नै विदियासाळ ऊपरै बंगळो करायो। श्री हजूर सायबां री असवारी वठै रैणी सरू हुई तरै आपरै मरदांनअलीजी रै रैवण नै डेरौ हमार मौलवीजी रैता जकानै मुनसफी अडाल चहै तकां कमरो करायौ। पछै मुनसीजी हरदीयाल सिंघजी ४० री साल सारी विदीयासाळ पुरा कमाड़[4] काच दुरसत कराया ने ४१ री साल में पोळ तो आगली थी तिण आगै फेर वधाय नै अेलमदां सारू कमरा कराया है। मांय फेर कमठो जुदौ हुवौ है नै वगीचौ है, लगायौ।

---

१. विद्यासाल, यहां वर्तमान में भी स्कूल है। २. बड़ा मजबूत इमारत आदि का काम हुआ। ३. पश्चिम की ओर। ४. दरवाजे आदि।

नीवांणां[1] री विगत (ख)

(जोधपुर के शासक, अधिकारी व रानियों द्वारा बनवाये गये जलाशय आदि)

१. १ जोधानाडी सींगोरिया री भाकरी वारै राव जोधाजी री वार में जोधै पड़ियार कराई।

२. १ रंगा री नाड़ी सीये रंगे कराई कागा रा मारग में, तिका बुरांणी।[2]

३. १ कागा रा मारग में सोगत आगे पंचोळी सारण रा बेटा नरहर री नाडी छै। भीतर नाडी बाजतो थी सु बुरीज गयी। ऊपर पींपळ थी।

४. १ बावड़ी १ दवै वीसंबर भूतिया वाळा में खोदाय नै पकी बंदाई सं० १७१५ रा फागुण सुद १ नै पछै तुरकांणी में नीबायत सुजायतखां पटो वीगा २ रौ कर दीयौ थौ।

५. १ कुवो १ पोनी में पींपाड़े दुर्गै सुत रावत भुगीयावाळा में खुदाय नै बंदायो १७ में।

६. १ भांना नाडी भोजग भांनै कराई।

७. १ कसरा-नाडी राव गांगा री वार में कसरै कराई। १ मालबावड़ी राव गांगाजी रै नांव सु राव मालदे कराई, जूना नागोरी दरवाजा रै वारै। हमार सेनपुरीजी रा आखाड़ा मांय छै। तिका सुगवे नै सवराई १६६१ में सूरसिंघजी री वार में।

८. ३ मुना रा तोन कोरा पतर में कोराय भेरवा भाखर ऊपर खोजे फराछै कराया १७०३ रा भादवा सुद ७।

९. १ नेहूटा री नाडी मंडोवर रा मारग में राव मालदेजी रो........ उठै रेतां सु भदेसो कीदार साळ ओरो करायो।

१०. २ भंडारी ताराचंद नारणोत १८ में देहुरौ[3] मंडाया, देहुरो १ पारस्वनाथजी री नै देहरो १ श्री ठाकुरजी री नै देहरो १ श्री मादेवजी रो।

११. १ श्री जीणमाताजी री मंदर पंचोळी हरनुखदास हरराजोत करायो।

---

१ तालाब आदि जलाशय। २ धूल आदि से पट गई। ३ देवस्थान।

१२. १ बाळसमंद में बावडी १ हरबोला राजा उदैसिंघजी री ओळगणी[1] री करायोड़ी छै सं० १६००।

१३. १ तळाव देवकुंड माहाराज अभैसिंघजी पठो बंदायौ, नै चौंतरौ करायौ। तिण ऊपर हिंगळाजजी रौ मिंदर कराता हा सो अदूरौ रहीयो नै इण मिंदर सारूं मकरांणा री मूरत मंगाई ही सो मेरां रा वास में पड़ी है। पठा में पांणी रौ झरणो जाये है तिण हेटै बंदो माहाराज वखतसिंघजी बंदायो थौ।

१४. १ तळाव भवांनीकुंड माहाराज अभैसिंघजी करायौ।

१५. १ तळाव धायसागर वागर कनै धाय करायौ, माहाराज विजैसिंघजी री वार में[2]।

१६. १ तळाव मोतीकुंड विसनपुरा कनै पहला तो खांन कटणा सु[3] हुयौ थौ नै पछै मोतीबाई करायौ तिण में बेरी १८९६ में विसन-सांमीयां सारा सांमल होय नै कराई। मोतीबाई माहाराज वखतसिंघजी री खवास री बेटी थी, सो खेतासर रा भाटी भवांनीसिंघ फतैसिंघोत नै परणाई थी, नै पटो १००००) दस हजार रौ दीयौ थौ तिके अठै जोधपुर में हीज रहता, तिणां तळाव मोतीकुंड नै मिंदर ठाकुरजी रौ करायौ। माहाराज बिजैसिंघजी रै राज में।

जोधपुर गढ ऊपर टांका नीवांण छै—

१७. १ टांको १ वाड़ी रा मैलां कनै राजा सूरसिंघजी करायौ। गुजराती कारीगर नीवै कीयौ, सं० १६६४ तयार हुवौ।

१८. १ चोयड भुरज आगै तळाव नीबासर मास ६ पांणी रहै। राव मालदेजी करायौ थौ सो पाछो सं० १७०३ रा फागण वद २ खोजे फरासत संवरायौ नै कारीगर मेड़ता थी बुलाय देखायौ। तिण कही—पुरस ३५ हेटै पांणी घणो छै।

१९. मांयली पायगा री भींत रै पिछाड़ी कोठारां आगै भाटो काढ तळाव कियौ छै, मास ४ पांणी रहै नै पायगा नीचै गोळ दिसि गढ रै आदाफरां[4] ठोड़ छै नीचै पनरै पुरस भाटो भागां[5] पांणी घणो। गंगारांम सीरवी[6] बतायौ

१. वापिका। २. समय में। ३. खान की खुदाई के कारण। ४. ढाल में।
५. पत्थर तोड़ने पर। ६. भूमितल में पानी बताने वाला।

१२. १ बाळसमंद में बावडी १ हरबोला राजा उदैसिंघजी री ओळगणी[1] री करायोड़ी छै सं० १६००।

१३. १ तळाव देवकुंड माहाराज अभैसिंघजी पठो बंदायौ, नै चौंतरौ करायौ। तिण ऊपर हिंगळाजजी रौ मिंदर कराता हा सो अदूरौ रहीयो नै इण मिंदर सारूं मकरांणा री मूरत मंगाई ही सो मेरां रा वास में पड़ी है। पठा में पांणी रौ झरणो जाये है तिण हेटै बंदो माहाराज वखतसिंघजी बंदायो थौ।

१४. १ तळाव भवांनीकुंड माहाराज अभैसिंघजी करायौ।

१५. १ तळाव धायसागर वागर कनै धाय करायौ, माहाराज बिजैसिंघजी री वार में[2]।

१६. १ तळाव मोतीकुंड विसनपुरा कनै पहला तो खांन कटणा सु[3] हुयौ थौ नै पछै मोतीबाई करायौ तिण में बेरी १८९६ में विसन सांमीयां सारा सांमल होय नै कराई। मोतीबाई माहाराज वखतसिंघजी री खवास री बेटी थी, सो खेतासर रा भाटी भवांनीसिंघ फतैसिंघोत नै परणाई थी, नै पटो १००००) दस हजार रौ दीयौ थौ तिके अठै जोधपुर में हीज रहता, तिणां तळाव मोतीकुंड नै मिंदर ठाकुरजी रौ करायौ। माहाराज बिजैसिंघजी रै राज में।

जोधपुर गढ ऊपर टांका नीवांण छै—

१७. १ टांको १ वाड़ी रा मैलां कनै राजा सूरसिंघजी करायौ। गुजराती कारीगर नीबै कीयौ, सं० १६६४ तयार हुवौ।

१८. १ चोयड भुरज आगे तळाव नीबासर मास ६ पांणी रहै। राव मालदेजी करायो थौ सो पाछो सं० १७०३ रा फागण वद २ खोजे फरासत संवरायौ नै कारीगर मेड़ता थी बुलाय देखायौ। तिण कही—पुरस ३५ हेटै पांणी घणो छै।

१९. मांयलो पायगा री भींत रै पिछाड़ी कोठारां आगे भाटो काढ तळाव कियौ छै, मास ४ पांणी रहै नै पायगा नीचै गोळ दिसि गढ रै आदाफरां[4] ठोड़ छै नीचै पनरै पुरस भाटो भागां[5] पांणी घणौ। गंगारांम सीरवी[6] वतायौ

१. गायिका। २. समय में। ३. खान की खुदाई के कारण। ४. ढाल में। ५. पत्थर तोड़ने पर। ६ पृथ्वीतल में पानी बताने वाला।

सं० १७०३ रा फागण वद १ नै। महलां नीचै पांणी री कुंड छै तिण कुंड ऊपर राव जोधै जोधपुर रो गढ़ करायो तिण री पांणी झरणा में आवै छै।

२०. १ गढ़ रै तरफ नीचे झरणो छे तिण पांणी घड़ा २० निकळै छै नै कुंड आगे राव मालदेजी करायो नै वरसात रा पांणी सुं भरीजै छै नै कोट दाळो करायो मालदे, नै माहादेव री मिंदर छै।

२१. १ गढ रै आदेकरै राव मालदेजी करायो भाटो भांग नै पुरस ५२ खिणीयां पांणी निकळियो नै मेह रो वरसात सुं ऊपर मोरां सूं भरीजे। पांणी पुरस २० रहै नै नांम मेळावाव नै कोई नवसरो कहै छे।

तळाव चोकेळाव छै, मास ४ पांणी रहतो। राव मालदे नांम चोकेळाव दियो नै कोट करायो सो पड़ गयो १८६४ में, तरै माहाराज मांनसिंघजी पाछो नवो कोट करायो।

चोकेळाव में कुवो १ चौड़ो माहाराज अभैसिंघजी करायो सं० १७८६ में, नै माथै अरट मंडायो नै तांबा री घड़लियां कराई।

गढ़ में छतरीयां ३ छै लखणा पोळ नीचै, चढतां डावा हाथ मसीत आगे, छतरीयां री विगत :—

२२. १ राठोड़ तिलोकसी सिवराज भींयोत री जूनी छतरी एक।

२३. १ राठोड़ अचळो सिवराजोत जोधावत री एक छतरी।

२४. १ भाटी संकरदास सूरा भैरवदास जैसाउत री, नवी छतरी सं० १६६६ री कराई एके वाजू।

२५. १ मसीत कने छतरी अचळा राठोड़ री। पातसाह सूरसा १६०० गढ ऊपर आयो।

ख्यात फुटकर सं० १९१८ पोस सुद ७ :—

नीवांणां री विगत जोधपुर रा तळाव, कुवा, वावड़ी री विगत।

२६. १ तळाव पदमसर रांणी पदम देवड़ी रावजी गांगाजी री रांणो तळाव करायो १५७७ सु सीरीमाळीयां नै तांबापतर कर दीयो कहै छै। वेरीयां २ छै, वेरी १ तो व्यास संकर री कराई नै दूजी महेस सिरमाळी री कराई, सं० १७०७ रा मिगसर वद ८।

२७. १ तळाव रांणीसर रावजी श्री जोधाजी री हाडी रांणी तिण करायो सं० १५५७, सु नाळो रांणीसर पदमसर रो एक नै तळाव दोय छै नै

१२. १ बाळसमंद में बावडी १ हरबोला राजा उदेसिंघजी री ओळगणी[1] री करायोड़ी छै सं० १६००।

१३. १ तळाव देवकुंड माहाराज अभैसिंघजी पठो बंदायौ, नै चौंतरौ करायौ। तिण ऊपर हिंगळाजजी रौ मिंदर कराता हा सो अधूरौ रहीयो नै इण मिंदर सारूं मकरांणा री मूरत मंगाई ही सो मेरां रा वास में पड़ी है। पठा में पांणी रौ झरणो जाये है तिण हेटै बंदो माहाराज वखतसिंघजी बंदायो थौ।

१४. १ तळाव भवांनीकुंड माहाराज अभैसिंघजी करायौ।

१५. १ तळाव धायसागर वागर कनै धाय करायौ, माहाराज विजैसिंघजी री वार में[2]।

१६. १ तळाव मोतीकुंड विसनपुरा कनै पहला तो खांन कटणा सु[3] हुयौ थौ नै पछै मोतीबाई करायौ तिण में बेरी १८९६ में विसन सांमीयां सारा सांमल होय नै कराई। मोतीबाई माहाराज वखतसिंघजी री खवास री बेटी थी, सो खेतासर रा भाटी भवांनीसिंघ फतैसिंघोत नै परणाई थी, नै पटो १००००) दस हजार रौ दीयौ थौ तिके अठै जोधपुर में हीज रहता, तिणां तळाव मोतीकुंड नै मिंदर ठाकुरजी रौ करायौ। माहाराज बिजैसिंघजी रै राज में।

जोधपुर गढ ऊपर टांका नीवांण छै—

१७. १ टांको १ वाड़ी रा मैलां कनै राजा सूरसिंघजी करायौ। गुजराती कारीगर नीवै कीयो, सं० १६६४ तयार हुवो।

१८. १ चोयड भुरज आगे तळाव नीवासर मास ६ पांणी रहै। राव मालदेजी करायो थौ सो पाछो सं० १७०३ रा फागण वद २ खोजे फरासत संवरायो नै कारीगर मेड़ता थी बुलाय देखायौ। तिण कही—पुरस ३५ हेटे पांणी घणो छै।

१९. मांयलो पायगा री भींत रै पिछाड़ी कोठारां आगे भाटो काढ तळाव कियो छै, मास ४ पांणो रहै नै पायगा नीचै गोळ दिसि गढ रै आदाफरां[4] टोड़ छै नीचै पनरै पुरस भाटो भागां[5] पांणी घणो। गंगारांम सीरवी[6] वतायौ

१. [illegible]। २. समय में। ३. खान की खुदाई के कारण। ४. ढाल में।
५. पत्थर तोड़ने पर। ६. भूमितल में पानी बताने वाला।

सं० १७०३ रा फागण वद १ नै। महलां नीचै पांणी रौ कुंड छै तिण कुंड ऊपर राव जोधै जोधपुर रौ गढ़ करायौ तिण रौ पांणी झरणा में आवै छै।

२०. १ गढ़ रै तरफ नीचै झरणो छै तिण पांणी घड़ा २० निकळै छै नै कुंड आगे राव मालदेजी करायौ नै बरसात रा पांणी सुं भरीजै छै नै कोट दोळो करायो मालदे, नै माहादेव री मिंदर छै।

२१. १ गढ रै आदेफरै राव मालदेजी करायो भाटो भांग नै पुरस ५२ खिणीयां पांणी निकळियो नै मेह री बरसात सुं ऊपर सीरां सूं भरीजै। पांणी पुरस २० रहै नै नांम मेळावाव नै कोई नवसरो कहै छै।

तळाव चोकेळाव छै, मास ४ पांणी रहतो। राव मालदे नांम चोकेळाव दियौ नै कोट करायौ सो पड़ गयो १८६४ में, तरै माहाराज मांनसिंघजी पाछो नवो कोट करायो।

चोकेळाव में कुवो १ चौड़ो माहाराज अभैसिंघजी करायो सं० १७८६ में, नै माथै अरट मंडायौ नै तांबा री घड़लियां कराई।

गढ़ में छतरीयां ३ छै लखणा पोळ नीचै, चढतां डावा हाथ मसीत आगे, छतरीयां री विगत :—

२२. १ राठोड़ तिलोकसी सिवराज भींयोत री जूनी छतरी एक।

२३. १ राठोड़ अचळो सिवराजोत जोधावत री एक छतरी।

२४. १ भाटी संकरदास सूरा भैरवदास जैसावत रौ, नयी छतरी सं० १६६६ री कराई एके बाजू।

२५. १ मसीत कने छतरी अचळा राठोड़ री। पातसाह सूरसा १६०० गढ ऊपर आयो।

ख्यात फुटकर सं० १९१८ पोस सुद ७ :—

नीवांणां री विगत जोधपुर रा तळाव, कुवा, वावड़ी री विगत।

२६. १ तळाव पदमसर रांणी पदम देवड़ी रावजी गांगाजी री रांणी तळाव करायो १५७७ सु सीरीमाळीयां नै तांबापतर कर दीयो कहै छै। वेरीयां २ छै, वेरी १ तो व्यास संकर री कराई नै दूजी महेस सिरमाळी री कराई, सं० १७०७ रा मिगसर वद ८।

२७. १ तळाव रांणीसर रावजी श्री जोधाजी री हाडी रांणी तिण करायो सं० १५५७, सु नाळो रांणीसर पदमसर री एक नै तळाव दोय छै नै

रांणीसर रो ओटौ[1] तळाव पदमसर में घेरीयो छै। रांणीसर दोळो कोट राव मालदे करायो नै वेरीयां चार छै। जीया कोट रावजी मालदेजी करायौ छै नै अरट बुरजां तथा सोर ऊठणा सुं गेरा सै पड़तो गयौ जीं सु फेर पाछौ केई वार हुवौ छौ नै पठौ एक हमार म० तखतसिंघजी री वार में बंदायो नै ओटौ ऊंचौ लियो छै सु तळाव में जळ रौ फरक सवायौ पड़ीयौ छै।[2]

२८. १ तळाव फुलेलाव रावजी श्री सातलजी री वार मै रांणी भटीयांणी नांम फूलां तिण तळाव फुलेळाव करायौ सं० १५४६। वेरी झरव मांहे छै तीन सौ घड़ा पांणी छै। तिका बहूजी सेखावतजी म्हाराज जसवंतसिंघजी री रांणी सं० १७१५ रै बरस बंदाई।

२९. १ गांगेळाव तळाव राव गांगै करायौ थौ सं० १५७५ पछै एक वार पठौ फूटौ थौ तरै पाछौ माहाराजाजी श्री गजसिंघजी री रांणी बहूजी चंदावतजी रा मपेरा री तिकां माहाराज श्री जसवंतसिंघजी री बार मै फेर बंधायौ १७१४ रा मिगसर वद २।

३०. १ गोळनडी सुतरार गोवा री कराई, राव गांगा री वार में, पछै सिरमाळी जोत कराय पठो बंधायौ थौ, माहाराज श्री गजसिंघजी री वार में, सो आदो वंदीयो। सो फेर मीयां फरासत पूरो वंदायो सं० १७२४ में।

३१. १ बहूजी रौ तळाव राव मालदेजी री रांणी झाली सरूपदेजी करायौ १५९७ रा माहा सुद १३ तीकां रै कंवरजी उदैसिंघजी, चंद्रसेनजी रै माजी था, इण तळाव री नांव सरूपसागर है। पीरोजी[3] एक लाख लागा था।

३२. १ तळाव किलांणसागर रांणी हाडीजी नांम जसरंगदेजी हाडी माहाराज श्री जसवंतसिंघजी री रांणी वूंदी रा राव छतरसालजी[4] री वेटी सं० १७२० रा वैसाख सुद १५ रांग मांडी[5] नै सं० १७३० रा जेठ सुद १५ प्रतसटा हुई। पैला अठै रातोनाडो कहीजतो नै हाडीजी वाग करायौ सु राईका वाग कहै छै। आगै इण जायगा सिरमाळी गोयंद नाडियो खिणायो थौ राव गांगा री वार में नै अठै रातौ भाटो निकळतो तिण सूं रातोनाडो वाजीयो नै राईकोवाग ही इणां हाडीजी करायो। सं० १७२३ माराज श्री जसवंतसिंघजी

१. तालाब का वह स्थल जहां से तालाब भर जाने पर पानी छलक कर निकल जाता है। २. सवाया पानी ठहरता है। ३. मुगल समय का सिक्का विशेष। ४. शत्रुशाल। ५. नींव दिलवाई।

री रांणी वाग दोळो कोट वाराद १ हरमिंदर १ कुवो १ कोट वारे कराय वंदायी ।

३३. १ सेखावतजी रो तळाव कछवाही अंतरंगदेजी खडेला री, माहाराज श्री जसवंतसिंघजी री रांणी करायी । कंवरजी श्री पिरथीसिंघजी री माता नै इणां तळाव री प्रतसटा करी । तद बडो भारी उछव[1] कीयो । श्री हजूर रणवास सेत[2] अठै पधारीया छै । के दिन रहा छै नै नोरा सुं गोठां जीमण सारा राज में हुवा छै के कवेसुरां इण भाव रा गीत कवत मालम कराया त्यां में निरां सुं नीवाजसां हुई थी । सं० १७३० में पैहला इण ठौड़ सांहणो नाडिया जती रातं-नाडो ही इण होज मुजव सारा उछव हुवा छै नै इण तळाव रो नांव जांन सागर छै ।

३४. १ तळाव सूरसागर वाग महेल माहाराज श्री सूरजसिंघजी कराया । १६६४ रा वैसाख सुद २ प्रतिष्टा हुई परधांन भाटी गोयनदास कांमदार भंडारो लूणकरण गोरावत मुंसी केसव सूरसागर रो कांम वरस ८ हुवो थो । मांहे वेरीयां खिणाई है नै माहाराज श्री जसवंतसिहजी पठा ऊपर मैल, सं० १७५० रा वैसाख सुद ५ रांग री मोरत हुवो ।

३५. सुरजकुंड राजा सुरजसिंघजी करायो १६७२ रा जेठ सुद २ । ऊपर हमांम नै तळैटी रा महल ही राजा सुरजसिंघजी कराया सो कांम अधूरो रयो, सु पछै माहाराज श्री गजसिहजी री वार में संमपूरण कांम हुवो । हमांम नै मैल तयार हुवा सं० १६६६ में ।

३६. १ चहुवांणजी राव जोधा री रांणी तिण कूवो थो आगे तिणरी वावड़ी वंवाई थी नै ऊपर वड़ थो सो पड़ीयो तरै देवी री मूरत निकळी थी नै पाछी संवराई[3] सं० १७०२ रा । आगे मंडो री जायगा में थी ।

३७. वीरमकुंड सूरसागर पाछै व्यास पदमनाभ नाथै तापी रै करायो १६६८ रा जैठ सुद २ च्यारुं तरफ पांवड़िया छै ।

३८. १ तापी वावड़ी व्यास तापी तेजावत कराई जात पोकरणा १६७५ काती सुद १५ । पांणी खारो रु० वोहोत्तर हजार ने एक लागा । ऊंडो पुरस ६० नै सरु खोदणी १६७१ नै पुरी पिचतर, ७२०००) माहाराज श्री जसवंत-सिंघजी री वार में ।

---

१. उत्सव । २. रानियों सहित । ३. मरम्मत करवाई ।

३९. १ तळाव कसुमदेसर बागैजी कड़मदेजी बंधायो। पैला कागड़ो कहीजती थी। सु रांणी माहाराज गजसिंघजी री थी गांव लोहाळीया री सं० १७११ लगाय, सं० १७१३ प्रतिष्ठा हुई।

४०. १ जांजा-वेरो सूरसागर विचै सो जोसी संकरपांण सं० १७१७ रा चैत वद में बंदाय नै बाग करायो।

४१. १ कुवा १ रांमदेवरै थांन कनै जैदेव करायो।

४२. १ जाड़ेची[1] झालरो रांमपोळ बारै जाड़ैचीजी री नांव पेमावतीजी नवानगर री माहाराज श्री गजसिंघजी री रांणी करायो सु नांम जाड़ेची झालरो कै छै।

४३. १ रूपा वेरो भाड़ै स्याय कनै छीपो रूपो वंचायन करायो सं० १७३३।

४४. १ राजकुवो माराज श्री जसवंतसिंघजी री वार में खुदायो सु अदूरो सु सं० १७४१ में ईनायतखां पातस्या री तरफ सुं तिण वंधायो।

४५. १ तिरवाड़ी रो झालरो सिरीमाळी सुखदेव रो करायो छै मा० श्री अजीतसिंघजी रै राज में १७ में।

४६. १ झालरो १ पं० केसरीसिंघजी सं० १७३० में वंधायो राईकाबाग ऊपर।

४७. १ नवलखो माहाराज अभैसिंघजी करायो केसरीसिंघ रा झालरा परै।

४८. तुंवरजी रो झालरो माहाराज श्री अजीतसिंघजी री रांणी तूंवरजी[2] करायो।

४९. १ भांणसर ताळाव राव गांगा री वार में ऊड़ भांण करायो। सु बुरीज गयो।

५०. १ मालसर तळाव थळी में राव मालदे करायो।

५१. ३ तळाव वीसोलाव, नै फलासर नै नाडेळाव सव जोधाजी री वार में प्रोयतां राजगुरां कराया उणी री वार में।

५२. १ फतैसागर तळाव पैलां तो पासवांनजी श्री गुलाबरायजी आपरा भाणां तेजसिंघजी रै नांवै तेजसागर करायो थो पिण समपूरण नहीं हुवो, १८३५

१. जाड़ेचा खांप की रानी। २. तंवर खांप की रानी।

पछै तेजसिंघजी चल गया[1] तरै पाटवी कंवर माहाराज श्री विजैसिंघजी रै फतैसिंघजी था तिण सुं नांम फतैसागर कैण लागा।कीऊंक भींवसिंघजी रा राज में हुवो थो और माहाराज श्री जसवंतसिंघजी रै राज में सं० १९३६ सुं मेता विजैसिंघजी की फतोवी राड़ रेखां ऊपर नै कितरोक सायरां रा तथा गांवां रा ईजारदारां तथा राज सूं खजाने सूं[2] तळाव खुदायो नै नेहर वंदाई।

५३. १ पासवांनजी रो वाग नै वाग मांयलो झालरो पासवांनजी गुलावरायजी करायो, सु १८३१ में तो वाग रो कमठो सुरु हुवो थो नै १८३२ में झालरो करायो छै।

५४. १ तळाव गुलावसागर माहाराज श्री विजैसिंघजी री वार में पासवांनजी गुलावरायजी १८४२ तो नींव दीरीजी नै १८४५ तयार हुवो। ऊगण बचा रो नांव तेजसागर पिण केता सु अधूरो थो सु उतरादो उगुणो पठो वचा रो माहाराज श्री मांनसिंघजी री वार में १८८८ रा वरस में पछै तयार हुवो छै। हमार माहाराज श्री तखतसिंघजी रा राज में तिण पर उतरादो तरफ तो श्री तीजामांजी मिंदर १९०२ रा फागण वद २ तयार करायो उतरादा घाट पर सुं पछै १९०९ रा बरस मींदर मचक खाही[3] तद दूजो मींदर घासमंडी में करायो। तीजामांजी नांव परताप कंवर, देरासरीया भाटी गोयनदास सेरसिंघोत री वेटी गांव जाखण रा, माहाराज श्री मांनसिंघजी रै रांणी।

५५. १ जैता-वेरो मूता जेतै वदे जात करायो राव जोधाजी री वार में करायो। इण रै भाई वारादरी कराई।

५६. १ वंदारां रो वेरो मुता वेला रा घर आगे।

५७. १ नासणीयां रो वेरो भंडारी मना रा घर आगे, तीए ऊपर।

५८. १ रोखा-वेरो राजा गजसिंघजी री वार में माळी रेखे करायो। पांणी टूटे नहीं।

६९. १ घांसी-वेरो. नासणीयां रे वेरा रे अड़तो[4] तिण ऊपर कूंपावत राजसिंघ अरट मंडायो सं० १६९९ रा वैसाख वद ४ नै, आसोप री हवेली में पांणी लावणा सारू।

६०. १ कुंभारीयो वेरो राव जोधाजी री वार में कुंभार खीमे करायो। हमार कुंभारीयो कुवो कहीजै।

---

१. स्वर्गवास हो गया। २. राज्य के कोष से। ३. दुन लचक गई। ४. पास ही, लगा हुआ।

६१. १ नीबलो कुवो, राव जोधाजी री वार में सिरमाळी नींबै करायौ।

६२. १ जगु-वाव, जूना नागोरी दरवाजा रै कनै राव जोधा री वार में ओसवाळ जगु कराई थी सु राजा सूरसिंघजी री पातर[1] कांमरेखा संवराई[2] सं० १५८७ में।

६३. १ दया-वेरो, सांमी बुरज नीचै नै पसेरो साना राव जोधा री वार दवे सीरमाळी करायौ।

६४. १ राजवाग में सेहल वाळो कुओ राजा सूरसिंघजी री वार में भाटी गोयंददास करायौ नै वाग करायौ नै पेला दांमेळाई कहीजती थी।

६५. १ कुवो १ वाग री पोळ कनै सूरसागर माहाराज गजसिंघजी री वार में।

६६. १ बावड़ी रूपा धाय री, रूपा देवड़ी थी गेलोत चांपा री बहू। बाईजी श्री मनभावतीजी सायजादा परवेज नै परणाई थी माहाराज सायब श्री गजसिंघजी री बार में, तिण री धाय थी, १६८९ रा वैसाख सुद १५ कराई। पांणी मीठो ऊपर पिरागदास री छतरी छै ने भाकरी ऊपर देहरो करायौ नै वावड़ी कने मालासर तळाव थो राव मालदेजी री करायोड़ो सु बुरीज गयौ।

६७. १ कूंपावत राजसिंघ करायौ कुवो नवोड़ो १६७१ रा सा० सूरसिंघजी री वार में सूरसागर कांनी।[3]

६८. १ अनारा[4] री वावड़ो, राजा गजसिंघजी री खवास थी तिण कराई १६८६ में। हमार जोसीयां री बगेची बाजै।

६९. १ वावड़ी गोरांधाय री, गोरां जात री राठौड़ थी मना पंवार री वहू नै वेटी राठोड़ किसना भांवर री देवराजोत री थी। माहाराज श्री जसवंत सिंहजी री धाय थी, तिण री १७१६ रा जेठ सुद १४ प्रतिष्ठा हुई। हमार ऊपर पोकरण री हवेली उठै छै।

७०. १ केसो री वावड़ी राजा गजसिंघजी री पासवान थी, अनारां री बैन जिण कराई सं० १६८६ में हमार विदयासाळ में।

७१. १ वावड़ी जगत भाय, राठौड़ जगतसिंघ रांमदासोत खांप मेड़तीया चांदावत कराई १७१० रा भादवा सुद १५, उठे वळूंदा री हवेली में है।

---

१. वेश्या। २. मरम्मत आदि करवाई। ३. सूरसागर की तरफ। ४. यह मुस्लिम महिला थी।

७२. इंदरकुंवर री वाव, राजा सूरसिंघजी री वेटी तिण कराई। पहला इण जायगा करणा रो वेरो कहीजतो थो। राव मालदेजी री वार में करणे सोळंकी वेरो करायो, तिण जागा वावड़ी कराई नै पछै राजा जसवंतसिंघजी सं० १७०३ थीरासत खोजा नै दियो तिके टांणै मैल में वाग करायो। हमार मीयां री वाग वाजै है।

७३. १ जालप भावड़ी मुता जालप री कराई १६०९ रा वैसाख सुद ७, राव मालदे री वार में।

७४. रांमा रो वेटो रांमे महेस री रांम वावड़ी कराई। तिण रो सीया वेरी थी तिका परदार पाड़खां सूरसिंघजी री वार में संवराई नै पछै भगवांन कुसळावत १७०७ में वाग करायो।

७५. २ रांम वावड़ी चांदपोळ वारे सूरजकुंड कनै मूता रांमा री कराई। १५९५ रा मिगसर सुद ५ राव मालदे री वार में कराई। नै महादेवजी रामेश्वरजी रो देवरो वावड़ी कने करायो। सु तुरकांणी में सं० १६१९ में वाड़ोतरै राजा श्री गजसिंघजी फेर करायो १६८७। पछै फेर १७३७ रा पोस सुद १२ नवाव नाहरवेद पड़ायो सु पाछो फेर हुवो। सु हमार माहाराज श्री तखतसिंघजी रा राज में जीणऊधार[1] पंचाऊ जोसी परभुलालजी सिकदार पंवार सेरकरणजी हसते हुवो १९०१। पछै सं० १९३३ में जोसी गंगाविसनजी मिंदर री ऊछाळी लायनै[2] कमठो पूठीयां[3] री १ को करायो सो गंगाविसनजी वणायो अदुरो है।

७६. १ देवी चांवंड रै थांन आगे जरव छै सु राजा सूरसिंघजी री वार में सोनारे खिणाई। तिण ऊपर चोतरो छै समाद री सनीयासी परसादगी रो पंचोळी नैना रा घर आगे सं० १६९० करायो। ऊपर माहादेव रो मिंदर छै।

७७. १ माळी-वेरो माळी रांमा रो करायो जालप कनै छै। वुरांणो थो। सु राजा गजसिंघजी री वार में सं १६८७ सूं पाछो करायो।

७७. १ पछै रांम-वावड़ी नवी मूंदयार रा वारठजी करणीदांनजी १८ में वंधाई। माहाराज श्री विजैसिंघजी रा राज में।

७९. १ वावड़ी १ पंचोळी फतैसिंग विजैकरणोत भींवांणी वंदाई[4] १७४० में। सोवादार सुजातखां री वार में।

---

१. जीर्णोद्धार। २. स्थान ऊंचा करवा कर। ३. घड़े हुए घड़े पत्थर। ४. बंधवाई।

८०. १ रांम-पोळ रांम मूतै कराई। जात गेलण मेसरी १५६३ रा मिगसर सुद ६।

८१. १ तळाव सोभागदेसर गांव छीजर कछ पटरांणी सोभागदेजी माहाराज सूरसिंघजी री बहू करायौ १६६६ रा पछै फेर छीजर गांव बसायौ नै बाग लगायौ थौ। कांम भंडारी लूणा हस्ते हुवो थौ। श्री माताजी हरसतीजी री मिंदर तळाव री पाळ गांव में करायौ सु माताजी रै मिंदर रै पांवां झरणो आवै सु पाळ मांहे पांणी झरणौ हेटे नीसरै।

८२. १ बसंत-सागर नाजर बसंत बंधायौ पैला झरणो थौ चौगान री वांमी तरफ भाखर मांये गढ ऊपर १७१६ रा मिगसग सुद ५, राजा जसवंतसिंघजी री वार में।

८३. १ तळाव रासोळाई राठौड़ रायसिंघ बीकानेरीये कराई। ऊपर रासा री रैवास थौ। पछै ऊजड़ हुवौ तरै माहाराज श्री जसवंतसिंघजी रा राज में सोभावत भगवांनदास सं० १७१४ रा चैत बद ५ फेर खिणाई। नांव भगवांनसागर दीयौ सु नांम रासोळाई ही कहै छै। हमार जैपोळ आगे है नै आगे अठे राव जोधाजी री वार में चहूवांण रासो री वास थौ नै नाडो रासोळाई कराई थी। जूनी बही में लिखियो थौ तिण सुं जांणां[1], रायसिंघ नहीं कराई।

१ सहदेव री वावड़ी राव मालदेजी री सहदेव सोलंकी करणा री तिण कराई। तिण ऊपर तुरक मेहमेद परदार राजा सूरसिंघजी री वार में मुनारां दोय कराया।

१ रांम-वावड़ी सूरसागर विचै पंचोळी मोहोणदास कराई सं० १७०७ रा पोहो सुद ८। माहाराज जसवंतसिंघजी री वार में।

१ भटुकड़ी वावड़ी कनै मुणोत नैणसी जैमलोत नवी वावड़ी कराई सं० १७०७ रा माहा सुद में माहाराज जसवंतसिंघजी री वार में। हमार मुणोतां री वाग वाजै छै।[2]

८४. १ फरासत-सागर, मीयां फरासत वाहादरखां नपीर पीराजी तळाव बंधायो सं० १७१२ रा फागण सुद ११ रा पैला गोळ-नडी कहीजती थी सु हमें ही गोळ-नडी कहीजै छै। गोळ में है।[3] तिण मांय हमार माहाराज श्री

---

१. जिससे जान पड़ता है। २. अभी मुहनोतों का वाग कहलाता है। ३. गोळ-मोहल्ले में विद्यमान है।

तखतसिघजी रा राज में महारांणीजी श्री रांणावतजी नांम गुलाबकंवर रणसिघ मोखमसिघोत रा, माहाराज कंवार श्री जसवंतसिघजी री मां ।

८५. १ कूंपावत राजसिघ वाग अहतो नवी वावड़ी सिकदार रागोदास सोभावत खीणाई सं० १७०७ रा माहा सुद में । राजा जसवंतसिघजी री वार में करायी सूरसागर कांनी नें सं० १७११ में वाग करायी ।

८६. १ जाळोर गढ़ नीचे मीयां फरासत वाहादर खां प्रीथीराजोत जात तुंवर तिण वावड़ी कराई १७२० रा भादवा वद ५, नांव फरासत-वाव दीयी । पैला जोगी री वाव कहीजती थी ।

८७. १ खेता री बेरो बांमण खेतै करायी नागोरी दरवाजा रै मूडा आगे, राव् जोधाजी री वार में करायी ।

८८. १ मीयां फरासत इण ही कापरण रा तळाव मांहे वावड़ो कराई सं० १७१९ रा चैत सुद ५ ।

८९. १ प्रगने सीवांणा री गांव कुसीप री सींव में भाखर गोडो तठै श्री माहादेवजी री देवरो नै भींव पांडव री गोडो फोड़ नै खाण खायो छै तठै भाखर मांय सु पांणी नोसरै छै, तिको तीरथ छै । आदु कुंड भरीयो छै ।

९०. १ कोयला परवत माताजी श्री हींगळाजजी रो देवरो आद तीरथ छै । पांणी री वडो कुंड है नै काग दरसण भला कार हुवै तद कोई देखै नहीं । सीवांणा सुं कोस ४ अनाद काळ रो थांन छै[1] । माखी नै कागलो थांन सुं नजीक न आवै । पूजा जोगा गुसांई करै छै ।

९१. १ मंडोवर आद[2] गढ नै नागादरी री नदी नै श्री मंडलेस्वर माहादेव आद छै । श्री रामाअवतार में श्री रुगनाथजी श्री सीताजी लिछमणजी सुग्रीव, वभीसण, हनुमान तथा दूजी सेना साथै ले नै लंका सुं रावण मार नै पुसप-वीमांण वोराज नै अठै श्री मंडलेस्वरजी री पूजा पाछा पधारतां कीवी नै सेना साथै घणी यो तिण सुं भीड़ में दरसण हुवै नहीं तरै श्री रुगनाथजी री श्री माहादेवीजी री अग्या सुं कंकर मत्र संकर हुवा सु प्रीत री इक भाखर में सारा लिगांकार रा दरसण हुवा, तरै सेन्या सारी नै दरसण हुवा । पछै श्री रुगनाथजी अजोध्या पधारीया नै नागादरी नदी में श्री गंगाजी परगट हुवा । पांणी उत्तर दिस घा आवै[3] नै मंडोवर रुखेस्वर तपस्या कीवी तिण सुं नांम

१. बहुत प्राचीन, अनादिकाल से । २. अति प्राचीन । ३. उत्तर दिशा की ओर से पानी आता है ।

मंडोवर कहीजियो। दूजा तीरथां री भीमसेण माहातम में बिसतार कर कही है।

९२. १ श्री झाड़खंड श्री बैजनाथजी माहादेव रा दरसण करण नुं नाहड़राव पड़ियार जावतो थौ पछै सिव प्रसन हुवा तरै सपना मैं आग्या हुई— थारी भगती सुं परसन हुवा म्हे मंडोर पधारसां फलांणै दिन। तरै दिन री ऊगाळी मंडोवर सुं कोस दोय पालड़ी कनै परगट हुवां जमी मांय सुं बारै नीसरिया सु बड़ी हाक हुई तरै गायां चमकी तरै गोरीयां[1] हो-हो सबद कीयो सु नीकळता ऊरा रेह गया। पछै श्री माहादेवजी बैजनाथजी री पूजा नाहड़राव कीवी देवरो करायो, सु हनोज है।[2]

९३. १ बालसमंद तळाव नाहड़राव रै भाई बालराव पड़ीयार करायो ११७५ रा मंडोर सुं कोस १।

९४. १ सं० १०७० रा पड़ीयार नाहड़राव मंडोवर री कोट करायो।

९५. १ कागो आद तीरथ जोधपुर सुं अध कोस कागभुसंड रखेसर अठै तपस्या करतो। भाखर मांय सु गंगाजी परगट हुवा। नांम कुंड कागो दीयो। सीतळा रो थांन माराज श्री विजैसिंघजी पधराया छै[3]। कुंड मांहे भाखर मांहे उत्तर दिस था पांणी आवै। पंच तीरथ कहीजै नै पछै बीरांमण समट वध पारो बंधायो १७३६।

९६. १ जोगी तीरथ आद तीरथ देवीझर तांई गंगाजी भाखर मांय था परवाय नीसरै, पंच तीरथी मांहे। जोधपुर सुं कोस ४। पांणी उत्तर दिस तां आवै, तिण था बाग पांणी पीवै।

९७. १ अरणो आद तीरथ अठै अरण रखेसुर रहता। तपस्या करतां गंगाजी प्रगट हुवा। मोकळावस था अध कोस।

९८. १ नीबो तीरथ अठै नीब रखेस्वर तपस्या करता गंगा परगट हुई। जोधपुर सुं कोस ३।

९९. १ पंच तीरथी मांहे वडी ठौड़, वडो कुंड, मंडोर सुं अधकोस ऊपर मोटो वड़, आद तीरथ। पांणी ऊत्तर दिस था आवै।

१००. १ झरणो आद तीरथ अठै जोगी चिड़ियानाथजी तपस्या करता,

---

१. गायें चराने वाले। २. अभी तक है। ३. स्थापित करवाया।

सु राव जोधे गढ री नींव दीनी तरै झोळी में धूणीं घाल वहिर हुग्रा।[1]

गढ ऊपर के देवस्थांन :—

१०१. १ श्री ग्राणंदघणजी मिंदर राजा गजसिंघजी करायो सं० १६९२ रा।

१०२. १ श्री रिणछोड़जी रो देहरो ऊदांवाई राव वागा री वहू राव गांगा री मां रो करायो विटली ऊपर। हमें घांन रो कोठार छै।

१०३. १ श्री चत्रभुज रो देवरो चोकेळाव ऊपर वहूजी झाली राव मालदे री वहू नै उदैसिंघजी री मां रो करायो। पछै तुरकांणी हुई तरै मसीत[2] कीवी नै हमें कारखांनो है।

१०४. १ श्री चांवण्डा देवी रो थांन चांवंड भुरज ऊपर आगै तो राव जोधै करायो थो।

१०५. १ श्री माहादेवजी झरणा ऊपर छै।

१०६. १ सेरखां रै नीवांण राजा जसवंतसिंघजी री वार में १७०७ मैं सूरसागर कनै माळीयां रा गेहूंवां रा वेरा लेनै वाग करायो।

१०७. १ पंचोळी वलु रायोदासोत वाग करायो।

१०८. १ सिंगवी रायमल कुवो पुदाय नै वाग करायो।

१०९. १ खोजे लाले वाग करायो।

११०. १ मीर जाफर रु० वाग करायो।

१११. १ घीचना तोतापीर रै वेटै वाग करायो।

११२. १ ईंदो हरी वाग करायो।

११३. १ पुरवीयो केसर वाग करायो।

११४. १ करमसोत परथीराज वाग करायो।

११५. १ ग्राढे महेसदास वाग करायो।

११६. १ वावड़ी १ उवो पंचोळी मूणदास कराई १७०७ में।

११७. १ ठाकुरजी श्री गंगस्यामजी रो देवरो माहा गंगदास गदाधर रै करायो, जोधपुर मांय १६७१। पैला देवरो राव गांगा रो करायो थो मु

---

१. झोली में धूनी के अंगारे डाल कर रवाना हुए। २. मस्जिद।

ऊखेलाय ने नवौ करायौ १६८१ ईंडो चढ़ायौ ।[1] महेसरी गंगादास नै साह धनो गदाधर मोहणदास राठी भागीरथ १६५६ रा माह सुद ५ नै आया था सं० १७३७ पोस वदी पातसा ओरंगजेब रा हुकम सुं पाड़ीयौ नबाब तेबर बेग । पछै इण जायगा मसीत कराई । माहाराजा श्री बखतसिंघजी मसीत पड़ाई नै पाछो मिंदर गंगस्यांमजी री करायौ । माहाराजा श्री वीजेसिंघजी करायौ १८१० में नै नोबत चढ़ाई । रु० ६०००) धनै पंचाऊ लागा ने बाकी रु० १८०००) गंगादास लगाया ।

११८. १ श्री सीतारामजी रौ देवरौ सिकदार भगवांनदास कुसळावत करायौ जोधपुर में १७२० रा काती सुद १ जगतसिंह रांमदासोत री वावड़ी कनै ।

११९. १ श्री मुनांयकजी रौ मिंदर रावजी गांगाजी री वार में प्रोहत मूळै करायौ संमत १५ ।

१२०. १ श्री जगनाथजी रा मिंदर ।

१२१. १ श्री सांवळाजी रौ देहरो राजा गजसिंघजी रै धायभाई मधू चहुवांण करायौ सं० १७ ।

१२२. १ श्री गोपीनाथजी रौ देवरौ बाई हरवंसी करायौ सं० १६८४ में सूरजकुंड सांमी ।

१२३. १ सांमी हरीरांम री देहरो सं० १७०८ पछै भाटी रांमसिंघ कूंभावत कराय दीयो सं० १७१४ में ।

१२४. १ श्री संतनाथजी रौ देवरो जोधपुर मांहे सं० १५२२ पनरेसै बावीसे वोव ऊदो, साहा जगु नलवाणो करायौ । मुडा आगै जैता वेरो पैला ऊगीणी देवरो चौमुख थी सु १७३७ माहा वद ५ पाड़ीयौ, पातसा ओरंग रा हुकम सुं नवाव नाहरवेग । पछै माहाराज श्री अजीतसिंघजी १७६३ रा पाछौ जोधपुर में अमल कीयौ[2] तरै माजनां छोटो देवरौ करायौ । पछै १८६१ भंडारी गंगाराम जसराजोत खांप लुंणावत फेर आगलो ऊखेल नवौ करायौ । पिण आगे देवळ भारी थो ।[3]

१२५. १ श्री पारसनाथजी रौ देहरौ जोधपुर मांहे संवत १५१६ मुंहते जैते, वेद मुतै राव जोधाजी री वार में करायौ पछै सिंघी पदमे पारसोत

---

१. स्वर्ण कलश चढ़ाया । २. राज्याधिकार स्थापित किया । ३. बहुत बड़ा था ।

जोरणऊधार करायी। पछै सं० १७३७ माघ सुद ४ पाड़ीयी,[1] नवाव नाहरवेग।

१२६. १ श्री मनसोव्रतजी री देहरो सं० १५८७ सिरेमल साह संख-वालेचा गोत तिण री करायौ। परतमा रतन जु थी देहरी चौमुख ऊपरले मंडप श्री आदनाथजी था सं० १५९१ सं० १७३७ माह वद ११ तुरकांणी में पाड़ीयी।[2]

१२७. १ श्री माहावीरजी री देवरो।

१२८. १ फेर श्री माहावीरजी री देवरो।

१२९. १ श्री कुंतनाथजी रौ देवरो।

१३०. १ श्री सिभूनाथजी री देवरो।

१३१. १ चौपासणी ठाकुरजी श्री स्यांमजी री सेवा श्री वलभ कुळ री नै श्री गुसांईजी सं० १७८६ मुरलीधरजी नै माहाराज श्री अभैसिधजी और कोटे सूं वुलाया नै चोखां वाग करायो नै चोपासणी, चौखां ठाकुरजी रै भेंट की।

१३२. १. गांव केलावे देहरो चुतरभुजजी रो १५८२ मिगसर सुद १३ प्रोहत वीदै कनावत जात रो सेवड़ो करायो नै पुजारा सेवग नारद भोजग जात सुथरीयो।

१३३. १ साहली गांव माहादेव साहलेसुर भाखर मांहे सुं पांणी रा परला छूटे। कुंड सगळा भरीजै। सोमोती अमावस रो जोग मिटे तरै पांणी रा परला रेह जाय।[3]

१३४. आद सैर पंला फूल-माळा वाजती, पछै सिरीमाळ,[4] पछै फेर ऊठण हुई तरै भीनमाळ वसाई। राव कांनड़दे वसायो सं० १३१३। अठै श्री लक्षमीजी नै भगवांन परणीजीया था। अठै वराह भगवांन रो खेतर छै, नै देवरो छै।

१३५. संवत १२१५ पोस वद १० रांणपुरजी रो देहुरो आदेसुरजी रो देहुरो पोरवाळ धनो करायो। देवरो चौमुख च्यारुं दिस दरवाजां पाखांण सैनांणा रो सु हुवो नै यण देहरा में पिछम तरफ मसीत रो आकार छै, तुरकां रा डरसूं[5]।

---

१. गिरा दिया। २. मुगल-राज्य के समय में गिरा दिया गया। ३. पानी का सोता बन्द हो जाता है। ४. श्रीमाल। ५ मुसलमान लोग ध्वस्त न करदें इस भय से पश्चिम की ओर मस्जिद का-सा आकार बना दिया है।

१३६. संवत ११८१ पोस वद १० पारसनाथजी रौ देऊरो सूगे का जैऊने गोत तातेड़ तिण फळोधी मेड़ता रौ गांव सेड़ता सु अथूणो कोस ४ जठै देवरी बडो छै। पोळ रा कीवाड़ां री हुकम नहीं[1]। आगे कुवो छै। पाखांण चोकड़ी रौ, एक प्रतमा।

१३७. संमत १६७४ रा चैत सुद १५ कापरड़ा री देऊरी पारसनाथजी री भंडारी मांनो अमरावत करायी। भट्टारक पंचायणजी प्रतसटा सं० १६७६ श्री देहरो श्री भैरुंजी रा हुआं हुवौ छै। महाराज श्री गजसिंह जी री वार में[2]।

१३८. गांगांणी, अरजनपुरी कहीजतो थी, पदमनाभजी री देहुरो संपत राजा री करायी, दुधेळाव तळाव ऊपर २०९ साकै। मावीर राजा बीर बीकरमाजीत पैला, पछै देहुरो जीरण हुवौ, सु पाछो सुधार १६६७ राजा श्री सूरसिहजी रा हुकम सु भाटी गोयंददास, भंडारी लूणकरण सुग केसव जीरण उधार करायो। पछै सूग राजसिहोता फेर उधार करायो, पछै तुरकांणी में वारणे मंडप करायौ[3]।

१३९. तिवरी पारसनाथजी री मिंदर सं० १५२२ वैसाख सुद ५ रांग मांडी। देहुरो सिध नी प्रतमा[4] गांव मथांनिणीया री चरण वीर बांटतो थी तिण नै लाधी तरै वांमणै टीलै परतमा गांव में आंणी[5] पछै टाटीये समन डूंगर रै मांय देहुरो करायो सु प्रतमा रै खनै नांव।

१४०. ओसीयां महावीरजी री देऊरो सं० १०३३ प्रतिसटा हुई सु नांवो तोरण सांमो काळो भाटो छै तिण में लीय करणांटी आखर छै। तिण नीचे ओळी[6] लिखी छै तिण रसव्रव्रम् मंडीयो छो सु वंचै छे नै पौळ ऊपर नै मंडप देऊरो सुहड़ सेठ री करायो।

१४१. ओसियां श्री सिचीयाजी माताजी री देऊरो सुपल राव पंवार री करायो कांमदार सुहड़ सेठ देहुरा दोळो कोट करायो विण में कीरोड़ी धन लखेसरी कोट मांय रैता,[7] ५०८ देहूरा हुता। वारे १२ कोस में वसती हुती।

१४२. नाडोळाई गोढवाड़ मांय मावीरजी री देहुरो जसो भादरसुर लायो। पाली थी सु वार रच्यो नै जादवां देहूरो जोगी मांगके आंणीयो—सोभत थी, सु पाड़ ऊपर चाढीयो सं० १६ में।

---

१. मुख्य द्वार के दरवाजा लगाने की आज्ञा नहीं। २. महाराजा गजसिंहजी के समय में। ३. दरवाजे पर मंडप करवाया। ४. प्रतिमा। ५. गांव में लाया। ६. पंक्ति। ७. बड़ करोड़पती लोग कोट में रहते थे।

१४३. गांव कांणांणे परगना सिवांणा रै पारसनाथजी रो देवरो सं० १६८७ सुगमन करायो नै श्री ठाकुरजी रो मींदर सेठ दमोदर करायो। कोहर[1] फळसा कनै पलीवाळ रो खिणायो[2] १६८२ माग सुद ७।

१४४. खेड़ आद सेर[3] जठै राजा संपत रो करयो देवरो श्री ठाकुरजी रो नै जैन रो।

१४५. नगर मेवा[4] में जठै जैन रा देवरा ३ (तीन) छै।

१४६. गढ़ जाळोर गढ ऊपर पंवारां रा राज में देवरो मावीरजी रो करायो पछै जैमल जीरण-उधार[5] करायो सं० १६ में।

१४७. गांव वीठू देहरो श्री महादेवजी रो सं० १६६२ मै विणजारै वीठल करायो। नै वीठल री वहू देवरा आगे सांमे ही भाय वावड़ी कराई नै वीठल री मां तळाव करायो। विणजार वीठल रै नांम गांव वीठू वासीयो[6] नै तळाव देवरो वावड़ी नै सोनईया लाख सताहीस लागा सु नांवो तीरथ भरै छै।

१४८ कसबै जोधपुर रै बागां री विगत खालसै—

१ वाग दिल-कुसाल सं० १७०६ हुवो।
१ राजवाग कदीम छै।
१ कागो वाग।
१ हरखोळाई वालसमंद मांहे।
१ प्रीथीराज दळपतोत राठौड़ रो वाग।
१ मैसदास रो वाग।
१ गोकळदास सुंदरदासोत रो वाग।
१ सीपां लालां रो वाग
१ केसरखांन वाजखांनोत करवीया रो वाग।
१ जुगतसिंघ रांमदासोत रो वाग।
१ सिंघवी चुहड़मल रो वाग।

---

१. कुआ। २. खुदवाया। ३. प्राचीन शहर। ४. मेवा ? ५. जीर्णोद्धार। ६. उस बनजारे के नाम पर वीठू गांव बसा।

गढ जोधपुर नीवांण छै जिकां की याददासत (ग)

[किले के अंदर, पहाड़ों पर, शहरपने के अंदर तथा बाहर, इस क्रम से जलाशयों की सूची]

प्रथम, गढ ऊपरला नीवांणां री याददासत—

१. दौलतखांना का मांणिकचौक में टांको।
२. आयसजी देवनाथजी री समाधि में टांको।
३. बाबाजी आतमारांमजी का मिंदर कनै टांको।
४. चांवंडा माताजी का मिंदर कनै टांको।
५. ईमरत-बाय (बावड़ी)।
६. पताळीयो बेरो।
७. झरणेश्वरजी महादेवजी री हौद[1]।
८. चोकेळाव री अरठ वाळो बेरो।
९. रांणीसर तळाब।
१०. वाड़ी का मेहलां में टांको।
११. झरणों के नीचे टांको।
१२. जिनांना मेहलां में टांको।
१३. पताळीया कनै नवो बडो टांको।

सहर का नीवांणां की याददासत, तिण में पहलां तौ डूंगर उपरला[2]—

१. रासोळाई।
२. भवांनी-कुंड।
३. देव-कुंड।
४. मोती-कुंड।
५. गांगेळाव।
६. हाडां को तळाव।
७. सूरज-कुंड वावड़ी।

सहर मांहि नीवांण जिकां की विगत—

१. पदमसर तळाव।
२. चांद-बावड़ी।

१. हौज। २. पहाड़ के ऊपर के (किले के आस-पास)।

३. जैतो वेरो ।
४. घायभाईजो को वेरो ।
५. कोटवाळी चूंतरै रै मांयलो वेरो ।
६. गूंदी का चौक में वेरो ।
७. जूना व्यासां की हवेली कनै वेरो ।
८. फूलेळाव तळाव ।
९. कुमारियो कुवो ।
१०. दरजियां को कुवो ।
११. अेक-मीनारां री मसीत (मसजिद) रो वेरो ।
१२. जालप बावड़ी ।
१३. मोवतस्याह का तकीया में वेरो ।
१४. साद सुखानंदजी को वेरो ।
१५. सिवीयों का वास कनै वेरो ।
१६. चोपदारां की मसीत (मसजिद) में वेरो ।
१७. व्योपारियों की मसीत (मसजिद) में वेरो ।
१८. तापोबावड़ो ।
१९. नाजरजी की बावड़ी ।
२०. आहोर का ओनाड़सिंघजी की हवेली में वेरो ।
२१. चांदस्याजी की मसीत में वेरो ।
२२. दीनास्याजी की मसीत में वेरो ।
२३. गोरां-घाय[1] की बावड़ी ।
२४. वळूंदा की हवेली में बावड़ी ।
२५. चैनपुरीजी[2] का अखाड़ा में बावड़ी ।
२६. नाजरजी की दूजी बावड़ी ।
२७. तुंवरजी को झालरो ।
२८. गुलाबसागर तळाव ।
२९. फतैसागर तळाव ।
३०. मांहिला बाग में झालरो ।
३१. सोजतीया दरवाजै वंदो ऊपर वेरो ।

---

१. जिसे आजकल गोरंधा कहते हैं । २ ये एक पहुंचे हुए संत हुए हैं । यहां अचलनाथ का प्रसिद्ध मंदिर है ।

३२. दीवांण भांनीदासजी की हवेली में बेरो।
३३. मोतीबाई का मिंदर में बेरो।
३४. खोजा की बावड़ी।
३५. राजसिंघ चांदावत की बावड़ी।
३६. छीतर को बेरो।
३७. गोळ-नडी, गोळ-नडी की बावड़ी।
३८. धाय-सागर।
३९. बखत-सागर।
४०. मलकस्याह का तकीया में झालरो।
४१. जीवणदास को कूवो।
४२. विजै-सागर तळाव।
४३. लूंण-कुंड[1]।
४४. नाजरजी का मिंदर में बेरो।
४५. श्री वालकिसनजी का मिंदर में बेरो।
४६. फूलेळाव की वगेची में वेरो।
४७. हणुमानजी की भाखरी ऊपर टांको।
४८. आंवली वाळो वेरो।
४९. चिताणियां[2] री वगीची[3] में बेरो।
५०. निरंजनीयों का असतल[4] में वेरो।
५१. भगतणियों का वास में वेरो।
५२. हणुमानजी री भाखरी वाळो वेरो।
५३. चंडावळ की हवेली में वेरो।
५४. सांणीयां की हवेली आगे वेरो।
५५. लालदास को टांको १।
५६. साद मंगळदास रो टांको १।
५७. पंचोळियां का टांका २।
५८. गोलमदारां की मसीत में वेरो।
५९. सिरकार कुचामण की हवेली में वेरा २ (दोय)

---

१. कुंड के आकार का नीवाण है, जिसका पानी खारा है। २. पुस्करणा ब्राह्मणों की एक शाखा। ३. यहां नीलकंठ महादेव का मंदिर भी है। ४. स्थान, आश्रम।

सहर का सहरपना बारै नीवांण जिकां की याददासत—

१. महामिंदर को झालरो।
२. मानसागर तळाव। (महामिंदर में, पांणी ठेरै नहीं)
३. महामिंदर रा नवा बेरा दोय २।
४. रंगराय की बावड़ी।
५. धायभाईजी को बेरो।
६ नहेड़ी री भाखरी पावटो ऊपरलो टांको १ (एक)।
७. तूंवरजी को झालरो।
८. केसरीसिंघ को झालरो।
९. नवलखो झालरो।
१०. रायकाबाग में ऊपर बावड़ी।
११. रायकाबाग में मैहलां री पूठ[1] री बेरो।
१२. सेखावतजी को तळाव।
१३. जहांनसागर नांम तळाव।
१४. चुपस्याह री बगेची में बेरो १।
१५. व्यासजी रो बेरो।
१६. छीतर भाखर ऊपरलो तळाव।
१७. गोळ-नाडी रातानाडा गणेशजी रा भाखर ऊपर।
१८. रातोनाडो तळाव (नाम कल्यांण-सागर)।
१९. जगरूपजी को बेरो।
२०. बाला ऊपर बेरो (पाली रै मारग)।
२१. धनरूपजी रो बेरो।
२२. पिंडतजी री बावड़ी।
२३. महेसरियां की बावड़ी (सोजतीया दरवाजा बारे)।
२४. सुनारां की बेरी।
२५. कंदोयां की बावड़ी।
२६. सेवापुरीजी की बावड़ी।
२७. धरमपुरा की बावड़ी।
२८. व्यासजी की बावड़ी।

---

१. पीछे की ओर।

२९. मोदीजी को बावड़ी ।
३०. व्यासजी को बेरो ।
३१. तखतसागर तळाव ।
३२. पोकरणा छांगांणीयां को वेरो ।
३३. मोबतस्याहजी का बारला तकीया में बेरो ।
३४. भांडेळाव रो वेरो ।
३५. खेमा री कुवो ।
३६. मसूरीया रा भाखर कनै तळाव ।
३७. अखै-सागर (सिंघी अखैराजजी रौ तळाव) ।
३८. कायलांणा रा भाखर ऊपरलो झरणो ।[1]
३९. गोरधनजी को तळाव (चांदपोळ दरवाजा बारे) ।
४०. पिरोयतजी रो बेरो ।
४१. श्रीमाळीयां को तापड़ीयो वेरो ।
४२. सूरजकुंड बावड़ी ।
४३. रांम बावड़ी ।
४४. मीयां का बाग में बावड़ी एक १ ।
४५. नैणसी मुणोयत का बाग में बावड़ी ।
४६. अनोपराम पंचोळी को बेरो ।
४७. अनारां की बेरी ।
४८. खरबूजा बावड़ी ।[2]
४९. सूरज वेरो ।
५०. जोधेळाव तळाव ।
५१. घाय री बावड़ी ।
५२. रघुनाथ री बावड़ी ।
५३. रुघनाथ री वेरो ।
५४. भगत को वेरो ।
५५. जोसीयां की बगीची में वेरौ ।
५६. सुखदेव तिरवाड़ो को झालरो ।
५७. जाड़ेचीजी रो झालरो (बावड़ी) ।

१. इस झरने के पास ही देवी का मंदिर भी है। २. इस बावड़ी के खरबूजे प्रसिद्ध रहे हैं।

५८. श्री पात बाबाजी री नाडो ।
५९. रांमदेवजी की नाडी ।
६०. जसु धायभाई की नाडी ।
६१. खटूकड़ो री बेरो ।
६२. भगवांन कुसलावत री बेरो ।
६३. छांगांणियां की बावड़ी ।
६४. प्रोयतजी की बावड़ी ।
६५. विजंरांमजी जोसो की बावड़ी ।
६६. सूरसागर तळाव ।
६७. सूरसागर रा बाग में बेरो ।
६८. रावटी कनै मोती-कुंड तळाव ।
६९. रावटी कनै किसन-कुंड तळाव ।
७०. रावटी री बावड़ी ।
७१. बारीयो नाडो ।
७२. बाळसमंदर तळाव (पड़ियार बालाराव वाळो)
७३. बाळसंमदर तळाव मांहिलो झालरो ।
७४. बाळसमंदर रा बाग री बेरो ।
७५. भूतेसरजी महादेवजी को बेरो ।
७६. जवरेसरजी महादेवजी रै मिंदर रो बेरो ।
७७. गूगू-नाडो ।
७८. काग-नाडो ।
७९. रतन-तळाई ।
८०. अभैसागर तळाव ।
८१. देरावरजी रो तळाव ।
८२. ग्यांनमल सिंघी री नाडी ।
८३. वहूजी को तळाव (नांम सरूप सागर) ।
८४. भादा वसोया को तळाव ।
८५. कागा रा वाग में बेरो एक १ ।
८६. कागड़ी री नाडी, भाखर ऊपर टांको ।
८७. सोवांणची दरवाजा बारे चूंतरा रो तळाव ।
८८. वनड़ा री नाडी ।
८९. मनकरणजी श्रीमाळी री नाडी ।

९०. मेहतरां की नाडो ।
९१. हरनाथ री कुवो ।
९२. राज-कुवो ।
९३. माळी-कुवो ।
९४. रुगनाथ री बेरी ।
९५. सिव-वाड़ी में बावड़ी और टांको एक ।
९६. सेवगां री बगीची में भाखर ऊपर नाडी ।
९७. गोळ री घाटी, नायकां री मसीत कनै बेरो एक ।
९८. भैरव रै भाखर[1] ऊपर फदु-सागर[2] तळाव ।
९९. चतरा को तळाव ।
१००. फतैगढ़ कनै दीपचंद गुरां री तळाव ।

---

१. [illegible] पत्थर की खानें अधिक हैं । २. इसे फतुसर भी कहते हैं ।